कुरआन व हदीस के आईने में

जमाअ़ते तबलीग़ पर होने वाले सैंकड़ों एतिराज़ात और उनके मुदल्लल जवाबात

लेखकः मुफ़्ती मु० सालिम बिन सालेह क़ासमी

لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا

गमगीन होने की बात नहीं बेशक अल्लाह हमारे साथ है।

हिन्दी

तबलीग़ी उसूल

कुरआन व हदीस के आईने में

जमाअ़ते तबलीग़ पर होने वाले सैंकड़ों ऐतिराज़ात
और उनके मुदल्लल जवाबात

......लेखक......

मुफ्ती मु० सालिम बिन सालेह क़ासमी बाअ़म्र
अल-यमनी सुम्म अहमद नगरी

नाशिर

फ़रीद बुक डिपो (प्रा०) लि०

कारपोरेट ऑफिस 2158, एम० पी० स्ट्रीट, पटौदी हाऊस दरयागंज, नई दिल्ली 2
फोन 23289786, 23289159 फैक्स 23279998 घर 23262486
E-mail farid@ndf.vsnl.net.in Websites : faridexport.com, faridbook.com

नाम किताब : तबलीगी उसूल (हिन्दी)

लेखक : मौलाना मुफ्ती मुहम्मद सालेह अल–यमनी

हिन्दी रूपांतरण : मौलाना मुहम्मद अयाज़ क़ासमी

कम्पोज़िंग : टैक्नोग्राफ़ कम्प्यूटिंग सिस्टम, देवबन्द
फोन : 01336–222031, 221954, 310107

मुद्रक : राहील नसीम प्रिन्टिंग प्रेस, दिल्ली

प्रकाशक : फ़रीद बुक डिपो, (प्रा०) लि०
कारपोरेट ऑफिस: 2158, एम० पी० स्ट्रीट, पटौदी हाऊस, दरयागंज, नई दिल्ली–2
फोन: 23289786, 23289159
घर: 23262486
फैक्स: 23279998
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in
Websites: faridexport.com, faridbook.com

हिन्दी एडीशन–
पहली बार : 2004

कीमत :

विषय सूची

﴾कारवाँ कैसे चला﴿

قال الله تعالى

﴿وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ﴾ (القرآن)

तर्जुमा:– दोज़ख़ी कहने लगे कि अगर हम (इन हक़ बात कहने वालों की) बात सुनते या हम उनकी (दावत वाली बातों) को समझते (तो) हम दोज़ख़ वालों में से न होते।

मुअज़्ज़ज़ क़ारिईने किराम! पहले मैं अपना तआरुफ़ कराना बेहतर समझता हूं, बन्दे का नाम मुहम्मद सालिम बिन सालेह बाअम्र अल–यमनी, सुम्मा अलहिन्दी महाराष्ट्री अहमद नगरी है। मैं नसलन यमनी हूं, आज से तक़रीबन सौ साल पहले दादा साहब उस यमनी काफ़ले के साथ हिन्दुस्तान आये जो हिन्दुस्तान में कारोबार व मआश के लिये यमन से हैदराबाद आया था क्योंकि अरब आज से सौ साल पहले काफ़ी क़ल्लाश था। अगरचे आज अल्लाह ने उसे तरक़्क़ियात से सरफ़राज़ फ़रमाया है, आज जो यमनी क़ाफ़ले के अफ़राद हिन्दुस्तान में हैं वे लफ़्ज़ चाऊस के साथ मशहूर व मअरूफ़ हैं और अहक़र का क़बीला बाअम्र है और वालिदा की तरफ़ से अहक़र का क़बीला बासअद है और अहक़र फ़िलहाल दारुल–उ़लूम वक़्फ़ देवबन्द में दोरा–ए–हदीस शरीफ़ में ज़ेरे तर्बियत है, और दारुल–उ़लूम के शोअ़बा मुनाज़रा की सदारत बन्दे के ज़िम्मे कर दी गई। जिसकी वजह से ऐतिराज़ात के जवाबात देने में ग़ैर मअमूली आसानी पैदा हो गई।

ख़ैर बन्दे ने जब यह देखा कि अहादीस तो मुवाफ़िक़ हैं अहले तबलीग़ के लेकिन बअज़ मुख़ालिफ़ फ़िरक़े वाले भाई

तबलीग़ वालों को एक फसादी बिदअती और ज़ॉल्लीन बना कर पेश करते हैं। जब बन्दे ने हक़ को वाज़ेह तौर पर सामने लाने के लिये अपनी ज़ात पर यह काम लाद लिया जिसकी शुरूआत अशरफुलउ़लूम गंगोह से हुई और दोबारा तकमील दारुल उ़लूम वक़्फ़ देवबन्द में हुई। मैंने क़रीब एक साल तक सिर्फ़ अहादीस को अख़्ज़ करके हवालाजात और सफ़हात और अहादीस के नम्बरात नोट करना शुरू किये और जब बन्दे का दाख़ला दारुल उ़लूम वक़्फ़ देवबन्द में हुआ और यहां पर ईदुज़्ज़ुहा की बीस रोज़ की छुट्टी हुई तो बन्दे ने घर ख़बर कर दी कि मैं नहीं आ सकता हूं मेरे चन्द दीनी अवारिज़ात हैं। उसके बाद बन्दे ने ईदुज्जुहा की छुट्टियों से बिअम्रिल्लाह मुकम्मल फ़ाइदा उठाया कि सिर्फ़ 25 या 30 दिन में इस पूरी किताब की तसवीद बतौफ़ीके बारी तआ़ला हो गई। जो आपके हाथ में है। हवालाजात को जमा कर चुका था अब सिर्फ़ किताबों की ज़रूरत थी वह भी पूरी हो गई और अल्लाह ने इस काविश को इख़्तिताम तक पहुंचा दिया जिसके लिखने का मक़सद न तो बन्दे का किसी को रुसवा करना है और न किसी को काफ़िर और मुश्रिक बनाना है बल्कि देवबन्दी हल्क़े के एक बाज़ू यानी जमाअ़ते तबलीग़ पर जो बातिलाना और मुआ़निदाना हमले हुये हैं उनको कुरआन और हदीस की ढाल से दफ़ा करना है क्योंकि आज वल्लाह अक़रब इलस्सुन्नह जो काम है वह राहे तबलीग़ है। बेशक इस जमाअ़त के अफ़राद में कुछ कमी हो सकती है वह भी सिर्फ़ मुआ़शरती न कि ऐतिक़ादी और अगर इनको उ़लमा की रेहबरी बार बार सैराब करेगी तो ये ख़ामियां भी ख़त्म हो जायेंगी। ख़त्म तो हो रही हैं और कोई फ़िरक़ा या कोई जमाअ़त ऐसी है ही नहीं जो अपने कामिल अफ़राद के साथ मुत्तबिअ़े दीन हो क्योंकि सिवाये समझाने के

किसी के दिल पर किसी दूसरे का क़ाबू नहीं है अब कोई आदमी जो जमाअते तबलीग़ से मुहब्बत रखता हो और वह किसी से झगड़ा करे तो बातिल फ़िरक़े वाले पूरी जमाअत पर ही गुमराही और फ़सादी का हुक्म जारी करते हैं जो क़तई ग़लत तरीक़ा है क्योंकि हर इन्सान अपने अफ़आल में अपनी मर्ज़ी का मालिक है कि जो चाहे करे। अब इन्सान होने के नाते इस तबलीग़ वाले से वह काम हो गया तो यह इसके अपने इख़्तियार करने का नतीजा है न कि हमारे किसी उसूल में यह चीज़ है जो बातिल व फ़ासिद हो। जैसा कि बअ़ज़ फ़िरक़ों की बुनियाद ही बातिल है अफ़राद तो और ज़्यादा बातिल होंगे। बअ़ज़ तो क़ब्र को सजदा तअ़ज़ीमी करते हैं जो शिर्क और हराम है। हुज़ूर स० को हाज़िर व नाज़िर जानते हैं। हुज़ूर स० को आलिमुलग़ैब जानते हैं जो सरासर अक़ीदा–ए–कुफ़रिया है। और बअ़ज़ सहाबा पर तनक़ीद करने वालों को मुन्सिफ़ तस्व्वुर करते हैं और ख़ुद से क़ुरआन की तफ़सीर करने को अपने लिये फ़ख़्र समझते हैं और बअ़ज़ फ़िरक़े वाले तीन–तीन तलाक़ को भी एक ही कहते हैं। इमाम अबू हनीफ़ा रह० पर कीचड़ उछालने को अपने लिये तबर्रुक समझते हैं और हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहब थानवी और मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब नानौतवी रह० व दीगर अकाबिरे उम्मत को काफ़िर कहते हैं। जबकि इस्लाम ने काफ़िर को मुसलमान बनाया और यह ज़ालिम हज़रात मुसलमानों को काफ़िर बनाने की फ़िक्र में हैं अब आप ही ख़ुद देखिये इनमें और तरीक़ा–ए–शरीअ़त में किस क़द्र फ़र्क़ है यह तो मुसलमानों को काफ़िर बना रहे हैं और इस्लाम काफ़िरों को मुसलमान बना रहा है।

अल मुख़्तसर दूसरी बात यह है कि इस किताब को जब बन्दे ने लिखने का इरादा किया तो इसके चन्द रोज़ बाद एक

ख़्वाब देखा कि नूर के टुकड़े ज़मीन पर बिखरे पड़े हैं और एक हातिफ़े ग़ैबी आवाज़ लगा रहा है कि सालिम इस नूर के टुकड़े को उठा इससे यह मसला साबित हो रहा है, और इस नूर के टुकड़े को उठा इससे फ़लां मसला साबित हो रहा है पस मैं उन नूर के टुकड़ों को जमा कर रहा था। हाज़ा मिन फ़ज़्लिल्लाह।

अल–ग़र्ज़ इस ख़्वाब का एक हिस्सा यह किताब भी है जिसमें नूर ही के टुकड़ों को जमा करके इस्तिदलाल किया है और ख़ूब याद रहे कि इस जमाअ़त की कामयाबी और कामरानी उस वक़्त ही मुकम्मल होगी जब उ़लमा इस काम को अपना हक़ जान कर इसके लिये कुरबानियां देंगे यहां वहां की तावील से आप ख़ुद को तो बचा लोगे मगर याद रहे अगर यह उम्मत राहे हक़ से हट गई, तो इस नुक़सान को उठाने वाले भी वारिसे अंबिया ही होंगे (यानी उ़लमा) उ़लमा को जमाअ़त में निकलना कोई फ़ेअ़ले फ़र्ज़ तो नहीं है मगर इस्लाम ने कहा الدين النصيحة कि दीन सरापा मुसलमानों की ख़ैर–ख़्वाही का नाम है, मैं यह नहीं कहता हूं कि हम तालीम को छोड़ कर जमाअ़त में निकल जायें या मदारिस में पढ़ाना छोड़ कर जमाअ़त में चले जायें। बल्कि जब भी ख़ाली वक़्त मिले जमाअ़त में कम से कम दस दिन, तीन दिन ज़रूर लगायें सिर्फ़ यह कहने से काम क़ाबू में नहीं आयेगा कि यह हमारा ही काम है, यह तो हमारा ही काम है। ज़रूर हमारा ही है (मुराद तमाम मुसलमानों का) मगर हमारे कहने से तो आप खाना भी नहीं खा सकते बग़ैर नक़्लो हरकत के और अगर आपके पास वक़्त न हो तो कम से कम दूसरों को जमाअ़त में दर्स देने के लिये किसी आ़लिम को उभारें। अल्हमदुलिल्लाह आज तो उ़लमा भी बहुत लग चुके हैं और लग रहे हैं। और तबलीग़ी अ़वाम पर बहुत ज़रूरी है कि वे उ़लमा की

इज़्ज़त को बरक़रार रखें। मुक़द्दम आलिम को रखो न कि ख़ुद को, क्योंकि अल्लाह के रसूल स० ने फ़रमाया एक हज़ार आबिद मिल कर भी एक आलिम के मर्तबे को नही पहुंच सकते है। मै यह नहीं कहता हू कि हर कही हुई बात को आप तस्लीम ही करो चाहे ग़लत हो या सही, बल्कि उन बातों पर ज़रूर अमल करो जो कुरआन और हदीस से बतायें और जो मनमानी के कलिमात हों फिर वह चाहे किसी के भी हों ख़्वाहिशात के कलिमात पर अ़मल करना गुनाह है, हक़ बातों को अ़मल में लाना ज़रूरी है। ख़ैर यह काम अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत है अल्लाह इसको हक़ पर बरक़रार रखे और इसके हामिलीन को हक़ गोई अ़ता फ़रमाये। और इख़्लास और लिल्लाहियत पैदा फ़रमाये। कि इस काम की बुनियाद ही इख़्लास और लिल्लाहियत पर है। और इसी की वजह से यह काम आज तमाम आ़लम में ला–सानी है। ऐतिराज़ात से परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं यह लोग बेकार व बेअ़मल घूमते हैं और जिसको देख लिया उसको पकड़ लेते हैं उनको धक्का दे दो और यह बात पेश–पेश रखना कि जिस दरख़्त पर फल होते हैं उसको ही पत्थर मार कर छेड़ा जाता है। यह तो हमारे ख़ुशनसीब होने की साफ़ दलील है लोग हमारे दरख़्त के फलों से हसद करके छेड़ा छाड़ी कर रहे हैं ख़ैर उन बेअ़मलों को छोड़ो, उनको उनके काम में लगे रहने दो और हम अपने काम में। किसी कहने वाले ने क्या ही ख़ूब कहा है कि المعترض كالاعمى। कि ऐतिराज़ करने वाला अन्धे शख़्स की तरह है जिससे चाहता है टकरा जाता है।

और ख़बरदार! कोई इस किताब को यह कह कर पसे पुश्त न डाले कि इसमें तो ज़ईफ़ अहादीस भी हैं, बन्दा तमाम दुनिया के मसलकों को, तमाम बातिल फ़िरक़ो को दअ़वे के साथ यह

कहता है कि तुममे से कोई भी फिरका अपने तमाम के तमाम अफआल और अकवाल पर सही अहादीस कियामत तक पेश नहीं कर सकता है। बन्दा कहता है कि आप अपने तमाम अकवाल व अफ़आल पर सही अहादीस क्या पेश करोगे खुदा की क़सम, तुम्हारे बहुत से अफ़आल व अक़वाल ऐसे भी हैं जिनकी तौसीक़ के लिये अहादीसे सहीहा तो क्या होंगी उनकी तौसीक़ के लिये अहादीसे ज़ईफ़ा भी नहीं हैं। अगर हैं तो लाओ और अपने तमाम अक़वाल व अफ़आल पर सही अहादीस पेश करो। तबलीग़ी हज़रात तुमसे लाख दर्जा अफ़ज़ल हैं उनके किसी क़ौल व फ़ेअ़ल पर सही अहादीस हैं और किसी पर ज़ईफ़ हदीसें। और तुम्हारे लाखों अक़वाल व अफ़आ़ल ज़ईफ़ अहादीस से भी ख़ाली हैं। अब बताओ क्या तुम फ़ाईक़ हो या तबलीग़ वाले? और यह भी याद रहे कि दुनिया में कुरआन के अ़लावा और कोई किताब ख़ामियों से ख़ाली नहीं है। खुद अ़ल्लामा अनवर शाह साहब कशमीरी रह० ने फ़रमाया कि मुझको बुख़ारी की सौ रिवायतों पर ऐतिराज़ है अब बताओ बुख़ारी से बढ़कर और कौन सी किताब है? कुरआन के अ़लावा तिर्मिज़ी में और अबू दाऊद व मिश्कात और दूसरी किताबों में भी ज़ईफ़ अहादीस हैं क्या तुम उनको भी ज़ईफ़ अहादीस की बिना पर छोड़ दोगे? और इन्सानी तक़ाज़ों की बिना पर इस किताब में भी ख़ामियों का अन्देशा है ख़बरदार! इस किताब की तौहीन न करना कि इसमें क़ौले खुदा और क़ौले रसूल स० हैं।

फ़क़त वस्सलाम

मु० सालिम बिन सालेह क़ासमी बाअ़म्र
अल–यमनी सुम्म अहमद नगरी

بسم الله الرحمن الرحيم

﴿छः नम्बर की हक़ीक़त क़ुरआन व हदीस की अदालत में﴾

(1) कलिमा (2) नमाज़ (3) इल्म व ज़िक्र (4) इकरामे मुस्लिम (5) इख़्लासे नीयत (6) तफ़रीग़े वक़्त

(नम्बर एक कलिमा)

(١) عن عثمان قال ابوبكر رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم مَنْ قَبِلَ مِنِّى الكلمة الّتى عَرَضْتُ على عَمّى فردّ ها عَلَىَّ لهُ نجاةٌ (احمد، مشکوۃ شریف)

तर्जुमा:– हज़रत अबूबक्र रज़ि० कहते हैं आप स० ने फ़रमाया जो शख़्स उस कलिमे को कुबूल करे जिसको मैंने अपने चचा (अबू तालिब) पर (उनके इन्तिक़ाल के वक़्त) पेश किया था और उन्होंने उसे कुबूल न किया वह कलिमा उस शख़्स के लिये निजात का ज़रिया है।

(٢) عن معاذ بن جبلؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من كان آخر كلامه لا اله الا الله دخل الجنة (مشکوۃ)

तर्जुमा:– आप स० ने फ़रमाया जिसने कलिमा पढ़ लिया वह जन्नत में ज़रूर दाख़िल होगा।

(नम्बर दो नमाज़)

(٣) قال الله تعالى ﴿ إنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتَاباً مَّوْقُوْتاً ﴾ (پ۵)

तर्जुमा:– बेशक नमाज़ मुसलमानों पर फ़र्ज़ है अपने मुक़र्ररह वक़्तों में।

(٤) عن بريدة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من ترك الصلٰوة فقد كفر (مشکوۃ، ترمذی)

तर्जुमा:– जिसने जानबूझ कर नमाज छोड़ी तहकीक कि उसने कुफ्र किया (यानी काफिरों जैसा काम किया)

(नम्बर तीन इल्म व ज़िक्र)

قال الله تعالى ﴿هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ﴾

तर्जुमा:– क्या आलिम हज़रात और जाहिल लोग सब बराबर हो सकते हैं

قال الله تعالى (فَاذْكُرُوْنِىْٓ اَذْكُرْكُمْ)

तर्जुमा:– अल्लाह तआला ने फ़रमाया तुम मेरा ज़िक्र करो में तुम्हारा ज़िक्र करूंगा।

(इल्म)

(۵) عن انس رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم طلب العلم فريضة على كل مسلم (ترمذى، بخارى جلد ثانى)

तर्जुमा:– इल्म हासिल करना हर मुसलमान (मर्द व औरत) पर फ़र्ज़ है

(ज़िक्र)

(٦) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم مَثَلُ الذى يَذْكُرُ ربه والذى لا يَذْكُرُ مثلُ الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ (بخارى جلد ثانى، مشكوة شريف، مسلم)

तर्जुमा:– हुज़ूर स० ने फ़रमाया, ज़िक्र करने वाले की मिसाल और ज़िक्र न करने वाले की मिसाल ज़िन्दा और मुर्दे की तरह है यानी ज़िक्र करने वाला ज़िन्दा और ज़िक्र न करने वाला मुर्दा है।

(नम्बर चार इकरामे मुस्लिम)

(۷) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من لم يرحم صغيرنا ولم يُوَقِّرْ كبيرنا ولم يُبَجِّلْ عالمنا فليس مِنَّا . (ابوداود، مشكوة شريف)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया कि जो हमारे छोटों पर शफ़कत न करे और हमारे बड़ों की इज़्ज़त न करे और हमारे आलिमों की

कद न करे वह हममे से नही है।

(नम्बर पांच इख़्लासे नीयत)

قال الله تعالى ﴿ وما أمروا إلا ليعبدوا الله مخلصين له الدين ﴾ (پارہ ۳۰)

अल्लाह तआला ने फ़रमाया और उनको हुक्म यही हुआ कि बन्दगी करें अल्लाह तआला की ख़ालिस करके (यानी इख़्लास के साथ जिसमें रिया न हो) उसके वास्ते बन्दगी।

(۸) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم إنما الأعمال بالنيات (بخاری)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया तमाम अअ़माल का दारोमदार नीयत पर है।

(नम्बर छः तफ़रीग़े वक़्त)

तबलीग़ वाले कहते हैं कि भाई कारोबार से कुछ वक़्त ख़ाली करके दीन का इल्म सीखने सिखाने में लगाओ क्योंकि हुज़ूर स० ने फ़रमाया طلب العلم فريضة على كل مسلم कि इतना इल्म का सीखना ज़रूरी है जिस से हलाल व हराम की तमीज़ हो जाये।

और अगर आपने इल्मे दीन सीखने के लिये वक़्त न दिया तो क़ियामत में अफ़सोस करना पड़ेगा कि काश हम लोग कारोबार में से कुछ वक़्त निकालकर दीन का इल्म हासिल कर लेते मगर वहां का अफ़सोस किसी काम का न होगा अगर अफ़सोस अभी इसी दुनिया में हो तो वह अफ़सोस काम देगा इसलिये कहा जाता है कि वक़्त फ़ारिग़ करके अल्लाह तआला के रास्ते में लगाओ, बहुत से लोग 50 साल और बअ़ज़ लोग 60 साल के हो गये हैं मगर दीन का इल्म उन्हें हासिल नहीं है ये हज़रात मदरसे में तो जा नहीं सकते इसलिये इनके वास्ते थोड़े वक़्त का मदरसा खोला गया है कि जब भी वक़्त मिले सुहूलत हो वक़्त लगाओ इसमें तुम्हारा भी फ़ायदा है और दूसरों का भी।

छः नम्बर की ज़मानत तुम दो, मैं तुम को जन्नत की ज़मानत देता हूं

(۹) عن عبادة بن الصامت ان النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم قال اضمنوا لی ستا من انفسکم اضمن لکم الجنۃ اصدقوا اذا حدثتم واوفوا اذا وعدتم وادوا اذا ائتمنتم واحفظوا فروجکم وغضوا ابصارکم وکفوا ایدیکم

(مشکوۃ شریف)

तर्जुमाः हुज़ूर स० ने फ़रमाया तुम लोग अपने बारे में मुझ को छः चीज़ों की ज़मानत दो यानी छः बातों पर अमल करने का अहद करो तो मैं तुम्हें जन्नत की ज़मानत देता हूं (1) जब भी बोलो सच बोलो (2) वअ़दा करो तो पूरा करो (3) तुम्हारे पास अमानत रखी जाये तो अमानत को अदा करो (4) अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करो यानी हरामकारी से बचो (5) अपनी निगाह को मेहफ़ूज़ रखो यानी उस चीज़ की तरफ़ नज़र उठाने से परहेज़ करो जिसका देखना जाइज़ नहीं (6) अपने हाथों पर क़ाबू रखो यानी अपने हाथों के ज़रिये नाहक़ मारने से और ज़ुल्म करने से बचो।

हासिल कलामः देखिये हुज़ूरे अकरम स० ने इस हदीस में छः चीज़ों को लेकर जन्नत का ऐलान कर दिया है क्या इसमें हज का ज़िक्र है? क्या इसमें ज़कात का ज़िक्र है? क्या इसमें नमाज़ का ज़िक्र है? क्या इसमें कलिमों का ज़िक्र है? क्या इसमें शिर्क से बचने का ज़िक्र है? क्या इसमें हदीस को मानने का ज़िक्र है? क्या इसमें क़ुरआन के हुज्जत होने का ज़िक्र है? नहीं फिर भी हुज़ूर स० ने जन्नत का वअ़दा किया है मुझको बताओ क्या कोई काफ़िर इन बातों पर अमल कर लेने से बग़ैर इस्लाम क़ुबूल किये जन्नत में दाख़िल हो सकता है? हरगिज़ नहीं, अगर

क़ियामत भी वाक़ेअ हो जाये तब भी काफ़िर इन बातो पर अमल करने से जन्नती नहीं होगा क्योंकि उसने कलिमा ही नही पढ़ा दुरुस्त है मगर इस हदीस में कलिमे के बग़ैर ही जन्नत का वअदा है तो सारे मुसलमान यही जवाब देगें के ईमान तो शर्त है वह बग़ैर ज़िक्र के ही दाख़िल हो गया। मुराद यह है कि इस कलाम के मुख़ातब काफ़िर नहीं बल्कि मुसलमान हैं और नमाज़ और रोज़े का और ज़कात और हज और कुरआन के मानने का हुक्म तो खुद कलिमा पढ़ने से लाहिक़ हो जाता है और यह तो असल बुनियाद है जो कलिमे के ज़िम्न में दाख़िल हो जाती है।

तो मैं भी ऐसा ही जवाब देता हूं उन अहमक़ों को जो यह कहते हैं कि छः नम्बर को तो तबलीग़ वाले राहे जन्नत कहते हैं मगर इसमें न कुरआन का ज़िक्र है और न हदीस पर अ़मल करने का ज़िक्र है। और न ज़कात का ज़िक्र है और न हज का ज़िक्र है और न दीगर फ़वाहिश से बचने का ज़िक्र है फिर यह कैसे जन्नत में ले जायेगा इतने बड़े–बड़े फ़राइज़ को छोड़ कर मैं कहता हूं कि इसी तरह जन्नत में जायेंगे जैसा कि हुज़ूर स० की इस हदीस से साबित हो रहा है। ग़नीमत जानो तबलीग़ वालों ने कलिमा और नमाज़ का ज़िक्र तो किया जो अहम फ़राइज़ में से हैं। मगर हुज़ूर स० ने इस हदीस, बग़ैर कलिमा के जो जन्नत के लिये लाज़िम है और कलिमे के बग़ैर कोई जन्नती नहीं हो सकता फिर भी हुज़ूर स० ने इसके ज़िक्र के बग़ैर जन्नत का वअ़दा किया है। क्योंकि यह वअ़दा उन हज़रात के लिये हो रहा है जो कलिमे वाले हैं नमाज़ और रोज़ा व हज व ज़कात वाले हैं। न कि काफ़िर के लिये और बे–कलिमे वालों के लिये हो रहा है। और जो लोग इस हदीस से यह मतलब निकालें कि बग़ैर कलिमे वाला भी जन्नत में दाख़िल होगा तो वे कज़्ज़ाब हैं कि वे इतनी आसान

बात को भी नहीं समझते हैं और बग़ैर समझे बकवास शुरू करते हैं। मालूम हुआ कि चन्द चीज़ों को लेकर जन्नत का ऐलान करना इस बात को मुसतलज़िम नहीं है कि दीगर अअ़माले सालेहा की ज़रूरत नहीं बल्कि जब कभी अआ़माले सालेहा की फ़ज़ीलत बयान करना मक़सूद होती है तो उसके ज़रिये जन्नत का ऐलान कर दिया जाता है जैसा कि हदीस से मालूम हुआ।

कलिमे के अ़लावा इकरामे मुस्लिम और इख़्लासे नीयत का ज़िक्र क्यों किया

यही मतलब छः नम्बर का है कि कुल छः नम्बर के बजाये सिर्फ़ कलिमा भी कह दिया जाये तो काफ़ी है। क्योंकि कलिमा पढ़ने के बाद वह इस बात का क़ाइल व मोअ़तरिफ़ होता है कि मैं नमाज़ पढूंगा, ज़कात दूंगा, हज अदा करूंगा, रोज़ा रखूंगा ज़िना नहीं करूंगा, चोरी और फ़साद नहीं करूंगा वग़ैरा वग़ैरा। मगर एक अहमक़ाना सवाल पैदा होता है और इस तरह जवाब देने के बाद लोग यह सवाल करते हैं। वह सवाल यह होता है कि जब कलिमा काफ़ी था तमाम अहकाम के लिये तो नमाज़ और इकरामे मुस्लिम और इख़्लासे नीयत वग़ैरा के बयान करने की क्या ज़रूरत थी सिर्फ़ कलिमे को ही ज़िक्र करते। इस सवाल का भी जवाब हदीस से समझाना बेहतर जानता हूं।

(١٠) عن ابن عُمَرَ رضی اللہ تعالٰی عنہما قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم بُنِیَ الاِسلامُ علٰی خمس شہادۃِ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاَنَّ مُحمدًا عبدُہٗ وَرسُولُہٗ و اِقامِ الصَّلٰوۃ وایتاءِ الزَّکٰوۃ وَالحجِّ وَصَومِ رَمضَانَ

(مشکوۃ شریف)

तर्जुमाः— हुज़ूर स० ने इरशाद फ़रमाया कि इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है इनमें से पहली चीज़ कलिमा, दूसरी

नमाज का अदा करना, तीसरी जकात का अदा करना, चौथी हज करना, पांचवी रमजान के रोजे रखना।

मुझको बताओ कि क्या कलिमे के ज़िक्र करने से यह नमाज़ व हज दाखिल नहीं हुऐ थे? फिर हुज़ूर स० ने क्यों इनको ज़िक्र किया जवाब देने से पहले मोअतरिज़ को उसका ऐतिराज़े अव्वल याद दिला दो कि वह ऐतिराज़ यहां पर भी होता है मगर यह इस का भी जवाब है जो हमने दिया वह ऐतिराज़ यह है कि छः नम्बर को ज़िक्र क्यों किया औरों को ज़िक्र क्यों नहीं किया। जैसे ज़िना चोरी वग़ैरा से बचना। और यही ऐतिराज़ इस हदीस पर भी होगा क्योंकि इस हदीस को भी हुज़ूर स० ने इन चीज़ों से ख़ाली रखा, मगर जवाब पहले लिख चुका हूं, कि चन्द के ज़िक्र करने से ग़ैर की नफ़ी मक़सूद होती है। ख़ैर जवाब तो दूसरे ऐतिराज़ का देना है और वह यह है कि कलिमा काफ़ी था तो फिर तबलीग़ वालों ने नमाज़ का और इकरामे मुस्लिम का इज़ाफ़ा क्यों किया? इस का जवाब यह है कि फिर हुज़ूर स० ने इस हदीस में कलिमे के अलावा को क्यों दाख़िल किया वही जवाब हमारी तरफ़ से होगा जो जवाब इस हदीस की तरफ़ से होगा। मगर मैं दोनों की तरफ़ से जवाब देता हूं वह यह कि इसको पहले आप मिसाल से समझो कि एक आलिम को आपने बुलाया जैसे हज़रत मौलाना अनज़र शाह साहब कशमीरी 'दामत बरकातुहुम' को ही ले लो कि आपने उनको किसी जलसे में बुलाया जब वह अहमद नगर आये तो साथ में एक ख़ादिम भी लेकर आये जिसकी इनको शदीद ज़रूरत थी सफ़र में किसी काम के लिये जैसे कि आप ख़ादिमों को देखते हो। अगर आप यहां पर यह सवाल करो कि हमने तो सिर्फ़ शेख़ुल मुहद्दिसीन हज़रत अल्लामा मुहम्मद अनज़र शाह साहब उस्ताद दारुल उलूम वक़्फ़ देवबन्द को ही बुलाया था मगर इस

ख़ादिम की क्या जरूरत थी? तो जवाब मिलेगा कि इसको मैं किसी मसलेहत की बिना पर साथ में ले आया हूं और वह यह कि सफ़र में काम की ज़रूरत हो तो यह उसको अन्जाम देगा वरना तो आप हज़रात का मुतालबा सिर्फ़ मेरा था। इसी मिसाल से उसका जवाब समझो कि कलिमा असली मक़सद है और वही तमाम शरीअ़त की बुनियाद है और जन्नत की कुन्जी है मगर हुज़ूर स० ने या तबलीग़ वालों ने जो नमाज़ का या इकरामे मुस्लिम का इज़ाफ़ा किया है वह भी ख़ास मसलेहत की वजह से है और वह मसलेहत यह है कि क़ियामत में सब से पहले नमाज़ का सवाल होगा। फिर इकरामे मुस्लिम की अ़दालत क़ायम होगी कि किसी बन्दे का दूसरे बन्दे पर कोई हक़ तो नहीं है या कुछ ज़ुल्म तो नहीं किया। मोअ़तरिज़ों ने तबलीग़ वालों पर ज़ुल्म किया या इनका इकराम किया है? यह अ़दालत क़ियामत में क़ायम होगी और इस में सिर्फ़ बन्दों के हुकूक़ के सवालात होंगे। क्या किसी का माल तो हड़प नहीं किया, क्या चोरी वग़ैरा तो नहीं की।

इजमालन फिर समझो कि नमाज़ को इसलिये ज़िक्र किया कि यह कलिमे के बाद सब से पहले पूछी जाने वाली है और नमाज़ इन्सानों को बुराइयों से बचाती है और जिसको न बचाती हो वह अपनी नमाज़ की इसलाह कर ले. क्योंकि यह कुरआन का ऐलान है और यह ऐलान हक़ है कि नमाज़ फ़वाहिश से रोकती है अगर कमी है तो सिर्फ़ हमारी है कि नमाज़ में रूह ही नहीं होती कि वह हम को बुराइयों से बचाये। अगर नमाज़ में रूह पैदा हो जाये तो हम भी हज़रत जीलानी बन जायेंगे। अल्लाह तआ़ला की रहमत से कोई बईद नहीं और इकराम को इसलिये अलग से ज़िक्र किया गया कि क़ियामत में सवाल होगा कि किसी मुसलमान के ऐब को उछाला तो नहीं? किसी मुसलमान पर ज़ुल्म तो नहीं

किया और यह सवालात सख़्त हैं इस की तैयारी करने के लिये इस का इज़ाफ़ा किया ताकि मुसलमान एक दूसरे का इकराम करें और आपस में ज़ुल्म व जोर से दूर रहें। और इल्म व ज़िक्र को इसलिये ज़िक्र किया कि इल्म के बग़ैर इन्सान कभी राहे हक़ तक नहीं पहुंच सकता अगर वह चलने की कोशिश भी करेगा तो गुमराह हो जायेगा और अगर इल्म है मगर उसके हासिल करने के असबाब सही नहीं तो वह भी गुमराह हो जायेगा जैसे अबू अअ़ला मौदूदी और अहमद रज़ा ख़ान बरेलवी और ग़ुलाम अहमद क़ादियानी काफ़िर कज़्ज़ाब वग़ैरा। इसलिये तबलीग़ वालों ने इल्म को ख़ास तौर से ज़िक्र किया और किसी को यह ऐतिराज़ हो कि मौदूदी गुमराह क्यों है तो इस का जवाब यह है कि वह मौदूदी साहब का असली चेहरा एक किताब है इसका मुतालआ़ करले मालूम होगा कि वह क्यों गुमराह है। और अगर रज़ाख़ानियों को ऐतिराज़ हो तो "मुतालआ़ बरेलवियत" या "तनक़ीदे रज़ाख़ानियत" का मुतालआ़ करें। और अगर क़ादियानियों को यह ऐतिराज़ हो तो वह क़ुरआन का मुतालआ़ करें अगर फिर भी समझ में न आये तो अपने इमाम की तरह बैतुल ख़ला जो क़ादियानी की क़ब्रे मुबारक है-इस में जाकर मर जायें, जब मालूम होगा ख़ैर अब रहा सवाल कि ज़िक्र को ख़ास तौर से क्यों ज़िक्र किया?

जवाब:– इसलिये कि ज़िक्रुल्लाह से दिल नूरानी बन जाता है और दीन भी नूरानी बन जाता है अब यह नूर नूर से मिलता है और फिर इन्सान अल्लाह तआ़ला का नेक बन्दा हो जाता है गोया कि ज़िक्रुल्लाह हवाई जहाज़ है जो अल्लाह तआ़ला से मिलाता है और यह भी देख लेना जो भी गुमराह हुआ है इसकी जिन्दगी में ज़िक्रुल्लाह की कमी और तहज्जुद की लापरवाही ज़रूर होगी। यह ज़िक्र और तहज्जुद, ईमान के चौकीदार हैं अगर यह न हों

तो शैतान बहुत जल्द इल्म और ईमान पर हमला करता है और अगर सिर्फ़ ज़िक्र और तहज्जुद हो तब भी बहुत जल्द गुमराह होता है क्योंकि ईमान व इल्म जो बादशाह है वह मौजूद ही नहीं तो फिर इनकी चौकीदारी की क्या वक़्अत है कि इन दोनों की क़द्र तो इल्म से हो रही थी वही ग़ायब है तो हमले में क्या ताख़ीर इसलिये ज़िक्र भी हो और इल्म भी। इख़्लासे नीयत को इसलिये ख़ास कर ज़िक्र किया कि इसके बग़ैर नमाज़ भी कारामद नहीं और न ज़िक्र कारामद है और न सदक़ा वग़ैरा अब इसको नायब का दर्जा हासिल है कि असल ईमान और नायब नीयत इसलिये इसकी ज़रूरत थी इसलिये इसको भी ज़िक्र किया ताकि तमाम दीगर अअ़माल दुरुस्त और सही सालिम रहें। तफ़रीग़े वक़्त को इसलिये ज़िक्र किया कि वक़्त बहुत बड़ी चीज़ है मगर इन्सान को इसकी क़द्र नहीं होती कि इसको वह फिल्म में लगाता है और क्रिकेट देखने में लगाता है, मेरे दोस्तो! क्रिकेट तो यहूदो नसारा का खेल है जिसको उन्होंने ईजाद किया है सिर्फ़ मुसलमानों के दिलों से जिहाद का जज़्बा निकालने के लिये कि मुसलमान सिर्फ़ खेल कूद में लग जायें और अपने कुरआन और हदीस और जिहाद जो मुसलमानों की असली बुनियाद है वह ख़त्म हो जाये। अफ़सोस कि आज इसमें अकसर मुसलमान दिलचस्पी लेते हुए नज़र आयेंगे न हमको नमाज़ की फ़िक्र है और न रोज़े की फ़िक्र। अगर फ़िक्र होती तो एक वह है क्रिकेट की. अल्लाह तआ़ला मुसलमानों को इस अ़ज़ीम फ़ित्ने से बचाये। तफ़रीग़े वक़्त का मतलब भी यही है कि मुसलमान का वक़्त ग़लत जगह के बजाये सही जगह पर लगे और वह अपनी आख़रत को बना ले और अगर आज भी मुसलमान वक़्त की क़द्र करें तो पूरी दुनिया पर हुकमरानी कर सकते हैं इसके लिये दो

चीज़ों की ज़रूरत है, एक दीन की दावत जो तबलीग़ वाले और मदरसे वाले करते हैं और दूसरी जिहाद की दावत। फ़ज़ाइल के ऐतिबार से भी, और ट्रेनिंग के ऐतिबार से भी। मैं तो कहता हूं कि हम लोग ज़रूर दुनिया पर हावी हो जायेंगे हमारा यक़ीन ख़्वाजा या ग़ौस से होने का बन गया तो ख़ुदा की क़सम यह ख़्वाजा व ग़ौस चाहे एक करोड़ हों मगर अल्लाह तआला के हुक्म के बग़ैर कुछ नहीं कर सकते तो फिर हम उनके पास जाकर क्यों अल्लाह तआला को नाराज़ करते हैं क्या अल्लाह तआला हमको नहीं देगा। ख़्वाजा के पैदा होने से पहले लोग किस से फरयाद तलब करते थे अल्लाह के लिये इन चीज़ों से बाज़ आ जाओ, वरना हक़ वालों का क्या जाने वाला है तुम्हारा ही नुकसान होगा। कुछ वक़्त को बचा कर तबलीग़ में लगाओ और दुनिया और आख़रत को बनाओ। وهو الهادی छटी चीज़ वह बची जो पहली बुनियाद है यानी कलिमा और इसका क्या तआरुफ़ कराया जाये यह तो सब का खुद बादशाह है। इसको इस तरह भी समझा जा सकता है।

सही नीयत के बग़ैर ज़िक्र बेकार, और बग़ैर ज़िक्र के इल्म बेकार और बग़ैर इल्म के अमल बेकार और बग़ैर अमल के ईमान बेकार है।

इसमें जो नीयत का ज़िक्र है वह वही है जो छः नम्बर में है। इसमें जो ज़िक्र और इल्म का तज़किरा है वह वही है जिसको पांचवें नम्बर में ज़िक्र किया जाता है और अमल से मुराद नमाज़ और इकरामे मुस्लिम और फ़ारिग़ वक़्त का सही जगह पर लगाना है और ईमान से मुराद कलिमा है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि कुरबे क़ियामत में दीन पर अमल करना दुशवार होगा

(۱) عن انس رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم

ياتى على الناس زمان الصابر فيهم على دينه كالقابض على الجمر (مشكوٰة)

तर्जुमा:— हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया कि लोगों पर एक ज़माना आयेगा (उस ज़माने में) लोगों में से अपने दीन पर साबित क़दम रहने वाला हाथ पर अंगारा रखने वाले के मान्निद होगा यानी दीन पर अ़मल करना बहुत ही दुश्वार होगा।

इस हदीस में दो चीज़ों की तरफ़ इशारा करना है एक इस बात की तरफ़ कि तबलीग़ वाले हज़रात इसको बयान करते हैं मगर हवाला नहीं देते। ज़ाहिर बात है कि इन हज़रात में आ़लिम बहुत कम होते है जो तुमको हवाला दें वह तो उ़लमा से सुन कर बयान करते हैं और उनकी तरफ मनसूब करते हैं के हवाला उनसे तलब करो इसलिये मैंने इसको हवाले के तौर पर लिख दिया है। और दूसरी बात यह है कि तबलीग़ वालों की अज़मत को ज़ाहिर करना है कि देखो आज इस फ़ैशन वाले दौर में अ़मल करना कितना दुश्वार है मगर अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दे ख़ास तौर से तबलीग़ वाले हज़रात लोगों की परवाह न करते हुए दीन पर अ़मल करते हैं और ख़्वाहिशात को मार कर अ़मल करते हैं और बअ़ज़ बदनसीब ख़ुद तो अ़मल नहीं करते और न वह मुसलमान नज़र आते हैं मगर फिर भी वह इन मुजाहिदों पर गुमराही का स्टाम्प लगाते है जो कि खुला ज़ुल्म है इस का जवाब क़ियामत में ज़रूर देना होगा।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि एक सुन्नत को ज़िन्दा रखना सौ शहीदों का दर्जा रखता है

(١٢) قال النبي صلى الله عليه وسلم مَن تَمَسَّكَ بِسُنَّتى عند فساد امتى فله اَجْرُ مأة شهيد (مشكوٰة شريف)

तर्जुमाः— हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया, जो शख़्स मेरी सुन्नत को थामे रहेगा यानी (ज़िन्दा करेगा) उम्मत की गुमराही के वक़्त (यानी उस वक़्त जब उम्मत सुन्नत को छोड़े) तो उसके लिये (यानी सुन्नत ज़िन्दा करने वाले के लिये) सौ शहीदों का सवाब होगा।

इस हदीस से भी दो बातों की तरफ़ इशारा करना है एक इस बात की तरफ़ कि तबलीग़ वाले कहते हैं कि एक सुन्नत को ज़िन्दा करना इस तरह है जैसे कि सौ शहीदों का दर्जा रखने वाला। और यह हदीस दलील है इस क़ौल की जो तबलीग़ वाले कहते हैं। इससे मालूम हुआ कि यह बात भी हदीस से साबित है जिसको यह हज़रात बयान करते हैं कोई मनघढ़त बातें नहीं हैं। जिस तरह बअ़ज़ लोग इन हज़रात पर तोहमत लगाते हैं कि सिर्फ़ हदीस कह कर छोड़ देते है पता नहीं हदीस भी होती है या नहीं और दूसरे इस बात की तरफ़ इशारा मक़सूद है कि अलहम्दुलिल्लाह तबलीग़ वाले एक एक सुन्नत को इस दौर में भी ज़िन्दगी में ला रहे हैं और सवाब का अंबार जमा कर रहे हैं और मुझ को यहां तक ख़बर मिली है कि मरकज़ में एक शख़्स आया और सवाल करने लगा कि खजूर के बीज फेंकने की क्या सुन्नत है? बताओ तबलीग़ वालों में कितना शौक़ है सुन्नत को ज़िन्दा करने का कि खजूर के बीज भी ख़िलाफ़े सुन्नत फेंकना गवारा नहीं और फिर भी बअ़ज़ बदनसीब हज़रात इनके उ़यूब ढूंढ़ते हैं ऐब से कौन ख़ाली है पहले ख़ुद अपनी ज़िन्दगी को देखो। फिर दूसरों पर तअ़न करना।

तबलीग़ करना फ़र्ज़ है

يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ (پارہ٦)

तर्जुमाः– ऐ रसूल! पहुंचा दे जो तुझ पर उतारा गया तेरे रब की तरफ़ से और अगर ऐसा न किया तो तूने कुछ न पहुंचाया उस का पैग़ाम और अल्लाह तआ़ला तुझ को बचायेगा लोगों से (यानी दावत देते वक़्त लोगों की आफ़ात से मेहफ़ूज़ रखेगा)

एक और आयत में तबलीग़ न करने वालों के बारे में वईद है

وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَّا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنكُمْ خَاصَّةً

और तुम ऐसे फ़ित्ने यानी वबाल से बचो जो कि ख़ास उन ही लोगों पर वाक़ेअ़ न होगा जो तुम में से उन गुनाहों के मुरतकिब हुए हों। बल्कि वह अ़ज़ाब उन पर भी वाक़ेअ़ होगा जो न ख़ैर की दावत देते हों और न बुराइयों से रोकते हों।

तबलीग़ न करने पर अ़ज़ाबे आ़म

(١٣) عن جابر رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اَوحى الله عزوجل الى جبرئيل اَن اَقْلِبْ مدينة كذا وكذا بِاَهلِهَا فقال يا رب اِنَّ فيهم عبدك فلانا لم يَعْصِكَ طرفة عين قال فقال اَقْلِبْها عليه وعليهم فَاِنَّ وجهه لم يَتَمَعَّر فِىْ ساعة قط . (مشكوٰة شريف)

तर्जुमाः– हज़रत जाबिर रज़ि० बयान करते हैं कि हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला ने हज़रत जिबरईल अ़लै० को हुक्म दिया कि फ़लां शहर को जहां के हालात इस तरह के हैं उनके बाशिन्दों समीत उलट दो। हज़रत जिबरईल अ़लै० ने अ़र्ज़ किया कि मेरे परवरदिगार उस शहर में तेरा वह फ़लां बन्दा भी है जिसने एक लम्हे के लिये भी तेरी नाफ़रमानी नहीं की है हुज़ूर स० फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि तुम उस शहर के सारे बाशिन्दों पर भी और उस शख़्स पर भी उलट दो क्योंकि मेरे दीन की मुहब्बत में उस शख़्स के चेहरे का रंग (यानी शहर वालों की बुराई देख कर कभी) एक साअ़त

के लिये भी नहीं बदला।

एक और हदीस का तर्जुमा लिखता हूं। हुजूर स० ने फरमाया बेशक अल्लाह तआला आम तौर पर अज़ाब नहीं भेजता बअज़ लोगों की नाफरमानी की वजह से यहां तक कि वह अपने सामने गुनाहों को देखते हैं और वह इसके रोकने पर भी क़ादिर होते है फिर भी उसको न रोकें जब वह ऐसा करें तो हक तआला सब आम व ख़ास को अज़ाब में दाख़िल कर देता है। (शरहुस्सुन्न:)

दोस्तो! कुरआन और हदीस से यह मालूम हो रहा है कि तबलीग़ अशद ज़रूरी चीज़ है जिस तरह खुद की इसलाह की जिम्मेदारी हर एक के सर पर है इसी तरह दूसरे अज़ीज़ों और घर वालों की और बस्ती वालों की यहां तक कि आ़लम के एक एक फ़र्द की ज़िम्मेदारी है। क्योंकि जो नबी जैसा होता है उस की उम्मत पर अहकाम उसी तरह के आइद होते हैं जिस तरह कि बनी इसराईल पर यह काम वाजिब था कि वह लोगों को जो क़रीब वाले हों उनको दीन की दावत दें मगर उन्होंने इसको अन्जाम नहीं दिया इस वास्ते ही तो बस्ती उलटने वाले वाक़िआत अहादीस में मिलते हैं। उनकी तबलीग़ उनके नबियों की तरह बस्ती वालों के लिये या शहर वालों लिये इसी तरह क़बीले वालों के लिये दीनी दावत देनी ज़रूरी थी और यह उम्मते मुहम्मदिया स० है। और मुहम्मद स० पूरी दुनिया के लिये नबी बनाकर भेजे गये हैं और जब आप स० ने उम्मत को अपना नाइब बना कर अलविदा कहा तो अब यह काम हर उम्मती पर वाजिब हुआ क्योंकि यह मीरास है और मय्यत जितना बड़ा माल छोड़ कर मर जाती है उतना बड़ा हिस्सा वारिसीन के हिस्से में आता है। और हज़रत मूसा और हज़रत ईसा और हज़रत दाऊद अ़लै० छोटे नबी थे। हज़रत मुहम्मद स० के ऐतिबार से, तो उनके उम्मतियों

के हक़ मे मीरास भी कम आई और आप स० बड़े है उन नबियों के एतेबार से तो आप स० की उम्मत को मीरास भी बहुत हाथ लगी और वह यह कि हर एक उम्मती पर दूसरे उम्मती का हक है कि वह उसको सही राह दिखाये और बुराई से बचाये और याद रखो कि अगर दीन की तबलीग़ नहीं होगी या कम होगी तो अल्लाह तआला का अज़ाब ज़रूर आयेगा जैसा कि हुज़ूर स० का फ़रमाने मुबारक है। और यह भी याद रखना कि अल्लाह तआला का अज़ाब सिर्फ़ बस्ती उलटने या पत्थर बरसाने या आग नाज़िल करने की सूरत में ही नहीं आता बल्कि अज़ाब की हज़ारों शक्लें है जिनको अल्लाह तआला ही जानता है तो अब तुम्हारे ज़हन मे एक बात पैदा हुई होगी। और वह यह है कि आज तक और आज भी उम्मत मुकम्मल तब्लीग़ का हक़ अदा नहीं कर रही है मगर फिर भी हम को अज़ाब नज़र नहीं आ रहा है इसका लोग मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से जवाब देते हैं कि भाई यह वईद उस वक़्त के लिये है कि जब बिल्कुल तबलीग़ छूट गई हो और अभी तो अल्हमदुलिल्लाह ख़ूब काम हो रहा है। और बअज़ हज़रात कहते हैं कि हुज़ूर स० की दुआ है कि ऐ अल्लाह तआला! मेरी उम्मत पर ऐसा कोई अज़ाब नाज़िल न करना जिसकी वजह से मेरी तमाम उम्मत एक वक़्त में ख़त्म हो जाये, बस इसी की बदौलत अज़ाब नाज़िल नहीं हुआ। अगरचे हम तबलीग़ का हक़ अदा नहीं कर रहे हैं, मगर दोस्तो! मैं इसका दूसरा जवाब देता हूं और वह यह है कि जो तर्के तबलीग़ पर वईद कुरआन और हदीस में वारीद है कि तबलीग़ छोड़ने या तगलीग़ में सुस्ती करने पर अज़ाब नाज़िल होगा वह नाज़िल हो चुका है और आग और पत्थर बरसने से ज़्यादा ख़तरनाक नाज़िल हुआ है मगर हम उसको अज़ाब ही तस्व्वुर नहीं करते बल्कि हमारी तबलीगे दीन में

सुस्ती की वजह से ऐसा अजाब नाजिल हुआ है कि शायद वह कियामत तक ख़त्म नहीं होगा और वह अज़ाब बिदअतो की शक्लो में आया और टीवी और फिल्म हालों की शक्ल में आया और औरतों के बारीक और तंग और आधे-आधे कपड़े पहनने की सूरत मे आया और गाने बजाने की सूरत में आया वालिदैन की नाफरमानी की सूरत में आया ज़िना की शक्ल में आया और पता नहीं कितनी तरह का अज़ाब नाज़िल हो चुका मगर हमको यह पता ही नहीं है कि अज़ाब नाज़िल हुआ या नहीं।

दोस्तो! बताओ क्या बिदअत उस वक़्त में पैदा हुई जब तबलीगे दीन को हुज़ूर स० ने और सहाबा रज़ि० ने किया, नहीं! बल्कि बिदआत बाद में पैदा हुई और इसकी वजह सिर्फ और सिर्फ तर्के तबलीग़ है चाहे वह पूरी तरह हो या सुस्ती के साथ तर्क पाया गया हो या फिर आहिस्ता आहिस्ता सुस्ती बढ़ती गई और अज़ाबे खुदावन्दी नाज़िल होता रहा मगर शैतान ने इस तरह गुनाहों में ग़ोते दे रखे हैं कि वह अज़ाब ही नज़र नहीं आता यानी अज़ाब को अज़ाब समझने की ताकत भी गुम हो गई और यह गुम होना खुद अज़ाब है। वरना यह हाल सहाबा रज़ि० का न था, क्यो नहीं था? सिर्फ और सिर्फ तबलीग़ पर बाक़ी रहने की वजह से और अगर किसी को मेरे जवाब पर शक हो तो और वज़ाहत करूं? क्योंकि बअज़ मोअतरिज़ीन के दिलों में यह ख़्याल पैदा हो रहा होगा कि अज़ाब में तो तकलीफ और परेशानी होती है मगर बिदअतों और ज़िना से और फिल्म से तो कोई तकलीफ़ ज़ाहिर नहीं होती जो तुम इसको अज़ाब बता रहे हो इस अहमक़ से कहो क्या तुझ पर इतना अज़ाब नाज़िल हुआ कि तुझ को अज़ाब दिखाने के बाद भी नज़र नहीं आ रहा है। ख़ैर इसका जवाब यह है कि यह बात सही है कि अज़ाब में तकलीफ़ होती है मगर मैं

कहता हूं कि क्या जब कोई शख़्स बिदअत को या ज़िना को इख़्तियार करे मरने के बाद अल्लाह तआला के पास हाज़िर हो जाये क्या उस वक़्त मज़ा हासिल होगा या अज़ाब, बल्कि इस काम की वजह से अब ज़ाहिरी अज़ाब भी होगा और यह भी याद रखो कि अगर तबलीग़ का हक़ पूरा-पूरा अदा होता आता तो यह फ़िल्म और ज़िना और दीगर फ़ैशन नज़र नहीं आते जैसे सहाबा रज़ि० के दौर में था। ख़ैर कुल मिला कर यह बात ज़ाहिर हुई कि अज़ाब का ज़ुहूर तर्के तबलीग़ पर हुआ है और होगा मगर अज़ाब की शक्लें मुख़्तलिफ़ होंगी।

तो इससे यह बात साफ़ हो गई कि तबलीग़े दीन ज़रूरी है मगर तबलीग़ की सूरतें भी मुख़्तलिफ़ हैं जैसे कि एक तो वह है जो जमाअत तबलीग़ की शक्ल में है और दूसरी शक्ल तबलीग़ की, मदरसों की शक्ल में है और ख़ानक़ाह भी तबलीग़ में दाख़िल है और वअज़ भी और तसनीफ़ वग़ैरा भी, जो भी नसीब हो पूरी तरह अन्जाम देना चाहिये कि इससे ख़ुद को भी नफ़ा होगा और उम्मत को भी, और यही ख़ास्सा उम्मते मुहम्मदिया का है। जमाअत में निकल कर ही काम करना कोई ज़रूरी नहीं और न यह फ़र्ज़ है कि सिर्फ़ जमाअत में जाने से ही यह फ़रीज़ा अदा होगा। बल्कि मदरसे का काम भी बहुत बुलन्द दर्जा रखता है चाहे पूरी ज़िन्दगी मदरसे में गुज़ारे। यह कहना क़तई ग़लत है कि जो जमाअत में न जाये वह कामिल आलिम नहीं यह कहना बिल्कुल जाइज़ नहीं अगर ऐसा कहोगे तो दुनिया के बड़े से बड़े वलीयों को भी इस तरह से तबलीग़ की सआदत हासिल नहीं हुई थी। जैसे इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम शाफ़ई और इमाम बुख़ारी हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहब हज़रत मौलाना अनवर शाह साहब कशमीरी और हज़रत मौलाना क़ारी मुहम्मद तय्यब साहब

और हजरत मौलाना मुहम्मद कासिम साहब नानौतवी और हजरत मौलाना हुसैन अहमद साहब मदनी रह० वगैरा यह कहना गलत है। और यह जुमला नये साथी ही कहते है पुरानो को ऐसी नापाक बातो से बचना ज़रूरी है लेकिन मदरसे वालों को भी जमाअत मे वक्त लगाना बहुत ज़रूरी है अगर गलत और फ़ासिद बातें आम हो गई तो इसके ज़िम्मेदार हम लोग होंगे और यह हमारा ज़िम्मा है कि हदीस को सही बयान करना और जो ग़लत बयान कर रहा हो उसकी इसलाह करना यह उलमा का फ़रीज़ा है और यह काम उस वक़्त हो सकता है जब उलमा जमाअत में निकल कर उन की ख़िलाफ़े दीन चीज़ों पर इसलाह करें। जो सिर्फ़ मसनद पर बैठ कर तबलीग़ वालों की बुराई करते हैं वह गिला करते हैं और कहते हैं कि तबलीग़ वाले उलमा की क़द्र व इज़्ज़त नहीं करते यह ग़लत तरीक़ा है इससे कोई फ़ायदा नहीं कि आपकी बात उन तक नहीं पहुंची और वह नुक़्स उनमें बाक़ी रहा। बताओ सिर्फ़ तलबा से यह ज़ाहिर करने से इसके अलावा और क्या फ़ायदा होता है कि तलबा भी जमाअते तबलीग़ को ग़लत तसव्वुर करने लगते हैं इसलिये उस्तादों को अपने तलबा का भी ख़्याल करना चाहिये इसलाह की सूरत इख़्तियार करनी चाहिये न कि बस अपनी सलाहियत ज़ाहिर करे। और अहले इल्म की एक और बात सुनने को मिली है कि तबलीग़ वाले उलमा की तक़रीर को पसन्द नहीं करते बल्कि चालीस दिन वाले की बातों को तर्जीह देते हैं। दोस्तो! इसका जवाब बहुत आसान है कि हम लोग रट कर या फ़सीह और बलीग़ अलफ़ाज़ के साथ तक़रीर करते हैं और तबलीग़ वाले कहते हैं कि हमको सीधी साधी तक़रीर चाहिये जिसमें सहाबा रज़ि० की कुबार्नी और दीन की तड़प और दीन की तलब पैदा करने वाली तक़रीर होनी चाहिये

जिससे सुनने वाले पर असर के साथ कुछ गौर फिक्र भी पैदा हो और यह तो जाहिर है कि यह बातें सिर्फ़ फसीह अलफ़ाज से नहीं होती हैं बल्कि सामईन का ख़्याल रखना ज़रूरी है कि यह जिस दर्जे का सुनने वाला हो वैसा ही कलाम हो। और यह बात भी ज़ाहिर है कि अकसर लोग जाहिल होते हैं और वह कैसे आपके फ़सीह अलफ़ाज़ को सुन कर अमल की राह तैय करेंगे।

एक और हदीस :–

(۱۴) عن عبد الله بن عمر قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم بَلِّغُوا عَنِّی وَلَوْ آیَةً (مشکوٰۃ شریف)

तर्जुमा:– हुज़ूर स० का फ़रमान है कि मेरी जानिब से जो भी बात सुनो (या किसी तरह भी मालूम हो उसको) दूसरों तक पहुंचा दो चाहे वह एक ही आयत क्यों न हो। मुराद है जो कुछ भी बात हो दूसरों के सामने बयान कर दो।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि तबलीग़ हर फर्द पर ज़रूरी है

(۱۵) عن عمرؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم کُلُّکُم رَاعٍ وَکُلُّکُم مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِیَّتِهٖ . (مشکوٰۃ شریف، بخاری ثانی)

तर्जुमा:– हुज़ूर स० ने फरमाया तुम में से हर एक निगहबान है और तुम में से हर एक से सवाल होगा इसकी रिआया के बारे में यानी (मातेहतों के बारे में) .

इससे मालूम हुआ कि हर एक ज़िम्मेदार है उम्मत के एक एक फ़र्द का और यही तो बात तबलीग़ वाले कहते हैं कोई ग़लत बात नहीं कहते हैं, मगर दीन के काम से जान चुराने वाले को बस थोड़ा सा बहाना चाहिये क्योंकि इन्सान की फितरत है आराम तलबी, ख़ैर दूसरी हदीस بَلِّغُوا عَنِّی وَلَوْ آیَةً कि मेरे दीन की जो

कुछ भी बात हो उसको दूसरों तक पहुंचा दो यह हुजूर स० का हुक्म है। और सरदार के हुक्म पर अमल जरूरी और वाजिब होता है तो दीन की तबलीग करना भी वाजिब है और रहा यह इशकाल कि क्या तबलीग हर हर फर्द पर जरूरी है? जी हां हुजूर! जरूरी है और तबलीग के दूसरे तरीके भी हैं मगर यह तरीका दूसरे तमाम तरीकों से अफ़ज़ल है क्योंकि यही तरीका हर एक नबी ने इख़्तियार किया जिसके लिये कुरआन खुद गवाह है और हर आदमी अफ़ज़ल चीज़ को ही पसन्द करता है जैसे कि ट्रेन मे एक जनरल डब्बा होता है और एक थिरी टायर रिज़रवेशन डब्बा होता है तो बताओ आप को अगर इख़्तियार दिया जाये तो आप किस को इख़्तियार करोगे? ज़ाहिर बात है कि हज़रत आप रिज़रवेशन डब्बे को इख़्तियार करोगे क्योंकि यह अअ़ला है और जब दीन का मस्अला आता है तो हम लोग घटिया से घटिया दर्जे तलाश करते हैं। अल्लाह तआ़ला रहम फ़रमाये। ख़ैर तबलीग वाले जो तबलीग का तरीका इख़्तियार करते हैं तमाम तरीकों से अफ़ज़ल है और यही क़ौल मौलाना अशरफ अ़ली साहब थानवी का (किताब "दावत व तबलीग के उसूल व अहकाम") में दर्ज है और हज़रात मौलाना मुहम्मद ज़िक्रिया साहब रह० का भी यही क़ौल है।

कुरआन का फ़रमान:

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ

तर्जुमा:– दावत दो ऐ मुहम्मद स०! अल्लाह तआ़ला के रास्ते की तरफ़ हिकमत और अच्छी नसीहतों के साथ।

देखो दोस्तो! हुज़ूर स० को भी दावत व तबलीग का हुक्म हो रहा है और तरीका बताया जा रहा है और जिस तरह का हुक्म अल्लाह तआ़ला ने मुहम्मद स० को दिया वह काम यही

तबलीग़ वाला काम है जो आज जमाअ़ते तबलीग़ की शक्ल में मौजूद है और इसके ज़रिये हुक्मे ख़ुदा को अन्जाम दिया जा रहा है। दूसरे तबलीग़ी तरीक़ों की नफ़ी मक़सूद नहीं है बल्कि अफ़ज़लीयत को बयान करना मक़सद है दीगर तरीक़ों पर ख़ैर उलमा–ए–तबलीग़ यानी उलमा–ए–देवबन्द की तक़रीरें इसलाह और हिकमतों से पुर होती हैं और यह इस आयत पर आमिल हैं और हक़ीक़तन इस आयत के मिसदाक़ आज के दौर में उलमा–ए–तबलीग़ हैं जिनके वअ़ज़ से लाखों को राहे हक़ मिलती है। यानी देवबन्दी उलमा।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि घर की तालीम भी ज़रूरी है

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْآ اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا ○

तर्जुमाः– ऐ ईमान वालो! ख़ुद को और अपने घरवालों को आग से बचाओ, "यानी घर में दीन की तालीम करो और उनको दोज़ख़ से बचाओ"।

बताओ क्या तालीम का हुक्म करना घर के लिये ग़लत और ख़िलाफ़े शरीअ़त है, हरगिज़ नहीं! यह आयत दलालत कर रही है कि घर की तालीम फिर चाहे तालीम क़ुरआन से हो या हदीस के ज़रिये असल मक़सद राहे रास्त और दीन के इल्म को पैदा करना है ताकि आख़रत बन जाये।

और दूसरी दलील घर की तालीम पर:

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ○ (القرآن)

और आप स०! डराओ अपने क़रीबी रिश्तेदारों को।

इस आयत में भी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से अपने बन्दों को तालीमे दीन का हुक्म हो रहा है और अल्हमदु लिल्लाह

तबलीग़ वाले इस पर अ़मल करते हुए घर की तालीम का हुक्म करते हैं और ख़ुद भी अ़मल करते हैं। और चन्द अहमक़ हज़रात तबलीग़ वालों के ख़िलाफ़ बात करते हैं और बुरा भला कहते हैं और तबलीग़ वालों (यानी देवबन्दी हज़रात) को बुरा कहना दरहक़ीक़त कुरआन और हदीस को बुरा कहना है। क्योंकि इनके हर अ़मल पर कुरआन और हदीस शाहिद हैं। और तबलीग़ वालों की बुराई करना कुरआन पर तनक़ीद करना है जो कि हराम है और याद रखो जो भी आप को बुराई करते हुए मिलेंगे उनमें से अकसर वह हज़रात होंगे जो दीन के काम से जान चुराते हैं और दुनिया के कामों में ही ज़िन्दगी बसर करते हैं और दीन के मुक़ाबले में दुनिया की राहत को तर्जीह देते हैं और कुरआन और हदीस को तो बदल देते हैं मगर अपनी ज़िन्दगी को बदलना नहीं चाहते हैं। अल्लाह तआ़ला इन लोगों से उम्मत की हिफ़ाज़त फ़रमाये कि ख़ुद तो दीन की ख़िदमत नहीं करते और न दूसरों को ख़िदमत करने देते हैं। यह लोग तबलीग़ वालों के मुख़ालिफ़ नहीं हैं बल्कि कुरआन और हदीस के मुख़ालिफ़ हैं। वाह साहब! ख़ुद तो बदलते नहीं कुरआन को बदल देते हो।

तीसरी दलील घर की तालीम की ज़रूरत हदीस से:

(١٦) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا يَلْقَى احد بذنبٍ اعظمَ من جهالةِ أهله (احياء العلوم جلد دوم)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला के सामने कोई शख़्स अपने अहल व अ़याल को जाहिल रखने से बढ़ कर कोई गुनाह लेकर नहीं जायेगा।

मतलब साफ़ हो गया है कि घर की तालीम भी होनी चाहिये वरना अल्लाह तआ़ला के पास पकड़ होगी यही तबलीग़ वाले कहते हैं।

कारगुज़ारी और रवानगी की हक़ीक़त

हज़रात! हुज़ूरे अकरम स० का यह अमल हदीस पढ़ने से मालूम होता है कि हुज़ूरे अकरम स० भी जमाअत के रवाना करने से पहले इसके मक़सद और आदाब बयान करते थे जैसा कि हज़रत मआज़ रज़ि० का वाक़िआ है कि जब हुज़ूर स० ने हज़रत मआज़ रज़ि० और इनके दूसरे साथियों को यमन में तबलीग़े इसलाम के लिये क़ाज़ी बना कर भेजा तो पहले रवानगी की बातें बयान कीं कि यमन जाकर कैसे काम करना है और यमन वाले हज़रात से किस तरह सुलूक करना है और मज़ीद चन्द नसीहतें भी फ़रमाईं जो हदीस मशहूर व मअरूफ़ है। इसी तरह जब भी कोई लशकर जंग में जाता पहले इन हज़रात से रवानगी की बातें होतीं फिर रवाना किया जाता और यही अमल तबलीग़ वाले करते हैं और बअज़ हज़रात इनको काफ़िर और गुमराह कहते हैं। इन हज़रात को ग़ौर करना चाहिये कि जब हुज़ूर स० की सुन्नत को इख़्तियार करने वाले गुमराह हैं तो फिर राहे हक़ पर कौन होगा? क्या काफ़िर होंगे या सुन्नते रसूल की मुख़ालफ़त करने वाले? ख़ुदारा! ज़रा अल्लाह तआला से डरो कि इसमें ख़ुद की भी नाकामी है और उम्मत की भी, वरना आज उम्मत का हाल यह है कि वह इख़्तिलाफ़ में डूब रही है और जो उम्मते मुहम्मदिया स० के लिये सही फ़िक्र करे ज़ाहिर है कि अल्लाह तआला उसकी दुनिया और आख़िरत दुरुस्त फ़रमायेंगे।

और अब मस्अला कारगुज़ारी का है कि क्या इसका सुबूत है या नहीं तो मैं इसको भी हदीस से बयान करता हूं।

(١٧)عن جابر رضی اللّٰہ عنہ قال خرجنا فی سفر فاصاب رَجُلاً مِنَّا حجرًا فشجَّهٗ فی رأسِہٖ فَاحْتَلَمَ فسأل اصحابَہٗ ھل تجدون لی رخصۃً فی التَّیَمُّمِ قالوا ما نجد لک رخصۃً وانت تقدر علی الماءِ فَاغْتَسل فمات فلمَّا قدمنا

على النبي صلى الله عليه وسلم اخبر بذلك قال قتلوه قتلهم الله الا سالوا اذ لم تعلم تعلموا فانما شفاء العي السؤال انما كان يكفيه ان يتيمم ويعصب على جرحه خرقة ثم يمسح عليها ويغسل سائر جسده.

(مشكوٰة شريف، بخارى شريف)

तर्जुमा:– हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि हम चन्द सहाबा सफ़र में निकले (रास्ते में एक हादसा पेश आया) हम में से एक साहब को पत्थर लगा जिस ने उनके सर को ज़ख़्मी कर दिया और फिर उनको गुस्ल की हाजत पेश आई उन्होंने अपने कुछ साथियों से पूछा कि क्या तुम लोग मेरे लिये तयम्मुम की सुहूलत पाते हो साथियों ने जवाब दिया कि हम समझते हैं कि तयम्मुम की सुहूलत तुम्हारे लिये नहीं है तुम्हें तो पानी हासिल है इसलिये इन साहब ने गुस्ल कर लिया और (इस पानी के इस्तेमाल की वजह से) उनकी जान परवाज़ कर गई। फिर हम लोग जब नबी करीम स० की ख़िदमत में पहुंचे और आपको कारगुज़ारी सुनाई गई यानी ख़बर दी गई (जब यह हज़रात कारगुज़ारी दे चुके तो) हुज़ूर स० ने फ़रमाया मार डाला तुम लोगों ने उस आदमी को अल्लाह तआला इनको मारे तुम को जब मसअला मालूम नहीं था तो मालूम क्यों नहीं किया? नादानी और लाइल्मी की बीमारी का इलाज इसके अलावा कुछ नहीं कि पूछ लिया जाये उस शख़्स को यह काफ़ी हो जाता कि वह तयम्मुम करता और ज़ख़्म पर पट्टी बांध कर उस पर मसह करता और बाक़ी तमाम बदन धो लेता।

देखिये इस जमाअत ने कारगुज़ारी दी तो जो गलतिया थीं हुज़ूर स० ने उनको दूर फ़रमा दिया और तबलीग़ वाले भी ऐसा ही करते हैं कि जब जमाअत आती है उसकी कारगुज़ारी लेते हैं और फिर ग़लतियों पर इसलाह की जाती है और यह सुन्नत

रसूल स० है।

और कारगुज़ारी वाला अ़मल ख़ुलफ़ाये राशिदीन ने भी किया जैसा कि हज़रत उ़मर रज़ि० की तारीख़ से मालूम होता है और यही अ़क्ल के मुवाफ़िक़ भी है कि जिस काम के लिये आपने किसी को भेजा है उसकी पूछ ताछ की जाये कि किस तरह से काम अन्जाम दिया और हम इस तरह करते भी हैं।

दूसरी दलील कुरआन से, रवानगी और कारगुज़ारी पर

रवानगी का मक़सद यह है कि जमाअ़त वालों को मालूम हो जाये कि इसको कहां जाना है और किस तरह काम करना है?

दोस्तो! अगर हम लोग कुरआने करीम में ग़ौर व फ़िक्र करें तो मालूम होता है कि आ़लमे अरवाह और दुनिया और आ़लमे हश्र यह भी रवानगी और कारगुज़ारी ही है। वह कैसे? देखो जब अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों की जमाअ़त को दुनिया की तरफ़ भेजना चाहा तो पहले सबको आ़लमे अरवाह में रवानगी की बात करने के लिये जमा किया फिर अल्लाह तआ़ला ने यह बयान किया कि तुम को क्या करना है और कहां जाना है और किस के तरीक़ों पर अ़मल करना है और यह भी ज़ाहिर कर दिया कि फिर बाद में कारगुज़ारी भी देनी है और वह वक़्त आ़लमे हश्र का होगा।

आयत ﴿أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوا بَلَىٰ﴾ जब अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों को आ़लमे अरवाह में जमा किया तो यह हो गई रवानगी वाली बात, फिर जब इस आयत को देखा जाये तो मालूम होता है कि अल्लाह तआ़ला ने रवानगी की बातों में ज़ाहिर कर दिया कि मैं तुम्हारी जमाअ़त को कहां भेज रहा हूं और वहां पर क्या अ़मल

करना है यह भी ज़ाहिर कर दिया इस आयत के ज़रिये कि जो
गवाही तुमने यहां दी है यानी मेरे वाहिद होने की इस पर अमल
करना है यह काम करना है इन्सानों को जमाअ़त में जाकर, और
दूसरी बात जमाअ़त वाले यह कहते हैं कि अमीर की बात मान
कर चलो हक़ बातों में। नाजाइज़ अम्र में, इताअ़त जाइज़ नहीं
बल्कि हराम है इसी तरह अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हुज़ूर स०
के ज़रिये इस आयत की तफ़सीर मिश्कात शरीफ़ में है سارسل
اليكم رُسُلي يذكرونكم عهدي وميثاقي कि मैं भेजूंगा तुम्हारी तरफ़
अपने रसूलों को जो तुम को मेरा अ़हद व पैमान याद दिलायेंगे।
इस तफ़सीर के ज़रिये मालूम हुआ कि इन्सानों की जमाअ़त के
लिये अमीर अल्लाह तआ़ला ने रसूलों को बना कर भेजा है और
जमाअ़ते तबलीग़ वाले भी ऐसा ही करते हैं एक को जो
बा–सलाहियत हो उसको अमीर बनाते हैं जो कि हुज़ूरे अकरम
स० की सुन्नत भी है कि हर जमाअ़त का हुज़ूर स० ने अमीर
मुतअ़य्यन किया था ख़ैर इससे तो रवानगी की बात मालूम हुई
कारगुज़ारी की बात बाक़ी है और इस आयत के अगले हिस्से से
यह भी मुदल्लल हो जाता है कि कारगुज़ारी वाला अ़मल अल्लाह
तआ़ला ने फ़रमाया ﴿أَنْ تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غَافِلِينَ﴾ कि तुम
लोग कारगुज़ारी के वक़्त कहो कि हम तो ग़ाफ़िल थे आप की
बातो से (यानी क़ियामत के दिन कहो) क़ियामत भी एक क़िस्म
की कारगुज़ारी ही तो है कि जमाअ़ते इन्सानी को जवाब देना
होगा कि क्या काम करके आई। उस वक़्त बअ़ज़ को शाबाशी
मिलेगी और बअ़ज़ को अ़ज़ाब दिया जायेगा।

दोस्तो! इस आयत से भी कारगुज़ारी और रवानगी का अ़मल
साबित होता है और यह काम जमाअ़त वाले भी करते हैं तो क्या
यह हज़रात ग़लत करते हैं नहीं तो फिर क्या तुम हक़ को रोकना

चाहते हो। याद रखो इस दीन की अल्लाह तआला ने ज़िम्मेदारी ली है कि हम इसकी हिफ़ाज़त करेंगे। हासिदीन से और काफ़िरीन से।

तबलीग़ वालों की तशकील पर ऐतिराज़

(١٨) عن ابی هريرة رضی الله عنه قال جاء رجل الى النبی صلی الله عليه وسلم فحث عليه فقال رجل عندی كذا وكذا قال فما بقی فی المجلس رجل الاتصدق عليه بما قل او كثر فقال رسول الله صلی الله عليه وسلم من استن خيرا فَاستُنَّ به كان له اجره كاملا ومن أُجورِ من استَنّ به ولا ينقص من اجورهم شيئاً ومن استُنَّ به سنة سيئة فاستن به فعليه وِزْرُه كاملاً ومن اوزار الذی استن به ولا ينقص من اوزارهم شيئاً .

(ابن ماجه ، باب من سَن سُنّةً حسنةً الخ)

तर्जुमा:– हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक आदमी आप स० के पास आया पस आप स० ने (उस आदमी की गुरबत की वजह से सदक़ा देने पर सहाबा रज़ि० को) उभारा पस एक आदमी ने कहा मेरी तरफ़ से इतना इतना है (माल या अनाज) हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि उस मजलिस में कोई शख़्स भी बाक़ी नहीं रहा मगर उनमें से हर एक ने इसको सदक़ा दिया जो भी हो सका। क़लील या कसीर मिक़दार में। पस आप स० ने फ़रमाया जो कोई उम्दा तरीक़ा फैलाये और उस तरीक़े पर लोग अमल करें तो होगा इसके लिये भी कामिल व मुकम्मल सवाब का हिस्सा इनके सवाब के बक़द्र जिन्होंने इस तरीक़े पर अमल किया और कम नहीं किया जायेगा अमल करने वालों के सवाब में से कुछ भी और जिसने ईजाद किया बुरा तरीक़ा पस लोगों ने इस पर अमल किया पस (इसका शुरू करने वाले) पर होगा कामिल व मुकम्मल इसका गुनाह (मुराद इस

फ़ेअल के फैलाने का और ख़ुद इसके अमल करने का) और हिस्सा होगा इनके गुनाहों में से जिन्होंने इस तरीक़े पर अमल किया और आमिलीन के गुनाहों में से कुछ भी कम न होगा।

हज़रात! मैं ने बहुत से मोअतरिज़ीन को यह कहते हुए सुना है कि तबलीग़ वाले यह जो तशकील के वक़्त कहते हैं कि भाई हर नेक अमल में जो पहले आगे बढ़ेगा तो इसके लिये बाद वाले का भी सवाब हासिल होगा। और कहते हैं जो तशकील में पहले नाम लिखवायेगा इसके लिये इसको देखकर बाद में नाम लिखवाने वालों का भी सवाब हासिल होगा। क्योंकि उसने दूसरों को पहले खड़े होकर हिम्मत अता की अब इस जुमले पर मोअतरिज़ बोल उठता है कि तबलीग़ वाले जो दिल में आता है कह देते हैं और हक़ीक़त तो यह है कि इस क़ौल की कोई हक़ीक़त नहीं है कि किसी अव्वल वाले को इसके बाद वाले का सवाब हासिल होगा। अब मैं इन मोअतरिज़ीन से इस हदीस के ज़रिये सामने आकर कहता हूं कि ओ जाहिलो! अबू जहल की तरह हक़ बात को पसे पुश्त डाल कर बे–बुनियाद ऐतिराज़ क्यों करते हो? क्या तुमने सिहाहे सित्तह (हदीस की छः सही किताबें) भी नहीं देखी हैं या सिर्फ़ तुममें से बअ़ज़ ने क़ब्र को थाम लिया और बअ़ज़ ने अपनी मर्ज़ी की तफ़सीर और सहाबा रज़ि० पर तनक़ीद करने को और बअ़ज़ ने सिर्फ़ झूठे अहले हदीस होने के नारे को ही दीने कामिल समझ रखा है जो भी ऐतिराज़ करते हो इसकी बुनियाद दो चीज़ों में से एक पर या कभी दोनों पर होती है एक तो है इनाद, और दूसरी चीज़ है जहल। या तो तुम इनाद की बुनियाद पर हक़ के जानने के बावुजूद तबलीग़ वालों पर ऐतिराज़ करते हो या फिर तुम अपनी जिहालत व कमज़र्फ़ी की बिना पर ऐतिराज़ करते हो अब मुझ को ख़ुद तुम ही बताओ क्या

यह हदीस इस बात को नहीं बता रही है कि जो किसी दूसरे के अमले ख़ैर करने का ज़रिया बनता है तो उसके लिये भी दूसरे के अमल का सवाब मुक़द्दर होता है। क्या आपने नहीं देखा कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया, उस वक़्त जबकि पूरी मजलिस में खड़े होकर एक आदमी ने सदक़ा देने के लिये अपना नाम पेश किया उसको देख कर दूसरे हज़रात ने भी नाम पेश किए कि हम भी सदक़ा देंगे और उन्होंने दिया। इसके बाद आप स० ने वही बात फ़रमाई जो तबलीग़ वाले कहते हैं। आप स० ने फ़रमाया जिसने किसी उम्दा तरीक़े की बुनियाद डाली तो इस तरीक़े पर जितने खड़े होंगे, अमल करेंगे इन तमाम का सवाब इसको भी हासिल होगा उनको तो अपना हिस्सा बग़ैर कमी के मिलेगा ही मगर इस अव्वल वाले शख़्स को अपने हिस्से के अलावा दूसरे के अमल का सवाब भी मिलेगा और ऐसा ही बुरे तरीक़े को ईजाद करने का अन्जाम है, कि इसको इस के अमल का गुनाह हासिल होगा और जो इस बुरे तरीक़े पर अमल करेगा उसको भी इनके बुरे अमल करने का हिस्सा मिलेगा और आमिलीन को अलग से मुकम्मल गुनाह मिलेगा ख़ैर मालूम हुआ कि अगर कोई शख़्स किसी अमले ख़ैर के करने में मुक़द्दम होगा इसके लिये बाद में इसको देखकर अमल करने वालों का सवाब हासिल होगा अब इस हदीस से तबलीग़ वालों की यह बात कि जो तशकील के वक़्त पहले नाम लिखवायेगा उसको बाद में नाम लिखवाने वालों का भी सवाब हासिल होगा क्योंकि उसने दूसरों में ख़ैर को करने की एक तरह की हिम्मत पैदा की इसलिये यह उनके बराबर इस अमल की वजह से सवाब का मुस्तहिक़ बना दिया जाता है। यह कहना सही है।

अमीर की फ़ज़ीलत

قال الله تعالى

﴿يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْآ اَطِيْعُوا اللهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِى الْاَمْرِ مِنْكُمْ الخ﴾ (پاره ٥)

दोस्तो! तबलीग़ वाले हज़रात कहते हैं कि अमीर कैसा भी हो चाहे काला हो चाहे फ़कीर हो चाहे जिस कमी का हामिल हो इसकी इताअ़त करो जाइज चीज़ों में और नाजाइज़ चीज़ों में इताअ़त जाइज़ नहीं है और तबलीग़ वाले जो तबलीग़ में जाने वाली जमाअ़त के लिये एक अमीर तैय करते हैं वह भी हदीस से साबित है कि हुज़ूर स० जब भी किसी लशकर को जंग के लिये भेजा करते तो पहले इसका अमीर मुतअ़य्यन फ़रमाते। अल्हमदु लिल्लाह, तबलीग़ वाले भी इस का ख़्याल रख कर जमाअ़तों के अमीर तैय करते हैं यह काम मुवाफ़िक़े कुरआन और हदीस है।

तबलीग़ वाले गश्त में एक शख़्स को मुतकल्लिम बनाते हैं

इसकी दो दलीलें हैं एक से मुतकल्लिम का सुबूत होता है और दूसरे से मुतकल्लिम की फ़ज़ीलत ज़ाहिर होती है। कुरआने करीम में इरशाद है :-

﴿وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِيْ هٰرُوْنَ اَخِي اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِيْ وَاَشْرِكْهُ فِيْٓ اَمْرِيْ كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا﴾

तर्जुमाः- और दे मुझको एक काम बनाने वाला मेरे घर में से मेरे भाई हारून को उससे मज़बूत कर मेरी कमर और शरीक कर इसको मेरे काम में कि तेरी पाक ज़ात का बयान करें हम बहुत सा और याद करें हम तुझको बहुत सा।

हज़रत मूसा अलै० की ज़बान में लुकनत (तोतलापन) थी।

बचपन मे जलने की वजह से, इसलिये हज़रत मूसा अलै० ने दावते तबलीग़ के लिये फ़िरऔन की क़ौम के वास्ते एक मुतकल्लिम तलब किया जो फ़सीहुल्लिसान हो और हज़रत हारून अलै० फ़सीहुल्लिसान थे और उम्र में हज़रत मूसा अलै० से बड़े थे। जब अल्लाह तआला ने हज़रत हारून अलै० को भी तबलीग़ के लिये और नुबूव्वत के लिये कुबूल किया तो इन दोनों की जमाअत को और तीसरा खुद अल्लाह तआला। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे साथ हूं तुम जाओ और दावत दो मेरी तरफ़ से यह कुल तीन अफ़राद की जमाअत हो गई। अब इस काम का अमीर अल्लाह तआला और रहबर मूसा अलै० और मुतकल्लिम हज़रत हारून अलै० हैं। हज़रत मूसा अलै० के सवाल से मालूम हुआ कि मुतकल्लिम फ़सीहूल्लिसान और उम्दा ज़बान वाला होना चाहिये कि इससे दूसरे पर ग़लत असर न हो और बात को इत्मीनान बख़्श तरीक़े से समझने पर क़ादिर हो और एक बात यह ज़ाहिर हुई कि दावते तबलीग़ के साथ ज़िक्रुल्लाह भी ज़रूरी है जब तो कुरआन में है, ﴿وَأَشْرِكْهُ فِي أَمْرِي﴾ कि हारून को तबलीग़ के काम में मेरा साथी बना, जब तबलीग़ का साथी मिला और अब तबलीग़ करने का वक़्त आयेगा तो हम तेरी ख़ूब पाकी बयान करेंगे और तेरा ज़िक्र करेंगे इसी को अल्लाह तआला ने इन कलिमात से बयान फ़रमाया ﴿كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيرًا وَنَذْكُرَكَ كَثِيرًا﴾ कि हम तेरी दावत के साथ बहुत पाकी भी बयान करते हैं और तेरा ख़ूब ज़िक्र भी करते हैं इससे मालूम हुआ कि दावते दीन के साथ ज़िक्रुल्लाह को बहुत तअल्लुक़ है और अलहम्दुलिल्लाह तबलीग़ वाले इसका हुक्म भी करते हैं और ख़ूब अमल भी करते हैं कि जब भी गश्त में जायेंगे ज़िक्र करते रहेंगे। ताकि अल्लाह तआला के बन्दे का दिल दीन की बात सीखने और समझने के

लिये नर्म हो जाये और वह अपनी आख़िरत की भी तैयारी कर ले जैसा कि दुनिया की तैयारी करता है और आख़िरत ही असली ठिकाना है मुसलमानों का।

ख़ैर मुतकल्लिम की इससे बढ़कर और क्या फ़ज़ीलत हो सकती है कि हुज़ूर स० भी हर दम मुतकल्लिम रहे कि ख़ुद दीन की दावत देते और लोगों की बुरी भली सुनते। और अलहम्दुलिल्लाह, आज यही काम तबलीग़ में हो रहा है जो नबियों वाला है। अल्लाह तआला तबलीग़ वालों को इस्तिक़ामत नसीब फ़रमाये।

और दूसरी जगह यह यानी है—

﴿وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلاً مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ﴾

अल्लाह तआला ने फ़रमाया, उस मुतकल्लिम से किस की बात अच्छी हो सकती है जो अल्लाह तआला की तरफ़ दावत देता है।

दोस्तो! देखो अल्लाह तआला ने इस आयत में दीन के मुतकल्लिम की तारीफ़ फ़रमाई। चाहे वह गश्त का मुतकल्लिम हो या बयान करने वाला हो दोनों इस तारीफ़ में दाख़िल हैं कि अल्लाह तआला को तमामतर कलाम से उसका कलाम अच्छा लगता है जो अल्लाह तआला की तरफ़ दावत देता है मगर यहां पर एक आलीमाना सवाल पैदा होता है कि आपने मुतकल्लिम किसका तर्जुमा किया? सवाल सही है, जवाब यह है कि दोस्तो! "सर्फ़" में यह क़ाईदा है कि "मसदर" या तो फ़ाइल के मअ़ना में होगा या मफ़ऊल के मअ़ना में होगा और क़ौल मसदर है। अगर क़ौल से फ़ाइल मुराद लिया जाये तो होगा क़ाईल यानी दीनी बात कहने वाला और अगर मफ़ऊल के मअ़ना मुराद लिये जायें तो मुराद हुआ मक़ूला यानी वह दीन की बात जो कही गई हो

मगर यहां जो निशानियां हैं इनसे फ़ाइल के मअ़ना मुराद लेना बेहतर है और फ़ाइल की सूरत में तर्जुमा वही होगा जो मैं ने किया यानी मुतकल्लिम चाहे गशत वाला हो या बयान करने वाला हो. या वअ़ज़ करने वाला हो या दर्स व तदरीस देने वाला हो।

रेहबर की फ़ज़ीलत

(۱۹) عن ابی ذر رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم تَبَسُّمُكَ فِیْ وجهِ اخيك صدقةٌ وامْرُكَ بالمعروف صدقةٌ ونهيك عن المنكر صدقةٌ وارشادُكَ الرَّجلَ فی ارض الضلال لك صدقةٌ ونصْرُكَ الرجلَ الرَّدِیِّ البصر صدقةٌ (مشکوٰة شریف)

तर्जुमाः— हज़रत अबूज़र रज़ि० बयान फ़रमाते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया कि तेरा अपने मुसलमान भाई की तरफ़ मुस्कुराकर देखना सदक़ा है और तेरा किसी को ख़ैर का हुक्म करना सदक़ा है और तेरा किसी को बुराई से रोकना सदक़ा है और तेरी रहबरी करना किसी आदमी की ख़ता वाली जगह से सही जगह की तरफ़, सदक़ा है और तेरा मदद करना कमज़ोर नज़र वाले की, सदक़ा है।

दोस्तो! इन तमाम अफ़आल के अन्दर एक रबहरी भी है जो सही राह दिखाने का नाम है यहां पर सदक़ा उस रहबरी को बताया गया है जो आ़म लोगों को सही राह दिखा दे और जो अल्लाह तआ़ला की राह में अल्लाह तआ़ला के लिये अल्लाह तआ़ला के बन्दों को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रहबरी करते हैं उनकी कितनी फ़ज़ीलत होगी वह अल्लाह तआ़ला ही बेहतर जानने वाला है (अल्लाह तआ़ला के बन्दों की रहबरी दीन के सीखने के लिये करना जैसे आ़लिम के पास भेजना और तबलीगी गश्त में गश्त वालों की घरों की रहबरी करना)

और एक हदीस मिश्कात मे है–

(٢٠) عن ابن مسعود الانصاری رضی اللہ عنہ قال جاء رجل الی النبی صلی اللہ علیہ وسلم فقال انہٗ أبدع بی فاحملنی فقال ما عندی فقال رجل یا رسول اللہ انا أدلّہ علی من یحملہ فقال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم من دل علی خیر فلہ مثل اجر فاعلِہ (مشکوٰۃ)

तर्जुमाः– हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० बयान फ़रमाते हैं कि एक आदमी हुज़ूर स० के पास आया और कहने लगा की मेरी सवारी का जानवर नाकारा हो गया है मुझको कोई सवारी दे दीजिये, हुज़ूर स० ने फ़रमाया मेरे पास कोई सवारी नहीं है, पस एक आदमी ने कहा कि ऐ अल्लाह तआला के रसूल क्या मैं इसकी रहबरी करूं ऐसे शख़्स की तरफ़ जो उसको सवारी देगा, रसूलुल्लाह स० ने फ़रमाया, जो शख़्स किसी की रहबरी करेगा ख़ैर की तरफ़, तो उसको इतना ही सवाब मिलेगा जितना काम करने वाले को मिलेगा। यह है रहबरी की फ़ज़ीलत जिसको तबलीग़ वाले गश्त में इख़्तियार करते हैं और आपको मालूम हो गया है कि रहबर का सबूत भी हदीस से है और इस की फ़ज़ीलत भी ज़ाहिर हो गई।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि अगर तीन आदमी भी सफ़र में हों तो एक को अमीर बनाओ

(٢١) عن ابن مسعود رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اذا کنتم ثلاثۃ فامروا احدکم (طبرانی، احیاء العلوم جلد دوم، ترمذی، مشکوٰۃ)

तर्जुमाः– हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० बयान फ़रमाते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया जब तुम तीन हो जाओ तो एक को अपना अमीर बना लो।

अकाबिरे सलफ़ का भी यही तरीक़ा रहा है और आज अल्हमदुलिल्लाह तबलीग़ वाले इस पर आमिल हैं और तबलीग़ वालों की बात इस हदीस से साबित हो गई कि तीन आदमी भी हों तो एक को अमीर बनाना चाहिये वरना उनका अमीर शैतान होता है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि अमारत तलब न करो

(٢٢)عن عبد الرحمن بن سمرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يا ابا عبد الرحمن لا تسأل الإمارة إن أوتيتها من غير مسألة أعنت عليها وإن أوتيتها عن مسألة وكلت عليها (بخاری ومسلم)

तर्जुमा:— हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया ऐ अबू अब्दुर्रहमान अमारत मत तलब करना अगर तुझे बग़ैर मांगे अमारत मिली तो तेरी इस पर मदद की जायेगी और मांगने से हासिल हुई तो तू उसी के हवाले कर दिया जायेगा।

इस हदीस को बयान करते हुए तबलीग़ वाले कहते हैं कि अमारत तलब न करो बल्कि अगर अमारत दी जाये तो इसमें मददे ख़ुदावन्दी होती है और जो ख़ुद अमारत मांगता है तो उसके साथ मददे ख़ुदा का साया नहीं होता है क्योंकि उसको अमारत उसकी मुतालबे पर दी गई है और जो तलब न करे उसको अमारत अल्लाह तआला की तरफ़ से दी जाती है तो साथ में मदद भी होती है और एक बात यह याद रहे कि अमीर अगर कम इल्म भी हो और आप बा—इल्म, या अमीर घटिया दर्जे का हो और आप अअ़ला ख़ानदान के, या अमीर साहब ग़रीब हों आप अमीर यानी मालदार हों तब भी आपको हक़ बातों में उसकी इताअ़त करनी होगी अगरचे वह कम इल्म हो, या ग़रीब हो, जब अमीर बन गया तो अब उसकी इताअ़त हक़ बातों में ज़रूरी है। ग़लत बातों में नहीं।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला की राह में जो क़दम गर्द आलूद होगा उसको दोज़ख़ की आग छू नहीं सकती

(۲۳) عن ابی عبس قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ما اغبرّت قدما عبد فی سبیل اللہ فلا تمسّہ النارُ (مشکوٰۃ شریف)

तर्जुमाः— हुज़ूर स० ने फरमाया जिस बन्दे के पांव खुदा की राह में गर्द आलूद हो जाते हैं तो फिर उसको दोज़ख़ की आग छू नहीं सकती।

हज़रात! पहले तो यह समझ लो कि तबलीग़ वाले हज़रात जो हदीस नक़ल करते हैं वह इस हदीस को पेश करते हैं और लोगों को यह बात अ़जूबा लगती है और यहां तक तसव्वुर करते हैं कि जो तबलीग़ वाले हदीस कहकर बयान कर रहे हैं यह हदीस ही नहीं है इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि वह हज़रात उ़लमा से सुनते हैं और इसको बयानात में नक़ल करते हैं और जब इनसे हवाला तलब किया जाये तो कहते हैं कि यह हदीस हमने उ़लमा से सुनी है इस जवाब से मोअ़तरिज़ यह तसव्वुर करता है बल्कि मशहूर करता फिरता है कि तबलीग़ वाले झूठी अहादीस नक़ल करते हैं। यह तरीक़ा इन्तिहाई ग़लत है बल्कि एहले तबलीग़ जो रिवायत नक़ल करते हैं वह मौजूद है और मैंने भी इन हदीसों को जमा किया जिनके बारे में ऐतिराज़ होते हैं। और यह बात हदीस की दलील से है। और रहा फ़ी—सबीलिल्लाह का मसला यह अल्लाह तआ़ला की राह और जिहाद के लिये इस्तेमाल होता है मगर आप जिहाद का ज़िक्र ही नहीं करते बल्कि सिर्फ़ तबलीग़ ही तबलीग़ कहते हैं? जवाबे अव्वल फ़ी सबीलिल्लाह का इस्तेमाल जिहाद के लिये भी होता है और

तबलीग फी–सबीलिल्लाह के लिये भी, खुद एक हदीस मे हुज़ूर स० ने जिहाद को नफ्स के साथ मुजाहिदे के लिये इस्तेमाल किया है और तबलीगी काम नफ़्स के साथ मुक़ाबला करने का ही नाम है। ख़ैर जब जिहाद से सहाबा रज़ि० लौट रहे थे तो हुज़ूर स० ने कहा कि हम जिहादे असग़र से जिहादे अकबर की तरफ़ लौट रहे हैं और जिहाद को यानी क़िताल को हुज़ूर स० ने असग़र यानी छोटा जिहाद कहा और नफ़्स के साथ जिहाद को जिहादे अकबर यानी बड़ा जिहाद कहा क्योंकि जिस तरह जिहाद में दुश्मनों से क़िताल करना पड़ता हैं इसी तरह तबलीग वग़ैरा में शैतान से और नफ़्स से क़िताल करना पड़ता है। और ज़ाहिर बात है कि शैतान से जिहाद करना दुश्मनों से जिहाद करने से ज़्यादा दुश्वार है क्योंकि जिहाद में एक बार मुख़ालिफ़ क़त्ल हो गया तो फिर इससे एक क़िस्म की बे–ख़ौफ़ी हो जाती है और आदमी ग़ैर मअमूली तौर पर मुतमइन हो जाता है मगर जिहादे अकबर यानी नफ़्स के साथ जिहाद को, शैतान और नफ़्स के साथ हर लम्हे जारी रखना ज़रूरी है वरना पता नहीं कब शैतान ग़ालिब आ जाये और आपके ईमान पर हमलावर होकर गुमराह कर डाले और दूसरी बात यह है कि जिहादे अकबर यानी जिहादे नफ़्स पर शैतान ग़ालिब आकर किसी भी अक़ीदे को फ़ासिद कर दे और फिर जिहादे असग़र यानी क़िताल में जाता है और क़त्ल भी हो जाता है मगर वह मुसलिम नहीं मरा बल्कि वह अपने फ़ासिद अक़ीदे की वजह से जिहादे अकबर की कमी की वजह से वह जिहादे असग़र में क़त्ल भी हुआ तो इसको कोई अज्र नहीं मिलेगा बल्कि दोज़ख़ का मुस्तहिक़ हो जाता है। मिसाल से समझिये एक शख़्स है इसके दिल में यह शैतानी हमला हुआ कि कुरआन अल्लाह तआला की किताब नहीं बल्कि वह तो हुज़ूर स०

का कलाम है और वह इस अकीदे को हक तसव्वुर करता है और जिहादे असगर मे शरीक होता है और कत्ल हो जाता है। तो बताओ वह जन्नती है या दोजखी? ज़ाहिर बात है कि दोजखी है इसकी क्या वजह हुई कि जिहाद में कत्ल के बावुजूद दोजख वाजिब हो गई। जवाब ज़ाहिर है कि वह जिहादे अकबर में मग़लूब हो गया था इससे यह बात ज़ाहिर हुई कि जिहादे अकबर लाज़िम है जिहादे असग़र के लिये और लाज़िम और मलज़ूम का हुक्म क़रीब क़रीब होता है यानी एक का दूसरे पर इतलाक़ जाईज़ है दलीले अक़ली के तौर पर भी. हदीसे जिहाद को जिहादे अकबर के लिये इस्तेमाल कर सकते हैं फ़ज़ाइल के लिये न कि अक़ाईद के तौर पर यानी फ़ज़ीलत के लिये और इसलिये कि लोग कुरबानियां पेश करें और यह सबको मालूम है कि इन्सान हरीस है और अब एक सवाल पैदा होता है कि इन्सान हरीस है तो क्या उसको वह सवाब हासिल होगा जो तुमने बयान किया?

जवाब– जब अल्लाह तआ़ला जिहादे असग़र में इतना सवाब दे सकते हैं तो क्या जिहादे अकबर में कमी करेंगे? नहीं! هو الغنى हां अगर यह अक़ीदा हो जाये कि यह हदीस जिहादे असग़र के बारे में नहीं है तो यह तहरीफ़ होगी और यह अक़ीदा सख़्त ग़लत और गुमराहकुन होगा जमाअ़ती हज़रात सिर्फ़ फ़ज़ीलत के तौर पर इस्तेमाल करते हैं और वह अक़ीदे मोअ़तबर होंगे जो जमाअ़ती उ़लमा के होंगे जाहिलों से कोई बहस न होगी क्योंकि असली जमाअ़त उ़लमा की है और जमाअ़त वाले हज़रात जमाअ़ती उ़लमा की ही बातें नक़ल करते हैं। ख़ैर इस मौज़ूअ़ पर आगे मुफ़स्सल कलाम होगा। और यह बात भी याद रहे कि इस हदीस के रावी हज़रत अबू अ़बस रज़ि० ने ख़ुद इस हदीस को

जुमा की तरफ़ चलने में जो गुबार लगे उस पर महमूल किया है। देखिये बुखारी 124

तबलीग़ वाले कहते हैं कि अल्लाह तआला की राह में एक ख़र्च करने का बदला सात सौ ख़र्च करने का दर्जा रखता है

(۲۴) عن خزیم بن فاتک قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم

مَنْ اَنْفَقَ فِى سَبِيْلِ اللّٰهِ كُتِبَ لَهٗ بِسَبْعِ مِائَةِ ضِعْفٍ (مشکوٰۃ شریف)

तर्जुमाः— हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया जो शख़्स अल्लाह तआला की राह में अपने माल में से कुछ भी ख़र्च करेगा उसके लिये सात सौ गुना सवाब लिखा जायेगा।

यानी अल्लाह तआला की राह में एक रूपया या कोई चीज़ ख़र्च करना सात सौ गुना का सवाब रखता है और अल्लाह तआला के रास्ते का असल मक़सद दीन का आम होना है। चाहे तबलीग़ के ज़रिये हो या जिहाद करने के ज़रिये हो। क्योंकि जिहाद का इतलाक़ मअन्नफ़्स पर भी होता है इस पर बहुत कसीर उलमा कारगर हैं और तबलीग़ वालों का असल मक़सद यह होता है कि लोग अल्लाह तआला की राह में कुर्बानी देने वाले बनें। यह मुराद नहीं होता कि जिहाद की कोई हक़ीकत नहीं। बल्कि ऐसा नहीं, जब जिहाद फ़र्ज़ हो जाता है तो उस वक़्त जिहाद से बढ़कर कोइ चीज़ नहीं होती यहां तक कि जान जो सबसे अफ़ज़ल अज़ीम नेमत है उसको भी कुरबान करना फ़र्ज़ हो जाता है और यह मुसलमानों का अक़ीदा है कि जिहाद हुज़ूर स० के ज़माने से फ़र्ज़ है। और क़ियामत तक फ़र्ज़ रहेगा मगर जो तबलीग़ में बयान किया जाता है वह सिर्फ़ अअमाल और कुरबानियों पर उभारने के लिये है। क्योंकि इस तरह इस्तेमाल

उलमा से मनकूल है। उलमा-ए-उम्मत में अकसर अकाबिर हजरात ने जिहाद की हदीसों को दीगर इबादतों के लिए इस्तेमाल किया है।

(दूसरी दलील)

(۲۵) عن ابی سعید الخدری رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم اذا اَسْلَمَ العبد فَحَسُنَ اسلامُه یُکَفِّرُ الله عند کُلِّ سَیِّئَةٍ کان زَلَفها وکان بعد ذلك القصاص الحسنةُ بعَشْرِ امثالها الی سبع مِأةِ ضِعفٍ الی اضعافٍ کثیرةٍ والسَّیِّئَة بمثلها اِلاَّ ان یَتَجاوز الله عنها (بخاری شریف)

तर्जुमा:- हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि उन्होंने रसूल स० से सुना आप स० फ़रमाते थे कि जब बन्दा इस्लाम कुबूल कर लेता है और उसका इस्लाम अच्छा होता है तो जो बुराइयां उसके लिये पहले की होती हैं अल्लाह तआला इस्लाम की बरकत से उन सबको माफ़ कर देता है और उसके बाद उसकी नेकियों और बदियों का हिसाब यह रहता है कि एक नेकी पर दस गुना से लेकर सात सौ गुना तक सवाब दिया जाता है और बुराई करने पर वह उसी एक बुराई की सज़ा का मुस्तहिक़ होता है मगर यह कि अल्लाह तआला इससे भी उसको दरगुज़र फ़रमा दें।

नोट: नेकी की शक्ल आम है चाहे वह पैसों की शक्ल में हो या कुरबानी की शक्ल में हो या पढ़ने पढ़ाने की शक्ल में हो वग़ैरा. शक्लों में हर एक का दर्जा एक से लेकर सात सौ तक होगा।

हदीस शरीफ़ से तबलीग़ वालों का क़ौल साबित हो गया कि एक नेकी पर अल्लाह तआला सात सौ गुनाह अज्र अता फ़रमायेगा, उनके अक़वाल कोई खुद साख़्ता या मन घड़त नहीं हैं बल्कि हदीस से साबित हैं। और इन अहादीस से ही तबलीग़ वाले बयान करते हैं। पहली हदीस में अगरचे लफ़्ज़ फी सबीलिल्लाह

में जिहाद भी दाखिल है लेकिन इस हदीस ने उमूमियत का फ़ायदा दिया कि तमाम नेकियां चाहे किसी भी तरह की हों वह सात सौ दर्जे की सलाहियत रखती है और अगर इस नेक अमली में इख़्लास कम हो तो फिर दर्जात भी कम होते हैं और अगर अल्लाह तआला सात सौ से ऊपर भी अता करना चाहे तो दर्जात अता कर सकता है अगर इस अमल में इतना असर हो।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि दाईं जानिब से हर काम की शुरूआत होनी चाहिये

(۲٦) عن انس رضی اللہ عنہ قال حُلِبَتْ لرسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم شاۃٌ داجن وشِیْبَ لَبَنُھا بماءٍ من البئر التی فی دار انس فَاَعطٰی رسولُ اللہ القَدَحَ فشَرِبَ وعلی یَسَارِہٖ ابو بکر وعن یمینہٖ اَعرَابِیٌّ فقال عمر اَعطِ ابا بکر یا رسول اللہ فاَعطٰی الاعرابیَّ الّذی علی یمینہ ثُمَّ قال الایمن فَالاَیمنُ (مشکوٰۃ شریف)

तर्जुमाः– हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर स० के वास्ते घर की पली हुई बकरी का दूध निकाला और दूध को उस कुंए के पानी में मिलाया गया जो हज़रत अनस रज़ि० के घर में था इसके बाद हुज़ूर स० की ख़िदमत में प्याला पेश किया आप स० ने इसमें से कुछ पिया और आप के दाईं जानिब देहाती था और बाईं जानिब अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० थे। हज़रत उ़मर रज़ि० ने कहा अबूबक्र को दीजिये लेकिन हुज़ूर स० ने देहाती को दिया जो आपके दाईं जानिब था इसके बाद फ़रमाया जो दाईं जानिब है वह ज़्यादा हक़दार है।

इस हदीस से तबलीग़ी हज़रात की एक आ़म बात साबित हो गई कि तबलीग़ वाले कहते हैं कि हर ख़ैर का काम दाईं तरफ़ से शुरू करो अगर मशवरा भी करते हैं तो दाईं तरफ़ से ही

शुरू करते हैं कुछ तकसीम भी करते हैं तो दाईं जानिब से ही बल्कि अकसर काम दाईं तरफ़ से ही अन्जाम देते हैं और हदीस भी इसकी ताईद कर रही है।

अब यह कहना कि तबलीग़ वालों के पास हदीस नहीं है यह बात ग़लत है ख़ैर तुम तबलीग़ वालों को क्या बख़्शो जब तुमने इमाम अअज़म अबू हनीफ़ा रह० को नहीं बख़्शा। कि हज़रत इमाम अअज़म अबू हनीफ़ा रह० को सतरह हदीसें ही याद थी। लो इनसे मिलो! आज कल का दस साल का बच्चा पचास हदीसें याद कर लेता है और कुरआन का हाफ़िज़ हो जाता है मगर फिर भी इन अहमकों की अक़ल देखो कि उस इमाम पर ऐतिराज़ करते हैं जिससे तमाम दुनिया के फ़ुक़हा व मुजतहिदीन व मुहद्दिसीन फ़ाइदा उठाते रहे हैं। जब इमाम मालिक से बहस करने बैठ गये तो दलीलों के ज़रिये हज़रत इमाम मालिक रह० को सर्दी के मौसम में पसीना आ गया था और जब हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह० चले गये तो तलबा ने पूछा यह कौन थे (ऐ अहमको सुनो!) हज़रत इमाम मलिक रह० ने कहा यह वह शख़्स है कि अगर यह इस पत्थर के सुतून को सोने का कह दे तो साबित करके दिखा देगा। यह हैं मेरे इमाम अबू हनीफ़ा रह० कि सतरह हदीस के बावुजूद दुनिया के अज़ीम मुहद्दिस का पसीना निकाल दिया। और कहो ज़बान तुम्हारी है जो चाहो कहो।

उमूमी और ख़ुसूसी बात मिनल कुरआन

قال الله تعالى

﴿ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا﴾ (پارہ ۲۹)

तर्जुमा:– अल्लाह तआला ने फ़रमाया, फिर मैंने उनको बुलाया खुले आम फिर मैंने ऐलानिया तौर पर दावत दी यानी वाज़ेह तौर पर और छुपकर, कहा चुपके से (यानी तन्हाई में) यह

नूह अलै० का कौल है जिसको कुरआने करीम ने नकल किया है।

दोस्तो! इस आयत से तबलीग़ वालों की दो बातें साबित हुईं एक तो उमूमी बात और दूसरी ख़ुसूसी बात। तबलीग़ वाले यह जो कहते हैं कि उमूमी बात में लोगों को दीन पर काम करने के लिये उभारो और जो लोग उमूमी बात में हाज़िर न हुए हों उनको तन्हाई में जाकर कुर्बानी पर लाने की बात बयान करो और उसको आख़िरत की फ़िक्र दिलाओ, उसको तबलीग़ वाले ख़ुसूसी बात कहते हैं। अब देखो इस आयत से यह दोनों बातें किस तरह साबित हुईं।

उमूमी बात की दलील : ﴿ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنتُ لَهُمْ﴾ कि मैंने मजमे में खुलकर और बुलन्द आवाज़ से लोगों को दावत दी। यानी पैग़ामे दीन दिया और तबलीग़ वाले इसको उमूमी बात मानते हैं। और दूसरी क़िस्म ख़ुसूसी बात, इसकी ताईद के लिये कुरआन ने फ़रमाया यानी इसकी ताईद हो रही है इस आयत के आख़री जुमले से ﴿وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا﴾ और मैं ने छिप कर दावत दी छिपकर दावत देना और "सिर्र" के मअ़ना आते हैं ख़ामोशी के और भेद के, और इस तरह की दावत को तबलीग़ वाले ख़ुसूसी दावत कहते हैं क्योंकि इसमें आम लोगों को बयान नहीं किया जाता, बल्कि चन्द लोगों के घर पर जाकर उनको इन्फ़िरादी तरीक़े पर बात करके दावत दी जाती है। और उसको हज़रत नूह अलै० ने ﴿أَسْرَرْتُ﴾ से बयान किया कि मैंने छिपकर दावत दी इसका क्या मतलब है इसका यही तो मतलब है कि मैंने आम ख़िताब के ज़रिये समझाया और छिपकर यानी अकेलेपन में मिलकर ख़ामोशी से समझाया कि भाइयो कलिमा पढ़ो। कामयाब हो जाओगे। और तबलीग़ वाले सही इसी तरह बयान करते हैं अगरचे मुख़ालिफ़ीन की नज़रों को यह ग़लत

नज़र आता है, अरे भाई बअज़ ऐसे भी थे कि उनको मुहम्मद स० का काम भी ग़लत नज़र आता था उनकी नज़र से व ग मुहम्मद स० का काम ग़लत साबित हुआ? नहीं बल्कि ख़ुद को सही कहने वाले मर गये और उनकी वह नज़र भी मरकर हलाक हो गई, और जिसको वह ग़लत समझे थे वह आज पुरे आलम पर फ़ाइक़ है। यही हाल तबलीग़ वालों के साथ भी है इसलिये तबलीग़ वालों को ख़ौफ़ करने की कोई बात नहीं, जिस तरह मुहम्मद स० के काम को ग़लत जानने वाले मरकर हलाक हुए तबलीग़ वालों को ग़लत कहने वालों का भी यही हाल होगा और वह मरकर हलाक होंगे। इन्शाल्लाह, और दीने मुहम्मदी यानी दावत व तबलीग़ सब पर ग़ालिब होगी क्योंकि यह काम हक़ तरीक़ों से हो रहा है। बरख़िलाफ़ दूसरों के कि जिनके बानी ख़ुद बेअ़मल थे और उनके अ़क़ाईद भी ख़िलाफ़े दीन थे और उनके नज़रियात भी फ़ासिद और ग़लीज़ थे। बरख़िलाफ़ हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब नानौतवी रह० बानी दारूल उ़लूम देवबन्द और हज़रत मौलाना इल्यास साहब रह० बानी जमाअ़ते तबलीग़, एक शरीफ़ तबीअ़त और सालेह और उ़म्दा अ़क़ीदा और उ़म्दा अ़मली नमूना थे उन्होंने कभी भी क़ब्र को सज्दा करने की इजाज़त देकर कुरआन और हदीस की मुख़ालफ़त नहीं की उन्होंने हुज़ूर स० को आ़लिमुलग़ैब कह कर कुरआन और हदीस की मुख़ालफ़त नहीं की। उन्होंने अपनी राय से तफ़सीर का ऐलान करके कुरआन और हदीस की मुख़ालफ़त नहीं की, उन्होंने अंबिया और सहाबा रज़ि० और सालिहीन पर उंगलियां उठाकर कुरआन और हदीस की मुख़ालफ़त नहीं की, उन्होंने कभी मुहर्रम की यानी मातमे हसन व हुसैन की इजाज़त के ज़रिये कुरआन और हदीस की मुख़ालफ़त नहीं की। यानी इन बानियों ने और इनके मानने

वालों ने न कभी इन कामों को किया और न हुक्म देकर दुश्मने खुदा बने और जिन लोगों ने हज़रत नानौतवी रह० और हजरत मौलाना इल्यास साहब रह० को ग़लत साबित किया है उन्होंने इन पर झुठे अक़ीदे बांध कर तोहमत लगाई है और जो तोहमत इन लोगों ने हम पर और हमारे अकाबिर पर लगाई है इन फ़ासिद अक़ीदों में न हम मुबतला हैं और न हमारे अकाबिर मुबतला थे अगर इनके अक़ीदे फ़ासिद होते तो इनके मानने वालों के अक़ीदे भी वही होने चाहियें मगर न यह फ़ासिद अक़ीदे हमारे अकाबिर के हैं और न हमारे, जिनको यह लेकर हम पर तोहमत बांध रहे हैं पहले तो ग़लत राह पर थे और मज़ीद अपने नफ़्स पर यह ज़ुल्म करते हैं कि हम पर झूठी तौहमत लगाते हैं। डूबो और डूबो! जब तुमको डूबना ही पसन्द है तो हम क्या कर सकते हैं।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि जो भी काम अल्लाह की मर्ज़ी से होगा वह इबादत है

बअज़ हज़रात यह ऐतिराज़ करते हैं कि तबलीग़ वालों से हमने यह सुना है कि जो भी काम अल्लाह तआला के और मुहम्मद स० के हुक्म के मुवाफ़िक होगा वह इबादत है इसकी दलील क्या है? यह कौन सी हदीस से साबित है? इसकी क्या कोई हकीक़त है या तबलीग़ वालों की मन घड़त तक़रीर है? इन हज़रात के ऐतिराज़ के लिये बन्दे ने किसी हदीस को पेश नहीं किया। मगर इससे भी मज़बूत दलील कुरआन की एक आयत मुझको हाथ लगी है जिसने इस मसले को साफ़ कर दिया कि तबलीग़ वालों का यह कहना बिल्कुल शरीअत के मुवाफ़िक़ है इस बात को अल्लाह तआला ने इस तरह बयान किया है--

قال الله تعالى عزوجل

﴿افرءيت من اتخذ الهه هواه واضله الله على علم﴾ (پاره ١٨)

तर्जुमा:– क्या नहीं देखा आपने (ऐ मुहम्मद स०) उस शख़्स को जिसने अपने नफ़्स को यानी ख़्वाहिशात को मअ़बूद बनाया उसको अल्लाह तआ़ला ने राहे हक़ से हटा दिया (और अल्लाह तआ़ला इसके बावुजूद कि उसको) जानता बूझता है।

देखो यहां पर अल्लाह तआ़ला ने नफ़्स के मुताबिक़ अमल करने को मअ़बूद बनाने से तअ़बीर फ़रमाया है जिससे साफ़ मालूम हो गया कि जब नफ़्स की ताबेअ़दारी को अल्लाह तआ़ला ने मअ़बुद यानी इबादत से बयान फ़रमाया तो क्या अल्लाह तआ़ला की ताबेअ़दारी इबादत न होगी? क्या अल्लाह तआ़ला के हुक्म के मुवाफ़िक़ अमल करना इबादत न हुआ ज़रूर अल्लाह तआ़ला का हुक्म बजा लाना भी इबादत है नमाज़ तो इबादत की एक शक्ल है न कि इबादत, सिर्फ़ रुकूअ़ व सज्दे का नाम है। बल्कि इबादत नाम मअ़बूद की फ़रमाबरदारी का है बात साफ हो गई। और दूसरी अक़ली दलील यह है कि हम लोग रोज़ा रखते हैं, ज़कात देते हैं, इनको हम इबादत कहते हैं क्या रोज़ों में सज्दा है? नहीं, सिर्फ़ सज्दे को या नमाज़ को इबादत के लिये ख़ास करना हिमाक़त है बल्कि इबादत का लफ़्ज़ आ़म है और इसका फ़ैज़ भी आ़म है न कि सिर्फ़ इबादत को नमाज़ के लिये ख़ास कर लिया जाये। अब वाज़ेह और साफ़ नतीजा यह निकला कि हर वह काम जो भी अल्लाह तआ़ला के दीन के मुवाफ़िक़ होगा वह इबादत कहलायेगा। अब मोअ़तरिज़ को बात वाज़ेह तौर पर समझ में आ गई होगी कि तबलीग़ वालों का यह कहना कि हर मुवाफ़िक़े दीन अ़मल, इबादत है। चाहे कमाना हो या खाना हो या सोना हो, यह तमाम अफ़आ़ल जब मुवाफ़िक़े शरीअ़त होंगे तो यह काम भी इबादत कहलायेंगे। और इस पर सवाब हासिल

होगा और अगर इन कामो को ही आप खिलाफे शरीअत कहें तो सिर्फ खाने पीने जैसे काम रह जायेंगे। इन पर इबादत का इतलाक़ न होगा और न सवाब हासिल होगा जब फ़ेअले इबादत होगा तो सवाब हासिल होगा और जब सवाब हासिल हो रहा है तो वह इबादत ही तो है बात अजहर मिन अशम्स है।

तबलीग़ वालों के ऐलान पर ऐतिराज़

तबलीग़ वाले ऐलान करते हुए कहते हैं कि नमाज़ के बाद तमाम हज़रात तशरीफ़ रखें इन्शाल्लाह दीन की बात होगी, और बअज़ कहते हैं कि ईमान व यक़ीन की बात होगी। इस पर बअज़ ढेड़ शाने हज़रात बड़े रोअ़ब से कहते हैं कि क्या मियां! अब तक हम ग़ैर दीनी बात व अ़मल कर रहे थे जो तुम हमको अब दीन की बात समझाने आये हो। बताओ कितनी हिमाक़त वाली बात है यह भी कोई ऐतिराज़ है अब आपसे में एक सवाल करता हूं जिसमें इसका जवाब खुद मौजूद है, आप दिन में सैकड़ों बार अलहम्दुलिल्लाह शरीफ़ पढ़ते हो और इसमें आप यह भी दुआ़ करते हो ﴿اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ﴾ कि ऐ अल्लाह तआ़ला हमको सही राह की हिदायत फ़रमा, बताओ क्या आप अब तक ग़ैर मुसतक़ीम राह पर थे जो हिदायत की दुआ़ मांग रहे हो यही जवाब तबलीग़ वालों के ऐलान का है। ख़ैर जो सवाल किया है इसका मैं खुद जवाब देता हूं। सुनो आप इस आयत के पढ़ने से पहले भी हिदायत पर थे और अब जब पढ़ रहे हो तब भी हिदायत पर हो मगर इसका मतलब यह होगा कि ऐ अल्लाह तू ने अब तक हिदायत पर रखा अब मुस्तक़बिल के लिये भी मैं हिदायत की दुआ़ करता हूं और यही जवाब तबलीग़ वालों पर होने वाले ऐतिराज़ का है कि अब तक तो दीन का अ़मल हो रहा था मगर इन्शाल्लाह तआ़ला मुस्तक़बिल मेंभी यही अ़मल होगा अगर इसको दीन

की बात न कहें तो क्या कुफ्र की बात कहें। सही कहा है कहने वाले ने कि ऐतिराज़ करने वाला अन्धा होता है।

बअज़ लोग कहते हैं कि तबलीग़ वाले जमाअ़त में ख़त लिखने से मना करते हैं

दोस्तो! बअ़ज़ हज़रात बिल्कुल बेजा ऐतिराज़ करते हैं कि जमाअ़त वाले ख़त लिखने से मना करते हैं हालांकि यह बिल्कुल झूठ है और बयान करने वाले में इनाद की अ़लामत है जो ग़लत बातों को तबलीग़ की तरफ़ मन्सूब करते हैं हालांकि तबलीग़ वाले ख़त ही नहीं बल्कि हफ़्ते में कई बार फ़ोन करते हैं। अलबत्ता किसी का ज़ाती उसूल हो तो अलग बात है जैसे मौलाना अशरफ़ अ़ली साहब थानवी रह० की तरह कि आप रह० ख़त लिखने को और पढ़ने को तालीम का नुक़सान समझते थे इसका मतलब यह नहीं कि आप रह० जिस मदरसे में तालीम हासिल करते थे उस मदरसे का यह उसूल हो कि तालिबे इल्म ख़त न लिखे बल्कि यह ख़ुद सिर्फ़ उनका अपना अ़मल था। और तबलीग़ में भी इस तरह का कोई उसूल नहीं है कि ख़त न लिखो बल्कि अगर कोई करता हो तो वह इसका ख़ुद का अ़मल है।

आयते जिहाद पर ऐतिराज़ और इसका तहक़ीक़ी जवाब

बअ़ज़ हज़रात तबलीग़ वालों पर यह ऐतिराज़ करते हैं कि तबलीग़ वाले हज़रात आयाते जिहाद को और हदीसे जिहाद को तबलीग़ के काम पर सैट करते हैं यह खुली तहरीफ़ है वह आयत कौनसी है, एक तो यह आयत है।

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا الخ (پارہ ۲۱)

तर्जुमा:– (शैख़ुलहिन्द) और जिन्होंने मेहनत की हमारे वास्ते हम समझा देंगे उनको अपनी राहें।

और एक दूसरी आयत:

وَجَاهِدُوا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ (پاره١٧)

तर्जुमा:– (शैख़ुलहिन्द) और मेहनत करो अल्लाह तआला के वास्ते जैसे कि चाहिये इसके वास्ते मेहनत।

दोस्तो! पहली आयत को लो जिसको तबलीग़ में अकसर बयान किया जाता है और मैं इस पर बहस करने से पहले एक बात की तरफ़ इशारा कर दूं वह यह कि इस आयत की जो सूरत शरीफ़ है उसका नाम "अ़नकबूत" है। और यह मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई है और यह बात रोज़े रोशन की तरह साफ़ है कि मक्का मुकर्रमा में आयते जिहाद नाज़िल नहीं हुई यानी मक्का मुकर्रमा में जिहाद की कोई बात ही कुरआन ने नहीं छेड़ी क्योंकि यह दुनिया दारूल अस्बाब है और मक्का मुकर्रमा में जिहाद के असबाब बहुत कमज़ोर थे इसलिये कुरआन ने ख़ामोशी इख़्तियार की और मदीना मुनव्वरा में चन्द साल के बाद जिहाद के बारे में बात छेड़ी। यहां तक की सुलहे हुदैबिया भी मदीने जाने के बाद हुई और मुसलमानों को दबकर सुलह करनी पड़ी। क्योंकि कुरआन ने अब तक जिहाद का हुक्म नहीं दिया था फिर मज़ीद ज़माना गुज़रने के बाद जिहाद का हुक्म नाज़िल हुआ जब मुसलमान अलहम्दुलिल्लाह पावर फुल थे। अब नतीजा यह निकला कि इस आयत में जिहाद से क़िताल मुराद नहीं है बल्कि जिहादे अकबर मुराद है और वह क्या है? वह है जिहाद मअ़न्नफ़्स जिस को हदीस ने जिहाद ही नहीं बल्कि जिहादे अकबर कहा, और काफ़िर से जिहाद जो किया जाता है उसको जिहादे असग़र कहा इसकी क्या वजह है? इसकी यह वजह है

कि जिहाद मअन्नफ्स में इस्तक़ामत और हर वक़्त इताअत का जज़्बा चाहिये वरना कभी इताअत का जज़्बा कमज़ोर हो जाये तो आपका दुश्मन यानी नफ़्स आप पर ग़ालिब आ जायेगा और अगर ज़्यादा ही ग़ालिब आ गया तो सीधा दोज़ख़ में ले जाकर ही दम लेगा इतना ख़तरनाक है और रहा जिहाद मअलकाफ़िर वह ऐसा फ़ेअल है जिसकी ज़रूरत सिर्फ़ किताल के वक़्त पड़ती है। और जिहाद मअन्नफ़्स ज़्यादा दुश्वार और मुश्किल है कुफ़्फ़ार के साथ जिहाद से, क्योंकि अगर आपको यह मालूम हो कि यह शख़्स हुज़ूर स० की शान में गाली बकता है और आपके पास हथियार भी है तो आप फ़ौरन गुस्से में आकर इसकी गर्दन बदन से जुदा कर दोगे। जिस तरह हज़रत उमर रज़ि० ने किया था। और जिहाद मअन्नफ़्स पर फ़ौरन अमल करना बहुत दुश्वार है जैसे कि हज़रत यूसुफ़ अलै० का वाक़िआ है कि ज़ुलेख़ा आपको झूठी बातों में फंसा कर कमरे में लाई और वह भी सात कमरों के अन्दर और तमाम दरवाज़े बन्द कर दिये और आराम गाह पर पहुंचने के बाद अपने बदन के कपड़ों को अपने बदन से उतारा और आपको माइल करने का काम इख़्तियार करने लगी। अब बताओ सात कमरों के अन्दर बन्द हों और दोनों जवान हों और नंगे बदन औरत से शहवत जोश मार रही हो और किसी का ख़ौफ़ भी नहीं और एक तरफ़ से ईजाब भी हो चुका है सिर्फ़ क़ुबूल करने की देर है और नफ़्स भी ख़्वाहिश करे तो बताओ क्या ऐसे वक़्त में सही सालिम वापस आना मुम्किन है? अब ऐसी हालत में इस पर ग़ालिब आना इस जिहाद मअलकाफ़िर से बहुत सख़्त है। लेकिन हज़रत यूसुफ़ अलै० के साथ मददे ख़ुदा थी और आप नबी बनने वाले थे फ़ौरन वहां से भाग पड़े। अल्लाह तआला ने कोशिश करने वाले को रास्ता दिखा दिया। यानी अल्लाह तआला ने बन्द

दरवाजो को खोल दिया. यही तो मतलब ﴿لنهدينهم﴾ से है कि यह कोशिश करने के बाद मदद भेजना हमारा काम है और यही तबलीग़ वालों का कहना है। ख़ैर बात यह हुई कि जिहाद मअ़लकाफ़िर से जिहाद मअ़न्नफ़्स सख़्त है। और यही फ़रमान हुज़ूर स० का है, क़िताले असग़र है और मुजाहेदा बिन्नफ़्स यह जिहादे अकबर है। और यह बात भी वाज़ेह हो चुकी है कि यह आयत मक्की है और मक्का में जिहाद का हुक्म नाज़िल नहीं हुआ था नतीजा यह निकला कि इस आयत का जिहाद मअ़न्नफ़्स पर इतलाक़ करना हक़ीक़त में है और जिहाद मअ़लकुफ़्फ़ार पर इतलाक़ मजाज़न है लेकिन हाल यह है कि चोर उलटा कोतवाल को डांटे कि इस आयत का तबलीग़ वाले जिहाद मअ़न्नफ़्स पर इतलाक़ करके कुरआन में तहरीफ़ करते हैं हालांकि इस आयत को जिहाद के हक़ीक़ी मअ़ना यानी क़िताल में ख़ास करना दुरुस्त नहीं है और अगर तबलीग़ वालों ने किसी जिहाद की आयत का या हदीस का जिहाद मअ़न्नफ़्स पर इतलाक़ कर लिया तो फ़ज़ीलतन इतलाक़ करना बहुत बड़े बड़े आ़लिमों से इस तरह साबित है कि उन्होंने भी जिहाद की हदीसों को मुख़्तलिफ़ मक़ामात में इस्तेमाल किया है और मज़ीद तशरीह के लिये जलालैन के हाशिया नम्बर 21 पेज नम्बर 340 पर देखिये यह इबारत लिखी हुई है।

قوله والذين جاهدوا الخ قال المفسرون ان هٰذه الآية نزلَتْ قبل الامر بالجهاد لكونها مكيةً حينئذٍ فالمراد بالجهاد فيها جهاد النفس قال الحسن الجهاد مخالفة الهوىٰ وقال الفضيل بن العياض والذين جاهدوا فى طلب العلم قوله لنهدينّهم اى سُبُلَ العملِ به وقال سهل بن عبد الله والذين جاهدوا فى طاعتنا لنهدينَّهم سبل ثوابنا وقيل والذين جاهدوا فيما عَلِمُوا لنهدينّهم الى مالم يعلموا لما فى الحديث من عمل بما علم عَلّمه الله علم

مالم يعلم

अल्लाह तआला का फ़रमान है कि ﴿وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا﴾ आख़िर तक. इस बारे में मुफ़स्सिरीन ने यह फ़रमाया है कि यह आयत जिहाद का हुक्म नाज़िल होने से पहले नाज़िल हुई है इसकी वजह यह बयान की गई है कि यह मक्किया है (और मैं पहले कह चुका हूं कि जिहाद का हुक्म मदीने में नाज़िल हुआ है न कि मक्के में) और इस से मुराद वह जिहाद है जिस में जिहाद मअन्नफ़्स हुआ (इस से मालूम हुआ कि मुफ़स्सिरीन इस आयत को आयते जिहाद कहते ही नहीं मगर मोअतरिज़ को झूठी बातें मनसूब करने की आदत पहले से ही लगी है कि यह आयते जिहाद है. ख़ैर)

हज़रत हसन बसरी रह० ने फ़रमाया इस आयत में जिहाद से मुराद जो नफ़्स के मुक़ाबले में किया जाये और हज़रत अ़ल्लामा फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह० ने ﴿وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا﴾ की तफ़सीर में यह फ़रमाया इससे वह लोग मुराद हैं जो तलबे इल्म में मुजाहेदा और कोशिश और तकलीफ़ें बरदाश्त करते हैं। और हज़रत अ़ल्लामा अयाज़ रह० ने फ़रमाया ﴿لَنَهْدِيَنَّهُمْ﴾ से मुराद है कि जब यह लोग इल्म हासिल करने में मुजाहिदा करेंगे तो हम इनको रास्ता दिखा देंगे। इल्म पर अमल करने का। और अ़ल्लामा सहल बिन अ़ब्दुल्लाह रह० ने इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाया है कि इस आयत से मुराद अल्लाह तआ़ला के हुक्मों की फ़रमांबरदारी है और ﴿لَنَهْدِيَنَّهُمْ﴾ से मुराद अल्लाह तआ़ला का बख़शिश वाला रास्ता यानी सवाब का रास्ता है और यह क़ौल भी मरवी है कि ﴿وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا﴾ से मुराद वह इल्म है जिस पर अमल किया जाये और ﴿لَنَهْدِيَنَّهُمْ﴾ से मुराद यह है कि अल्लाह तआ़ला उसकी उस इल्म तक रसाई फ़रमा देगा जिस इल्म तक

उसकी रसाई नहीं हुई है। और इस क़ौल को साबित करने के लिये हज़रत ने यह हदीस पेश की जिसका तर्जुमा यह है जिस शख़्स ने अमल किया उस इल्म पर जिसको उस ने पढ़ा। अल्लाह तआला उसकी बरकत से उसको वह इल्म भी अता फ़रमा देगा जिसको वह नहीं जानता था।

और इस आयत की तशरीह देखिये मआरिफ़ुल कुरआन पेज नम्बर 414 ﴿وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا﴾ आख़िर तक हज़रत मुफ़्ती अअज़म पाकिस्तान मौलाना मुहम्मद शफ़ी साहब रह० फ़रमाते हैं :

जिहाद के असली मअ़ना दीन में पेश आने वाली रूकावटों को दूर करने के लिये अपनी पूरी तवानाई सर्फ़ करने के हैं इस में वह रूकावटें भी दाख़िल हैं जो काफ़िरों व फ़ाजिरों की तरफ़ से पेश आती हैं। कुफ़्फ़ार से जंग व मुक़ातला उसका अअ़ला फ़र्द है और वह रूकावटें भी दाख़िल हैं जो अपने नफ़्स और शैतान की तरफ़ से पेश आती हैं। जिहाद की इन दोनों क़िस्मों (यानी जिहाद मअ़न्नफ़्स और जिहाद मअ़लकुफ़्फ़ार) पर इस आयत में वअ़दा है कि हम जिहाद करने वालों को अपने रास्ते की हिदायत दे देते हैं। यानी जिन मौक़ो पर ख़ैर व शर या हक़ व बातिल या नफ़ा व नुकसान में इलतिबास होता है अक़लमन्द इन्सान सोचता है कि किस राह को इख़्तियार करूं ऐसे मौक़े में अल्लाह तआ़ला अपनी राह में जिहाद करने वालों को सही सीधी बे-ख़तर राह बता देता है यानी उनके दिलों को उसी तरफ़ फेर देता है जिस में उनके लिये ख़ैर व बरकत हो। और हज़रत अबुदर्दा रज़ि० ने इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाया कि अल्लाह तआला की तरफ़ से जो इल्म लोगों को दिया गया है जो लोग अपने इल्म पर अ़मल करने में जिहाद करते हैं हम उनके लिये दूसरे उ़लूम भी

मुनकशिफ़ कर देते हैं जो अब तक हासिल नहीं थे।

हज़रात! देखिये इस आयत के बारे में हज़रात मुफ़स्सिरीन ने यह बात साफ़ कर दी है कि यह आयत जिहाद के लिये नाज़िल नहीं हुई इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि यह मक्की सुरत है और मक्की ज़िन्दगी में जिहाद मअ़लकुफ़्फ़ार का हुक्म ही नहीं दिया गया है लेकिन तअ़ज्जुब है मोअ़तरिज़ीन की जिहालत पर जो झूठी बात के ज़रिये इस्लाम को ख़त्म करने की कोशिश करते हैं कि यह आयत जिहाद की है हालांकि यह आयत जिहाद की नहीं है यह आयत मुजाहेदा मअ़न्नफ़्स के लिये नाज़िल हुई है अगरचे आप मजाज़न जिहाद मअ़लकुफ़्फ़ार के मुतरादिफ़ मअ़ना की वजह से दाख़िल कर सकते हो कि जिहाद मअ़लकुफ़्फ़ार में भी मशक़्क़त है और यह भी फ़ेअ़ले जिहाद है मगर इसका नुज़ूल ख़ास तौर पर जिहाद मअ़न्नफ़्स के लिये है।

अब आइये दूसरी आयते शरीफ़ा की तरफ़:

﴿وَجَاهِدُوْا فِى اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ﴾ (پارہ۱۷)

तर्जुमा:– और मेहनत करो अल्लाह तआ़ला के वास्ते जैसी कि चाहिये इसके वास्ते मेहनत। (तर्जुमा शैख़ुल हिन्द)

हज़रात! यह आयत मदीना मुनव्वरा में नाज़िल हुई है और इस आयत को बहुत कम तबलीग़ वाले बयान करते हैं ज़्यादा तर बयान पहली वाली आयत का होता है अब इस में जिहाद का एक हद तक अहतिमाल है यक़ीने कामिल नहीं। क्योंकि इस आयत से पहले अल्लाह तआ़ला ने नमाज़ें पढ़ने और सज्दा और रूकूअ़ करने का हुक्म फ़रमा दिया है इससे मालूम होता है कि अल्लाह तआ़ला की इबादत को अच्छी तरह अन्जाम दो चाहे नमाज़ हो या रोज़ा या हज या ज़कात या जिहाद मअ़लकुफ़्फ़ार हो क्योंकि जिहाद मअ़लकुफ़्फ़ार भी इबादत है। ख़ैर, आयत के सियाक़ो

सबाक़ से यह बात वाज़ेह होती है कि इस आयत में भी जिहाद मअन्नफ्स ख़ास तौर पर और आम तौर पर जिहाद मअलकुफ्फार और दीगर मामलात मुराद हैं गाया कि यह आयत आम है जो सब को दाख़िल करती है लेकिन जिहाद मअन्नफ्स के लिये ख़ास इस वजह से कहा कि इसके आगे और पीछे वाले जुमले इस की ताईद कर रहे हैं और लुग़तन दूसरे अफ़आल भी दाख़िल हैं ख़ैर अब जलालैन पेज नम्बर 286 हाशिया नम्बर 18 पर आयें और अकाबिरे उम्मत के अक़वाल पेश हैं।

قال الامام الراغب الجهاد ثلاثة اَضْرُب مجاهدة العَدُوّ الظاهر ومجاهدة الشيطان ومجاهدة النفس وتدخل ثلثها فى قوله وجاهدوا فى الله حق جهاده (دلیل کے طور پر احادیث) فى الحديث جاهدوا الكفار بايديكم واَلْسِنَتِكُم وفى الحديث جاهدوا اَهْواءكَم كما تجاهدون اَعداءكم وعنه صلى الله عليه وسلم اَنَّهٗ رجع من غزوة تبوك فقال رجعنا من الجهاد الاصغر الى الجهاد الاكبر فجهاد النفس اَشَدُّ من جهاد الاعداء والشياطين وهو حملها على اتباع الاوامر والاجتناب عن النواهى.

तर्जुमाः— हज़रत अल्लामा इमाम राग़िब शैख़ु—लमुफ़स्सिरीन वल्मुहद्दिसीन ने फ़रमाया जिहाद की तीन क़िस्में हैं: एक जिहाद तो वह है जो दुश्मनों के साथ होता है और वह सब को मालूम है और दूसरा जिहाद वह है जो शैतान के साथ होता है। और तीसरा जिहाद वह होता है जो हवा यानी नफ़्स के साथ होता है और फ़रमाया इमाम राग़िब रह० ने यह तीनों जिहाद दाख़िल हैं अल्लाह तआला के इस क़ौल में ﴿وَجَاهِدُوْا فِى اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ﴾ आख़िर तक, हज़रत अल्लामा राग़िब रह० अपने क़ौल की ताईद के लिये हदीस पेश कर रहे हैं कि यह तीनों किस तरह दाख़िल हैं। हुज़ूर स० ने फ़रमाया जिहाद करो काफिर से, हाथों के ज़रिये और अपनी ज़बानों के ज़रिये। दूसरी हदीस में हुज़ूर स० ने

फ़रमाया जिहाद करो अपने नफ़्स के साथ जैसे कि तुम जिहाद करते हो अपने दुश्मनों के साथ (यानी जिस तरह तुम अपने मुक़ाबिल से किसी भी वक़्त बेख़ौफ़ नहीं होते हो इस तरह नफ़्स से भी किसी भी वक़्त बेख़ौफ़ होकर न बैठना वरना यह हलाक कर देगा और मालूम भी नहीं हो सकेगा। तीसरी हदीस, आप स० ने जंगे तबूक से वापसी में फ़रमाया कि हम लौटे हैं जिहादे असग़र से जिहादे अकबर की तरफ़ क्योंकि नफ़्स का जिहाद ज़्यादा सख़्त है दुश्मनों और शैतानों के जिहाद से। आप ने जिहाद बिन्नफ़्स को महमूल किया है। हुक्मे ख़ुदा और रसूल के इत्तिबाअ पर (यानी जिस चीज़ का हुक्म दिया गया हो उसको बजा लाना) और जिस चीज़ से मना किया गया हो उससे बचने पर महमूल किया) (जिहाद मअन्नफ़्स को)

और तफ़सीरे मज़हरी की इबारत देखो: ﴿وَجَاهِدُوا فِي اللهِ حَقَّ جِهَادِهِ﴾ पेज नम्बर 154 हज़रत मक़ातिल रह० और ज़हाक रह० ने कहा अल्लाह तआला के लिये काम करो जैसे कि काम करने का हक़ है। और उसकी इबादत करो जैसे कि इबादत करने का हक़ है और अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० ने कहा कि नफ़्स और नफ़सानी ख़्वाहिशात से जिहाद करना ही जिहादे अकबर और जिहाद का हक़ है (यही क़ौल तबलीग़ वालों का है)

और मज़ीद अल्लामा सनाउल्लाह साहब मज़हरी फ़रमाते हैं कि मैं कहता हूं कि जिहाद से सिर्फ़ जंग करना ही मुराद नहीं है। रफ़तारे आयत इस तख़सीस के ख़िलाफ़ है तरतीब आयत में ख़ास के बाद आम का ज़िक्र किया गया है पहले ﴿وَاسْجُدُوا وَارْكَعُوا﴾ फ़रमा कर नमाज़ का हुक्म दिया और इस के बाद आम इबादत का हुक्म दिया जिसमें नमाज़ भी दाख़िल है इसके बाद हर अमले ख़ैर को इख़्तियार करने की हिदायत फ़रमाई इस के

अन्दर अल्लाह तआ़ला के हुकूक़ बन्दों के हुकूक़, तमाम नमाज़ें, रोज़े, काफ़िरों से जंग, अख़लाक़े करीमा इख़्तियार करना और तमाम नेकियां दाख़िल हैं। और सुनन व मुस्तहब्बात को भी यह हुक्म शामिल है इसके बाद जिहाद का हुक्म दिया तो इस तरतीब बयान का लिहाज़ करते हुए कोई वजह नहीं कि जिहाद काफ़िरों से जंग के लिये मख़सूस समझ लिया जाये (और यही क़ौल तबलीग़ी उ़लमा का है और अहक़र ने क़ुरआन को ख़ास तौर पर इस लिये खोल कर उस वक़्त देखा कि इस आयत के इर्द गिर्द के मज़मून को देखें जब उस पर ग़ौर किया तो फ़ैसला यह निकला कि आयत का मक़सद तमाम इबादतें और अअ़माले सालेहा हैं न सिर्फ़ जिहाद मअ़लकुफ़्फ़ार) उसको मेहदूद करके उसके फ़ैज़े आ़म को ख़ास करना दुरुस्त न होगा और इस पर अकसर बड़े उ़लमा का अ़मल है और मआ़रिफ़ुल क़ुरआन में पेज नम्बर 289 जिल्द 6 पर देखो यह अक़वाल मौजूद हैं। बअज़ हज़रात मुफ़स्सिरीन ने इस जगह जिहाद के मअ़ना आ़म इबादत और अहकामे इलाही की तकमील में अपनी पूरी ताक़त इख़्लास के साथ ख़र्च करने के लिये हैं। और ज़ह्हाक रह० और मक़ातिल रह० ने फ़रमाया कि मुराद आयत की यह है कि ﴿اعلموا الله حق علمه واعملوه وأعبدوه حق عبادته﴾ यानी अ़मल करो अल्लाह तआ़ला के लिये जैसे कि उसका हक़ है और इबादत करो अल्लाह तआ़ला की जैसा कि उसका हक़ है।

और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० (जिनका हदीस में आज तक कोई मुक़ाबिल नहीं है कि हर एक पर कुछ न कुछ धब्बा ज़रूर लगा है यानी हर एक पर उ़लमा ने एक दूसरे पर तनक़ीद की है मगर अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० अलहनफ़ी पर किसी ने कोई ऐतिराज़ नहीं किया, यह हक़ीक़त है आपकी) ख़ैर

आपने इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाया कि यहां जिहाद से मुराद अपने नफ़्स और इसकी बेजा ख़्वाहिशात के मुकाबले में जिहाद करना है और यही जिहाद का हक़ है।

इमाम बग़वी रह० वग़ैरा हज़रात ने इस क़ौल की ताईद में एक हदीस भी हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० से नक़ल की है कि एक मरतबा सहाबा किराम रज़ि० की जमाअत जो जिहाद मअल्लकुफ़्फ़ार के लिये गई हुई थी वापस आई तो हुज़ूर स० ने फ़रमाया:

(٢٨) قدمتم خير مقدم من الجهاد الاصغر الى الجهاد الاكبر قال مجاهدة العبد الهواء (البيهقى)

तर्जुमाः— यानी तुम लोग ख़ूब वापस आये छोटे जिहाद से बड़े जिहाद की तरफ़। यानी अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात के मुक़ाबले जिहाद अब भी जारी है और इस तरह की और हदीसें भी हैं।

अब हज़रत अल्लामा मुहम्मद ज़करिया साहब रह० से चन्द कलिमात समाअत फ़रमायें।

हज़रत फ़रमाते हैं कि अहले इल्म से बड़ा तअज्जुब है कि वह फ़ी—सबीलिल्लाह अल्लाह के लफ़्ज़ को जिहाद बिलक़िताल के साथ मख़्सूस क़रार देते हैं जबकि नुसूसे कुरआनी और अहादीसे कसीरा इसके उमूम पर दलालत करती हैं और इस के क़ाईल साहबे तफ़सीरे मज़हरी भी हैं देखो (तफ़सीर में आयत की वज़ाहतें) दूसरी जगह हज़रत शैख़ ज़करिया साहब रह० फ़रमाते हैं कि इस स्याहकार के नज़दीक तो ख़ुरूज फ़ी—सबीलिल्लाह की आयात व अहादीस में यह लोग अपने तबलीग़ी सफ़रों को दाख़िल करें तो न कोई इसमें ऐतिराज़ है न कोई शुबह है और जहां तक इस आजिज़ की मालूमात का हासिल है वह मुफ़स्सिरीन व

मुहद्दिसीन के कलाम में फ़ी-सबीलिल्लाह का लफ़्ज़ क़िताल के साथ मख़्सूस नहीं पाता इससे अहले तबलीग़ का इन आयतों और रिवायतों से ख़ुरूज للتبليغ जो फ़ी-सबीलिल्लाह का अअ़ला फ़र्द है इस पर इस्तिदलाल करना बे-मौक़ा नहीं है (तबलीग़ी जमाअ़त पर ऐतिराज़ात के जवाब में यह इबारत मौजूद है)

और एक ऐतिराज़ यह होता है कि तबलीग़ वाले जिहाद की हदीसों को तबलीग़ के लिये इस्तेमाल करते हैं।

दोस्तो! हदीसों में अकसर जगह पर फ़ी-सबीलिल्लाह का लफ़्ज़ आया है जो हक़ीक़तन नहीं मगर मजाज़न तबलीग़ को भी शामिल है जैसा कि मौलाना ज़करिया साहब रह० ने इस इबारत में मुफ़स्सल और फ़ैसलाकुन बात बयान कर दी कि फ़ीसबीलिल्लाह का लफ़्ज़ मुहद्दिसीन के नज़दीक आ़म है जो तालिबे इलम को भी शामिल है और ख़ानक़ाह वालों को भी शामिल है और तबलीग़ वालों के लिये भी आ़म है इसलिये तबलीग़ वाले अहादीसे फ़ी-सबीलिल्लाह को मजाज़न तबलीग़ पर महमूल करते हैं। और जिहाद का हासिल भी दीन की इशाअ़त है और तबलीग़ में भी इशाअ़त दीन है इस ऐतिबार से इन दोनों के मअ़ना क़रीब क़रीब हैं और दोनों का एक ही हासिल है इसलिये हदीस में नफ़्स के मुक़ाबले को भी जिहाद कहा है।

बुख़ारी उठाकर देखो इसमें इमाम बुख़ारी ने भी जिहाद की हदीस को जुमा की नमाज़ के लिये इस्तेमाल किया है देखो باب المشى الى الجمعة में हज़रत अबू अबस रज़ि० की हदीस नक़ल फ़रमाई है।

(٢٨) مَنْ اُغْبِرَتْ قَدَمَاهُ فِى سبِيل اللّٰه حَرَّمَ اللّٰهُ على النار (بخارى شريف)

तर्जुमाः– जो शख़्स कि इसके दोनों पैर गुबार आलूद हो गये हों अल्लाह तआ़ला के रास्ते में, अल्लाह तआ़ला इस पर

दोजख की आग को हराम कर देते है।

देखो इस हदीस को इमाम बुखारी रह० ने जुमा के लिये चलने वाले कदमो पर महमूल किया है और इस फज़ीलत का इन को परवाना दिया है तो क्या तबलीग का काम नमाजे जुमा से कुछ कम दर्जा रखता है बल्कि यह काम जुमा से कई वुजूह से अफज़ल है।

1 जुमा में सिर्फ अपनी खैर और भलाई होती है और तबलीग में अपनी भी और दूसरों की भी खैर ख्वाही है और इस काम में दोनों का फायदा है दावत देने वालों को और दीन की बात सुनने वालों को।

2 नमाज़ जुमा सिर्फ जुमा का सवाब रखती है और तबलीग में जाकर अहले तबलीग जुमा भी पढ़ते हैं और अल्लाह की दावत भी देते हैं तो जुमा में एक खासियत हुई और तबलीग में दो खासियतें हैं जो ज़ाहिर हैं।

जब इमाम बुखारी रह० जिहाद की हदीस को एक खासियत वाली इबादत यानी जुमा की नमाज़ पर जिहाद के तअल्लुक को मुनतबिक कर सकते हैं तो अगर उलमा–ए–तबलीग दो खासियत वाली इबादत यानी दावते तबलीग के काम पर हदीसे जिहाद को महमूल करते हैं तो इन पर यह ऐतिराज़ क्यूं? क्या यह इन्साफ है कि एक को तो आप छोड़ दें और दूसरे को डांटें। यह इन्साफ और हकगोई नहीं है बल्कि नाइन्साफी है और तबलीग वालों से इनाद और दुश्मनी की अलामत है। जो फेअल इमाम बुखारी रह० और दीगर अइम्मा–ए–किराम ने किया इसको आप तहरीफ नहीं कहते हो मगर यही फेअल व कौल तबलीग वाले अदा करें तो इन पर तहरीफ का इलज़ाम लगाते हो हालांकि तबलीग वाले हज़रात अहादीसे जिहाद को तबलीग पर मजाज़न महमूल करते

है कि बअज़ तबलीग के अजज़ा का तअल्लुक जिहाद के बअज अजज़ा से है और इतलाक सिर्फ तबलीग वाले ही नहीं करते हैं बल्कि अपने वक़्त के बड़े बड़े उलमा ने जिहाद के मअना में तालिबे इल्म को और दीगर इबादात को दाखिल किया है जैसे कि मैं आख़िर में चन्द अकाबिर की फ़हरिस्त पेश करूंगा जिन्होंने जिहाद फी–सबीलिल्लाह में दीगर इबादात को दाख़िल किया है ख़ैर सबसे बड़ी दलील हदीस ही हो सकती है तो लीजिये हदीस:

(۲۹) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال سمعت رسول الله صلی الله علیه وسلم یقول من جاءَ مسجدی هذا لم یأتِ الّا لخیرٍ یتعلّمهٗ او یُعلّمهٗ فهو بمنزلۃِ المجاهد فی سبیل الله الخ (مشکوٰۃ، ابن ماجہ، بیہقی)

तर्जुमाः– हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० बयान करते हैं कि मैंने रसूलु ल्लाह स० को फ़रमाते हुए सुना जो शख़्स मेरी इस मस्जिद में आया (इससे आम मस्जिदें मुराद हैं मेरी मस्जिद से अलग करना है नसारा वग़ैरा की मस्जिदों को) और सिर्फ़ नेक काम के लिये आया कि इल्म को सीखे या सिखलाये तो वह सवाब में उस शख़्स की तरह है जो अल्लाह तआला की राह में जिहाद करे।

यह हदीस भी साफ़ बयान कर रही है कि तबलीगे दीन यानी सीखना और सिखाना जिहाद के दर्जे में है और तबलीग़ में यही अमल किया जाता है जब हुज़ूर स० तबलीग़ के काम को जिहाद का दर्जा दे रहे हैं तो यह बात साफ़ हो गई कि तबलीग़ के लिये जिहाद की हदीस को मजाज़न बयान करना दुरुस्त है क्योंकि दोनों के ज़रिये एक ही मक़सद हल हो रहा है और वह है इशाअते दीन क्योंकि दोनों भाई की तरह हैं इसलिये हुज़ूर स० ने तबलीग़ यानी जिहाद मअ़न्नफ़्स को जिहादे अकबर और क़िताल को असग़र कह कर दोनों का रिश्ता जोड़ दिया ।

खुलासा यह निकला कि पहली आयत ﴿وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا

لنهدينهم سبلنا के बारे में साफ़ और वाज़ेह तौर पर मालूम ह
चुका है कि यह आयत जिहाद के लिये नाज़िल नही हुई क्योंकि
यह आयत मक्की है और मक्का में बिल्कुल जिहाद का नाम व
निशान नहीं था और मुफ़स्सिरीन हज़रात के भी अक़वाल थे
जिसको मैंने तफ़सील से बयान कर दिया है और जब यह बात
साबित हो गई कि यह आयत जिहाद के लिये नाज़िल नहीं हुई
तो साबित हुआ कि फिर इससे मुराद जिहादे अकबर यानी जिहाद
मअन्नफ़्स पर और मजाज़न जिहाद मअल्लकुफ़्फ़ार पर इस का
इतलाक़ किया जा सकता है जिस तरह जिहादे असग़र की हदीस
को जिहादे अकबर के लिये इस्तेमाल कर लिया जाता है मजाज़न
अब यह आयत हक़ीक़त में हुई जिहाद मअन्नफ़्स के लिये जिसकी
बिना पर तबलीग़ वाले इसको अपने बयानात में बयान करते हैं
और मजाज़न इसका इतलाक़ क़िताल पर होगा और जो लोग इस
आयत को तबलीग़ के लिये इस्तेमाल करने को तहरीफ़ कहते हैं
उनकी यह बात दुरुस्त नहीं बल्कि तबलीग़ में यह आयत व
हदीस बयान करके जिहाद मअन्फ़्स के लिये खड़ा किया जाता है
और इसी वजह से वह बयान करते हैं और इस पर बहुत
बड़े–बड़े अकाबिर की जमाअत है जिनके नाम आख़िर में मज़कूर
हैं और रही दूसरी आयत ﴿وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ﴾ यह आयत
मदीना मुनव्वरा में नाज़िल हुई है अब इसमें जिहाद का एक हद
तक दख़ल है मुकम्मल तौर पर नहीं क्योंकि क़ुरआन की रफ़्तार
और गुफ़्तार जिहाद मअल्लकुफ़्फ़ार को नहीं बता रही है बल्कि
इससे पहले नमाज़ का ज़िक्र है इससे मालूम हुआ कि यहां पर
मुजाहिदे से मुराद तमाम इबादतें हैं न कि सिर्फ़ जिहाद
मअल्लकुफ़्फ़ार। इस बात को यानी इस आयत के साथ ख़ास
करने को अल्लामा मज़हरी ने ग़लत क़रार दिया और बहुत से

अकाबिर उलमा ने। और मजीद तशरीह देखनी हो तो तफसीरे मजहरी पेज नम्बर 154 सुरे हज में देख लेना और इससे पहले इनकी इबारत में नकल भी कर चुका हूं।

अब रहा मसअला अहादीस फी–सबीलिल्लाह वाली का इसका जवाब भी हो चुका जिस के जवाब में इमाम बुख़ारी रह० की हदीस पेश कर चुका हूं और हदीस में यह ज़िक्र कर दिया था कि तबलीग़ यानी सीखना सिखाना जिहाद फ़ी–सबीलिल्लाह के दर्जे में है, यह हुज़ूर स० का फ़रमान है जो मैं नक़ल कर चुका हूं और यह तो ख़ुलासा है तमाम तक़रीर का और यह बात याद रखो कि मैंने कोई बात बग़ैर हदीस से दलीलों और आयाते कुरआनी के नहीं लिखी है जो भी मैंने तोज़ीह की है वह सब साबित मिनल कुरआन और साबित मिनल हदीस है और जो बात कुरआन और हदीस के ख़िलाफ़ हो वह मरदूद है। इसको छोड़ दो चाहे कोई अ़ल्लामा कहे या तालिबे इल्म। मैंने अपनी राय से तफ़सीर नहीं की बल्कि मैंने कुरआन और हदीस से तफ़सीर की है और मुझ को यह भी पता है कि अपनी राय से तफ़सीर करने वाला दोज़ख़ी है। ख़ैर यह मसअला तो साफ़ हो गया। अब सुनिये अगर तबलीग़ वालों में कोई बुराई देखो तो इसके दूर करने के लिये उ़लमा को जमाअ़त में निकलना ज़रूरी है ताकि वह ग़लत को ग़लत और सही को सही साबित करें। बअज़ लोगों को देखा भी और बहुत से हज़रात की कारगुज़ारी भी सामने आई है कि यह तलबा का और अ़वाम का ज़हन तबलीग़ के ख़िलाफ़ बनाते हैं और बेजा सवालात के ज़रिये तबलीग़ वालों पर तनक़ीद करते हैं बताओ क्या यह तरीक़ा ग़लत नहीं? क्या इस तरह करने से ग़लतियां दूर नहीं होंगी? बात चल रही थी आयत व हदीस के ऊपर कि अहादीसे जिहाद में मजाज़न तबलीग़ व इबादत को भी

दाखिल किया गया है अब बात रही कि वह कौन हज़रात है जिन्होने जिहाद के मअना को आम रखा और इल्म को और दावते दीन को फ़ज़ाईलुलजिहाद में गरदाना। इन हज़रात के अब सिर्फ़ नाम देख लीजिये जिसको मैं ने जलालैन के हाशिये से और तफ़सीरे मज़हरी से हासिल किया है। वह हज़रात यह हैं सबसे पहले हुज़ूर स० को उस हदीस की वजह से जो हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है। इस हदीस की बिना पर हुज़ूर स० भी तबलीग़ को जिहाद का दर्जा देते हैं आप स० के बाद किसी के नाम की कोई ज़रूरत नहीं है मगर फिर भी जो अकाबिर उ़लमा के नाम मुतफ़र्रिक तौर पर लिख चुका हूं उनको अब एक जगह जमा करता हूं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि०, और हज़रत अबुदर्दा रज़ि० और हज़रत अ़ल्लामा मक़ातिल रह० और हज़रत अ़ल्लामा ज़ह्हाक रह०, और हज़रत अ़ल्लामा शैखुलमुहद्दिसीन अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक हनफ़ी रह०, हज़रत अ़ल्लामा इमाम बुख़ारी रह०, अ़ल्लामा इब्ने कसीर रह० हज़रत हसन बसरी। हज़रत अ़ल्लामा फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ रह०, हज़रत सहल बिन अ़ब्दुल्लाह रह०, हज़रत अ़ल्लामा इमाम राग़िब रह०, हज़रत अ़ल्लामा व शैखुलमुफ़स्सिरीन अलबग़वी रह०। हज़रत हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली रह० ने भी अपनी किताब अहयाउल उ़लूम में जिहाद के मअना आम इबादात के मुराद लिये हैं। और हज़रत अ़ल्लामा साहिबे तफ़सीरे मज़हरी मौलाना सनाउल्लाह साहब रह० ने और हज़रत मौलाना मुफ़्ती शफ़ी रह० मुफ़्ती अअ़ज़म पाकिस्तान ने भी आम मअ़ना मुराद लिये हैं और बानी जमाअ़ते तबलीग़ हज़रत अ़ल्लामा इल्यास साहब रह० ने और अमीरे जमाअ़त हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० ने और शैखुलहिन्द मौलाना मेहमूदुल हसन साहब रह० और अ़ल्लामा शब्बीर अहमद उ़स्मानी

साहब रह० ने भी आम मअना मुराद लिये है। दोनों का कौल तर्जुमा शैखुलहिन्द मे देखिये और आखिर मे हमारे शैखुलमुहद्दिसीन व आशिके रसूल स० हजरत मौलाना जकरिया साहब रह० ने भी आम इबादतों को मुराद लिया है यह तमाम हजरात वह है जो मेरे इल्म में हैं और उन्होंने जिहाद के और सबीलुल्लाह के मअना में तबलीग़ को तालिबे इल्म को और दीगर मुजाहिदे वाले उलमा को दाख़िल किया है अगर आप तबलीग़ वालों को तहरीफ़ करने वाला कहोगे तो क्या हुज़ूर स० से लेकर मौलाना ज़करिया साहब तक सब तहरीफ़ करने वाले हैं जबकि पहली आयत मक्की है और इस में जिहाद का कोई शुबह भी नहीं मगर फिर भी इनाद और बुग्ज़ की वजह से तबलीग़ वालों को छेड़ते हो खुद से तो काम होता नहीं और दूसरों को भी इससे रोकते हो और जो लोग तबलीग़ की बुराई बयान करके तबलीग़ से रोकते हैं उनके लिये अल्लाह तआला का यह क़ौल ही काफ़ी है:

وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا أُوْلٰئِكَ فِيْ ضَلَالٍ بَعِيْدٍ○

और रोकते हैं अल्लाह तआला की राह से (यानी दीने इस्लाम से, जलालैन में भी यही मअ़ना हैं) तलाश करते हैं उसमें कजी (यानी कमी) वह रास्ता भूल कर जा पड़े हैं दूर (यानी यह आ़दत बड़ी गुमराही वाली है और यहां पर फ़ी–सबीलिल्लाह जिहाद के मअ़ना में नहीं है बल्कि दीन की दावत को कुबूल करने से रोकने वाली मुराद हैं अब मालूम हुआ कि फ़ी–सबील्लिाह का इतलाक़ जिहाद और दावते दीन दोनों पर होता है क्योंकि जब अल्लाह ने दोनों मअना मुराद लिये हैं तो इसी तरह तबलीग़ वाले भी कहते हैं मालूम हुआ कि अल्लाह ने भी उ़लमा–ए–तबलीग़ की तसदीक़ फ़रमा दी)

तबलीग़ वाले हज़रात चालीस दीन और चार माह ही की तशकील क्यों करते हैं

(٣٠) عن ابن مسعود رضى الله عنه قال حدثنا رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو الصادق والمصدوق اِنَّ خَلْقَ احدكم يُجمع فى بطن اُمِّه اربعين يومًا نُطفَةً ثُمَّ يكون علقةً مثل ذلك ثم يكون مضغةً مثل ذلك ثم يبعث الله اليه ملكاً باربع كلمات فيكتب عمله واجلَهٗ ورزقهٗ وشَقِىٌّ او سعيدٌ ثم ينفخ فيه الروح. (بخارى، مسلم ومشكوٰة شريف)

तर्जुमा:– हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० कहते हैं कि रसूल स० ने जो सादिक़ व मसदूक़ हैं हम से इरशाद फ़रमाया तुममें से हर एक शख़्स का वुजूद इस तरह अमल में आता है कि बिल्कुल इब्तिदाई मरहले में इस का माद्दा तख़्लीक़ इस की मां के पेट में चालीस दिन तक बसूरते नुत्फ़ा जमा किया जाता है (और इस दौरान इस की हरारत से इस में तग़य्युर होता रहता है) फिर इतने ही दिनों (यानी चालीस दिन) तक ख़ून के लोथड़े की सूरत में रहता है फिर इतने ही दिनों (यानी चालीस दिन) तक गोश्त के टुकड़े की सूरत में रहता है और फिर जब हड्डी और गोश्त पोस्त का एक क़ालिब बन जाता है तो अल्लाह तआला इसके पास एक फ़रिश्ते को चार बातें देकर भेजता है और वह फ़रिश्ता इन चारों बातों को यानी इसके अअ़माल को वह दुनिया में आकर किया करेगा इसकी मौत (का वक़्त) इसका रिज़्क़ और इस का बदबख़्त या नेकबख़्त होना लिख देता है और फिर इसके बाद इस में रूह डाली जाती है।

हज़रात! तबलीग़ वालों पर यह ऐतिराज़ होता है कि वह चालीस दिन या चार माह की ही तशकील क्यों करते हैं क्या इन हज़रात को और कोई दूसरा अ़दद न मिला। जवाब देने से पहले

मैं कुछ कहना चाहता हूं वह यह कि अगर फ़र्ज़ कर लो कि तबलीग वाले हज़रात चालीस दिन या चार माह के अलावा और कोई अ़दद मुतअ़य्यन करते तो तब भी आप यही कहते कि तबलीग़ वालों को और कोई अ़दद न मिला। दरअसल यह सवाल ही ग़लत है बल्कि सवाल यह होना चाहिये कि चालीस दिन मुतअ़य्यन करने में क्या हिकमत है? यह हुआ सही सवाल अब चालीस दिन की पहले और चार माह की उसके बाद हिकमत बयान की जाती है। क़ल्बे तस्लीमे हक़ लेकर बैठो (यानी हक़ बातों को क़ुबूल करने वाला दिल) हिकमत क्या है देखो भाई इस हदीस को मैंने इसलिये पेश किया है ताकि यह मालूम हो जाये कि चालीस दिन को किसी चीज़ की हालत बदलने में काफ़ी दख़ल है जैसे कि हदीस से भी यह बात मालूम हो गई कि इन्सान की तख़्लीक़ को भी चालीस दिन के अ़दद के ज़रिये कामिल व मुकम्मल किया गया है जैसे चालीस दिन मनी का क़तरा रहम की हरारत हासिल करता रहता है फिर ख़ून की तरफ़ माइल होना शुरू होता है। और जब चालीस दिन हो जाते हैं तो तब्दीली पूरी हो जाती है यानी मनी से ख़ून की जानिब आ जाता है। और फिर चालीस दिन और तग़य्युर होता रहता है और ख़ून गोश्त की तरफ़ रफ़्ता रफ़्ता सफ़र तैय करके दूसरे चालीस दिन में वह गोश्त में मुतग़य्यर हो जाता है और फिर यह गोश्त आहिस्ता आहिस्ता हड्डी और इन्सान की सूरत में ज़ाहिर होता रहता है और चालीस दिन के बाद यह एक कामिल इन्सानी सूरत वाला जिस्म बन जाता है यह कुल तीन मरतबा चालीस दिन हुए यानी चार माह। जब तीसरा चिल्ला पूरा हो गया तो अब इस में रूह डाली जाती है फिर इसके लिये अल्लाह तआ़ला ग़िज़ा का इन्तिज़ाम करता है। ख़ैर यही वजह है तबलीग़ वालों की चालीस

दिन को खास करने की, कि चालीस दिन लगाने के बाद कुछ नही, तो कम अज कम कुछ थोडा सा तग़य्युर तो पैदा हो ही जाये। यानी चालीस दिन मे उस आदमी के दिल में पूरा दीन तो नही आता है और न वह अल्लामा बनता है मगर दुनिया में रहने की वजह से और गुनाहों की वजह से जो मैल दिल और दिमाग़ पर था वह किसी हद तक धुल जाता है फिर इसको दीन की बातों मे रग़बत होनी शुरू हो जाती है यानी वह दीन की तरफ़ क़दम बढ़ाने की सोचता है, यह है चालीस दिन की हिकमत कि इन्सान को अल्लाह तआला ने रहमे मादर ही में चिल्ला लगा कर अपने अन्दर तबदीली पैदा करने की तासीर रखी है और इस को ही तबलीग़ वालों ने दीन के लिये मुतअय्यन किया है। यानी चालीस दिन को। अब रहा चार माह के अ़दद में क्या हिकमत है इसकी हिकमत भी इसी हदीस से ज़ाहिर होती है वह यह कि चार माह और तीन चिल्ले एक ही हैं जब तीन मरतबा चालीस दिन पूरे हो गये तो वही चार माह कहलाते हैं और चार माह तीन चिल्ले। हदीस को देखिये चालीस चालीस दिनों में तबदीली होती रही और जब तीन चिल्ले हो गये तो इसमें रूह डाली गई जिसके ज़रिये अब इस पर एक इन्सान का इतलाक़ होता है और अब से वह अपनी ज़रूरत को भी मेहसूस करता है जैसे खाना पीना इस वजह से ही मां के रहम के ख़ून को इस की ग़िज़ा बना दिया जाता है।

इससे यह बात मालूम हुई कि वह तीन चिल्लों के बाद एहसास करने वाला होता है और ज़रूरत को हासिल करता है ठीक इसी तरह जब इन्सान तबलीग़ में तीन चिल्ले लगाता है तो इसमें भी तग़य्युर होते होते चार माह के बाद दीन की रूह आ जाती है और यह बात बे-हक़ीक़त नहीं है। बल्कि आप खुद किसी भी यानी तबलीग़ी हज़रात को देख लीजिये कि अगर वह

थार माह लगा दें तो कभी नमाज़ छोड़ना पसन्द न करेंगे। और न छोड़ेंगे। लिबास सुन्नत के मुवाफ़िक़ होगा इस्लामी नर्मी और इस्लामी अख़्लाक़ उसमें पैदा होंगे। ग़र्ज़ कि उसकी ज़िन्दगी शरीअ़त को तलब करने वाली बनती है क्योंकि उसके अन्दर इस्लामी रूह आ गई है और उसका यक़ीन बग़ैर तजुर्बे के हासिल होना दुश्वार है इसको समझने के लिये आप वक़्त लगा कर देखो अगर रूह नहीं आई तो कहना। यह गारन्टी सिर्फ़ जमाअ़ते तबलीग़ की है। जमाअ़ते मौदूदी या जमाअ़ते बरेलवी की नहीं।

तबलीग़ वालों की बैअ़त पर ऐतिराज़

(٣١) اخبرنا ابو ادريس عائذ الله بن عبد الله اَنَّ عُبادةَ بنِ الصامت وكان شَهِدَ بَدْرًا وهو احد النقبآء ليلة العقبة اَنَّ رسول الله صلى الله عليه وسلم قال وحولَهُ عصابة من اصحابه بايعونى على اَنْ لَاَ تُشْرِكوا بالله شيئاً لاتسرقوا ولا تزنوا ولا تَقْتُلُوْا اولادكم ولاتاتوا بِبُهْتَانٍ تفترونه بين ايديكم وارجلكم ولاتَعْصُوْا فى معروف فمن وفى منكم فاجره على الله ومن اصاب من ذلك شيئاً فعوقِبُ فى الدنيا فهو كفارةٌ لَهُ ومن اصاب من ذلك شيئاً ثم ستره الله فهو الى الله ان شاء عفا عنه وان شاء عاقَبَهُ فبايعناه على ذلك. (بخاری ج اول)

तर्जुमाः— ख़बर दी अबू इदरीस आइज़ुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने बेशक उ़बादा बिन सामित और वह हाज़िर हुए थे जंगे बद्र में और उ़बादा बिन सामित लैलतुलउ़क़बा से पीछे रह जाने वालों में से एक थे बेशक रसूलुल्लाह स० ने फ़रमाया और आपके इर्द गिर्द आपके साहाबा रज़ि० थे (आप स० ने फ़रमाया) मुझसे बैअ़त करो इस बात पर कि तुम शिर्क न करोगे अल्लाह के साथ और न तुम चोरी करोगे और तुम ज़िना न करोगे और तुम अपने बच्चों को क़त्ल न करोगे (मुराद तुम लड़कियों को दरगोर न करोगे) और न

तुम ऐसी तोहमतों को लाओगे जिसको खुद तुमने घड़ा हो (मुराद झूठी तोहमत) और तुम नाफ़रमानी न करोगे भली चीज़ों में जो तुम में से इस बैअ़त को पूरा करेगा, पस उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे है और जो इन उमूर में से किसी में मुब्तला हो जाये पस उस पर दुनिया में शरई हद जारी की गई हो पस (वह हद, शरई सज़ा) इसके लिये बदल हो जायेगी (मुराद अज़ाबे आख़िरत से मेहफ़ूज़ रहेगा) और जो कोई इन चीज़ों में से किसी में मुब्तला हो गया फिर अल्लाह ने उस गुनाह को (आम करने से) पोशीदा रखा पस अब यह मामला अल्लाह के हवाले है अगर चाहे तो इस जुर्म को माफ़ कर दें और अगर चाहें तो इसको सज़ा दें (रावी कहते हैं) हम तमाम सहाबा ने इन बातों पर बैअ़त की।

देवबन्दियों पर बअ़ज़ मुख़ालिफ़ीन यह ऐतिराज़ करते हैं कि देखो इन देवबन्दियों यानी तबलीग़ वालों को यह नमाज़ पर और दीगर इबादत के करने पर और ज़िना न करने पर, चोरी न करने पर, झुठ न बोलने पर, ख़्यानत न करने और शिर्क न करने पर भी बैअ़त करते हैं। हालांकि बैअ़त तो सिर्फ़ आप स० ने जिहाद के लिये की है इन जाहिलों के ग़लत ख़्याल को कूड़ेदान में फेंकने के लिये यह हदीस पेश की गई कि तबलीग़ वाले हज़रात इबादतों के करने पर और मअ़सियतों से इज्तिनाब करने पर जो बैअ़त लेते हैं वह साबित मिनर्रसूल है।

क्या इस हदीस को आपने नहीं पढ़ा तुम हदीस क्यों पढ़ेंगे। तुम्हें तो अक़्ल और ख़्वाहिशात की पूजा पाट से फ़ुर्सत नहीं है। भाइयों ऐतिराज़ से पहले कुछ आगे पीछे देख भी लिया करो कि अगर हम किसी के ख़िलाफ़ बग़ैर दलील के ऐतिराज़ करेंगे तो हो सकता है कि वह ऐतिराज़ आप स० के अमल पर ही हो जाये जैसाकि मोअ़तरिज़ीन ने जो ऐतिराज़ात किए हैं उनमें बहुत से

ऐतिराजात तो कुरआन पर और आप स० के कामों और अक़वाल पर हो गये। मोअतरिज़ ने तबलीग़ वालों को फांसना चाहा मगर ख़ुद ही गिरिफ़्तार हो गया कि तबलीग़ वालों पर ऐतिराज़ करना आप स० के साथ भी मुलहिक़ हो गया और इन ऐतिराज़ात में एक यह भी ऐतिराज़ दाख़िल है कि इबादत के करने पर और मुनकरात से इज्तिनाब पर बैअ़त लेना बिदअ़त है, अरे जाहिलो! ख़ुदा के वास्ते शैतान के रिकार्ड को तो न तोड़, इतने सरकश क्यों होते हो कि हक़ सामने होने के बावुजूद नज़रों से ओझल हो जाता है। बताओ क्या इबादत पर बैअ़त करना बिदअ़त है? क्या मुनकरात से बचने पर बैअ़त लेना बिदअ़त है? जबकि आप स० ने मुनकरात से इज्तिनाब पर और इबादात के करने पर बैअ़त की है जैसा कि यह हदीस बता रही है और दूसरी रिवायतों में नमाज़ रोज़ा और ज़कात के पुरा करने पर बैअ़त लेना भी साबित है यह रिवायत भी बुख़ारी में ही है, किया आप लोगों की ज़ुबान में तो फ़र्क़ नहीं कि आपके यहां आप स० के अ़मल को ही बिदअ़त कहते हों और दूसरे के तरीक़ों को सुन्नत कहें, ऐसा तो नहीं अगर ऐसा हो तो फिर आप लोगों का कहना दुरुस्त है मगर आप लोगों की यह इस्तिलाह ही ख़ुद नज़रे शरीअ़त में बातिल है। ख़ैर इबादत पर बैअ़त लेना और मुनकरात से बचने पर बैअ़त करना सुन्नत है और इसी पर हम आमिल हैं।

लिबास में हुज़ूर स० को क़मीस पसन्द थी

(۳۴) عن ام سلمة رضی اللہ عنها قالت کان احب الثیاب الی رسول اللہ صلی علیہ وسلم القمیص (مشکوٰۃ شریف، ترمذی، شمائل)

तर्जुमाः— हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूर स० को तमाम कपड़ों में क़मीस ज़्यादा पसन्द थी।

अलहम्दुलिल्लाह तबलीग़ वाले हज़रात क़मीस ही इस्तेमाल

करते है और इसकी फजीलत इससे ज्यादा और क्या हो सकती है कि यह हुजूर स० को पसन्द थी लेकिन बअज लोग कमीस को बुजूर्गों का लिबास तसव्वुर करते है और अरबी जुब्बा हुजूर स० के लिये खास करते है हालाकि ऐसा नही है बल्कि कमीस भी हुजूर स० की सुन्नत है और अरबी जुब्बा तो बदरजहा औला है जो आप स० को पसन्द था।

आधी पिंडली तक पाजामा पहनना सुन्नत है

(۳۳) عن ابی سعید الخدری رضی اللّٰہ عنہ قال سمعت رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم یقول اِزارۃ المومن الی انصاف ساقیہ لا جناح علیہ فیما بینہ وبین الکعبین وما اسفل من ذٰلک ففی النار قال ذٰلک ثلاث مرات ولا ینظُرُ اللّٰہ یوم القیامۃ الی مَن جَرّ اِزارہ بَطَرًا (مشکوۃ شریف)

तर्जुमाः– हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० बयान फ़रमाते है कि मैंने रसूलुल्लाह स० को यह फ़रमाते हुए सुना, कि एक मोमिन के तेहबन्द या पाजामे की सबसे बेहतर सूरत तो यह है कि वह आधी पिंडलियों तक हो और आधी पिंडलियों से टख़नों तक के बीच होने में भी कोई हर्ज नहीं है। लेकिन इसके टख़ने से नीचे जो हिस्सा लटका हुआ होगा वह दोज़ख़ की आग में ले जायेगा। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि आप स० ने यह अलफ़ाज़ तीन बार फ़रमाये और फिर फ़रमाया कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उस शख़्स को रहमत व इनायत की नज़र से नहीं देखेगा जो गुरूर व तकब्बुर से अपने तेहबन्द या पाजामे को टख़नों से नीचे लटकायेगा।

हासिले कलामः– इस हदीस को नक़ल करने की ज़रूरत इस वास्ते पेश आई कि बअज़ जाहिल क़िस्म के हज़रात तबलीग वालों पर ऐतिराज करते हैं कि आधी पिंडली तक पाजामा पहनने का कौन सा तरीक़ा है लोग इसको बिदअत या ग़ुलू तसव्वुर

करते हैं मगर इन का तसव्वुर करना गलत और जिहालत की अलामत है कि वह सुन्नत से नावाकिफ़ और बेगाने हैं और लोग टख़ने से नीचे पाजामा पहनने को तो बुरा नहीं समझते हैं बल्कि टख़नों के ऊपर तहबन्द रखने वाले को नापसन्द करते हैं खूब जिहालत है पहले तो इनका तस्वुर ही ग़लत है और फिर मजीद जुल्म यह कि तबलीग़ वाले जो सही राह पर हैं उन पर उंगली उठाते हैं इन हज़रात को क़ियामत के लिये जवाब ढूंडना चाहिये कि अल्लाह तआला को क्या जवाब देंगे।

ज़्यादा कपड़े का लटकाना जाइज़ नहीं

(٣٤) عن سالم عن ابيه عن النبی صلی اللّٰہ علیه وسلم قال الاسبال فی الإزارِ والقمیصِ والعمامةِ مَنْ جَرَّ منها شیئاً خیلاء لم ینظرِ اللّٰہ الیه یوم القیامةِ (مشکوۃ شریف)

तर्जुमा:– हुज़ूर स० ने फ़रमाया इसबाल (यानी लटकाना) इज़ार, कुर्ते और अमामे में जो शख़्स इन कपड़ों से कुछ लटका कर गुरूर व तकब्बुर से खींचेगा तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उसकी तरफ़ नज़रे करम नहीं करेंगे।

इस हदीस से चन्द बातें मालूम हुई एक तो यह कि पाजामे को टख़नों से नीचे लटकाना जाइज़ नहीं और दूसरी बात यह मालूम हुई कि क़मीस का तकब्बुरन लम्बा पहनना जाइज़ नहीं बल्कि हराम है। और तीसरी बात यह मालूम हुई कि अमामा सुन्नत तो है मगर इस में तकब्बुरन पीछे का हिस्सा लम्बा रखना भी जाइज़ नहीं बल्कि हराम है जब ही तो इतनी सख़्त वईद आई है कि अल्लाह तआला नज़रे करम न फ़रमायेगा। अल्लाह तआला हमारी तकब्बुर से हिफ़ाज़त फ़रमाये।

अमामा बांधना सुन्नत है

(۳۵) عن ابن عمر رضی اللہ عنہما قال کان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اذا اعتم سدل عمامتہ بین کتفیہ (مشکوۃ شریف)

तर्जुमा:- हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर स० जब अमामा बाधते तो इस का शमला दोनों मोंढों के बीच डालते।

और दूसरी हदीस में टोपी के साथ अमामा बांधने को अलामते मुस्लिम फ़रमाया है और बग़ैर टोपी के अमामा तो ग़ैर कौम वाले बांधते हैं और वह हदीस यह है।

(۳۶)عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم فرق ما بیناو بین المشرکین العمائم علی القلانس (مشکوۃ شریف)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया टोपी पर अमामा बांधना यह मुशरिकीन और मुस्लिम के बीच अलामत है।

दाई जानिब से क़मीस पहनना सुन्नत है

(۳۷) عن ابی ہریرۃ رضی اللہ عنہ قال کان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اذا لبس قمیصا بدأ بیمینہ (مشکوۃ شریف)

तर्जुमा:- हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर स० जब कुर्ता पहनते तो दाई तरफ़ से पहनना शुरू करते।

क़मीस दाई जानिब से पहनना सुन्नत तो है मगर क़ाइदा यह है कि हर मोअ़ज़्ज़ज़ काम दाई तरफ़ से शुरू करना चाहिये और ग़ैर मोअ़ज़्ज़ज़ काम बाई जानिब से शुरू करे जैसे बैतुलख़ला से निकलना यह मोअ़ज़्ज़ज़ काम है इसलिये दाई जानिब से शुरू करे और बैतुलखला में दाख़िल होना गैर मोअ़ज़्ज़ज़ फ़ेअ़ल है तो बाई जानिब से शुरू करे इसी तरह दूसरे अअ़माल को क़यास कर लो।

इसराफ़ और तकब्बुर की मज़म्मत

(٣٨) عن ابن عباس قال كُل ما شئت والبس ما شئت ما اخطاتك اثنتان اسراف ومخيلة (مشكوٰة شريف)

तर्जुमाः— हजरत इब्ने अब्बास रजि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया (जाइज़ और मुबाह चीज़ों में से) जो चाहो खाओ और जो चाहो पहनो यहां तक कि दो चीज़ें यानी इसराफ़ और तकब्बुर तुम में सरायत न करे।

तकब्बुर तो सब को मालूम है कि इसको कोई भी मज़हब और कोई भी आदमी सही तस्वुर नहीं करता है और रहा इसराफ़ इसका एहसास बहुत से लोगों में नहीं पाया जाता। सिग्रेट, पान तम्बाकू वग़ैरा यह सब चीज़ें इसराफ़ में दाख़िल हैं मगर इनको इसराफ़ समझा ही नहीं जाता अगर समझा जाता तो फिर हज़ारों और लाखों रुपये की सिग्रेट हर रोज़ एक शहर में क्यों फ़रोख़्त होती, ख़ैर! इस हदीस से इस बात की दलील पेश करनी थी कि तबलीग़ वाले इसराफ़ से मना करते हैं और इस को हदीस कहते हैं अगर किसी को शक हो तबलीग़ वालों के इस कलाम पर तो यह किताब उसका साथ दे सकती है।

अल्लाह तआला इसराफ़ से मुसलमानों की हिफ़ाज़त फ़रमाये कि बअज़ मुसलमानों को रोटी मयस्सर नहीं और इन हज़रात ने इसराफ़ पर कमर बांध रखी है। दूसरे मुसलमानों को इतना रुपया दिया जाये तो इनकी दुनिया बन जाये और आप की आख़िरत और दुनिया में भी इनकी बीमारियों से हिफ़ाज़त होगी और आख़िरत का सवाल ही क्या करना जब आप किसी मुसलमान की परेशानी को दूर करें तो ज़ाहिर बात है कि ख़ालिके मख़्लूक़ तुम से कितना ख़ुश होगा और जब ख़ुश होगा तो मग़्फ़िरत फ़रमा देगा और मग़्फ़िरत का नतीजा जन्नत है।

मिस्वाक की ताकीद हुज़ूर स० से

(٣٩) عن ابی هريرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لولا اَنْ اَشُقَّ على امتى لاَمَرْتُهُمْ بتاخير العشاء والسواك عند كل صلوة (مشكوة شريف)

तर्जुमा:– हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने फ़रमाया कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया अगर मुझको मेरी उम्मत पर ज़्यादा बोझ पड़ जाने का ख़्याल न होता तो उनको यह हुक्म देता कि ईशा की नमाज़ ताख़ीर से पढ़ा करो और हर नमाज़ के लिये मिस्वाक किया करो।

इस हदीस से मिस्वाक की फ़ज़ीलत ज़ाहिर होती है और मिस्वाक एक ऐसी चीज़ है कि जिसमें दुनिया के भी बेशुमार फ़वाईद मौजूद हैं और आख़िरत में इससे बढ़कर और क्या बात हो सकती है कि हुज़ूर स० की सुन्नत है और इस पर हुज़ूर स० की ताकीद भी है। अल्लाह तआला अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमायें। और मिस्वाक के मुतअल्लिक़ एक ऐतिराज़ होता है वह यह है कि तबलीग़ वाले नमाज़ के वक़्त भी मिस्वाक करते हैं और यह काम सख़्त ग़लत है।

जवाब:– दोस्तो! हो सकता है बअज़ तबलीग़ वाले इस वक़्त भी मिस्वाक करते होंगे जबकि नमाज़ खड़ी हुई हो मगर पूरी नमाज़ होने तक मिस्वाक ही करते नहीं रहते हैं बल्कि एक दो मरतबा दातों पर फेर दिया तो सवाब हासिल हो गया। मगर इस को ऐतिराज़ की शक्ल देना सख़्त तअस्सुब और इनाद की बात है और अगर नमाज़ के वक़्त मिस्वाक कर रहा है तो क्या हुआ जो लोग मस्जिद के सामने खड़े बातें करते हैं और सिग्रेट फूंकते हैं उनको तो कुछ कहने की हिम्मत नहीं होती मगर जो शख़्स महज़ अल्लाह तआला के लिये ख़ामोश रहे। इसके सही काम पर

भी ऐतिराज़ करते हैं। और मिस्वाक की सुन्नत एसी वैसी नहीं है बल्कि बअज़ उलमा के नज़दीक सुन्नते मुअक्कदा है। हां अगर ऐतिराज़ के और अनाद के क़ाबिल हैं तो वह लोग है जो मस्जिद के दरवाज़े पर दुनिया की बातें करते हैं नमाज़ के वक़्त. मगर अच्छे ख़ासे लोगों पर उंगली उठाने की आदत पड़ चुकी है वह मौत तक ख़त्म नहीं होगी। अल्लाह तआला ऐसे अहमक़ों से दीन की हिफ़ाज़त फ़रमायें जिनके पास अख़लाक़ नाम की और उम्मत की फ़िक्र नाम की कोई चीज़ नहीं है। और तीसरा और आख़री जवाब यह है कि इमाम शाफ़ई रह० के नज़दीक इस हदीस के ज़रिये नमाज़ खड़े होने के बाद मिस्वाक करना सुन्नत है न कि वुज़ू के वक़्त और तबलीग़ वाले जमाअत के खड़े होने पर अपने मअमूल पर अमल करें तो इन पर ऐतिराज़ करते हैं। वाह भाई वाह, अच्छी रीत है इस क़द्र इनाद दुरुस्त नहीं।

मिस्वाक के फ़वाईद

(۴۰) عن عائشة رضی الله عنها قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم السواك مطهرة لِلفمِ وَمَرْضاةٌ لِلرَّبِ (مشکوٰۃ شریف)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया मिस्वाक मुंह की सफ़ाई और पाकीज़गी का ज़रिया और परवरदिगार की ख़ुशनूदी का वसीला है।

मिस्वाक के बाद नमाज़ की फ़ज़ीलत तबलीग़ वाले इस तरह बयान करते हैं

(۴۱) عن عائشة رضی الله عنها قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم تَفضُلُ الصلوٰة التی يُستاكُ لها على الصلوٰة التی لا يُستاكُ لها سبعين ضعفا (مشکوٰۃ شریف)

हज़रत आइशा रज़ि० बयान फ़रमाती हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया जिस नमाज़ की वुज़ू के लिये मिस्वाक की गई हो वह नमाज़ उस नमाज पर सत्तर दर्जा ज़्यादा फ़ज़ीलत रखती है जिसके लिये मिस्वाक न की गई हो।

इस हदीस को इस वास्ते ख़ास तौर पर ज़िक्र किया कि मिस्वाक के फ़ज़ाईल में तबलीग़ वाले यह हदीस बयान करते हैं और अगर किसी को ऐतिराज़ हो तो वह इस हवाले को देख कर मिश्कात शरीफ़ की तरफ़ रुजूअ़ करे और सुन्नत पर अमल पैरा होने की नीयत करे और तबलीग़ वालों को ऐतिराज़ का हदफ़ व निशाना न बनाये।

बअ़ज़ मोअ़तरिज़ीन कहते हैं कि मिस्वाक ही सुन्नत नहीं बल्कि जिहाद भी सुन्नत है

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ كُفُّوْا اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ (پاره ۵)

क्या तूने न देखा उन लोगों को जिन को हुक्म हुआ था कि अपने हाथ थामे रखो (जिहाद व जंग से) और क़ायम करो नमाज़ और दिया करो ज़कात।

पहले मोअ़तरिज़ का ऐतिराज़ देखो चन्द ऐतिराज़ हैं नम्बर एक– तबलीग़ वाले सिर्फ़ जमाअ़त में वक़्त लगाने का और ज़िक्र करने का और नमाज़ पढ़ने का हुक्म करते हैं और जिहाद का नाम नहीं लेते यानी नहीं करते। दूसरा ऐतिराज़ सिर्फ़ मिस्वाक और तबलीग़ करना सुन्नत नहीं है बल्कि जिहाद भी सुन्नत है इसको क्यों अन्जाम नहीं देते। तीसरे तबलीग़ वालों को जिहाद की दावत देनी चाहिये।

जवाबात मुलाहिज़ा हों :– इन तीनों ऐतिराज़ के जवाब के लिये एक आयत तबलीग़ वालों की तरफ़ से काफ़ी है पहले इस

आयत के शाने नुजूल को देखो इससे क्या मालूम हो रहा है। यह आयत हिजरत से पहले मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुई उस वक्त जब कि सहाबा रज़ि० ने आकर यह कहा कि हम को मुश्रिको ने बहुत सताया और तकलीफ़ व अज़िय्यतें दीं। पस आप हमको जिहाद का हुक्म फ़रमा दीजिये। देखो बदकिस्मती इन मोअतरिज़ीन की कि कुरआन का मिज़ाज भी और हुज़ूर स० का मिज़ाज भी तबलीग़ी था कि फ़ौरन आयत नाज़िल हुई और यह हुक्म हुआ कि जिहाद की इजाज़त नहीं बल्कि सिर्फ़ नमाज़ रोज़ा जिसका हुक्म हुआ है इसको पूरा करो। मतलब यह निकला कि यह जो मोअ़तरिज़ हज़रात ऐतिराज़ करते हैं इनको इस आयत पर ग़ौर करना चाहिये और दूसरी बात यह है कि जिहाद का हुक्म तबलीग़ वालों की तरफ़ से न होगा बल्कि दारुल उ़लूम देवबन्द की तरफ़ से होगा। (जिहाद के फ़र्ज़ होने का) और जब फ़र्ज़ होजायेगा उस वक़्त पूरे हिन्दुस्तान के मुसलमानों पर जिहाद करना फ़र्ज़ हो जायेगा और हुक्म उस वक़्त होगा जब जिहाद के पूरे शराइत वुजूद में आजायेंगे। सिर्फ़ जज़्बात ज़ाहिर करने से कामयाबी हासिल नहीं होती बल्कि कुरआन और हदीस को सामने रखना ज़रूरी है। देखो इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने जिहाद से मना किया। इतनी परेशानियों के बाद भी कि मारे जा रहे हैं सताये जा रहे हैं इबादत से रोके जा रहे हैं फिर भी अल्लाह तआ़ला ने तबलीग़ियों की तरह फ़रमाया अब जो नमाज़ व ज़कात व तबलीग़ फ़र्ज़ है वह करो जिहाद जब करने का हुक्म होगा इस वक़्त करना क्योंकि हर काम में जल्दबाज़ी मुफ़ीद नहीं। इस तक़रीर से यह मालूम हुआ कि जिहाद के फ़र्ज़ होने का हुक्म उ़लमा–ए–दारुलउ़लूम देवबन्द शरीअ़त की रोशनी में देंगे और आप दरिया आने से पहले धोती न खोलें बल्कि सब्र से रहो। और

मैं कहता हूं कि जो सिर्फ जिहाद जिहाद कहते घूमते हैं यह न नमाज़ अदा कर रहे हैं और न ज़कात की पाबन्दी और न जिहाद। फिर भी यह बेजान पूरी जमाअत पर ऐतिराज़ करते हैं, यह ऐतिराज़ करना दुरुस्त नहीं। और मुझको यह भी यक़ीन है कि जिस तरह तबलीग़ वाले तबलीग़ में जाकर कुरबानियां देते हैं यह हज़रात जिहाद के वक़्त भी ख़ूब कुरबानियां देंगे इन्शाल्लाह। और सबसे मुक़द्दम रहेंगे। और जो यह ऐतिराज़ करते हैं कि मिस्वाक ही सुन्नत नहीं बल्कि जिहाद भी सुन्नत है उनको चाहिये कि पहले अपने सवाल पर ग़ौर करें कि क्या जिहाद फ़र्ज़ हो चुका है? जो वह जिहाद करेंगे। जिहाद कब फर्ज़ व सुन्नत है कुछ पता है या नहीं? मालूम न हो तो देवबन्द आ जाना पता हो जायेगा और मिस्वाक पर अमल करना भी सुन्नत है और जो लोग ऐतिराज़ करते हैं वह लोग न जिहाद करते हैं और न मिस्वाक दोनों सुन्नतों से महरुम हैं। और बकवास में मुक़द्दम हैं मगर तबलीग़ वाले कम से कम मिस्वाक पर तो अमल करते हैं और जब जिहाद फ़र्ज़ हो जाये चाहे कल ही हो हम ही मुक़द्दम रहेंगे यानी देवबन्दी व तबलीग़ी इन्शाल्लाह।

मुसाफ़ह की फ़ज़ीलत

(٣٢) عن قتادة رضى الله عنه قال قلتُ لِاَنَس بن مالك هل كانت المصافحة فى اصحابى رسول الله صلى الله عليه وسلم قال نعم (ترمذى)

तर्जुमा:– हज़रत क़तादा रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अनस रज़ि० से पूछा क्या हुज़ूर स० के सहाबा रज़ि० आपस में मुसाफ़ह करते थे इस पर हज़रत अनस रज़ि० ने फ़रमाया कि हां मुसाफ़ह किया करते थे।

दूसरी दलील:

(۴۳) عن شعبی انّ النبی صلی اللہ علیہ وسلم تلقّی جعفر بن ابی طالب فالتزمه وقبّل ما بین عینیه (مشکوٰۃ شریف)

शअबी रह० कहते हैं कि नबी करीम स० जअ़फ़र बिन अबी तालिब से मिले तो उनको गले से लगा लिया और उनकी आंखों के बीच बोसा दिया।

इस हदीस से मुआ़नक़ा करना साबित होता है और पहली हदीस से मुसाफ़ह करना।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि मुसाफ़ह करने वालों के हाथ जुदा होने से पहले अल्लाह तआ़ला दोनों की मग़्फ़िरत कर देता है

(۴۴) عن براء بن عاذب رضی اللہ عنه قال قال النبی صلی اللہ علیه وسلم ما من مسلمین یلتقیان فیتصافحان الاّ غفرلهما قبل ان یتفرّقا (بخاری، وترمذی، ص ۱۰۱، ج ۲)

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० बयान करते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया कि जब दो मुसलमान मिलते हैं (और आपस में एक दूसरे से) मुसाफ़ह करते हैं तो इन दोनों के जुदा होने से पहले खुदा उनको बख़्श देता है।

पहली बात तो यह है कि मुसाफ़ह सुन्नत है और मुआ़नक़ा भी सुन्नत है और अल्हमदुलिल्लाह तबलीग़ वाले हज़रात इसको अ़मल में लाते हैं और मोअ़तरिज़ को यहां पर भी ऐतिराज़ है कि तबलीग़ वाले हज़रात यह बयान करते हैं कि मुसाफ़ह करने वालों की इससे पहले मग़्फ़िरत हो जाती है कि वह अपने हाथों को मुसाफ़हे से जुदा करदे। यह कहां पर मौजूद है। इन हज़रात के लिये मैंने यह हदीस भी पेश की कि यह बात जो तबलीग़ वाले बयान करते हैं वह सही है मगर मोअ़तरिज़ को कोई काम नहीं।

सिवाये इसके कि यह हक बात कहने वालों को और सही काम करने वालों को ऐतिराज़ का निशाना बनाले। यह इसको कामयाबी तसव्वुर करते हैं मगर यह ग़लत है, इन अहादीस से आपको मुसाफ़हे की सुन्नत और मुसाफ़हे के फ़ज़ाईल मालूम होगये होंगे और तबलीग़ वालों का अ़मल भी मुदल्लल हो गया और अलहम्दुलिल्लाह तबलीग़ वाले इस पर आ़मिल हैं।

सलाम को आ़म करने का हुक्म

(۴۵) عن عبد الله بن عمرو رضى الله عنهما انّ رجلا سالَ رسول الله صلى الله عليه وسلم اىّ الاسلام خير قال تُطْعَمُ الطعام تقرأ السلام على من عَرفت ومن لم تَعرِف (مشكوٰة شريف)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र रज़ि० बयान फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने हुज़ूर स० से सवाल किया कि अहले इस्लाम की कौन सी ख़सलत बेहतर है? हुज़ूर स० ने जवाब दिया कि खाना खिलाना और हर शनास और नाशनास को सलाम करना।

यही बात तबलीग़ वाले भी कहते हैं कि जो भी मुसलमान नज़र पड़े उसको सलाम करो क्योंकि दूसरी हदीस में है कि पहले सलाम करने वाले को दूसरे के मुकाबले ज़्यादा सवाब मिलता है और पूरा सलाम करो लफ़्ज़ अस्सलामु अ़लैकुम पर दस नेकी वरहमतुल्लाह बढ़ाने पर बीस, बरकातुहू पर कुल तीस नेकियां हासिल होती हैं।

और दूसरी हदीस में है कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से पाक होता है।

को बढ़ाने का हुक्म और मूंछ को कतरवाने का हुक्म

(۴۶) عن ابن عمر قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم خالفوا

المشرکین اوفروالحی واحفوا الشوارب (مشکوۃ شریف)

हज़रत इब्ने उ़मर रज़ि० बयान फ़रमाते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया मुख़ालफ़त करो मुशरिकों की, कि दाढ़ी बढ़ाओ और मूंछ कतरवाओ।

अलहम्दुलिल्लाह! जमाअ़ते तबलीग़ वाले हज़रात दाढ़ी रखते हैं और मूंछें कतरवाते हैं और यही सुन्नत है। मगर शैतान के दोस्त यह कहते हैं कि हदीस में कहीं भी दाढ़ी रखने का ज़िक्र नहीं है। इन हज़रात की यह हदीस तरदीद कर रही है कि हदीस में भी दाढ़ी रखने का हुक्म है। हुज़ूर स० की ज़िन्दगी और अ़मल का तो सब को पता है कि आप दाढ़ी रखते थे तो फिर सवाल करने की क्या बात है। बस हुज़ूर स० के तरीक़े को अपनाना चाहिये। क्या जो हुक्म हदीस में आया है तमाम पर आप अ़मल करते हैं। ज़ाहिर बात है कि नहीं तो फिर इतने रोअ़ब से कहना कि हदीस में हुक्म नहीं हुआ है यह लग़ू बात है कि आप तमाम हुक्मों पर अ़मल तो नहीं करते अगर हुक्म न होता तो हुज़ूर स० के तरीक़े को देख कर ही कर लेते। जब सहाबा रज़ि० भी बहुत से काम बग़ैर हुक्म किये करते थे। खुद दाढ़ी भी इसमें दाख़िल होगी। आपके क़ौल के मुताबिक़ कि हुक्म नहीं दिया मगर फिर भी सहाबा रज़ि० ने अ़मल किया तो हम क्यों न करें। भाई नफ़्स की गुलामी कौन करेगा कोई न कोई तो चाहिये नफ़्स और शैतान का दोस्त। ख़ैर, दाढ़ी का हुक्म हदीस से भी और हुज़ूर स० के अ़मल से भी साबित है। देखो, शिमाईले तिर्मिज़ी और मिश्कात शरीफ़।

दाढ़ी को बराबर करना हुज़ूर स० से साबित है

(۳۲) عن عمرو بن شعیب عن ابیه عن جده ان النبی صلی اللّٰه علیه وسلم

كان يأخذ من لحيته من عرضها وطولها (مشکوٰۃ شریف)

हुजूर स० का अमल था कि आप अपनी दाढ़ी को तूल व
अर्ज़ में यानी दाईं, बाईं और नीचे की जानिब जो बाल ज़्यादा
होते आप उनको कतरते थे।

तूल से मुराद लम्बाई यानी नीचे वाला हिस्सा। अर्ज़ से
मुराद दाईं, बाईं जानिब वाला हिस्सा, बअज़ अहमकों से मुलाकात
हुई थी तो उन्होंने तो यह कहा कि भाई किसी हदीस से दाढ़ी
का सुबूत ही नहीं है मगर हमने उनको जवाब दे दिया। और अब
उन बअज़ अहमकों का ज़िक्र है जो दाढ़ी को हाथ लगाने को ही
गुनाह तसव्वुर करते हैं और कहते हैं कि दाढ़ी को बिल्कुल कतरा
नहीं जायेगा। मगर शरीअत इन दोनों हज़रात के बीच है, यानी
दाढ़ी रखो मगर बे-तरतीब हो जाये तो उसको दुरुस्त करो मगर
इतना दुरुस्त न करो कि वह एक मुश्त से भी कम हो जाये वरना
गुनाहगार हो जाओगे। किसी नबी या सहाबी की सीरत में यह
नहीं मिलता कि उनकी दाढ़ी एक मुश्त से कम थी। ख़ैर इतनी
बात साफ़ हो गई कि दाढ़ी रखना सुन्नत है और बे-तरतीब होने
पर सही करना जाइज़, बल्कि सुन्नत है इस हदीस की रू से।
फुक़हा ने मुदल्लल तौर पर बयान कर दिया है कि एक मुश्त
दाढ़ी वाजिब है।

ख़िज़ाब का हुक्म क्या है?

(٣٨) عن ابی ذر رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ
وسلم إِنَّ أَحْسَنَ مَا غُيِّرَ بِهِ الشَّيْبُ الْحِنَّاءُ وَالْكَتَمُ (مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबूज़र रज़ि० बयान फरमाते हैं कि हुज़ूर स० ने
फ़रमाया जिसके ज़रिये बुढ़ापे को तबदील किया जाये उनमें
बेहतर मेहंदी और वसमा है यह एक किस्म की घास है।

इस हदीस से मालूम हुआ कि सफ़ेदी को दूर करने के लिये

मेंहदी इस्तेमाल की जा सकती है मगर बालों को काला करना हराम है। इस हदीस से।

(٤٩)عن ابن عباس عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال یکون قوم فی آخر الزمان یخضبون بھذا السواد کحواصل الحمام لا یجدون رائحة الجنة (مشکوٰۃ شریف)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० बयान फ़रमाते है कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया आख़री ज़माने में ऐसे लोग पैदा होंगे जो काला ख़िज़ाब करेंगे जो कबूतर के पोटे की मानिन्द होंगे ऐसे लोग जन्नत की खुशबू भी नहीं पायेंगे।

मतलब ज़ाहिर यह हुआ कि सुर्ख़ ख़िज़ाब जाइज़ है और काला ख़िज़ाब हराम है जो काला ख़िज़ाब इस्तेमाल करते हैं उन के लिये इबरत का मकाम है। अल्लाह तआला ख़ैर की हिदायत सबको दें।

ज़ुल्फ़ें (पंठे) सुन्नत हैं

(٥٠) عن عائشہ رضی اللہ عنھا قالت کنتُ اغتسل انا ورسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم من اناءٍ واحدٍ کان لہٗ شعر فوق الجُمةِ و دون الوفرةِ (ترمذی)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूर स० की ज़ुल्फ़ें जुमा के ऊपर और वफ़रा के नीचे होती थीं।

खुलासा कलाम– ज़ुल्फ़ों का सुन्नत तरीक़ा यह है कि ज़ुल्फ़ें कानों की लौ से नीचे और कांधों से ऊपर हों। यह सुन्नत है और हकीकत में ज़ुल्फ़ों की तीन इस्तलाहात हैं। एक तो है जुमा जो कानों तक पहुंच जाती है और वफ़रा उसको कहते हैं जो बाल कानों की लौ से नीचे हों मगर कंधो तक न हों बल्कि कंधों से ऊपर हों तो उसको लिम्मा कहते हैं और अब अलहम्दुलिल्लाह

तबलीग़ वालों ने इस पर भी अमल पैरा होने का शर्फ हासिल किया है और यह तीनों तरीके सुन्नत हैं।

औरतों के लिये नसीहत

(۵۱) عن علی رضی اللہ عنہ قال نہی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم أن تحلق المرأۃ رأسہا (ترمذی)

हज़रत अली रज़ि० बयान फ़रमाते हैं कि हुज़ूर स० ने औरतों को बालों के कटवाने से मना फ़रमाया यानी हलक़ करने से जिसे टकला भी कहते हैं और औरतों को मुतलक़ तौर पर बाल के काटने से भी मना फ़रमाया गया है।

मगर आज तो औरतों का फ़ैशन चल पड़ा है कि बालों को कटवाने का और इस काम में मुसलमान औरतें भी दाख़िल हैं। ख़ास तौर पर लड़कियां हालांकि यह काम हराम है औरतों के हक़ में, मगर इसका कोई एहसास नहीं। अल्लाह तआला ही बचाये पता नहीं आगे चल कर क्या होगा कि मां बाप भी बुराइयों से नहीं रोकते बल्कि यह तो उनका पैसों से साथ देते हैं कि जाओ और बाल कटवाकर आओ। हालांकि यह हराम है। बताओ आज हराम काम करने में इन्सान ज़रा भी ग़ौर फ़िक्र नहीं करता कि अल्लाह तआला को क्या मुंह दिखाऊंगा।

बल्कि औरतें अपने बालों को लम्बे ही रखें। यही औरतों की शान है बालों को कटवाना तो मर्दों का काम है। और हुज़ूर स० ने इन औरतों पर लअ़नत फ़रमाई जो मर्दों का तरीक़ा इख़्तियार करते हैं और उन मर्दों पर भी जो औरतों का तरीक़ा इख़्तियार करते हैं आज तो ऐसा ही हो रहा है।

इत्र सुन्नते रसूल स० है

(۵۲) عن انس رضی اللہ عنہ قال کانت لرسول اللہ صلی اللہ علیہ

وسلم سكة يتطيب منها (مشكوٰة شريف)

हज़रत अनस रज़ि० बयान फ़रमाते है कि हुज़ूर स० के पास सुक्का (एक इत्र की बोतल) था. आप इसमें से ख़ुशबू लगाते थे।

हासिल कलाम– तबलीग़ वाले कहते हैं कि इत्र सुन्नते रसूल है। यह कहना सही है यह हदीस सुन्नत पर दलालत कर रही है। मगर औरतों का बहुत तेज़ ख़ुशबू लगाना बाहर जाने के वक़्त नाजाइज़ है फ़ित्ने की वजह से लोग नज़र उठा उठा कर देखेंगे और औरत को मख़्फ़ी रहने का हुक्म है, हां अगर औरत घर में ही इत्र लगाये तो जाइज़ है। और हदीस में यह भी है कि इत्र को और दूध को मना न करो जब तुमको कोई हद्या दे और अगर ख़ुशबू को इस नीयत से लगायें कि लोग मेरी तारीफ़ें करेंगे तो यह ख़ुश्बू लगाना नाजाइज़ है इस नीयते बद की वजह से, और अगर कोई इस नीयत से लगाये कि किसी को मुझसे कोई तकलीफ़ न हो या दूसरे को सुकून हासिल हो तो यह लगाना सुन्नत है और सवाब का ज़रिया है इसी को तबलीग़ वाले इख़्लासे नीयत से तअबीर करते हैं कि नीयत को सही करो।

तेल का इस्तेमाल सुन्नत है

(۵۳) عن انس رضی اللہ عنہ قال كان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم يُكثِرُ دَهنَ رَاسِهِ تسريح لِحيَتِهِ وَيُكثِرُ القناعَ كَانَّ ثوبه ثوبُ زَيَاتٍ (مشكوٰة شريف)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर स० अपने सरे मुबारक पर कसरत से तेल इस्तेमाल करते थे। कसरत से दाढ़ी में कंघी करते थे। और अकसर सरे मुबारक पर एक कपड़ा रखते थे जो ऐसा नज़र आता था जैसे तेली का कपड़ा हो। मतलब यह कि तेल इतना कसरत से इस्तेमाल किया करते थे।

सुरमा लगाना सुन्नत है

(۵۴) عن ابن عباس رضی اللہ عنہما اَنَّ النبی صلی اللہ علیہ وسلم

قال اكتحلوا بالاثمد فانه يجلوا البصر وينبت الشعر وزعم ان النبى صلى الله عليه وسلم كانت له مكحلة يكتحل بها كل ليلة ثلاثة فى هذه وثلاثة فى هذه (ترمذى شمائل ص ٤)

हजरत इब्ने अब्बास रज़ि० बयान फ़रमाते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया कि अस्फ़हानी सुरमा बराबर लगाया करो क्योंकि वह सुरमा बीनाई को रोशन करता है और बालों यानी पलकों को उगाता है जो आंखों की ख़ूबसूरती व हिफ़ाज़त का ज़ामिन होता है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर स० की एक लम्बी सुरमे दानी थी जिससे आप रोजाना रात में तीन बार इस आंख में और तीन बार उस आंख में सुरमा लगाते थे। (यानी मुसलसल तीन सलाई दाईं आंख में और तीन सलाई बाईं जानिब वाली आंख में लगाते थे)

इस हदीस से मालूम हुआ कि सुरमा सुन्नते रसूल है और तबलीग़ वालों से भी यह सुनने को मिला, कि वह कहते हैं कि सुरमा सुन्नत है और इस हदीस से इसकी ताईद हो रही है और मज़ीद यह बातें कि तबलीग़ वाले कहते हैं कि तीन तीन मरतबा लगाना सुन्नत है और इस बात की ताईद भी इस हदीस के आख़री हिस्से. से हो रही है।

मुस्कुराना सुन्नत है

(٥٥) عن عبد الله بن الحارث بن جزء قال ما رايت احدا اكثر تبسما من رسول الله صلى الله عليه وسلم (مشكوة شريف)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन जज़ा रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने रसूल स० से ज़्यादा मुस्कुराने वाला किसी को नहीं देखा।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि हुज़ूर स० हर वक़्त मुस्कुराते थे मगर कभी हुज़ूर स० क़हक़हा लगा कर नहीं हंसे। हमें भी चाहिये कि हम भी हर एक से मुस्कुराकर बात करने वाले बनें कि इससे

मुख़ातब का दिल खुश होता है और मुसलमान को खुश करना इस्लाम की तालीमात में से है। लेकिन बअज़ लोग तकब्बुर और रोअ़ब दिखाने के लिये लोगों से मुस्कुराकर बातें नहीं करते और न सही सलाम का जवाब देते हैं और न सही मुसाफ़ह करते हैं लोग तो बड़े इज़्ज़त से पेश आते हैं मगर फिर भी यह मुतकब्बिरीन की तरह बस अपने रोअ़ब की ख़ातिर न सही बात करते हैं और न सही मुलाक़ात करते हैं। हां अगर किसी से मतलब हासिल होता हो तो उसके साथ नर्मी वाला तरीक़ा इख़्तियार करते हैं। खुदा के वास्ते इस ख़बीस आ़दत को छोड़ दो कि इससे न दीन का फ़ाइदा है और न कोई सही ज़हन वाला इसको सही समझता है और इससे बढ़कर बदनसीबी और क्या हो सकती है कि यह ख़िलाफ़े सुन्नत है कि सुन्नत तो मुस्कुराना है न कि रोअ़ब डालना और तकब्बुर से पेश आना और इस तरह अ़मल करने से दीनी ख़िदमत में कमी आती है कि लोगों को जो फ़ाइदा होना है वह फ़ाइदा नहीं हो पाता। लोग कहते हैं कि यह तो बस मुंह चढ़ाये बैठा है। ज़ाहिर में तो तारीफ़ करते हैं मगर हक़ीक़तन बाहर जाकर बदनाम करते हैं इसलिये सुन्नते रसूल को इख़्तियार करना ज़रूरी है वरना यह ख़िलाफ़े सुन्नत है और अकड़ कर रहना फ़ेअ़ले गुनाह है इस फ़ेअ़ल से बचना ज़रूरी है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि खुशबू वापस करनवापसा मना है

(۵٦) عن ابن هريرة رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من عُرض ريحانٌ فلا يَرُدُّه فإنّهُ المحمل طَيّبُ الريح (مشكوة شريف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया जिसको खुशबूदार फूल दिया जाये तो वह उसे वापस न

करे क्योंकि वह बहुत हलका एहसान है और वह एक अच्छी खुशबू है।

(۵۷) وعن انس رضی اللہ عنہ ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم کان لایرد الطیب (رواہ بخاری، مشکوۃ شریف)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर स० खुशबू को वापस नहीं किया करते थे, मुराद इत्र है।

इन दोनों हदीसों से मालूम हुआ कि खुशबू वाली चीज़ वापस न करनी चाहिये। तबलीग़ वालों का यह कहना कि यह हदीस है सही व दुरुस्त है और इसी तरह दूसरी हदीसों में दूध को वापस करने से भी मना किया गया है कि दूध को वापस न करो

लेटने का सुन्नत तरीक़ा

(۵۸) عن ابی قتادۃ رضی اللہ عنہ قال کان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اذا کان فی سفر فعرس بلیل اضطجع علی یمینہ واذا عرس قبیل الصبح نصب ذراعہ ووضع رأسہ علی کفہ (مشکوۃ شریف)

हज़रत क़तादा रज़ि० कहते हैं कि रसूल स० जब सफ़र के दौरान आराम करने और सोने के लिये किसी जगह रात में उतरते तो दाईं करवट लेटते थे और जब सुबह के क़रीब उतरते तो इस तरह लेटते कि अपना एक हाथ खड़ा करके उसकी हथेली पर सर रखते।

इस हदीस को इसलिये पेश किया कि तबलीग़ वाले कहते हैं कि सुन्नत तरीक़ा लेटने में यह है कि दाईं करवट लेटा जाये और उसकी दलील के लिये यह हदीस लिख दी है कि अगर कोई कज फ़हम सवाल करे कि बताओ कहां पर लिखा है कि दाईं करवट पर सोना सुन्नत है आप इस कजफ़हम को यह

हवाला देकर सही राह पर ला सकते हो। और अल्हम्दुलिल्लाह तबलीग़ वालो मे यह सुन्नत भी खूब मअमूल बिहा है। और एक तरीक़ा यह बताया गया है कि आप अपने सर के नीचे हाथ खड़ा करके सोया करते थे इसकी मसलेहत यह है कि अगर थोड़ी देर के बाद हुज़ूर स० को कोई काम होता तो आप यह तरीक़ा इख़्तियार करते थे। ताकि वक़्त पर नींद से बेदार हो जायें यह मसलेहत थी हुज़ूर स० की, कि हर काम वक़्त पर हो जाये। और इसके लिये असबाब भी उ़म्दा उ़म्दा इख़्तियार फ़रमाया करते थे और यह तरीक़ा हर उस आदमी के लिये उ़म्दा और कारामद है जो थोड़ी देर सो कर और फिर काम के लिये बेदार होना चाहता है तो उसके लिये यह तरीक़ा इख़्तियार करे कि सर के नीचे हाथ खड़ा करके रखे और सो जाये इन्शाल्लाह वक़्त पर बेदार होगा। और हदीस में यह बात भी मिलती है कि चित यानी पेट के बल सोना ख़िलाफ़े सुन्नत है और बाईं जानिब की करवट पर सोना भी नापसन्दीदा है क्योंकि बाईं जानिब दिल है और दिल पर कोई ज़ोर न पड़े इसलिये मना फ़रमाया है और इसी तरह छत पर सोने से मना फ़रमाया जिस छत पर दीवार न हो यानी गैलरी न हो क्योंकि हो सकता है कि नींद में वह छत से नीचे गिर पड़े।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि जिमाई के वक़्त हाथ मुंह पर रखो

(٥٩)وعن ابی سعید الخدری رضی اللہ عنہ اَنّ النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال اذا تثاوبَ احدُکم فلیُمسِکْ بِیَدِہٖ علی فمہٖ فاِنّ الشیطان یدخُلُ (ترمذی شریف)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० बयान करते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया जब तुममें से किसी शख़्स को जिमाई आये तो उसको

चाहिये कि वह अपना हाथ मुंह पर रख ले क्योंकि शैतान (अगर इसका मुंह खुला हुआ पाता है तो) इसमें घुस जाता है।

तबलीग़ वाले हज़रात यह कहते हैं कि जमाई के वक़्त मुंह पर हाथ रखना चाहिये क्योंकि शैतान दाख़िल हो जाता है। और बअज़ लोग यह कहते हैं कि पेशाब करता है मगर मुझको तो दाख़िल होने वाली हदीस मिली। मगर पेशाब करने वाली हदीस हाथ नहीं लगी जब मुझे मालूम होगी तो इसको भी लाहक़ कर दिया जायेगा मगर दाख़िल होने वाली बात तो इससे साबित हो रही है और हाथ रखना भी सुन्नत है जैसा कि तबलीग़ वाले कहते हैं सही है।

और दूसरी हदीस से यह भी मालूम हुआ कि छींकने के वक़्त भी हाथ रखना चाहिये क्योंकि हो सकता है कि नाक के ज़रिये बलग़म निकल जाये जिससे सामने वाले को नागवारी हो इसलिये ऐहतियात ज़रूरी है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि छींक के वक़्त यह दुआ है

(٢٠) عن ابی ايوب رضی الله عنه اَنَّ رسول الله صلی الله عليه وسلم قال اذا عَطَسَ احدُكم فليَقُلْ الحمد لله عَلٰى كُلِّ حالٍ فَلْيَقُلْ الذی يَرُدُّ عليه يرحمك الله وليَقُلْ هو يَهْدِيْكُمُ اللهُ وَيُصلِحُ بالَكُمْ (مشکوۃ شریف)

हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० बयान फ़रमाते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया तुममें से किसी को छींक आये तो चाहिये कि वह यह कहे الحمد لله على كل حال और जो शख़्स इसका जवाब दे उसको यह कहना चाहिये يَرْحَمُكَ الله और फिर छींकने वाले को यह कहना चाहिये يَهْدِيْكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ

तबलीग़ वाले यह कहते हैं और इस पर अमल करते हैं

इसलिये इस हदीस को ही पेश कर दिया गया कि मोअ़तरिज़ का मुंह बन्द हो जाये और कुछ फ़िक्र करे इस बात पर कि अब ऐतिराज़ बहुत हो गया चलो अब एक बार जमाअ़त में वक़्त लगायें और सही बात से बाख़बर हो जायें। क्योंकि पूरी और मुतहक़्क़क़ बात तो उस वक़्त हासिल होती है जब उस काम में घुस जायें, जैसे कि काफ़िर पहले तो ख़ूब औल–फ़ौल बकते थे मगर जब कलिमा पढ़ लिया तो हक़ीक़त वाज़ेह हो गई और यही हाल इस काम का भी है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि सलाम में पहल अफ़ज़ल है

(٦١) وعن ابی امامة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم اِنَّ اَولَی النَّاسِ بِاللّٰهِ مَنْ بَدَأَ بالسلام (مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू उमामा रज़ि० बयान फ़रमाते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया लोगों में से अल्लाह तआ़ला के नज़दीक बेहतर वह शख़्स है जो सलाम करने में पहल करे।

इसमें हज़रत मुहम्मद स० ने उस शख़्स के हक़ में यह फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई है कि जो सलाम में पहल करे और तबलीग़ वालों का इस हदीस पर भी अ़मल है। मज़ीद फ़ज़ीलत के लिये लिख रहा हूं फ़ज़ीलत यह है कि हर एक कोशिश करे कि मैं सबसे पहले सलाम करूंगा और ज़्यादा सवाब का हक़दार बनूंगा और सलाम को आ़म करूंगा। जब भी कोई मुसलमान नज़र आये मैं सलाम से उसका इस्तिक़बाल करूंगा। इसलिये हदीस में है اَفشُوا السلام कि सलाम को आ़म करो एक मुसलमान दूसरे मुसलमान पर हर वक़्त सलामती भेजे और बअ़ज़ जाहिल वह हैं जो सलाम करने पर भी जवाब नहीं देते हैं इस काम की मज़म्मत

हदीस में वारिद है। क्योंकि सलाम करना सुन्नत है और सलाम का जवाब देना वाजिब है जिस तरह कि नफ़्ल नमाज़ पढ़ना सुन्नत है और जब नीयत बांध ली तो इस नफ़्ल को पूरा करना वाजिब हो जाता है मगर मैं कहता हूं कि सलाम करो और जो जवाब न दे तो उसको और ख़ूब ज़ोर से सलाम करो वह जवाब देकर जन्नत कमाये या हदीस की मुख़ालफ़त करके यानी जवाब न देकर दोज़ख़ में पहुंच जाये जो उसको पसन्द हो उसको इख़्तियार करे। हमारा कोई नुक़सान नहीं और काफ़िरों को सलाम करना जाइज़ नहीं क्योंकि सलामती का हामिल वह बदन या जिस्म ही बन सकता है जो ईमान वाला हो और काफ़िर ईमान से ख़ाली होता है अब काफ़िर को सलाम करना सलामती का महल नहीं है बल्कि सलामती को बे-महल रखना है और किसी भी चीज़ को उसकी असल जगह से हटा कर दूसरी जगह रखना ज़ुल्म है और ज़ुल्म जाइज़ नहीं है इस वजह से काफ़िर को सलाम करना भी जाइज़ नहीं और औरतों का सलाम करना भी जाइज़ नहीं, हां मेहरम को कर सकती हैं ग़ैर मेहरम को सलाम जाइज़ नहीं क्योंकि औरतों की आवाज़ को भी छिपाने का हुक्म फ़रमाया गया है यह चन्द बातें ज़िक्र करना ज़रूरी थीं इसलिये कर दी हैं।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि दरवाज़े पर मत खड़े रहो

(٦٢) عن عبد الله بن بسير رضی الله عنه قال كان رسول الله صلی الله علیه وسلم اذا اتی بابَ قوم لم يَسْتقبل البابَ من تلقاء وجهه ولكن من ركنه الايمن او الاَيْسر فيقول السلام عليكم وذلك ان الدور لم يكن يومئذ عليها ستورٌ (مشکوٰۃ، ترمذی)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बसरी रज़ि० कहते हैं कि रसूल स० जब किसी के (घर जाने के लिये उसके) दरवाज़े पर पहुचते तो दरवाज़े की तरफ़ मुंह करके खड़े न होते (ताकि घरवालों पर नज़र न पड़ जाये) बल्कि दाईं या बाईं जानिब खड़े होते और फिर इजाज़त मांगते। आप उस घर वालों को सलाम करते (रावी कहते हैं) यह उस वक़्त की बात थी जब मकानात पर पर्दे नहीं हुआ करते थे।

इस हदीस का शुरू हिस्सा तबलीग़ वालों की एक दलील है और कुरआने करीम में भी इजाज़त लेकर घर में दाख़िल होने का हुक्म मौजूद है।

قال الله تعالى في القرآن المجيد ﴿يٰاَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰى اَهْلِهَا﴾ (پاره١٨)

तर्जुमा:— ऐ ईमान वालो! दूसरों के घरों में दाख़िल मत हो यहां तक कि घरवालों को मानूस करो (यानी इजाज़त तलब करो) और उस घर वालों को सलाम कर लो।

देखो, इस आयत से भी यही ज़ाहिर हो गया कि दूसरों के घरों में बग़ैर इजाज़त के दाख़िल होना जाइज़ नहीं है चाहे अपना ही घर हो तब भी हदीस में है कि इजाज़त तलब कर लो चाहे इजाज़त जिस क़िस्म की हो चाहे खंकार कर हो या सलाम के ज़रिये। बस घर वालों को ख़बर हो जाये और वह अपनी हालत, अगर दुरुस्त नहीं है तो दुरुस्त कर लें और हमें चाहिये कि हदीस पर अ़मल करें। यह तबलीग़ वालों की मनघढ़त बातें नहीं हैं बल्कि वह कुरआन और हदीस की ही बाते बताते हैं।

तबलीग़ वाले भी कहते हैं कि घर जब जाओ तो दरवाज़े के सामने मत खड़े रहो इससे बे–पर्दगी होती है और यह जाइज़ नहीं बल्कि एक जानिब खड़े होकर सलाम करो या आवाज़ दो

और यह अ़मल गश्त मे भी होता है और यह अ़मल सुन्नत है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि अ़मामा बांधने से नमाज़ सत्तर गुना अफ़ज़ल हो जाती है

(۷۳) قال رسول الله صلی الله علیه وسلم ان الرکعتین مع العمامة افضل سبعین رکعة بدونها (ترمذی)

हुज़ूर स० फरमाते हैं कि दो रक्अ़त अ़मामे के साथ नमाज़ पढ़ना बग़ैर अ़मामे के सत्तर रक्अ़त नमाज़ से अफ़ज़ल है।

यह ऐतिराज़ होता है कि तबलीग़ वाले पता नहीं कहां से यह हदीस लाकर बयान करते हैं कि दो रक्अ़त का सवाब सत्तर गुना ज़्यादा होगा हम ने तो कहीं नहीं पढ़ा। देखो इन मोअ़तरिज़ को कि हमने कहीं नहीं पढ़ा। शरीअ़त का मुक्कमल इल्म गोया इसको घोल कर पिलाया गया है कि हर हदीस पर आगाह होगा। इन मुनकिरीन के लिये यह हदीस पेश की है कि अब पढ़ लेना कि यह बयानकर्दा हदीस दुरुस्त है। और सवाब जो बयान किया गया है वह भी दुरुस्त है मगर तुम अपनी ख़सलत को दुरुस्त करने की कभी न सोचोगे। अरे भाई अबू जहल की तरह ज़िन्दगी बसर न करो और इस तरह दीन पर ऐतिराज़ न करो।

अ़मामे के मुतअ़ल्लिक़ चन्द ज़रूरी बातें

وارسال عذبة العمامة ایضا مستحب مع الترک احیاناً فانّ النبی صلی الله علیه وسلم سَدَلَ عمامة فی مُعْظَمِ الاوقات وترکهٗ احیانا وعذبة صلی الله علیه وسلم تکون محالیًا بین کتبه واحیانًا فی جانب الیمین فمن هُنا وقیل ان السدل فی جانب الیسار بدعةٌ ومقدار العذبة اربع اصابع واکثرها ذراعٌ وحَدُّها الی نصف الظهر والتجاوز عنه بدعةٌ داخلٌ فی الاسبال۔

(شمائل کا حاشیہ)

और अ़मामे का शमला लटकाना भी मुस्तहब है कभी कभी

छोड़ने के साथ हुज़ूर स० से भी साबित है कि आप ने शमला लटकाया अकसर औक़ात, और कभी लटकाया शमला को दाईं जानिब और कहा गया कि बाईं जानिब लटकाना बिदअ़त है और शमले की मिक़दार क्या हो? कहा, कम से कम चार उंगलियों के बराबर और ज़्यादा से ज़्यादा एक हाथ (यानी ज़िरअ़ के बक़द्र) इसकी मिक़दार निस्फ़ पुश्त तक हो वरना निस्फ़ पुश्त से ज़्यादा बिदअ़त है। इसलिये कि इसबाल के हुक्म में दाख़िल है और इसबाल नाजाइज़ है।

मूंछ का कतरवाना सुन्नत है

(۲۴) عن زيد بن ارقم ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال من لم ياخذمن شاربه فليس منا (مشكوٰة شريف)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया जो शख़्स मूंछों को न कतरवाये वह हम में से नहीं है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि मूंछें कतरवाना सुन्नत है देखो हुज़ूर स० ने मूंछें न कतरवाने वाले शख़्स के लिये कितनी सख़्त वईद फ़रमाई है कि वह हम में से नहीं है मुराद हमारे तरीक़े पर नहीं है।

चप्पल जूतों की सुन्नत

(۲۵) عن ابى هريره رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا انْتَعَلَ اَحدُكُم فَلْيَبْدا باليمين واذا نَزَعَ فلْيبدا بالشمال لِتَكُنِ الْيُمْنٰى اَوَّلَهُمَا تنعل و آخرهما تنزع (مشكوٰة شريف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० बयान फ़रमाते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया जब तुम में से कोई शख़्स जूते पहने तो उसको चाहिये कि दायें पैर से शुरुआ़त करे और जब निकाले उस वक़्त बाएं पैर का जूता निकाले इस पर पैर के दाख़िल करने में दोनों में से

दाहिना पहले रहे और उतारते वक्त बाद में रहे।

हासिल यह हुआ कि जूते को पहनते वक्त दाहिना पैर और निकालते वक़्त बाया पैर सुन्नत है हदीस की रोशनी मे एक मुख्तसर और जामेअ़ ज़ाबता बताता हूं कि जो भी काम मुकर्रम या फ़ज़ीलत वाला हो उसको दाईं जानिब से शुरू करना चाहिये और जो काम ग़ैर मुकर्रम हो उसको बाईं जानिब से शुरू करना चाहिये यह काइदा अकसर जगह पर इस्तेमाल होता है और इससे यह बात भी साबित हुई कि जब मस्जिद में दाख़िल हों तो दायें पैर से शुरुआत करनी चाहिये क्योंकि यह मुकर्रम फ़ेअ़ल है और जब निकलने का वक़्त हो तो ग़ैर मुकर्रम है कि मस्जिद अमन की जगह है अब बायां पैर निकाले। अब यह परेशानी आती है कि भाई मस्जिद से पहले बायां पैर बाहर निकाल कर जूते में दाहिना पैर किस तरह दाख़िल करें? इस का जवाब यह है कि हज़रात सवाल सही है मगर यह शरीअ़त मुहम्मद स० की है कोई ऐसी वैसी नहीं। जवाब देखिये आप मस्जिद से निकले तो बाया पैर मस्जिद से निकाल कर बाएं जूते पर पैर रखे और फिर दाहिना पैर निकाल कर दाएं जूते को पहन ले फिर बाया जूता पहनें। और दूसरी बात यह भी ज़ाहिर हो गई कि बैतुलख़ला में जाना ग़ैर मुकर्रम है तो यही ज़ाबता काम आया कि बाएं पैर को पहले बैतुलख़ला में दाख़िल करो और जब निकलने का वक़्त हो तो यह निकलना मुकर्रम काम है अब दाहिना पैर पहले निकालो यह हैं ज़ाबते की मिसालें।

जूते मस्जिद में रख सकते हैं

(٢٦) عن ابی ہریرہ رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اذا صلی احدکم فلا یضع نعلیہ عن یمینہ ولا عن یسارہ فتکون عن یمین غیرہ الا ان لا یکون علی یسارہ احد ولیضعہما بین رجلیہ (مشکوٰۃ)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० बयान फरमाते है कि हुज़ूर स० ने फरमाया जब तुम में से कोई नमाज पढ़े तो अपने जूतो को न दाई जानिब रखे न बाई जानिब, कि वह किसी दूसरे का दाहिना होगा और बाई जानिब रखने में कोई क़बाहत नहीं है जबकि बाई जानिब कोई दूसरा आदमी न हो वरना तो अपने दोनों पैरों के बीच रखें।

देखो इस हदीस से मस्जिद में जूते लेकर जाने का सुबूत है मगर बअ़ज़ लोग तबलीग़ वालों पर यह ऐतिराज़ करते हैं कि यह तबलीग़ वाले मस्जिद का ऐहतिराम नहीं करते जूते भी मस्जिद में रखते हैं। मोअ़तरिज़ को यह हदीस पढ़ लेनी चाहिये फिर मालूम होगा कि तबलीग़ वाले ख़िलाफ़े हदीस करते हैं या मुवाफ़िक़े हदीस करते हैं। अलबत्ता अगर मस्जिद की तलवीस का अन्देशा हो तो जूते अलग रखे जायें।

बिस्तर झाड़ने पर हदीस है

(۲۷) عن ابی هریره رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم اذا اوی احدکم الی فِراشهٖ فَلْیَنفُضْ فِرَاشَهٗ بداخلةِ اِزَارِهٖ فَاِنَّهٗ لا یدری ما خَلَفَهٗ علیه (مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० बयान करते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया जब तुम में से कोई अपने बिस्तर पर आये तो उसको चाहिये कि अपने बिस्तर को अपनी लुंगी के अन्दर के कोने से झाड़ ले क्योंकि उसको मालूम नहीं है कि उसकी अदमे मौजूदगी में उसके बिस्तर पर क्या चीज़ गिर पड़ी हो इसके बाद वह बिस्तर पर लेटे।

(۲۸) وعن حذیفة رضی الله عنه قال كان النبی صلی الله علیه وسلم اذا اخذ مضجعهٗ من اللیل وضع یدهٗ تحت خدِّهٖ ثم قال اللّٰهُمَّ

باسمك اموت واحيى واذا استيقظ قال الحمد لله الذى احيانا بعد ما اماتنا واليه النشور (بخارى، مسلم، مشكوة شريف)

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० बयान करते हैं कि हुज़ूर स० जब रात को सोने के लिये अपने बिस्तर पर तशरीफ़ लाते उस वक़्त अपना हाथ गाल के नीचे रखते और यह फ़रमाते اللهم باسمك اموت واحيى और जब नींद से बेदार होते तो उस वक़्त यह दुआ पढ़ते—

الحمد لله الذى احيانا بعد ما اماتنا واليه النشور.

तबलीग़ वाले हज़रात बिस्तर झाड़ने को सुन्नत कहते हैं इस क़ौल को साबित करने के लिये यह हदीस लिख दी है और दूसरी बात यह ग़ौर करने की है कि यह हुक्म उस वक़्त है जब आप घर में हों और अगर आप मस्जिद में हों तो मस्जिद में बिस्तर झटकना सही नहीं है बल्कि तरतीब यह हो कि उस बिस्तर को मस्जिद के बाहर ले जाकर झटके।

दूसरी हदीस से चन्द बातें सामने आई हैं: अव्वल यह कि तबलीग़ वाले कहते हैं कि सोते वक़्त दाएं जानिब सर के नीचे हाथ रखना सुन्नत है यह बात भी साबित हो गई और दूसरी यह बात भी साबित हो गई जो तबलीग़ वाले कहते हैं कि सोते वक़्त और उठते वक़्त मज़कूरह दुआ पढ़नी सुन्नत है यह बात भी सही है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि जब कोई आदमी सोता है तो शैतान गिरहें लगाता है

(٦٩) عن ابى هريرةؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يعقد الشيطانُ على قافية راسِ احدكم اذا هو نام ثلاث عقد يضرب على كل عقدةٍ عليكَ ليل طويل فارقد فان استيقظ وذكر الله تعالى انحلت عقدة فان توضأ انحلَّتْ عقدة فان صلى انحلت عقدة فاصبح نشيطا طيب النفس والا اصبح خبيث النفس كسلان (احياء العلوم جلد اول، مشكوة)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया तुममे से जब कोई शख़्स सोता है तो शैतान उसकी गुद्दी पर तीन गिरहें लगा देता है और हर गिरह पर यह फूंक देता है कि अभी रात बहुत लम्बी है सोता रह अगर वह शख़्स बेदार हो जाए और अल्लाह तआला का ज़िक्र कर ले तो एक गिरह खुल जाती है और अगर वह वुज़ू कर ले तो दूसरी गिरह खुल जाती है और नमाज़ पढ़े तो तीसरी गिरह खुल जाती है, सुबह को वह निशात और सुरूर की कैफ़ियत के साथ उठता है वरना इस हालत में उठता है कि उसका नफ़्स नामुराद और जिस्म सुस्त होता है।

और दूसरी हदीस में है: ذاك بال الشيطان فى اذنه यह एक शख़्स का ज़िक्र किया गया कि वह सारी रात सोता रहा, इस पर हुज़ूर स० ने यह जुमला इरशाद फ़रमाया कि उसके कान में शैतान ने पेशाब कर दिया था। (अहयाउल—उ़लूम, अव्वल)

यह दोनों हदीसें तबलीग़ वाले बयान करते हैं मगर लोगों को बअ़ज़ मरतबा हवाला न होने की वजह से शक होता है कि यह हदीस है या किसी आ़लिम का क़ौल है इस शक को दूर करने के लिये हदीस के अलफ़ाज़ ख़ादिम ने नक़ल कर दिये हैं ताकि मालूम हो जाये कि यह हदीस है न कि किसी आ़लिम का क़ौल।

तबलीग़ी जमाअ़त वालों की दावत करना

(٧٠) عن عبد الله ابن عمر رضى الله عنهما اَنَّ رَجُلاً سَاَلَ رسول الله صلى الله عليه وسلم اَىُّ الاسلام خيرٌ قال تُطعِمُ الطعام الخ (مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन उ़मर रज़ि० बयान करते हैं कि एक शख़्स ने हुज़ूर स० से सवाल किया कि अहले इस्लाम की कौन सी ख़सलत बेहतर है? हुज़ूर स० ने जवाब दिया खाना खिलाना यानी दावत देना।

इससे मालूम हुआ कि दावत करना अहले इस्लाम की उम्दा खसलत है और दावत करने वालों के लिये बेशुमार फ़ज़ाइल मौजूद है मगर बअज मोअतरिज़ीन यह कह देते हैं कि लोग तो बस जमाअत में दावत खाने जाते हैं और दूसरा कोई काम नहीं करते। मोअतरिज़ ने इतने लोगों से खा लिया मगर फिर भी दूसरों के खाने पर नज़रे बद लगाता है। आप बख़ूबी समझ गये होंगे कि वह कौन सी शख़्सियत है जिसने लोगों को लूटने की मशीन तैयार कर रखी है। बदनाम करने की तदबीर बेकार हो गई तो अब खाने पर आ गये कि जमाअ़त वाले अल्लाह तआ़ला के नाम पर जाते हैं मगर काम कुछ नहीं करते बस सिर्फ़ दावत ही खाते हैं। देखो! इन कमज़र्फ़ों को कि कैसी बच्चों वाली बातें करते हैं खाना और पीना भी कोई देखता है। अरे खिलाने वाला खिला रहा है, खाने वाला खा रहा है आपके पेट में क्यों दर्द हो रहा है? हालांकि दावत देने का भी हुक्म है और दावत कुबूल न करने पर वईद है मगर यह कि कोई उ़ज़्र हो तो फिर कौनसा ख़िलाफ़े हदीस काम है बस बात यह है कि ख़ुद के लडडू वाले अफ़राद कम हो रहे हैं इस का ग़म है और कुछ नहीं। अल्लाह तआ़ला के वास्ते सही राह पर आ जाओ वरना दोज़ख़ में लडडू ही पर बैठना होगा।

दूसरी हदीस:

(۱۷) ان فی الجنة غرفا یُریٰ باطنها من ظاهرها وظاهرها من باطنها وهی لمن الان الکلام واَطعَمَ الطعام وصلی باللیل والناس نیام (احیاء العلوم جلد دوم)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया कि जन्नत में कुछ कमरे ऐसे हैं कि उनके बाहर से अन्दर का मन्ज़र और अन्दर से बाहर का मन्ज़र नज़र आता है क्योंकि यह कमरे उन लोगों के लिये हैं जो नर्म गुफ़्तुगू करें, खाना खिलायें और रात को जब लोग सो जायें तो नमाज़ पढ़ें।

(٧٢) وقال رسول الله صلى الله عليه وسلم خيركم من اطعم الطعام (احياء العلوم جلد اول، بخاری جلد اول)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया तुम में से बेहतर वह है जो खाना खिलाये।

देखो! इन हदीसों से भी तबलीग़ वालों का अमल साबित हो रहा है कि वह हज़रात बेहतर हैं जो लोगों को अल्लाह तआला के लिये खाना खिलाते हैं इससे तअ़ल्लुक़ात में मुहब्बत बढ़ती है मगर जो बुरी नज़रों से देखे उसका हम क्या करें। वह हमको हक़ निगाहों से देखेगा तो हम हक़ पर ही नज़र आयेंगे।

दावत न करने वाले के लिये और कुबूल न करने वाले के लिये तअ़न

(٧٣) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا خير فيمَنْ لا يضيف (احياء العلوم جلد دوم)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया जो शख़्स मेहमान की ज़ियाफ़त न करे उसमें कोई ख़ैर नहीं।

ख़ुद बताओ तबलीग़ वाले ग़लत करते हैं या सही और यह हदीस उनकी ताईद कर रही है चाहे तुम करो या न करो।

(٧٤) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من لم يُجبِ الداعى فقد عَصى الله وَرَسُولَهُ (احياء العلوم جلد دوم، بخاری ومسلم)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया जिस शख़्स ने दावत कुबूल नहीं की उसने अल्लाह तआ़ला की और उसके रसूल की नाफ़रमानी की।

बताओ मोअ़तरिज़ कहता है कि तबलीग़ वालों को दावत नहीं खानी चाहिये। और हुज़ूर स० फ़रमा रहे हैं कि खाओ, वरना नाफ़रमानों में शरीक हो जाओगे। हम ने तो हुज़ूर स० की मानी और तुम्हारा ऐतिराज़ तुम्हे सलामत।

किस की दावत कुबूल की जाये

(٧٥) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا تاكل الطعام تقى ولا ياكل طعامك الا تقى (احیاء العلوم جلد دوم)

हुज़ूर स० ने फरमाया मुत्तकी के अलावा किसी का खाना मत खाओ और तुम्हारा खाना मुत्तकी के अलावा कोई न खाये।

हुज़ूर स० ने भी बता दिया कि किसी बिदअत पर अमल करने वाले को दावत न दी जाये और न दावत कुबूल की जाये (मगर यह कि कोई मसलेहत हो) और न काफ़िर की दावत कुबूल की जाये और न दी जाये, मगर तबलीग़ वालों को चाहिये कि नेक लोगों की दावत कुबूल करें और जो लोग नेक नहीं हैं उनको नेक बनने की दावत दें फिर अगर वह दावत दें तो उन की दावत कुबूल की जाये और मुसलमानों को दावत दो और उनकी दावत कुबूल करो। तबलीग़ वालों को इसलिये ख़ास किया क्योंकि असल कलाम तबलीग़ पर ही हो रहा है और नाम लेने में असर ज़्यादा होता है। मसलेहतन काफ़िरों की दावत में भी जाना दुरुस्त है और हुज़ूर स० कई मरतबा काफ़िरों की दावतों में शरीक हुए हैं।

दावत देने वाले को हक़ है कि वह बिन—बुलाए को वापस कर दे

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० की हदीस का आख़री हिस्सा—

(٧٦) قال النبی صلی الله علیه وسلم یا ابا شعیب اِنَّ رَجُلاً تبعنا فَاِن شِئْتَ اَذِنْتَ له وان شِئْتَ تَرَکْتَهُ قال لا، بل اَذنتُ لهٗ (مشکوٰۃ شریف)

एक सहाबी ने हुज़ूर स० को दावत दी हुज़ूर स० रास्ते से तशरीफ़ ला रहे थे इतने में एक आदमी आपके साथ आकर मिल गया और बातें करते करते दावत वाले के घर तक पहुंच गया

जब दाख़िल होने का वक्त आया तो हुज़ूर स० ने दावत देने वाले से यह जुमला कहा ऐ अबू शुऐब! एक आदमी हमारे साथ हो लिया है अगर तुम कहो तो उसको छोड़ दूं।

हज़रत शुऐब रज़ि० ने कहा नहीं, बल्कि उनको आने दो मैं ने इजाज़त दे दी।

इससे यह मालूम हुआ कि जिस को दावत न दी गई हो उसको दावत देने वाला शख़्स वापस कर सकता है मगर यह भी मालूम हो जाये कि हुज़ूर स० ने बग़ैर दावत के दावत में जाने वाले के लिये वईद भी बयान की है कि बग़ैर दावत के दावत में जाने वाला चोर होता है और जब दावत खा कर लौटता है तो डाकू बन कर लौटता है यह फ़ेअ़ल अख़लाक़ के भी ख़िलाफ़ है। शरीअ़त के नज़दीक तो और ज़्यादा ख़िलाफ़ होगा ही।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि खाने में जितने अफ़राद ज़्यादा होंगे उतनी ही बरकत होगी

(۷۷) عن وحشی بن حرب رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم اِجتمعوا علی طعامکم واذکروا اسم الله یبارك لكم فيه

(ابوداؤد، احیاء العلوم جلد دوم، ترمذی)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया अपने खाने पर जमा रहो यानी मिल कर खाओ और बिस्मिल्लाह पढ़ो इससे तुम्हारे खाने में बरकत होगी।

(۷۸) وقال رسول الله صلی الله علیه وسلم خیر الطعام ما كَثُرَتْ علیه اید (احیاء العلوم جلد دوم)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया कि बेहतरीन खाना वह है जिस पर हाथ ज़्यादा हों।

(۷۹) عن وحشی بن حرب عن ابیه عن جدّه انّ اصحابَ رسول

الله صلى الله عليه وسلم قالوا يا رسول الله انا ناكل ولا نشبع وقال فلعلكم تفترقون قالوا نعم قال فاجتمعوا على طعامكم واذكروا اسم الله يبارك لكم فيه (مشكوة شريف)

हुज़ूर स० से एक दिन कुछ लोगों ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! हम खाते हैं मगर हमारा पेट नहीं भरता हुज़ूर स० ने फ़रमाया शायद तुम लोग अलग अलग खाते हो। उन्होंने अर्ज़ किया जी हां, आप स० ने फ़रमाया तो फिर तुम लोग अपने खाने के वक़्त इकट्ठे बैठा करो और इस पर (यानी खाते वक़्त) अल्लाह तआ़ला का नाम लिया करो, तुम्हारे लिये इस खाने में बरकत होगी।

इन तमाम हदीसों से यह बात साबित होती है कि खाना मिलकर खाना चाहिये क्योंकि यह सुन्नत, रसूलुल्लाह स० की है और यह तरीक़ा बरकत का सबब है और मुहब्बत में इज़ाफ़ा करने वाला है।

खाते वक़्त कोई दूसरा हो तो उसको भी शरीक कर लो

(٨٠) عن ابى هريرة رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم طعامُ الاثنين كافى الثلاثة وطعامُ الثلاثةِ كافى الاَرْبَعَةِ (متفق عليه، مشكوة شريف، ترمذى جلد ثانى)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० बयान करते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया दो आदमी का खाना काफ़ी है तीन अफ़राद के लिये (यानी दो का खाना हो और कोई दूसरा मौजूद हो तो उसको भी शरीक कर लो क्योंकि बतौर कनाअ़त दो अफ़राद का खाना तीन के लिये काफ़ी हो जाता है) और तीन अफ़राद का खाना चार अफ़राद के लिये काफ़ी है।

हदीस का मतलब यह नहीं हैं कि दो आदमी का खाना तीन आदमी के लिये काफ़ी है ऐसा नहीं है, मतलब यह है कि अगर कोई दोस्त या कोई दूसरा आदमी मौजूद हो और तुम खाना खा रहे हो और खाना दो आदमियों का हो उस वक़्त हुज़ूर स० का यह फ़रमान है कि आप उसको भी शरीक कर लो इससे मुहब्बत भी बढ़ेगी और उसका भी काम हो जायेगा और तुम्हारा भी बतौरे क़नाअ़त पेट भर जायेगा। हासिल यह हुआ कि सामने वाले साथी को बुलाना चाहिये।

जूता निकाल कर खाना खाओ

(٨١) عن انس رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اذا وُضِعَ الطعام فاخلَعُوا نعالکم فانہ اروَح لِاقدامکم (ترمذی، مشکوٰۃ)

हज़रत अनस रज़ि० बयान करते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया जब तुम्हारे सामने खाना रखा जाये तो अपने जूते उतार दो क्योंकि जूते उतारना पैरों के लिये राहत बख़्श है।

हदीस यह बता रही है कि खाते वक़्त चप्पल न पहनो। फ़ाइदा यह है कि पैरों के लिये यह तरीक़ा राहत बख़्श है और चप्पल पहन कर खाने की नौबत होटलों में पेश आती है उस वक़्त यह हदीस काम देगी और होटलों में चप्पल निकाल कर खाना कोई मअ़यूब फ़ेअ़ल भी नहीं है इसलिये वहां पर भी इस हदीस पर अ़मल किया जाये और हक़ीक़तन यह अख़्लाक़े तय्यिबा के ख़िलाफ़ भी है कि आप चप्पल पहन कर खायें।

(खाने में हाथ धोना अव्वल व आख़िर, सुन्नत है)

हज़रत सलमान रज़ि० की हदीस का आख़री हिस्सा—

(۸۲)فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم بركة الطعام الوضوء قبله والوضوء بعده (مشكوة شريف، ترمذی ثانی)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया, खाने में बरकत का ज़रिया यह है कि खाने से पहले और खाने के बाद हाथ धो ले (इससे बरकत होगी)

हासिल यह निकला कि तबलीग़ वाले कहते हैं कि शुरू तआम में और आख़िर तआम में हाथों को धोना सुन्नत है यह बात साबित हो गई और मज़ीद यह बात वाज़ेह हो गई कि हाथ धोने से खाने में बरकत हो जाती है और तीसरी बात यह है कि हर नज़ीफ़ और पाक इन्सान इसको ही पसन्द करता है। देखो! आज साईंस ने इस हदीस को और ज़ाहिर कर दिया है वह कहते हैं कि हाथ धो कर खाना खाया करो इससे सैकड़ों बीमारियों से शिफ़ा है। देखो यह है मज़हबे इस्लाम, कि आज से डेढ़ हज़ार साल पहले ही वह बात फ़रमा दी जो आज लोग समझ रहे हैं।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि खाने को नाम न रखो

(۸۳) عن ابی هريرة رضی الله عنه قال ما عاب النبی صلى الله عليه وسلم طعامًا قطُّ اِنْ اشتَهاهُ اَكلَهُ وَاِنْ كَرِهَهُ تركه (متفق عليه، مشكوة شريف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर स० ने कभी भी खाने को ऐब नहीं लगाया अगर पसन्द होता तो खा लेते और अगर रग़बत नहीं होती तो छोड़ देते।

हासिले हदीस— तबलीग़ वालों के क़ौल की ताईद हो गई कि यह फ़ेअ़ल सुन्नत है और मैंने तबलीग़ वालों को इसका हुक्म करते हुए देखा है कि भाई जैसा भी खाना हो खाओ मगर नाम न रखो पसन्द न हो तो छोड़ दो और यह तरीक़ा सुन्नत है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि खाना ठन्डा करके खाना सुन्नत है

(٨٤) عن اسماء بنت ابی بکر انّها کانت اذا اُتِیَتْ بثرید اَمَرَتْ به فغطّی حتّٰی تذهب فورة دُخانه وتقول انی سمعتُ رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیه وسلم یقول هو اعظمُ للبرکة (مشکوٰۃ شریف)

हज़रत असमा बिन्ते अबूबक्र के बारे में रिवायत है कि जब उनके सामने सरीद लाया जाता तो वह उसको ढांक देने का हुक्म देतीं। चुनांचे उसको ढांक कर रख दिया जाता था यहां तक कि उसके धुएं और भाप का जोश निकल जाता, नीज़ वह फ़रमाती थीं कि मैंने नबी करीम स० को यह फ़रमाते हुए सुना कि खाने में से गर्मी का निकल जाना बरकत में ज़्यादती का मोजिब है।

और दूसरी हदीस देखिये—

(٨٥) قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیه وسلم ابردوا الطعام فان الطعام الحار غیر ذی برکة (طبرانی، احیاء العلوم دوم)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया, खाने को ठन्डा किया करो (क्योंकि) गर्म खाने में बरकत नहीं।

इसी तरह एक मरतबा हुज़ूर स० की ख़िदमत में खाना लाया गया, उससे गर्म भाप निकल रही थी उस वक़्त हुज़ूर स० ने हाथ उठा लिया और फ़रमाया कि ﴿انّ اللّٰہ لم یُطعِمنا نارًا﴾ कि अल्लाह तआला हम को आग नहीं खिलाता है। मुराद है कि गर्म खाना दुरुस्त नहीं है और यही बात तबलीग़ वाले भी कहते हैं कि खाना ठन्डा करके खाना सुन्नते रसूल है। बिल्कुल दुरुस्त बात है और इन हदीसों से सुन्नत का होना ज़ाहिर भी हो गया, यह है तबलीग़ वालों का तअल्लुक़ हदीस से।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि खाते वक़्त अगर लुक़मा गिर जाये तो उसको उठा कर साफ़ करके खाओ

(٨٦) عن جابر رضی الله عنه قال سمعتُ النبی صلی الله علیه وسلم یقول اِنَّ الشیطان یَحضُرُ اَحَدکم عند کُلِّ شیٍ ، من شانه حتی یَحضُرَهُ عند طعامِهٖ فاذا سقطت من احدکم اللُّقمة فلْیُمِط ماکان بها من اذیً ثم لیاکلها ولا یَدَعْهَا للشیطان فاذا فرغ فلیلعق اصابِعَهُ فانَّهٗ لا یدری فی اَیِّ طعامه تکون البرکۃُ (مسلم،مشکوٰۃ شریف،ص ٣٦٣،ترمذی)

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर स० को यह कहते हुए सुना कि शैतान तुम्हारे हर काम के वक़्त तुम्हारे पास मौजूद होता है यहां तक कि तुम्हारे खाने के वक़्त भी तुम्हारे पास मौजूद होता है लिहाज़ा तुममें से किसी का जब निवाला गिर जाये तो चाहिये कि जो चीज़ उसको लगी हुई हो उसको साफ़ करके खा ले उसको शैतान के लिये न छोड़े और जब खाना खा चुके तो चाहिये कि अपनी उंगलियां चाट ले क्योंकि उसको यह नहीं मालूम कि उसके कौनसे खाने में बरकत है।

तबलीग़ वालों की यह बात भी साबित हो गई कि लुक़मा गिरा हुआ हो तो उठाना सुन्नत है लेकिन बअज़ लोग इसको सही नहीं समझते हैं उनको चाहिये कि अगर अच्छा लगे तो उठा कर खा ले और अगर अच्छा न लगे तो उसको हक़ीर न जाने क्योंकि उम्मत का मुत्तफ़िक़ा फ़ैसला है कि सुन्नत की तहक़ीर करने वाला शख़्स अपने ऊपर कुफ़्र लाज़िम कर लेता है (फ़ैज़ुल बारी, जिल्द अव्वल) इसलिये कोई शख़्स किसी सुन्नत की तहक़ीर न करे जैसे बअज़ लोग बअज़ सुन्नतों को तख़फ़ीफ़ की नज़र से देखते हैं यह सरासर ग़लत है। और चन्द हवालों के

जरिये गिरा हुआ उठाकर खाने के फ़ज़ाईल पेश करता हूं। इमाम ग़ज़ाली रह० ने अपनी अज़ीम किताब अहयाउल–उलूम बाबे तआम में लिखा है कि जो शख़्स बरतन का लगा हुआ खाना खा ले यानी बरतन साफ़ करके खाये और बरतन को धो कर पानी पी ले उसे एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा। दस्तरख़्वान के रेज़े चुनकर खाना जन्नत की हूरों का महर है यह बात भी तबलीग़ वालों से मिली है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि रोटी की इज़्ज़त करो

(۸۷) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اكرموا الخبز فان الله تعالى أنزله من بركات السماء (احياء العلوم جلد دوم)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया, रोटी की इज़्ज़त करो इसलिये कि अल्लाह तआला ने आसमान की बरकतों में से रोटी नाज़िल की है।

लेकिन बअज़ लोग कहते हैं कि रोटी भी इज़्ज़त की कोई चीज़ है? इन अहमक़ों को देखो, इनको सिर्फ़ तबलीग़ के ख़िलाफ़ ही कहने को चाहिये चाहे बात हक़ हो या न हो हालांकि यह हुज़ूर स० का फ़रमान है जैसा कि अभी ज़िक्र किया गया है। अल्लाह तआला ही बचाये इन गुमराह लोगों से कि हुज़ूर स० के क़ौल की भी परवाह नहीं करते और ख़ुद को आशिक़े मुहम्मद स० का लक़ब देते हैं, झूठ की भी कोई हद है?

तबलीग़ वाले कहते हैं कि तीन उंगलियों से खाना सुन्नत है

(۸۸) عن كعب بن مالك رضى الله عنه قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يأكل بثلاثة اصابع ويلعق يده قبل ان يمسحها (ترمذی مشکوة)

हजरत कअब बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर स० तीन उंगलियों से खाना खाते थे और अपना हाथ पोंछने से पहले चाट लिया करते थे यानी उंगलियों को चाट लिया करते थे।

तबलीग़ वालों का एक अमल कहो या क़ौल कहो वह इस हदीस के ज़रिये साबित हो गया कि तीन उंगलियों से खाना सुन्नत है और उंगलियों को चाटना भी सुन्नते रसूल स० है। और अलहम्दुलिल्लाह तबलीग़ वाले इस पर भी अमल करते हैं जैसा कि मैंने देखा।

हुज़ूर स० ने कभी मेज़ पर खाना नहीं खाया

(٨٩) عن قتادة عن انس رضی اللہ عنہما قال ما اکل النبی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم علی خوانٍ ولا فی سُكُرُّجَةٍ ولا خُبِزَ لہٗ مُرَقَّقٌ قیل لقتادة علی ما یاکُلُوْنَ قال علی السُّفَرِ (بخاری، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत क़तादा रज़ि०, हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत करते हैं, वह कहते हैं कि हुज़ूर स० ने न कभी मेज़ पर खाना खाया और न हुज़ूर स० ने छोटी-छोटी तशतरियों में (जैसे कि आज अ़ैश के तौर पर इस्तेमाल होती हैं) (मुराद यह है कि हुज़ूर स० में अ़ैश तलबी न थी) और न आप स० के लिये चपाती पकाई गई। हज़रत क़तादा जो रावी हैं उनसे पूछा गया कि हुज़ूर स० किस चीज़ पर खाना खाते थे? उन्होंने कहा, हुज़ूर स० दस्तरख़्वान पर खाना (खाते थे)।

हदीस से मालूम हुआ कि मेज़ पर खाना ख़िलाफ़े सुन्नत है मगर आज हर जगह मेज़ ही मेज़ है इसलिये जब मेज़ के अ़लावा कोई और जगह न हो तो मेज़ ही पर बैठ जाना चाहिये मजबूरन दुरुस्त है जब कोई रास्ता ही न हो तब ख़िलाफ़े अदब चीज़ की गुन्जाइश हो जाती है।

हुज़ूर स० को मीठा पसन्द था

(۹۰) عن عائشه رضی الله عنها قالت کان رسول الله صلی الله علیه وسلم یُحِبُّ الحلو والعسل (بخاری، مشکوۃ شریف)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती है कि हुज़ूर स० को मीठी चीज़ और शहद बहुत पसन्द था।

मैंने तबलीग़ वालों से सुना है कि मीठा खाना सुन्नत है इस हदीस से मालूम हो गया कि तबलीग़ वालो का कौल सही है।

(۹۱) عن عبد الله بن جعفر رضی الله عنه قال رأیتُ رسول الله صلی الله علیه وسلم یاکُلُ الرطب بالقثاء (متفق علیه، مشکوۃ شریف)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह कहते हैं कि हुज़ूर स० को मैंने खजूर और ककड़ी खाते देखा (यानी दोनों को मिला कर साथ–साथ खाते हुए)

फ़ाइदा :– दूसरी हदीस में है कि हज़रत आइशा रज़ि० पहले कमज़ोर, दुबली थी मगर जब उन्होंने खजूर और ककड़ी मिला कर खाई तो आप रज़ि० फ़रबा हो गईं। और अगर कोई शख़्स मोटा होने का ख़्वाहिशमन्द हो तो यह नुस्ख़ा अच्छा है मगर यह भी याद याद रखें कि हर एक को हर एक चीज़ से फ़ाइदा नहीं होता अगर हो जाये तो अच्छा है।

तबलीग़ वालों का कहना है कि दोनों घुटने खड़े रखकर खाना सुन्नत है

(۹۲) عن انس رضی الله عنه قال رأیتُ صلی الله علیه وسلم مُقعِیًا یاکُلُ تَمرًا (مسلم، مشکوۃ شریف)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर स० को इक़आ़ की हालत में बैठकर खजूरें खाते देखा है।

इकआ की हालत यानी जिसमे दोनो जानू खड़े कर लिए जाये और बअज हदीस में एक और तरीका आया है कि एक जानू होकर बैठे यानी एक पैर खड़ा रहे और एक नीचे रहे। बहरहाल जो तबलीग़ वाले तरीका बयान करते हैं वह सही और सुन्नत है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि हुजूर स० को सरीद पसन्द था

(۹۳) عن ابن عباس رضی اللہ عنھما قال کان اَحَبُّ الطعام الی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم الثریدَ من الخبز والثریدَ من الحیس (مشکوٰۃ شریف، ترمذی ثانی)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० कहते हैं कि हुजूर स० को रोटी का सरीद और हैस का सरीद बहुत पसन्द था।

रोटी का सरीद उसको कहते हैं कि वह गोश्त का सालन जिस में रोटी के टुकड़े डाल कर बनाया गया हो वह सालन सरीद कहलाता है और हैस का सरीद उसको कहते हैं कि जिसमें खजूर और दीगर मेवे डाल कर बनाया जाता है और दोनों सुन्नत हैं।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि हुजूर स० को कद्दू पसन्द था

(۹۴) عن انس رضی اللہ عنہ اَنَّ خَیَّاطًا دعا النبی صلی اللہ علیہ وسلم لطعام صَنَعَہٗ فذھبتُ مع النبی صلی اللہ علیہ وسلم فَقَرَّبَ خُبزَ شَعِیرٍ وَمَرَقًا فیہ دُبَّاءٌ قَدِیدٌ فرأیتُ النبی صلی اللہ علیہ وسلم یَتَتَبَّعُ الدُّبَّاءَ من حوالی قصعتہ فَلَمْ اَزَلْ اُحِبُّ الدُّبَّاءَ (بخاری، مسلم، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि एक दर्ज़ी ने हुजूर स० को अपने तैयार किये हुए खाने पर बुलाया, नबी करीम स० के हमराह मैं भी गया उसने जौ की रोटी और शोरबा लाकर रखा जिसमें

कद्दू और खुश्क गोश्त था। चुनांचे मैंने देखा कि नबी करीम स० प्याले के किनारों में से कद्दू तलाश करके खा रहे थे इसीलिये उस दिन के बाद से मैं कद्दू को पसन्द करता हूं।

बअ़ज़ लोग कह देते हैं कि कद्दू भी कोई चीज़ है जिसको पसन्द किया जाये उन हज़रात को इस हदीस की तरफ़ देखना चाहिये कि यह बात दुरुस्त है कि आप स० को कद्दू पसन्द था और अगर सुन्नत जानने के बावुजूद तहक़ीरन कोई उसको देखे तो उसके ईमान के बारे में यह हुक्म है कि वह काफ़िर हो जाता है जो भी शख़्स किसी भी सुन्नते रसूल की तहक़ीर करे वह काफ़िर हो जाता है। तबलीग़ वालों का कहना सही है कि हुज़ूर स० को कद्दू पसन्द था।

तबलीग़ वालों का मस्जिद में खाना जाइज़ है

(٩٥) عن عبد الله ابن الحارث بن جَزْءٍ قال اُتِیَ رسولُ الله صلی الله علیه وسلم بِخُبْزٍ ولَحْمٍ وهو فی المسجد فاکل واَکَلْنا معهٗ ثُمَّ قَامَ فَصَلّٰی وصَلَّیْنَا مَعهٗ ولم نَزِدْ علی اَنْ مَسَحْنَا اَیْدِیَنَا بِالْحصْبَاءِ (مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हारिस बिन जज़ा कहते हैं कि रसूल स० की ख़िदमत में रोटी और गोश्त लाया गया जबकि आप मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे, चुनांचे हुज़ूर स० ने भी खाया और हुज़ूर स० के हमराह हमने भी खाया फिर खड़े हुए और हुज़ूर स० ने नमाज़ पढ़ी। आप स० के साथ हमने भी नमाज़ पढ़ी और इससे ज़्यादा हमने कुछ नहीं किया कि (खाना खाने के बाद) अपने हाथों को उन कंकरियों से पोंछ डाला था जो मस्जिद में थीं।

लोग यह ऐतिराज़ करते हैं कि तबलीग़ वाले अल्लाह के घर में खाना खाते हैं यह जाइज़ नहीं है, किसी हदीस से इसका

जवाज़ नहीं है मगर इन तबलीग़ वालों ने हर नाजइज़ चीज़ को जाइज़ कर दिया वग़ैरा वग़ैरा, ऐतिराज़ होते हैं, जो हदीस के मुतलाशी हैं वह यह हदीस देखें कि हुज़ूर स० से भी मस्जिद में खाना साबित है। एक मरतबा नहीं बल्कि कई मरतबा साबित है। आप हदीस का मुतालआ करें फिर मालूम होगा। बहरहाल यह बताना मक़सूद था कि हदीस के ज़रिये तबलीग़ वालों का अमल साबित हो गया।

उलमा के अक़वाल सुनो– उलमा ने इस हदीस की और इस जैसी दूसरी हदीसों की रोशनी में यह मसला बयान किया है कि अगर मस्जिद में खाना खाया गया और सफ़ाई का भी ख़्याल रखा गया तो यह जाइज़ है, हां! अगर गन्दगी छोड़ दी गई और सफ़ाई का लिहाज़ न रखा गया तो यह मकरूह है। वैसे भी तबलीग़ वाले मुसाफ़िर ही होते हैं और मुसाफिरों के लिये शरीअ़त में छूट है और उलमा ने लिखा है कि आदमी जब मस्जिद में दाख़िल हो जाये तो उसको ऐतिकाफ़ की नीयत कर लेनी चाहिये ताकि यह चीज़ें (जैसे मस्जिद में खाना, पीना, सोना वग़ैरा) दुरुस्त हो जायें और ऐतिकाफ़ का सवाब भी हासिल हो जाये और यह बात सबको मालूम है कि ऐतिकाफ़ करने वाले के लिये सोना, खाना सब जाइज़ है। सफ़ाई हर हाल में शर्त है, वरना नाजाइज़ है। क्योंकि मस्जिद में गन्दगी करना जाइज़ नहीं।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि बीच से न खाओ क्योंकि बीच में बरकत नाज़िल होती है

(९٢) عن ابن عباس رضی الله عنهما عن النبی صلی الله علیه وسلم انّهٗ اُتِیَ بِقَصْعَةٍ مِنْ ثَرِیْد فقال کُلوا من جوانبها ولا تَاْکُلُوا من وسطِهَا فَاِنَّ البرکةَ تَنْزِلُ فی وسطها (مشکوٰة شریف، ترمذی ثانی)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० नबी करीम स० से नक़ल करते हैं कि आपकी ख़िदमत में सरीद का एक प्याला लाया गया आप स० ने फ़रमाया कि इस प्याले के किनारे से खाओ और इस के बीच में से न खाओ क्योंकि बरकत इसके बीच में नाज़िल होती है।

इस बात को बताना था कि बअज़ लोगों को इस में शक होता है कि यह हदीस है या किसी का क़ौल है, इस शक को दूर करने के लिये लिख दिया कि यह हदीस ही है और तबलीग़ वालों का कहना भी सही है।

और दूसरी बात तबलीग़ वालों की यह भी साबित हुई कि वह कहते हैं कि एक किनारे से खाना चाहिये जो खुद के सामने वाला हिस्सा हो, उससे खाओ इस तरह न हो कि दूसरों की तरफ़ से भी खा रहे हो और पूरी प्लेट पर अकेले आप ही का हाथ हुक्मरानी कर रहा हो। यह दुरुस्त नहीं जैसा कि हदीस से मालूम हो गया कि हुजूर अकरम स० ने दूसरों की तरफ़ से खाने से मना फ़रमाया है और यह अख़लाक़ और तहज़ीब के ख़िलाफ़ भी है और एक तरफ़ से खाने के बाद किसी की दिल शिकनी भी नहीं होगी। बरख़िलाफ़ इसके कि वह अमल हर एक को नागवार लगता है और उससे नफ़रत पैदा हो जाती है इसलिये उ़लमा ने लिखा है कि कोई सुन्नत भी हिकमत से ख़ाली नहीं।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि बरतन साफ़ करने पर बरतन इस्तिग़फ़ार करता है

(٩٧) عن نُبيشةَ عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال مَنْ أكل في قَصْعَةٍ فلحسها استغفرَتْ لهُ القَصْعَةُ . (مشكوٰة شريف ص٣٦٦)

हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया जो शख़्स किसी प्याले में खाये और फिर उसको चाट ले (उंगलियों से) तो वह प्याला उसके

लिये इस्तिग्फार करता है।

यह बात भी साबित हो गयी कि प्याले का इस्तिग्फार करना हदीस से साबित है तबलीग वाले खुद तो बयान नहीं करते बल्कि वे उलमा के अकवाल नकल करते हैं और तबलीग वालों के पास तो कोई किताबी हवाला नहीं होता है बल्कि सिर्फ कौली हवाला होता है इसलिये लोगों को यह ख़्याल होता है कि यह लोग बगैर दलील और बेहकीकत बात बयान करते हैं हकीकत उसके बरखिलाफ है कि तबलीग वालों के पास हर अमल व कौल पर हदीस मौजूद है जैसा कि इसकी कुछ झलक तुम देख ही रहे हो। बहरहाल तबलीग वालों का यह कौल दुरुस्त है।

हुज़ूर स० को खुरचन पसन्द थी

(٩٨) عن انس رضی اللہ عنہ قال کان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یعجبہ الثفل (ترمذی، مشکوٰۃ)

हज़रत अनस रज़ि० बयान करते हैं कि हुज़ूरे अकरम स० को खुरचन पसन्द थी। इस हदीस को तरग़ीब और अमल में पुख़्तगी पैदा करने के लिये लिखा है कि अगर कोई सिर्फ़ यूं ही उसको खाता हो तो वह सुन्नत की नीयत कर ले और जो न खाता हो तो उसको हकीर न जाने कि यह हुज़ूरे अकरम स० की पसन्दीदा चीज़ है अगर खुरचन बहुत स्याह हो गई हो या जल गई हो तब न खाये क्योंकि जली हुई चीज़ नुकसान कर जाती है और जली हुई रोटी को भी इसलिये ही मना किया गया है कि वह फ़ाइदे के बजाये नुकसान कर जाती है और वही हाल उसका भी है।

तबलीग़ वाले खड़े हो कर पानी पीने से मना करते हैं

(٩٩) عن انس رضی اللہ عنہ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم انہ نہی ان یشرب الرجل قائماً (مسلم، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अनस रज़ि० बयान फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम स० ने इससे मना किया कि कोई आदमी खड़े हो कर पानी पिये।

बअज़ हदीस में खड़े होकर पानी पीने वालों के बारे मे सख्त वईद भी आयी है और हुज़ूरे अकरम स० का मना करना ही कौनसी कम बात है लेकिन बअज़ पानी ऐसे हैं जिनको खड़े हो कर पिया जाता है जैसे वज़ू का बचा हुआ पानी और ज़मज़म का पानी वग़ैरा, उनको खड़े होकर पीना सुन्नत बताया गया है। हदीसों में मौजूद है तबलीग़ वालों का कहना बिल्कुल दुरुस्त है कि आम पानी खड़े होकर न पिया जाये।

ज़मज़म की हदीस भी बअज़ लोगों को मतलूब होती है :

(١٠٠) عن ابن عباس رضی الله عنهما قال اَتَيْتُ النبی صلی الله عليه وسلم بدلوٍ من مَاءِ زَمْ زَمَ فَشَرِبَ و هو قائم (متفق عليه)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं एक डोल में ज़मज़म का पानी ख़िदमते अक़दस में लाया तो आपने इस पानी को (खड़े खड़े पिया) यानी खड़े होने की हालत में, किसी ने सवाल किया कि खड़े होकर पीना कहां लिखा है। ऐसे सवाल करने वालों के लिये यह हदीस भी ज़िकर कर दी है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि पानी तीन साँस में पीना सुन्नत है

(١٠١) عن انس رضی الله عنه قال كان رسول الله صلی الله عليه وسلم يَتَنَفَّسُ فی الشراب ثلاثاً (متفق عليه، مشكوٰة شريف، ترمذی ثانی ص ٣)

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम स० पानी पीने के बीच तीन मरतबा साँस लेते थे।

इस हदीस से हुज़ूरे अकरम स० का तीन साँस में पीना साबित हो गया और तरीक़ा यह हो कि एक घूंट पीने के बाद

प्याला या गिलास मुंह से जुदा कर दो फिर साँस लो फिर दूसरा घूंट पी लो और फिर मुंह से जुदा कर दो और साँस लो इस तरह से तीन घूंट में पानी ख़त्म करना सुन्नत है। अगर ज़्यादा घूंट कोई शख़्स पिये तो उसको डांट डपट न करना, क्योंकि यह सुन्नत है और सुन्नत वाले अमल में तरग़ीब है, ज़बरदस्ती नहीं वरना फ़र्ज़ और सुन्नत में क्या फ़र्क़ रहा. इसलिये किसी भी अमल में ग़ुलू करना जाइज़ नहीं, हर चीज़ को हर अमल को अपने मक़ाम पर रखना चाहिये। बअ़ज़ लोगों ने हुज़ूरे अकरम स० की शान में ग़ुलू किया और आपको आ़लिमुलग़ैब कह दिया लेकिन अल्लाह तआ़ला के अ़लावा कोई भी आ़लिमुलग़ैब नहीं, मगर फिर भी ज़बरदस्ती और इनाद के तौर पर हुज़ूरे अकरम स० को आ़लिमुलग़ैब क़रार दिया जो कि शिर्क है।

यह है ग़ुलू का नतीजा कि आदमी सही समझता है मगर वह इस चीज़ में जब ग़ुलू का पहलू इख़्तियार करता है तो वह फ़ेअ़ल हराम हो जाता है। अल्लाह तआ़ला सब मुसलमानों को ग़ुलू से बचाये, आमीन।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि पानी में कचरा गिरने पर फूंकना नहीं चाहिये

(١٠٣) عن ابی سعید الخدری رضی الله عنه ان النبی صلی الله علیه وسلم نهی عن النفخ فی الشرابِ فقال رَجُل القذاة اراها فی الاناءِ قال اِهرِقها قال فَاِنّی لا اَروی من نفسٍ واحدٍ قال فَاَبِنِ القَدَحَ عن فیك ثم تَنَفَّس
(مشکوۃ شریف ص ۳۷۱، ترمذی ص ۱۱)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० बयान करते हैं कि हुज़ूरे अकरम स० ने पानी में फूंक मारने से मना फ़रमाया. एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया कि अगर मैं पानी में तिनके पड़े हुए देखूं (तो क्या

करूँ) आप स० ने फ़रमाया तुम उसको बहा दो यानी ऊपर से थोड़ा सा पानी फेंक दो ताकि वो तिनके वग़ैरा निकल जायें। उसने अ़र्ज़ किया कि मैं एक दम यानी एक सौंस में पीने से सैराब नहीं होता हूं। आपने फ़रमाया कि प्याले को मुंह से हटाओ और सौंस लो, मुराद तीन सौंस में पीना है।

इस हदीस से दो बातें साबित हुईं कि अगर पानी में कचरा गिरे तो मुंह से फूंक मत मारो बल्कि थोड़ा सा पानी गिरा दो फिर पी लो और दूसरी बात यह मालूम हुई कि तीन सौंस में पानी पीना चाहिये न कि एक सौंस में पूरा पानी पिया जाये, यह ख़िलाफ़े सुन्नत है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि भर पेट न खाओ

(١٠٣) عن بن عمر رضى الله عنهما عن النبى صلى الله عليه وسلم قال الكافر ياكل فى سبعة امعاء والمؤمن ياكل فى معى واحد

(ترمذى جلد ثانى ص٣)

हज़रत इब्ने उ़मर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया कि काफ़िर सात आंतों में खाता है और मोमिन एक आंत में।

मतलब यह है कि काफ़िर भर पेट खाना खाता है कि पानी पीने की भी जगह नहीं होती है और रहा मोमिन तो वह भर पेट नहीं खाता बल्कि वह बक़द्रे ज़िन्दगी यानी कुछ जगह छोड़ कर खाता है इतना नहीं कि खाने से इतना पेट भर लिया कि पेट में जगह ही न हो यह शान मुसलमान की नहीं है और यही क़ौल तबलीग़ वालों का भी है और यह बात हदीस में भी है कि हुज़ूर स० ने कभी भी पेट भर कर नहीं खाया।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि मेहमान को जब छोड़ो तो कुछ दूर उसके साथ चलो

(۱۰۳) عن ابی هریرة قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم ان من سنة أن يخرجَ الرجل مع ضيفه الى باب الدار

(ابن ماجہ، احیاء العلوم جلد دوم، مشکوٰۃ)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया कि मेहमान की तअ़ज़ीम यह है कि घर के दरवाज़े तक उसकी हमराही की जाये।

इस हदीस से मालूम हुआ कि मेहमान को दरवाज़े तक या कुछ दूर साथ चल कर रुख़सत करना सुन्नते मुहम्मदिया स० है और इसका ही हुक्म तबलीग़ वाले करते हैं। अबू क़तादा फ़रमाते हैं कि शाहे हब्शा निजाशी का भेजा हुआ वफ़्द जब हुज़ूर स० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप स० ने खुद से वफ़्द के अराकीन की ख़िदमत की। सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आप ज़हमत न फ़रमायें हम लोग इनकी ख़िदमत के लिये काफ़ी हैं, फ़रमाया ऐसा नहीं हो सकता ये वे लोग हैं जिन्होंने मेरे साथियों की तअ़ज़ीम की थी जब वे लोग हब्शा गये थे, मैं चाहता हूँ कि उनके हुस्ने सुलूक का बदला करूँ। दोस्तो! मेहमान का मुकम्मल इकराम यह है कि उससे ख़न्दा रूई के साथ मिले आने जाने के वक़्त दस्तरख़्वान पर खाने से पहले या बाद में जब भी मौक़ा हो अच्छी तरह गुफ़्तुगू करे। हज़रत अ़ल्लामा औज़ाअ़ी से किसी ने दरयाफ़्त किया कि मेहमान की तअ़ज़ीम क्या है? फ़रमाया ख़न्दारूई और अच्छी गुफ़्तुगू करना और यही कहना तबलीग़ वालों का है।

अल्लाह तआला की मुहब्बत उस शख़्स के लिये वाजिब है

(١٠٥) وجبت محبتی للمتزاورین فیّ والمتباذلین فیّ (مسلم شریف)

मेरी मुहब्बत मेरे लिये आपस में मुलाक़ात करने वालों और मेरे लिये आपस में ख़र्च करने वालों के लिये वाजिब है।

और दूसरी जगह आप स० ने फ़रमाया:

من سرّ مؤمناً فقد سر اللّٰہ (احیاء العلوم دوم)

जिसने मोमिन को ख़ुश किया उसने अल्लाह तआला को ख़ुश किया।

यह है फ़ज़ीलत मोमिन की, कि जिसने मोमिन से मुहब्बत की उसने अल्लाह तआला से मुहब्बत की, जिसने अल्लाह तआला के लिये मोमिन पर ख़र्च किया और उससे मुहब्बत की तो अल्लाह तआला की मुहब्बत उस शख़्स के लिये वाजिब है, इससे मालूम हुआ कि मुसलमानों को आपस में ख़र्च करना चाहिये अल्लाह तआला के लिये, और मुहब्बत भी करनी चाहिये सिर्फ़ अल्लाह तआला के लिये, और मोमिन का ख़्याल भी करना चाहिये। हर मआमले में सिर्फ़ अल्लाह तआला के लिये काम हो। मोमिन पर तलवार उठाना भी हराम है, चाकू से उसकी तरफ़ इशारा करना भी हराम, उसकी ग़ीबत भी हराम है, उसके ऐब बयान करना भी हराम है, उसके दिल को तोड़ना भी हराम है। जब अल्लाह तआला के रसूल स० ने फ़रमाया जिसने मोमिन को ख़ुश किया उसने अल्लाह तआला को ख़ुश किया और इसका पहलू मुख़ालिफ़ किया है कि अगर किसी ने किसी मोमिन को नाख़ुश किया उसने अल्लाह तआला को नाख़ुश किया इसलिये मुसलमान चाहे बरेलवी हो या मौदूदी या ग़ैर मुक़ल्लिद या और कोई भी हो उसके दिल

को मत तोड़ो क्योंकि उन्होंने कलिमा पढ़ा है अगर वे हमको बुरा भी कहते हैं तो अल्लाह तआला के लिये उनको माफ़ कर दें हां मैंने माना कि वे ग़लत राह पर हैं मगर उनको तकलीफ़ न देना भी सुन्नत है।

तबलीग़ वालों का नेक लोगों से दुआ की दरख़्वास्त करना

(١٠٦) عن عمر بن الخطاب رضی الله عنه قال استاذنت النبی صلی الله علیه وسلم فی العمرة فاذن لی وقال اشرکنا یا اخی فی دعائك ولا تنسنا فقال کلمة ما یسرنی ان لی بها الدنیا (مشکوٰة شریف)

हज़रत उमर रज़ि० बयान करते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया कि जब मैंने उमरे की इजाज़त तलब की तो आप स० ने इजाज़त दी और फ़रमाया कि ऐ मेरे छोटे भाई अपनी दुआ में हमें भी शरीक कर लेना और दुआ के वक़्त मुझे न भूलना। हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह स० ने ऐसा कलिमा इरशाद फ़रमाया कि अगर इसके बदले में मुझे तमाम दुनिया भी दे दी जाये तो मुझे ख़ुशी न होगी।

इस हदीस से यह बात मालूम हो गई कि दुआ की दरख़्वास्त करना सही है ख़्वाह यह छोटा हो या बड़ा हो। दुआ की दरख़्वास्त करना सही है जैसे तबलीग़ वाले करते हैं कि जब भी किसी आलिम की ख़िदमत में हाज़िर होते हैं तो दुआ की दरख़्वास्त करते हैं और दुआ की दरख़्वास्त करने से आजिज़ी ज़ाहिर होती है और किब्र टूट जाता है और बअ़ज़ लोगों को देखने में आया है कि वह मज़ार पर जा कर सजदा करते हैं और दुआ करते हैं और जब उनसे कहा जाता है कि उनको सजदा क्यों करते हो? तो जवाब देते हैं कि यह सजदा तअ़ज़ीमी है

हालांकि सज्दा तअ़ज़ीमी भी हराम है। हदीसों में बहुत सी जगहों पर हुज़ूर स० का इरशाद मनकूल है कि मुझको सज्दा तअ़ज़ीमी न करो अगर सज्दा तअ़ज़ीमी जाइज़ होता तो मैं सबसे पहले औ़रत को हुक्म देता कि वह अपने शौहर को सज्दा तअ़ज़ीमी करे मगर सज्दा कोई सा भी हो अल्लाह तआ़ला के अ़लावा के लिये जाइज़ नहीं जब हुज़ूर स० ने ख़ुद के लिये जाइज़ नहीं कहा है तो आप स० से बड़ा मख़्लूक़ में और कौन है, जिसको सज्दा किया जाये, लेकिन देखो! लोग अन्जानी क़ब्रों को भी सज्दा करते हैं और वहां पर दुआ़ करते हैं। दुआ़ की दरख़्वास्त करने की इजाज़त दी गई है वह भी ज़िन्दों से मगर यह हज़रात दरख़्वास्त तो क्या पूरे ही क़ब्र वाले के गले में लटक जाते हैं और कहते हैं कि तुझको देना ही होगा बताओ वह कहां से देगा बैंक तो तुम्हारे पास, हुकूमत तुम्हारे पास और वह ख़ाली कफ़न वाला तुम को कहां से देगा? अल्लाह तआ़ला रहम करे इन अ़क्ल वालों पर कि काफ़िरों में और मुसलमानों में कोई फ़र्क़ ही बाक़ी नहीं रखा इसके अ़लावा यह लोग क़ब्र को सज्दा करते हैं और काफ़िर लोग मूर्ति को सज्दा करते हैं, मूर्ति से तलब करते हैं और यह मुर्दे से। अल्लाह तआ़ला ही रहम का मामला फ़रमायें यह बात न किसी सहाबी से साबित है न ताबई से साबित है यह पेट की ख़ातिर आख़िरत को बरबाद कर रहे हैं। अल्लाह तआ़ला सब को बचायें ख़ैर दुआ़ की दरख़्वास्त करना उ़लमा से और दूसरों से जाइज़ है।

तबलीग़ वालों का मस्जिद में ज़रूरतन सोना जाइज़ है

(١٠٧) عن عبادة بن تميم عن عَمِّه قال رأيتُ رسول الله صلى الله

عليه وسلم في المسجد مستلقياً واضعاً إحدى قدميه على الأخرى.
(بخاری، مسلم شریف)

हज़रत उबादह बिन तमीम ताबई र० अपने चचा हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अन्सारी सहाबी रज़ि० से रिवायत करते हैं कि उन्होंने कहा मैंने एक दिन रसूलुल्लाह स० को मस्जिद में इस तरह चित लेटे हुए देखा कि आप स० का एक क़दम दूसरे क़दम पर रखा हुआ था।

दूसरी हदीस:

(۱۰۸) عن سائب بن يزيد قال كُنتُ نائماً في المسجد فحصبني رَجُلٌ فنظرتُ فاذا هو عمر بن الخطاب الخ (بخاری، مشکوۃ شریف)

हज़रत साइब बिन यज़ीद रज़ि० कहते हैं कि मैं मस्जिद में सोया हुआ था कि किसी ने मेरे ऊपर कंकरी फेंकी मैंने आंखें खोल कर देखा तो वह अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि० थे।

"अल–अदबुल मुफ़रद" से सिर्फ़ हदीस का तर्जुमा लिख रहा हूं।

(109) इब्न तल्हा अलग़िफ़ारी बयान करते हैं कि उनके वालिद ने जो असहाबे सुफ़्फ़ह में से थे यह बयान किया कि मैं मस्जिद में सो रहा था आख़िर शब थी कि मेरे पास एक शख़्स आया मैं अपने पेट के बल सो रहा था आने वाले ने अपने पैर से मुझे हरकत दी और कहा इस तरह सोने से अल्लाह को नफ़रत है, उठो मैंने अपना सर उठाया तो रसूलुल्लाह स० मेरे सर पर खड़े थे।

(110) और एक हदीस (अलअदबुल मुफ़रद) से हज़रत अबू उमामा रज़ि० रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह स० एक शख़्स के पास से गुज़रे वह मस्जिद में मुंह के बल पड़ा था (यानी सोया हुआ था) तो आप स० ने अपने पैरों से उसे ठोकर दी और फ़रमाया उठो, यह जहन्नमी की नींद है (मुराद इस तरह का सोना)

इन तमाम अहादीस से साबित हो गया कि मस्जिद में सोना जाइज़ है और एक नहीं चार हदीसें पेश कर चुका हूं क्योंकि यह ऐतिराज़ बहुत लोग करते हैं कि तबलीग़ वालों का मस्जिद में सोना जाइज़ नहीं, हराम है वग़ैरा वग़ैरा अलफ़ाज़ कहते हैं मगर इन हदीसों ने यह बता दिया कि मस्जिद में सोना जाइज़ है मगर ऐहतियात तो ज़रूरी है कि एक दो चादर नीचे हो और सोते वक़्त दुनिया की बातें न हों और जो आदाबे मस्जिद हैं उनका ख़्याल रहे।

और दूसरी वजह जवाज़ की यह है कि तबलीग़ वाले मुसाफ़िर होते हैं और उलमा ने भी मुसाफ़िर के लिये मस्जिद में सोने की रुख़सत दी है और तबलीग़ वाले सिर्फ़ मुसाफ़िर ही नहीं बल्कि मुसाफ़िरे जन्नत हैं जो दीन की फ़िक्र ले कर दुनिया में दावत इलल्लाह का फ़रीज़ा अन्जाम देते हैं दूसरा और एक तरीक़ा जवाज़ का यह है कि आदमी ऐतिकाफ़ की नीयत कर ले और बहुत से मदारिस में भी जगह की क़िल्लत की वजह से बच्चे मस्जिद में सोते हैं उस्तादों को चाहिये कि वे तलबा अज़ीज़ को यह तरग़ीब ज़रूर दें कि वे मस्जिद में सोने के लिये जायें तो ऐतितकाफ़ की नीयत कर लें। ख़ैर मोअतरिज़ को तो सिर्फ़ तबलीग़ वालों का सोना ग़लत मेहसूस होता है और हज़ारों मसाजिद में गाय, बैल और दीगर जानवर आराम करते हैं और बहुत सी मसाजिद वीरान हैं वह नज़र नहीं आतीं उसका अफ़सोस नहीं। आज इन तबलीग़ वालों के तुफ़ैल में लाखों मसाजिद आबाद हो रही हैं और मज़ीद इन मसाजिद के ज़िन्दा करने वालों पर ही ऐतिराज़ करते हो। वाह भाई वाह! जिहालत की हद नहीं, उलटा चोर कोतवाल को डांटे ख़ुदा की क़सम! मैं कहता हूं जितनी जल्दी और जितना ज़्यादा काम तबलीग़ वालों ने किया है किसी ने नहीं किया और दारुलउलूम देवबन्द भी

तबलीग़ वालों का अज़ीम मरकज़ है जिसका फ़ैज़ पूरी दुनिया में आम है।

फ़ैसलाकुन हदीस

(111) عن ابن عمر رضی الله عنه قال كنا ننام على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم في المسجد ونحن شباب قال ابو عيسى حديث ابن عمر حديث حسن صحيح و قد رخص قوم من اهل العلم في النوم في المسجد (ترمذی اول مشکوٰۃ ابن ماجہ)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि सहाबा रज़ि० हुज़ूर अकरम स० के दौर में मस्जिद में सोया करते थे और हम नौजवान थे। इमाम तिरमिज़ी फ़रमाते हैं कि उलमा की एक बड़ी जमाअत ने मस्जिद में सोने को जाइज़ क़रार दिया है।

इस हदीस से ऐतिराज़ अच्छी तरह दूर हो जाता है कि इस हदीस से मालूम हुआ है कि असहाबे मुहम्मद स० मस्जिद में सोते थे अगर नाजाइज़ होता तो आप स० ज़रूर मना फ़रमाते मगर आप स० ने मना नहीं किया जब आप स० ने ख़ामोशी इख़्तियार की तो यह बात वाज़ेह हो गई कि मस्जिद में ऐहतियात के साथ सोना जाइज़ है क्योंकि आप स० का किसी काम को देख कर ख़ामोश रहना इस पर दलालत करता है कि वह काम जाइज़ है वरना नबी की यह शान नहीं है कि वह आम सहाबा रज़ि० को या किसी सहाबी रज़ि० को ग़लत काम करते देखे और उन को मना न करे। ख़ैर यह बात तो वाज़ेह हो गई कि मस्जिद में सोना जाइज़ है। एक दूसरा ऐतिराज़ यह कि मस्जिद में सोने के बाद ऐहतिलाम का मसला, वह भी इस हदीस से ही दूर होता है। जब हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने कहा हम नौजवान थे तो आप स० इस क़ौल से इस बात की ही तरफ़ इशारा करना चाहते हैं कि हम जवान थे और जवानी के जोश की वजह से कभी कभी

ऐहतिलाम भी हो सकता है, मगर तब भी आपने मना नहीं फ़रमाया।

इस से मालूम हुआ कि मस्जिद में सोना जाइज़ है मगर मस्जिद के अदब का ख़्याल रखना ज़रूरी है और सोते वक़्त नीचे जो चादर हो वह मोटी हो या दो चादरें हों ताकि नापाकी मस्जिद में न गिरे।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि क़ियामत में सब से पहले नमाज़ की पूछ होगी

(११٢) عن ابی ہریرۃ رضی اللہ عنہ قال سَمِعْتُ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یقول اِنَّ اوّل ما یُحاسَبُ بہ العبد یوم القیامۃ من عملہ صلاتُہ فان صَلُحَتْ فقد اَفْلَحَ و اَنْجَحَ وان فسدَتْ فَقَدَ خاب و خَسِرَ فاِنْ اِنْتَقَصَ مِنْ فَرِیْضَۃٍ شیئی قال الرَّبُ تبارك و تعالی اُنْظُروا ھل لِعَبْدِی من تطوّع فَیُکَمِّلُ بھا ما انتقص من الفریضۃ ثُمّ یکون سائرُ عَمَلِہٖ علی ذٰلك (مشکوۃ شریف)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० ने हुज़ूर अकरम स० को यह फ़रमाते सुना है कि क़ियामत के रोज़ बन्दे के अअ़माल में सब से पहले जिस अ़मल के बारे में मुहासिबा होगा वह उस की नमाज़ होगी लिहाज़ा अगर उस की नमाज़ दुरुस्त होगी तो वह फ़लाह पायेगा और कामयाब हो जायेगा और अगर नमाज़ फ़ासिद होगी तो वह (सवाब से) नाउम्मीद होगा और ख़सारे में रहेगा। हां, अगर फ़र्ज़ नमाज़ में कुछ कमी रह गई तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि देखो मेरे बन्दे के पास कुछ सुन्नत व नवाफ़िल नमाज़ें भी हैं लिहाज़ा उन के ज़रिये से उसकी फ़र्ज़ नमाज़ की कमी पूरी की जायेगी फिर इसी तरह बन्दे के दूसरे अअ़माल का हिसाब होगा।

एक और दूसरी हदीस:

(११४) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اول ما ينظر فيه من عمل العبد يوم القيامة الصلوة فإن وجدت تامة قبلت منه وسائر عمله وان وجدت ناقصة رُدَّتْ عليه و سائر عمله (احياء العلوم جلد اول)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया कियामत में बन्दे के अअ़माल में सब से पहले नमाज़ देखी जायेगी अगर वह पूरी हुई तो उस की नमाज़ और उस के तमाम अअ़माल कुबूल कर लिये जायेंगे और अगर वह नाकिस हुई तो उसके तमाम अअ़माल रद्द कर दिये जायेंगे।

मैंने तबलीग़ वालों से यह बात सुनी थी और तबलीग़ वाले अकसर इस को बयान भी करते हैं इसलिये मैंने इसको पेश कर दिया कि अगर किसी को हवाला मतलूब हो तो वह देख ले कि यह हदीस सही है और तबलीग़ वालों का बयान करना बजा है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि घर से नमाज़ के लिये वुज़ू कर के निकलना ऐसा है जैसे एहराम बांधने का सवाब होता है

(११४) عن ابی امامة رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من خرج من بيته مُتَطَهِّراً الى الصلوة مكتوبة فَاَجْرُه كَاَجْرِ الحَاجِّ المُحْرِمِ (مشكوٰة شريف)

हज़रत अबू उमामा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया जो शख़्स अपने घर से वुज़ू कर के फ़र्ज़ नमाज़ अदा करने के लिये निकले (मस्जिद की तरफ़) पस उसका अज्र इस तरह है जिस तरह हाजी के एहराम बांधने का होता है।

और इमाम ग़ज़ाली र० ने अपनी किताब अहयाउल उ़लूम जिल्द अव्वल में हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० का क़ौल नक़ल किया है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि जो शख़्स अच्छी तरह

वुज़ू करे और नमाज के इरादे से घर से निकले तो जब तक नमाज़ की नीयत करेगा उस वक़्त तक नमाज़ में ही रहेगा उसके हर एक क़दम पर नेकी लिखी जायेगी और दूसरे क़दम पर गुनाह माफ़ किये जायेंगे चुनांचे अगर तुम में से कोई तकबीर सुने तो उसे दौड़ कर नमाज़ में शामिल होने की ज़रूरत नहीं ज़्यादा सवाब उसको मिलेगा जिसका घर दूर हो लोगों ने पूछा इसकी क्या वजह है? फ़रमाया क़दमों की ज़्यादती की बिना पर सवाब में इज़ाफ़ा होता है।

यह तमाम बातें तबलीग़ वाले कहते हैं मगर बअ़ज़ लोगों को यह ऐतिराज़ होता है कि एहराम के बराबर सवाब किस तरह हासिल होता होगा और उनके पास कोई हवाले वाली बात भी नहीं वग़ैरा वग़ैरा ऐतिराज़ करते हैं इसलिये इसको लिख रहा हूं कि हवाले के शाइक़ीन हवाला देख लें और अपनी कज रवी को दुरुस्त करें वरना हवालों से भी कोई फ़ाइदा नहीं जब तक तुम राहे हक़ के ताबेअ़ न हो जाओ अगर हवाला देख कर छोड़ दिया तो उससे भी कोई फ़ाइदा नहीं जब तक यह फ़ैसला न हो कि तबलीग़ की राह सही है और क़ुरआन और हदीस के मुवाफ़िक़ है। मैं भी जमाअ़त में निकलूंगा और दीन की ख़िदमत करूंगा।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि जो शख़्स चालीस दिन बा–जमाअ़त नमाज़ पढ़े उसके लिये यह बशारत है

(۱۱۵) عن انس رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من صلى لله اربعين يوماً فى جماعة يدرك التكبيرة الاولى كتب له براتان براءة من النار وبراءة من النفاق (مشكوة شريف)

हजरत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने

फ़रमाया जो शख़्स चालीस दिन तक अल्लाह तआ़ला के लिये जमाअ़त के साथ इस तरह नमाज़ पढ़े कि वह तकबीरे ऊला को पाये तो उसके लिये दो क़िस्म की बराअत लिखी जाती है एक तो दोज़ख़ से निजात और दूसरी निफ़ाक़ से निजात।

दूसरी हदीसः

(۱۱۲) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من صلى اربعين يوما الصلوة فى جماعة لا تفوته فيها تكبيرة الاحرام كتب الله له براتين براءة من النفاق وبراءة من النار. (احياء العلوم جلد اول)

हूज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जो शख़्स चालीस दिन नमाज़ बा–जमाअ़त इस तरह पढ़े कि तकबीरे ऊला भी फ़ौत न हो तो अल्लाह तआ़ला उसके लिये दो बराअतें लिखता है एक निफ़ाक़ से बराअत और एक दोज़ख़ की आग से बराअत।

और एक रिवायत में है कि जब क़ियामत का दिन होगा तो कुछ लोग ऐसे उठेंगे कि उन के चेहरे सितारों की तरह चमकते होंगे मलाइका उनसे पूछेंगे कि तुम्हारे अअ़माल क्या थे वह लोग कहेंगे जब हम अज़ान की आवाज़ सुनते थे तो वुज़ू के लिये उठ जाते थे फिर कोई दूसरा काम हमारे और नमाज़ के दरमियान रुकावट नहीं बनता था फिर कुछ लोग ऐसे उठेंगे जिनके चेहरे चाँद की तरह रोशन होंगे। वह लोग फ़रिश्तों के सवाल के जवाब में कहेंगे कि हम वक़्त से पहले वुज़ू कर लिया करते थे फिर कुछ लोग उठेंगे जिनके चेहरे सूरज की तरह रोशन होंगे। वह बतलायेंगे कि हम मस्जिद में पहुंच कर अज़ान सुनते थे। रिवायत है कि अकाबिरे सल्फ़ की अगर तकबीरे ऊला फ़ौत हो जाती तो वह लोग अपने नफ़्सों पर तीन रोज़ सख़्ती करते और जमाअ़त फ़ौत हो जाती तो सात रोज़ सख़्ती करते (अहयाउल उ़लूम)

इन रिवायतों को तबलीग़ वालों के क़ौल की दलील में

नक़ल किया है कि तबलीग़ वाले यह रिवायत पेश करते हैं और यह हदीस साबित है न कि सिर्फ़ क़ौल ही क़ौल है जैसे कि बअ़ज़ हज़रात तबलीग़ वालों पर तअ़न करते हुए कहते हैं कि इन जाहिलों के पास क्या हदीस और क्या क़ुरआन है। ख़बरदार! यह ख़्याल बिल्कुल बातिल है बल्कि अलहम्दुलिल्लाह तबलीग़ वालों के हर क़ौल और फ़ेअ़ल पर दलील मौजूद हैं और क़ौल और फ़ेअ़ल से वह मुराद है जो तबलीग़ी उ़लमा से मनक़ूल हो न कि आ़म जमाअ़ती अफ़राद के अक़वाल व अफ़आ़ल, इसकी मिसाल ऐसी है जैसे कि हम कहते हैं कि हमारा मज़हब हर क़ौल और फ़ेअ़ल की ख़राबी से पाक और नज़ीफ़ है। यहां पर कौन सा क़ौल मुराद होगा जो हुज़ूर अकरम स० से मनक़ूल हो वह मुराद है न कि आ़म मुसलमानों का क़ौल व फ़ेअ़ल। क्योंकि आ़म मुसलमानों में बअ़ज़ शराब भी पीते हैं और बअ़ज़ सहाबा रज़ि० को भी बुरा कहते हैं और बअ़ज़ झूठ भी बोलते हैं यह लोग मुराद नहीं बल्कि हुज़ूर अकरम स० का क़ौल हुज्जत है इसी तरह तबलीग़ी अ़वाम का क़ौल व फ़ेअ़ल मुराद नहीं है बल्कि सिर्फ़ उ़लमा के वह अक़वाल मुराद हैं जो सिर्फ़ उ़लमा से मनक़ूल हों वह सब के सब हदीस व क़ुरआन से मनक़ूल हैं। ख़ैर तबलीग़ वालों का यह क़ौल हदीस की रोशनी में बिल्कुल सही है और बशारत हो उन लोगों के लिये जो साल–हा–साल कभी भी नमाज़ बा–जमाअ़त नहीं छोड़ते। उन हज़रात में सहाबा रज़ि० के बाद सबसे पहले इमाम अअ़ज़म अबू हनीफ़ा र० का नाम है कि इमाम साहब ने चालीस दिन नहीं, चालीस माह नहीं बल्कि चालीस साल तक ईशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी और रहा यह सवाल कि इमाम साहब फिर हक़्क़े ज़ौजियत कब अदा करते थे यह सवाल ही अहमक़ाना है कि हक़्क़े ज़ौजियत के लिये भी कोई

मुक़र्रर वक़्त है कि इस वक़्त में ही करना होगा और दूसरे वक़्त में हराम है बल्कि मग़रिब के बाद और फ़ज्र के बाद पूरा दिन हुक़ूक़ ज़ौजियत के लिये बाक़ी है कि इसमें कुछ वक़्त ज़ौजा को भी दे देते होंगे।

ख़ैर मालूम हुआ कि चालीस दिन बा-जमाअत नमाज़ पढ़ने वाला दोज़ख़ और निफ़ाक़ से बरी हो जाता है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि ग़ैर ख़ुशूअ़ वाली नमाज़ मुंह पर मार दी जायेगी

(١١٧) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من صلى صلوة لوقتها واسبغ وضوء ها واتم ركوعها وسجودها وخشوعها عرجت وهى بيضاء مسفرة تقول حفظك الله كما حفظتنى ومن صلى لغير ركوعها ولا سجودها ولا خشوعها عرجت وهى سوداء مظلمة تقول ضيعك الله كما ضيعتنى حتى اذا كانت حيث يشاء الله لفت كما يلف الثوب الخلق فيضرب بها وجهه. (احياء العلوم جلد اول، شرح المشكوة)

रसूलुल्लाह स० ने फरमाया जिस शख़्स ने मुतअ़य्यन वक़्त पर नमाज़ पढ़ी और अच्छी तरह वुज़ू किया और रुकूअ़ व सुजूद को मुकम्मल किया ख़ुशूअ़ बरक़रार रखा उसकी नमाज़ रोशन होकर ऊपर चढ़ती है और यह दुआ देती है कि जिस तरह तूने मेरी हिफ़ाज़त की है अल्लाह तआ़ला तेरी भी हिफ़ाज़त करे और जिस शख़्स ने ग़ैर वक़्त में नमाज़ अदा की अच्छी तरह वुज़ू नहीं किया और न रुकूअ़ व सुजूद मुकम्मल किये न ख़ुशूअ़ का लिहाज़ रखा वह स्याह होकर ऊपर चढ़ती है और यह कहती है कि जिस तरह तूने मुझे ज़ायेअ़ किया अल्लाह तआ़ला तुझे भी ज़ायेअ़ करे। यहां तक कि जब वह वहां पहुंच जाती है जहां अल्लाह तआ़ला चाहते हैं तो पुराने कपड़े की तरह लपेट दी जाती है और उसके

मुंह पर मार दी जाती है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि अच्छी नमाज़ रोशन हो कर जाती है और बुरी नमाज़ स्याह कपड़े की तरह लपेट कर मुंह पर फेंक दी जाती है। इस बात की ताईद यह हदीस कर रही है और ज़ाहिर बात है कि जब किसी ने आप को कोई काम कहा अगर आप उस को उ़मदगी और सुथराई के साथ करोगे तो वह खुश होगा और दुआ़ देगा और अगर ख़राब करो तो हुक्म करने वाला नाराज़ हो जाता है और बुरा भला भी कहता है। इसी तरह अल्लाह तआ़ला का मामला है कि अगर इन्सान उसको सही अन्जाम देता है तो अल्लाह तआ़ला खुश होता है वरना नाराज़ होता है। अल्लाह तआ़ला तमाम मुसलमानों को नमाज़ दुरुस्त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमायें।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि बन्दा सज्दे के वक़्त अल्लाह तआ़ला से सब से ज़्यादा क़रीब होता है

(١١٨) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم أَقْرَبُ مَا يَكُونُ الْعَبْدُ من الله تعالى أَنْ يكونَ ساجِدًا (مسلم، احياء العلوم جلد اول، مثلہ فی المشکوٰۃ)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया कि बन्दा अल्लाह तआ़ला से उस वक़्त ज़्यादा क़रीब होता है जब वह सज्दे में होता है।

तबलीग़ वालों की यह बात कि बन्दा सबसे ज़्यादा क़रीब उस वक़्त होता है जब वह सज्दा करता है सही है। और यह हदीस मुस्लिम में है और सज्दे में ही क़रीब क्यों होता है उस की वजह यह है कि सज्दा ही एक ऐसी चीज़ है जो सिर्फ़ ख़ुदा के लिये है और कोई इसमें ज़र्रा बराबर भी शरीक नहीं है और जब वह अपने मक़ामे ताज को यानी सर को आ़जिज़ी और इबादत के

लिये झुकाता है तो अल्लाह तआला को रहम आता है और खुश होता है कि जो आदमी के जिस्म में सबसे अशरफ़ चीज़ (यानी सर है) मेरे सामने झुका दिया बरख़िलाफ़ क़याम के कि यह तो आम चीज़ है हर एक के सामने आदमी खड़ा होता है मगर सज्दा तो मोमिन ख़ुदा के अलावा मुहम्मद स० को भी नहीं करता है। और न कर सकता है और जो मुहम्मद स० को भी सज्दा करना जाइज़ कह दे वह काफ़िर है क्योंकि यह फ़ेअ़ल शिर्क है जिस की इस्लाम में कोई रुख़्सत नहीं। ख़ुद सहाबा रज़ि० ने कहा कि हम आप स० को सज्दा-ए-तअ़ज़ीमी करें तो हुज़ूर अकरम स० ने जवाब दिया कि नहीं, बल्कि यह सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला का हक़ है कि तुम अल्लाह तआ़ला को सज्दा करो और अपने भाई का इकराम करो और जो लोग सज्दा दूसरों को करते हैं यह उन से ही सवाल करना कि आप एसा क्यों करते हो हम तो अपनी बात बताते हैं।

तबलीग़ वाले यह कहते हैं कि नमाज़ इस तरह पढ़ो कि यह आपकी आख़री नमाज़ है

(١١٩) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا صليت فصلِّ صلاة مُوَدِّع (احياء العلوم جلد اول، مشارق المشكوة)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जब तू नमाज़ पढ़े तो रुख़्सत होने वाले की तरह नमाज़ पढ़।

तबलीग़ वालों का यह क़ौल भी हदीस से साबित है और इस की हिकमत यह है कि जब बन्दा यह सोच कर नमाज़ पढ़ेगा कि यह मेरी आख़री नमाज़ है तो सच्चे दिल से बताओ कितने ख़ुशूअ़ से नमाज़ पढ़ेगा इसकी हिकमत यही है कि बन्दा अपनी

नमाज अच्छी से अच्छी कर ले ताकि क़ियामत में रुस्वाई न हो।

एक मरतबा हसन बसरी रह० ने एक शख़्स को देखा कि वह कंकरियों से खेल रहा है और साथ ही यह दुआ कर रहा है कि ऐ अल्लाह तआला मेरा निकाह हूरे ईन से कर दीजिए। हसन बसरी रह० ने कहा ऐ शख़्स! तू अच्छा दुल्हा नहीं है हूरे ईन से निकाह चाहता है और कंकरियों से खेल रहा है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि तमाम जगहों में मस्जिद अच्छी जगह है और बद–तरीन जगह बाज़ार है

(١٢٠) عن ابی هريرة رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم احبُّ البلاد الى الله مسا جدُها وابغضُ البلاد الى الله اسواقُها (مسلم، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० बयान करते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया शहरों में अल्लाह के नज़दीक सबसे पसन्दीदा जगह वहां की मस्जिदें हैं और शहरों में अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे ना–पसन्दीदा जगह वहां के बाज़ार हैं।

मस्जिदें चूंकि अल्लाह तआला की इबादत की जगह हैं इस लिये अल्लाह तआला मस्जिदों को मेहबूब रखता है यानी मस्जिद वालों को बहुत ज़्यादा ख़ैरो बरकत पहुंचाता है। और बाज़ार चूंकि ऐसी जगह हैं जहां शैतानी कामों और शैतानी बातों, हिर्स, तमअ़, ख़्यानत, झूठ और दग़ा व फ़रेब वग़ैरा का चलन होता है इसलिये बाज़ार अल्लाह तआला को निहायत ना–पसन्द हैं। यानी बाज़ारों में रहने वालों को बुराई पहुंचाता है यहां पर यह सवाल पैदा होता है कि शहरों में बुत ख़ाने भी होते हैं और शराब ख़ाने और सिनेमा घर वग़ैरा भी और ज़ाहिर है कि यह जगहें बाज़ारों से भी बुरी हैं

तो फिर इन जगहों को सबसे ना-पसन्दीदा क्यों नहीं फ़रमाया गया। इस का जवाब यह है कि बाज़ार वह जगह है जिस का बनाना और क़ायम करना जाइज़ है। जिस जगह बुत ख़ाने और सिनेमा हाल वग़ैरा हों यह ऐसे मक़ामात हैं जिन का बनाना क़ायम करना सिरे से जाइज़ ही नहीं बल्कि मुराद यह है कि जाइज़ जगहों में ना-पसन्दीदा जगह बाज़ार है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि मुअज़्ज़िन की गवाही तमाम चीज़ें देंगी

(۱۲۱) عن ابی سعیدؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لایسمع نداء المؤذن جن ولاانس ولا شیئ الاشہد لہ یوم القیامہ (بخاری ثانی، احیاء العلوم جلد اول)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जिन और इन्सान और जो भी चीज़ें मुअज़्ज़िन की आवाज़ सुनेंगी वह क़ियामत में गवाही देंगी।

दूसरी जगह पर एक और फ़ज़ीलत वारिद है:

(۱۲۲) ید الرحمن علی رأس المؤذن حتی یفرغ من اذانہ
(احیاء العلوم جلد اول)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जब तक मुअज़्ज़िन अपनी अज़ान से फ़ारिग़ नहीं होता अल्लाह तआला का हाथ उसके सर पर रहता है।

तबलीग़ वाले यह हदीस बयान करते हैं इसलिये मैं ने इस को भी ज़िक्र कर दिया कि कोई मोअ़तरिज़ हो या किसी को शक हो वह शक का इज़ाला कर ले कि जो तबलीग़ वालों ने यह हदीस पेश की है वह सही है और मुअज़्ज़िन के लिये बहुत से फ़ज़ाइल हदीसों में वारिद हैं कि मुअज़्ज़िन क़ियामत के रोज़ अल्लाह तआला के साये में रहेगा इससे बढ़कर और क्या फ़ज़ीलत होगी।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि तहज्जुद की नीयत करके सोने वाले को पूरा सवाब है

(۱۲۳) من أتى فراشه وهو ينوى أنْ يقوم يصلي من الليل فغلبتهٔ عيناه حتى يصبح كتب له مانوىٰ وكان نومه صدقة من الله عليه
(نسائی، احیاء العلوم جلد اول)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जो शख़्स रात में उठने की नीयत करके बिस्तर पर लेटे और नींद से इतना मग़लूब हो कि सुबह हो जाये और आँख न खुले तो उसके लिये उसकी नीयत का सवाब लिखा जायेगा और उसकी नींद उसके हक़ में अल्लाह तआला का सदक़ा होगी।

यह हदीस तबलीग़ वाले बयान करते हैं जो बिल्कुल सही है लेकिन बअ़ज़ लोग इस पर मज़ाक़ उड़ाते हैं कि देखो तबलीग़ वालों को कि यह सिर्फ़ नीयत करने को ही सब कुछ समझते हैं ऐसा तो फिर सब करेंगे कि रात को तहज्जुद की नीयत कर के सो जायेंगे और सुबह तक आराम से उठेंगे तहज्जुद का भी सवाब मिलेगा और नींद भी पूरी हो जायेगी। देखो इन की समझ को कि एक छोटी और वाज़ेह हदीस समझने पर भी क़ादिर नहीं और तबलीग़ वालों पर ऐतिराज़ करते हैं। इस हदीस का यह मतलब नहीं है जो आपने समझा बल्कि मतलब यह है कि अगर कोई शख़्स पक्की नीयत करके सो जाये और सुबह तक सोता ही रह जाये तो सवाब हासिल होगा और अगर वह रात में बेदार हुआ लेकिन नमाज़ न पढ़ी तो अब सवाब का वअ़दा न होगा क्योंकि आँख खुली थी मगर आप ने सुस्ती की और सो गये इसलिये आपको वह सवाब हासिल न होगा जो हदीस में है क्योंकि अब आप इस हदीस के मिस्दाक़ नहीं। तबलीग़ वाले जो नीयत का

लफ़्ज़ लेते हैं उसके साथ पक्की नीयत की भी क़ैद लगाते हैं कि पक्की नीयत, और पक्की नीयत का मतलब यह है कि थोड़ी सी भी आँख खुल जाये तो मैं नमाज़ पढ़ूंगा यह है मतलब, नीयत कर के सोने का।

तबलीग़ वाले मस्जिद में दाख़िल होने के बाद नमाज़ पढ़ते हैं

(۱۴۴) عن ابی قتادةؓ قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم اذا دخل احدکم المسجد فلیرکع رکعتین قبل اَنْ یجلس. (مشکوٰۃ، ابوداؤد شریف)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया तुम में कोई जब मस्जिद में दाख़िल हो तो उसको चाहिये कि बैठने से पहले दो रकअ़तें पढ़ ले।

अलहम्दुलिल्लाह! तबलीग़ वाले इस हदीस पर भी अ़मल करते हैं। मगर मोअ़तरिज़ उन पर यह ऐतिराज़ करते हैं कि जब मस्जिद में पहुंचो तो पहले कुछ देर बैठ जाओ फिर नमाज़ पढ़ना यह कौन सा तरीक़ा है कि सामान भी सही न रखा और फ़ौरन नमाज़ की नीयत बांध ली, इस हदीस से मोअ़तरिज़ का सवाल हल हो जाता है कि तबलीग़ वाले हज़रात ज़रूर अपने उ़लमा के क़ौल पर अ़मल करते हैं, वह उ़लमा जो तबलीग़ वालों को एक एक सुन्नत का दर्स देते हैं। वह बिल्कुल मुवाफ़िके हदीस होता है। देखो यह अ़मल आप को ग़लत नज़र आ रहा है मगर यह अ़मल बिल्कुल सही है। इस हदीस की रू से कि हदीस में हुक्म हो रहा है और साफ़ अल्फ़ाज़ हैं कि बैठने से पहले नमाज़ पढ़े न कि बैठने के बाद का हुक्म हुज़ूर अकरम स० ने दिया। अगर हुज़ूर अकरम स० यह हुक्म फ़रमाते कि बैठने के बाद नमाज़ पढ़ना तो हम वैसा ही अ़मल करते। मगर यह हुक्म इस हदीस में नहीं है और इस हदीस पर हमारा अ़मल है।

तबलीग़ वाले वुज़ू के बाद दो रक्अ़त पढ़ते हैं

हदीस के पहले हिस्से का ख़ुलासा यह है कि एक मरतबा हुज़ूर अकरम स० ने फज्र की नमाज़ के बाद हज़रत बिलाल रज़ि० को बुलाया और कहा ऐ बिलाल! तुम्हारा कौनसा अ़मल है जिस की वजह से तुम्हारे जूतों की आवाज़ को जन्नत में सुनता हूँ उन्होंने उसका जवाब दिया, ऐ अल्लाह तआ़ला के रसूल:

(۱۲۵) ما اَذَّنْتُ قَطُّ الأصليتُ ركعتين وما اصابنى حدثٌ قَطُّ الاتوضاتُ عنده ورايتُ اَنَّ لِلّٰهِ عَلَيَّ ركعتين فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم بهما (مشکوٰۃ شریف)

हज़रत बिलाल रज़ि० ने फ़रमाया कि मैंने जब भी अज़ान दी है तो उसके बाद दो रक्अ़त नमाज़ ज़रूर पढ़ी है और जब भी मेरा वुज़ू टूटा है मैंने उसी वक़्त वुज़ू कर लिया है और मैंने ख़ुदा के वास्ते दो रक्अ़त नमाज़ पढ़नी अपने ऊपर लाज़िम क़रार दे रखी हैं। आंहज़रत स० ने फ़रमाया इसी वजह से तुम इस अ़ज़ीम दर्जे को पहुंचे हो।

इस हदीस से तहय्यतुल वुज़ू की फ़ज़ीलत भी ज़ाहिर हो गई और तबलीग़ वालों का अ़मल भी साबित हो गया कि तहय्यतुल वुज़ू भी हदीस से साबित है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि तहज्जुद मसाइब के हल करने का बेहतरीन इलाज है

(۱۲۶) عن ابى هريرة رضى الله عنه قال سمعتُ رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول اَفْضَل بعدالصلوٰة المَفْرُوضَةِ صلوٰة فى جوف الليل (مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० ने फ़रमाया कि मैंने सुना रसूलुल्लाह

स० से कि फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद सब से अफ़ज़ल नमाज़ रात में पढ़ी जाने वाली नमाज़ है यानी तहज्जुद की नमाज़ है (मिश्कात शरीफ़)

दूसरी हदीस में है:

(۱۲۷) عن ابن عباس رضی اللہ عنهما قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اَشْرافُ اُمتی حَمَلَةُ القرآن واصحاب اللیل. (مشکوٰۃ، ترمذی)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के अशराफ यानी बुलन्द मरतबा वाले लोग कुरआन उठाने वाले और रात में नमाज़ पढ़ने वाले हैं।

दोनों हदीसों से तहज्जुद की फ़ज़ीलत ज़ाहिर हो गई और हुज़ूर अकरम स० ने तहज्जुद की शान में यह फ़रमाया कि तहज्जुद की नमाज़ फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद तमाम नमाज़ों में ज़्यादा अफ़ज़ल है क्योंकि इसमें ज़्यादा परेशान होना पड़ता है कि नींद से उठे और फिर वुज़ू करे फिर नमाज़ तहज्जुद पढ़े। यह बहुत दुश्वार होता है दूसरे नवाफ़िल पढ़ने के मुक़ाबिल। इसलिये तहज्जुद के फ़ज़ाइल अहादीस में वारिद हैं कि बअ़ज़ हज़रात ने वाजिब कह दिया ताकीद को देखकर और तक़रीबन हर बुज़ुर्ग ने तहज्जुद की पाबन्दी की है यहां तक कि उ़लमा ने कहा बुज़ुर्गों को बुज़ुर्गी तक पहुंचना बग़ैर तहज्जुद के बहुत दुश्वार है। हुज़ूर अकरम स० भी रात रात भर तहज्जुद पढ़ते थे। हज़रत इमाम अअ़ज़म रह० तहज्जुद की नमाज़ की नीयत बांध कर रात रात भर रोते थे यहां तक कि पड़ोसियों को रहम आता था हज़रत जुनैद बग़दादी रह० का वाक़िआ़ नक़ल किया है कि जब आपका इन्तिक़ाल हुआ उसके बाद उन्हें किसी ने ख़्वाब में देखा तो पूछा कि परवरदिगार ने आपके साथ कैसा मामला किया? उन्होंने जवाब दिया:

تاهت العبادات وفنيت الاشارات وما نفعنا الا ركعات صليناها فى جوف اليل. (احياء العلوم)

वह बातें जो मैं हक़ाइक़ व मआरिफ़ के बयान में कहता था जाती रहीं और वह नुकात जो मैं बयान किया करता था ख़त्म हो गये मुझे तो सिर्फ़ नमाज़ की उन चन्द रक्अ़तों ने फ़ाइदा दिया जो निस्फ़ शब में पढ़ा करता था।

देखो, सिर्फ़ तहज्जुद की चन्द रक्अ़तों ने जन्नत में दाख़िल करा दिया और दूसरी बात यह है कि रात में दुआ बहुत जल्द कुबूल होती है उस वक़्त बन्दा जो इबादत करता है वह रिया और शोहरत से ख़ाली होती है और जो इबादत रिया और शोहरत से ख़ाली हो वही अल्लाह को पसन्द है और वही इबादत निजात दिलाती है और दूसरी हदीस में वारिद है कि अल्लाह तआ़ला रात में दुनिया के आसमान पर उतरते हैं। देखो यह हदीस है:

(١٢٨) عن ابى هريرة رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يتنزّل رَبُّنا تبارك و تعالى كل ليلةٍ الى السماء الدنيا حين يبقى ثلث الليل الآخر يقول من يدعونى فاستجيب له مَن يسئَلُنى فأعطيه من يستغفرنى فأغْفِر لَهُ و فى رواية المسلم ثم يبسطُ يديه ويقول من يقرض غير عَدومٍ و لا ظلومٍ حتى يتفجّر الفجر. (بخارى، مسلم)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० ने कहा कि हुज़ूर अकरम स० ने फरमाया हर रात में आख़री तिहाई रात के वक़्त हमारा बुजुर्ग व बर्तर परवरदिगार दुनिया के आसमान पर नुज़ूल फ़रमाता है और फरमाता है कि कौन है जो मुझको पुकारे और मैं उसे कुबूलियत बख़्शूं कौन है, जो मुझसे सवाल करे मैं उसका सवाल पूरा करूं कौन है, जो मुझ से मग़फ़िरत का तलबगार हो और मैं उसे बख़्शूं और मुस्लिम की एक रिवायत में यह अलफ़ाज़ भी हैं कि फिर अल्लाह तआ़ला जल्ले शानहू अपने दोनों हाथों को फैलाता है

और कहता है कि कौन है जो ऐसे को कर्ज़ दे जो न फ़कीर है और न ज़ुल्म करने वाला है और सुबह तक यही फ़रमाता रहता है।

यह हदीस भी तबलीग़ वाले बयान करते हैं और इसमें यह भी बात ज़ाहिर हो गई कि अल्लाह तआ़ला तहज्जुद के वक़्त दुआ कुबूल करने के लिये ख़ुद ऐलान करता है। अब बताओ वह इबादत कितनी अफ़ज़ल होगी जिसमें बन्दे की और अल्लाह तआ़ला की मुलाक़ात एक जगह हो।

नमाज़ की आयत पर एक शुबह और उसका जवाब

اِنَّ الصَّلٰوۃَ تَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْکَرِ ○ (پ٢١)

तर्जुमाः– बेशक नमाज़ फ़ोहुश और बुरी बातों से रोकती है।

अल्लाह तआ़ला ने यह बात वाज़ेह फ़रमा दी है कि नमाज़ ग़लत और मरदूद चीज़ों से रोकती है यानी जब बन्दा नमाज़ पढ़ता है तो उस के दिल पर और अअ़ज़ा पर अल्लाह तआ़ला का नूर पैदा हो जाता है और वह नूर तमाम ख़बीस चीज़ों से रोकता है क्योंकि नूर और ज़ुल्मत एक जगह जमा नहीं हो सकते लेकिन इस पर बहुत से लोगों ने इश्काल किया है कि मौलाना आप कहते हैं कि नमाज़ पढ़ने वाले को अल्लाह तआ़ला बुरी चीज़ों से रोकता है मगर हमारा भाई या दोस्त कई सालों से नमाज़ पढ़ रहा है फिर भी वह जो बुरे काम करता था वह करता ही रहता है और आप लोग कहते हो कि नमाज़ पढ़ने से अल्लाह तआ़ला बुराइयों से रोकेगा अब आप ही बताइये कि आप की बात कैसी बे–मअ़ना है। लेकिन सवाल करने वाले अकसर बेचारे जाहिल होते हैं उनको क्या मालूम कि यह कुरआन की ज़बान है। ख़ैर ऐसे ही लोगों के हक़ में हुज़ूर अकरम स० का फ़रमान है कि:

(۱۲۹) من لم تنهه صلوته عن الفحشاء والمنكر لم يزد من الله الا بعدا (مشكوٰة شريف)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जिस शख़्स को उसकी नमाज़ फ़ोहुश कामों और बुराइयों से रोक न सके वह अल्लाह तआला से दूर ही होता रहेगा।

और दूसरी जगह इरशादे रब्बानी है:

(۱۳۰) لا ينظر الله الى صلوة لايحضر الرجل فيها قلبه مع بدنه (ترمذی)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अल्लाह तआला ऐसी नमाज़ पर मुतवज्जेह होता ही नहीं जिसमें आदमी अपने बदन के साथ अपना दिल भी हाज़िर न करे।

देखो हुज़ूर अकरम स० ने जवाब दे दिया कि नमाज़ से वह नमाज़ मुराद है जिसमें बन्दे का दिल भी, ज़हन भी, बदन भी पूरे तौर पर हाज़िर हो। तब यह हुक्म है और ज़ाहिर बात है कि जब आप कोई काम कर रहे हों लेकिन बदन हाज़िर हो और ज़हन किसी और जगह हो तो काम ज़रूर ख़राब हो जाता है। क्योंकि ज़हन हाज़िर न था बदन के साथ। इसी तरह नमाज़ का भी हाल है अगर बन्दा क़ल्ब और जिस्म हाज़िर रखे तो ज़रूर वह नूरानीयत मेहसूस करेगा।

और दूसरा जवाब यह है कि अगर आप इस आयत में फ़ोहुश कामों से रोकने के मअ़ना यह लें कि नमाज़, नमाज़ पढ़ने वाले को नमाज़ पढ़ने के वक़्त में फ़ोहुश कामों से मेहफ़ूज़ रखती है तो फिर कोई इश्काल ही नहीं। लेकिन फिर भी नमाज़ में क़ल्ब का हाज़िर होना ज़रूरी है वरना पहले हदीस नक़ल कर चुका हूँ कि वह नमाज़ जिसमें ख़ुशूअ़ न होगा वह मुंह पर मार दी जायेगी इसलिये इख़लास और हुज़ूरे क़ल्बी पैदा करना ज़रूरी है जैसा कि अल्लाह तआला के वलियों के वाक़िआत किताबों में मिलते हैं कि

हज़रत इब्राहीम अ० ख़लीलुल्लाह जब नमाज़ के लिये खड़े होते थे तो उनके दिल की बेचैनी की आवाज़ दो मील के फ़ासले से सुनी जा सकती थी। इसी तरह हज़रत सईद तन्नूख़ी रह० जब नमाज़ पढ़ते तो उनके आंसू गालों से दाढ़ी को तर करते हुए गिरते रहते थे इसी तरह हज़रत अ़ली रज़ि० के बारे में बयान किया जाता है कि जब किसी फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त आता तो उनके चेहरे का रंग बदल जाता और अजीब किस्म की कैफ़ियत हो जाती। लोग अ़र्ज़ करते हैं अमीरुलमोमिनीन क्या हुआ? फ़रमाते, उस अमानत की अदायगी का वक़्त आ गया जो अल्लाह तआ़ला ने आसमानों पर, ज़मीनों पर, पहाड़ों पर पेश की तो उन सबने उस अमानत का बोझ उठाने से इन्कार कर दिया। देखो इसका नाम है ख़ुशूअ़। और हम लोग अपनी टूटी फूटी इबादत के ज़रिये कैसे आयते क़ुरआनी पर ऐतिराज़ करते हैं यह तो सरासर ग़लत है। रुपये तो जेब में न हों और ताजमहल की बात करो अगर आज भी नमाज़ दुरुस्त हो जाये तो वही नूर पैदा हो जायेगा जिसका वअ़दा है। मैं आपको और एक बात बताता हूँ वह यह कि नमाज़ का नूर कब पैदा होता है। नमाज़ का नूर उस वक़्त पैदा होता है जब अल्लाह तआ़ला बन्दे की नमाज़ से ख़ुश होकर उसकी तरफ़ नज़रे रहमत डाले। और जब नज़रे रहमत पड़ेगी तो यह रहमत ही उसको फ़ोहुश और मुन्कर से रोकेगी। लेकिन हमारी नमाज़ में एक ऐसी चीज़ हाइल है जो नज़रे रहमत पड़ने से मानेअ़ है वह है ख़ुशूअ़ का न होना, जैसे हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला उस नमाज़ की तरफ़ नज़र ही नहीं करता जिसमें ख़ुशूअ़ न हो तो उसका नतीजा साफ़ हो गया वह यह कि फ़ोहुश चीज़ों से रोकने वाली चीज़ क्या थी? वह अल्लाह तआ़ला की नज़रे रहमत थी जो ख़ुशूअ़ की वजह से हासिल होती है। और

हमारे खुशूअ न होने की वजह से अल्लाह तआला की नज़र रहमत ही नहीं पड़ती जो फोहुश कामों से रोकने वाली है। बात साफ हो गई कि अगर नमाज़ इस क़ाबिल है कि उस पर अल्लाह तआ़ला की नज़रे रहमत पड़ रही है तो अब यह शख़्स आयत का मिस्दाक़ होगा वरना नहीं फिर आयत का कोई कुसूर नहीं बल्कि हमारी कोताही है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि कुफ़्र और ईमान के दरमियान नमाज़ हाइल है

(۱۳۱) عن بریدةؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فمن ترک الصلوۃ فقد کفر. (احیاء العلوم جلد اول، مشکوۃ)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जिसने जान कर नमाज़ छोड़ी उसने कुफ़्र वाला काम किया।

इस हदीस का मतलब यह है कि वह शख़्स कुफ़्र के क़रीब पहुंच गया क्योंकि वह नमाज़ को छोड़ बैठा हालांकि नमाज़ ही दीन का सुतून है। यह ऐसा ही है जैसे कोई शख़्स शहर के क़रीब पहुंच कर यह कहने लगे कि मैं शहर में दाख़िल हो गया हालांकि वह शहर में दाख़िल नहीं हुआ मगर दाख़िल होने के क़रीब है।

यही मतलब है इस हदीस का कि वह काफ़िर तो नहीं होगा बल्कि कुफ़्र के क़रीब ज़रूर पहुंच जाता है। अगर वह नमाज़ छोड़ने को जाइज़ समझे तो वह काफ़िर हो जायेगा क्योंकि उसने कुरआन का इन्कार कर दिया कि कुरआन में नमाज़ पढ़ने का हुक्म नहीं दिया गया है और वह नमाज़ छोड़ना जाइज़ समझता है। अब हदीस के मअ़ना हक़ीक़ी हो जायेंगे कि वह काफ़िर हो गया क्योंकि उसने फ़र्ज़ियते नमाज़ का ही इन्कार कर दिया जो

कुरआन और हदीस से साबित है। ख़ैर नमाज़ न पढ़ने वाले के बारे में यह वईद है कि इमाम अहमद और इमाम शाफ़ई रह० तो हुक्म देते हैं कि जो शख़्स जान कर नमाज़ न पढ़े उसको क़त्ल कर डालो। ख़ैर तबलीग़ वालों का यह कहना कि मुसलमान और काफ़िर के दरमियान सिर्फ़ नमाज़ हाइल है, सही है।

और दूसरी हदीस में हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया:

(١٣٢) من ترك الصلوة متعمداً فقد برى من ذمة محمد عليه السلام. (احياء العلوم جلد اول، مثلہٗ فی المشکوٰۃ)

हुज़ूर अकरम स० ने इरशाद फ़रमाया जिस शख़्स ने जान कर नमाज़ छोड़ दी वह मुहम्मद स० के ज़िम्मे से निकल गया।

और भी बहुत सी सख़्त वईदें वारिद हुई हैं तारिकीने सलात के हक़ में। ख़ैर तबलीग़ वालों का क़ौल सही है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि सफ़ों को दुरुस्त करो

(١٣٣) عن انس رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سوُّوا صُفُوفَکُمْ فَاِنَّ تسویۃَ الصُّفُوْفِ من اقامۃ الصلوۃ. (بخاری ومسلم)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया तुम अपनी सफ़ों को बराबर रखा करो क्योंकि सफ़ों को बराबर रखना नमाज़ की तकमील में से है।

सफ़ों को दुरुस्त करना हदीस से साबित है न सिर्फ़ तबलीग़ वाले ही कहते हैं बल्कि इसमें बहुत सी खूबियां मौजूद हैं एक तो यह बताया गया है कि सफ़ों को सही रखो वरना इसकी वजह से दिलों में कजी पैदा हो जाती है। दूसरा फ़ाइदा यह है कि हम बादशाहे आलमीन के दरबार में जा रहे हैं। बताओ आज कोई हुक्मरान आये तो लोग उसके इस्तिक़बाल के लिये सीधे और

बाअदब होकर खड़े रहते हैं। क्या हम लोग अल्लाह तआला के पास अदब से खड़े न होंगे? और तीसरा फ़ाइदा यह है कि ग़ैर अक़वाम जैसे यहूदी व ईसाई और हिन्दू और सिख वग़ैरा क़ौम हमारी इस उम्दा सफ़बन्दी पर तअज्जुब करती हैं। मैंने भी उनके तअज्जुब को उनकी ज़बानों से सुना है कि आप लोगों की इबादत का तरीक़ा बहुत अच्छा है। सब एक साथ जमा हो जाते हैं और जो सामने वाला हुक्म देता है वह सब बख़ुशी तस्लीम करते हैं। देखो, इस्लाम ने कैसे उम्दा उम्दा क़वानीन तजवीज़ कर रखे हैं सिर्फ़ अमल करने वालों की कमी है। ख़ैर सफ़ का दुरुस्त करना बहुत ज़रूरी है। हज़रत उमर रज़ि० के दौर में एक आदमी इस काम के लिये मुतअय्यन था कि वह सफ़ों को देखे।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि मुसीबत को नमाज़ से दूर करो

(١٣٤) عن حذيفة رضى الله عنه قال كان النبى صلى الله عليه وسلم اذا حَزَبَهٗ امرٌ صَلّٰى. (مشكٰوة شريف)

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० बयान करते हैं कि हुज़ूर अकरम स० जब किसी मुसीबत से दो चार होते, तो नफ़िल नमाज़ पढ़ते।

तबलीग़ वालों का क़ौल हदीस के मुवाफ़िक़ है और बहुत अच्छी बात है, ज़रा ग़ौर करो कि जब किसी को किसी चीज़ की बहुत ज़रूरत पड़ती है तो वह बड़े आदमी के पास या मालदार के पास जाता है ताकि मसअला हल हो जाये मगर देखो यह यक़ीने कामिल की बात कि बन्दा किसी के पास न जाये बल्कि दुनिया के बादशाह के पास जाये और उससे काम करवा ले मगर बअज़ सिर्फ़ मुतालआ करने वाले और नीम आलिम लोगों को यह बात बहुत भारी लगती है कि इन्सान को असबाब की तरफ़ जाना

चाहिये। न सिर्फ़ नमाज या ज़िक्र करना चाहिये इन हज़रात को मै क्या बताऊं इनको चाहिये कि हुज़ूर अकरम स० के फ़ेअल को देख लें कि आप स० क्या अमल फ़रमाते थे यह ऐतिराज़ पैदा हो सकता है कि यह बात सही नहीं है हुज़ूर का यक़ीन बहुत ऊंचा था वह नमाज़ से काम कर सकते थे मगर हम जैसे कमज़ोर ईमान वालों को मख़्लूक़ से भीक मांगना ही आता है और नमाज़ वाला काम नहीं होता। जवाब यह है कि बेशक हुज़ूर का यक़ीन बहुत ऊंचा था मगर हुज़ूर का हर अमल ख़ुद के लिये न था बल्कि वह उम्मत के लिये मशअ़ले राह था चाहे कोई भी अमल हो वह उम्मत के लिये किया गया था ताकि उम्मत इसको इख़्तियार करे। आपको दुआ और इस्तिग़फ़ार की क्या ज़रूरत थी। मगर आप ने उम्मत को अमल पर खड़े करने के लिये और बेअमल को अमल वाला बनाने के लिये यह अअ़माल अन्जाम दिये हैं और तुम यह कहो कि वह तो हुज़ूर स० के साथ ख़ास था यह सब हुज़ूर स० के फ़ेअ़ल से दूरी और बे रग़बती की अलामत है और कुछ नहीं। इनको चाहिये कि अपने ऊपर से शैतान को उतार कर शरीअ़त को सवार करें और हुज़ूर अकरम स० के क़ौल और फ़ेअ़ल को इख़्तियार करें।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि सांप को नमाज़ में मारने का हुक्म है

(۱۳۵) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم اُقتلو االاسودین فی الصلوة الحیةو العقرب. (مشکوٰة شریف)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया दो कालों को क़त्ल करो नमाज़ में, एक सांप है और एक बिच्छू है (चाहे यह काले हों या दीगर और रंग के हों, क़त्ल करो)

तबलीग़ वालों का कहना सही है मगर बअ़ज़ लोगों को यह इश्काल होता है कि नमाज़ में सांप को मारने का हुक्म कैसे हो सकता है यह तबलीग़ वाले कुछ भी कहते हैं और हदीस का हवाला देते हैं यह बअ़ज़ जाहिल लोगों का क़ौल हो सकता है। भाई तबलीग़ वाले ग़लत हदीस क्यों नक़ल करेंगे क्या तुम उन को कुछ देते हो जो वह तुम्हारे लिये झूठी हदीस बयान करेंगे ऐसा नहीं बल्कि यह हदीस ही है। मगर आम लोगों को इसकी ख़बर नहीं है। ख़ैर नमाज़ में अ़मले कसीर करने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है और उसको लौटाना ज़रूरी हो जाता है। और सांप का मारना हदीस से साबित है इसलिये इसमें रुख़्सत है वरना यह कि नमाज़ में अगर किसी को एक चपत भी लगा दिया तो नमाज़ दुहरानी पड़ेगी। मगर सांप और बिच्छू के मारने से नमाज़ नहीं टूटती। मज़ीद तफ़सील उ़लमा व मुफ़्तियाने कराम से तलब करें और यह रुख़्सत क्यों दी गई है इसलिये कि सांप एक नुक़सानदह जानवर है जिस के ज़रिये दूसरे इन्सान को या ख़ुद को नुक़सान पहुंच सकता है इस नुक़सान के पेशे नज़र शरीअ़त ने इसकी रुख़्सत दी।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि नमाज़े ईद से पहले कोई नफ़िल जाइज़ नहीं

(١٣٦) عن ابن عباس رضي الله عنهما ان النبي صلى الله عليه وسلم صلى يوم الفطر ركعتين لم يُصَلِّ قبلها ولا بعدها. (مشكوة شريف)

हज़रत इबने अ़ब्बास रज़ि० बयान करते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने ईदुल फ़ित्र के दिन दो रकअ़तें पढ़ीं, न तो उनसे पहले नफ़्ल नमाज़ पढ़ी और न बाद में।

यानी ईद के दिन फ़ज्र की नमाज़ के बाद ईद की नमाज़ से पहले कोई नफ़्ल नमाज़ जाइज़ नहीं है। यही हदीस की बात तबलीग़ वाले कहते हैं, मगर मुहम्मद स० के दीन के दुश्मन उन को बदनाम करने की बेहद कोशिश करते हैं। लेकिन अल्लाह तआला ने अपने दीन की हिफ़ाज़त का वअ़दा ख़ुद फ़रमा दिया है ﴿انا نحن نزلنا الذكر و انا له لحافظون﴾ यानी यह कुरआनी शरीअ़त हम ने नाज़िल की है और हम ही इस के मुहाफ़िज़ हैं। अब किसी की हिफ़ाज़त की ज़रूरत नहीं और अल्लाह तआ़ला ख़ुद ही हक़ को ज़ाहिर करके रहेगा। तबलीग़ वालों को लोगों के ऐतिराज़ात से मुतअस्सिर न होना चाहिये, बल्कि उ़लमा से रुजूअ़ कर लेना चाहिये। अलहम्दुलिल्लाह! आजकल अकसर जमाअ़तों में उ़लमा कराम मौजूद होते हैं अगर उनको पता न हो तो दूसरे उ़लमा से पता कर लें और अपने आप को दीगर फ़िरक़ों से बचायें कि उन की सिर्फ़ अबू जहल की तरह ज़बान तेज़ होती है मगर दिल और अक़ीदे कोयले की तरह स्याह होते हैं।

तबलीग़ वालों का कहना है कि ईद के रोज़ ईदगाह को एक रास्ते से जाना और दूसरे रास्ते से आना सुन्नत है

(۱۳۷) عن جابر رضی الله عنه قال كان النبی صلی الله علیه وسلم اذا كان یوم عید خالف الطریق. (مشکوٰة)

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि जब ईद का दिन होता तो आप स० रास्तों में मुख़ालफ़त करते थे।

मतलब यह है कि एक रास्ते से ईदगाह को जाते और दूसरे रास्ते से आते। और यही तबलीग़ वाले, उ़लमा से नकल करते हैं

तबलीग़ वाले कहते हैं कि ख़ुत्बे के वक़्त बातें करनी जाइज़ नहीं

(١٣٨) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم اذا قُلْتَ لصاحبك یوم الجمعة اَنْصِتْ والامامُ یَخْطُبُ فقد لغوت. (متفق علیه)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जुमा के दिन जब इमाम ख़ुत्बा पढ़ रहा हो अगर तुम ने अपने पास बैठे हुए शख़्स को यह भी कहा कि चुप-रहो तब भी तुम ने ग़लत काम किया।

क्योंकि ख़ुत्बे में किसी भी क़िस्म के कलाम की इजाज़त नहीं अब ज़िक्र भी ख़ुत्बा है, अब कुरआन की तिलावत भी ख़ुत्बा है और अगर हुज़ूर अकरम स० का नामे मुबारक आये तो उसको चाहिये कि दिल में ही हुज़ूर अकरम स० पर दुरूद पढ़े बाक़ी और जो क़ौल तबलीग़ वालों का उलमा से नक़ल किया हुआ है कि ख़ुत्बे के वक़्त बातें करना जाइज़ नहीं है। जैसा कि हदीस से ज़ाहिर हो रहा है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि क़ैलूला सुन्नत है

(١٣٩) عن سهل بن سعد قال ما كنا نقیلُ ولا نتغدی الا بعد الجمعة (بخاری، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत सहल बिन सअ़द ने फ़रमाया कि हम जुमा के बाद खाना खाते और क़ैलूला करते (जुमा से पहले नहीं)

इस हदीस से यह मालूम हुआ कि तबलीग़ वालों का क़ैलूला करना और यह कहना कि क़ैलूला सुन्नत है बिल्कुल दुरुस्त है और साबित मिनल–हदीस है। जैसे दूसरी हदीसों से हुज़ूर अकरम स० का क़ैलूला करना मालूम होता है इस हदीस में सहाबा रज़ि०

भी शरीक है यानी अकसर का इस पर अमल था। खैर क़ैलूला कहते हैं दोपहर में थोड़ी देर आराम हासिल करने को, चाहे थोड़ा सोया जाये या सिर्फ़ लेटा जाये, दोनों पर क़ैलूले का इत्लाक़ होता है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि फ़रिश्तों के तबदील होने का वक़्त अस्र और फ़ज्र के बाद है।

जलालैन सफ़हा न० 109 हाशिया न० 12 पर देखो लिखा हुआ है फ़ज्र और अस्र के बारे में:

وقت تصادم ملائكة الليل و ملائكة النهار.

अस्र और फ़ज्र का वक़्त वह है जिस में फ़रिश्तों की ड्यूटी तबदील होती है। और यही बात तबलीग़ वाले कहते हैं। अगर इस पर भी इत्मिनान न हो तो और दो हदीसों को पेश करता हूँ।

(١٣٠) ان الملائكة اذا صعدت بصحيفة العبد وفيها في اول النهار وآخره خيره كفر الله ما بينهما من سيّ الاعمال. (احياء العلوم جلد دوم)

फ़रमाया हुज़ूर अकरम स० ने, फ़रिश्ते जब किसी शख़्स का नाम–ए–अअ़माल ऊपर लेकर जाते हैं और उस में दिन के इब्तिदाई और आख़री औक़ात में अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र मिलता है तो अल्लाह तआ़ला दरमियानी वक़्त के गुनाह मआ़फ़ कर देते हैं।

यह भी हदीस तबलीग़ वाले बयान करते हैं, मगर नीम आलिम इसको ग़लत समझते हैं क्योंकि उन्हें छोटी मोटी किताबों के अ़लावा दूसरी किताबों का मुतालआ़ करने के लिये वक़्त ही नहीं मिलता कि फ़ारिग़ होते ही मोअ़तरिज़ को क़ब्र की निगरानी करनी होती है क़ब्र के पुजारी को इस हदीस की ख़बर ही नहीं है।

एक हदीस का आखरी हिस्सा है.

(١٣١) عن ابی ھریرۃؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یتعاقبون فیکم ملائکۃ باللیل وملائکۃ بالنھار ویجتمعون فی صلوۃ الفجر وصلوۃ العصرثم یعرج الذین باتوا فیکم فیسالھم ربھم وھو اعلم بھم کیف ترکتم عبادی فیقولون ترکناھم وھم یصلون واتینا ھم وھم یصلون وفی روایۃ فیقول اللہ سبحانہ وتعالی اشھدکم انی قد غفرت لھم
(بخاری، مسلم واحیاء العلوم ومشکوٰۃ)

रसूलुल्लाह स० ने फ़रमाया कि दिन के फ़रिश्ते तुम्हारी टोह में रहते हैं वह फ़ज्र और अस्र के वक़्त बारी तआला की बारगाह में जमा होते हैं अल्लाह तआला उनसे दरयाफ़्त फ़रमाते हैं हालांकि वह अपने बन्दों के हालात से ज़्यादा बा ख़बर हैं कि तुमने मेरे बन्दों को किस हालत में छोड़ा? फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं कि हमने नमाज़ पढ़ते हुए छोड़ा, जब हम उनके पास गये थे तो वह नमाज़ पढ़ रहे थे अल्लाह तआला फ़रमायेंगे (यानी उनके इस जुमले के बाद अल्लाह तआला कहेगा) गवाह रहो मैंने इन बन्दों की मग़फ़िरत कर दी।

यह है बुख़ारी और मुस्लिम की साफ़ और वाज़ेह हदीस, जो तबलीग़ वालों के क़ौल की ताईद कर रही है। अब न कहना कि तबलीग़ वाले ग़लत हदीस बयान करते हैं बल्कि वह उ़लमा से सुनी हुई हदीसें नक़ल करते हैं और उ़लमा उन किताबों से नक़ल करते हैं जो मैं ज़िक्र कर रहा हूँ जिसमें अकसर अहादीस बुख़ारी और मुस्लिम और मिश्कात की हैं।

तबलीग़ वाले नमाज़ के बाद तस्बीह का हुक्म देते हैं

(١٣٢) عن کعب بن عجرۃ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم

معقبات لا يخيب قائلهن او فاعلهن دبر كل صلوة مكتوبة ثلاث و ثلاثون تسبيحة وثلث و ثلاثون تحميدة واربع و ثلاثون تكبيرة (مسلم بحواله مشكوة شريف)

हज़रत कअब बिन उजरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद पढ़ने के चन्द कलिमात हैं जिनका कहने वाला, या फ़रमाया कि करने वाला (हुसूले सवाब से) महरूम नहीं रह सकता। (और वह कलिमात यह हैं) सुब्हानल्लाह तैंतीस मरतबा, अलहम्दुलिल्लाह तैंतीस मरतबा, और अल्लाहु अकबर, चौंतीस मरतबा।

और यही तबलीग़ वाले भी फ़रमाते हैं मगर उन पर फ़ुज़ूल का ऐतिराज़ होता है कि हुज़ूर अकरम स० की तरफ़ ग़लत हदीसें मन्सूब करते हैं बेचारे आम लोग भोले होते हैं चूंकि क़ब्र वाले पीर साहब कहते हैं कि तबलीग़ वाले झूठी हदीसें बयान करते हैं। अवाम पीर साहब की बातों पर यक़ीन करके तबलीग़ियों से कहते हैं कि भाई तुम ग़लत हदीस बयान करते हो। मगर तबलीग़ वाले सीधा सादा जवाब देते हैं कि भाई हमने अंबिया के वारिसों से ऐसा ही सुना है इस पर वह जाहिल समझता है कि इनके पास कोई हदीस नहीं। यह लोग तो बस उलमा पर ही छोड़ देते हैं हालांकि यह समझना ग़लत है और तबलीग़ वाले अलहम्दुलिल्लाह सही हदीस ही बयान करते हैं जैसा कि आप के हाथ में जो किताब है अल्लाह तआला को हाज़िर व नाज़िर जान कर फ़ैसला करो क्या यह झूठी अहादीस हैं?

और एक ऐतिराज़ यह होता है कि तबलीग़ वाले सिर्फ़ अस्र और फ़ज्र को क्यों खास करते हैं क्या हदीस में हुक्म ऐसा ही आया है कि सिर्फ़ अस्र में और फ़ज्र में ही पढ़ो बल्कि हदीस में

तमाम नमाज़ों में पढ़ने का हुक्म है। जवाब एक ही हदीस नही है बल्कि दूसरी अहादीस में अस्र और फ़ज्र की तख़्सीस वारिद है अगर देखना चाहो तो पेश है।

इख़्तिसास की दलील

(۱۴۳) عن انس رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لِاَنْ اَقْعُدَ مع قومٍ يَذْكرون الله من صلوة الغداة حتى تطلعَ الشَّمْسُ اَحَبُّ اِلَىَّ اَنْ اُعْتِقَ اربعةً مِن وُلْدِ اسماعيل عليه السلام ولِاَنْ اَقْعُدَ مع قومٍ يَذْكرون الله من صلوة العصر الى اَنْ تَغْرُبَ الشَّمْسُ اَحَبُّ اِلَىَّ من اَنْ اُعْتِقَ اَرْبَعَةً. (مشكوة، ابوداؤد شريف)

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया उस जमाअत के साथ मेरा बैठना जो नमाज़ फ़ज्र से तुलूअ़े आफ़ताब तक अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में मश्ग़ूल हो मेरे नज़दीक हज़रत इस्माईल अलै० की औलाद में से चार गुलाम आज़ाद करने से बेहतर है और अ़स्र की नमाज़ के बाद गुरूब तक अल्लाह तआ़ला की याद में रहे ऐसे लोगों में मेरा बैठना जो अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में मश्ग़ूल हों मेरे नज़दीक उससे बेहतर है कि चार ग़ुलाम आज़ाद करूं।

देखो, इस हदीस से मालूम हुआ कि अ़स्र और फ़ज्र में ज़िक्र की पाबन्दी हुज़ूर अकरम स० को मेहबूब है और अगर कोई तमाम नमाज़ों के बाद ज़िक्र करे तो वह बहुत उ़म्दा अ़मल है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि ईदुलफ़ित्र से पहले खजूर खाना सुन्नत है

(۱۴۴) وعن انس رضى الله عنه قال كانَ رسول الله صلى الله عليه وسلم لا يَغْدُو يومَ الفطر حتّٰى يَاْكُلَ تمراتٍ ويَاْكُلُهُنَّ وترًا. (بخارى شريف)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० खजूरें

तनावुल फ़रमाये बग़ैर ईदगाह तशरीफ़ नहीं ले जाते थे और खजूरें ताक़ खाते थे।

इस हदीस ने बताया कि तबलीग़ वालों का क़ौल सही है कि हुज़ूर अकरम स० एक या तीन या पांच खजूरें खाकर ईदगाह तशरीफ़ ले जाते थे लेकिन मस्अले को और वाज़ेह कर दूं कि ईदुलफ़ित्र में पहले खाना सुन्नत है और बक़्रईद में बाद में खाना सुन्नत है, इसकी भी हदीस पेश करना मुनासिब है देखिये:

(١٤٥) عن بريدة رضى الله عنه قال كان النبى صلى الله عليه وسلم لايخرج يوم الفطر حتّٰى يطعم ولا يطعم يوم الاَضحٰى حَتّٰى تُصَلِّىَ. (ترمذى، مشكوٰة شريف)

हज़रत बुरैदह रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी करीम स० ईद के दिन बग़ैर कुछ खाये पिये ईदगाह तशरीफ़ नहीं ले जाते थे और बक़्रईद के दिन बग़ैर नमाज़ पढ़े कुछ नहीं खाते पीते थे।

अब हदीस से मस्अला वाज़ेह हो गया आप भी अ़मल करो और तबलीग़ वालों को भी अ़मल करने दो। वरना राहे हक़ वालों को छेड़ना लाज़िम आयेगा, मगर जिसके दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा न हो तो उससे क्या कहा जाये।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि ईद सिर्फ़ दो हैं

(١٤٦) عن انس رضى الله عنه قال قدم النبى صلى الله عليه وسلم المدينةَ ولهم يومان يلعبون فيهما فقال ما هذان اليومان قالوا كنانعلب فيهما فى الجاهلية فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم قد ابدلكم اللهُ بهما خيراً منهما يوم الاَضحٰى ويوم الفطر. (ابوداؤد، مشكوٰة)

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी करीम स० जब मदीना मुनव्वरह तशरीफ़ लाये तो अहले मदीना ने दो दिन मुक़र्रर कर रखे थे जिन में वह खेल कूद करते थे आप ने पूछा कि यह

दोनों दिन कैसे हैं? सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ किया कि इन दोनों दिनों में हम ज़माना जाहिलियत में खेला कूदा करते थे। आंहज़रत स० ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिये दोनों के बदले इनसे बेहतर दो दिन मुक़र्रर कर दिये हैं और वह ईदुलअज़हा और ईदुलफ़ित्र हैं।

तबलीग़ वाले भी यही कहते हैं कि जो यह हदीस कह रही है कि ईद सिर्फ़ दो हैं। बक़्रईद और ईदुलफ़ित्र। इनके अ़लावा ईद न हुज़ूर अकरम स० से साबित है और न असहाबे रसूल से और न ताबईन से और न किसी इमाम ने इसकी इजाज़त दी मगर बअ़ज़ बातिल उ़लमा ने पता नहीं कहां कहां से वाक़िआ़त ला कर ईदों में इज़ाफ़ा कर दिया। जैसे कि कूंडे की ईद इसको किसी सहाबी ने नहीं किया और न ताबईन और न वलियों ने किया। और ईद मीलादुन्नबी, यह भी किसी ने नहीं किया न हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने किया और न हज़रत उ़मर रज़ि० ने और न हज़रत उ़स्मान रज़ि० और न हज़रत अ़ली रज़ि० और न हज़रत इमाम अअ़ज़म अबू हनीफ़ा रह० और न इमाम शाफ़ई रह० ने और न इमाम मालिक रह० ने और न इमाम अहमद बिन हंबल रह० ने और आज भी अ़रब में यह बिदअ़त नहीं है। अगर मुहब्बत की बात है तो सुनो सहाबा रज़ि० से ज़्यादा हुज़ूर स० से किसी को पूरी दुनिया में मुहब्बत नहीं हो सकती। क्या आपकी मुहब्बत हज़रत अबूबक्र रज़ि० से बढ़ गयी, क्या आपकी मुहब्बत उ़मर फ़ारूक़ रज़ि० से बढ़ गयी? क्या आपकी मुहब्बत हज़रत उ़स्मान ग़नी रज़ि० से बढ़ गयी? क्या आपकी मुहब्बत हज़रत अ़ली रज़ि० से बढ़ गयी? ख़ुदा की क़सम! पूरे क़ब्र के पुजारियों की मुहब्बत एक तरफ़ और ख़ुलफ़ा–ए–राशिदीन की मुहब्बत एक तरफ़ उनकी मुहब्बत का तुम ज़र्रा भी अदा नहीं कर सकते। लेकिन यह

सिर्फ मुहब्बते रसूल के नाम पर उम्मत को गुमराह कर रहे हैं अगर बारह रबीउलअव्वल के दिन आप पैदा हुए तो बेशक यह ख़ुशी की बात है लेकिन वह दिन कितना तकलीफ़देह है हमारे लिये और पूरी उम्मते मुहम्मदिया के लिये जिस दिन आप स० हम से जुदा हुए। बताओ क्या तुम हुज़ूर स० की वफ़ात पर भी ख़ुशियां मनाते हो क्योंकि यह दिन सिर्फ़ ख़ुशी का नहीं बल्कि संगीन ग़म का भी है और अब इस मस्अले में तरद्दुद हो रहा है कि ख़ुशियां मनायें या ग़म करें। जवाब साफ़ वाज़ेह हो गया कि जब किसी मस्अले में तरद्दुद हो तो उसको छोड़ देना चाहिये और वह तरीक़ा इख़्तियार करना चाहिये जो ख़ुलफ़ा–ए–राशिदीन ने किया और अगर ख़ुलफा–ए–राशिदीन से ज़्यादा किसी को मुहब्बत होगी तो फिर मेहबूब को चाहिये कि हलवे और लड्डू खाता न घूमे बल्कि एक जगह जाकर हुज़ूर अकरम स० के लिये दुरूद पढ़े। यह असल ईद है जिसमें न तरद्दुद है और न कोई इख़्तिलाफ़ है। जहां पर दुरूद शरीफ़ पढ़ना हो वहां पर तो नहीं पढ़ते हैं और बाक़ी औक़ात में ख़ूब ग़ैर शरई तरीक़े पर पूरी मस्जिद में शोर करते हो आप हज़रात उ़मर रज़ि० के दौर में होते तो मज़ा आता कोड़े से मार मार कर मुहब्बत करना सिखा देते फिर या रसूलुल्लाह भी याद न रहता। ईदे मीलाद तो करते ही हैं और पता नहीं कौन कौन से यहूद व नसारा के तरीक़े इस्लाम में दाख़िल कर देंगे अल्लाह तआ़ला इन मीलाद वालों को और तमाम मुसलमानों को सही हिदायत नसीब फ़रमायें और इस्तिक़ामत नसीब फ़रमायें। आमीन। बहरहाल कलाम का यह ख़ुलासा निकला कि तबलीग़ वालों का क़ौल बिल्कुल हदीस से साबित है और हक़ है कि ईद सिर्फ़ दो हैं, एक ईदुलफ़ित्र और दूसरी ईदुलअज़हा और इसके अ़लावा तमाम ईदें बिदअ़त हैं।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि इमाम से पहले सर न उठाओ

(۱۴۷) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم أما يخشى الذى يرفع راسه قبل الامام ان يحول الله راسه راس حمار. (بخاری ومسلم)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया जो शख़्स अपना सर इमाम से पहले उठाता है क्या वह इस बात से नहीं डरता कि अल्लाह तआला उसका सर गधे के सर से बदल दे।

तबलीग़ वाले यह जुमला ही बयान करते हैं मगर लोगों को ऐसी बातों पर यक़ीन नहीं आता और वह कहते फिरते हैं कि तबलीग़ वाले झूठी अहादीस बयान करते हैं हालांकि यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम की है लेकिन जो गुमराह ही होना चाहे उसको कौन मना करे कि वह मानने और समझने का नाम नहीं लेते हैं और तबलीग़ वालों पर बोहतान तराशी करते हैं तबलीग़ वालो! मैं कहता हूँ ﴿لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا﴾ होने दो ऐतिराज़ात, अल्लाह जवाब देगा या दिलवायेगा।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि सफ़र से जब घर आओ तो पहले मस्जिद में दो रकअ़त नमाज़ पढ़ो

(۱۴۸) عن كعب بن مالك رضى الله عنه كان النبى صلى الله عليه وسلم لا يقدم من سفرِ الانهاراً فى الضحى فاذا قدم بدا بالمسجد فَصَلّٰى فيه ركعتين ثُمّ جلس فيه. (مشکوٰۃ شریف)

हज़रत कअ़ब बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० का मअ़मूल था कि जब भी सफ़र से वापस आते तो दिन में चाश्त के वक़्त आते और आते ही पहले मस्जिद में जाते और वहां

दो रकअते पढ़ते फिर कुछ देर मस्जिद में बैठते।

यही कौल तबलीग वालों का है कि जब सफ़र से आओ पहले मस्जिद में जाकर दो रकअत नमाज पढ़ो फिर घर जाओ क्योंकि यह हुज़ूर स० का तरीका था इसमें यह मस्लेहत है कि घर वालों को आप के आने का पता चल जाये और वह अपने आप को दुरुस्त करलें ताकि सफर से आने वाले शख़्स को कोई नागवार चीज़ देखकर नाराज़गी न हो जाये और वह खुश होने के बजाये नाराज़ न हो जाये और पूरा मज़ा किरकिरा होकर रह जाये इसलिये यह तरीका बहुत मुफ़ीद भी है और सुन्नत मुहम्मद स० भी है और घर वालों के लिये भी बहुत मुफीद है।

रात में तहज्जुद से या दीगर मअ़मूलात से सो जाओ तो उनको दिन में पूरा कर लो

(١٣٩) عن عمر رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم مَن نام عن حزبه اَوْ عَن شى مِّنْهُ فقرا فيما بين صلاة الفجر وصلاة الظهر كُتِبَ لَهُ كانّما قَرَاَه من الليل . (مسلم، مشكوة شريف)

हज़रत उ़मर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया (जो शख़्स रात में) अपना पूरा वज़ीफ़ा पढ़े बग़ैर सोया रहा या वज़ीफ़े का कुछ हिस्सा पढ़ने से रह गया और फिर उसने उसको नमाज़े फ़ज्र और नमाज़े ज़ोहर के दरमियान पढ़ लिया तो उसके लिये यही लिखा जायेगा कि गोया उसने रात ही को पढ़ा है।

हमेशगी वाला अ़मल मेहबूब है

(١٥٠) عن عائشة رضى الله عنها قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اَحَبُّ الاعمال الى اللهِ اَدْوَمُهَا وَاِنْ قَلَّ (بخارى، مسلم، مشكوة شريف)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया (बन्दों के नेक अअ़माल में) ख़ुदा के नज़दीक सबसे

मेहबूब वह अ़मल है जो हमेशा किया जाये अगरचे वह थोड़ा हो।

मुराद यह है कि जिस अ़मले ख़ैर का भी इरादा करो उसमें हमेशगी को थाम लो यह नहीं कि आज कर लिया और कल छोड़ दिया, यह तरीक़ा ज़्यादा पसन्दीदा नही है बल्कि हमेशगी, पसन्द है। क्योंकि इससे समरा हासिल हो जाता है और ग़ैरे मुदावमत से काम अधूरा ही रह जाता है और अधूरा काम बे-फ़ाइदा है और अल्लाह तआ़ला को बे-फ़ाइदा चीज़ पसन्द नहीं।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि अहम बात को तीन मरतबा कहना सुन्नत है

(۱۵۱) عن انس رضی اللہ عنہ قال کان النبی صلی اللہ علیہ وسلم اذا تکلّم بکلمۃ اعادھا ثلاثا حتّی تفھم عنہ واذا اتی علی قوم فسلّم علیھم سلّم علیھم ثلاثا (بخاری، مشکوۃ شریف)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर स० (की सुन्नत अहम बात बयान करने में यह थी कि) जब आप कोई बात फ़रमाते तो उसको लौटा लौटा कर तीन बार फ़रमाते और उसका नतीजा यह होता था कि आपकी उस बात को लोग ख़ूब समझ लेते थे और आप जब लोगों के पास आते और उनको सलाम करना चाहते तो उनको तीन बार सलाम करते।

इससे यह बात भी साबित हुई कि अहम बातों को तीन मरतबा कहना सुन्नत है ताकि वह बात मुख़ातब को अच्छी तरह याद रहे और वह अच्छी तरह समझ ले और सलाम करना तीन मरतबा यह भी सुन्नत है जैसा कि हदीस से खुद वाज़ेह हो रहा है (जबकि सलाम करने पर कोई जवाब न आये) तबलीग़ वाले इस हदीस को ही बयान करते हैं कोई मनघड़त बात नहीं है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि दुआ भी इबादत है।

(١٥٢) عن نعمان بن بشير رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم الدُّعاءُ هو العبادةُ ثم قرأ وقال رَبُّكُمْ اُدْعُونِي اَسْتَجِبْ لَكُمْ
(ابوداؤد، ترمذی، مشکوۃ شریف)

हज़रत नोअमान बिन बशीर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया दुआ भी इबादत है और तुम्हारे रब ने कहा है कि मुझसे दुआ मांगो मैं तुम्हारी दुआ कुबूल करूंगा।

गोया आप स० ने बतौरे अहमियत फ़रमाया कि दुआ इबादत है क्योंकि दुआ वह इबादत है जिसमें बन्दा हक़ तआला की तरफ़ मुतवज्जेह होता है। अल्लाह तआला की ज़ात के अलावा हर एक ज़ात से इस्तिग़्ना बरतता है वरना तो असल यह है कि दुआ भी एक इबादत है (लेकिन बरेलवियों के अलावा, क्योंकि वह ख़्वाजा साहब को बीच में दाख़िल करते हैं पता नहीं उनके अअ़माल इतने क्यों ख़राब हो गये हैं कि अल्लाह तआला को मुंह दिखाने के काबिल नहीं। इसलिये उनको सिफ़ारिश करने वालों की ज़रूरत पड़ती है हालांकि अल्लाह तआला ने हर वक़्त रहमत के दरवाज़े खोल रखे हैं मगर अल्लाह तआला जिसको चाहता है अपने दर से लात मारकर मख़लूक़ व बेबस का मोहताज कर देता है उन्हीं में से हैं यह लोग) ख़ैर दुआ के लिये इबादत का लफ़्ज़ लाकर हुज़ूर स० ने बता दिया कि जिस तरह इबादत ग़ैरुल्लाह के लिये जाइज़ नहीं ऐसे ही ग़ैरुल्लाह से दुआ मांगना भी हराम है क्योंकि हमको अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि–

﴿ اُدْعُونِي اَسْتَجِبْ لَكُمْ ﴾ दुआ करो मुझसे ही मैं कुबूल करूंगा यह अफ़रादे मख़लूक़ (मुराद औलिया अल्लाह) बेशक इज़्ज़त के

क़ाबिल हैं मगर फिर भी वह मुतमइन नहीं हैं अल्लाह के अज़ाब से जैसा कि हदीस में है और मैं उसको उसके वक़्त पर पेश भी करूंगा कि क़ियामत में हर नबी 'नफ़्सी' 'नफ़्सी' करेगा तो बताओ ख़्वाजा साहब क्या नबियों से भी अफ़ज़ल हैं हम तबलीग़ वाले नेक आदमी की इज़्ज़त करते हैं उनके मज़ार पर भी चले जाते हैं मगर वहां जाकर भीक मांगना हमको अल्लाह ने और रसूलुल्लाह स० ने नहीं सिखाया अगर सिखाया हो तो लाओ हमारी तरह साफ़ आयते कुरआनी या हदीस। ता क़ियामत तुम न ला सकोगे इन्शाल्लाह। ख़ैर असल मक़सद यह बात साबित करना है कि तबलीग़ वाले दुआ को भी इबादत कहते हैं मगर जान कर जाहिल बनने वाले इसको झूठी हदीस कहकर लोगों को बदज़न करने की कोशिश करते हैं बताओ क्या आपको यह पता नहीं है कि उस शख़्स के लिये वईद क्या है जो हदीसे सही को भी झूठी हदीस कहे, उसका भी वही गुनाह है जो झूठी हदीस वज़अ़ करने वालों का है क्योंकि यह भी हुज़ूर स० पर जान कर झूठ बोलना है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि दुआ़ से तक़दीर बदल जाती है

(١٥٣) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من كذب عليّ متعمداً فقد كفر

(١٥٤) عن سلمان الفارسي رضي الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا يَرُدُّ القضاءَ إلّا الدعاءُ ولا يزيدُ في العُمرِ إلّا البِر. (ترمذی)

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया तक़दीर को दुआ़ के अ़लावा और कोई चीज़ नहीं बदलती और उ़म्र को नेकी के अ़लावा और कोई चीज़ नहीं बढ़ाती।

देखो दोस्तो! यह भी बहुत बड़ा ऐतिराज़ था कि तबलीग़ वाले कहते हैं कि दुआ तक़दीर को बदलती है लेकिन बअ़ज़ उलमा–ए–बातिल ने लोगों के सामने यह तक़रीर की कि देखो इन तबलीग़ वालों को यह तक़दीर को दुआ के ज़रिये बदलने का दावा करते हैं हालांकि तक़दीर जो खुदा के हुक्म से लिखी गयी है वह कभी बदल नहीं सकती और यह तबलीग़ वाले झूठी हदीस पेश करके तबलीग़ में ले जाते हैं देखो इन अहमक़ों को हुज़ूर स० के क़ौल की भी क़द्र न की। इन मुतअ़स्सिब उलमा को मालूम होना चाहिये कि यह हदीस मिश्कात में है और तिर्मिज़ी में है और सही हदीस है मगर इन झूठे आशिक़ों की हिम्मत देखो पहले तो तबलीग़ वालों को झूठा बताया और अब हुज़ूर स० पर भी तक़रीर करनी शुरू कर दी, कि देखो लोगो! कहीं दुआ भी तक़दीर बदल सकती है? मगर यह तबलीग़ वाले कहते हैं कि दुआ तक़दीर बदल सकती है। देखो इन मुतअ़स्सिबों ने तबलीग़ वालों पर ऐतिराज़ नहीं किया बल्कि मुहम्मद स० के क़ौल पर नापाक जसारत की है। और फिर भी कहते हैं कि हम आशिक़े रसूल हैं आप तो झूठे आशिक़ के क़ाबिल भी नहीं हो। याद रखो कि तबलीग़ वालों का एक एक क़ौल व फ़ेअ़ल हदीस से साबित है ख़ैर मालूम हुआ कि दुआ से तक़दीर बदल सकती है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि अगर बन्दा दुआ न करे तो अल्लाह तआ़ला नाराज़ होता है

(۱۵۵) عن ابی هريرة رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من لم يسال الله يغضب عليه (ترمذی، مشکوۃ شریف)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से नहीं मांगता अल्लाह

तआ़ला उससे नाराज़ होता है (क्योंकि तर्के दुआ़ अल्लाह तआ़ला से तकब्बुर और इस्तिग़ना की अ़लामत है)।

तबलीग़ वालों का यह क़ौल भी हदीस की अ़दालत में क़ाबिले तकरीम है और बताओ जब बन्दा अल्लाह तआ़ला से न मांगे तो अल्लाह तआ़ला कितना नाराज़ हो जाता है और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के अ़लावा किसी दूसरे से दुआ़ करे तो बताओ फिर उसकी क्या ख़ैर बाक़ी है।

बस मरने का इन्तज़ार है और फ़रिश्ते हाथों में लोहे के हथोड़ों को थामे हुए हैं कि कब इस बदबख़्त को मौत आये और हम इसकी ठुकाई करें। अल्लाह तआ़ला इस ख़बीस अ़क़ीदे से हम सबको बचायें।

तबलीग़ वाले यह बयान करते हैं कि दुआ़ आफ़ात को ले जाती है

(١٥٢) عن ابن عمر رضى الله عنهما قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم إنّ الدعاء ينفع مِمّا نزل وممّا لم ينزِل فعليكم عباد الله بالدُعاءِ

(ترمذی، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत इब्ने उ़मर रज़ि० बयान फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया बिलाशुबह दुआ़ उस चीज़ के लिये भी नाफ़ेअ़ है जो पेश आ चुकी है और उस चीज़ के लिये भी नाफ़ेअ़ है जो पेश नहीं आयी है लिहाज़ा ऐ अल्लाह के बन्दो! दुआ़ को अपने लिये ज़रूरी समझो।

जब दुआ़ तक़दीर को बदल सकती है तो आफ़त व बला को क्योंकर दफ़अ़ न करे क्योंकि दुआ़ का पूरा करने वाला हर चीज़ पर क़ादिर है।

तबलीग़ वाले बयान करते हैं कि दुआ़ इबादत का मग़्ज़ है

(١٥٧) عن انس رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم الدُّعَاءُ مُخُّ العِبادة ۔ (مشکوٰۃ،ترمذی شریف)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूरे अकरम स० ने फरमाया दुआ़ इबादत का लुब्बे लुबाब है।

यानी गोया यह एक क़िस्म की उजरत है जैसे कि जब कोई मजदूर काम करता है तो उसको उसकी मेहनत का बदला दिया जाता है ऐसे ही दुआ़ है कि नमाज़ रोज़े रखने के बाद अल्लाह से मांगता है तो गोया कि बन्दा खुदा से उजरत तलब कर रहा है इसलिये इसको इबादत का खुलासा यानी मग़्ज़ कहा।

तबलीग़ वालों का दुआ़ में हाथ उठाना और फिर उसको मुंह पर फेरना सुन्नत है

(١٥٨) عن عمر رضی اللہ عنہ قال کان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اذا رفع یدیہ فی الدُّعاء لم یحطّهما حتی یمسح بهما وجهه (ترمذی،مشکوٰۃ)

हज़रत उ़मर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूरे अकरम स० जब दुआ़ में अपने दोनों हाथों को उठाते तो उन्हें उस वक़्त तक न रखते जब तक कि अपने मुंह पर न फेर लेते।

किसी शख़्स का सवाल मालूम हुआ, वह कहता है, यह कहां पर लिखा है कि दुआ़ के बाद मुंह पर हाथ फेरे हज़रत को अगर हदीस की तलाश हो तो देख लेना, अलहम्दुलिल्लाह यह फ़ेअ़ल भी बग़ैर हदीस के नहीं है और हाथ का उठाना भी हदीस से साबित है बअ़ज़ हज़रात सिर्फ़ हाथ उठाते हैं मगर मुंह पर हाथ नहीं फेरते, यह फ़ेअ़ल खिलाफ़े सुन्नत है अगरचे हराम नहीं लेकिन मेहबूब का कोई फ़ेअ़ल भी आशिक़ के पास बे–अहमियत

नहीं होता है इसलिये उन लोगों को जो मुंह पर हाथ नहीं फेरते हैं अपने मुंह पर सुन्नत समझ कर हाथ फेर लेना चाहिये।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि दुआ में सीने तक हाथ उठाना सुन्नत है

(۱۵۹) عن ابن عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ انہ یقول إنّ رفعَکُمْ ایدیکم بدعۃ ما زاد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم علی ھذا یعنی الی الصدر (مشکوٰۃ شریف)

हज़रत इब्ने उ़मर बिन ख़ताब रज़ि० के बारे में मरवी है कि वह कहा करते थे कि तुम्हारा अपने हाथों का (ज़्यादा) उठाना बिदअ़त है। आंहज़रत स० अकसर इससे ज़्यादा यानी सीने से ज़्यादा ऊपर नहीं उठाते थे।

यह बात साबित हो गई कि हाथों का सीने तक उठाना सुन्नत है अब रहा मसअला इससे ज़्यादा का तो इसके बारे में इब्ने उ़मर ने बिदअ़त कहा। इसलिये कि अकसर हुज़ूर स० अपने हाथों को सीने तक ही उठाते थे। कभी कभी हाथ ऊपर भी उठ जाये तो कोई हरज नहीं जैसे कि हालात के बदलने से होता है कभी आदमी रोता है तो खुद बखुद हाथ मुंह को लग जाते हैं और आ़म वक़्त में आदमी को इस कौल पर अ़मल करना होगा जो नक़ल किया गया। बिदअ़त कहने की वजह उ़लमा ने यह लिखी है कि इब्ने उ़मर ने अकसर लोगों को ऊपर हाथ उठाते हुए देखा आ़म हालतों में भी, तब यह हुक्म लगाया वरना जब बन्दा रोता है तो आंसू पोंछने के लिये और दीगर ज़रूरत के लिये हाथ उठाता है वह इस हुक्म में दाख़िल नहीं है क्योंकि आ़म हालात में ऐसा करना सही नहीं है ख़ास वक़्त में यह हुकम है कि मुंह तक उठा सकता है और यह जाइज़ है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि अगर चप्पल का तस्मा भी टूटे तो अल्लाह से मांगो

(١٦٠) عن انس رضی الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يسال احدكم ربه حاجته كلها حتى يساله شسع نعله اذا انقطع

(ترمذی، مشکوۃ شریف)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फरमाया तुम में से हर शख़्स को चाहिये कि वह अपनी तमाम हाजतें अपने परवरदिगार से मांगे यहां तक कि अगर उसके जूते का तस्मा भी टूट जाये तो उसे भी ख़ुदा से मांगे।

तबलीग़ वालों का यह कहना है कि चप्पल भी टूट जाये तो इसे अल्लाह से मांगो किसी ग़ैरुल्लाह से मत मांगो। लेकिन बअ़ज़ लोग इस हदीस के बिल्कुल बरख़िलाफ़ अ़मल करते हैं और वह लोग झुठ दावा करते फिरते हैं कि हम अ़शिके हबीब स० हैं अअ़माल तो शैतान से भी बदतर हैं कि ग़ैरुललाह को सजदा करते हैं और ग़ैरुल्लाह से मांगते हैं बताओ क्या यह अ़मल करना दुरुस्त है कि पहले ख़्वाजा के या किसी के मज़ार पर जाकर उनसे मुराद तलब करना फिर अगर ऐतिराज़ हो तो यह कहना कि हम तो मज़ार वालों से दरख़्वास्त करते हैं। ख़ुदा गवाह है मैंने रोते हुए देखा है, बताओ क्या इसका नाम दरख़्वास्त है? अगर इसका नाम ही दारख़्वास्त है तो सुनो! मैं कुरआन और हदीस की रोशनी में कहता हूं कि ऐसी दरख़्वास्त भी दुरुस्त नहीं है जो उनके पास रो--रो कर की जाये अरे मुझको बताओ आप खड़े हैं और आपका बच्चा आप के किसी दोस्त से कहे कि चचा जान मेरे वालिद से कह दो कि वह मुझको दस रुपये दे दें अब आपका दोस्त आप से दरख़्वास्त करे कि भाई तुम्हारा बच्चा

मुझको शिकायत कर रहा था कि वालिद से दस रुपये दिलवा दो क्या बात है तुम अपने बच्चे का ख़्याल नहीं रखते हो उसको शिकायत करने का मौक़ा मत दो और उसके मांगने से उसको दे दिया करो अब बताओ क्या वह बाप अब उसको दस रुपये देगा या पिटाई करेगा कि मुझसे कहने में तुझको क्या हुआ तूने मेरी इज़्ज़त तमाम दोस्तों में ख़राब कर दी। मेरे दोस्त मुझको शिकायत कर रहे थे कि तुम अपने बच्चे का ख़्याल क्यों नहीं रखते हो। बता, मैंने तुझको क्या कमी की है कपड़े दिये, घड़ी दी, खाना दिया फिर तू मेरी शिकायत करता है मुझसे मांग तुझको क्या चाहिये मैंने तुझको पहले ही कहा था कि जो तुझको चाहिये मुझसे कह दे। मैं तुझको आज नहीं कल दूंगा लेकिन तूने सब कुछ देने के बावुजूद मुझको बदनाम कर दिया। देखो हज़रात! अगर एक बच्चा अपने बाप की ख़िदमत में सिफ़ारिश की दरख़्वास्त किसी दूसरे से कराता है तो वालिदे मोहतरम कितने नाराज़ हो जाते हैं क्या ख़ुदा हमसे भी बेग़ैरत है जो हम उसके दोस्तों से दरख़्वास्त कराने जायें। जब उसने हुक्म दिया कि हर चीज़ मुझसे मांगो क्योंकि मैं ही तुम्हारा रब हूं चाहे तुम गुनाहगार हो मैं भी तो रहीम हूं बताओ क्या बरेलवी हज़रात का यह अमल दुरुस्त है?

तबलीग़ वाले कहते हैं कि दुआ को अल्लाह तआला तीन तरह से क़ुबूल करता है

(۲٦۱) عن ابی سعید الخدری رضی اللہ عنہ اَنَّ النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال ما من مسلم یدعوا بدَعْوَۃٍ لیس فیھا اثمٌ ولا قطعیۃُ رَحْمٍ الاّ اَعطاہ اللّٰہُ بھا اِحدی ثلاثٍ اِمّا اَنْ یعجّل لہٗ دَعْوَتَہٗ وَ اِمّا اَنْ یُدخِرَھا لہٗ فی الآ خرۃِ وَاِمّا اَنْ یَصْرِف عنہ من السُّوءِ مثلَھا قالوا اِذًا نکثر قال اللّٰہ اکثر

(مشکوۃ شریف)

हजरत अबू सईद खुदरी रजि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फरमाया जो भी मुसलमान कोई दुआ मांगता है ऐसी दुआ कि उसमे न तो गुनाह की चीज़ की तलब हो और न रिश्ता तोड़ने की, तो अल्लाह तआला उसे इस दुआ के नतीजे में तीन चीज़ों में से एक चीज़ जरूर देता है या तो यह कि जल्द ही उसका मतलूब अता फ़रमा दे या यह कि उसके लिये इस दुआ को ज़खीरा–ए–आखरत बना दे (कि दुनिया मे इसका मतलूब हासिल न होने की सूरत में इसके इवज़ आखरत में अज्र अता करेगा) या यह कि उसे इसकी दुआ के बक़द्र बुराई से बचाये। सहाबा किराम रज़ि० ने यह सुनकर अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! हम तो अब बहुत ज़्यादा दुआ मांगेगे क्योंकि हमें दुआ के बड़े फ़ाइदे मालूम हो गये। आप स० ने फ़रमाया अल्लाह का फ़ज़ल बहुत ज़्यादा है।

यही तबलीग़ वाले बयान करते हैं हदीस कहकर। मगर लोगों को ऐतिराज़ की नापाक बीमारी लगी हुई है वह हर बात पर ऐतिराज़ करते हैं। अगर ऐतिराज़ करना हो तो दारुलउलूम देवबन्द तशरीफ़ लायें और यहां के उलमा से तफ़सील से बात करें। ख़ूब पेट भर के ऐतिराज़ करना। यहां इल्म का समुन्द्र है जितना चाहो पीना। तबलीग़ वालों से क्या ऐतिराज़ करते हो जब वह खुद कहते हैं कि भाई ऐतिराज़ के जवाब हम नहीं देते बल्कि हमारे उलमा देते हैं। ख़ैर इस हदीस से यह बात वाज़ेह हो गई कि इन्सान को दुआ मांगने के बाद फ़ौरन मतलूब को तलब करना नहीं चाहिये क्योंकि अल्लाह तआला हर काम अपनी मसलेहत से करते हैं अगर अंबिया भी मांगते हैं तो कहते हैं कि जो इल्म न हो वह न मांगो जैसे नूह अलै० ने अपने बेटे के लिये

दुआ की थी कि यह मेरे अहल में से है इसको बचा लीजिये। इस पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया जिस चीज़ का इल्म न हो वह चीज़ तलब न करो बल्कि हम वह करेंगे जो मसलेहत के मुवाफ़िक़ होगा फिर वह अल्लाह के हाथ में है कि वह उसका बदला आख़रत में दें या फिर कोई आफ़त आने वाली हो उस दुआ की बरकत से उसे रोक दे। बन्दों को बेज़ार होकर अल्लाह तआला पर तअन करने वाले अलफ़ाज़ इस्तेमाल नहीं करने चाहियें बसाऔक़ात बन्दा तैश में आकर कुफ़्रिया कलिमात कह जाता है जिसकी वजह से वह न दुनिया के काम का रहता है और न आख़रत के काम का। अल्लाह तआला तमाम मुसलमानों की ईमानी, जानी, माली हिफ़ाज़त फ़रमायें। आमीन।

कोई अगर तबलीग़ वालों का काम करे तो वह आम तौर पर जज़ाकल्लाह कहते हैं

(١٣٣)عن أسامة بن زيد قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من صُنِعَ اليه معروف فقال لِفَاعِلِه جزاك الله خيرًا فقد اَبْلَغَ فى الثّناءِ (ترمذى)

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जिस शख़्स के साथ कोई एहसान किया जाये और वह एहसान करने वाले के हक़ में यह दुआ करे जज़ाकल्लाह ख़ैरन (यानी अल्लाह तआला तुझे इसका बेहतरीन बदला अता करे) तो उसने अपने मोहसिन की कामिल तारीफ़ की।

मैंने तबलीग़ वालों से यह सुना था कि वह कहते हैं कि अगर कोई शख़्स जज़ाकल्लाह कहता है तो वह अपने मोहसिन का हक़ अदा करने वाला हो जाता है। चाहे कितना ही बड़ा वह मोहसिन एहसान करे इसका बदला यह कलिमा हो जाता है। इस हदीस को जब देखा तो इसको इस्तिदलाल में लाना बेहतर

समझा और इस हदीस से तबलीग़ वालों के क़ौल की पूरी-पूरी ताईद हो रही है और एक इश्काल ज़हन में आता है वह यह कि एक आदमी ने हम पर पता नहीं कितनी मेहनत से एहसान किया होगा और हम सिर्फ़ जज़ाकल्लाह कहते हैं तो इसका हक़ अदा हो जाता है ऐसा क्या कमाल है इस जुमले में, जब ग़ौर किया जाये तो इश्काल दूर हो जाता है कि आपने जज़ाकल्लाह कह कर यह उसको चैक दिला दिया अल्लाह की बैंक का कि इसका जितना बदला हो ऐ अल्लाह! इसको बदला अ़ता कर दे। ज़ाहिर बात है कि जब यह बात अल्लाह के सपुर्द हो गई तो अल्लाह इसका बेहतरीन बदला अ़ता करेगा।

जो इन्सान का शुक्र अदा न करे वह अल्लाह का भी शुक्र अदा नहीं करता है

(۱۶۳) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله علیه وسلم من لم يَشْكُرِ النَّاسَ لَمْ يَشْكُرِ الله (ترمذی، مشکوۃ شریف)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जो शख़्स लोगों का मश्कूर नहीं होता वह अल्लाह तआ़ला का भी शुक्र अदा नहीं करता।

मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला के शुक्र की अदाएगी की तकमील इस बात पर मुनहसिर है कि इसकी ताबेअ़दारी की जाये इस तरह कि उसने उन इन्सानों का जो कि इस तक अल्लाह तआ़ला की नेमतों के पहुंचने का ज़ाहिरी वास्ता और वसीला बना है, जैसे (दारुलउ़लूम देवबन्द) पूरी दुनिया के लोगों पर देवबन्द के उ़लमा का शुक्रिया अदा करना ज़रूरी है कि यह दीन के पहुंचाने का बहुत बड़ा वसीला है और तमाम तर एहसान में दीन का एहसान करना अअ़ला व अफ़ज़ल है। और दीन का एहसान

जितना देवबन्द के उ़लमा का है पूरे हिन्दुस्तान भर में इतना बड़ा एहसान किसी का नहीं है। फिर दीगर हज़रात का दर्जा बदर्जा शुक्र अदा करना होगा और पूरी दुनिया पर मुहम्मद स० का सबसे बड़ा एहसान है फिर आप स० के सहाबा रज़ि० का पूरी दुनिया पर एहसान है फिर दीगर अइम्मा–ए–किराम का एहसान है। अल्लाह का तो पूछना ही क्या कि अल्लाह के एहसानात शुमार ही नहीं हो सकते। ख़ैर बात यह है कि बन्दों के शुक्र को अदा न करने वाला अल्लाह के शुक्र को भी अदा नहीं कर सकता और इसका मतलब यह भी हो सकता है कि बन्दा एक ज़ाहिरी वसीला है और यह शख़्स ज़ाहिरी वसीले का शुक्रिया अदा नहीं कर रहा है तो वह अल्लाह जो बज़ाहिर छुपा हुआ है और नज़रों से ओझल है उसका क्या एहसान मानेगा। ख़ैर जो भी मतलब निकालो हासिल यही होगा कि इन्सान को इन्सान के एहसान का शुक्रिया अदा करना चाहिये। और अल्लाह तआ़ला का भी शुक्रिया अदा करना चाहिये और अल्लाह का शुक्र तो हर एक पर फ़र्ज़ है ही, उसका तो सवाल ही क्या।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि दुआ़ दूसरों के हक़ में जल्दी कुबूल होती है

(۱۴۴) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا دعا الرجل لا خيه بظهر الغيب قال الملك لك مثل ذالك (مسلم، احياء العلوم)

रसूलुल्लाह स० ने फ़रमाया जब कोई शख़्स अपने भाई के लिये पीठ पीछे दुआ़ मांगता है तो फ़रिश्ता कहता है कि तेरे लिये भी वही है जो तू उसके लिये मांगता है।

और दूसरी रिवायत और लिखता हूं जिसको अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने रिवायत की है।

(١٦٥) عن ابن عمر رضی اللہ عنہ اسرع الدُّعاء اجابۃ دعوۃ غائب لغائب (ابوداؤد، ترمذی)

कि जल्द कुबूल होने के ऐतिबार से वह दुआ है जो ग़ायब शख़्स की दूसरे ग़ायब शख़्स के लिये हो।

मतलब यही है कि एक मोमिन की दुआ दूसरे मोमिन के हक़ में जल्द कुबूल होती है और इसमें आजिज़ी भी है कि मैं भी दुआ कर रहा हूं तुम भी दुआ करना कि अल्लाह तआला आसान करदे। बहरहाल मालूम यह हुआ के तबलीग़ वालों का यह कहना बिल्कुल दुरुस्त है और साबित मिनलहदीस है।

तबलीग़ वाले कहते है कि तमाम इन्सान गुनाहगार हैं उनमें अच्छा वह है जो तौबा करे

(١٦٦) عن انس رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کُلُّ بنی آدم خطّاءٌ وخیرُ الخطائین التوابون. (مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया कि तमाम औलादे आदम यानी इन्सान गुनाहगार हैं और बेहतरीन गुनाहगार वह है जो तौबा करे।

तबलीग़ वालों की बात साबित हो गई कि तमाम बनी नौअ इन्सान गुनाहगार हैं, मगर फ़ज़ीलत उन लोगों को हासिल हो गई जो तौबा करने वाले हैं और अल्लाह को तौबा करने वाले बन्दे बहुत पसन्द हैं इसलिये मैं बरेलवियों से दरख़्वास्त करता हूं कि वह ख़ुदा के वास्ते अब तो तौबा कर लें। जिस तरह हज़रत मौलाना मुफ़्ती ख़लील अहमद साहब जिन्होंने सुन्नी बहिश्ती ज़ेवर लिखा। उन्होंने बरेलवी अक़ाइद से तौबा कर ली है। और फिर एक किताब भी लिखी जिसका नाम इन्किशाफ़े हक़ रखा है। ख़ैर अल्लाह तआला जिसको चाहे हिदायत दे उसकी तरफ़ की बात

है। तबलीग वालों का कौल कि तमाम इन्सान गुनाहगार हैं और बेहतरीन गुनाहगार वह है जो तौबा करे अपने गुनाहों से, यह बात सही है हदीस की रू से।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों से कहता है कि मेरे बन्दे अगर गुनाह करें तो फ़ौरन मत लिखो

(١٧٤) ان الله تعالي يقول للحفظة اذا هَمَّ عبدى بسيئة فلا تكتبوها عليه فان عملها فاكتبوها سيئة واذاهم بحسنة فلم يعملها فاكتبوها حسنة فان عَملها فاكتبوها عشرة . (مسلم، احياء العلوم سوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला मुहाफ़िज़ फ़रिश्तों (यानी किरामन कातिबीन) से फ़रमाते हैं कि जब मेरा बन्दा किसी बुराई का क़स्द करे तो उसे मत लिखो अगर वह उस पर अ़मल करे तो एक बुराई लिखना और अगर किसी नेकी का क़स्द करे और उस पर अ़मल न करे तो एक नेकी लिखो और अगर उस पर अ़मल करे तो दस नेकियां लिखो।

लोग तबलीग़ वालों की इस हदीस के बयान करने में शक मेहसूस करते हैं और कहते हैं कि पता नहीं कहां कहां से नई नई हदीसें लाते हैं और कहते हैं कि हमने उ़लमा से सुना है और दलील तो कुछ भी नहीं उन लोगों के लिये यह किताब मशअ़ल है जो हक़ीक़तन हक़ के मुतलाशी हों उनको हक़ इस किताब के ज़रिये से ज़ाहिर होगा। यह हदीस बुख़ारी और मुस्लिम में मौजूद है मगर लोगों के ज़हन में एक बात बैठ चुकी है कि तबलीग़ वाले ग़लत हदीस बयान करते हैं। हालांकि यह तसव्वुर और यह ख़्याल ग़लत है जैसा कि आप खुद देख रहे हो और दूसरी बात हदीस से यह साबित हुई कि अगर आदमी नेक काम का सिर्फ़

क़स्द भी करता है तो उसको एक नेकी हासिल होती है और अगर उस नेक नीयत पर या क़स्द पर अमल करता है तो उसके लिये दस नेकियां लिखी जाती हैं जैसे कि तबलीग़ वाले तशकील के वक़्त कहते हैं कि नीयत कर लो कम अज़ कम एक नेकी तो मिल ही जायेगी लोग इस क़ौल को भी ग़लत और मनघड़त हदीस ख़्याल करते हैं हालांकि यह बहुत ही सही रिवायत है और बुख़ारी की है मगर जो ग़लत कहता है वह तबलीग़ वालों का कुछ नुक़सान नहीं कर रहा है बल्कि वह हदीसे सही को भी ग़लत हदीस कह रहा है जिसका गुनाह उसको ही उठाना होगा।

तबलीग़ वाले जमाअ़त को रुख़्सत करते वक़्त दुआ़ करते हैं

(١٢٨) عن عبدِ الله الخطميِّ قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا اراد اَنْ يستودع الجيش قال اَستَودِعُ الله دينكم وامانتكم وخواتيم اعمالكم (ابوداؤد، مشكوٰة شريف)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह ख़तमी रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह स० जब लश्कर को रुख़्सत करने का इरादा फ़रमाते तो दुआ़ करते कि मैंने तुम्हारा दीन तुम्हारी अमानत और तुम्हारा आख़री अ़मल अल्लाह को सौंपा।

तबलीग़ वाले भी रुख़्सत के वक़्त दुआ़ करते हैं कि ऐ अल्लाह तआ़ला! जमाअ़त जिस मक़सद के लिये जा रही है उसको कामयाब फ़रमा, जो आफ़ात हों उसको दूर फ़रमा, अपनी रहमत हमारे साथ शामिले हाल फ़रमा वग़ैरा वग़ैरा ज़रूरी चीज़ें तलब करते हैं। और फिर जमाअ़त को रुख़्सत किया जाता है सुन्नत तरीक़े पर। और यह हदीस बता रही है कि लश्कर या दीन की ख़िदमत के लिये जो भी दस्ता रवाना करे उसके लिये दुआ़

करना सुन्नत है और उस पर ही अमल तबलीग़ वालों का है।

तबलीग़ वालों के लिये ख़ास दुआ़ का तोहफ़ा

(۱۶۹) عن خولة بنت حكيم قالت سمعتُ رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول من نزل منزلاً فقال اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ لم يَضُرُّهُ شيئٌ حتى يَرْتَحِلَ من منزله ذالك. (مسلم، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत ख़ौला बिन्त हकीम रज़ि० कहती हैं कि मैंने सुना कि रसूलुल्लाह स० फ़रमाते थे जो शख़्स किसी नई जगह (चाहे सफ़र की हालत में हो या हज़ की हालत में) आये और फिर यह कलिमात कहे तो उसको कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचायेगी यहां तक कि वह उस जगह से कूच करे।

दुआ़ का तरजुमा: पनाह मांगता हूं मैं अल्लाह तआ़ला के कामिल कलिमात (यानी उसके असमा व सिफ़ात या उसकी किताबों) के ज़रिये उस चीज़ की बुराई से, जो पैदा की है।

यह दुआ बहुत अच्छी है। हर एक मुसलमान के लिये ख़ास तौर पर तबलीग़ वालों के लिये। इसलिये कि उनको अकसर जमाअ़त में जाने के लिये सफ़र करना पड़ता है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ इब्ने आदम! तू ज़मीन भर भी गुनाह लायेगा तब भी मैं माफ़ कर दूंगा

(۱۷۰) عن انس رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم قال الله تعالى يا ابن آدم إنّك ما دعوتنى ورجوتنى غفرتُ لك على ما كان فيك ولا اُبالى يا ابن آدم لوبَلَغَتْ ذُنُوْبُكَ عنان السماء ثُمّ

استغفرتنى غفرت لك ولا ابالى يا ابن آدم انك لو لقيتنى بقراب الارض
خطايا ثم لقيتنى لا تشرك بى شيئا لاتيتك بقرابها مغفرة (ترمذی، احمد، مشکوٰۃ)

हजरत अनस रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह स० ने फ़रमाया अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐ इन्सान! जब तक तू मुझसे गुनाहों की माफ़ी मांगता रहेगा और मुझसे उम्मीद रखेगा मैं तुझे बख़्श दूंगा। तूने जो भी बुरा काम किया होगा मुझको उसकी परवाह नहीं होगी (यानी तू चाहे कितना ही बड़ा गुनाहगार हो तुझे बख़्शना मेरे नज़दीक कोई बड़ी बात नहीं है) ऐ इब्ने आदम अगर तेरे गुनाह आसमान की बुलन्दियों तक भी पहुंच जायें और तू मुझसे बख़्शिश चाहे तो मैं तुझको बख़्श दूंगा और मुझको उसकी परवाह नहीं होगी ऐ इब्ने आदम! अगर तू मुझसे इस हाल में मिले कि तेरे साथ गुनाहों से भरी हुई ज़मीन हो तो मैं तेरे पास बख़्शिश व मग़्फ़िरत से भरी हुई ज़मीन लेकर आउंगा बशर्तेकि तू ने मेरे साथ किसी को शरीक न किया हो।

हासिल यह निकला कि तबलीग़ वालों का इस को हदीस कहना सही है। इसलिये कि यह हदीस ही है। लेकिन बहुत से ऐतिराज़ करने वाले जो नीम आलिम होते हैं लोगों को अपनी तरफ़ माइल करने के लिये यह कहते हैं कि यह हदीस जो बयान की जा रही है हमने कहीं नहीं देखी। यह लोगों को ग़लत बात बताकर गुमराह करते हैं। इन मोअतरिज़ीन को यह हदीस देखकर इन कलिमाते ख़बीसा से तौबा करनी ज़रूरी है जो उन्होंने इस हदीस पर तोहमत लगाई थी कि यह क़ौले रसूल नहीं हालांकि यह क़ौले रसूल है गोया कि मोअतरिज़ ने तबलीग़ वालों के साथ हुज़ूर स० के क़ौल को भी झुठला दिया। फिर मुनाफ़िक़ की तरह कहते हैं कि हम आशिक़े रसूल हैं हम आशिक़े ख़ुदा हैं और हदीस के आख़िर में जो यह बात कही गई है कि अल्लाह तआला

शिर्क को माफ़ नहीं करेंगे यह गुनाह इस ऐतिबार से सख़्त है कि पहले तो बन्दा अल्लाह की नेमतों का हक़ अदा नहीं कर सकता और फिर मज़ीद अगर यह जुर्म करे कि जो पेशानी इन्सान की इम्तियाज़ी शान है और जो दिल तमाम जिस्म का सरदार है उसके ज़रिये अल्लाह के अलावा को इख़्तियार किया जाये तो ज़ाहिर बात है कि इस बेवफ़ा से कोई वफ़ा की उम्मीद ही नहीं फिर इसको मज़ीद इनआ़म अता करने की क्या ज़रूरत है और दूसरी यह बात भी है कि यह अल्लाह का फ़ैसला है कि मैं तमाम गुनाहों को माफ़ करूंगा मगर शिर्क को माफ़ नहीं करूंगा इसलिये कि यह ग़ैरत के ख़िलाफ़ है और अल्लाह ग़ैरतमन्द है।

सफ़र में तबलीग़ वालों का अ़मल

(۱۷۱) عن علي رضی الله عنه اُتِیَ بدابَّةٍ لِیَرکبَهَا فلما وضع رِجْلَهٗ فی الرکاب قال بسم الله فَلَمَّا استوی علی ظَهْرِهَا قال الحمد لله ثُمَّ قال سبحان الذی سَخَّرَلَنَا هٰذَا وَمَا کُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ وَاِنَّا اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ثم قال الحمد لله ثلاثا والله اکبر ثلاثا سبحانك اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ فاغْفِرْلِیْ فَاِنَّهٗ لا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ ثم ضَحِكَ فقلت لهٗ من اَیِّ شیئٍ ضَحِکْتَ یا امیر المؤمنین قال رایت رسول الله صلی الله علیه وسلم صَنَعَ کما صنعتُ ثم ضَحِكَ فقلتُ من اَیِّ شیئٍ ضَحِکْتَ یا رسول الله قال اِنَّ رَبَّكَ لیعجبُ من عبده اذا قال رَبِّ اغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ یقول اللهُ یَعْلَمُ اَنَّهٗ لا یغفِرُ الذُّنُوْبَ احد غیری (ابوداؤد، ترمذی، احمد، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अ़ली रज़ि० के बारे में मनकूल है, एक मरतबा उनकी ख़िदमत में (सवारी का) जानवर लाया गया ताकि वह उस पर सवार हों चुनांचे उन्होंने अपना पावं रकाब में डाला (यानी सवार होने के लिये रकाब में पावं डालने का इरादा किया तो कहा बिस्मिल्लाह, फिर जब उसकी पीठ पर चढ़े तो कहा

अल्हम्दुलिल्लाह यानी सवारी की नेमतें उसके अलावा दूसरी नेमतों पर अल्लाह का शुक्र है और फिर यह कलिमात पढ़े)

سُبْحَانَ الَّذِی سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ وَ اِنَّا اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ

यानी पाक है वह ज़ात जिसने इस जानवर को हमारा ताबेदार किया जबकि हमें इसकी ताक़त हासिल नहीं थी और बिलाशुबह हम अपने परवरदिगार की तरफ़ ज़रूर लौट कर जाने वाले है इसके बाद उन्होंने तीन मरतबा अलहम्दुलिल्लाह और तीन बार अल्लाहु अकबर कहकर यह पढ़ा।

سُبْحَانَكَ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَاِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

यानी ऐ परवरदिगार! तू पाक है बेशक मैंने अपने नफ़्स पर जुल्म किया है पस तू मुझे बख़्श दे बेशक गुनाहों को तेरे अलावा कोई बख़्शने वाला नहीं है। फिर हज़रत अ़ली रज़ि० हंसे उनसे पूछा गया कि अमीरुलमोमिनीन आप क्यों हंसे हैं? हज़रत अ़ली रज़ि० ने फ़रमाया मैंने रसूले करीम स० को देखा आप स० ने इसी तरह किया जिस तरह मैंने किया और फिर आप स० हंसे मैंने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल आप किस चीज़ की वजह से हंसे, आप स० ने फ़रमाया तुम्हारा परवरदिगार अपने बन्दे से राज़ी होता है जब वह यह कहता है कि ऐ मेरे परवरदिगार गुनाहों से बख्शिश चाहता हूं तो परवरदिगार फ़रमाता है कि यह बन्दा जानता है कि गुनाहों को मेरे सिवा कोई नहीं बख़्श सकता।

अलहम्दुलिल्लाह! तबलीग़ वाले जो सफ़र में अ़मल करते हैं यानी जिक्र व अज़कार और दुआ़ और थोड़ा सा मुस्कुराना इन तमाम की दलील यह हदीस है और तबलीग़ वाले इस हदीस के ऊपर अ़मल पैरा हैं। मगर लोग कम इल्मी की वजह से या इनाद की वजह से ऐतिराज करते हैं खैर जो मुख़ालिफ़ हों वह मुख़ालिफ़ रहे, हमारे मुवाफ़िक तो कुरआन व हदीस है।

इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत

(۱۷۲) عن ابن عباس رضی اللہ عنہما قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم من لزم الا ستغفار جعل اللہ لہٗ من کُلِّ ضَیق مخرجاً ومن کُلِّ ھَمٍّ فرجاًورزقہ من حیث لا یحتسبُ (ابوداؤد، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जो शख़्स इस्तिग़फ़ार को अपने ऊपर लाज़िम क़रार दे लेता है तो अल्लाह तआला उसके लिये हर तंगी से निकलने की राह निकाल देता है और उसे हर रंजो ग़म से निजात देता है। नीज़ उसको ऐसी जगह से (पाक व हलाल) रोज़ी पहुंचाता है जहां से उसको गुमान भी नहीं होता।

मतलब यह है कि जो शख़्स इस्तिग़फ़ार पर मुदावमत करता है तो अल्लाह तआला भी उस पर उन बातों को नाज़िल करता है जो हदीस में ज़िक्र की गई हैं। और एक हदीस में है:

(۱۷۳) طوبیٰ لمن وجد فی صحیفتہٖ استغفاراً کثیراً. (احیاء العلوم)

कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया खुशनसीब है वह शख़्स जिसके नामा–ए– अअ़माल में इस्तिग़फ़ार की कसरत हो।

तबलीग़ वाले मग़फ़िरत के बाब में यह बात करते हैं

(۱۷۴) عن ابی سعید رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اِنَّ الشیطان قال وعِزَّتِك یا رَبِّ لا اَبرَحُ اُغوِی عبادَكَ ما دامت ارواحُهُم فی اجسادھم فقال الرَّبُّ عزَّوجَلَّ وَعزَّتی وجلالی وارتفاع مکانی اَزالُ اغفرلهم ما استغفرونی. (احمد، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू सईद रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया शैतान ने अल्लाह तआला से कहा कि कसम है तेरी इज़्ज़त

की ऐ मेरे परवरदिगार मैं तेरे बन्दों को हमेशा गुमराह करता रहूंगा जब तक कि उनकी रूहे उनके जिस्म में हैं। परवरदिगार अज़्ज़ व जल्ल ने फ़रमाया क़सम है अपनी इज़्ज़त और बुज़ुर्गी की और अपने मर्तबे की बुलन्दी की मेरे बन्दे जब तक मुझसे बख़्शिश मांगते रहेंगे मैं भी हमेशा उनको बख़्शता रहूंगा।

तबलीग़ वाले इस हदीस को बयान करते हैं जो बिल्कुल सही और दुरुस्त है जो इस पर ऐतिराज़ किया जाता है वह ग़लत है। ख़ैर दोस्तो! हमको अल्लाह तआ़ला की वुस्अ़त से नफ़ा उठाना चाहिये चाहे बन्दा कितना ही बड़ा गुनाहगार हो मगर अल्लाह तआ़ला इससे बड़ा मेहरबान है जैसे कि हदीस में एक बनी इसराइली शख़्स का वाक़िआ़ मशहूर है। मिश्कात शरीफ़ और दीगर कुतुब में वह रिवायत है और उसको तबलीग़ वाले बयान भी करते हैं। एक शख़्स ने निन्नानवे क़त्ल किये और फिर बाद में पूरे सौ कर दिये फिर भी अल्लाह की रहमत ने उसको बख़्श दिया क्योंकि वह अल्लाह से ऊंची उम्मीद रखता था जो अल्लाह को मेहबूब है हमको भी अल्लाह से मग़्फ़िरत की उम्मीद करनी चाहिये क्योंकि कोई भी शख़्स अल्लाह की रहमत के बग़ैर जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकता चाहे आप स० ही क्यों न हों। यह हदीस मिश्कात में हैं।

तबलीग़ वाले यह बयान करते हैं कि अल्लाह तआ़ला अगर तमाम बन्दों को मुंह मांगा अ़ता करें तब भी कुछ कमी न होगी

(۱۷۵) عن ابی ذرّرضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یقول اللّٰہ تعالی یا عبادی کُلُّکُم ضالٌ اِلاّ من ھَدَیتُ فاسئلونی الھُدی اھدکم وکُلُّکُم فُقراءُ اِلاّمَن اَغنَیتُ فاسئلُونِی اَرزُقکُم وَکُلُّکُم مذنبٌ اِلاّ

من عاقبت فمن علم منكم انى ذو قدرة على المغفرة فاستغفرنى غفرت له ولاابالى ولو انّ اوّلكم وآخركم وحيّكم وميتكم ورطبكم ويابسكم اجتمعوا على اتقى قلب عبد من عبادى ما زاد ذالك فى ملكى جناح بعوضة ولوانّ اوّلكم وآخركم وحيكم وميتكم ورطبكم ويابسكم اجتمعوا على اشقى قلب عبد من عبادى ما نقص ذالك من ملكى جناح بعوضة ولو انّ اوّلكم و آخركم وحيّكم وميتكم ورطبكم و يابسكم اجتمعو الى صعيد واحد فسال كلّ انسان منكم ما بلغت امنيّته ما اعطيت كلّ سائل منكم مانقص ذالك من ملكى الّاكما لوانّ احدكم مرّ بالبحر فغمس فيه ابرة ثم رفعها ذلك فانّى جوّادٌ ما جدّ افعل ما اريد عطائى كلام وعذابى كلام انّما امرى لشئ اذا اردتُ ان اقول له كن فيكون. (مشكوٰة، ترمذی، ابن ماجہ، احمد شریف)

हज़रत अबूज़र रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐ मेरे बन्दो! तुम सब गुमराह हो अलावा उस शख़्स के जिसको मैंने हिदायत बख़्शी। पस तुम सब मुझसे हिदायत चाहो मैं तुम्हें हिदायत बख़्शूंगा। तुम सब ज़ाहिर व बातिन में मोहताज हो अलावा उस शख़्स के जिसको मैंने ग़नी बना दिया पस तुम सब मुझसे रोज़ी तलब करो मैं तुम्हें पाक व हलाल रोज़ी अता करूंगा। तुम सब गुनाहगार हो अलावा उस शख़्स के जिसको मैंने बचा लिया हो जैसे (अंबिया अलै०)। पस तुम में से जिस शख़्स ने जाना कि मैं बख़्शने पर क़ादिर हूं और फिर उसने मुझसे बख़्शिश मांगी तो मैं उसको (यानी उसके सब गुनाह) बख़्श दूंगा और मुझे इसकी कोई परवाह नहीं होगी और अगर तुम्हारे पिछले अगले तुम्हारे ज़िन्दे तुम्हारे मुर्दे तुम्हारे तर और तुम्हारे ख़ुश्क (यानी जो तुम्हारे जवानी में हो या बुढ़ापे में) या तुम्हारे आलिम व जाहिल और या तुम्हारे फ़रमांबरदार व गुनाहगार ग़र्ज़ कि सारी मख़्लूक़ात, मेरे बन्दों में

सबसे ज्यादा मुत्तकी दिल बन्दा (मुहम्मद स०) की तरह हो जाये तो इससे (यानी तमाम मख्लूकात के आबिद व मुत्तकी होने से) मेरी खुदाई में एक मच्छर के पर के बराबर भी ज्यादती नहीं होगी और अगर तुम्हारे अगले तुम्हारे पिछले तुम्हारे ज़िन्दा तुम्हारे मुर्दे तुम्हारे तर और तुम्हारे खुश्क (यानी जवान, बूढ़े, ग़र्ज़ कि सारी मख्लूकात) मेरे बन्दों में सबसे ज़्यादा बदबख़्त बन्दा (यानी कि शैतान लईन) की तरह हो जायें तो उससे मेरी खुदाई में एक मच्छर के पर के बराबर भी कमी न होगी और अगर तुम्हारे अगले तुम्हारे पिछले तुम्हारे ज़िन्दा तुम्हारे मुर्दा, तुम्हारे तर, और तुम्हारे खुश्क एक जगह जमा हों और तुम में से हर शख़्स अपनी इन्तहाई आरज़ू व ख़्वाहिश के मुताबिक़ मांगे और फिर तुम में से हर शख़्स को उसकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ दूं तो उससे मेरी खुदाई में कुछ भी कमी नहीं होगी (हां अगर बफ़र्ज़े महाल कमी हो भी गई हो तो) उसी क़द्र कि मसलन तुम में से किसी शख़्स का दरया पर गुज़र हुआ और वह उसमें सुई डाल कर फ़िर उसे निकाले (यह भी सिर्फ़ समझाने के लिये हालांकि इतनी कमी भी नहीं होगी) और उसका सबब यह है कि मैं बहुत सख़ी हूं बहुत देने वाला हूं और जो चाहता हूं करता हूं मेरा देना सिर्फ़ हुक्म करना है और मेरा अज़ाब सिर्फ़ हुक्म करना है (यानी अल्लाह किसी का मोहताज नहीं)।

दोस्तो! तबलीग़ वाले हज़रात बयान में यह हदीस नक़ल करते हैं और लोग उसको मुबालग़ा आराई तसव्वुर करते हैं यह उनके तअ़ल्लुक़ मअ़ल्लाह की कमी की वजह से है कि अल्लाह से वह तअ़ल्लुक़ अब तक पैदा नहीं हुआ जो इस हदीस को समझे और इसकी तसदीक़ के लिये भी यक़ीने कामिल की ज़रूरत है वरना बग़ैर यक़ीन के यह बात महाल नज़र आती है

इस हदीस के शुरू में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि अगर हिदायत मांगो तो मुझसे ही, दौलत मांगो तो मुझसे ही गर्ज़ कि तमाम चीज़ें मुझसे मांगो क्योंकि हर चीज़ मेरे क़ब्ज़े में है। इस हदीस के ज़रिये उन लोगों को नसीहत हासिल करनी चाहिये जो क़ब्र पर जाकर दुआ मांगते हैं और रोते धोते हैं क्या आप के लिये अल्लाह ने स्पेशल सेल काउन्टर खोल रखा है। यहां पर अगर भीड़ हो तो दूसरी दुकान से मांग लेना। ऐ अल्लाह के बन्दो! कुछ तो ख़ौफ़ करो।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि कोई शख़्स अल्लाह की रहमत के बग़ैर जन्नत में दाख़िल नहीं होगा चाहे मुहम्मद स० ही हों

(١٧٦) عن جابر رضی اللہ عنه قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم لا يَدْخُلُ احدًا منكم عَمَلُهُ الجنةَ ولا يجِيْرُهُ من النار ولا انا اِلاَّ بِرَحْمَةِ اللہ. (مسلم، مشکوۃ شریف، بخاری)

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया तुम में से किसी का अ़मल न उसे जन्नत में दाख़िल कर सकता है और न उसे दोज़ख़ से बचायेगा और न मुझे मेरा अ़मल जन्नत में दाख़िल करेगा हां मगर अल्लाह की रहमत के साथ (यानी अल्लाह की रहमत से दाख़ला होगा)।

बअ़ज़ अल्लाह और मुहम्मद स० के दुश्मन लोगों की यह ज़हन साज़ी करते हैं कि देखो इन तबलीग़ वालों को, कहते हैं कि मुहम्मद स० को भी उनके अअ़माल जन्नत में दाख़िल नहीं कर सकते। बताओ अगर मुहम्मद स० को भी जन्नत न मिले अपने अ़मल से तो फिर कौन जन्नत का हक़दार है। अब बताओ तबलीग़ वाले झूठे हैं या नहीं। अल्लाह के बन्दो! कुछ तो अल्लाह

से खौफ करो और अपनी जान पर रहम करो क्या दोज़ख में धंसना चाहते हो जब खुद हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमा दिया कि मैं भी जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकता बग़ैर रहमते खुदा के क्या तुम मुहम्मद स० की मुहब्बत में इतना गुलू पसन्द करते हो कि तुम्हारा क़ौल मुहम्मद स० के क़ौल के मुख़ालिफ़ हो जाये अगर तुमको यह पसन्द है तो तुम गुमराह हो। शैतान तुम पर हावी हो चुका है और अगर पसन्द नहीं करते हो तो फिर ऐसी ख़िलाफ़े हदीस बातें कहना कैसे गवारा कर लेते हो क्या तुम झूठे मुस्लिम और हक़ीक़तन यहूदी हो? नहीं! तो फिर क्यों यहूदियों वाला फ़ेअ़ल करते हो याद रखो अगर किसी भी चीज़ में गुलू करोगे तो गुमराह हो जाओगे और अगर किसी की शान में कमी करोगे तो भी गुमराह हो जाओगे।

خیر الأمور اوساطها

कि बेहतरीन अ़मल दरमियान वाला है और तबलीग़ वाले यह जो बयान करते हैं कि तमाम नबी और तमाम जन्नती जन्नत में सिर्फ़ अल्लाह की रहमत से ही दाख़िल होंगे बग़ैर रहमत के कोई दाख़िल न होगा, यह क़ौल बिल्कुल सही है और यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में मौजूद है और मिश्कात शरीफ़ में भी है।

والله هادِ الى الحق من يَّشَاءُ.

तबलीग़ वाले कहते हैं कि बन्दे को न अल्लाह की रहमत से मायूस होना चाहिये और न अ़ज़ाब से बे–ख़ौफ़

(۱۷۷) عن ابی هريرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله عليه وسلم لو يَعْلَم المومن ما عند الله من العقوبةِ ما طمع بجنتهٖ احدٌ ولو يعلمُ الكافِرُ ما عند الله من الرحمة ما قنط من جنته احدٌ. (بخاری ومسلم)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया कि अगर मोमिन यह जान ले कि ख़ुदा के यहां किस क़द्र अज़ाब है तो फिर कोई शख़्स उसकी जन्नत की उम्मीद भी न रखेगा और अगर काफ़िर यह जान लें कि अल्लाह की रहमत किस क़द्र है तो फिर कोई उसकी जन्नत से नाउम्मीद न हो।

यही मतलब तबलीग़ वालों के इस क़ौल का है कि बन्दे को न अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद होना चाहिये और न अज़ाब से बेख़ौफ़, बल्कि हर जगह एअतदाल ज़रूरी है अगर ग़ुलू करोगे तो गुमराह हो जाओगे अगर कमी करोगे तो भी गुमराह हो जाओगे इसलिये ऐअतदाल ज़रूरी है और

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ.

का मतलब भी यही है कि दरमियान वाला रास्ता अता फ़रमा। इफ़रातो तफ़रीत से बचा।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि तौबा का दरवाज़ा नज़अ तक खुला है

(۱۷۸) عن ابی عمر رضی اللہ عنہما قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم انّ اللہ یقبل توبۃ العبد ما لم یُغَرْغِرْ.

(مشکوۃ شریف، ترمذی شریف)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० बयान फ़रमाते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अल्लाह तआला बन्दे की तौबा उस वक़्त तक क़ुबूल करता है जब तक कि ग़रग़रा की कैफ़ियत शुरू न हो जाये।

तबलीग़ वालों का क़ौल भी यही है कि मौत से पहले पहले इन्सान जो भी नेक अमल बारगाहे रब में ले जायेगा उसको क़ुबूल किया जायेगा मगर जैसे ही नज़अ का वक़्त शुरू हो जाता है तो तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जाता है। इसलिये तबलीग़ वाले कहते

है कि सोते वक़्त गुनाहों से तौबा करके सोया करो पता नहीं कब मौत आ जाये अगर तौबा करके सोयेंगे तो उम्मीद है कि अल्लाह जन्नत में अपनी रहमत से दाख़िल कर देगा और अगर सोते सोते बग़ैर तौबा के मर गये तो फिर पता नहीं क्या होगा।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि जब बन्दे का दिल गुनाहों से ज़ंग आलूद हो जाता है तो फिर उस पर हक़ असर नहीं करता

(۱۷۹) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم اِنَّ المؤمنَ اذا اَذْنَبَ کانت نکتة سوداء فی قلبه فان تابَ واستغفر صُقِلَ قلبه وان زاد زادَتْ حتی تعلوا قلبهٗ فذالکم الرَّانُ الذی ذکر الله تعالی کَلَّا بَلْ رَانَ عَلٰی قُلُوْبِهِمْ مَا کَانُوْا یَکْسِبُوْنَ. (ترمذی،مشکوٰة،احمد)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जब कोई मोमिन गुनाह करता है तो उसके दिल पर एक स्याह नुक़्ता लग जाता है फिर अगर वह उस गुनाह से तौबा कर लेता है और इस्तिग़्फ़ार करता है तो उसका दिल (उस नुक़्ता स्याह से) साफ़ कर दिया जाता है और अगर ज़्यादा गुनाह करता है तो वह स्याह नुक़्ता बढ़ता रहता है यहां तक कि उसके दिल पर छा जाता है पस यह रान है यानी ज़ंग है जिसके बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया

﴿کَلَّا بَلْ رَانَ عَلٰی قُلُوْبِهِمْ مَا کَانُوْا یَکْسِبُوْنَ﴾

यूं हरगिज़ नहीं बल्कि उनके दिलों पर यह उस चीज़ (यानी गुनाह) का ज़ंग है जो वह करते थे। (यहां तक कि उनके दिलों पर ख़ैर व भलाई बिल्कुल बाक़ी नहीं रही)

इसको तबलीग़ वाले बयान करते हैं कि इन्सान जब गुनाह करता है तो एक स्याह नुक़्ता उसके क़ल्ब यानी दिल पर लग

जाता है और अगर वह तौबा करता है तो वह साफ हो जाता है अल्लाह के हुक्म से और अगर उस गुनाह पर गुनाह करता रहता है और तौबा का नाम नहीं लेता तो अब उसका दिल पूरा स्याह हो जाता है अब अगर उसको ख़ैर की दावत दो तो वह हरगिज़ क़ुबूल करने को राज़ी नही होगा बल्कि कहता फिरता है कि तबलीग़ वाले जाहिल गुमराह हैं झूठी अहादीस वाले हैं यह इस तरह क्यों बोल रहे हैं नमाज़ क्यों नहीं पढ़ते हैं ग़ैरों से मदद क्यों तलब कर रहे हैं सिर्फ़ इस वजह से कि गुनाहों की वजह से अल्लाह ने उनका दिल स्याह कर दिया है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि किसी मुस्लिम को काफ़िर या दोज़ख़ी मत कहो

(۱۸۰) عن جندب رضی اللہ عنہ انّ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم حَدّث انّ رَجُلًا قال واللہ لا یغفرُ اللّٰہُ لِفُلان وَانّ اللہ تعالیٰ قال من ذاالذی یتالّٰی عَلَیّ اِنّی لا اغفر لفلان فَانّی قد غفرتُ لفلانٍ واحبطتُ عملک او کما قال. (مسلم شریف، مشکوۃ شریف)

हज़रत जुन्दब रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया (इस उम्मत में या गुज़िश्ता उम्मतों में से) एक शख़्स ने कहा कि ख़ुदा की क़सम अल्लाह तआ़ला फ़लां शख़्स को नहीं बख़्शेगा फिर आप स० ने बयान फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि कौन शख़्स है जो मेरी क़सम खाकर कहता है कि मैं फ़लां शख़्स को नहीं बख़्शूंगा वह यह जान ले कि मैंने उस शख़्स को बख़्श दिया और तेरे अ़मल को ज़ायेअ़ किया।

यही हदीस तबलीग़ वाले बयान करते हैं कि किसी को काफ़िर या दोज़ख़ी मत कहो वरना अल्लाह तआ़ला कहने वालों को ही इस फ़ेअ़ल में दाख़िल कर देगा। इस बात का सबूत

हदीस से होना मालूम हो गया अब वह लोग ज़रा ग़ौर करें जो तबलीग़ वालों को और देवबन्दियों को काफ़िर कहते है क्या उन्होंने ग़ैब को पढ़ लिया है हालांकि अल्लाह तआला गवाह है कि जो इस वक़्त सुन्नत व मुस्तहब पर अमल करने वाले हैं। वह देवबन्दी हज़रात हैं जिनकी एक शाख़ जमाअ़ते तबलीग़ है हां अगर आप हज़रात सुन्नत अदा करने वालों को और वाजिब को अदा करने वालों को सहाबा रज़ि० और अंबिया के नक़्शे क़दम पर चलने वालों को काफ़िर कहते हो तो कहते रहो और उसका वबाल उठाते रहो और जो फ़सादात मुसलमानों में होंगे उसके ज़िम्मेदार सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम होगे जो मुसलमानों के ख़ून को अपने लिये जाइज़ समझते हैं क्या यह तुम्हारा इस्लाम है यह मुहम्मद स० का इस्लाम तो नहीं है। ज़रा हदीसों पर ग़ौर करो फिर कल यह न कहना कि हमें ख़बर न हुई।

अगर हक़ की तलाश में हो तो ज़रूर अल्लाह हिदायत देगा और अगर सिर्फ़ गुमराही को इख़्तियार करने का इरादा हो तो फिर अल्लाह को भी ऐसों से मुहब्बत नहीं और वह ऐसों को ख़ैर की तरफ़ हिदायत नहीं देता। वल्लाहु हकीमुन अ़लीम।

ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह के फ़वाइद

(١٨١) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم لا حولَ ولا قوة اِلاّ با لله دواءٌ من تِسْعَة و تسعين داءً ایسَرُهَا الهم (مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह निन्नानवे (दुनियावी और उख़रवी) बीमारियों की दवा है जिसमें से अदना

बीमारी (दुनियावी व उख़रवी) ग़म है।

(۱۸۲) وعن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم الا اَدُلّكَ علی کلمة من تحت العرش من كُنُوزِ الجَنّةِ لاحول ولا قوة الا باللہ یقول الله تعالى اسلمَ عبدی واستَسلَمْ (بیہقی، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया तुम्हें एक ऐसा कलिमा न बता दूं जो अर्श के नीचे से बहिश्त के ख़ज़ाने से उतरा है और वह ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह है। जब कोई बन्दा यह कलिमा कहता है तो अल्लाह तआला फ़रमाता है मेरा बन्दा ताबेदार और बहुत फ़रमांबरदार है यह दोनों हदीस मिश्कात में और बैहिक़ी में हैं।

ज़िक्र का हुक्म मिनल्लाह व मिनर्रसूल

فَاذْكُرُوْنِیْ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْلِیْ وَلَا تَكْفُرُوْن.

अल्लाह तआला ने फ़रमाया मेरा ज़िक्र करो मैं तुम्हारा ज़िक्र करूंगा तुम मेरा (नेमतों पर) शुक्र अदा करना और नाफ़रमानी से बचना।

इस आयत में अल्लाह तआला ने ज़िक्र करने का हुक्म फ़रमाया है और यह भी ज़ाहिर कर दिया कि तुम मेरा ज़िक्र करोगे तो मैं तुम्हारा ज़िक्र करूंगा और बन्दों को आगाह फ़रमाया कि मेरी नेमतों का शुक्र अदा करना, नाफ़रमानी न करना।

(۱۸۳) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم لان اَقُوْلَ سبحان الله والحمد لله ولا اِله الا اللّٰهُ والله اكبر اَحَبُّ اِلَیَّ مِمّا طلعت علیه الشمسُ. (مسلم، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया मेरा سبحان الله والحمد لله ولا اله الا الله والله اكبر कहना बिला शुबह मेरे नज़दीक उस चीज़ से जिस पर आफ़ताब तुलूअ़

होता है (यानी दुनिया और दुनिया की चीज़ों से) ज़्यादा पसन्दीदा है।

तस्बीह व तहमीद की फ़ज़ीलत तबलीग़ वाले बयान करते हैं

(١٨٤) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم من قال سبحان الله وبحمده فی یوم مائة مَرَّةٍ حطّت خطایاه وان کانت مثل زبد البحر. (بخاری، مسلم، مشکوٰة شریف)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जिस शख़्स ने दिन में सौ मरतबा سبحان الله وبحمده पढ़ा तो उसके गुनाह ख़त्म कर दिये जाते हैं अगरचे वह दरया के झाग के मानिन्द (यानी कितने ही ज़्यादा) क्यों न हों।

(١٨٥) عن جابر رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم من قال سبحان الله العظیم وبحمده غرست له نَخْلَةٌ فی الجنّةِ (مشکوٰة)

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जिस शख़्स ने سبحان الله العظیم وبحمده कहा उसके लिये जन्नत में खजूर का दरख़्त लगा दिया जाता है।

तबलीग़ वालों से यह बातें बयानात में सुनने को मिलीं जो मुवाफ़िक़े हदीस हैं मगर जो लोग उनको झूठी या वज़अ़ कर्दा हदीसें कहते हैं वह ग़लत कहते हैं यह सिर्फ़ मुहम्मद स० के अक़वाल हैं।

जन्नत के दरख़्त

(١٨٦) عن ابن مسعود رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم لقیتُ ابراهیم علیه السلام لیلة اُسْرِیَ بی فقال یا محمد اِقرأ اُمّتك مِنّی سلامًا واخبرهم اَنَّ الجنّةَ طیّبَةُ التُّرابة عذبةُ الماء واِنّها قیعان و اِنَّ غراسَها سبحان الله والحمد لله ولا اِله الا الله و الله اکبر. (مشکوٰة شریف)

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने

फ़रमाया जिस रात मुझे मेअराज की सआदत नसीब हुई है उस रात में हज़रत इब्राहीम अ़लै० से मेरी मुलाक़ात हुई उन्होंने मुझसे कहा कि मुहम्मद स० अपनी उम्मत को मेरा सलाम कहना और उन्हे बता दीजियेगा कि जन्नत की मिट्टी पाकीज़ा है और वह मिट्टी के बजाये मुश्क व ज़अ़फ़रान है उसका पानी शीरीं है उसका मैदान हमवार और दरख़्तों से ख़ाली है और उसके दरख़्त سبحان الله الحمد لله لا اله الا الله و الله اكبر हैं।

तबलीग़ वाले कभी कभी इसको बयान करते हैं फ़ज़ाइले ज़िक्र में कि जन्नत के दरख़्त سبحان الله और الحمد لله और لا اله الا الله والله اكبر हैं उनकी ताईद के लिये यह हदीस नक़ल की गई है यह बात हदीस से साबित है। कई अहादीस में यह मज़मून वारिद है। तिर्मिज़ी, मिश्कात खोल कर कभी ग़ौर से देख लेना फ़ुज़ूल ऐतिराज़ की आ़दत ख़त्म कर दीजिये।

(١٨٧) عن ابن عمر رضى الله عنهما انّهُ قال سبحان الله هى صلوة الخلائق والحمد لله كلمة الشُكرِ ولا اله الا الله كلمةُ الاخلاص والله اكبر تملأ ما بين السماء والأرضِ الخ. (مشكوٰة شريف)

हज़रत इब्ने उ़मर रज़ि० से मरवी है कि उन्होंने फ़रमाया سبحان الله मख़्लूक़ात की इबादत है الحمد لله शुक्र का कलिमा है لا اله الا الله इख़्लास का कलिमा है (यानी कलिमा तौहीद है कि वह अपने पढ़ने वाले के लिये आग से निजात का सबब है) और अल्लाहु अकबर का सवाब ज़मीन व आसमान के दरमियान को भर देता है।

तबलीग़ वाले हज़रात यह हदीस भी बयान करते हैं कि अल्लाहु अकबर कहना ज़मीन और आसमान के दरमियान की जगह को सवाब से भर देता है और तबलीग़ वालों का यह कहना हदीस से साबित है।

لا اله الا الله की फ़ज़ीलत तबलीग़ वाले बयान करते हैं

(188) मिश्कात में बाब ثواب التسبيح में हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० की हदीस है इसका आखरी जुज़ जो तबलीग़ वाले बयान करते हैं वह यह है: हज़रत मूसा अलै० ने अल्लाह तआला से दरख़्वास्त की थी कि ऐ अल्लाह! मुझको कोई ख़ास चीज़ सिखला दे जिसके ज़रिये मैं तुझको याद करूं। तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया لا اله الا الله पढ़ा करो हज़रत मूसा अलै० ने कहा यह तो तमाम दुनिया पढ़ती है मुझको तो कोई ख़ास ज़िक्र चाहिये इस पर अल्लाह ने फ़रमाया कि:

يا موسى لَوْ اَنَّ السموات السّبع وعامرهُنَّ غيرى والأرضين السبع وضِعْنَ فى كِفَّةٍ ولا اله الا الله فى كِفَّةٍ لمالت بِهِنَّ لا اله الا الله

अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ मूसा! अगर सातों आसमान और मेरे अलावा उनके सारे मकीन (यानी फ़रिश्ते) और सातों ज़मीन एक पलड़े में रखी जायें तो यक़ीनन उन चीज़ों के पलड़े से कलिमे वाला पलड़ा झुक जायेगा।

यही हदीस तबलीग़ वाले हज़रात फ़ज़ाइले ज़िक्र में बयान करते हैं लेकिन इस पर दूसरे क़िस्म का ऐतिराज़ होता है पहले मोअ़तरिज़ ने तबलीग़ वालों को यह कहा था कि यह झूठी हदीस बयान करते हैं अब थोड़ी सी अमानतदारी आई है। और उसने कहा कि यह हदीस ज़ईफ़ है क्यों? फ़ुज़ूल ही ज़ईफ़ हो गई यह हदीस ज़ईफ़ नहीं है। मिश्कात खोल कर देखो सही सालिम मिनलउ़यूब है। अगर ज़ईफ़ भी हो तो मुहद्दिसीन का उसूल है कि मसाइल में ज़ईफ़ हदीस दुरुस्त नहीं लेकिन फ़ज़ाइल में जाइज़ है क्योंकि फ़ज़ाइल में जो सवाब बयान किया जाता है वह महाल

नहीं। अल्लाह जव्वाद है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि उंगलियों पर ज़िक्र करो यह कल गवाही देंगी

(١٨٩) عن يُسيرةَ وكانت من المهاجرات قالت قال لنا رسول الله صلى الله عليه وسلم عَلَيْكُنَّ بالتسبيح والتهليل والتقديس واعقدن بالانامل فانّهنّ مسئولاتٌ ولا تغفلنَ فتنسينَ الرحمةَ (ابوداؤد، ترمذی، مشکوٰۃ)

हुज़ूर अकरम स० ने हम औरतों से फ़रमाया कि سبحان الله لا اله الا الله سبحان الملك القُدُّوسُ ربُّ الملائكةِ को पढ़ना अपने लिये ज़रूरी क़रार दो और उनको यानी तस्बीहात को अपनी उंगलियों पर शुमार करो क्योंकि इन उंगलियों से पूछा जायेगा और इनको गोयाई दी जायेगी और याद रखो ज़िक्र से ग़ाफ़िल न होना यानी ज़िक्र को तर्क न करना वरना रहमत से तुम्हें भुला दिया जायेगा। यानी अगर ज़िक्र को छोड़ कर बैठ जाओगे तो उसके बेशुमार सवाब से महरूम हो जाओगे।

इस हदीस से ज़िक्र की फ़ज़ीलत और तबलीग़ वालों का क़ौल कि उंगलियों से गवाही ली जायेगी, यह साबित हो गया कि वैसे तक़रीबन सबको ही मालूम होगा कि क़ियामत में तमाम जिस्म के अअ़ज़ा गवाही देंगे जैसे कि यह आयत बता रही है।

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ۝

याद करो उस दिन को जब कि उनकी ज़बानें उनके हाथ और उनके पांव उन चीज़ों की गवाही देंगे जो वह करते थे।

और जो लोग तबलीग़ वालों के ख़िलाफ़ झूठी बातें बयान करते हैं वह भी तैयार रहें क़ियामत में सब का टेप रिकार्ड बोलेगा फिर अल्लाह का फ़ैसला होगा كما قال الله تعالى لَعْنَتُ الله عَلَى الكاذبين. कि झूठों पर अल्लाह की लअ़नत हो।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि ज़िक्र करने वाला ज़िन्दा और ज़िक्र न करने वाला मुर्दा है

(١٩٠) عن ابى موسىٰ رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم مَثَلُ الَّذِىْ يَذْكُرُ رَبَّهٗ وَالَّذِىْ لَا يَذْكُرُ مثل الحَىِّ والْمَيِّتِ (بخارى، مسلم، مشكوٰة شريف)

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया उन लोगों की मिसाल जो ज़िक्र करते हैं और जो ज़िक्र नहीं करते इस तरह है जैसे ज़िन्दा शख़्स और मुर्दा शख़्स।

इस हदीस को भी तबलीग़ वाले ज़िक्र करते हैं लेकिन बअ़ज़ लोगों को ज़िक्र से पता नहीं क्या दुश्मनी है उनको हदीसों पर भी यक़ीन नहीं आता है और तरह तरह की मिसालों से ज़िक्र का मज़ाक़ उड़ाते हैं कि यह लोग अल्लाह के ज़िक्र के ज़रिये याजूज माजूज की क़ौम को ख़त्म करेंगे। जब उनके मरने से बदबू पैदा होगी तो यह हज़रात अल्लाह से दुआ करेंगे और फिर यह बदबू ख़त्म हो जायेगी और कहने वालों ने पता नहीं और क्या क्या कहा और लिखा है और हदीस के ख़िलाफ़ बोलकर क़ब्र में ले गये हैं और बअ़ज़ लोग उनको अपना इमाम भी मानते हैं और यह तमाम बातें जो उन्होंने लिखी हैं वह सब हदीस के बिल्कुल ख़िलाफ़ हैं क्योंकि यह भी हदीस है कि अहले ईमान ज़िक्र से भी ख़ूब मदद हासिल करेंगे यह जो हदीस है उसको तबलीग़ वालों के क़ौल की ताईद के लिये पेश किया है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि फ़रिश्ते ज़िक्र की मजलिस को ढूंडते हैं

(١٩١) عن ابى هريرة رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اِنَّ لله ملائكة يَطُوفون فى الطُّرُقِ يلتمسُوْنَ اهل الذِكْرِ فاِذا

وجدوا قوماً يذكرون الله تنادوا هلمّوا الى حاجتكم قال فيحفّونهم باجنحتهم الى السماء الدنيا قال فيسألهم ربّهم وهو اعلم بهم ما يقول عبادى قال يقولون يسبحونك ويكبّرونك ويحمدونك ويمجّدونك قال فيقول هل رأونى قال فيقولون لا، والله ما رأوك قال فيقول كيف لورأونى قال فيقولون لو رأوك كانوا اشد لك عبادة واشدّ لك تمجيداً واكثر لك تسبيحاً قال فيقولون فما يسألون قالوا يسألونك الجنة قال يقول وهل رأوها قال فيقولون لا والله يا ربّ ما رأوها قال يقول فكيف لورأوها قال يقولون لو انّهم راوها كانوا اشدّ عليها حرصاً وأشدّ لها طلبا واعظم فيها رغبة قال فممّ يتعوّذون قال يقولون من النار قال يقول فهل رأوها قال يقولون لا والله يا ربّ مارأوها قال يقول فكيف لو رأوها قال يقولون لو رأوها كانوا اشدّ منها فراراً واشدّ لها مخافةً قال فيقول فاشهدُكم انّى قد غفرتُ لهم قال يقول ملكٌ من الملائكة فيهم فلانٌ ليس منهم انّما جاء لحاجةٍ قال هم الجُلَساءُ لا يشقى جليسهم . (بخارى، مشكوٰة شريف)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह स० ने फ़रमाया अल्लाह तआला के कितने ही फ़रिश्ते मुसलमानों के रास्तों पर फिरते हैं और ज़िक्र करने वालों को ढूंडते हैं ताकि उनसे मिलें और उनका ज़िक्र सुनें चुनांचे जब वह उन लोगों को पा लेते हैं जो ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रहते हैं तो वह आपस मे एक दूसरे को पुकार कर कहते हैं कि अपने मतलूब की तरफ़ (यानी अहले ज़िक्र की तरफ़) जल्दी आओ और आंहज़रत स० ने फ़रमाया इसके बाद वह फ़रिश्ते उन लोंगों को अपने परों से आसमान दुनिया तक घेर लेते हैं। आंहज़रत स० ने फ़रमाया उन फ़रिश्तों से उनका परवरदिगार उन लोगों के बारे में पूछता है कि मेरे बन्दे क्या कहते हैं हालांकि परवरदिगार उन फ़रिश्तों से ज़्यादा उन लोगों के बारे में जानता है। आप ने फ़रमाया फ़रिश्ते जवाब देते हैं कि वह तेरी तस्बीह करते हैं तुझे याद करते हैं तेरी

बड़ाई बयान करते हैं तेरी तारीफ़ करते हैं और बुज़ुर्गी और अज़मत के साथ याद करते हैं आप स० ने फ़रमाया कि फिर अल्लाह तआला उन फ़रिश्तों से पूछता है कि क्या उन्होंने मुझे देखा है आप स० ने फ़रमाया उसके जवाब में फ़रिश्ते कहते हैं कि नहीं खुदा की क़सम! उन्होंने तुझे नहीं देखा। आप स० ने फ़रमाया अल्लाह तआला उन फ़रिश्तों से कहता है अच्छा अगर वह मुझे देखते तो फिर उनकी कैफ़ियत क्या होती आप स० ने फ़रमाया फ़रिश्ते कहते हैं कि अगर वह तुझे देखते तो फिर वह तेरी इबादत बहुत ही करते बुज़ुर्गी व अज़मत के साथ तुझे बहुत ही याद करते। और तेरी तस्बीह बहुत करते आप स० ने फ़रमाया फिर अल्लाह तआला उनसे पूछता है कि वह बन्दे मुझसे मांगते क्या हैं। फ़रिश्ते कहते हैं कि वह तुझसे जन्नत मांगते हैं आप स० ने फ़रमाया अल्लाह तआला उनसे पूछता है कि क्या उन्होंने जन्नत को देखा है। आप स० ने फ़रमाया फ़रिश्ते कहते हैं कि नहीं ऐ परवरदिगार! खुदा की क़सम उन्होंने जन्नत को नहीं देखा है। आप स० ने फ़रमाया अल्लाह तआला उनसे पूछता है कि अच्छा अगर उन्होंने जन्नत को देखा होता तो उनका क्या हाल होता आप स० ने फ़रमाया फ़रिश्ते जवाब देते हैं कि अगर उन्होंने जन्नत को देखा होता तो जन्नत के लिये उनकी हिर्स कहीं ज़्यादा होती उनकी ख़्वाहिश व तलब कहीं ज़्यादा होती और उसकी तरफ़ उनकी रग़बत कहीं ज़्यादा होती (क्योंकि किसी चीज़ के बारे में महज़ इल्म होना उसके देखने के बराबर नहीं) उसके बाद अल्लाह तआला पूछता है कि अच्छा वह पनाह किस चीज़ से मांगते हैं आप ने फ़रमाया फ़रिश्ते जवाब देते हैं कि वह दोज़ख़ से पनाह मांगते हैं आपने फ़रमाया अल्लाह तआला उनसे पूछता है क्या उन्होंने दोज़ख़ को देखा है? फ़रिश्ते कहते हैं कि नहीं

हमारे परवरदिगार खुदा की कसम! उन्होंने दोज़ख को नहीं देखा है आप स० ने फ़रमाया अल्लाह तआला उनसे पूछता है कि अगर वह दोज़ख को देख लेते तो फिर उनकी कैफ़ियत क्या होती आप स० ने फ़रमाया फ़रिश्ते जवाब देते हैं कि अगर उन्होंने दोज़ख को देख लिया होता तो उससे बहुत ही भागते (यानी उन चीज़ो से बहुत ही दूर रहते जो दोज़ख में डाले जाने का सबब बनती हैं) और उनके दिल कहीं ज़्यादा डरने वाले होते। आंहज़रत स० ने फ़रमाया फिर उसके बाद अल्लाह तआला फ़रिश्तो को मुखातब करते हुए कहता है कि मैं तुम्हें इस बात पर गवाह बनाता हू कि मैंने उन्हें बख़्श दिया। आंहज़रत स० ने फ़रमाया (यह सुनकर) उन फ़रिश्तों में से एक फ़रिश्ता कहता है कि ज़िक्र करने वालो में वह फ़लां शख़्स ज़िक्र करने वाला नहीं है क्योंकि वह अपने किसी काम के लिये आया था (और फिर वह वहीं ज़िक्र करने वालों के पास बैठ गया इसलिये वह तो इस मग़्फ़िरत की बशारत का मुस्तहिक नहीं) अल्लाह तआला उससे फ़रमाता है कि अहले ज़िक्र ऐसे बैठने वाले हैं कि उनका हमनशीन बेनसीब नहीं होता। बुख़ारी और मुस्लिम में भी इसके मुशाबह हदीस मज़कूर है।

तबलीग़ वाले यही बुख़ारी की हदीस फ़ज़ाइले ज़िक्र में बयान करते हैं मगर मोअ़तरिज़ इसको मनघड़त तसव्वुर करते हैं उनमें बअ़ज़ जानबूझ कर ग़लत बयानी करते हैं तबलीग़ वालो के ख़िलाफ़ और बअ़ज़ जिहालत में। दोनों हज़रात को इस सही और उम्दा कौल नबी स० की तरफ़ नज़र करनी चाहिये और यह फ़ैसला करना चाहिये कि क्या तबलीग़ वाले वाकई झूठी हदीसें बयान करते हैं या हम ही उन पर झूठ बोल कर तोहमत लगाते हैं अगर हक़ की तलाश में रहो तो हक़ मिल जायेगा।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि ज़िक्रुल्लाह करने वालों का ज़िक्र अल्लाह फ़रिश्तों में करता हैं

(۱۹۲) عن ابی ھریرۃ رضی اللّٰہ عنہ انّ رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم قال الا انّ الدّنیا ملعونۃ وملعونٌ ما فیھا الّا ذکر اللّٰہ وما والاہ وعالم ومتعلّم. (ترمذی، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया याद रखो दुनिया मलऊ़न है (यानी दुनिया को बारगाहे खुदावन्दी से धुत्कार दिया गया है क्योंकि यह लोगों को अल्लाह से दूर रखती है) और जो चीज़ें दुनिया के अन्दर हैं वह भी मलऊ़न हैं अलबत्ता ज़िक्रुल्लाह और ख़ुदा की पसन्दीदा चीज़ें और आ़लिम और मुतअ़ल्लिम (यह वह चीज़ें हैं जिनको बारगाहे रब्बुलइज़्ज़त में मकबूल क़रार दिया गया है)

ज़ाहिर बात है कि अल्लाह से जो चीज़ें दूर करने का ज़रिया बनें वह तो मरदूद होनी ही हैं शैतान भी अल्लाह से दूर होने की वजह से और दूर करने वाला होने की वजह से मरदूद है। क्योंकि उसने भी वह फ़ेअ़ल अन्जाम दिया था जो अल्लाह से दूर करने वाला था। जब उसने मरदूद फ़ेअ़ल को इख़्तियार किया तो वह भी मलऊ़न हो गया और दुनिया में भी वह असबाब और अफ़आल हैं जो अल्लाह से दूर करने वाले हैं और जो खुद मरदूद हैं तो उनके इख़्तियार करने वाले भी मरदूद हुए। जैसे कि शैतान मरदूद फ़ेअ़ल को इख़्तियार करके मरदूद हो गया है और दुनिया में उन चीजों का वुजूद है जो अल्लाह से बन्दे को दूर करें इसलिये दुनिया भी मरदूद हो गई। इसलिये दुनिया की मुहब्बत रखने वाले भी मरदूद होंगे।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि अगर दुनिया की क़द्र मच्छर के पर के बराबर भी होती तो काफ़िर प्यासे मर जाते

(١٩٣) عن سهل بن سعد رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لو كانت الدنيا تعدل عند الله جناح بعوضة ماسقى كافراً منها شربةً (ترمذی، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत सहल बिन सअ़द रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया यह दुनिया अगर खुदा के नज़दीक मच्छर के पर के बराबर भी वक़अ़त रखती तो अल्लाह तआ़ला इसमें से काफ़िर को एक घूंट पानी भी न पिलाता।

तबलीग़ वालों का यह हदीस बयान करना सही है और यह हदीस शरीफ़ इस बात की ताईद कर रही है।

और काफ़िरों को दुनिया ही में उनके अच्छे अअ़माल का बदला मिल जाता है जैसे कि उनका पानी पिलाना, ख़िदमते ख़ल्क़ करना, अच्छी बातें बयान करना, हुस्ने सुलूक से पेश आना वग़ैरा चीज़ों का बदला उनको दुनिया में दिया जाता है। क्योंकि अल्लाह ने दो पार्टी बनाई हैं। एक दुनिया के लिये जैसे काफ़िर मुश्रिक और एक पार्टी वह है जिसका बदला आख़िरत में है। वह है मोमिन। अल्लाह का यह बहुत बड़ा एहसान है कि उसने हमको अपनी रहमत से आख़िरत वाला बनाया الحمد لله على كل حال

ज़िक्रुल्लाह और बन्दों से सिर्फ़ अल्लाह के लिये मुहब्बत करने का अज्र

(١٩٤) عن ابى رزين انه قال له رسول الله صلى الله عليه وسلم الا اَدُلُّك على ملاك هذا الامر الذى تصيب به خير الدنيا والآخرة عليك

بمجالس اهل الذكر واذا خلوت فحرك لسانك مااستطعت بذكر الله واحب فى الله وابغض فى الله يا ابا رزين هل شعرت ان الرجل اذا خرج من بيته زائرا اخاه شيعه سبعون الف ملك كلهم يصلون عليه ويقولون ربنا انه وصل فيك فصله فان استطعت ان تعمل جسدك فى ذلك فافعل

(مشكوة،بيهقى)

अबू रज़ीन हदीस के रावी हैं, हुज़ूर स० ने उनसे फ़रमाया कि मैं तुम्हें इस अम्र यानी दीन की जड़ न बता दूं जिसके ज़रिये तुम दुनिया व आख़िरत की भलाई हासिल करो (तो सुनो) इन चीज़ों को तुम अपने ऊपर लाज़िम कर लो अहले ज़िक्र की मजालिस में बैठा करो (ताकि तुम्हें भी तौफ़ीक़ हो) और जब तन्हा रहो तो जिस क़द्र मुमकिन हो ज़िक्रुल्लाह के ज़रिये अपनी ज़बान को हरकत में रखो यानी लोगों के साथ बैठ कर भी ज़िक्र करो और तन्हाई में भी ज़िक्र करो (अगर तुम किसी को दोस्त रखो तो) तो महज़ अल्लाह की रज़ा व ख़ुश्नूदी के लिये दोस्त रखो और (जिसको दुश्मन रखो तो) महज़ अल्लाह की रज़ा व ख़ुश्नूदी के लिये उससे बुग़्ज़ रखो। यानी किसी से तुम्हारी दोस्ती और दुश्मनी का मेअ़यार तुम्हारी अपनी ज़ात की ख़्वाहिशात या कोई दुनियावी नफ़ा व नुक़्सान न होना चाहिये बल्कि अल्लाह की रज़ा व ख़ुश्नूदी को मेअ़यार बनाओ जिसका मतलब यह है कि उसी शख़्स को अपना दिली दोस्त बनाओ जिसकी दोस्ती से ख़ुदा ख़ुश होता हो और उसी शख़्स से दुश्मनी रखो जिसकी दुश्मनी से ख़ुदा की ख़ुश्नूदी हासिल हो। और ऐ अबू रज़ीन! क्या तुम्हें मालूम है कि जब कोई शख़्स अपने किसी मुसलमान भाई की ज़ियारत व मुलाक़ात के इरादे से घर से निकलता है और उस मुसलमान के यहां जाता है, तो रास्ते में हज़ार फ़रिश्ते उसके पीछे पीछे चलते हैं और वह (सब फ़रिश्ते) उसके लिये दुआ इस्तिग़्फ़ार

करते हैं और कहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! उस शख़्स ने महज़ तेरी रज़ा व ख़ुश्नूदी की ख़ातिर एक मुसलमान भाई से मुलाक़ात की है तो उसको अपनी रहमत व मग़्फ़िरत के साथ मुन्सलिक कर। पस (ऐ अबू रज़ीन!) अगर तुम्हारे लिये इन (मज़कूरा) चीज़ों में अपनी जान को लगाना (यानी इन पर अमल करना मुमकिन हो तो उन चीज़ों को ज़रूर इख़्तियार करो)।

इस हदीस में दो बातें ज़िक्र की गई हैं एक तो ज़िक्र की फ़ज़ीलत और दूसरी चीज़ यह है कि दोस्ती और दुश्मनी अल्लाह के लिये हो, इसलिये कि इन्सान को हर वक़्त ज़िक्र में लगा रहना चाहिये क्योंकि उससे दिल नूरानी और नर्म होता है और फिर वह अल्लाह के सामने रोने वाला बनता है और जब अल्लाह के पास रोयेगा तो ज़ाहिर सी बात है कि उसकी रब्बुलइज़्ज़त ज़रूर बिज़्ज़रूर मग़्फ़िरत फ़रमायेंगे। देखो ज़िक्र कितनी ऊंची चीज़ है कि अल्लाह उसके ज़रिये बन्दे की मग़्फ़िरत फ़रमाता है। और दूसरी बात हदीस में यह बताई गई है कि बन्दे को मुहब्बत करनी चाहिये तो सिर्फ़ अल्लाह ही के लिये। और अगर नफ़रत करनी हो तो सिर्फ़ अल्लाह के लिये हो और जब बन्दा इस तरह करेगा यानी अल्लाह के लिये मुहब्बत और अल्लाह के लिये बुग्ज़ तो अब उसको यह फ़ज़ीलत हासिल होगी कि कल क़ियामत के रोज़ अ़र्श का साया नसीब होगा और दूसरी बात हदीस में इस तरह आई है कि जब बन्दा सिर्फ़ अल्लाह के लिये किसी भाई से मुलाक़ात करने के लिये जाता है तो अब अल्लाह के हुक्म से उस बन्दे के लिये फ़रिश्ते उस अ़मल की वजह से दुआ़ करते हैं तो फ़िर यह फ़ेअ़ल करके फ़रिश्तों से दुआ़ करा लो, जो दुआ़ अल्लाह के हुक्म से करते हैं। फिर दरगाह पर जाकर शिर्क करके दरख़्वास्त करने की क्या ज़रूरत है। आसान काम छोड़ कर दुश्वार काम करना

और वह भी हराम और गलत। क्या यह अकलमन्दी है? अल्लाह तमाम मुसलमानों को सिराते मुस्तकीम की हिदायत नसीब फरमाये और अपनी रहमत में दाख़िल फरमायें।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि जो शख़्स ज़िक्र 'ला इलाहा इल्लल्लाह' पर मरे वह जन्नती है

(١٩٥) عن عثمان بن عفان رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من مات وهو يعلمُ انّه لا اله الا الله دخل الجنة (مشكوة، ترمذى)

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जो शख़्स इस हाल में वफ़ात पाये कि वह ला इलाहा इल्लल्लाह की गवाही दे रहा हो वह जन्नत में दाख़िल होगा।

इस हदीस में क़द्रे तफ़सील है वह यह कि पहले कलिमा पढ़ने वालों को तीन क़िस्मों में मुन्क़सिम कर दो एक तो वह शख़्स है जो काफ़िर था और उसको इस्लाम पेश किया गया और वह मुसलमान हो गया। इत्तिफ़ाक़ी बात न इस पर कोई नमाज़ का वक़्त आया और न दीगर चीज़ों का वक़्त आया बस कलिमा पढ़ा और मर गया जैसे कि आप अहादीस में वाक़िआत सुनते हो इसमें एक वाक़िआ एक ईसाई लड़के का भी है जिसने अपने मर्ज़ुलवफ़ात में हुज़ूर स० को बुलाया और आख़िर में उसने कलिमा पढ़ लिया और फ़ौरी तौर पर मर गया फिर हुज़ूर स० ने ही उसकी नमाज़े जनाज़ा अदा की। ख़ैर बात यह है कि वह काफ़िर जो मरने से पहले मुसलमान हो गया उसके लिये मुत्तफ़िक़ा तौर पर जन्नत है जिसको शरीअ़त पर अ़मल का मौक़ा ही न मिला हो। दूसरा वह शख़्स है जिसने कलिमा पढ़ा और

नमाज़, रोज़ा दीगर फराइज़ भी अदा किये मगर चन्द सगीरा और कबीरा और शिर्क के अलावा गुनाह सादिर हुए हों और उन अफ़आल से भी बचा हो जो शिर्क के क़रीब हों जैसे क़ब्र को सजदा करना और हुज़ूर स० को आलिमुलग़ैब मानना अगर इन अफ़आले शिर्क और मुशाबह–ए–शिर्क से बचा हो और आख़री वक़्त यानी मौत के वक़्त कलिमे पर इन्तिक़ाल हुआ हो तो उसके बारे में भी यही है कि इन्शाल्लाह यह भी बग़ैर हिसाब के जन्नत में दाख़िल होगा। और तीसरा शख़्स वह है जिसने कलिमा तो पढ़ लिया मगर अफ़आले मुश्रिकाना करता हो अक़ाइदे मुश्रिकाना रखता हो जैसे ग़ैरुल्लाह के लिये सजदे को जाइज़ जानना, हुज़ूर स० को उन सिफ़ात में दाख़िल करना जो अल्लाह के लिये ख़ास हों अगर अब यह कलिमा पढ़ते हुए मर जाये तो उसकी मिसाल इस तरह है कि एक कलिमा पढ़ने वाला अगर यह अक़ीदा रखे कि हज़रत ईसा अलै० नबी तो हैं मगर आप अलै० अल्लाह के बेटे हैं। बताओ इस कलिमे वाले पर आप क्या हुक्म लगाओगे। यही ना, कि यह कलिमे के बावजूद अक़ीदा –ए–कुफ़्र पर मरा तो बस यही हुक्म है उन हज़रात का जो कलिमे के बावुजूद सिफ़ाते ख़ुदा में ग़ैर को दाख़िल करते हैं और इस कलिमे का शरीअत में उस वक़्त तक कामिल ऐतिबार नहीं जब तक कि उसके एक–एक तक़ाज़े को अदा करे जैसे अल्लाह को एक जानना, सिफ़ात में और इबादत में, और मुहम्मद स० को अल्लाह तआ़ला का नबी और रसूल जानना, और आप स० को ख़ातिमुन्नबिय्यीन जानना और जब मुहम्मद स० को अल्लाह तआ़ला का नबी तस्लीम किया तो आप स० के एक–एक क़ौल को तस्लीम करना और अमली ज़िन्दगी देना। अब देखो हुज़ूर स० ने किसके लिये सजदा करने का हुक्म दिया और किसके सामने हाथ फैलाने का

हुक्म दिया इन अक्वाल पर अमल करने का इक़रार भी इस कलिमे के पढ़ने से हो गया और ईसा अलै० अल्लाह के नबी होने का और बेटा न होने का इक़रार भी कलिमे के पढ़ने से हुआ अगर कोई शख़्स मरते मरते कलिमा पढ़ रहा हो और हज़रत ईसा अलै० के बेटा होने का अक़ीदा भी बरक़रार है, उस अक़ीदे से तौबा भी नहीं कर रहा है बल्कि पहले जिस तरह कलिमा पढ़ता था अब भी अक़ीदा–ए–फ़ासिद के साथ कलिमा पढ़ रहा है तो यह कलिमा फ़ाइदा नहीं देगा जब तक कि वह कलिमा पढ़ते पढ़ते इस फ़ासिद अक़ीदे से तौबा न कर ले। अगर मौत के वक़्त कलिमे के ज़रिये इस फ़ासिद अक़ीदे से तौबा भी कर रहा है तो यह साफ़ जन्नती है। ला शक्का फ़ीहि, और ऐसी ही मिसाल उनकी है जो सिफ़ाते ख़ुदा में ग़ैर को दाख़िल करते हैं और ग़ैर को शरीक जानते हैं और ग़ैर को सज्दा करते हैं। इस फ़ासिद अक़ीदे से तौबा करते हुए अगर कलिमा पढ़ा है तो यह कलिमा उसको जन्न्त में दाख़िल करेगा मगर यह फ़ासिद अक़ीदा बाक़ी हो और कलिमा पढ़ रहा हो ख़ुदा की क़सम यह शख़्स इस फ़ासिद अक़ीदे की वजह से सीधा दोज़ख़ में जायेगा। क्योंकि इसने इत्र के साथ थोड़ा पेशाब भी मिलाया है बताओ क्या आप इस पेशाब मिले इत्र से जिस्म को मुअत्तर करोगे? क़ियामत आ जाये किसी मुसलमान की ग़ैरत इसको पसन्द नहीं करेगी। यही समझो अल्लाह भी इस कलिमे को हरगिज़ हरगिज़ कुबूल नहीं करेगा यह अल्लाह का फ़रमान है मेरा क़ौल नहीं है। देखो कुरआन खोल कर, अहादीस खोल कर सब मालूम हो जायेगा।

और यही हाल होगा उन लोगों का जो हज़रत अली रज़ि० को यह कहते हैं कि अली रज़ि० में ख़ुदा हुलूल कर गया। अगर यह कलिमा पढ़ते पढ़ते मरें और यह अक़ीदा लेकर मरें तो ख़ुदा

की क़सम, सीधे दोज़ख में दाख़िल होंगे, मगर यह कि मरने के वक़्त कलिमा पढ़ लिया हो और इस फ़ासिद अक़ीदे से तौबा कर ली हो, तो अब यह कलिमा कारामद होगा और यही हाल उस शख़्स का है जो कलिमा तो पढ़ते पढ़ते मरे मगर हुज़ूर स० के अलावा दूसरों को ख़ातिमुन्नबिय्यीन या आप स० के बाद किसी को नबी या रसूल जाने उसको यह कलिमा उस वक़्त तक फ़ाइदा नहीं देगा जब तक यह शख़्स तौबा न करे अपने फ़ासिद अक़ीदे से। कलिमे के साथ अगर फ़ासिद अक़ीदे से तौबा की तो जन्नती होगा और अगर सिर्फ़ पहले की तरह कलिमा पढ़ता रहा और तौबा न की तो हक़ जानो यह सीधा दोज़ख़ी है। यह मेरा क़ौल नहीं, अल्लाह का क़ौल है, आयतः

﴿مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَا اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ﴾

यह जो तक़रीर की है, यह बहुत ही बारीक तक़रीर है कोई मेरी इस बात से लोगों को ग़लत बयानी करके गुमराह करने की कोशिश करेगा तो वह यह जान ले कि उसको मरना है और अल्लाह के पास जाना है क्योंकि बअ़ज़ बे–ख़ौफ़ इस तरह करते हैं।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि बुलन्दी पर चढ़ते वक़्त अल्लाहु अकबर और उतरते वक़्त सुब्हानल्लाह कहना चाहिये

(١٩٦) عن جابر رضی الله عنه قال كُنَّا اذا صَعِدْنَا كَبَّرْنَا واذا نزلنا سَبَّحْنَا (بخاری، مسلم، مشکوۃ شریف)

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि जब हम बुलन्दी पर चढ़ते तो तकबीर कहते यानी अल्लाहु अकबर और बुलन्दी से नीचे की तरफ़ आते तो सुब्हानल्लाह कहते।

और यही क़ौल तबलीग़ वालों का भी है। अलहम्दुलिल्लाह, यह बात भी हदीस के बिल्कुल मुवाफ़िक़ है। मोअ़तरिज़ को कोई मौक़ा नहीं ऐतिराज़ का।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि उस दिन तक क़ियामत नाज़िल न होगी जब तक एक शख़्स भी अल्लाह अल्लाह कहने वाला बाक़ी होगा

(١٩٧) عن انس رضى الله عنه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا تقوم الساعة حتى لا يقال فى الارض الله الله و فى رواية قال لا تقوم الساعة على احد يقول الله الله. (مسلم، مشكوة شريف، بخارى)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया क़ियामत उस वक़्त तक नहीं आयेगी जब तक रूए ज़मीन पर अल्लाह, अल्लाह कहना मौकूफ़ न हो जाये। और एक रिवायत में यूं है कि फ़रमाया, क़ियामत उस शख़्स पर क़ायम नहीं होगी जो अल्लाह, अल्लाह कहता होगा।

इसी रिवायत का तर्जुमा या मफ़हूम तबलीग़ वाले बयान करते हैं कि क़ियामत उस वक़्त तक नाज़िल नहीं हो सकती जब तक ज़मीन पर अल्लाह अल्लाह कहने वाला एक भी आदमी मौजूद होगा। और यह बात बिल्कुल दुरुस्त है और साबित मिनलहदीस है। इस हदीस से अल्लाह के नाम की अज़मत वाज़ेह हो जाती है। आज हम अलहम्दुलिल्लाह, सुब्हानल्लाह और अल्लाहु अकबर ला इलाह इल्लल्लाह पढ़ते हैं मगर हमें इस वक़्त इसकी अहमियत मालूम नहीं होती इसकी अहमियत तो आख़िरत में मालूम होगी जब इस पर सवाब दिया जायेगा और अगर इसकी फ़ज़ीलत की झलक देखनी हो तो इस हदीस से हासिल करो कि अल्लाह के नाम की अल्लाह के नज़दीक इतनी क़द्रो क़ीमत है कि पूरी दुनिया कुफ़्र और शिर्क करे और सिर्फ़ एक बन्दा अल्लाह अल्लाह कहे उसकी बरकत से यानी लफ़्ज़

अल्लाह की बरकत से और इस ज़िक्र करने वाले की बरकत से पूरे कुफ़्फ़ार को पूरे मुश्रिकों को और सातों आसमानों और सातों ज़मीनों को तमाम हैवानात को चरिन्द व परिन्द को सिर्फ़ इस लफ़्ज़ अल्लाह की बरकत से बचाये रखेगा। अब सोचो क़ियामत में जब अल्लाह के ज़िक्र करने वालों को सवाब दिया जायेगा तो बताओ उसकी क्या मिक़दार होगी यह तो अल्लाह ही जानता है और हदीस में जो तअ़दाद मुतअ़य्यन होती है वह सिर्फ़ इन्सानी अ़क्ल को समझाने के लिये है वरना तो हक़ीक़ी मिक़दार सिर्फ़ अल्लाह ही जानता है

इस्तिग़फ़ार और हुज़ूर स० का अ़मल

(١٩٨) عن ابی ہریرةؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اِنّیْ لا ستغفر اللہ تعالی واتوب الیہ فی الیوم اکثر من سبعین مرة
(بخاری، احیاء العلوم جلد اول، مشکوٰة)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया मैं अल्लाह तआ़ला से दिन में सत्तर मरतबा मग़्फ़िरत चाहता हूं और तौबा करता हूं।

(١٩٩) قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اِنّ اللہ لیرفع الدرجة للعبد الصالح فی الجنة فیقول یا رب انّٰی لی ھذہ فیقول باستغفار ولدکَ لک (احمد، احیاء العلوم جلد اول)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला बन्दे का दर्जा बढ़ायेगा बन्दा अ़र्ज़ करेगा या अल्लाह! मेरा दर्जा किस तरह बढ़ गया, अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे तेरे लिये तेरा लड़का इस्तिग़फ़ार करता है इसलिये यह दर्जा बढ़ा है।

इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत में हज़रत मुहम्मद स० का यह क़ौल है कि अल्लाह तआ़ला ने किसी ऐसे शख़्स को इस्तिग़फ़ार नहीं सिखलाया जिसकी तक़दीर में अ़ज़ाब लिख दिया गया हो

(अहयाउलउलूम, जिल्द अव्वल)

अहयाउलउलूम में इमाम गज़ाली र० ने यह वाक़िआ लिखा है कि एक अअ़राबी को किसी ने सुना कि वह कअ़बे के परदों से लिपटा हुआ यह दुआ कर रहा है ऐ अल्लाह! गुनाहों पर इसरार के बावुजूद मेरा इस्तिग़्फ़ार करना जुर्मे अज़ीम है और तेरे माफ़ी व करम की वुस्अ़त से वाक़िफ़ होने के बावुजूद नाख़ुश रहना भी कुछ कम जुर्म नहीं है तुझे मेरी कोई ज़रूरत नहीं मगर तू इसके बावुजूद मुझे अपनी मुसलसल नेमतों से नवाज़ रहा है और मैं अपनी बदबख़्ती के बाइस अपनी ज़रूरत के बावुजूद गुनाह करके तेरे दुश्मनों में शामिल हो रहा हूं, ऐ अल्लाह! तू वअ़दा करता है, तो पूरा भी करता है, तू माफ़ भी करता है मेरे गुनाहे अ़ज़ीम को, अपने अ़फ़्वे अ़ज़ीम की पनाह में ले ले या अरहमर्राहिमीन।

(٢٠٠) عن ابن عباس رضى الله عنهما قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من لزم الاستغفار جعل الله لهٗ من كُلِّ ضيقٍ مَخْرَجاً ومن كُلِّ هَمٍّ فرجاً ورزقهٗ من حيث لا يحتسب. (احمد، ابوداؤد، مشکوۃ شریف)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० बयान फ़रमाते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जो इस्तिग़्फ़ार को अपने ऊपर लाज़िम क़रार दे लेता है तो अल्लाह तआ़ला उसके लिये हर तंगी से निकलने की राह निकाल देता है और उसे हर रंज व ग़म से निजात देता है। नीज़ उसको ऐसी जगह से रिज़्क़ देता है जहां से उसे गुमान भी नहीं होता।

अलहम्दुलिल्लाह! तबलीग़ वाले हज़रात इस्तिग़्फ़ार का हुक्म भी करते हैं और इस्तिग़्फ़ार को अपने लिये लाज़िम भी करते हैं और उसका भी हुक्म अहादीस में वारिद है मगर अहादीस व मुहम्मद स० के दुश्मन तबलीग़ वालों को हदीस से दूर और मुहब्बते रसूल स० से दूर कहते हैं। ज़रा सच्चे दिल से देखो क्या

अब भी तबलीग़ वालों का अमल अहादीस व सुन्नत के ख़िलाफ़ लगता है। अगर मुवाफ़िके हदीस का नाम ही आप के नज़दीक ख़िलाफ़े हदीस या ख़िलाफ़े सुन्नत है तो वह कहना तुम्हें ही मुबारक हो और हमको तुम्हारा यह बेइन्साफ़ क़ौल हदीस की मुवाफ़क़त से बदल नहीं सकता और जो इसका दावा करते हैं कि हम तो अहादीस पर ही या सुन्नत पर ही अमल करते हैं तो लाओ अहादीस और साबित करो, अपने अअ़माल व अक़वाल पर अहादीस को, चन्द का ऐतिबार न होगा बल्कि अकसर और आ़म लोगों का उस पर अ़मल हो जैसे कि मैंने जो अहादीस पेश की हैं उन पर अकसर ही नहीं बल्कि अगर पूरे या कामिल कहूं तो मुबालग़ा न होगा तबलीग़ी हज़रात आ़मिल हैं और अल्लाह ख़ूब जानता है कि अहले तबलीग़ यानी देवबन्दी हज़रात कितने मुवाफ़िके कुरआन व हदीस हैं और दीगर तमाम फ़िरक़े कितने मुवाफ़िके हदीस हैं।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला हुज़ूर स० के क़रीब होगा

(۲۰۱) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اِن اَولى الناسِ بِیْ اكثرهم عَلیّ صلوٰة (ترمذی شریف،احیاء العلوم اول)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जो शख़्स ज़्यादा दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा वह मेरे ज़्यादा क़रीब होगा (यानी वह शख़्स अपने दुरूद की कसरत के ऐतिबार से क़रीब होगा)।

यही तबलीग़ वालों का क़ौल है कि कसरते दुरूद कुरबे रसूल है। लेकिन मैं आपको एक नुक्ता बता दूं वह यह कि जो लोग मसाजिद के अन्दर ज़ोर ज़ोर से चीख़ चीख़ कर मसाजिद की बेहुरमती करके सिर्फ़ एक या दो मरतबा दुरूद पढ़ते हैं क्या

यह पढ़ना करीब कर सकता है? जबकि तबलीग वाले हजरात यानी देवबन्दी दो–दो सौ मरतबा रोजाना दुरूद शरीफ पढ़ते हैं बताओ ज्यादा किसके दुरूद हैं? क्या इन चीख़ने वालों के या एक जगह पर बैठ कर सौ–सौ दो–दो सौ मरतबा पढ़ने वालों के। लेकिन इन लोगों की अक़ल पर शैतान के पर्दे पड़े हैं और यह हज़रात सिर्फ़ ज़ोर ज़ोर से एक या दो मरतबा दुरूद के पढ़ने को ही पता नहीं क्या तसव्वुर करते हैं। और वह भी इस तरह दुरूद पढ़ते हैं जिसमें शिर्क की भी मिलावट होती है। इस तरह 'अस्सलातु वस्सलामु अ़लैका या हबीबल्लाह' बता दो इन जाहिलों को अ़लैका और 'या' को यह हज़रात ऐन इबादत तसव्वुर करते हैं, जिस तरह ईसाई हज़रात हज़रत ईसा अ़लै० के बेटा जानने को ऐन शहादत और अहम अ़क़ीदा जानते हैं वही हाल इन जाहिलों और अल्लाह और मुहम्मद के दुश्मनों का है। अ़लैका में यह जो लफ़्ज़ (काफ़) है इसका तर्जुमा है 'तू' यानी जो मौजूद हो, यह हज़रात अल्लाह के साथ मुहम्मद को भी अल्लाह की तरह हर जगह पर हाज़िर जानते हैं बताओ फिर अल्लाह में और मुहम्मद स० में क्या फ़र्क़ है? अब बताओ क्या यह अल्लाह की सिफ़त नहीं है कि वह हर जगह हाज़िर है जब यह ख़ास अल्लाह की सिफ़त है तो फिर उसमें ग़ैर को दाख़िल करना क्या शिर्क न होगा? पहले शिर्क की तारीफ़ समझ लो फिर सच्चे दिल से फ़ैसला करना। (तारीफ़) अल्लाह की वहदानीयत के अन्दर और अल्लाह की मख़्सूस सिफ़ात के अन्दर किसी को शरीक करना यह शिर्क है शरीअ़त की इस्तलाह में। अब बताओ क्या यह कहना अलैका दुरुस्त होगा हुज़ूर अकरम स० के लिये, जब कि वह मदीना मुनव्वरा में हैं। हम मुहब्बत व इश्क़े रसूल के बिल्कुल भी मुख़ालिफ नहीं हैं बल्कि हम यहूदो नसारा की तरह मुबालगा

करने के मुख़ालिफ है क्योंकि हुज़ूर अकरम स० ने खुद अपनी शान में मुबालग़ा करने से मना फ़रमाया तो हम क्या मुबालग़ा करें। जबकि हमारे नबी स० बग़ैर मुबालग़े के तमाम आलम पर फ़ाइक़ हैं और अल्लाह के बाद आप स० का कोई मुक़ाबिल नहीं। क्या और मुबालग़ा करके तुम्हारी तरह अल्लाह की सिफ़ात में दाख़िल कर दें और हम भी मुशरिक हो जायें। किसी पर तअ़न व तशनीअ़ नहीं कर रहा हूं बल्कि हक़ की राह बता रहा हूं क्या यह मुबालग़ा नहीं है जो आप हज़रात अ़लैका कहते हो और ज़ोर ज़ोर से मसाजिद में दुरूद शरीफ़ पढ़ते हो क्या हमको मुहम्मद स० की मुहब्बत नहीं है अगर मुहब्बत न होती तो इस तरह लोगों के घरों पर जाकर हम उनकी कड़वी कसीली बातें क्यों सुनते क्या उससे हमको कोई मिठाई मिलती है, क्या हमको रुपये मिलते हैं। ख़ुदा की क़सम! हम अपने पैसे ख़र्च करते हैं और लोगों को दावत देते हैं जिस तरह हुज़ूर अकरम स० की सुन्नत थी। आप थोड़े ठंडे दिल से सोचें क्या तुम्हारे पास किसी सहाबी रज़ि० का या ताबईन में से किसी वली का कोई ऐसा अ़मल है जिस तरह तुम दुरूद चीख़ चीख़ कर मसाजिद में पढ़ते हो और अ़लैका का लफ़्ज़ कहते हो क्या तुम्हारे और हमारे इमाम अबू हनीफ़ा र० ने हदीस की रोशनी में कोई इस तरह का अ़मल किया है जिस तरह तुम करते हो क्या किसी सहाबी ने यह काम किया है जो तुम करते हो अब अगर हम इसको बिदअ़त या शिर्क मअ़ल्लाह कहते हैं तो तुम को क्यों बुरा लगता है? क्या हमारा दीन यह सिखाता है कि हम हदीस व कुरआन को छोड़ कर किसी छोटे मोटे आ़लिम की बातों पर अ़मल करें। अगर आप के दिल में यह ख़्याल आ रहा हो कि देवबन्दी भी इमाम अबू हनीफ़ा र० के क़ौल पर या हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहब थानवी र० या हज़रत

मौलाना रशीद अहमद साहब गंगोही र० के कौल पर अमल करते है। खुदा की क़सम! न मैं और न हमारे तमाम देवबन्दी और तमाम तबलीगी हज़रात उनके कौल पर इस वक़्त तक अमल करते हैं और न करेंगे। इन्शाल्लाह, जब तक उनकी बात पर कोई हदीस या कुरआन मौजूद न हो अगर हदीस भी न हो तो फिर क़यास करने का हुक्म भी हदीस से ही साबित है कि कुरआन और हदीस की रोशनी में क़यास कर सकते हो अगर कोई बात हमारे पास हो और उसकी दलील हदीस व कुरआन से हमारे पास न हो और वह बात दूसरे तमाम फिरक़ों से क़वी न हो तो फिर कहना। क्या हमारे लाखों मदारिस सिर्फ़ ऐसे ही हैं? नहीं। अल्लाह के बन्दो! हमें हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहब थानवी र० और हज़रत मौलाना रशीद अहमद साहब गंगोही र० और हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी र० से कोई तअल्लुक़ नहीं है मगर हदीस और कुरआन की वजह से। अगर अबू हनीफ़ा र० भी कुरआन के ख़िलाफ़ कहेंगे तो हम उनकी बात क़ियामत तक कुबूल नहीं करेंगे मगर उन्होंने तमाम बातें अहादीस के मुवाफ़िक़ कही हैं तो फिर मुख़ालफ़त हम किसके बल-बूते पर करें। यही हाल मौलाना अशरफ़ अली साहब र० और हज़रत मौलाना रशीद अहमद साहब गंगोही र० और हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी र० का है कि अगर यह भी कुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ कहेंगे तो ख़ुदा की क़सम क़ियामत नाज़िल हो जाये हम उनकी बात तस्लीम नहीं करेंगे। मगर उनका एक क़ौल भी कुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ नहीं है मगर जो लोग ग़लत साबित करते हैं उनसे ख़ुद पूछ लो क्या यह जो तुमने बयान किया वह सही है? और एक मिसाल पेश करता हूं हज़रत मौदूदी साहब देवबन्दी थे और पूरा काम उन्होंने देवबन्दियों के साथ ही किया

लेकिन जब उन्होंने तफ़सीर बिर्राय की राह इख़्तियार की और सहाबा रज़ि० पर उंगलियां उठायीं तो हमने उनकी मुख़ालफ़त की क्योंकि यह हमारे मुख़ालिफ़ नहीं हुए बल्कि कुरआन व हदीस के मुख़ालिफ़ हुए और हमने जिन हज़रात से भी मुख़ालफ़त व मुहब्बत की है वह सिर्फ़ अल्लाह व मुहम्मद स० के लिये की। खुद अपने लिये आज तक नहीं की। और इन्शाल्लाह न करेंगे।

बुरा न मानो तो एक हक बात कहता हूं वह यह कि मुज्तहिद के लिये जो शराइत उलमा–ए– उम्मत के पास मेहफ़ूज़ हैं जिसके हामिल हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा र० और इमाम मालिक र० और इमाम शाफ़ई र० और इमाम अहमद बिन हंबल और दीगर उ़लमा र० थे इन शराइत का हामिल मौदूदी साहब से लेकर आज तक एक भी नहीं गुज़रा। वल्लाह, मैं और एक बात कहता हूं इसको भी बुरा न मानना क्योंकि आपको भी हक़ ही की तलाश होगी और होनी भी चाहिये तो सुनो! आप लोगों ने हज़रत अलहाफ़िज़ुलहदीस ताजुलहिन्द सैय्यदुलमुफ़स्सिरीन वलमुहद्दिसीन हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी साहब का नाम सुना होगा जो हनफ़ी थे और देवबन्दी थे आपको हज़ारों कुतुब हिफ़्ज़ याद थीं। हाफ़िज़े के ऐतिबार से उनको एक तरफ़ रखा जाये और दूसरी तरफ़ मौदूदी साहब से लेकर आज तक के तमाम उ़लमा के इल्म को रखा जाये तो इन तमाम का इल्म हज़रत मौलाना अनवर शाह साहब कश्मीरी हनफ़ी देवबन्दी र० के इल्म की ज़कात निकालने के बराबर भी न होगा। बख़ुदा मगर उन्होंने कभी तफ़सीर बिर्राए नहीं की और न इज्तिहाद किया क्योंकि वह शराइत जो उ़लमा–ए–उम्मत के पास मेहफ़ूज़ हैं शायद कि तुमको वह शराइत पता भी न होंगे उनमें वह शराइत न थे जो एक मुज्तहिद के लिये ज़रूरी हैं तो बताओ फिर कौन है तुम में

से और गैर मुक़ल्लिदीन मे से जो इनसे ज़्यादा हदीस व कुरआन पर उबूर रखता हो। फिर भी तुम ने राहे हक़ को छोड़ कर नादुरुस्त राह की तरफ़ रुख़ किया। मेरा मक़सद किसी को ज़लील करना नहीं है बल्कि कम वक़्त में तमाम जमाअतों को देवबन्दी यानी तबलीग़ वालों की राहे हक़ बयान करना है इन्शाल्लाह आगे चलकर बात और तफ़सील से होगी। ख़ैर तबलीग़ वालों का क़ौल हदीस के मुवाफ़िक़ है।

सबसे बड़ा बख़ील कौन

(٢٠٢) عن عليٌّ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم البخيل من ذُكِرْتُ عندهٗ ولم يصل عَلَيَّ. (احياء العلوم، مشكوٰة)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जिस शख़्स के सामने मेरा तज़्किरा आया और उसने मुझ पर दुरूद शरीफ़ नहीं भेजा तो वह बख़ील है।

(٢٠٣) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم امرى من البخل اَنْ اُذكر عنده فلا يُصَلِّيْ. (احياء العلوم جلد اول)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया आदमी के बख़ील होने के लिये इतना ही काफ़ी है कि उसके सामने मेरा ज़िक्र हो ओर वह दुरूद न पढ़े।

बेशक उस शख़्स से बख़ील भी कौन हो सकता है जिसके सामने आप स० का ज़िक्रे मुबारक आया हो मगर फिर भी वह अपनी ज़बान को हरकत देना गवारा न करता हो। वह बड़ा शक़ी शख़्स होगा जो अपने मोहसिने अअ़ज़म पर भी चन्द कलिमात कहने को दुश्वार जाने। अल्लाह तआला मुसलमानों को ज़्यादा से ज़्यादा दुरूद शरीफ पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमायें।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत तबलीग़ वाले यह बयान करते हैं

(۲۰۴) عن انسؓ قال قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم من صلی علیَّ صلواۃ واحدۃ صلی اللّٰہ عشر صلواۃ وحُطت عنہ عشر خطیئات ورفعت لہ عشر درجات۔ (مشکوٰۃ)

(۲۰۵) من صلی عَلَیَّ مِنْ اُمَّتِی کتبت لہ عشر حسنات محیت عنہ عشر سیئات۔ (احیاء العلوم جلد اول)

मेरी उम्मत में से जो शख़्स मुझ पर दुरूद पढ़ेगा उसके लिये दस नेकियां लिखी जायेंगी और उसकी दस बुराइयां मिटा दी जायेंगी।

और दूसरी रिवायत में उसके लिये दस दरजात बुलन्द कर दिये जाते हैं।

तबलीग़ वाले हज़रात दुरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल में इन तीन चीज़ों को बयान करते हैं कि दस गुनाह मुआफ़ होंगे और दस नेकियां हासिल होंगी और दस दरजात बुलन्द होंगे यह जुमला तबलीग़ वालों का साबित मिनलहदीस है।

(۲۰۶) قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم من صلی عَلَیَّ صَلَّتْ علیہ الملائکۃُ ما صلی فلیقل عبد من ذلک او لیکثر۔ (احیاء العلوم جلد اول)

रसूलुल्लाह स० ने फ़रमाया जो शख़्स मुझ पर दुरूद पढ़ता है फ़रिश्ते उसके हक़ में उस वक़्त तक दुआए रहमत करते हैं जब तक वह अपने अ़मल में मसरूफ़ रहता है।

और एक और हदीस पेशे ख़िदमत है:

(۲۰۷) من صلی علَیَّ فی کتاب لم تزل الملائکۃ یستغفرون لہ ما دام اسمی فی ذلک الکتاب۔ (طبرانی، احیاء العلوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जो शख़्स किसी किताब में

(तहरीरी तौर पर) मुझ पर दुरूद लिखे फ़रिश्ते उसके लिये उस वक़्त तक दुआए रहमत करते रहेंगे जब तक कि मेरा नाम इस किताब में रहेगा। (अहयाउलउ़लूम जिल्द अव्वल)

यह हदीस सुबूते फ़ज़ीलत के लिये लिख रहा हूं अगरचे इसकी सनद ज़ईफ़ है और फ़ज़ाइल में ज़ईफ़ हदीस भी दुरुस्त है यानी यह फ़ज़ाइल जो बयान किये जाते हैं अल्लाह उससे कई गुना ज़्यादा देने पर क़ादिर है मगर मसाइल में दुरुस्त नहीं जैसे कि फ़ुक़हा और मुहद्दिसीन का क़ौल है।

और दुरूद की इससे बढ़ कर और क्या फ़ज़ीलत हो सकती है कि ख़ुद अल्लाह तआला ने दुरूद शरीफ़ का हुक्म फ़रमाया कि मेरे हबीब पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो जब अल्लाह ने कह दिया तो उससे बढ़ कर और कोई फ़ज़ीलत नहीं है। और अगर कोई शख़्स दुरूद शरीफ़ का मुनकिर हो जाये और यह कह दे कि दुरूद पढ़ना दुरुस्त नहीं या जाइज़ नहीं या मैं इसको सही नहीं जानता हूं तो ऐसा शख़्स मुनकिरे क़ुरआन होने की वजह से काफ़िर हो जायेगा अगर अब भी तुम कहो कि हम रसूलुल्लाह स० से मुहब्बत नहीं करते तो हक़ जानो यह तुम्हारा ज़ुल्म है और ज़ुल्म की बक़ा नहीं है।

तवक्कुल का बयान और तबलीग़ वालों का यह वाक़िआ बयान करना

(٢٠٨) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال دخل رجلٌ علی اهلِه فلَمَّا رای مابهم مِنَ الحاجَةِ خرج الی البَرِیَّةِ فَلَمَّا رأت إمْرَأتُهٗ قامَتْ الی الرَّحیٰ فوضَعَتْها والی التَّنورِ فسجَّرَتْهُ ثُمَّ قالت اَللّٰهُمْ ارْزُقنا فنظرَتْ فاذا الجفنة وقد امتلأت قال وذهبتُ الی التَّنُّوْرِ فوجدتُهٗ مُمْتَلِئاً قال فرجع الزوجُ قال اصبتم بعدی شیئاً قالت إمْرَأتُهٗ نَعَمْ من رَّبِّنا وقال الی الرَّحٰی فذکرَ ذلك

للنبيّ صلى الله عليه وسلم فقال اما انّهٗ لو لم ترفعها لم تزل تدور الى يوم القيامة. (مشكوٰة، احمد)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं कि एक शख़्स (का वाक़िआ है कि) वह एक दिन अपने घर वालों के पास आया तो उसने घर वालों पर मोहताजगी और फ़ाक़ा व फ़िक्र के आसार देखे वह यह देख कर अपने ख़ुदा के हुज़ूर अपनी हाजात पेश करने और यकसूई के साथ उसकी बारगाह में अ़र्ज़ व मुनाजात करने के लिये जंगल की तरफ़ चला गया। इधर जब उसकी बीवी ने यह देखा कि शोहर के पास कुछ नहीं है और वह शर्म की वजह से घर से बाहर चला गया है तो वह उठी और चक्की के पास गई। चक्की को उसने अपने आगे रखा उसने चक्की के ऊपर का पाट नीचे के पाट पर रखा और या यह मअ़ना होंगे कि उसने उम्मीद में चक्की को साफ़ किया और तैय्यार करके रख दिया कि शोहर बाहर से आयेगा तो कुछ लेकर आयेगा तो उसको पीस कर रोटी पका लूंगी। फिर वह तनूर के पास गई और उसको गर्म किया उसके बाद ख़ुदा से यह दुआ की। इलाही हम तेरे मोहताज हैं तेरे ग़ैर से हमने अपनी उम्मीद मुनक़तअ़ कर ली है। तू ख़ैरुर्राज़िक़ीन है अपने पास से हमें रिज़्क़ अ़ता फ़रमा फिर जो उसने नज़र उठाई तो क्या देखती है कि चक्की का गज़न्द आटे से भरा हुआ है। रावी कहते हैं कि इसके बाद जब वह आटा गूंध कर तनूर के पास गई ताकि इसमें रोटियां लगाये तो तनूर को रोटियों से भरा हुआ पाया (यानी ख़ुदा की क़ुदरत ने यह करिश्मा दिखाया कि ख़ुद उस आटे की रोटियां बनकर तनूर में जाने लगीं या कि आटा तो अपनी जगह गरान्द में रहा और तनूर में ग़ैब से रोटियां नमूदार हो गयीं। रावी कहते हैं कि कुछ देर के बाद जब ख़ाविन्द (बारगाहे रब्बुलइ़ज़्ज़त में अ़र्ज़ व मुनाजात और

दुआ से फ़ारिग़ होकर) घर आया तो बीवी से पूछा कि क्या मेरे जाने के बाद तुम्हें (कहीं से) कुछ (ग़ल्ला वग़ैरा) मिल गया था कि तुमने यह रोटियां तैय्यार कर रखी हैं। बीवी ने कहा कि हां यह हमें खुदा की तरफ़ से मिला है (यानी आम तरीक़े के मुताबिक़ किसी इन्सान ने उन्हें नहीं दिया है बल्कि यह रिज़्क़ महज़ ग़ैब से अल्लाह तआ़ला ने अ़ता फ़रमाया है) ख़ाविन्द ने यह सुना तो उसको बहुत तअ़ज्जुब हुआ और वह उठ कर चक्की के पास गया और चक्की को उठाया ताकि उसका करिश्मा देखे। फिर जब इस वाक़िए का ज़िक्र नबी स० के सामने किया गया तो आप स० ने (पूरा क़िस्सा सुनकर) फ़रमाया जान लो इसमें कोई शुबा नहीं कि अगर वह शख़्स उस चक्की को उठा न लेता तो वह चक्की मुसलसल क़ियामत के दिन तक गर्दिश में रहती और उससे आटा निकलता रहता।

यह वाक़िआ हुज़ूर अकरम स० के ज़माने में पेश आया था और तबलीग़ वाले हज़रात यह वाक़िआ बयान करते हैं मगर लोगों के ज़हनों में यह ख़ल्जान बाक़ी रहता है कि पता नहीं यह वाक़िआ हदीस में भी है या सिर्फ़ यह लोग हदीस कहकर छोड़ देते हैं। यह वाक़िआ हदीस में वारिद है। मिश्कात शरीफ़ देख लेना और यह अल्लाह से कोई बईद बात नहीं है इस तरह के बहुत से वाक़िआत अहादीस में मौजूद हैं।

तवक्कुल करने वालों की ख़ुशनसीबी

(٢٠٩) عن عمر بن الخطاب رضى الله عنه قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول لو انكم تتوكلون على الله حق توكله لرزقكم كما يرزق الطير تغدو خماصاً وتروح بطانا. (ترمذى، مشكوة)

हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रज़ि० कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह स० को यह फ़रमाते हुए सुना कि अगर तुम अल्लाह तआ़ला पर

तवक्कुल व ऐतिमाद करो जैसा कि तवक्कुल का हक है तो वह तुम्हे इसी तरह रोज़ी देगा जिस तरह कि परिन्दो को रोज़ी देता है वह (परिन्दे) सुबह को भूके निकलते हैं और शाम को पेट भर कर (अपने घोंसलों) में वापस आते हैं।

दोस्तो! यह बात ज़हन में रखो कि काम करना या नौकरी करके रुपया कमाना तवक्कुल के मनाफ़ी नहीं है बल्कि काम करते वक़्त काम के होने का अक़ीदा न हो बल्कि काम को अस्बाब के दर्जे में रखकर यह अक़ीदा रखना कि अल्लाह तआ़ला करने वाला है यह तो सिर्फ़ अस्बाब हैं इन चीज़ों से कुछ नहीं होता बल्कि सिर्फ़ देने वाली ज़ात अल्लाह की है उसका नाम तवक्कुल है न कि अस्बाब को तर्क करने का नाम तवक्कुल है। लेकिन अगर यह ऐतिराज़ हो कि हमने बहुत से वलियों के वाक़िआत सुने हैं उसमें बताया गया है कि वह सिर्फ़ अल्लाह ही पर तवक्कुल करते थे और काम कुछ नहीं करते थे। जवाब यह है कि दोस्तो! आपका कहना बिल्कुल दुरुस्त है मगर उनका अक़ीदा और उनका तवक्कुल इस दर्जे तक जा चुका था जो तवक्कुल अल्लाह को मेहबूब है और अगर आपका भी अल्लाह से इतना पुख़्ता यक़ीन हो तो कोई बईद बात नहीं है। जैसा कि एक तबलीग़ वाले शख़्स का ही वाक़िआ नक़ल किया गया है। अ़ल्लामा अब्दुश्शकूर पाकिस्तानी अपनी किताब 'ख़ुत्बाते दैनपूरी' जिल्द दोम में लिखते हैं : एक तबलीग़ वाला शख़्स मस्जिद में रोज़ाना लोगों को यह बयान देता था कि हर चीज़ अल्लाह के हुक्म से काम करती है और कोई चीज़ बग़ैर हुक्मे ख़ुदा के कुछ नहीं कर सकती जैसा कि कलिमे के बयान में तबलीग़ी हज़रात कहते हैं वह भी बयान करता था लेकिन एक दिन यह वाक़िआ पेश आया कि मस्जिद के पास एक समोसे वाले की दुकान थी

और वह उस तबलीग़ वाले का बयान सुना करता था लेकिन एक दिन उसने यानी दुकान वाले ने कहा कि ऐ जवान! देख यह समोसे का तेल जो जोश मार रहा है। अगर तू अपने बयान में सच्चा है तो इस तेल में हाथ डाल कर दिखा तब मैं तुझको और तेरे बयान को सच जानूंगा कि हर चीज़ अल्लाह के हुक्म से होती है उस जवान ने अल्लाह का नाम लिया और अपना हाथ उस जोश मारते हुए तेल में डाल दिया। और दो तीन मिनट अन्दर ही रखा जब मौजूदा लोगों ने यह देखा तो उनमें से कुछ लोग काफ़िर भी थे उन्होंने वहीं पर ईमान क़ुबूल कर लिया और कलिमा पढ़ लिया। देखो यह है क़ुव्वते ईमान (ख़ुत्बाते दैनपूरी जिल्द न० 2 पर) यह वाक़िआ मनक़ूल है। ख़ैर, अगर इस तरह यक़ीन हो तो फिर आज भी कर सकते हैं क्योंकि जब बन्दे का यक़ीन ऊंचा और बुलन्द हो जाता है तो उसको सिर्फ़ अल्लाह ही नज़र आता है इस क़िस्म के बहुत से वाक़िआत तबलीग़ वालों से हुए हैं। नीज़ इस तरह के वाक़िआत आदते अल्लाह से नहीं बल्कि ख़िलाफ़े आदत के तौर पर होते हैं और अब रहा वह मस्अला जो तबलीग़ वाले करते हैं कि तशकील के वक़्त ज़बरदस्ती करना दुरुस्त है या ना दुरुस्त, हम इसको इन्शाल्लाह आगे बयान करेंगे लेकिन इतनी बात तो यहीं पर सुन लो कि तबलीग़ वाले यह जो कहते हैं कि जमाअत में चलो कारोबार तो क़ियामत तक वक़्त नहीं देगा। और तबलीग़ वालों का यह कहना कि अल्लाह पर यक़ीन रखो सब दुरुस्त हो जायेगा रोज़ी देने वाले अल्लाह तआला हैं। जिस तरह अल्लाह परिन्दों को खिलाने पर क़ादिर है वह हमको भी खिला सकता है। बस आप अपनी नमाज़ और चन्द दीनी मसाइल दुरुस्त करने के लिये हमारे साथ वक़्त लगाओ अल्लाह सब आसान कर देगा यह कहना तबलीग़

वालों का कि उस आदमी को तवक्कुल पर लाने के लिये नहीं होता है बल्कि उसके ईमान को ग़ैरत दिलानी मक़सूद होती है कि बेशक अल्लाह तआला मुझको भी पालने पर क़ादिर है। जिस तरह वह परिन्दों को पालता है क्या तेरा ईमान उनसे भी गया गुज़रा है अब वह चालीस दिन के लिये नाम लिखाता है फिर आप देखते हैं कि एक मरतबा जब वह तबलीग़ में जाता है तो फिर उसके दिल में हराम की नफ़रत और गुनाहों से दूरी पैदा हो जाती है चाहे पूरी तरह न हो थोड़ी बहुत ही सही और नमाज़ की पाबन्दी आ जाती है और सुन्नत वाला लिबास आ जाता है और दाढ़ी आ जाती है फिर वह दुनिया के साथ दीन को भी दुरुस्त करता है और बअ़ज़ लोग जाहिलाना कलाम करते हुए यह कहते हैं कि तबलीग़ वाले उस शख़्स को भी जमाअ़त में ले जाते हैं जिस पर क़र्ज़ होता है। क्या यह दुरुस्त है? मैं यह कहता हूं आदमी मौत तक भी क़र्ज़ से ख़ाली नहीं होता है तो फिर क्या किया जाये इसको बद्दीन ही मरने दें और बे-नमाज़ी ही मरने दें। मैं जो आज आ़लिमियत के आख़री साल में हूं और दारुलउ़लूम वक़्फ़ देवबन्द में दर्स हासिल कर रहा हूं। मेरा ख़ानदान भी मुसलमान होने के बावुजूद शिर्क के तरीक़ों पर था। यानी क़ब्र को पूजता था मगर मैंने बरेलवियत को छोड़कर देवबन्दियत को इख़्तियार किया जो कि राहे हक़ है। और किताबो सुन्नत के ऐन मुताबिक़ है और यह तमाम के तमाम का सिला तबलीग़ वालों को हासिल हुआ है कि उन्होंने मेरे वालिद को ज़बरदस्ती जमाअ़त में भेजा और दीन सिखाया अ़क़ीदा दुरुस्त कराया यानी हम बरेलवी थे मगर आज आप के सामने हैं बताओ क्या यह तरीक़ा ग़लत है अगर हो तो तुम्हारे लिये होगा हमारे लिये नहीं।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि रिज़्क़ इन्सान की तलाश में रहता है

(۳۱۰) عن ابی الدرداء رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ان الرزق لیطلب العبد کما یطلبہ اجلہ. (ترمذی،مشکوۃ)

हज़रत अबुदर्दा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया इसमें कोई शक नहीं कि रिज़्क़ बन्दे को इस तरह तलाश करता है जिस तरह इन्सान को उसकी मौत ढूंडती है इस रिवायत को साहबे मिश्कात शरीफ़ ने नक़ल किया है।

मतलब यह है कि रिज़्क़ और मौत दोनों का पहुंचना ज़रूरी है कि जिस तरह कि इस बात की कोई हाजत नहीं होती कि कोई शख़्स अपनी मौत को ढूंडे और उसको पाये बल्कि मौत उसके पास हर सूरत में और यक़ीनी तौर पर आती है। इसी तरह रिज़्क़ का मामला है कि इसको तलाश करने की कोई ज़रूरत नहीं है बल्कि जो कुछ मुक़द्दर में होता है वह हर सूरत में लाज़मी तौर पर पहुंचता है चाहे उसको ढूंडा जाये या न ढूंडा जाये और इसका मतलब हरगिज़ यह नहीं है कि ढूंडने की सूरत में रिज़्क़ नहीं मिलता बल्कि हक़ीक़त यह है कि हुसूले रिज़्क़ के लिये सई व तलाश भी तक़दीरे इलाही और निज़ामे क़ुदरत के मुताबिक़ है। अलबत्ता जहां तक क़ल्बी ऐतिमाद व भरोसे का तअल्लुक़ है वह सिर्फ़ खुदा की ज़ात पर होना चाहिये न कि सई व तलाश पर। ख़ैर तबलीग़ वालों का यह क़ौल कि रिज़्क़ इन्सान को ढूंडता है साबित हो गया इस हदीस से।

तबलीग़ वालों के इज्तिमाअ़ का सुबूत

(۳۱۱) عن ابی سعید الخدری رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ

صلی اللہ علیہ وسلم خیر المجالس اوسعہا (ابوداؤد، مشکوٰۃ شریف)

हजरत अबू सईद खुदरी रजि० कहते है कि हुजूर अकरम स० ने फरमाया बेहतर मजलिस (यानी लोगो को जमा करने की जगह यानी इज्तिमाअगाह) वह है जो कुशादह फराख़ जगह में मुनअकिद की गई हो।

मतलब यह है कि अगर कोई मजलिस वअज़ और नसीहत के लिये मुनअक़िद की जाये तो उसको कुशादह जगह में रखना चाहिये। अल्हमदुलिल्लाह! देवबन्दी यानी तबलीग़ी हज़रात का जितना अ़मल इस पर है यानी बड़ी जगहों में इज्तिमाअ़ क़ायम करने का इतना अ़मल किसी और फ़िरक़े का नहीं है खुद आज से तीन साल पहले हमारी राजधानी बम्बई में एक इज्तिमाअ़ हुआ था जिसकी तअ़दाद बीस लाख के क़रीब बयान की गई। बताओ क्या आज तक किसी फ़िरक़े ने इतना बड़ा इज्तिमाअ़ किया है क्या इससे आधा भी किया है चलो पांच लाख का भी किया है यही बातिल होने की अ़लामत है तुम ऐलानात पर ऐलानात करते हो इश्तहारात लगाते हो तब भी बीस तीस हज़ार लोग जमा होते हैं और तबलीग़ वाले न कभी ऐलान करते हैं और न इज्तिमाअ़ के लिये अस्फ़ार करते हैं और न इश्तहार लगाते हैं मगर फिर भी किसी इज्तिमाअ़ में लाखों से कम कभी अफ़राद जमा नहीं होते। तुम में और उनमें क्या फ़र्क़ है बस फ़र्क़ इतना है कि अल्लाह की मदद का वअ़दा हक़ वालों के साथ है। बातिल और ग़ैर हक़ वालों के साथ नहीं। और एक साल में सिर्फ़ एक ही इज्तिमाअ़ नहीं होता है मुतअ़द्दद जगहों पर साल में हज़ारों इज्तिमाआ़त मुनअ़क़िद होते हैं। जब मैं मरकज़ निज़ामुद्दीन में तालीम हासिल कर रहा था उस वक़्त मुझको पता चला कि कितने इज्तिमाआ़त की कारगुज़ारी मरकज़ में आती है अब आप ही बताओ कि हक़ पर कौन है?

तबलीग़ वाले कहते हैं कि बयान में मिलकर बैठो यह सहाबा रज़ि० का अ़मल है

(٢١٢) عن جابر بن سمرة قال جاء رسول الله صلى الله عليه وسلم واصحابهٗ جُلُوسٌ فقال مالى اراكم عِزِين۔ (ابوداؤد، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत जाबिर बिन समरा रज़ि० कहते हैं कि (एक दिन) रसूलुल्लाह स० घर से बाहर तशरीफ़ ला रहे थे जबकि (मस्जिदे नबवी) में आप स० के सहाबा रज़ि० इधर उधर बैठे हुए थे आप स० ने उनको इस तरह बैठे हुए देख कर फ़रमाया कि क्या बात है कि मैं तुम लोगों को मुतफ़र्रिक़ व मुन्तशिर देख रहा हूं।

ग़ज़ीन असल में गुज्जह की जमअ़ है जिसके मअ़ना लोगों की जमाअ़त के हैं लिहाज़ा जब हुज़ूर अकरम स० ने सहाबा रज़ि० को अलग अलग बैठा हुआ देखा जो एक दूसरे से अ़लैहदगी नफ़रत का मोजिब होता है इसलिये हुज़ूर अकरम स० ने मुन्तशिर होने को पसन्द नहीं फ़रमाया चाहे सीखने सिखाने की मजलिस हो या वअ़ज़ व नसीहत की मजलिस हो और इस वजह से तबलीग़ वाले बयान में मिलकर बैठने को सहाबा रज़ि० का तरीक़ा बयान करते हैं जो बिल्कुल हक़ है। और यही अख़लाक़ी तौर पर दुरुस्त है।

क्या तबलीग़ी हज़रात ज़बरदस्ती करते हैं

मोअ़तरिज़ की दलील:

لَآ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ (الآيۃ پ٣)

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ज़बरदस्ती नहीं दीन के मआ़मले में (मुराद है काफ़िर को ज़बरदस्ती कलिमा न पढ़ाओ इसलिये कि) बेशक जुदा हो चुकी है हिदायत गुमराही से (यानी कुफ़्र ईमान से साफ़ तौर पर जुदा हो चुका है)।

लगता है कि मोअतरिज़ ने तफ़सीर नहीं पढ़ी है अगर पढ़ी भी होगी तो आयत का मिस्दाक़ पता न होगा ख़ैर, अब ग़ौर करना। पहले आप के सामने बन्दों की चार क़िस्में बयान करता हूं (1) इक़रारे कलिमा (2) लवाज़िम कलिमा (3) हक़ीक़ी गुलामी (4) इक़रारे गुलामी, हर एक की पहले तारीफ़ देखिये।

(1) इक़रारे कलिमा, यानी काफ़िर का कलिमा पढ़ कर यह इक़रार करना कि मैं तेरा ग़ुलाम हूं तू मेरा मअ़बूद है मुहम्मद स० मेरे रसूल और नबी हैं मैं तेरे और तेरे नबी के कलाम व अहकाम को बजा लाने की ज़िम्मेदारी क़ुबूल करता हूं और मैं वअ़दा करता हूं तेरे और तेरे नबी की इत्तिबाअ़ करने की कलिमा पढ़ कर।

(2) लवाज़िम कलिमा: यानी यह इस्लाम से अहकामे इस्लाम की तरफ़ आने का नाम है जैसे कलिमे के बाद नमाज़ का पढ़ना, रोज़ा रखना, क़ुरआन सीखना, सुन्नत पर चलना, मुसलमान भाइयों की दुनयवी व उख़रवी ख़ैर की कोशिश करना बक़द्रे ताक़त। यह हैं लवाज़िमे कलिमा।

(3) हक़ीक़ी ग़ुलामी: इसका मतलब यह है कि तमाम मख़्लूक़ अल्लाह की हक़ीक़ी तौर पर ग़ुलाम है चाहे इक़रार करे या न करे जैसे कि काफ़िर इक़रार नहीं करते मगर वह ग़ुलाम ज़रूर हैं मगर हक़ीक़ी हैं इक़रारी नहीं।

(4) इक़रारे ग़ुलामी: इसका मतलब यह है कि बन्दा ख़ुदा का ग़ुलाम तो था और है मगर जब उसने कलिमा पढ़ लिया तो अब वह हक़ीक़ी ग़ुलामी के साथ इक़रारी ग़ुलामी को भी क़ुबूल कर रहा है कि मैं तेरा ग़ुलाम तो था ही मगर अब इक़रारे ग़ुलामी भी कर रहा हूं कि तेरे तमाम अहकाम को बजा लाऊंगा नाफ़रमानी न करूंगा जब आप ने इन चार क़िस्मों की इजमालन व तफ़सीलन तारीफ़ सुन ली है तो अब आएं, असल बहस की

तरफ, और मुझको बताये कि यह आयत इन चार किस्मों में से किसके लिये नाज़िल हुई। जवाब न आप कहो और न मैं कहता हूं बल्कि खुद कुरआन से पूछो तो वह बता रहा है कि रुश्द यानी मुसलमान का मज़हब और गैय्य यानी काफ़िरों का मज़हब दोनों साफ़ तौर पर जुदा हो चुके हैं अब गैय्य को यानी काफ़िरों को रुश्द की तरफ़ जबरदस्ती न बुलाओ उन पर ज़बरदस्ती जाइज़ नहीं। क्योंकि अब अल्लाह ने अपने दीन को आलम पर रोज़े रोशन की तरह चमका दिया है तो कुरआन के इस जवाब से मालूम हुआ कि अल्लाह ने इन चार क़िस्मों में से दो क़िस्मों की नफ़ी की है और दो क़िस्में सही सालिम बाक़ी हैं वह दो क़िस्में कौनसी हैं जिन पर ज़बरदस्ती से कुरआन ने मना किया है वह नम्बर 1- यानी इक़रारे कलिमा और नम्बर 2- यानी हक़ीक़ी गुलामी। उनसे ज़बरदस्ती करने से मना किया कि हक़ीक़ी गुलामी यानी काफ़िर को इक़रारे कलिमा न कराओ यानी ज़बरदस्ती कलिमा मत पढ़ाओ अब फ़िलहाल इतना समझ लो कि काफ़िरों से ज़बरदस्ती करने से कुरआन ने मना किया। अब रहा मसला न० 2- यानी लवाज़िमे कलिमा और न० 4- यानी इक़रारे गुलामी यानी अब यह बात बाक़ी रही कि जिस शख़्स ने कलिमा पढ़ कर इबादत और ताबेदारी को अपने ऊपर लाज़िम किया हो क्या उस पर ज़बरदस्ती जाइज़ है? क्योंकि इस आयत का काम सिर्फ़ यह था कि वह यह बता दे कि काफ़िरों को ज़बरदस्ती उनके मज़हब से खींच कर अपने इस्लाम में न लाओ लेकिन जो मज़हबे इस्लाम को कुबूल करने वाले हैं और नौकरी का इक़रार कर चुके हैं क्या उन पर ज़बरदस्ती जाइज़ है या नहीं। आयत इस मस्अले पर ख़ामोश है। अब देखो हदीस क्या कहती है जब हदीस की तरफ़ नज़र डाली गई तो हदीस ने कहा कि इसका जवाब मेरे पास है

और हदीस कुरआन की तफ़सीर है जैसा कि उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है अब देखो हदीस क्या कह रही है तबलीग़े इस्लाम में एक हद तक ज़बरदस्ती जाइज़ है। हदीस शाहिद है।

इस्लाम में एक हद तक ज़बरदस्ती जाइज़ है

(۲۱۳) عن ابی سعید الخدری رضی اللہ عنہ عن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال من رای منکم منکراً فلیغیرہ بیدہ فان لم یستطع فبلسانہ فان لم یستطع فبقلبہ و ذلک اضعف الایمان (مسلم، مشکوۃ)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया तुम में से जो शख़्स किसी ख़िलाफ़े शरअ़ अम्र को देखे तो उसको चाहिये कि उसको उपने हाथों से बदल डाले (यानी ताक़त के ज़रिये उस ख़िलाफ़े शरअ़ काम को ख़त्म कर दे) (जैसे घर वाले और मातहत हज़रात) अगर हाथों से रोकने की ताक़त न हो तो फिर ज़बान से उस फ़ेअ़ल को जो ख़िलाफ़े शरअ़ है, रोक दे (जैसे कि वह हज़रात जो आपकी बात सुनते हैं और आपको उनसे कोई जानी ख़तरा न हो इस क़िस्म के लोग दुनिया में 80 फ़ीसद हैं जैसे तबलीग़ वाले करते हैं) और अगर ज़बान से भी कहने की ताक़त न हो तो कम अज़ कम दिल में उस फ़ेअ़ल को बुरा जाने और यह ईमान का सबसे कम दर्जा है (जैसे कि हुक्मरां और बदमआ़श क़िस्म के लोग जिनसे नुक़सान का ख़ौफ़ हो उस वक़्त कम से कम उस फ़ेअ़ल को ग़लत जाने कि यह ग़लत काम कर रहा है)।

हां! मोअ़तरिज़ साहब बहुत वज़ाहत करनी पड़ी। ख़ैर जो आसानी से न समझे उसको एक चीज़ समझाने में ताख़ीर होती है लेकिन अगर अब भी आप न समझें तो मैं कुछ नहीं कहूंगा बल्कि इस आयत पर इत्मिनान करूंगा कि

ختم اللّٰہ علی قلوبہم و علی سمعہم

अल्लाह ने उनके दिलो पर मोहर लगा दी है। खैर हदीस से जो बात साफ हुई उसको देखिये हदीस मे है من رای منکم कि तुम मे से जो भी गलत कौल व फेअल को देखे उस पर ज़रूरी है कि इन तीन तरीकों में से किसी एक तरीके को इख़्तियार करे यह फ़र्ज़ है कि अगर आपको इल्म है और ताकत भी है हाथ या ज़बान से रोकने की तो उस ख़िलाफे शरअ फेअल से मुसलमानों को रोको। हां बाकाअेदा काज़ी होना और कुरआन व हदीस से इस्तिदलाल के तौर पर मसाइल को साबित करके लोगों को मअरूफ का हुक्म देना यह फ़र्ज़े किफ़ाया है और आम तौर पर जो ग़लत फेअल व कौल से रोका जाता है वह हर एक पर ज़रूरी है क्योंकि इन तीन किस्मों को अमल में लाना दुश्वार नहीं है। हर एक इस पर कादिर है हां कुरआन की आयत के ज़रिये या हदीस के ज़रिये मसाइल व अहकाम को बयान करना फ़र्ज़े किफ़ाया है क्योंकि यह काम आसान नहीं बल्कि बारह या तेरह साल लगाने के बाद आदमी मुफ़्ती बनता है लेकिन कोई दोस्त नमाज़ न पढ़े तो क्या तुम यह कह कर छोड़ दोगे कि यह फ़र्ज़े किफ़ाया है हरगिज़ नहीं। कल क़ियामत के दिन इसका जवाब देना होगा जैसा कि हदीस में है।

(۲۱۳) قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم کُلُّکُمْ رَاعٍ وَکُلُّکُمْ مسئول عن رَعِیَّتِہ (مشکوٰۃ شریف، بخاری ثانی)

कि तुम में से हर एक ज़िम्मेदार है एक दूसरे का और तुम में से हर एक को जवाब देना होगा अपने मातहतों का।

बताओ क्या अब भी तबलीग़ फ़र्ज़े किफ़ाया है अगर हो तो हम इस हदीस पर अमल करते हुए फ़र्ज़े ऐन कहते हैं बाद ताकत के नमाज़ न पढ़ने वालों को नमाज़ की तरफ़ दावत देना और

हराम काम करने वालों को ताक़त के बक़द्र रोकना यह फ़र्ज़ है और बाक़ाएदा मुफ़्तियों के तर्ज़ पर शरई फ़ैसला करना क़ुरआन और हदीस की रोशनी में फ़ैसला करना यह मशक़्क़त का काम है इसलिये यह फ़र्ज़े किफ़ाया है और तबलीग़ वाले जो करते हैं वह क़ुरआन और हदीस की रोशनी में। जिस तरह एक क़ाज़ी फ़ैसला करता है उसकी तरफ़ दावत नहीं देते हैं बल्कि लवाज़िमे कलिमा की तरफ़ दावत देते हैं और एक मिसाल से समझो कि क़ुरआन ने दो क़िस्मों से मना किया है एक यह कि ज़बरदस्ती कलिमे का इक़रार कराना जाइज़ नहीं और हक़ीक़ी बन्दे को इक़रारी बन्दा ज़बरदस्ती बनाना जाइज़ नहीं (यानी काफ़िर को) और दो क़िस्में बाक़ी रह गई थीं। एक लवाज़िमे कलिमा और दूसरी इक़रारी गुलामी। यहां सवाल हुआ था कि क्या उन पर ज़बरदस्ती करनी जाइज़ है? (यानी मुसलमानों पर) हदीस ने कहा जब कि बन्दा मुसलमान हो गया और अपनी गुलामी और नौकरी का इक़रार कर चुका है अब उस पर ज़बरदस्ती एक हद तक जाइज़ है क्योंकि उसने अल्लाह से वअ़दा किया है इबादत व ताअ़त के करने पर उसको दावत देना हदीस से साबित है जैसा कि बअ़ज़ जाहिल कहते हैं कि मुसलमानों को दावत देने की क्या ज़रूरत है वह कलिमा पढ़ चुके, मैं कहता हूं क्या इस्लाम सिर्फ़ कलिमा पढ़ने का नाम है या और कुछ लवाज़िमात भी हैं और जो लवाज़िमात हैं उनकी दावत देना तबलीग़ के ज़रिये और मदारिस में तालीम के ज़रिये ज़रूरी है ख़ैर देखो आपको मालूम हुआ कि काफ़िर हक़ीक़त के ऐतिबार से हमारी तरह अल्लाह का बन्दा है मगर इक़रारी नहीं उस पर अल्लाह ने ज़बरदस्ती करने से मना किया है मगर बअ़ज़ मवाक़ेअ़ पर अल्लाह ने ज़रूरतन ज़बरदस्ती का भी हुक्म दिया था क्योंकि वक़्त के साथ हालतें भी बदलती हैं और

हालत के साथ हुक्म भी बदलता है इसी ऐतिबार से अल्लाह ने काफिरो के हक मे यह आयत नाजिल की है

قاتلوا الذين لا يؤمنون با لله ولا باليوم الآخر ولا يحرمون ما حرم الله ورسوله (سورۂ توبہ پ ۱۰)

किताल करो उन लोगों से जो अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान नहीं लाते और हराम नहीं जानते हैं उसको जिसको अल्लाह और उसके रसूल ने हराम किया।

देखो अल्लाह तआला ने यहां पर काफ़िरों को क़त्ल करने का हुक्म दिया। जबकि वह ईमान न लायें उनको क़त्ल कर दो देखो काफ़िर तो ग़ैर की तरह हैं जब भी खुदा ने उनके क़त्ल का हुक्म दिया है तो मुझको बताओ क्या हम अपने भाई की ख़ैरख़्वाही के लिये थोड़ी सी ज़बरदस्ती भी नहीं कर सकते (ज़बरदस्ती और इसरार में फ़र्क़ है) पहली बात तो तबलीग़ वाले ज़बरदस्ती नहीं करते हैं बल्कि इसरार करते हैं और जो लोग ज़बरदस्ती करने का इल्ज़ाम तबलीग़ वालों पर लगाते हैं वह ज़बरदस्ती और इसरार के मअ़ना से नावाक़िफ़ हैं अगर फ़र्क़ मालूम न हो तो देखो क्या फ़र्क़ है ज़बरदस्ती कहते हैं कि किसी को किसी फ़ेअ़ल पर मजबूर करना धमकी के ज़रिये या मार के ज़रिये और इसरार कहते हैं बार बार मुहब्बत से बात का तकरार करना। मालूम हुआ अगर बात में धमकी और ज़बरदस्ती न हो तो वह इसरार है

अगर आप हज़रात बार बार कहने को भी ज़बरदस्ती कहते हो तो फिर हुज़ूरे अकरम स० ने भी एक एक घर पर दावते दीन लेकर सत्तर सत्तर मरतबा गश्त किया खुद अबू जहल के घर पर आप सत्तर मरतबा से ज़्यादा दावते दीन लेकर गये थे। अब भी अगर कोई बच्चों वाला सवाल करे कि यह तरीक़ा तो आप स० का काफ़िरों के लिये था तो मैं कहूंगा जब आप स० ने ग़ैर को

सत्तर मरतबा दावत दी तो मुसलमानों को अपने इक़रार व अहद को अदा कराने के लिये और दीन पर लाने के लिये और ज़्यादा इसरार करना चाहिये और अगर अब भी यह कहें कि दीन में मुसलमानों पर किसी हुक्म के न मानने पर ज़बरदस्ती जाइज़ नहीं तो मैं इस को हदीसे रसूल से और फ़िक़्ह से बिल्कुल नावाक़िफ़ और नादान जाहिल समझता हूं कि वह कुफ़्फ़ार पर ज़बरदस्ती जाइज़ नहीं वाली आयत से मुसलमानों को बहकाना चाहता है

لا اكراه فى الدين अगर तुम इस आयत के ज़रिये यह साबित करोगे कि नमाज़ न पढ़ने वालों पर इबादत न करने वालों पर ज़बरदस्ती जाइज़ नहीं इस आयत के ज़रिये तो मैं कहूंगा कि इस ज़ालिम ने पूरी शरीअ़त को नाजाइज़ फ़ेअ़ल में दाख़िल कर दिया वह कैसे। देखो अब में खोलता हूं तुम्हारी अ़क़्ल के पर्दों को फिर बताना दीन में ज़बरदस्ती ज़रूरी है या नहीं। देखो हुज़ूर अकरम स० ने शराब पीने वालों को नमाज़ न पढ़ने वालों को सज़ा देने का हुक्म फ़रमाया यहां तक कि इमाम शाफ़ई र० और इमाम अहमद बिन हंबल र० ने बे–नमाज़ी को क़त्ल करने का हुक्म दिया है और इमाम अअ़ज़म अबू हनीफ़ा र० कहते हैं कि उसको क़त्ल तो न करो बल्कि उसको इतना मारो कि वह लहू लुहान हो जाये या अपने गुनाहों से तौबा कर ले। और हज़रत उ़मर रज़ि० ने शराब पीने वालों को चालीस चालीस और ज़्यादा भी कोड़े मारे। ज़िना करने वालों को हुज़ूर अकरम स० ने भी और सहाबा रज़ि० ने भी और ता क़ियामत के लोगों पर हुक्म है कि ज़िना करने वालों को ज़बरदस्ती क़त्ल कर दो यानी संगसार कर दो और चोरी करने वालों का हाथ काट दो क्या यह अहकाम कुरआन व हदीस में नहीं हैं? क्या यह अहकाम फ़िक़्ह में नहीं हैं? क्या यह अहकाम क़ियामत तक बाक़ी नहीं रहेंगे? क्या इन

सज़ाओं को न मानने वाला काफ़िर न होगा? फिर बताओ क्या तबलीग़ वाले जमाअत मे नमाज़ और दीन व ज़रूरियाते दीन सीखने के लिये ले जायें वह भी मुहब्बत से, तो यह हज़रात ग़ाली हैं और नाजाइज़ फेअ़ल करते हैं और देखते नहीं हो कि शरीअ़त ने मामला साफ़ कर दिया कि चोर के हाथ काटो ज़बरदस्ती काटो अगर तुम उस पर रहम करोगे तो ख़ुदा तुम को क़ियामत में अ़ज़ाब देगा कि तुमने अल्लाह का हुक्म न माना और रहम दिखाया। और इमाम शाफ़ई र० और इमाम अहमद र० ने हदीस की रोशनी में मामला साफ़ कर दिया कि बे–नमाज़ी को क़त्ल कर दो यह न देखो कि उसकी मां बीमार है या बीवी बीमार है या उसके ज़िम्मे क़र्ज़ है या उसके पास खाने को कुछ नहीं है या उसके बच्चे और बीवी भूके मरेंगे जैसा कि निरे जाहिल और बअ़ज़ अहले इल्म तबलीग़ वालों पर यह ऐतिराज़ करते हैं कि क्या तबलीग़ वालों को नहीं दिखाई देता कि उसके घर वाले बीमार हैं या उसके ज़िम्मे क़र्ज़ है बस तबलीग़ में नमाज़ सिखाने के लिये ले जाते हैं अब बताओ क्या इमाम शाफ़ई र० और इमाम अहमद र० और इमाम अअ़ज़म अबू हनीफ़ा र० की तबलीग़ सख़्त है या तबलीग़ वालों की तबलीग़। यानी दोनों इमामों का क़ौल है कि बे–नमाज़ी का क़त्ल करो, या फिर तबलीग़ वालों का काम। तबलीग़ में जाने के बाद तो चालीस दिन या साल के बाद तो ज़रूर लौटेगा मगर वह क़त्ल हो जाये तो क्या फिर वह लौट कर आयेगा। फिर कहते हो कि तबलीग़ वाले ज़बरदस्ती करते हैं क्या देखा नहीं इमामों के क़ौल को, वह कहते हैं कि क़त्ल कर दो और दोबारा बात साफ़ करना चाहूंगा कि तबलीग़ वाले ज़बरदस्ती नहीं करते बल्कि इसरार करते हैं सिर्फ़ उस शख़्स के फ़ाइदे के लिये। हमारा कोई फ़ाइदा नहीं। हम तो फ़क़ीरों और मिस्कीनों को

भी दावत देते हैं और काफ़िरों को भी, मगर जबरदस्ती के मअना धमकाना, मारना है। अब मुझको बताओ क्या तबलीग़ वालों ने कभी किसी को मार कर या धमकी देकर जमाअत में लगाया? ऐसा निकालना तो बहुत दूर की बात है वह आदमी पहले उनको मार कर क़ीमा कर देगा कि मार कर जमाअत में ले जाते हो और कोई शख़्स एक भी मिसाल इस क़िस्म की पेश नहीं कर सकता कि धमकी देकर जमाअत में भेजा जाता है। हां इसरार ज़रूर किया जाता है और करना चाहिये इसरार नाम है मुहब्बत से बात का बार बार कहना क्या अब भी ﴿خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ﴾ बाक़ी है अगर है तो वह दोज़ख़ के क़ाबिल है। हिदायत व इस्लाह के क़ाबिल नहीं जैसे अबू जहल दीन को हक़ जानता था मगर दिल में इनाद था, दुश्मनी थी, इसलिये दीन को कुबूल नहीं किया, खुद ही का नुक़सान किया दीन का कुछ न बिगड़ा।

तबलीग़ न करने पर अज़ाब की वईद कुरआन व हदीस में जैसा कि तबलीग़ वाले कहते हैं

यह बात तो साबित हो गई कि तबलीग़ दो तरह की है एक तो कुरआन व हदीस से सराहतन आ़लिमों का काम है और यह फ़र्ज़े किफ़ाया है और एक वह तबलीग़ है जिसको आ़म लोग करते हैं जैसे कि नमाज़ की दावत देना और जो जानता हो उसका दूसरों को सिखाना। यह फ़र्ज़े ऐन है हर एक इसका ज़िम्मेदार है घर वालों का भी अपने ख़ास दोस्तों का भी ताक़त के बक़द्र। जैसा कि मैंने हदीस पेश की थी

كُلُّكُم رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مسئولٌ عن رَعِيَّتِهٖ (بخاری ومشکوٰۃ)

कि हर एक से सवाल होगा अपने मातहतों के बारे में और उसका

हर एक जिम्मेदार है न कि सिर्फ़ आलिमो का तबका आलिमो की तबलीग़ तो ऊंचे दर्जे की है और आम दर्जे की तबलीग़ सब पर फ़र्ज़ है कि भाई नमाज़ पढ़ो बहुत सवाब है, फ़िल्म न देखो गुनाह है, कुरआन पढ़ो ज़रूरी है, आलिमों की इज़्ज़त करो हदीस का हुक्म है। इस तरह की तबलीग़ आम लोगों पर फ़र्ज़ है। ख़ैर तबलीग़ न करने पर अल्लाह का अज़ाब है, कुरआन फ़रमाता है।

وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَّا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنكُمْ خَاصَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ○ (سورۂ انفال آیت ۳)

और बचते रहो उस फ़साद से कि नहीं पड़ेगा वह तुम में से ख़ास ज़ालिमों ही पर और जान लो कि अल्लाह का अज़ाब सख़्त है।

देखो अल्लाह ने इस आयत में उन लोगों को ख़बरदार किया है जो अम्र बिलमअ़रूफ़ और नही अ़निलमुन्कर नहीं करते हैं बल्कि सिर्फ़ देख कर ताक़त के बावुजूद उनको उनके हाल पर छोड़ते हैं इस आयत के ज़रिये हकीमुलउम्मत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहब थानवी र० ने फ़रमाया कि उम्मत के हर फ़र्द पर दावत व तबलीग़ वाजिब है। किताब आदाबे तबलीग़ में क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया लोग यह न समझ बैठें कि हम तो दीन पर अ़मल कर रहे हैं दूसरों को क्या दावत देना उन लोगों पर रद्द करने के लिये अल्लाह ने यह आयत नाज़िल की कि ऐसा न सोचो कि सिर्फ़ ग़ैर आ़मिल को ही अ़ज़ाब में डाला जायेगा ऐसा न होगा बलिक उनको भी साथ में अ़ज़ाब में डाला जायेगा जो सिर्फ़ ख़ुद की जन्नत बनाने में लगे हुए होंगे और दूसरों को अम्र बिलमअ़रूफ़ और नही अ़निलमुन्कर नहीं करते थे लेकिन जो लोग तबलीग़े दीन करते हैं चाहे वह मदरसे की शक्ल में हो या ख़ानक़ाह की शक्ल में हो या जमाअ़ते तबलीग़ की शक्ल में हो उनको अ़ज़ाब से सही सालिम रखा जायेगा अब मैं चन्द अहादीस

पेश करता हूं।

(۲۱۵) عن حذيفة رضى الله عنه انّ النبى صلى الله عليه وسلم قال والّذى نفسى بيده لتأمرنّ بالمعروف وتنهون عن المنكر او ليوشكنّ الله انْ يبعث عليكم عذاباً من عنده ثمّ لتدعنّه ولايستجاب لكم (ترمذى،مشكوٰة)

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया क़सम उस ज़ात पाक की जिसके हाथ में मेरी जान है तुम यक़ीमन अम्र बिलमअ़रूफ़ और नही अ़निलमुन्कर का फ़रीज़ा अन्जाम दोगे या अ़नक़रीब अल्लाह तआ़ला तुम पर अपना अ़ज़ाब नाज़िल करेगा फिर तुम अल्लाह तआ़ला से दुआ़ भी करोगे तो तुम्हारी दुआ़ क़ुबूल नहीं की जायेगी इस रिवायत को तिर्मिज़ी और मिश्कात ने नक़ल किया है।

देखो इस हदीस से और पहले वाली हदीस से यह बात साफ़ मालूम हो रही है कि हर एक पर तबलीग़ ब–ऐतिबारे इल्म ज़रूरी है और बज़्ज़ाज़ र० ने और तबरानी र० ने किताब 'औसत' में हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से यह अलफ़ाज़ नक़ल किये हैं कि हज़रत मुहम्मद स० ने फ़रमाया दो बातों में से एक बात का होना ज़रूरी है यानी या तो तुम यक़ीनन अम्र बिलमअ़रूफ़ भी करोगे और यक़ीनन नही अ़निलमुन्कर का फ़रीज़ा भी अन्जाम दोगे या उन दोनों फ़रीज़ों की अ़दमे अदाइगी की सूरत में यक़ीनन अल्लाह तआ़ला तुम पर तुम्हारे बुरे लोगों को मुसल्लत कर देगा और फिर जो तुम्हारे नेक लोग उन बुरे लोगों के फ़ितने व फ़साद और ज़ुल्म को ख़त्म करने के लिये दुआ़ करेंगे मगर उनकी दुआ़ क़ुबूल नहीं की जायेगी।

अब मुझको लगता है कि जो बरेलवी हज़रात की अल्लाह के यहां दुआ़एं क़ुबूल नहीं होती हैं जैसा कि उनके बअ़ज़ हज़रात कहते हैं इस वास्ते ही वह क़ब्र पर जाते हैं। मैं बताऊं यह दुआ

क़ुबूल क्यों नहीं होती अगर इसका जवाब चाहिये तो यह हदीस पढ़ कर अमल करो और तबलीग़ में लग जाओ। जिस तरह तबलीग़ वालों की लाइन बिल्कुल साफ़ है तुम्हारी भी हो जायेगी इन्शाल्लाह। मगर शर्त यह है कि तबलीग़ में जाकर लोगों को ख़ैर की दावत देनी होगी और लोगों को क़ब्र के पूजने से रोकना होगा जो खुला शिर्क है लोगों के अक़ाइद को इससे दुरुस्त करने होंगे लेकिन शर्त यह है कि पहले ख़ुद के भी अअ़माल और अक़ाइद दुरुस्त होने चाहिये। हक़ बात कड़वी तो ज़रूर लग रही होगी क्योंकि हदीस में اَلحَقُّ مُرٌّ हक़ बात लोगों को कड़वी लगती है। जब तुम यह काम करोगे तो मज़ार के बग़ैर डाइरेक्ट अल्लाह से दुआ जा मिलेगी और अल्लाह तुम्हारी मांग को पूरी करेगा।

दूसरी हदीस कि तबलीग़ हर एक पर फ़र्ज़ है और न करने की वईद

(٢١٦) عن ابن بكر الصديق رضى الله عنه قال يايها الناس اِنَّكُمْ تَقْرَءُوْنَ هٰذِهِ الآيَةَ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ لا يَضُرُّكُمْ مَنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ فَاِنِّىْ سَمِعْتُ رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول اِنَّ النَّاسَ اذا رأو منكراً فَلَمْ يُغَيِّرُوْه يوشِكُ اَنْ يَعُمَّهُمُ اللّٰهُ بعقابه. (ترمذی، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू बक्र रज़ि० से रिवायत है कि (एक दिन) उन्होंने फ़रमाया लोगो! तुम इस आयत को पढ़ते हो:

﴿يايُّهَا الَّذِيْنَ آمنوا عليكم اَنْفُسَكُمْ لا يَضُرُّكُمْ مَنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ﴾

यानी ऐ मोमिनो! तुम अपने नफ़्सों को लाज़िम पकड़ लो जो शख़्स गुमराह हो गया है वह तुम को ज़रर नहीं पहुंचायेगा जबकि तुम हिदायत याफ़्ता हो (लिहाज़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने मुसलमानों से फ़रमाया कि तुम इस आयत की तिलावत करते हो और इसके मअ़ना को उ़मूम व इत्लाक़ पर महमूल करते हुए

यह समझते हो कि अम्र बिलमअरूफ़ और नही अनिलमुन्कर वाजिब नहीं है हालांकि तुम्हारा यह समझना सही नहीं है) चुनांचे मैंने रसूलुल्लाह स० को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जब लोग किसी ख़िलाफ़े शरअ़ अम्र को देखें और उसकी इस्लाह व सरकूबी के लिये कोशिश न करें और लोगों को इससे बाज़ न रखें तो क़रीब है कि अल्लाह तआला उनको अपने अ़ज़ाब में मुब्तला कर दे।

देखो अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० भी इसके क़ाइल हैं कि तबलीग़ हर एक पर वाजिब है और यही क़ौल हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ि० का भी है, मज़कूरा आयत के बारे में यह वज़ाहत फ़रमाई गई है कि यह आयत अपने हुक्म के ऐतिबार से आम व मुतलक़ नहीं है बल्कि इस अम्र के साथ मख़सूस व मुक़य्यद है। जो लोग वअ़ज़ व नसीहत और तंबीह व तहदीद के बावुजूद बुराई का रास्ता तर्क न करें। उन पर अम्र बिलमअरूफ़ और नही अनिलमुन्कर का कोई असर न हो और वह अपने इख़्तियार किये हुए रास्ते पर मुतमइन व ख़ुश हों जैसा कि क़ुर्बे क़ियामत में लोगों का यही हाल होगा तो ऐसे लोगों के बारे में मज़कूरा आयत कहती है कि ऐसे लोगों की बुराई का वबाल उन बन्दगाने ख़ुदा को कोई नुक़सान व ज़रर नहीं पहुंचा सकता जिनको ख़ुदा ने हिदायत याफ़्ता बनाया है और जो बुराइयों के रास्ते से दूर रहते हैं इसकी ताईद इस रिवायत से भी होती है जिसमें मनक़ूल है कि एक मरतबा इस आयत को लोगों ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द रज़ि० के सामने पढ़ा और इसका मतलब जानना चाहा तो उन्होंने फ़रमाया कि तुम जिस ज़माने में हो वह ज़माना इस आयत का नहीं है क्योंकि तुम्हारे ज़माने के लोग तो अच्छी बातों को सुनते हैं और उन बातों का असर क़ुबूल करते हैं अलबत्ता आख़िर में एक ज़माना आने वाला है जब बन्दगाने ख़ुदा

अम्र बिलमअ़रूफ़ और नही अनिलमुन्कर का फ़रीज़ा अन्जाम देंगे तो लोग उनकी बातों को नहीं सुनेंगे सुनाये यह आयत उसी आने वाले ज़माने से आगाह कर रही है इसी तरह हज़रत अबू सअ़लबा रज़ि० की रिवायत जो आगे आ रही है इसी पर दलालत करती है।

(۲۱۷) عن ابی ثعلبة رضی الله عنه فی قوله تعالی عَلَیْکُمْ اَنْفُسَکُمْ لا یَضُرُّکُمْ مَنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَیْتُمْ فقال اما والله لقد سألتُ عنها رسول الله صلی الله علیه وسلم فقال بل ائتمرُوا با لمعروف وتناهوا عن المنکر حتّی اذا رأیت شُحًا مطاعًا وهوی مُتَّبعًا ودُنیا مُؤثَرَةً واِعْجابَ کُلِّ ذِی رای برایه ورایت امراً لا بُدّلك منه فعلیك نَفْسَكَ ودع امرَالعوام فَاِنَّ وَرَاءِ کُمْ ایّام الصبر فمن صبر فِیهِنَّ قبض علی الجَمْرِ للعامل فیهنّ اجرُ خمسین رجلًا یعْمَلُوْن مثل عمَلِهٖ قالوا یا رسول الله صلی الله علیه وسلم اَجْرُخَمْسِیْنَ مِنْهُمْ قال اَجْرُ خمسین منکم. (ترمذی، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू सअ़लबा रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला के इस इरशाद की तफ़सीर में

﴿عَلَیْکُمْ اَنْفُسَکُمْ لا یَضُرُّکُمْ مَنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَیْتُمْ﴾ कि उन्होंने कहा जान लो खुदा की क़सम मैंने रसूल करीम स० से इस आयत के बारे में पूछा कि क्या मैं इस आयत के मुताबिक़ अम्र बिलमअ़रूफ़ और नही अ़निलमुन्कर का फ़रीज़ा अन्जाम देने से बाज़ रहूं तो आप स० ने फ़रमाया कि हरगिज़ नहीं। तुम इस फ़रीज़े की अदाइगी से बाज़ न रहो बल्कि नेकियों का हुक्म देते रहो और बुराइयों से रोकते रहो यहां तक कि जब तुम देखो कि लोग इसकी इत्तिबाअ़ करने लगे हैं जब तुम ख़्वाहिशाते नफ़्स को देखो कि लोग इसके ग़ुलाम बन गये हैं। जब दुनिया को देखो कि लोग इसको आख़िरत पर तरजीह देने लगे हैं जब तुम देखो कि हर अ़क़लमन्द और किसी का पैरोकार अपनी ही अ़क़ल और अपने ही मसलक को सबसे अच्छा और पसन्दीदा समझने लगा है (कि न

तो वह किताब व सुन्नत और इजमाओ उम्मत और क़यास की तरफ़ नज़र करता है और न उलमा और अहले हक़ की तरफ़ रुजूअ करता है बल्कि महज़ अपने नफ़्स ही को सबसे बड़ा हाकिम और मुफ़्ती समझने लगा है) और जब तुम उसकी (ग़लत) राय को ऐसा देखो कि जिसके अलावा तुम्हारे लिये कोई रास्ता न हो तो अपनी ज़ात को लाज़िम पकड़ लो और लोगों के मआमले को छोड़ दो क्योंकि यह इस क़द्र सख़्त ज़माना होगा कि दीन पर अमल करने वाले की हालत यह होगी कि आया असने अपने हाथ में आग के अंगारे उठा लिये हों और उन दिनों में जो शख़्स दीन व शरीअत के अहकाम पर अमल करेगा उसको उन पचास लोगों के अमल के बराबर सवाब मिलेगा जो उस शख़्स जैसे अमल करें (और उनका तअल्लुक़ न उन सख़्त अय्याम से हो और न उनको दीन पर अमल करने के सिलसिले में वह तकालीफ़ व मसाइब बरदाश्त करने पड़ें जो उस शख़्स को बरदाश्त करना पड़ेंगे) सहाबा रज़ि० ने (यह सुनकर) अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! क्या उन पचास लोगों के अमल का ऐतिबार होगा जो उनके ज़माने से तअल्लुक़ रखते हों। हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया कि तुम में से पचास आदमियों की तरह।

ख़ैर इन तमाम अहादीस और आयत से तबलीग़ न करने वालों पर वईद तफ़सील के साथ बयान कर दी गई है, मज़ीद तफ़सील की ज़रूरत नहीं होगी।

और यह भी मालूम हो गया कि हुज़ूर अकरम स० ने तबलीग़े दीन को हर एक पर लाज़मी क़रार दिया है अपने इल्म व कुदरत के ऐतिबार से।

एक आयत के ज़रिये ऐतिराज़

ولتكن منكم امة يدعون الى الخير ويامرون بالمعروف وينهون عن المنكر الخ (پ٤،٢)

और चाहिये कि रहे तुम में एक जमाअत ऐसी जो बुलाती रहे नेक काम की तरफ और हुक्म करती रहे अच्छे कामों का और मना करे बुराई से।

बअज़ मुखालिफीने तबलीग़ या मुखालिफीने इस्लाम यह ऐतिराज़ करते हैं कि तबलीग़ का काम पूरी उम्मत पर वाजिब नहीं है बल्कि उम्मत के चन्द अफ़राद पर वाजिब है यानी फ़र्ज़े किफ़ाया है लेकिन तबलीग़ वाले पूरी उम्मत के सर पर यह बोझ डालते हैं क्या यह तबलीग़ वालों का कौल मुखालिफ़े कुरआन नहीं है। दोस्तो! मुझको जवाब देना तो इसका आसान है मगर यह मुश्किल पड़ गई है कि मैं मोअ़तरिज़ को जाहिल समझूं या आ़लिम। सवाल करना कुरआन व हदीस से यह आ़लिमों का काम है और इस सवाल से ख़ालिस जिहालत टपक रही है। शायद इन हज़रात ने कुतुब हदीस व तफ़सीर पर नज़र ही नहीं डाली जब तो इस आयत में आकर गाड़ी की हवा निकल गई और ग़लत सलत उम्मत को फ़तवा दे बैठे। देखो भाइयों पहले यह समझो कि उम्मत दो मअ़नों में मुस्तअ़मल होती है जैसा कि अहादीस में उम्मत का लफ़्ज़ आया है कि हज़रत नूह अ़लै० की उम्मत या यह कि मेरी उम्मत की मैं सिफ़ारिश करूंगा। देखो इन दोनों में बहुत फ़र्क है हालांकि लफ़्ज़ एक ही है लफ़्ज़ उम्मत लेकिन नूह की उम्मत में काफ़िर भी दाख़िल हो गये और जब हुज़ूर अकरम स० ने अपनी उम्मत के साथ सिफ़ारिश की कै़द लगाई तो यह सिर्फ़ मुसलमानों को शामिल है और काफ़िर इस लफ़्ज़ उम्मत से

ख़ारिज है क्योंकि कैद के होने के वजह से अगर यहां पर भी लफ़्ज़ उम्मत मुतलक़ इस्तेमाल होता तो यह काफिर को भी शरीक कर देता जैसे हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया मेरी उम्मत का सबसे पहले हिसाब होगा अब इस लफ़्ज़ उम्मत में काफिर भी दाख़िल हो गये क्योंकि यहां पर ऐसी कोई ख़ास सिफ़त उम्मत के साथ नहीं है जो उम्मत को मुसलमानों के लिये ख़ास कर दे क्योंकि तमाम मुस्लिम व काफ़िर का हिसाब होगा फिर काफिर दोज़ख़ में दाख़िल हो जायेंगे और जो मुसलमानों में अल्लाह की नाफ़रमानी करने वाला हो उसको भी कुछ दिन के लिये दाख़िल किया जायेगा जैसा कि हदीस से मालूम होता है कि बे-नमाज़ी को एक नमाज़ छोड़ने की सज़ा में एक हुक़ब दोज़ख़ में दाख़िल किया जायेगा और जो नेक और अल्लाह व मुहम्मद स० के फ़रमांबरदार हैं उनको जन्नत में दाख़िल किया जायेगा। ख़ैर मालूम हुआ कि उम्मत के साथ कोई मुक़य्यद करने वाला लफ़्ज़ या कोई मुसलमान की सिफ़त हो तो फिर इस लफ़्ज़ उम्मत में काफ़िर दाख़िल न होगा। अब देखो यह जो आयत मोअतरिज़ ने पेश की है यह दो तरह से मुक़य्यद है एक क़ैद तो (मिनकुम) की है जो लफ़्ज़ी है न कि सिफ़ाती (सिफ़ाती का मतलब यह है कि आयत को किसी ऐसी सिफ़त के साथ मुक़य्यद करना जो सिर्फ़ मुसलमान की हो) और लफ़्ज़ी क़ैद वह है जिसके ज़रिये आम को ख़ास और मुक़य्यद कर दिया हो जैसे ख़ुद यह आयत, और दूसरी एक क़ैद और है जो इसके आगे है ﴿يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ﴾ कि यह लोग सिर्फ़ दावत की ख़िदमत के लिये हों और लोगों को ख़ैर की तरफ़ बुलायें। अब देखो हासिल क्या निकला कि मुसलमानों में से एक जमाअत जो क़ुरआन व हदीस की आलिम हो वह सिर्फ़ इस ख़िदमत में सरगरम रहे और लोगों के अद्ल के साथ फ़ैसले

करे लोग जब मसाइल लेकर आये तो वह उसको कुरआन व हदीस से हल करे। अब देखो अल्लाह का दूसरी जगह यह फरमान है:

كُنتُم خَيرَ اُمَّةٍ اُخرِجَتْ لِلنَّاسِ تَامُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ وَتُومِنُوْنَ بِاللّٰهِ (پ۴ العمران)

ऐ उम्मते मुहम्मदिया, तुम लोग (सब अहले मज़ाहिब से) अच्छी जमाअत हो कि यह जमाअत आम लोगों को नफ़ा पहुंचाने के लिये ज़ाहिर की गई है तुम लोग नेक कामों को बतलाते हो और बुरी बातों से रोकते हो और खुद भी अल्लाह पर ईमान लाते हो।

अब भाई जो उसूल बयान किये गये थे उनको अब लाओ कि इसमें कौनसी कैद है? लफ़्ज़ी या सिफ़ाती? जब आयत में गौर किया तो मालूम हुआ कि यहां पर सिर्फ़ एक कैद मौजूद है और वह है सिफ़ाती। और वह सिफ़त क्या है ﴿تَامُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ﴾ الخ कि तुम ख़ैर वाली बातों का हुक्म करते हो ज़ाहिर बात है कि काफ़िर तो दावत इलल्लाह नहीं देगा अब इस कैदे सिफ़ाती की वजह से काफ़िर इस तारीफ़ व फ़ज़ीलत से ख़ारिज हो गये अब बाकी रह गये पूरे मुसलमान अब यह देखना है कि क्या तारीफ़ सिर्फ़ चन्द लोगों के लिये है या पूरी उम्मत के लिये अगर सिर्फ़ चन्द अफ़राद के लिये इस आयत की फ़ज़ीलत को लोगे तो यह मुख़ालफ़ते हदीस और तमाम उलमा–ए–उम्मत की मुख़ालफ़त हो जायेगी क्योंकि अहादीस ने इस फ़ज़ीलत का मिस्दाक पूरी उम्मत को बताया हैं और तमाम दुनिया के मुफ़स्सिरीन ने इसका मिस्दाक पूरी उम्मत को करार दिया है क्योंकि कोई लफ़्ज़ी कैद नहीं है जिसकी वजह से लफ़्ज़ उम्मत को ख़ास किया जाये सिर्फ़ उलमा व मुफ़्तियाने किराम के लिये जैसा कि मोअतरिज़ ने जो आयत पेश की थी उसमें दो कैदें थीं एक लफ़्ज़ी यानी (मिनकुम)

जिसने एक ख़ास जमाअत को बयान किया। और दूसरी क़ैद सिफ़ाती यानी (युदऔन इलल्खैर) कि वह खैर की दावत देते हैं कोई अहमक यहीं पर यह सवाल न कर बैठे कि खैर की दावत तो काफ़िर भी देते हैं देखो वह कहते हैं कि छोटों से मुहब्बत करो, बड़ों को ग़लत और उलटा जवाब न दो वग़ैरा वग़ैरा। हुज़ूर वाला यहां वह दावते खैर मुराद है जो दीन के तर्ज़ पर और दीनी हो ख़ैर इस क़ैद ने काफ़िरों के अच्छे काम के मक़बूल होने की नफ़ी कर दी है और अब आम मुसलमानों के काम करने में दो आयतों में तआरुज़ हो गया यानी झगड़ा हो गया ज़ाहिरन पहले वाली आयत से मालूम होता है कि सिर्फ़ एक ख़ास तब्क़ा काम करे और दूसरी आयत से मालूम हुआ कि वहां कोई क़ैद नही है और वह उमूम का फ़ाइदा दे रही है अब इस (कुन्तुम खैरा) वाली आयत को इस पर अत्फ़ करके मुक़य्यद करना भी जाइज़ नहीं क्योंकि अहादीस से और तमाम उम्मत के उलमा से यह क़ौल मनकूल है कि इसका मिस्दाक़ पूरी उम्मत है और इस फ़ज़ीलत के हक़दार सिर्फ़ उलमा ही नहीं बल्कि आम अवाम भी इसमें दाख़िल हैं और जब यह बात साबित हो गई कि इस आयत का मिस्दाक़ तमाम उम्मत है तो खुद बखुद यह बात भी साफ़ हो गई कि जब फ़ज़ीलत में पूरी उम्मत दाख़िल है तो जो फ़ज़ीलत वाला यानी जिसने उनको फ़ज़ीलत दी उस काम में भी तमाम ही उम्मत दाख़िल होगी चाहे वह दावत का काम आलिमों की तरह न करे बल्कि अपने इल्म के बक़द्र लोगों को दावत दे कि अगर कोई नमाज़ नहीं पढ़ रहा है तो उसको एक जगह पर ले जाये और फिर जैसा भी आता हो वैसा समझाये और यही काम तबलीग वाले करते हैं मगर मोअतरिज़ीन को जाहिल कहूं या दीन के दुश्मन। आयत को हमारा तुम्हारा कलाम समझ कर बस तर्जुमा

और थोड़ी सी तशरीह से समझने की कोशिश करते है हालांकि कुरआन बहुत गहरी चीज है आपने देखा कितनी गहरी बात है मगर समझाने से साफ हो गई मगर उन लोगों को मैं नहीं समझा सकता वह तो बस अल्लाह का काम है वह लोग कौन है? कुरआन ने कहा ﴿ختم الله على قلوبهم و على سمعهم﴾

दोस्तो, बुजुर्गो! मेरा तर्जे तकल्लुम और तर्जे तहरीर ही ऐसा है बुरा न मानना अगर बात हक है तो कुबूल करने में इन्सान को शर्म महसूस नही करनी चाहिये मैं यह नहीं कहता कि तुम तबलीग़ी ही बनो तो तुम कामयाब होंगे, नहीं, बल्कि जिस तरह तबलीग़ वाले या देवबन्दी कुरआन व हदीस पर अ़मल करते हैं जैसा कि तुम देख रहे हो तुम भी सिर्फ़ कुरआन व हदीस पर अ़मल करो इससे तक़लीदे हनफ़ी ख़त्म नहीं हुई क्योंकि यह खुद साबित मिनलकुरआन व हदीस है इसका आगे ज़िक्र होगा। मालूम हुआ कि तबलीग़ अपनी कुदरत के बक़द्र हर एक पर लाज़िम है।

दो आयतों के बीच इख़्तिलाफ़ का हल

पहली आयतः

﴿وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ﴾ الخ (پ٤)

और चाहिये कि रहे तुम में एक ऐसी जमाअ़त जो बुलाती रहे नेक कामों की तरफ़ और हुक्म करती रहे अच्छे कामों का और मना करे बुराई से।

दूसरी आयतः

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ. (پ٤ العمران)

ऐ उम्मते मुहम्मदिया! (तमाम के तमाम) तुम लोग सब (अहले

मजाहिब) से अच्छी जमाअत हो (इस वजह से कि) तुम आम लोगों के (नफा हिदायत पहुंचाने के) लिये जाहिर की गई हो और नफा पहुंचाने की सूरत (वही वजह सबसे अच्छी होने की भी है) तबलीगे दीन है।

(फ़ज़ीलत की वजह) यह है कि तुम लोग नेक कामों को बतलाते हो और बुरी बातों से रोकते हो और ख़ुद भी अल्लाह पर ईमान लाते हो (आल इमरान)।

दोनों आयतों के मिस्दाक़ में थोड़ा सा फ़र्क़ है कुछ ग़ौर करने की ज़रूरत है हक़ीक़त साफ़ हो जायेगी। देखो पहली आयत में (मिनकुम) के ज़रिये उम्मते मुहम्मदिया के बअ़ज़ अफ़राद मुराद हुए जो उ़लमा की शक्ल में हैं और उनका काम ही यही होगा कि वह दीन की ख़िदमत को हर वक़्त बतर्ज़े क़ुरआन व हदीस अन्जाम दें और लफ़्ज़ उम्मत में काफ़िर लोग दाख़िल नहीं हैं। क्योंकि वह दीन की दावत उसी वक़्त देंगे जब वह ख़ुद दावते दीन को क़ुबूल कर लें मगर उन्होंने दावते दीन को क़ुबूल ही न किया फिर दीन की तरफ़ लोगों को किस तरह दावत देंगे। ख़ैर पहली आयत से मालूम हुआ कि काफ़िर दावते दीन से ख़ारिज हैं और मुसलमानों में से भी वह तबक़ा मुराद है जो इल्मे क़ुरआन और हदीस रखता हो। ठीक है इस आयत में आ़म हज़रात दाख़िल नहीं हैं और दूसरी आयत को जब हमने देखा तो वह अपना मिस्दाक़ तमाम उम्मत को बना रही है इस वजह से पहली आयत में उम्मत से पहले लफ़्ज़ मिनकुम था जिसने आ़म मअ़ना लेने से मना कर दिया और ख़ास अफ़राद को अपने पहलू में जगह दी मगर जब दूसरी आयत को देखा जाये तो वह मिनकुम से और दीगर क़ुयूद से ख़ाली है और वह इस हाल में उ़मूमियत पर दलालत कर रही है और तमाम मुफ़स्सिरीन ने

इसका तर्जुमा उमूम का ही किया है और इसमें उमूम ही है अगर खास अफ़राद का तर्जुमा किया जाये तो यह मनशा कुरआन के खिलाफ़ होगा क्योंकि कुरआन आम अफ़राद को दाखिल कर रहा है इस वजह से कि दूसरी आयत में उम्मत से पहले कोई कैद नहीं है जो आम लफ्ज़ उम्मत को ख़ास कर दे और जब यह आयत उमूमियत को ज़ाहिर कर रही है तो मालूम हुआ कि जिस तरह यह आम अफ़राद को अपनी तारीफ़ में दाखिल कर रही है इसी तरह बिला शुबह इस काम में भी शरीक कर रही है जिस काम ने इनको यह फ़ज़ीलत दी है।

अब इन दोनों की तशरीह में तआरुज़ नज़र आ रहा है कि पहली कह रही है कि ख़ास अफ़राद मुराद हैं और दूसरी आयत आम अफ़राद को दाख़िल कर रही है। जवाब आसान और जामेअ और मानेअ है। भाई, पहली आयत में जो मुराद हैं वह ऐसे अफ़राद हैं जो मुकम्मल और कामिल दीन रखते हैं और उनका काम ही यही है कि उम्मत के मसाइल को अ़द्ल के साथ कुरआन व हदीस की रोश्नी में हल करें और यह काम ज़ाहिर बात है कि आम अफ़रादे उम्मत यानी तमाम उम्मते मुस्लिमा कर नहीं सकती क्योंकि आ़लिम बनने के लिये कम अज़ कम दस साल चाहियें। और अगर यह फ़र्ज़ अ़ललअफ़राद यानी एक एक फ़र्द पर आइद किया जाये तो यह काम उम्मत के लिये दुश्वारकुन होगा। और हमारा दीन आसान है और आसानी को पसन्द करता है इस वजह से आ़लिम की तरह ख़िदमते दीन करना फ़र्ज़े किफ़ाया है और अब रहा यह मस्अला कि अगर कोई शख़्स है वह नमाज़ नहीं पढ़ता है और आप उसके दोस्त हों तो क्या उसको दावत यानी तबलीगे दीन करोगे या न करोगे। आयत सानी ने इजाज़त दे दी कि तुम भी फ़ज़ीलत में दाख़िल हो और

फ़ज़ीलत बख़्शने वाले अमल यानी तबलीग़ में भी शरीक हो अब रहा मस्अला तबलीग़ का, तो यह आलिमों का काम है इसका जवाब यह है कि भाई तबलीग़ की दो क़िस्में हैं एक तबलीग़ ख़ास है जैसे कि आलिमों की तबलीग़ कुरआन और हदीस की हक़्क़ानियत ज़ाहिर करना और लोगों को मसाइल बताना। और दूसरी तबलीग़ है आम, जिसमें तमाम अफ़रादे उम्मत दाख़िल हैं और तबलीग़े आम का मतलब है कि जो भी अल्लाह ने तुमको इल्म दिया हो उसको दूसरों तक पहुंचा दो न कि आलिमों के तर्ज़ पर ही आप भी करें, ऐसा नहीं। बल्कि वह तबलीग़ ख़ास है और उनकी यानी आलिमों की तबलीग़ अअ़्ला है बमुक़ाबिल हमारे, क्योंकि हदीस में आया है कि एक हज़ार आबिद मिलकर भी एक आलिम का मुक़ाबला नहीं कर सकते जब मर्तबे में मुक़ाबला नहीं है तो उनकी तबलीग़ की बदर्जे औला आम अफ़राद बराबरी नहीं कर सकते इसका मतलब यह नहीं है कि आम लोग बस अपने घर पर बैठें और आराम करें, नहीं, उनको भी काम करना है जो आता है उसको दूसरों तक पहुंचा दें और जो नहीं आता है उसको दूसरों से हासिल करें और इस काम का नाम ही तबलीग़ है।

كُلُّكُمْ راعٍ و كلكم مسئول عن رعيته (بخاری)

तुम में से हर एक ज़िम्मेदार है और हर एक से सवाल होगा (कि क्या तू ने दावत दी?) अपने मातहतों को। इस वज़ाहत से मालूम हुआ कि हर एक पर उसकी ताक़त और उसके इल्म के बक़द्र तबलीग़े इस्लाम फ़र्ज़ है।

☆☆☆

तबलीग़ वाले कहते हैं कि इल्म का सीखना फ़र्ज़ है

(٢١٨) قال رسول الله صلى الله وسلم طلب العلم فريضة على كُلِّ مُسلم (بخاری جلد ثانی، احیاء العلوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया इल्म का सीखना फ़र्ज़ है हर एक मुसलमान (मर्द व औरत) पर।

तबलीग़ वालों का यह कहना कि इल्म का सीखना फ़र्ज़ है बिल्कुल सही है इस हदीस से इसकी तौसीक़ होती है अब रहा यह कि कितना इल्म सीखना हर एक पर फ़र्ज़ है। जवाब हर एक मर्द व औरत पर इतना इल्म सीखना फ़र्ज़ है जिसके ज़रिये बन्दा अल्लाह की हलाल कर्दा चीज़ों को जाने और हराम कर्दा चीज़ों को जाने कि सूद हराम है, ज़िना हराम है, नमाज़ न पढ़ना कबीरा गुनाह है, रोज़ा न रखना कबीरा गुनाह, मुसलमानों को सताना हराम है, मुसलमानों की बेइज़्ज़ती हराम है, तकब्बुर हराम है, रिया व शिर्के असग़र हराम है, धोका हराम है, हुज़ूर अकरम स० की शान में गुस्ताख़ी करना हराम है, कुफ़्र करना हराम है, और हुज़ूर अकरम स० को इतना बड़ा मानना कि अल्लाह के मुक़ाबिल करना यह भी हराम और कुफ़्र है, नमाज़ जब फ़र्ज़ है तो उसके क्या वाजिबात, क्या फ़राइज़ हैं, उम्मत का हम पर क्या हक़ है, मुसलमानों के साथ काफ़िरों को भी मौक़ा महल देख कर दीन की दावत देनी ज़रूरी है। हस्बे ताक़त घर वालों को दीन की तालीम देना, जिसको घर की तालीम कहते हैं। ग़र्ज़ कि वह हलाल व हराम से आगाह हो जायें और नमाज़ के पाबन्द बन जायें शरीअ़त के अहम रुक्न को अदा करने वाले बन जायें वरना क़ियामत में जवाब देना होगा। घर के एक एक फ़र्द का और दोस्तों का

जबकि वह तुम्हारी बात कुबूल करते हैं। हां, अगर कुबूल न करे और जान का ख़तरा साथ हो तो फिर इन्शाल्लाह वह बच जायेगा। मगर बहुत से लोग आम तबलीगे दीन को ग़लत जानते हैं क्योंकि उनके लड्डू और मिठाई कम हो रही है और कुछ नहीं। याद रहे कि हर एक पर इल्म का सीखना फ़र्ज़ है जैसा कि यह हदीस कह रही है और जितना जाना उसको दूसरों तक पहुंचाना ज़रूरी है क्योंकि यह उम्मते मुहम्मदिया है और तबलीग़ इसके सर का ताज है वरना दूसरी उम्मतों में और हम में कोई ख़ास फ़र्क़ बाक़ी नहीं रहता। हमारी फ़ज़ीलत सिर्फ़ दो वजह से है एक तो हुज़ूर अकरम स० के साथ होने की वजह से और दूसरी चीज़ तबलीग़ है। जो पहले अंबिया किराम करते थे वह काम जब इस उम्मत ने संभाला तो यह भी मुकर्रम हो गई। हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया:

كلكم راع وكلكم مسئول عن رعيته

कि हर एक से अपने मातहतों के बारे में सवाल होगा क्या अगर हुज़ूर अकरम स० पूछें कि क्या तूने दीन की दावत दी जिस तरह मैंने और मेरे सहाबा रज़ि० ने जान लगाकर और माल लगाकर दीन की दावत दी थी तुम यही कहोगे ना कि हुज़ूर अकरम स० हम तो आपके इश्क़े काज़िब में सोग मनाने के लिये क़ब्र पर बैठे थे अल्लाह के बन्दो! अल्लाह से डरो और गुमराही छोड़ दो और दावते तबलीग़ में लग जाओ जिस तरह हज़रत मौलाना मुफ़्ती ख़लील अहमद क़ादरी बरकाती साहब र० जिन्होंने बहिश्ती ज़ेवर सुन्नी लिखा उन्होंने बरेलवियत से तौबा की और हक़ दीन पर आ गये अगर देवबन्दियत हक़ न होती तो क्यों आते क्या हमारे पास लड्डू मिठाई मिलती हैं? नहीं, बल्कि देवबन्दी हज़रात दीने हक़ पर हैं।

तबलीग़ वालों का यह कहना बिल्कुल सही है कि इल्म का इतना सीखना हर एक मर्द व औरत पर फ़र्ज़ है जिससे हलाल और हराम की तमीज़ हो जाये और तबलीग़ में भी इसी लिये ले जाया जाता है ताकि जो लोग इतना भी नहीं जानते तो वह जमाअ़त में निकल कर अपनी इबादत व मआशी ज़िन्दगी दुरुस्त करें। हमारा मक़सद लोगों को उनके घरों से अलग करना नहीं है। हमको उनके घर वालों से कोई दुश्मनी नहीं है हम तो कुछ जानते भी नहीं इसके अ़लावा कि वह हमारे भाई हैं। चाहे भाई बात माने या न माने वह भाई ही रहता है ग़ैर नहीं बनता बस यही वजह है कि हम तुम्हारे घर अपने कारोबार छोड़ कर आते हैं कि हमारा तुम्हारा भाई का रिश्ता है। हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया तमाम मुसलमान भाई भाई हैं। मौदूदी हज़रात के अ़क़ाइद व तर्ज़े अ़मल से मैं ज़रूर नाराज़ हूं और मैं बरेलवी हज़रात के अ़क़ाइद से और तर्ज़े अ़मल से भी ज़रूर नाख़ुश हूं ग़ैर मुक़ल्लिदीन हज़रात के नज़रिये से मुतफ़क्किर व नाख़ुश हूं और दीगर अ़क़ाइद वालों से (यह जमाअ़तें जानी जाती हैं इसलिये इनका नाम ले लिया) मगर मैं उनको अपना इस्लामी भाई जानता हूं और ख़ुश अख़लाक़ी से सलाम करता हूं लेकिन जब हक़ का मस्अला आता है तो फिर इस्लाम व दीन से बढ़ कर कोई रिश्ता नहीं है ख़ैर, जो भी हैं मगर हम सब कलिमे वाले आपस में भाई भाई हैं। अ़क़ाइद वह ख़ुद देख लें, क्या सही हैं और क्या ग़लत हैं। अल्लाह ने सबको अ़क़्ल दी है और इल्म भी।

तबलीग़ करना आ़म फ़रीज़ा है

قال الله تعالى قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِىْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِىْ الخ (پاره۱۳)

अल्लाह तआला ने फ़रमाया कह दो (ऐ मुहम्मद स०) यह मेरी राह है बुलाता हूं अल्लाह की तरफ़ समझ बूझकर और जो मेरे साथ हैं (यानी उम्मती)

देखो कि इसमें उ़मूम है या नहीं जब हमने आयत पर ग़ौर किया तो उ़मूम मालूम हुआ और मोअ़तरिज़ की वह आयत जो पेश की थी ﴿وَلْتَكُنْ مِّنكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ﴾ वाली आयत इसमें ख़ुसूसियत ज़ाहिर हो रही है तो बरमला तबलीग़ की दो क़िस्में हैं इस पेश कर्दा आयत से मालूम हुआ कि एक ख़ुसूसियत वाली यानी उ़लमा की तबलीग़ और इस पेश कर्दा आयत से मालूम हुआ कि एक उ़मूमियत वाली तबलीग़ है और मैं पहले तफ़सील से इस मौज़ूअ़ पर बहस कर चुका हूं मगर मज़ीद इस्तिदलाल के लिये यह आयत पेश की है कि ﴿كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ﴾ में भी उ़मूमियत है और इस पहली आयत में भी उ़मूमियत है और एक आयत है उसमें भी उ़मूमियत है, देखो ﴿يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا﴾ कि ऐ ईमान वालो! खुद को और अपने घरवालों को दोज़ख़ से बचाओ। बताओ क्या इन तीनों आयतों में उ़मूमियत है या नहीं? हर एक को अपने घरवालों और अपने मुहल्ले वालों की फ़िक्र करनी होगी न कि बनी इसराईल की तरह घर में बैठना होगा यह उम्मत उम्मते मुहम्मदिया है जिसके पास वक़्त कम है और काम ज़्यादा बताओ क्या छोटा काम भी बैठने से होता है और जाहिल की तरह यह आयत पेश कर दी ऐसे ही लोग क़ियामत में इस हदीस के मिस्दाक़ होंगे।

من كذب علىّ متعمدًا فليتبوّأ مقعده من النار हदीस के घड़ने वाले तो होंगे ही और वह लोग भी इसके मिस्दाक़ हैं जो जान कर तफ़सीर में तहरीफ़ करके लोगों को राहे हक़ से हटाने की कोशिश करते हैं यह लोग मिस्दाक़ क्योंकर हो गये। सुनो! मैंने इसलिये

इस हदीस का इतलाक़ ख़बीसुन्नफ़्स मुफ़स्सिरीन पर किया है
क्योंकि कुरआन की तफ़्सीर खुद हदीस है और जो तफ़्सीर ग़लत
बयान कर रहा है तो वह इससे भी बड़ा वाज़ेअ़ (घड़ने वाला)
तफ़्सीर है क्योंकि हदीस अगर वज़अ़ कर रहा है तो यह सिर्फ़
हुज़ूर अकरम स० की तरफ़ ग़लत निस्बत कर रहा है और अगर
तफ़्सीर ग़लत बयान कर रहा है तो यह ज़ालिम दो तरफ़ ग़लत
निस्बत कर रहा है एक हुज़ूर अकरम स० की तरफ़ क्योंकि
कुरआन की तफ़्सीर हदीस से है और यह हदीस में जो तफ़्सीर है
इससे हट कर अपनी मर्ज़ी की तफ़्सीर कर रहा है और जब
तफ़्सीर ग़लत हो गई तो अल्लाह के बयान का मक़सद बदल
जायेगा देखो ग़लत तफ़्सीर से अल्लाह और रसूल की तरफ़
ग़लत निस्बत हो जाती है और इसी वजह से ग़लत तफ़्सीर करने
वाला इस हदीस का मिस्दाक़ होकर दोज़खी हो जायेगा।

तबलीग़ आ़म न करने पर अल्लाह तआ़ला ने बनी इसराईल की मज़म्मत फ़रमाई

كَانُوْا لايتناهون عن منكرٍ فَعَلُوْهُ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِى الْعَذَابِ هُمْ خَالِدُوْنَ ○ (پاره٦، رکوع١٤)

(बनी इसराईल के हज़रात) आपस में मना न करते बुरे काम से जो वह कर रहे थे क्या ही बुरा काम है जो वह करते थे (यानी तबलीग़ आ़म न करना जो मालूम हो उससे दूसरों को बाख़बर न करना) तू देखता है इनमें बहुत से लोग दोस्ती करते हैं काफ़िरों से, क्या ही बुरा सामान भेजा उन्होंने अपने वास्ते (यानी एक तो तबलीग़ न करना और मज़ीद नाफ़रमानों से दोस्ती) वह यह कि अल्लाह का ग़ज़ब हो उन पर और वह हमेशा अ़ज़ाब में रहने वाले हैं।

देखो और खुद फ़ैसला करो मैं बहुत वज़ाहत कर चुका हूं मगर मेरा काम ही है हदीस व कुरआन से दीन की हक़्क़ानियत का साबित करना और बातिल को जवाब देकर हक़ बात को आफ़ताब बनाना सुनिये अगर हम भी तर्के तबलीग़ करेंगे तो कोई बईद नहीं अल्लाह वही हाल करे जो पहले लोगों का कर चुका है जैसा कि यह आयत बता रही है लेकिन बअ़ज़ बरेलवी उ़लमा तबलीग़े आ़म को बिदअ़त कहते हैं जिसका अल्लाह ने क़रीब चालिस आयतों में हुक्म दिया है और यह जाहिल कहते हैं कि तबलीग़ हर एक फ़र्द पर फ़र्ज़ नहीं, हां, नहीं कहते रहो मगर यह भी देखो तुम्हारे क़ौल के मुवाफ़िक़ अ़मल करने वाले बनी इसराईल को अल्लाह ने कैसा सख़्त जुमला कहा इस आयत में 'क्या तुम्हारे दिल पत्थर हो गये हैं' क्या तुम अल्लाह से ज़रा भी नहीं डरते वह फ़िरऔ़न जो ख़ुदाई का दावा करता था वह भी रात में डरता था और रोता था क्या तुम इसके भी बाप हो गये बताओ क्या इस आयत में तबलीग़ आ़म न करने वालों पर वईद ज़िक्र नहीं की, फिर जन्नत से इतनी दुश्मनी क्यों? और दोज़ख़ से इतनी मुहब्बत क्यों? क्या शैतान तुम्हारी ज़माअ़त का अमीर है वह भी इतनी जसारत नहीं करता जितनी तुमसे मैं देख रहा हूं।

और दूसरी आयत से भी तबलीग़ आ़म करने का हुक्म ज़ाहिर हो रहा है

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ يَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ۝ (توبہ)

और मोमिन मर्द और मोमिन औ़रतें एक दूसरे के मददगार हैं नेक बात सिखलाते हैं और बुराई से मनअ़ करते हैं।

देखो क्या इससे भी और कोई साफ़ बात हो सकती है कि तबलीग़ एक ऐसी चीज़ है जो आ़म है अपने इल्म के ऐतिबार से,

मर्द मर्दों में दीनी दावत दें और औरतें औरतों में दावत दें जितना भी मालूम हो वह दूसरों तक पहुंचा दो वरना तो अज़ाबे इलाही रास्ते पर है क्योंकि खुली दलील जब हो तो फिर इससे बढ़कर और कौन सी चीज़ हो सकती है यहां तक कि आयते मुग़लक़ा को छोड़ना ज़रूरी है आयते सरीह के सामने, क्योंकि आयत मुग़लक़ा अल्लाह का राज़ होती है। ख़ैर इस आयत ने तो बिल्कुल ही मआमला साफ़ कर दिया। और कह दिया कि तबलीगे आम ज़रूरी है अपने इल्म के बक़द्र और अब भी कोई तबलीगे आम का मुनकिर है तो वह इन आयतों का काफ़िर है जो मैंने तबलीग़ के आम होने की दलील में पेश की हैं और जो एक आयत का भी काफ़िर हो वह मुसलमान कहलाने के काबिल नहीं है, खुद फ़ैसला करो कि क्या वह काफ़िर है या मुसलामान?. मैं क्यों हर बात बच्चों की तरह वाज़ेह करूं, खुद समझो कि कुरआन व अहादीस का मुनकिर क्या वह दाख़िले इस्लाम है या ख़ारिजे इस्लाम अगर ख़ारिज हो तो तौबा के ज़रिये दाख़िल हो जाओ अल्लाह ग़लतियों को माफ़ करने वाला है बड़ा मेहरबान और रहीम है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि दीन की बातों पर अ़मल न हो सके तब भी दावत ज़रूर दो

हज़रत अनस रज़ि० रिवायत करते हैं कि हमने सरवरे दो आलम स० की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया:

(۲۱۹) یا رسول اللہ لا نَأمُرُ بِالْمَعْرُوْفِ حَتّٰی نعمل بہ ولا نَنْھٰی عَنِ الْمُنْکَرِ حتّٰی نجتنبہ کلہ فقال بل مروا بالمعروف وان لم تعملوا بہ وانھوا عن المنکر وان لم تجتنبوہ کلہ (طبرانی، احیاء العلوم جلد دوم)

या रसूलुल्लाह स० क्या हम अम्र बिल्मअ़रूफ़ न करें जब तक मअ़रूफ़ पर अ़मल पैरा न हों और मुनकर से मना न करें

जब तक तमाम मुनकरात से इज्तिनाब न कर लें, आंहजरत स० ने इरशाद फ़रमाया, नहीं बल्कि अम्र बिल्मअ़रूफ़ करो अगरचे मअ़रूफ़ पर तुम्हारा अ़मल न हो और मुनकर से मनअ़ करो चाहे तुम खुद तमाम मुनकरात से इज्तिनाब न करते हो।

देखो तबलीग़ वालों का यह क़ौल अपना ख़रीदा हुआ नहीं है बल्कि हुज़ूर स० का इरशाद है, मुझको बरेलवियों पर तअ़ज्जुब है कि वह खुद को आ़शिक़े रसूल कहते हैं और मअ़शूक़ के अक़वाल का भी आ़शिक़ों को पता नहीं अ़जीब आ़शिक़ हैं। और देवबन्दियों को, यह रसूल स० के दुश्मन कहते हैं और रसूल स० के दुश्मन जिनसे इनकी मुराद देवबन्दी हैं इस दुश्मने रसूल (बक़ौल आपके) इनके एक एक बच्चे को इतना तअ़ल्लुक़ होता है हदीस से कि पांच—पांच और चार—चार सौ सफ़हात की किताबें हदीस और कुरआन की रोशनी में सिर्फ़ इनके बच्चे यानी तलबा लिखते हैं जिन पर झूठे आ़शिक़ों के उ़लमा भी कुदरत नहीं रखते तो इनके चेले क्या रखेंगे, क्योंकि इनके मदारिस में सिर्फ़ देवबन्दियों को काफ़िर कहना और तबलीग़ वालों को काफ़िर कहने की तालीम दी जाती है बताओ इन तलबा का भी क्या कुसूर है जब कि इनके उसताद ही क़ब्र परस्त और लड्डू खाउ हैं यही वजह है कि बहुत से बरेलवी तलबा हमारे मदरसों में पढ़ते हैं बहुत से ग़ैर मुक़ल्लिदीन तलबा हमारे मदरसों में पढ़ते है और बहुत से मौदूदी तलबा हमारे मदरसों में पढ़ते हैं क्योंकि उनके उ़लमा इल्म से कोरे हैं। ख़ैर, खुद को अगर कोरा व जाहिल रखना पसन्द है तो उम्मते मुहम्मदिया को तो कोरा न रखो। और दूसरी हदीस देखो दलाईल को देखकर जिगर तो बाहर नहीं निकल रहा है। अरे भाई जो कुरआन से न डरे वह हमारे दीनी दलाईल से क्या डरेगा। देखो हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० हुज़ूर स०

का इरशाद नक़ल करते हैं कि भलाई की तलक़ीन करो अगरचे खुद न भी अमल करो और बुराई से रोकते रहो चाहे खुद न भी रूकते हो। और तीसरी रिवायत सुनो। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० नबी करीम स० से रिवायत करते हैं कि आप स० ने इरशाद फ़रमाया कि कुछ लोग ऐसे होते हैं जो भलाई के फैलने का और बुराई को रोकने का ज़रिया होते हैं और कुछ लोग ऐसे होते हैं जो बुराई को फैलने का और भलाई की रुकावट का ज़रिया होते हैं। सो मुबारकबादी है उन लोगों के लिये जिन्हें अल्लाह तआला ने ख़ैर के फैलाने का ज़रिया बनाया और हलाकत है उन लोगों के लिये जो बुराई फैलाने पर तुल गये। (यह दोनों रिवायतें तंबीहुलग़ाफ़िलीन की हैं)

देखो दोस्तो! यह हुज़ूर अकरम स० का क़ौल है और यही बात तबलीग़ वाले भी कहते हैं मगर लोग ऐतिराज़ करते हैं अब इनको खुद समझना चाहिये कि क्या तबलीग़ वालों का क़ौल ग़लत है जबकि मुफ़स्सिरे कुरआन मुहम्मद स० ने तफ़सीर कर दी कि तबलीग करो चाहे तुम अमल न करो इसमें क्या मसलिहत है कि बग़ैर अमल के भी अमल का हुक्म दो, मैं बताता हूं इसमें यह मसलिहत है कि जब वह दूसरों को नमाज़ की दावत देगा तो एक न एक दिन खुद उसको शर्म आजायेगी कि मैं तो लोगों को नमाज़ पढ़ा पढ़ा कर जन्नती कर रहा हूं मैं भी क्यों जन्नत से दूर रहूं चलो मैं भी नेक अमल करूं देखो इस दावत ने इसको दीन पर अमल की हिदायत अता की और अगर यह अमल न भी करे तब भी इसको इन हज़रात का सवाब ज़रूर मिलेगा जो अमल करते हैं। अरे भाई अब किसी की क्या ज़रूरत रह गई जब कि مُنَزَّلُ عليه القرآن ने खुद तफ़सीर कर दी कि बेअमली में तबलीग़ जाइज़ है क्योंकि एक न एक दिन यह तबलीग़ इसको भी सैराब

करेगी, इन्शाल्लाह।

अब मोअ़तरिज़ ऐतिराज़ करता है

इस आयत को पेश करके मोअ़तरिज़ ऐतिराज़ करता है और कहता है कि कुरआन के सामने हदीस की क्या वक़अत है जवाब पेश है कुरआन खुदा का कलाम है और हदीस मुहम्मद स० का कलाम है और दोनों में इतना फ़र्क़ है जो ग़ैर मालूम और ग़ैर मतसव्वर है। लेकिन जब आयते कुरआनी में और हदीस में ततबीक़ हो तो फिर हदीस को बातिल करने से क्या फ़ाइदा बल्कि यह नाजाइज़ है कि ततबीक़ की सूरत मुमकिन होते हुए हुज़ूर अकरम स० के क़ौल को बेअ़मल कर दिया जाये और ततबीक़ न दी जाये क्योंकि हुज़ूर स० का क़ौल भी कोई हमारा क़ौल थोड़ा ही है बल्कि आप स० के क़ौल की तो अल्लाह तआ़ला ही तारीफ़ कर सकता है और इन अल्फ़ाज़ में अल्लाह ने तारीफ़ की ﴿وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى﴾ आपका क़ौल कोई नफ़्सानी और शैतानी नहीं है बल्कि वह तो रहमानी है यानी अल्लाह की तरफ़ की वही है जो मतलू (जिसकी तिलावत की जाये) भी होती है जैसे कुरआन और ग़ैर मतलू भी होती है जैसे हदीस अब बताओ कि हदीस का वुजूद भी अल्लाह की ही तरफ़ से है या नहीं है बस फ़र्क़ यह है कि एक कुरआन है और दूसरा इससे कम दर्जे का कलाम है जिसका नाम हदीस है ख़ैर यहां पर ततबीक़ मुमकिन है अहादीस में और आयते कुरआन में मोअ़तरिज़ के ऐतिराज़ वाली आयत देखिये फिर ततबीक़ साफ़ हो जायेगी। ﴿لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ﴾ क्यों कहते हो जो तुम नहीं करते हो। ततबीक़ सिर्फ़ तर्जुमे के सही करने से हो जायेगी क्या तर्जुमा होगा ततबीक़ का (जिसके न करने का इरादा हो वह बात क्यों कहते हो) फ़ेअ़ले मुज़ारेअ़ दोनों मअ़ना में इस्तेमाल होता है हाल

में भी और इस्तिक़बाल में भी यहां हदीस की वजह से मुरतकबिल के मअ़ना लेना बेहतर है कुछ तर्जुमे से ज़हन में ततबीक़ आई? नहीं तो सुनो! हुज़ूर स० ने फ़रमाया फ़िलहाल वह अ़मल न कर रहा हो इसके बारे में यह हुक्म दिया कि वह लोगों को मअ़रूफ़ का हुक्म करे और बुराई से रोके। अब रहा मस्अला यह कि अगर इसका आगे चलकर भी अ़मल करने का इरादा न हो तो फिर आप क्या कहेंगे इसके जवाब में हम आयत को पेश करेंगे कि अगर मुस्तक़बिल में भी न करने का इरादा हो तो इस मआमले में हदीस ख़ामोश है अब कुरआन बोला कि मुस्तक़बिल में अ़मल का इरादा न हो तो वह लोगों को हुक्म न दे। पहले ख़ुलासा देखिये अगर फिलहाल अ़मल न कर रहा हो तो इस मौक़े पर आयते कुरआनी ख़ामोश है और हदीस से फ़ैसला हो रहा है और अगर फ़िलहाल भी अ़मल नहीं कर रहा हो और न मुस्तक़बिल में अ़मल के करने का इरादा हो तो अब हदीस ख़ामोश है और आयते कुरआन फ़ैसला कर रही है अब कलाम को और मुख़्तसर करता हूं अगर हाल में अ़मल न कर रहा हो और आगे अ़मल का इरादा है तो हदीस ने हुक्म दे दिया कि तुम लोगों को अम्र बिलमअ़रूफ़ और नहीं अ़निलमुनकर कर सकते हो और अगर मस्अला मुस्तक़बिल में भी नफ़ी का हो यानी न फ़िलहाल अ़मल कर रहा हो और न मुस्तक़बिल में अ़मल का इरादा हो तो अब हदीस ख़ामोश है और कुरआन फ़ैसला कर रहा है कि यह अम्र बिलमअ़रूफ़ और नहीं अ़निलमुनकर के क़ाबिल नहीं क्योंकि यह मुकम्मल फ़ासिद है। पहले वाला तो कुछ अच्छा था यानी आगे चलकर अ़मल का इरादा तो था मगर यह ज़ालिम न अभी अ़मल करने को तैयार और न मुस्तकबिल में तो यह किसी काम का नहीं है।

मजीद आसान ख़ुलासा: अब अगरचे अ़मल न कर रहा हो

मगर आगे चल कर अ़मल का इरादा है तो इस शख़्स के लिये शरीअ़त अम्र बिलमअ़रूफ़ नहीं अ़निलमुनकर की इजाज़त देती है और अगर वह अभी भी अ़मल न कर रहा हो और न आगे चल कर अ़मल करने का इरादा हो तो इसके लिये शरीअ़त इजाज़त नहीं देती न अम्र बिलमअ़रूफ़ की और न नहीं अ़निलमुनकर की।

नुकता इस तक़रीर से यह साबित न करना कि जिस फ़ेअ़ल पर वह अ़मल करता है उसकी भी तबलीग़ न करे अगर किसी दूसरे फ़ेअ़ल को न करता हो और न करने का इरादा हो तो उस का यह हुक्म सिर्फ़ उस अ़मल के लिये है जिस फ़ेअ़ल के बारे में इसका अ़मल का इरादा न हो उसकी तबलीग़ न करे मगर जिस फ़ेअ़ल पर वह फ़िलहाल अ़मल नहीं करता है। मगर आगे चलकर करने का इरादा है तो इन अफ़आ़ल में अम्र बिलमअ़रूफ़ व नहीं अ़निलमुनकर जाइज़ है यह जो कहा गया है कि इसकी तबलीग़ न करे इसका हुक्म सिर्फ़ इस फ़ेअ़ल पर है जिस को इसका न करने का इरादा है आगे चल कर भी मगर जो नेक काम कर रहा है उसकी तबलीग़ ज़रूर करे वह इस आयत के मिस्दाक़ में दाख़िल नहीं।

तबलीग़ वाले तशकील के वक़्त यह कहते हैं कि भाई कम अज़ कम नीयत तो कर लो

(۲۲۰) عن المهاجر بن حبيب رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم قال الله تعالى اِنِّىْ لستُ كُلَّ كلام الحكيم اَتَقَبَّلُ ولكِنِّىْ اَتقَبَّلُ هَمَّهٗ وهواهُ فَاِنْ كان هَمُّهٗ وهواه فى طاعتى جعلتُ صَمْتَهٗ حمدًا لى ووقارًا و اِنْ لم يتكلم (مشكوٰة شريف)

हज़रत मुहाजिर बिन हबीब रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम

स० ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मैं अक़लमन्द और दानिशवर की हर बात कुबूल नहीं करता (यानी मेरा दस्तूर यह नहीं है कि अक़लमन्द शख़्स जो बात भी कहे उसको कुबूल करो) बल्कि मैं उसके क़स्द व इरादे को कुबूल करता हूं (यानी यह देखता हूं कि उसने जो बात कही है वह किस क़स्द व इरादे और किस नीयत के साथ कही है) पस अगर उसकी नीयत वह मुहब्बत मेरी ताअ़त व फ़रमांबरदारी के तईं होती है तो मैं उसकी ख़ामोशी को (भी) अपनी हम्द व सना, उसके इल्म व वक़ार के बराबर क़रार देता हूं अगरचे वह कोई बात न कहे (वक़ार से मुराद हुस्ने नीयत है।)

हज़रात! तबलीग़ वाले जो तशकील के वक़्त यह बात कहते हैं कि भाई कम अज़ कम नीयत तो कर लो ताकि तुमको तुम्हारी नेक नीयती का सवाब हासिल हो और अल्लाह नीयत के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करता है अगर तुम जमाअ़त में जाने की नीयत करोगे तो अल्लाह तआ़ला ज़रूर बिज़्ज़रूर कोई न कोई राह निकालेगा और आप दीन सीखने के लिये जमाअ़त में निकल जाओगे ख़ैर इतना तो मस्अला हो गया है कि तबलीग़ वालों का यह कहना कि नेक काम की नीयत करोगे तो अभी से सवाब हासिल होगा यह कहना हदीस की रू से बिल्कुल दुरुस्त है और यह हदीस इस क़ौल की पुरज़ोर ताईद कर रही है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि नीयते सालेह के बाद अल्लाह की मदद होती है

(٢٢١) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم مامن عبد كانت له نيةً في اداء دينه الا كان معه من الله عون وحافظ. (احمد، احياء العلوم جلد دوم)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया जिस शख़्स की नीयत क़र्ज़ अदा

करने की हो (यहां पर तमाम नेक अअ़माल की नीयत पर अत्फ़ भी जाइज़ है) (यानी यह कि अगर बन्दा नेक काम की नीयत करेगा तो) उसके साथ अल्लाह तआ़ला की जानिब से एक मददगार और एक मुहाफ़िज़ होता है।

इस हदीस में क़र्ज़ का ज़िक्र है और एक दूसरी हदीस में ऐतिकाफ़ का ज़िक्र है कि अगर वह ऐतिकाफ़ की नीयत करेगा और मस्जिद में दाख़िल होगा तो उसको ऐतिकाफ़ का सवाब हासिल होगा। और एक हदीस में सोने के बारे में हदीस है कि अगर कोई शख़्स नमाज़ पढ़ने की नीयत से सो गया और उठ न सका तो उसको सवाब हासिल होगा इसी तरह यह क़र्ज़ का भी मस्अला है कि अगर क़र्ज़ अदा करने की नीयत हो तो अल्लाह तआ़ला उसकी मदद करता है चाहे किसी भी तरह हो इन तमाम हदीसों को जब हम देखते हैं तो इस नतीजे पर हम पहुंचते हैं कि इन अहादीस से कोई ख़ास अ़मल मुराद नहीं है बल्कि कोई भी अ़मल हो अगर वह नेक नीयत से करेगा तो इस पर उसको सवाब दिया जायेगा और ग़लत फ़ेअ़ल के सिर्फ़ नीयत करने की वजह से गुनाह न होगा बल्कि उस वक़्त गुनाह होगा जबकि उसकी नीयत बिल्कुल पुख़्ता हो और उसको अंजाम देने के लिये वक़्त तलाश करता है तो इस पुख़्ता बदनीयती पर गुनाह लाज़िम हो जायेगा और अ़मल करने के बाद तो ज़ाहिर ही है। ख़ैर इतनी बात तो साफ़ हुई कि नीयते सालेह से सवाब फ़ौरी तौर पर जारी हो जाता है और अल्लाह की मदद भी शामिल होती है।

तबलीग़ वालों को जब खाने की दावत दी जाती है तो वह तशकील क्यों करते हैं

जलालैन पेज नम्बर 305 के हाशिये में लिखा है। एक

मरतबा हुज़ूर स० को एक मुश्रिक ने दावत दी जिसका नाम उक़बा बिन अबी मुईत था अब इबारत नक़ल करता हूं।

(٢٢٢) انه صنع طعامًا ودعا الناس اليه ودعا رسول الله صلى الله عليه وسلم فلما قدم الطعام قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما انا آكُلُ طعامك حتى تشهد ان لا اله الا الله واني رسول الله ففعل فاكل رسول الله صلى الله عليه وسلم من طعامه وكان عقبة صديقا لابي بن خلف فلما اُخْبِرَ بذلك قال له يا عقبةَ صَبَأْتَ قال لاولكن دخل عليَّ رجل فابٰى اَنْ يَاكُلَ طعامي الا اَنْ اشهد له فَاسْتَحْيَيْتُ ان يخرج من بيتي ولم يطعم فشهدت له نطعم فقال ما انا براض عنك حتى تاتيهُ فَبزق في وجهه ففعل ذلك عقبةُ فعاد بذاقهٗ على وجهه فحرقه فقال رسول الله صلى عليه وسلم لا اراك خارج مكة الا علوتُ راسك بالسيفِ فاسر يوم بدر فامر عليها فقتله وطعن النبي ابيا باُحُدَ في المبازرة فرجع الى مكة ومات.

जब उक़बा बिन अबी मुईत ने खाना तैयार किया तो बहुत से लोगों को बुलाया और आप स० को भी बुलाया जब आप स० के सामने खाना पेश किया गया तो आप स० ने फ़रमाया (यानी तशकील शुरू कर दी) मैं तेरा खाना नहीं खाऊंगा यहां तक कि तू गवाही दे कि अल्लाह के अ़लावा कोई मअ़बूद नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूं। उक़बा ने बात कुबूल कर ली और कलिमा पढ़ लिया। अब हुज़ूर स० ने खाना खा लिया उस वक़्त (जब तशकील पूरी हुई वरना तशकील से पहले खाना गवारा न किया यह उम्मत की फ़िक्र की अ़लामत है चाहे यह अ़लामत हुज़ूर स० में हो या आप स० के उम्मती में) और उक़बा की बदनसीबी, उस का दोस्त उबैय बिन ख़ल्फ़ था जब उबैय बिन ख़ल्फ़ को यह पता लगा तो फ़ौरन पूछा कि ऐ उक़बा! क्या तू बद्दीन हो गया है (बेरलवी हज़रात भी जब उनका कोई आदमी तबलीग़ में जाता है तो उसको भी बद्दीन कहते हैं उबैय बिन ख़ल्फ़ की तरह)

उक़बा ने कहा नहीं, लेकिन वजह यह हुई कि मेरे पास एक शख़्स आया (यानी हुज़ूर स०) और उन्होंने मेरा खाना खाने से इन्कार कर दिया यहां तक कि मैं शहादत दूं। उक़बा कहता है मुझको यह बात नापसन्द लगी कि मेरे घर आया हुआ इन्सान बग़ैर खाये चला जाये इसलिये मैं ने कलिमा पढ़ लिया पस उन्होंने भी खाना खा लिया (उबैय बिन ख़ल्फ़ भी पक्का बरेलवी था) उसने कहा मैं तुझसे उस वक़्त तक खुश नहीं हूंगा यहां तक तक कि तू आप स० के पास जाकर आप स० के चेहरे मुबारक पर थूके (लअ़नल्लाहु अ़लैहिमा) उक़बा ने उबैय बिन ख़ल्फ़ की बात को पूरा कर दिया लेकिन जब उसने आप के चेहरे अनवर पर थूका तो वह थूक लौट गया उसके ही चेहरे पर, पस थूक से उसका चेहरा भर गया। हुज़ूर स० ने फ़रमाया अगर मैं तुझको मक्का मुकर्रमा से बाहर पा लूंगा तो तेरी गर्दन को तलवार से अलग कर दूंगा। पस उक़बा हाथ लगा बद्र के दिन। हुज़ूर स० ने हज़रत अ़ली रज़ि० को हुक्म दिया कि इस (गुस्ताख़े रसूल) को क़त्ल कर दो (हज़रत अ़ली रज़ि० ने काम तमाम कर दिया) और दूसरे को हुज़ूर स० ने भाला मारा तो उसको ज़रा सी ख़राश आई और वह उसकी ताब न ला सका और मक्का जाते जाते दरमियान रास्ते में (यानी उबैय बिन ख़ल्फ़) जहन्नम रसीद हुआ।

ख़ैर यह वाक़िआ बयान करना मक़सद नहीं है बस सोचा कि पूरी रिवायत भी हो जायेगी हमारा इस्तिदलाल भी हो जायेगा और जिन्होंने यह वाक़िआ नहीं सुना वह पढ़ भी लेंगे। देखो हुज़ूर स० जब उक़बा बिन अबी मुईत के घर दावत में तशरीफ़ ले गये तो फ़ौरन तशकील करनी शुरू की कि खाना उस वक़्त कुबूल किया जायेगा जब तुम हमारा कलिमा पढ़लो उस ने पढ़ लिया चाहे झूटा ही सही। हुज़ूर स० कोई आ़लिमुलग़ैब तो न थे जो जान

जाते कि भाई तू ने अब तक सच्चे दिल से कलिमा नहीं पढ़ा है। सही नीयत से पढ़ ले वरना मैं अभी चला लेकिन हुज़ूर स० आलिमुलग़ैब नहीं थे अगर होते तो उसकी झूठी शहादत पर खाना क्यों खाते। ख़ैर हुज़ूर स० ने उसके क़ौल का ऐतिबार किया और खाना खा लिया और यही ऐतिराज़ तबलीग़ वालों पर हुआ था कि वह दावत ही कुबूल नहीं करते जब तक कि जमाअत में नाम न लिखा जाये मेरे जवाब की कोई ज़रूरत नही बस इतना कहता हूं कि यह तरीक़ा बिदअ़त नहीं बल्कि सुन्नते रसूलुल्लाह है और यह उम्मत की फ़िक्र की अ़लामत है वरना मस्ती से खाना खाएं बरेलवी हज़रात की तरह, हमें किसी का क्या ग़म? तबलीग़ वाले हर काम में सुन्नत देखते हैं मगर जो उन को मुख़ालिफ़े सुन्नत जानते हैं तो वह उनकी नज़र का कुसूर है।

जो शख़्स राहे ख़ुदा में इन्तिक़ाल कर जाये उसकी फ़ज़ीलत चाहे तालिबे इल्म हो या तबलीग़ी

قال الله تعالیٰ وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللّٰهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللّٰهِ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُورًا رَّحِيمًا (پارہ۵)

और जो कोई निकले अपने घर से हिजरत करके अल्लाह और रसूल की तरफ़ फिर आ पकड़े उसको मौत तो मुक़र्रर हो चुका उसका सवाब अल्लाह के यहां और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

चाहे वह शख़्स अपने वतन से परेशान हुआ हो कि मेरे वतन में तो सब बिदअ़त ही बिदअ़त है चलो किसी इस्लामी जगह पर जाकर बसें। या ऐसा शख़्स हो कि अल्लाह के दीन को सीखने के लिये निकला हो या सिखाने के लिये निकला हो और रास्ते में

किसी भी वजह से इन्तिक़ाल हो गया तो उस को अज्र अल्लाह अपने शायाने शान देगा और अल्लाह तआला ने غفورا का लफ़्ज़ बढ़ा कर यह इशारा कर दिया कि मग़फ़िरत कर देगा और रहीम का लफ़्ज़ बढ़ा कर जन्नत की तरफ़ इशारा कर दिया क्योंकि जन्नत सिर्फ़ अल्लाह के रहम व रहमत से ही हासिल होगी और इस आयत का मिस्दाक़ तालिबे इल्म भी है और तबलीग़ी भी क्योंकि यह दोनों राहे ख़ुदा में सिर्फ़ अल्लाह और उसके रसूल स० के लिये जाते हैं ताकि इल्म सीखें और जो आता है उसको सिखाएं और यह बात भी ज़हन नशीन रहे कि مهاجرا الى الله ورسوله का जुमला बहुत वसीअ़ है यह तालिबे इल्म पर भी बोला जाता है तबलीग़ वालों पर भी। बिदअ़त से सुन्नत वाली जगह की तरफ़ हिजरत करने पर भी बोला जाता है। दारुलकुफ़्र से दारुलइस्लाम की तरफ़ हिजरत के लिये भी बोला जाता है वग़ैरा। यह तमाम के तमाम इस बशारत के मिस्दाक़ हैं।

नीज़ हदीस देखिये: हुज़ूर स० का इरशाद यह है कि जो मुसलमान अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल स० की इताअ़त के लिये निकलता है और सवारी के रकाब में पांव डाल कर चाहे एक क़दम ही चला था कि उसे मौत आ गई तो अल्लाह तआला उसे मुहाजिरीन जैसा अज्र व सवाब अ़ता फ़रमायेगें। और जो मुसलमान जिहाद की ग़र्ज़ से घर से निकला अभी लड़ाई की नौबत नहीं आई थी कि जानवरों ने उसको गिरा दिया या किसी ज़हरीले जानवर ने डस लिया या यूं ही फ़ौत हो गया तो यह शख़्स शहीद होगा और जो शख़्स बैतुल्लाह शरीफ़ का क़स्द करके घर से निकला और रास्ते में ही मौत आ गई तो अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत वाजिब कर देते हैं (इसका मिस्दाक़ तो ज़ाहिर है हाजी साहब हैं)

ख़ैर यहां यह साबित करना था कि जो शख़्स अल्लाह की राह में मर जाये उसके लिये मुहाजिर जैसा अज्र होगा जैसा कि हदीस से मालूम हुआ इससे बढ़ कर तबलीग़ वालों के लिये और क्या बात होगी कि अल्लाह ने यह काम सिर्फ़ नबियों को अता किया था और आज अल्लाह ने मुहम्मद स० की बरकत से यह काम हमारे मुक़द्दर में भी अता फ़रमाया। कोई नबी ऐसा नहीं है जिसने तबलीग़े दीन न की हो। चाहे हज़रत सुलेमान अ़लै० ही क्यों न हो उन्होंने अपने ढंग से तबलीग़ की। हज़रत मूसा अ़लै० ने अपने तरीक़े से तबलीग़ की, और हज़रत ईसा अ़लै० ने अपने तरीक़े से तबलीग़ की। और हुज़ूर स० ने इस तरीक़े पर तबलीग़ की कि आगे चलकर के मेरी उम्मत इस तरह तबलीग़ करे क्योंकि हुज़ूर स० की उ़म्र तो सिर्फ़ 63 साल थी मगर उम्मत सब से बड़ी है। इसलिये हुज़ूर स० ने तबलीग़े दीन उम्मत के मिज़ाज को मद्देनज़र रख कर की, कि आगे मेरी उम्मत भी मेरे इस तरीक़े को इख़्तियार करे और तबलीग़े दीन क़ियामत तक करती रहे और यही वजह है कि अगर कोई शख़्स मुहम्मद स० की तबलीग़े दीन को संभालने की कोशिश करे तो बहुत जल्द उसे हासिल कर लेता है और रही परेशानी की बात, तो वह दूसरी बात है यहां पर सिर्फ़ हुज़ूर स० के तरीक़ा–ए–तबलीग़ की बात हो रही है जो तरीक़ा सब नबियों से आसान है, समझ के ऐतिबार से भी, करने के ऐतिबार से भी, बमुक़ाबिल दूसरे नबियों के तरीक़ों के, इनको आप देखें तो दुशवार नज़र आते हैं। मैं सिर्फ़ हुज़ूर स० के तरीक़े की आसानी बयान कर रहा हूं न कि उस हदीस के मुख़ालिफ़ बात कर रहा हूं जिसमें हुज़ूर स० ने फ़रमाया तमाम नबियों से ज़्यादा मुझको तकलीफ़ दी गई इसको तो मैं आगे मुफ़स्सल ज़िक्र करूंगा। इन्शाल्लाह।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि तबलीग़े दीन जिहाद से अफ़ज़ल है

(۲۲۳)قال رسول الله صلی الله علیه وسلم ما اعمال البرّ عند الجهاد فی سبیل الله إلا کنفثة فی بحر لُجیٍ وما جمیع اعمال البِرّ والجهاد فی سبیل الله عند الامر بالمعروف والنهی عن المنکر الاّ کنفثة فی بحر لجی (احیاءالعلوم جلددوم)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद के मुक़ाबले में तमाम अच्छे अअ़माल ऐसे हैं जैसे बहरे अ़मीक़ में एक फूंक (हल्की फुल्की चीज़) और अम्र बिलमअ़रूफ़ और नहीं अनिलमुनकर के सामने जिहाद फ़ी–सबीलिल्लाह समीत तमाम अअ़माले ख़ैर की हैसियत ऐसी है जैसे गहरे समुन्द्र में एक फूंक (यानी हल्की फुल्की चीज़) की हैसियत है।

तबलीग़ वाले इसी बात को बयान करते है कोई मन घड़त बात नहीं कहते हैं वह हदीस ही से बयान करते हैं मगर बअ़ज़ हज़रात सिर्फ़ उनको बदनाम करने की कोशिश करते हैं और इस रिवायत को इमाम ग़ज़ाली हुज्जतुल–इस्लाम रह० ने अपनी अ़ज़ीम व ज़ख़ीम किताब में नक़ल किया है, और दो तरीक़ों से नक़ल किया है और इसमें कोई तअ़ज्जुब की भी बात नहीं है कि जिहाद से तबलीग़े दीन अफ़ज़ल है क्योंकि जिहाद इस्लाम का आख़री हथियार है और इसमें एक ऐतिबार से ख़ूं–रेज़ी है इससे यह न समझना कि मैं जिहाद के मुख़ालिफ़ हूं, ख़ुदा की क़सम, हरगिज़ नहीं, हमारे दीन की आधी रौनक़ जिहाद है। ख़ैर हदीस में यहां तक आया है कि कोई शख़्स मर गया और उसके दिल में जिहाद की तमन्ना न थी वह मुनाफ़िक़ की मौत मरा। बताओ क्या जिहाद से कोई मुसलमान इन्कार कर सकता है। बल्कि तारीख़

शाहिद है, देवबन्दी हज़रात आज तक हर ज़रूरते दीन में आगे थे और इन्शाल्लहा आगे रहेंगे। अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत की पहली अ़लामत तो यह है कि हम अपने घरवालों की मुहब्बत को छोड़ कर मदरसे और राहे तबलीग़ में जाते हैं। बड़े-बड़े करोबार को अल्लाह के हवाले करके और दूसरे लोग हमारे इस अ़मल पर तअ़ज्जुब करते हैं। तअ़ज्जुब तुम क्यों न करो? जबकि कुफ़्फ़ारे मक्का भी सहाबा रज़ि० की मुहब्बत से जो उनके रसूल स० से थी, तअ़ज्जुब करते थे और हम भी हज़रात सहाबा रज़ि० के ही नक़्शे क़दम पर हैं।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि अल्लाह हर एक से तबलीग़ के बारे में सवाल करेगा

(۲۲۴) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اِنّ الله تعالى يسال العبدَ ما منعك اذا رأيت المنكر فاذا لقن الله العبد حجتهٗ قال رَبِّ وثقت بك وفرقتُ من الناس (ابن ماجہ، احیاء العلوم جلد دوم، ترمذی)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला बन्दे से सवाल करेगा कि बुराई देख कर मना करने से तुझे किस चीज़ ने रोके रखा। अगर अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे को इस सवाल का जवाब सिखला देगा तो वह अ़र्ज़ करेगा ऐ परवरदिगार मैंने तुझ पर भरोसा किया और लोगों से डर गया।

हासिल यह निकला कि सवाल तो सब से होगा मगर जिसको अल्लाह तआ़ला बचाने पर आजाये बचा देगा और इस हदीस में जो बात बताई गई है वह यह है कि अगर लोगों से डर हो कि अगर तबलीग़ करो तो लोग नुक़सान पहुंचायेंगे यह तो उ़ज़्रे कामिल है क्योंकि जान का बचाना बहुत बड़ा फ़रीज़ा है जान बचाने के लिये अगर कुफ़्र का कलिमा भी कहना पड़े तो

सिर्फ़ ज़बान से कहने की इजाज़त है मगर दिल से इन्कार न करे वरना काफ़िर हो जायेगा। ख़ैर बात यह साबित हुई कि तबलीग़ न करने वालों से सवाल ज़रूर होगा फिर वह अल्लाह की बात है चाहे उसको माफ़ करे या फिर अ़ज़ाब दे।

और बुख़ारी की यह हदीस भी इसी पर दाल है كلكم راع وكلكم مسئول عن رعيته कि हर एक से सवाल होगा कि दीन की बात पहुंचाई या नहीं।

दावत देने वाले को दुनिया का क्या ख़ौफ़

(۲۲۵) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا ينبغى لامرى شهد مقاما فيه حق الا تكلم به فانه لن يقدم اجله ولن يحرمه رزقا هو له

(احیاء العلوم جلد دوم، بیہقی)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया जो शख़्स किसी ऐसी जगह मौजूद हो जहां हक़ बात कहने की ज़रूरत पेश आये तो इससे गुरेज़ न करे इसलिये कि मौत अपने मुक़र्ररा वक़्त से पहले नहीं आयेगी और जो रिज़्क़ इसकी क़िस्मत में है उससे महरूम नहीं होगा।

यह हदीस उस शख़्स के लिये है जो कामिल यक़ीन वाला हो और जिसको मौत से ख़ौफ़ न हो बस सिर्फ़ अल्लाह व रसूल स० की मुहब्बत है और कुछ नहीं उसके लिये यह हुक्म है कि वह दावत दे और मौत का ख़ौफ़ न करो क्योंकि लोगों के मारने से आदमी नहीं मरता जब तक कि ख़ुदा की इजाज़त न हो और जो रासिख़ुल–ईमान होगा उसका दुनिया कुछ नहीं बिगाड़ सकती है, क्योंकि अल्लाह तआ़ला अब उसको अपना वली बना चुका होता है जो अल्लाह की तरफ़ चलता है तो अल्लाह उसकी तरफ़ दौड़ता है वरना तो पहले हदीस गुज़र चुकी है अगर रोकने की ताक़त न हो तो ज़बान से मना करदे अगर ज़बान से कहने की भी ताक़त न हो तो दिल से ज़रूर उस फ़ेअ़ल को बुरा जाने और

जो उस फ़ेअ़ल को बुरा भी नहीं जाने, जैसे ज़िना हो रहा है और यह दिल से बुरा भी नहीं जान रहा है और रोक भी नहीं रहा है तो उ़लमा ने उसको काफ़िर लिखा है क्योंकि इसके बाद कोई ईमान का दर्जा नहीं है।

असल मुजाहिद कौन है ?

हुज़ूर स० ने फ़रमाया–

(۲۲۶) المجاهد من جاهد بنفسه وهواهٗ (احیاء العلوم دوم، حاکم)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया मुजाहिद वह है जो अपने नफ़्स और अपनी ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ जिहाद करे।

और यह भी बात क़ाबिले ग़ौर है कि हर अमल का एक वक़्त होता है, एक मौसम होता है, एक सीज़न होता है, जिसमें इसकी क़ीमत बढ़ जाती है और यही हाल जिहाद का भी है कि जब जिहाद का वक़्त आता है तो दीगर तमाम अअ़माल से अफ़ज़ल और अअ़ला होता है और आ़म तौर पर नफ़्स का जिहाद (यानी अम्र बिलमअ़रूफ़ और नही अ़निलमुनकर) अफ़ज़ल व अअ़ला है।

तबलीग़ करने की वजह से कोई नाराज़ होता है तो होता रहे

(۲۲۷) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم قرن من حديد لا تأخذه في الله لومة لائم وتركه قوله الحق ماله من صديق (ترمذی، طبرانی، احیاء العلوم دوم)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया उ़मर लोहे की तरह सख़्त हैं कि अल्लाह के सिलसिले में किसी मलामत करने वाले की मलामत इन पर असर अन्दाज़ नहीं होती, हक़ गोई ने इनका यह हाल कर दिया है कि इनका कोई दोस्त नहीं है।

आदमी की यह फ़ितरत है कि वह अपने ख़िलाफ़ कोई बात सुनना पसन्द नहीं करता है चाहे वह हक़ पर हो या नाहक़ पर

हो, लेकिन हक़ बात कहने वाले को किसी की मलामत से या नाराज़गी से नहीं डरना चाहिये बल्कि जो भी काम हो वह सिर्फ़ अल्लाह के लिये हो लोग आज मुवाफ़िक़ होते हैं और कल मुख़ालिफ़, लोगों पर कभी ऐतिबार न करना। सिर्फ़ अल्लाह पर ऐतिबार करो, हक़ कहना चाहे ख़ुद के भी ख़िलाफ़ हो, कभी–कभी आदमी हक़ को ज़ाहिर करता है और वह इसके ख़िलाफ़ भी होता है मगर अल्लाह तआला इसकी मस्लेहतन कभी–कभी गिरिफ़्त भी करता है और कभी–कभी हक़ की बरकत से निजात देता है और झूठ किसी न किसी दिन बदनाम करके रहता है। अल्लाह तआला तमाम मुसलमानों को हक़ बात कहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमायें।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि अगर दीन की दावत से कोई हिदायत पर आ जाये तो तमाम दुनिया से बेहतर है

(۲۲۸) قال رسول الله صلی الله علیه وسلم لَاَنْ یَهْدِیَ الله بِكَ رَجُلاً واحداً خیرٌ لَّكَ من الدنیا ومافیها (احیاء العلوم سوم، مثل فی البخاری)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया एक आदमी तेरे ज़रिये हिदायत पा ले दुनिया व मा फ़ीहा (यानी जो कुछ दुनिया में है तमाम) से बेहतर है तेरे हक़ में।

दोस्तो! हुज़ूर स० की तरफ़ मनसूब करके तबलीग़ वाले जो यह बात बयान करते हैं यह बिल्कुल सही है जिसको बुख़ारी और मुस्लिम ने बयान किया है ज़ाहिर बात है कि अल्लाह के बिछड़े बन्दे को अल्लाह से अगर मिलायें तो अल्लाह तआला कितने ख़ुश होगें जब कि अल्लाह को अपने एक एक बन्दे से सत्तर माओं से ज़्यादा मुहब्बत है अगर एक बच्चा गुम हो जाता है तो मां कितनी

बेताब हो जाती है कि न खाना खाती है और न बात करने को राज़ी। बस रोती है अगर इसको कोई इसका बच्चा ला कर दे तो वह मां उस शख़्स का एहसान क़ियामत तक नहीं भूलेगी कि बहुत बड़ा मुझ पर एहसान किया है। तो बताओ अल्लाह तआला कितने खुश होंगे जबकि इसको इस तरह की सत्तर माओं से ज़्यादा मुहब्बत है। बताओ अल्लाह तआला अपने एक बिछड़े हुए बन्दे को मिलाने से कितना ख़ुश होंगे जिसकी हम कोई हद बता नहीं सकते। हदीस में इस तरह अल्लाह तआला की मुहब्बत की तशबीह दी गई है कि एक शख़्स हो और वह सैहरा में चल रहा हो (सैहरा यानी जहां पर सिर्फ़ रेत ही रेत हो कभी–कभी सैकड़ों मील पर पानी नज़र नहीं आता और दूर तक दरख़्त भी नहीं रहते हैं) और इस सैहरा के चटयल मैदान में वह सवारी से आराम करने के लिये उतरे और सवारी को किसी चीज़ से बांधे और सो जाये और जब उठता है तो देखता क्या है कि सवारी मौजूद ही नहीं और सारा खाना इसी पर, पानी इसी पर, अब न सैहरा में पानी नज़र आता है और न खाने की कोई चीज़, बेचारा ढूंडते ढूंडते थक जाता है और दिल में अब यह ख़्याल कर लेता है कि बस अब जान का बचना नामुमकिन है कि यहां पर न सैकड़ो मील तक पानी है और न खाना। बस अब मरने के अलावा कोई राह नहीं बची अब वह बेचारा थक हार कर और मायूस होकर सो जाता है और उसकी अचानक आंख खुलती है और वह अपने ऊंट को अपने सामने खड़ा हुआ देखता है और पानी देखता है खाना देखता है अब मारे ख़ुशी के अल्लाह की हम्द करने के बजाये वह यह कहता है कि ऐ अल्लाह तू मेरा बन्दा और मैं तेरा ख़ुदा हूं। देखो बन्दा कितना ख़ुश हुआ कि इसको तो कहना चाहिये था कि मैं तेरा बन्दा और तू मेरा ख़ुदा है मगर ख़ुशी के

जोश में वह कहता है कि तू मेरा बन्दा और मैं तेरा खुदा हूं। हुज़ूर स० ने फरमाया उस शख़्स से भी ज़्यादा अल्लाह उस वक्त खुश होता है जब अल्लाह का बिछड़ा हुआ बन्दा अल्लाह को मिल जाता है और गुनाहों से तौबा करता है जिसको इतनी खुशी हो और उसके पास देने के लिये हर चीज़ मौजूद हो तो बताओ क्या वह मुंह मांगा इनआम न देगा और सुनो एक मरतबा हज़रत नूह अ़लै० अपनी क़ौम को तबलीग़ करते करते जब नाउम्मीद हो गये तो अल्लाह के दरबार में हाथ फैलाया और दुआ की कि अल्लाह! मैंने अपनी उम्मत को साढ़े नौ सौ बरस दावते दीन दी मगर किसी ने न माना अब तू इन पर अपना अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हम आपके कहने से अ़ज़ाब नाज़िल तो करेंगे मगर तुम एक काम करना, मिट्टी की हांडी बनाना और एक वादी में रखना। हज़रत नूह अ़लै० ने काम शुरू कर दिया और हांडियां बना बना कर बड़ा मैदान भर दिया अब अल्लाह ने बड़े इतमीनान से कहा, ऐ नूह अ़लै०! लकड़ी लो और इन हांडियों को तोड़ दो नूह अ़लै० ने कहा, ऐ अल्लाह बड़ी मुहब्बत से बनाया है और आपका हुक्म तोड़ने का है अल्लाह ने फौरन कहा नूह! जितनी मुहब्बत तुमको इनसे है मुझको भी इससे कई गुना ज़्यादा मुहब्बत अपने बन्दों से है ख़ैर अल्लाह की मुहब्बत की बात सामने आई तो बयान कर दिया कि मतलब यह साफ़ हुआ कि जब अल्लाह को हमसे इतनी मुहब्बत है और अल्लाह हर चीज़ देने पर क़ादिर भी है तो बताओ इसके बिछड़े हुए बन्दों को अगर हम अल्लाह से मिलायेंगे तो अल्लाह तआ़ला कितना खुश होगा और इसके हाथ में हर चीज़ है बताओ इसका इनआम कितना बड़ा है क्या इसकी हद बन्दी की जा सकती है? नहीं, अल्लाह ही देगा हमारे ज़हन के गुमान से कही ज़्यादा।

तबलीग़ वाले कहते हैं आपकी दावत से कोई अ़मल करे तो इतना ही सवाब आपको भी मिलेगा

(۳۲۹)عن انسؓ بن مالك قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم أيما داع دعا الى هدى فاتبع فان كان له مثله اجور من اتبعه ولاينقص من اجورهم شيئا. (ابن ماجہ شریف)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया जो दाई हिदायत की दावत दे और लोग उस का इत्तिबाअ़ करें उसके लिये उसका अज्र भी है और इत्तिबाअ़ करने वालों के सवाब के मिस्ल इस दाई को भी सवाब हासिल होगा और आमिलीन के सवाब में से कुछ कमी ने होगी।

कुरआन की भी आयत इसके मिस्ल है अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया:

مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِنْهَا وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ لَهُ كِفْلٌ مِنْهَا ○ (پارہ۵)

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया जो कोई सिफ़ारिश करे नेक बात में उसको भी मिलेगा इसमें से एक हिस्सा और जो कोई सिफ़ारश करे बुरी बात में उस पर भी है एक बोझ उसमें से।

आयत में जो सिफ़ारिश का लफ़्ज़ है यह भी एक क़िस्म की दावत है जैसे फ़हद ने मोहसिन और ज़ैद की सिफ़ारिश की अपने भाई सालिम से कि भाई इनको कुरआन सिखा दो जब सालिम इनको कुरआन सिखायेगा तो सालिम के साथ सालिम को नेकी की दावत देने वाले फ़हद को भी इतना ही सवाब होगा जितना मोहसिन और ज़ैद का है और दावत के मअ़ना भी ज़ाहिर हैं जो कि सिफ़ारिश में मौजूद हैं, ख़ैर मालूम यह हुआ कि ख़ैर की दावत देना इतना ही सवाब रखता है जितना ख़ैर के करने वाले

को सवाब हासिल होता है, और बुराई की दावत वाले को भी बुराई करने वालों के बराबर गुनाह होगा।

मदारिस और राहे तबलीग़ में माल ख़र्च करने का हुक्म

(۲۳۰) عن اسماء قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم انفقى ولا تُحصى فيُحصى الله عليك ولاتوعى فيوعى الله عليك ارضخى ما استطعتِ (بخاری ومسلم، مشکوٰۃ شریف)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया जिस जगह माल ख़र्च करने से अल्लाह तआला राज़ी हो वहां अपना माल ख़र्च करो और यह शुमार न करो कि कितना ख़र्च करूं और क्या ख़र्च करूं, नहीं तो अल्लाह तआला तुम्हारे बारे में शुमार करेगा (यानी बरकत ख़त्म कर देगा फिर वह ग़लत जगह ख़र्च होगा कि किसी का हाथ टूटा, सर फोड़ा, दांत टूटा वग़ैरा-वग़ैरा जगहों में ख़र्च होगा और करना पड़ेगा यह सब नहूसत होगी अल्लाह की राह में ख़र्च न करने की) और क़ियामत में सख़्त गिरिफ़्त होगी कि मैंने जो माल दिया उसको दीन में ख़र्च किया या नहीं? और जो माल तुम्हारी हाजत व ज़रूरत से ज़्यादा हुआ इसे हाजत मन्दों से रोक कर न रखो वरना अल्लाह तआला तुम्हारे हक़ में अपनी ज़ायद (अता) अलग कर देगा। नीज़ यह कि तुमसे जो कुछ भी हो सके अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करते रहो।

तबलीग़ में जो ख़र्च होता है वह भी इस बशारत में दाख़िल है और आप जो मदारिस में देते हो यह भी बेहतरीन मसरफ़ है इससे ज़्यादा बेहतरीन और कौन सा मसरफ़ हो सकता है कि मसाजिद के मुहाफिज़ मदारिस से पैदा होते हैं कअबतुल्लाह के मुहाफिज़ मदारिस से पैदा हुए। हज़रत मौलाना इलयास साहब

रह० मदरसे से ही तो पैदा हुए। मौलाना यूसुफ़ साहब रह० मदरसे से ही तो पैदा हुए। मौलाना इनआमुलहसन साहब रह० भी मदरसे का ही तो नतीजा हैं। बड़ी बड़ी ख़िदमत करने वाले सब मदारिस की तो काश्त हैं मगर मैंने बअज़ ज़ालिमों के बारे में यह सुना है कि वह कहते हैं कि मदारिस को चन्दा न दो क्योंकि वह जमाअत में वक़्त नहीं लगाते हैं यह कहने वाले फ़ित्तीन हैं मैं ज़रूर तबलीग़ी हूं मगर मुझको और हमारे दीन को ग़ुलू पसन्द नहीं मुझको बताओ क्या यह काम करने वाला जन्नत में जायेगा और मदारिस वाले दोज़ख़ में? सुनो! मदारिस का काम हमारी तबलीग़ से अज़ीम है और इतना अज़ीम है कि जिसका हम तसव्वुर नहीं कर सकते क्या अगर हम चन्दा न देंगे तो मदारिस नहीं चलेंगे? क्या अल्लाह ने आज तक दीन चन्दे ही से चलाया है? क्या हमको हमारे चन्दे पर फ़ख़्र है? याद रखो हमारा चन्दा और हम सब बरबाद हो जायेंगे अगर उलमा हज़रात हमसे नाराज़ हो जायें। एक आलिम के मरने को आलम की मौत कहा गया है हुज़ूर स० ने फ़रमाया हमारे जैसे हज़ार एक आलिम के भी बराबर नहीं हो सकते। हुज़ूर स० से यह भी मनक़ूल है कि बे-अमल आलिम की भी क़द्र करो और क्यों न करो जबकि अल्लाह ने उसको वारिसे नबी बनाया और जो शख़्स वारिसे नबी को बुरा कहे या हक़ीर जाने उसने दरहक़ीक़त हुज़ूर स० को हक़ीर जाना जिसने हुज़ूर स० को हक़ीर जाना उसने अल्लाह तआला को हक़ीर जाना और जो अल्लाह तआला को हक़ीर जाने वह दोज़ख़ी है बेशक उलमा को जमाअते तबलीग़ में जाना चाहिये। अगर वह न जाते हों तो हमारे उसूलों में है कि हम उलमा पर ज़बरदस्ती न करें सिर्फ़ दुआ की दरख़्वास्त करें क्या यह हमारा उसूल नहीं फिर क्यों गुमराही की राह इख़्तियार कर रहे हो और अहले

तबलीग को गलत दर्स दे रहे हो। तबलीग वालो! खबरदार उन लोगो से, जो हमारे और उलमा के बीच नफ़रत की दीवार खड़ी करना चाहते हैं अगर हम लोग उलमा से दूर हो गये तो नुक़सान हमारा है कि हम दीन की सही बात किससे मालूम करेंगे और जो आलिम से दूर, वह विरासते रसूल स० से दूर और जो विरासते रसूल स० से दूर, वह अल्लाह की रहमत से दूर। हमें मालूम होना चाहिये कि हम अकाबिर पर ईमान नहीं लाये अगर बात हदीस व कुरआन के मुवाफ़िक़ हो तो कुबूल करो वरना उसको छोड़ दो।

दोस्तो! हमारे अकाबिर में से किसी ने ग़लत बात नहीं कही है मगर यह बात ज़रूरी है इसलिये बयान कर दी और यह बात सुन लो चाहे उलमा–ए–देवबन्द जमाअत में निकलें या न निकलें वह हमारे हैं और मदारिस का काम हमारा है उलमा हमारे हैं मदारिस हमारे हैं, और यह तबलीगी काम हमारा है यह बहुत नाजुक दौर है, इख़्तिलाफ़ का दौर है, हमको ज़रूरत है उलमा से मिलकर रहने की जो हमको उलमा से दूर करे वह हमारा और मुहम्मद स० का और अल्लाह का दुश्मन है उससे मुहब्बत करना दुरुस्त नहीं है क्योंकि आलिमों की मुहब्बत से आदमी दीन के क़रीब होता है और यह हमारे अमीर हैं और अमीर की बात मानने का हुक्म कुरआन में है कि अल्लाह की इताअत करो और रसूल स० की इताअत करो जो अमीर हज़रात हैं उनकी इताअत करो अब हमको उलमा–ए–हक़ की बात माननी है मदारिस का ख़्याल करना है, मसाजिद का ख़्याल करना है आज देवबन्द से हर हफ़्ते क़रीब सैकड़ों उलमा वक़्त निकाल कर जमाअत में जाते हैं सालाना छुट्टी में घर नहीं जाते बल्कि जमाअत में जाते हैं और एक साल के लिये भी जाते हैं यह काम फ़ौरन समझ में नहीं आता धीरे–धीरे इन्सान समझता है चाहे वह आलिम ही क्यों न हो

क्योंकि मदरसे की और तबलीग़ की राह में कुछ फ़र्क़ है जो जल्द समझ में नहीं आता और बअ़ज़ के घर के हालात कमज़ोर होते है। ख़ैर, वक़्त देख कर वह भी जमाअ़त में निकलते हैं उनको हमसे कोई दुश्मनी नहीं है। बेशक हमारा काम अफ़ज़ल है मगर मदारिस का काम क्या कम अफ़ज़ल है? हम जमाअ़त में जाकर एक हज़ार अफ़राद पैदा करते हैं और मदारिस वाले सिर्फ़ एक आ़लिम भी पैदा कर दें तो वह एक आ़लिम हमारे तमाम एक हज़ार अफ़राद पर ग़ालिब है। यह मैं नहीं कह रहा हूं बल्कि हुज़ूर स० ने कहा कि एक फ़क़ीह (यानी आ़लिमे दीन) हज़ार आ़बिदों से ज़्यादा शैतान पर भारी है। अब बताओ कौन अफ़ज़ल है?

दोस्तो! आ़लिमों की बुराईयों को मत देखो, अच्छाईयों को देखो, बुराइयों से कौन ख़ाली है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि तमाम अंबिया–ए–किराम की तअ़दाद तक़रीबन एक लाख चौबीस हज़ार है

(۲۳۱) عن ابی ذر رضی اللّٰہ عنہ قال قُلْتُ یا رسول اللّٰہ اَیُّ الانبیاءِ کان اَوَّلَ قال آدم قُلْتُ یا رسول اللّٰہ ونبی کان قال نعم نَبِیٌّ مُکَلَّمٌ قُلْتُ یا رسول اللّٰہ کَمْ المر سلون قَالَ ثلاثِ مائۃ وبضعَۃَ عشر جَمًّا غفیراً وفی روایۃ عن ابی اُمامۃ رضی اللّٰہ عنہ قال ابوذَرٍّ قُلْتُ یا رسول اللّٰہ کَمْ وَفَاءُ عِدَّۃِ الانبیاء قالت مائۃُ اَلْفٍ اربعۃٌ وعشرُوْنَ اَلْفًا الرُّسُلُ من ذلک ثلاثُ مائۃٍ وخَمْسَۃَ عَشَرَ جَمًّا غفیرًا۔ (احمد، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि० कहते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह स०! सबसे पहले नबी कौन हैं? आप स० ने फ़रमाया हज़रत आदम अ़लै०। मैंने फिर पूछा क्या हज़रत आदम नबी थे? फ़रमाया हां, वह नबी थे, उन्हें अल्लाह रब्बुलआ़लमीन से

शर्फ़ तकल्लुम व तख़ातुब हासिल हुआ है। उसके बाद मैंने पूछा या रसूलुल्लाह स०! अंबिया में रसूल कितने हुए हैं? आप स० ने फ़रमाया काफ़ी बड़ी ताअ़दाद में, तीन सौ दस से कुछ ज़्यादा ही होंगे। और एक रिवायत में हज़रत अबू उमामा (ताबअ़ी) से मनकूल है इन अलफ़ाज़ में कि हज़रत अबू ज़र रज़ि० ने कहा कि मैंने अ़र्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! तमाम अंबिया की कुल तअ़दाद (चाहे वह रसूल हों या ग़ैर रसूल यानी नबी) कितनी है? आप स० ने फ़रमाया एक लाख चौबीस हज़ार, उनमें रसूल तीन सौ पन्द्रह हुए हैं जो काफ़ी तअ़दाद है।

यह है वह हदीस जिसको तबलीग़ वाले बयान करते हैं और एक दूसरी रिवायत में कुछ ज़्यादा अ़दद भी वारिद हुए है इसलिये तबलीग़ वाले उ़लमा कहते हैं कि यह कहो कि एक लाख चौबीस हज़ार कमो बेश। तो इस जुमले में वह तअ़दाद भी दाख़िल हो जाती है जो इससे कम हो और वह तअ़दाद भी दाख़िल हो जाती है जो इससे ज़्यादा हो। और इसी वजह से तबलीग़ वाले कहते हैं कि एक लाख चौबीस हज़ार कमो बेश। ताकि तमाम रिवायतों पर अ़मल हो जाये।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि हज़रत ईसा अ़लै० ने इस उम्मत में पैदा होने की दुआ़ की है

(۲۳۲)انّهٗ علیه السلام دعا اللّٰه تعالی لَمَّا رأی صفةَ محمد صلی اللّٰه علیه وسلم واُمَّتهٗ اَنْ یَجْعَلَهٗ منهم فاستجاب اللّٰه دعاءَهٗ واَبْقَاهٗ حتی ینزل فی آخر الزمان مجددًا لِاَمْرِ الاسلام فیوافق نزوله خروج الدجال

(فتح الباری شرح بخاری جلد نمبر ۷، ص ۲۱۰ باب ۴۹)

बेशक आपने (यानी हज़रत ईसा अ़लै० ने) अल्लाह तआ़ला

से दुआ की जब आप ने मुहम्मद स० और उम्मते मुहम्मदिया की सिफ़ात देखीं (यानी उम्मते मुहम्मदिया की फ़ज़ीलत) यह कि आपको (यानी हज़रत ईसा अलै० को) उम्मते मुहम्मदिया में से बना दे पस आपकी दुआ अल्लाह तआला ने कुबूल फ़रमाई आपको बाक़ी रख कर (यानी हज़रत ईसा अलै० को अल्लाह ने मारा नहीं बल्कि आसामान पर उठा कर ज़िन्दा ही रखा है) यहां तक कि हज़रत ईसा अलै० नाज़िल होंगे आख़िर ज़माने में और अहकामे इस्लाम को नए अन्दाज़ में बयान करेंगे (मुराद यह है कि जो अहकाम नए होंगे उनका इस्लामी क़वानीन के दाइरे में रह कर हल पेश करेंगे) और आप अलै० का नुज़ूल और दज्जाल का निकलना एक ही ज़माने में होगा। और इस क़ौल को ही तबलीग़ वाले बयान करते हैं अगरचे यह हदीस नहीं है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि हुज़ूर स० को सबसे ज़्यादा सताया गया

(۲۳۳) عن انس رضی اللہ عنہ انّہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لقد اُخفیت فی اللہ مایُخاف احد ولقد اوذیتُ فی اللہ ومایوذی احدٌ ولقد اَتت عَلَیَّ ثلثون من بین لیلۃٍ ویوم ومالی ولبلالٍ طعامٌ یَاکُلُہٗ ذوکَبِدٍ الاّ شَیئٌ یواریہٖ اِبطُ بلال (ترمذی، مشکوٰۃ شریف، بخاری)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया ख़ुदा की राह में जिस क़द्र मुझको ख़ौफ़ व दहशत में मुब्तला किया गया है इस क़द्र किसी और को ख़ौफ़ में मुब्तला नहीं किया गया और ख़ुदा गवाह है जितनी ईज़ा रसानियों से मैं दो चार हुआ हूं इतनी ईज़ा रसानियों से कोई और दो चार नहीं हुआ है। बिलाशुबह मुझ पर लगातार तीस दिन और तीस रातें ऐसी गुज़री हैं जिनमें मेरे और बिलाल के लिये खाना (मतलब

खाने की कोई चीज़ नहीं थी) अलावा उस निहायत मअमूली सी चीज़ के जिसको बिलाल अपनी बग़ल में छिपाये रहते थे (और ज़ाहिर है कि जिस चीज़ को इन्सान अपनी बग़ल में दबाले उसकी हक़ीक़त ही क्या होती है ख़ास तौर से उस सूरत में जबकि बाहर से यह नज़र भी न आये कि बग़ल में क्या चीज़ है)

तबलीग़ वालों का यह हदीस बयान करना सही है कि हुज़ूर स० को सब से ज़्यादा तकलीफ़ें पहुंचाई गईं।

अब बअ़ज़ लोगों के दिल में यह ख़्याल आता है कि हज़रत नूह अ़लै० ने साढ़े नौ सौ बरस तक दावत दी और लोगों ने हज़रत नूह अ़लै० को इतना मारा कि आप ख़ून से रंग जाते ऐसे ही हज़रत अय्यूब अ़लै० के पूरे जिस्म में कीड़े पैदा हो गये थे। और हज़रत ज़करिया अ़लै० को आरे से काटा गया और बहुत से नबियों को क़त्ल किया गया है। लेकिन हुज़ूर स० को तो इतना नहीं सताया गया और आप स० की उ़म्र तमाम अंबिया में कम थी फिर भी आप स० यह फ़रमा रहे हैं कि मुझको सबसे ज़्यादा सताया गया इसकी क्या सूरत है, जवाब, हज़रात! मैंने बहुत से जवाबात सुने और किताबों में पढ़े हैं मगर कोई जवाब ऐसा नहीं मिला जिसमें कोई ऐतिराज़ न हो हर एक जवाब में कोई न कोई इशकाल ज़रूर देखा किसी ने कहा कि आप स० ने जब तबलीग़े दीन शुरू की तो आप स० तन्हा थे कोई ग़म ख़्वार साथ न था। ऐतिराज़ होता है कि कोई नबी ऐसा भी गुज़रा है जिसको तबलीग़े दीन में बे–सहारा न रखा गया हो यहां तो हुज़ूर स० तमाम नबियों की बात कर रहे हैं जब तमाम नबी शुरू में तन्हा रहे तो हुज़ूर स० का शुरू में तन्हा रहना कोई ख़ास बात न हुई जिसकी बिना पर हम आपको ज़्यादा तकलीफ़ बरदाश्त करने वाला समझें। दूसरा जवाब दिया गया है कि आपको अपने मेहबूब शहर

से निकाला गया। ऐतिराज़ यह होता है कि कोई ख़ास वजह नहीं है कि जिसमें सिर्फ़ आप स० ही हों बल्कि हज़रत सालेह अ़लै० को भी अल्लाह के हुक्म से अपनी बस्ती को छोड़ना पड़ा और हज़रत लूत अ़लै० को भी हज़रत युनूस अ़लै० को भी। यह कोई ख़ास वजह नहीं हुई जिसकी बिना पर आप स० में यह शाने इम्तयाज़ी पैदा हो। तीसरा जवाब यह दिया गया कि हुज़ूर स० को खुद के घर वालों ने सताया इस वजह से आप स० ने यह जुमला फ़रमाया। ऐतिराज़ होगा कि हज़रत लूत अ़लै० की घर वाली ने भी हज़रत लूत अ़लै० को सताया। हज़रत नूह अ़लै० की घर वाली ने और लड़के ने और दूसरे ख़ानदान वालों ने सताया हज़रत इब्राहीम अ़लै० को उनके वालिद, वालिदा ने और दीगर रिश्तेदारों ने सताया। यह भी कोई इम्तियाज़ी शान न हो सकी जिसकी बिना पर हम आप स० के कलाम का मतलब समझ सकें और इस तरह बहुत सारे जवाबात हैं मगर हर एक ऐतिराज़ से पुर है कोई जवाब बन्दे को ऐतिराज़ से ख़ाली नहीं मिला बन्दा मुतफ़क्किर था अल्लाह ने ज़हन में दो जवाबात डाले जो ऐतिराज़ के क़रीब भी नहीं हैं यानी इन दोनों जवाबों पर ऐतिराज़ होता ही नहीं वह यह हैं:–

जवाबे अव्वल :– इसको मिसाल से समझो एक बादशाह है और एक किसान है किसान रोज़ाना ज़मीन खोदता है ज़मीन की सींचाई करता है और बादशाह सिर्फ़ गद्दी पर बैठकर हुक्म करता है अगर आप एक दिन बादशाह को खेती करने के लिये बुला लो और जब वह चार पांच घन्टे खोद कर ज़मीन को जोते यानी हमवार करे और अब बादशाह यह कहे कि भाई तमाम लोगों से ज़्यादा मुझको तकलीफ़ हुई है बताओ बादशाह का यह कहना दुरुस्त है या ग़लत जवाब होगा दुरस्त है क्योंकि बादशाह का

काम तो सिर्फ़ गद्दी पर बैठकर हुक्म देना था मगर तुमने उसको किसान वाले काम में लगा दिया तो ज़ाहिर बात है कि वह काम उसके लिये दुश्वार होगा और किसान सालहा साल करने के बावुजूद दुश्वारी महसूस नहीं करता है। यही जवाब है हुज़ूर स० पर होने वाले ऐतिराज़ का जो आप स० पर हो रहा है कि मुझको सब से ज़्यादा तकलीफ़ दी गई। जवाब समझिये: हुज़ूर स० तो तमाम अंबिया के बादशाह हैं और दीगर अंबिया आपके मुक़ाबले में किसान की तरह हैं क्योंकि ख़ुदा के बाद जो बादशाह है वह मुहम्मद स० हैं। अब ज़ाहिर बात है कि मुहम्मद स० जो कि बादशाह हैं और दीगर अंबिया किसान की तरह हैं तो अगर बादशाह को वही काम दिया जाये जो किसान करते हैं कोई दूसरा काम न दें तब भी वह कहेगा कि मेरे काम के ऐतिबार से मुझको तो बहुत तकलीफ़ दी गई किसी को भी इतनी तकलीफ़ न दी गई और इसी वजह से आप स० ने यह जुमला इरशाद फ़रमाया।

दूसरा जवाब :— ऐतिराज़ यह होता है कि बहुत सारे नबियों को क़त्ल किया गया मगर हुज़ूर स० को क़त्ल नहीं किया गया तब भी हुज़ूर स० ने यह किस तरह कहा कि मुझको सब से ज़्यादा तकलीफ़ दी गई है? जवाब आसान है देखो एक शख़्स है उसको क़त्ल कर दिया गया और एक शख़्स है उसको क़त्ल नहीं किया गया मगर उसको रस्सी से बांध कर आठ दस तरफ़ से उसके जिस्म को रातों दिन कील और सुई चुभोई जाती है न तो वह सीधा मर पाता है और न सीधा जी पाता है। बताओ तकलीफ़ ज़्यादा किसको होगी? क़त्ल होने वाले को या जिसको सुई चुभोई जा रही है। ज़ाहिर बात है कि क़त्ल के वक़्त थोड़ी सी जो तकलीफ़ होनी है वह होगी मगर सुई वाला बेचारा न मरता है

और न राहत पाता है। यही हाल हुज़ूर अकरम स० का है कि आपको तो क़त्ल नहीं किया गया मगर उससे ज़्यादा सख़्त रवैया इख़्तियार किया गया है और आप स० बादशाह भी हैं। बताओ अब तो तकलीफ़ की कोई हद ही नहीं रही एक आ़म आदमी हो तो चलो कुछ देर के लिये तस्लीम कर लें तकलीफ़ की हद को लेकिन आ़म तो आ़म आप स० बादशाह हैं और आ़म आदमियों से सख़्त सुई घुभोई जा रही है। वह सुई और कील क्या है सबसे बड़ी सुई और कील तो उम्मत की फ़िक्र है कि आप स० को हर वक़्त उम्मत की फ़िक्र थी रात को भी उम्मत के लिये दुआ करना कि ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत का क्या होगा? ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत का क्या होगा? यहां तक कि मैं ने उ़लमा से सुना है कि हुज़ूर अकरम स० की मौत के वक़्त आहिस्ता आहिस्ता अलफ़ाज़ निकल रहे थे तो उसको सुना गया तो आवाज़ सुनने में आई कि फ़रमा रहे थे يَا رَبِّ اُمَّتِی يَا رَبِّ اُمَّتِی अब बताओ किस क़द्र उम्मत की फ़िक्र है। आदमी फ़िक्र से दुबला और कमज़ोर हो जाता है। फ़िक्र भी एक बहुत बड़ी तकलीफ़ है आप भी कभी आज़मा लेना और फिर हुज़ूर स० को यह भी बड़ी फ़िक्र थी कि कल क़ियामत में मेरी उम्मत को अल्लाह से सिफ़ारिश करा कर गुनाह माफ़ कराने हैं उम्मत को पुल सिरात से बचाना है जैसा कि हदीस में इन चीज़ों का ज़िक्र है। हुज़ूर स० अपनी उम्मत के अफ़राद को दोज़ख़ से बचायेंगे। पुल सिरात पर मदद करेंगे सब अल्लाह के हुक्म से होगा कोई भी शख़्स या नबी अल्लाह के हुक्म के बग़ैर कुछ नहीं कर सकता है। जब अल्लाह तआ़ला सिफ़ारिश का हुक्म देगा तब ही आप स० सिफ़ारिश कर सकते हैं वरना जब तक इजाज़त न मिलेगी आप स० सिफ़ारिश नहीं कर सकते और यह भी याद रहे कि हुज़ूर स० जिसके लिये चाहेंगे सिफ़ारिश नहीं कर सकते

बल्कि अल्लाह तआला जिसके लिये सिफ़ारिश का हुक्म देगा हुज़ूर अकरम स० उसकी सिफ़ारिश करेंगे। इसलिये सबसे पहले बन्दे को चाहिये कि वह अल्लाह से अपना मामला दुरुस्त करले फिर मुहम्मद स० से मामला दुरुस्त कर ले फिर दूसरों के यके बाद दीगर मामलात को दुरुस्त करले और किसी की सिफ़ारिश पर टेक लगा कर न बैठे जैसे आगे मैं हदीस में नक़ल करूंगा आपको उसके पढ़ने से अन्दाज़ा हो जायेगा कि असल सिफ़ारिश का मदार अल्लाह की रज़ा पर है और मुहम्मद स० की सुन्नत पर अ़मल करने और अपने नेक अअ़माल पर है। अगर इन तीनों में से किसी में कमी हो तो फ़ौरन दूर करने की कोशिश करनी ज़रूरी है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि हुज़ूर स० ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि० से कहा था कि मैं तुम्हारे कुछ काम न आऊंगा मगर तुम्हारे अअ़माल

(٣٣٣) قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم إعملى فَإنّى لا اغنى عنك من اللهِ شَيئاً. (بخارى، مسلم، احياء العلوم دوم)

हुज़ूर स० ने अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ि० से फ़रमाया था कि अ़मल करो इसलिये कि मैं तेरी तरफ़ से खुदा तआ़ला की किसी चीज़ को नहीं बचा सकता।

तबलीग़ वाले यही हदीस बयान करते हैं मगर बरेलवी हज़रात इन पर फ़ुज़ूल ऐतिराज़ करते हैं कि पता नहीं कहां से हदीस लाते हैं और बे-दिल व जिगर हुज़ूर अकरम स० की तरफ़ मनसूब करते हैं इन अल्लाह के बन्दों से कहो कि यह हदीस हमारे पास तैयार की हुई नहीं है और न हमारे पास इसकी मशीन

है तुम्हारे पास होगी हदीस घड़ने की मशीन। और तअज्जुब की बात है मैं तो कहता हूं कि इस हदीस को जो मनघड़त समझते हैं उनको चुल्लू भर पानी में डूब कर मर जाना चाहिये कि यह हदीस बुख़ारी और मुस्लिम की है और जिसको बुख़ारी और मुस्लिम का भी पता न हो वह दावा करता है आशिक़े रसूल होने का और आलिमे दीन होने का और यह हदीस अब भी मनघड़त लग रही है क्योंकि इसमें बरेलवियों के मुंह पर ख़ुद हुज़ूर अकरम स० ने ताला लगा दिया है कि मुझ पर क्या टेक लगाते हो मैंने तो खुद अपनी बेटी से कह दिया है कि अमल करो मैं ख़ुदा से तुमको नहीं बचा सकता। अब बरेलवियों से पूछो क्या वह हज़रत फ़ातिमा रज़ि० से ज़्यादा हुज़ूर अकरम स० से मुहब्बत करते हैं और क्या हुज़ूर अकरम स० इन बरेलवियों से फ़ातिमा रज़ि० से ज़्यादा मुहब्बत करते हैं जो कि जाहिलों की तरह कहते फिरते हैं हम तो क्या बस या रसूलुल्लाह या हबीबुल्लाह। खुदा के दुश्मनों शिर्क भी करते हो और इश्क़ का भी दावा करते हो और सही हदीस को मनघड़त कहते हो क्या तुमको शर्म भी आती है? तुम्हारा दिल किस तरह गवारा कर लेता है। हुज़ूर अकरम स० के कलाम को मनघड़त कहने के लिये और फिर बे-शर्मों की तरह मुंह लेकर कहते हो हम आशिक़े रसूल हैं ख़ुदा की क़सम ऐसे लोग आशिक़ क़ियामत तक नहीं बन सकते जब तक आशिक़ाना लिबास न पहन लो जो सहाबा रज़ि० ने ताबईन ने और वलियों ने और आज देवबन्दियों ने पहना है। यह तारीफ़ नहीं है यह इन्किशाफ़े हक़ है और जब हुज़ूर अकरम स० ने अपनी लाडली बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को कह दिया कि मैं तुझको नहीं बचा सकता हूं तो वली और ख़्वाजा साहब क्या बचायेंगे ख़ुदा की क़सम, तुम जितने ख़्वाजाओं की क़ब्र को पूजते हो यह ख़ुद

क़ियामत में मुंह छिपाते फिरेंगे। अरे भाई जब कि नूह अ़लै० जैसे नबी या रब्बि नफ़्सी या रब्बि नफ़्सी करेंगे और आदम अ़लै० और हज़रत इब्राहीम अ़लै० और हज़रत मूसा अ़लै० और हज़रत ईसा अ़लै० सब या रब्बि नफ़्सी या रब्बि नफ़्सी कहेंगे तो फिर हमारे और तुम्हारे हज़रात ख़्वाजा का क्या मक़ाम है नबियों के सामने। हम किसी ख़्वाजा की तौहीन करने को जाइज़ नहीं जानते मगर हम गुलू को भी जाइज़ नहीं जानते हम भी हर ख़्वाजा के मज़ार पर जाते हैं मगर भीक नहीं मांगते बल्कि हदीस पर अ़मल करते हैं और इन हज़रात के मज़ार पर जाते हैं तो जैसे हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया किसी के मज़ार पर जाओ तो उसके लिये इस्तिग़्फ़ार करो उसको हमारी दुआ़ की और इस्तिग़्फ़ार की अब ज़रूरत है मगर बरेलवी हज़रात पर तअ़ज्जुब है वह हर वक़्त हदीस के ख़िलाफ़ ही करने की क़सम खाकर दुनिया में आये हैं। ख़ैर हदीस से मालूम हुआ कि क़ियामत में कोई काम नहीं आयेगा। मगर अपने अअ़माल और अल्लाह की रहमत और यही बात तबलीग़ वाले कहते हैं। और दूसरी हदीस भी देखो अहयाउलउ़लूम जिल्द दोम की:

(۴۳۵) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اِنِّیْ لست اغنی عنکم من الله شيئا وان لی عملی ولکم عملکم (احیاء العلوم جلد دوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला के पास मैं तुम्हारे कुछ काम न आऊंगा मेरे लिये मेरा अ़मल मुफ़ीद होगा और तुम्हें तुम्हारा अ़मल फ़ाइदा देगा।

पहले अअ़माल देखे जायेंगे अगर सिफ़ारिश के क़ाबिल होंगे तो सिफ़ारिश होगी वरना नहीं अब अगर सवाल करने वाला सवाल करे कि फिर सिफ़ारिश का क्या मतलब। जवाब यह है कि सिफ़ारिश वाला काम अअ़माल देखने के बाद होगा। अगर वह

अअमाल सिफारिश के काबिल होंगे तो सिफारिश होगी और सिफारिश के काबिल न होंगे तो दोज़ख़ के काबिल होंगे।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि क़ब्र में सिर्फ़ अअ़माल जायेंगे

(۲۳۲) عن انس رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم يَتْبَعُ الْمَيِّتَ ثلاثةٌ فَيَرْجِعُ اثْنَانِ وَيَبْقٰى معه واحدٌ يَتْبَعُهٗ اهله ومالُهٗ وعملُهٗ فيرجعُ اَهْلُهٗ ومالُهٗ وَيَبْقٰى عَمَلُهٗ. (بخاری ومسلم، مشکوۃ شریف)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया कि मय्यत के साथ (क़ब्र तक) तीन चीज़ें जाती हैं उनमें से दो चीज़ें तो (उसको अकेला छोड़कर) वापस आ जाती हैं और एक चीज़ उसके साथ रह जाती है चुनांचे उसके मुतअ़ल्लिक़ीन (जैसे औलाद, अज़ीज़ो अक़ारिब, दोस्त अहबाब और जान पहचान वाले लोग) और उसके अमवाल (जैसे नौकर चाकर, पलंग, जानवर गाड़ी वग़ैरा) और उस के अअ़माल उसके साथ जाते हैं इन तीनों में से मुतअ़ल्लिक़ीन और माल तो (उसको तन्हा छोड़कर) वापस आ जाते हैं और उसके अअ़माल उसके साथ रहते हैं।

तबलीग़ वाले हज़रात का भी यही क़ौल है जिसकी तौसीक़ इस हदीस से हुई और यह साफ़ हो गया कि क़ब्र में सिर्फ़ अपने अच्छे और बुरे अअ़माल जायेंगे और माल दौलत यहीं पर रह जायेंगे।

और अअ़माल से मुराद वह सवाब व अ़ज़ाब है जो हर अच्छे बुरे अ़मल पर मुरत्तब होता है। इन्सान को अपने अअ़माल दुरुस्त करने में और अल्लाह को राज़ी करने वाले अअ़माल में लग जाना चाहिये क्योंकि कोई ख़्वाजा साहब और पीर साहब तुम्हारी क़ब्र में आकर तुम्हारी तरफ़ से जवाब नहीं देंगे बल्कि हर एक को ख़ुद

जवाब देना होगा और इन्सान की ज़बान पर जवाब उसके अअमाल के ऐतिबार से आयेगा अल्लाह क़ब्र के वहशत नाक आलम से हम तमाम की हिफ़ाज़त फ़रमायें। आमीन।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि जन्नत पर दुश्वारियों के पर्दे हैं

(٢٣٧) عن ابى هريره رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم حُجِبَتِ النَّار بالشهوات وحُجِبَتِ الجنة بالمكاره. (متفق عليه)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया दोज़ख़ की आग शहवतों से यानी ख़्वाहिशात व लज़्ज़तों से ढांकी गई है और जन्नत सख़्तियों और मुश्क़्क़तों से ढांकी गई है।

तबलीग़ वालों का यह कहना हदीस से साबित है कि दोज़ख़ को ख़्वाहिशात यानी लज़ीज़ चीज़ों से ढांक दिया गया है और जन्नत को दुश्वारियों से और मुश्क़्क़तों से और नागवारियों से, जिसको हम देखते हैं कि गाना ख़ूब ख़ुशगवार मालूम होता है और फ़िल्म ख़ूब दिलकश मालूम होती है, ग़ैर महरम पर से नज़र को दूर करना दुश्वार हो जाता है अगर नज़र हटा लेता है तो जन्नत, अगर नहीं हटाता है तो दोज़ख़ वाला अमल हो जाता है। फ़िल्म देखने को दिल चाहता है मगर वह दिल पर पत्थर रखता है और फ़िल्म से बचता है तो जन्नत वाला अमल हो जाता है और अगर फ़िल्म देख लेता है तो दोज़ख़ वाला अमल हो जाता है। इसी तरह गुनाह की तमाम चीज़ों में बज़ाहिर लुत्फ़ और लज़्ज़त है मगर नतीजे के ऐतिबार से वह बहुत नागवार हैं और जन्नत वाली चीज़ें इख़्तियार करना बहुत दुश्वार और नागवार है मगर नतीजे के ऐतिबार से बहुत ख़ुशगवार और इतमीनान बख़्श हैं।

अल्लाह का बेहतरीन हद्या क्या है?

عن معاوية مَنْ يُرِدِ اللّٰهُ بِهٖ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِى الدِّيْنِ (مشکوٰۃ شریف)

जिसके साथ अल्लाह तआला ख़ैर का इरादा करता है तो उस को दीन की समझ बूझ देता है यानी अपने दीन का इल्म देता है।

(٣٢٨) عن انس رضى الله عنه اَنَّ النبى صلى الله عليه وسلم قال اِنَّ الله تعالىٰ اذا اَرادَ بعبدٍ خيرًا اِستعملَهٗ فقيل وكيفَ يستعملهٗ يا رسول الله قال يُوفِّقهٗ بعملٍ صالحٍ قَبْلَ الموتِ. (ترمذی، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अल्लाह तआला जब बन्दे की भलाई (यानी उसके हुस्न अन्जाम) का इरादा फ़रमाता है तो उससे भलाई का काम कराता है पूछा गया कि या रसूलुल्लाह उससे भलाई के काम अल्लाह तआला किस तरह कराता है? फ़रमाया मौत से पहले उसको नेक काम की तौफ़ीक़ अता फ़रमा देता है।

मतलब यह है कि जिस बन्दे पर अल्लाह तआला का करम हो जाता है उसको मौत से पहले तौबा व इनाबत और इताअत व इबादत की तौफ़ीके ख़ुदावन्दी अता हो जाती है जिसकी वजह से वह हुस्ने अन्जाम और ख़ात्मा बिलख़ैर की सआदत पा लेता है।

इस फ़ज़ीलत और ख़ुशनसीबी में तालिबे इल्म और तबलीग़ वाले भी दाख़िल हैं क्योंकि यह भी काम अल्लाह के मेहबूबों को ही हासिल होता है वरना हज़ारों गुमराही में डूब रहे हैं। और बहुत से कुफ़्र व शिर्क में मस्त हैं और बहुत से ज़िना और अफ़आले फ़ासिदा में मसरूफ़ हैं मगर अल्लाह ने हमको तबलीग़े दीन के लिये कुबूल कर लिया और दीन के समझने के लिये अक़्ल को कुबूल करने वाला बनाया बहुत से लोग आपके साथ ही बैठ कर बयान सुनते हैं। मगर आपको अल्लाह ने हिदायत दी

और दूसरे जो तुम्हारे साथ बैठे थे वह वैसे के वैसे ही गुनाहों में मसरूफ़ हैं बताओ क्या यह अल्लाह की मुहब्बत की अलामत नहीं जो उसने हमको अपने दीन की तफ़हीम के लिये कुबूल किया चाहे तालिबे इल्म हों या तबलीग़ वाले हों यह दोनों राहें नबियों से साबित हैं कि उन्होंने भी तबलीग़ की और उनसे लोगों ने तालिबे इल्म बनकर इल्म हासिल किया हुज़ूर अकरम स० ने दुनिया की कामयाबी को कामयाबी नहीं कहा और न माल के हासिल होने को कामयाबी कहा बल्कि कामयाबी सिर्फ़ इल्मे दीन और अअ़माले सालेहा को कहा क्योंकि असल कामयाबी वही होती है जो देर तक बाक़ी रहे। बताओ नेक अअ़माल से बढ़कर देर तक और क्या चीज़ रह सकती है जिनके बदले में ऐसी जन्नत अल्लाह देगा जो कभी भी ख़त्म न होगी और दुनिया का हासिल होना और माल का हासिल होना ज़रूर कामयाबी का लफ़्ज़ इस पर बोला जाता है मगर यह कामयाबी पाइदार नहीं है बल्कि पाइदारी तो वही है जिसका आख़रत में फ़ैसला होगा अगर जन्नत का फ़ैसला किया तो जन्नत पाइदार होगी जैसे मुसलमान के लिये और अगर दोज़ख़ का फ़ैसला होगा तो दोज़ख़ पाइदार हो जायेगी जैसे काफ़िर और मुशरिक के लिये। बहरहाल असल कामयाबी आख़रत की है और नाकामी भी आख़रत की है इसी वजह से हुज़ूर अकरम स० ने इसको बेहतरीन चीज़ फ़रमाया यानी दीन की फ़हम व समझ को। जिसकी वजह से वह आख़रत में हमेशा हमेशा के लिये कामयाब हो जाये अल्लाह तआ़ला तमाम मुसलमानों को दीन की समझ अ़ता फ़रमायें। आमीन।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि दुनिया मोमिन के लिये क़ैद ख़ाना है

(٢٣٩) عن ابی ہریرۃؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم

الدنيا سجنُ المؤمن وجنة الكافر. (بخاری، مسلم، احیاء العلوم سوم، مشکوۃ شریف)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया दुनिया मोमिन का क़ैद ख़ाना और काफ़िर की जन्नत है।

यह भी हदीस तबलीग़ वाले ज़िक्र करते हैं और यह बात भी ज़ाहिर है कि दुनिया मोमिन के लिये क़ैद ख़ाना है। देखो हम फ़िल्म नहीं देख सकते गाना नहीं सुन सकते, ग़ैर के माल को इस्तेमाल नहीं कर सकते। जिस तरह काफ़िर लोग करते हैं और अकसर चीज़ें ऐसी हैं जिनको हम इख़्तियार नहीं कर सकते क्योंकि यह घर हमारा नहीं है दूसरों का है और दूसरों के घर में सिर्फ़ उन चीज़ों के इस्तेमाल की इजाज़त होती है जिनकी उनके मालिक ने इजाज़त दी हो। दूसरी चीज़ों को इस्तेमाल करना जुर्म होगा और काफ़िरों के लिये हर चीज़ की रुख़सत व इजाज़त है और उनकी जन्नत भी यही है उनकी आराम गाह भी यही है मगर न हमारी यहां पर जन्नत है और न आराम गाह है। हमको सिर्फ़ उस मालिक की इताअत करनी है जिसने हमको यहां पर गश्त के लिये भेजा है न कि लड्डू व मिठाई खाने के लिये और न नाजाइज़ को जाइज़ और जाइज़ को नाजाइज़ बनाने के लिये। अल्लाह तआला मुसलमानों को अपने मक़सद पर जमे रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमायें। आमीन।

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया कि दुनिया या आख़रत में से एक को कुरबान करना होगा

(۲۴۰) عن ابی موسیٰ قال قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم من احب دنیاہ اَضَرَّ باٰخرتِہٖ ومن احبَّ اٰخرتہ اَضَرَّ بدنیاہ الخ (احمد، بزار، طبرانی)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जो अपनी दुनिया से मुहब्बत

रखता है वह अपनी आख़रत को नुक़सान पहुंचाता है और जो अपनी आख़रत से मुहब्बत रखता है वह अपनी दुनिया को नुक़सान पहुंचाता है।

मुराद यह है कि दुनिया की अकसर चीज़ों को इन्सान पसन्द करता है जिनको आख़रत पसन्द नहीं करती यानी जन्नत, बसा औक़ात अल्लाह तआला किसी को दोनों जहानों की ख़ैर अता कर देता है वह लोग कम होते हैं और जिसका हदीस में ज़िक्र आया है, यानी या तो उन को दुनिया मिली जैसे काफ़िर और मुशरिक या उनको जन्नत मिली जैसे मुसलमान और बहुत से मुसलमान ऐसे हैं कि उनके पास आख़रत होती है मगर दुनिया बिल्कुल भी नहीं जैसे वली हज़रात और दीगर मुसलमान और मुसलमानों में अल्लाह ने एक ऐसा भी तबक़ा पैदा किया है जो दुनिया व आख़रत दोनों को थामे हुए है। हदीस का मक़सद अकसर तबक़े को बयान करना है। और यह बात मुशाहिदे में है कि अकसर इन्सानों ने आख़रत को ख़सारे में डाले रखा है और बहुत से हैं जिनकी दुनिया और आख़रत ख़सारे में हैं।

हुज़ूर अकरम स० का फ़रमान है हर गुनाह की जड़ दुनिया की मुहब्बत है

(۲۳۱) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم حب الدنيا رأس كل خطيئة (بیہقی،احیاء العلوم جلد سوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया दुनिया की मुहब्बत हर गुनाह की जड़ है।

देखो दोस्तो! हुज़ूर अकरम स० का फ़रमान कितना छोटा है मगर मफ़हूम और ज़ख़ीरे के ऐतिबार से बहुत वसीअ़ है आज जो वालिद के और बेटे के दरमियान झगड़ा चलता है इसकी बुनियाद

दुनिया है और मां और बेटे के दरमियान जो झगड़ा चल रहा है इसकी बुनियाद दुनिया है मियां बीवी के दरमियान हर दम जो झगड़ा चलता है इसकी बुनियाद दुनिया है। भाई–भाई के बीच जो झगड़ा चलता है इसकी बुनियाद दुनिया है दोस्त–दोस्त के बीच जो झगड़ा है इसकी बुनियाद दुनिया है। हुकूमत के दरमियान जो झगड़ा चलता है इसकी बुनियाद दुनिया है। इस्लाम में जो फिरका पैदा होता है इसकी हकीकी बुनियाद सिर्फ़ दुनिया है। आख़रत भी बरबाद हो रही है तो इसकी बुनियाद दुनिया है जन्नत अगर बिगड़ रही है तो बुनियाद दुनिया है क़ब्र की मन्ज़िल सख़्त हो रही है तो बुनियाद दुनिया है। अल्लाह व रसूल नाराज़ हो रहे हैं तो असली बुनियाद दुनिया ही है ग़र्ज़ कि तमाम ख़ैर से दूर करने वाली चीज़ें दुनिया की मुहब्बत है। इस को ही हुज़ूर ने चन्द अलफ़ाज़ में ज़िक्र कर दिया है अगर इसकी वज़ाहत की जाये तो पता नहीं कितनी किताबें सिर्फ़ इस हदीस ही की तशरीह में लिखी जा सकती हैं ख़ास तौर से इस ज़माने के हालात को देख कर।

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया दुनिया मीठी है

(۲۳۲) ان الدنیا حلوة خضرة وان الله مستخلفکم فیها فناظر کیف تعملون ان بنی اسرائیل لما بسطت لهم الدنیا ومهدت تاهوانی الحلیة والنساء والطیب والثیاب . (احیاء العلوم جلد سوم)

यह रिवायत तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से मनकूल है अलबत्ता इसमें यह कौल नहीं है ان بنی اسرائیل इस रिवायत का पहला जुज़ मुत्तफ़क़ अलैह है और आख़री जुज़ को इब्ने अबिद्दुनिया ने भी नक़ल किया और

मिशकात में भी यह रिवायत है।

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया दुनिया मीठी और सर सब्ज़ है और अल्लाह तआला ने तुम्हें इसमें ख़लीफ़ा बनाया है ताकि देखे तुम किस तरह अमल करते हो बनी इसराईल के लिये जब दुनिया वसीअ हुई तो वह ज़ेवर और औरतों और खुशबुओं और कपड़ों के सिलसिले में हैरान रह गये। मुराद इस में ही लगे रहे।

मतलब यह है कि दुनिया में अल्लाह ने कशिश रखी है कि मर्द और औरत इसकी कशिश में बहे जाते हैं और सिर्फ़ दुनिया के होकर रह जाते हैं। दुनिया के आराम व राहत के सामने दीन पर अमल करने वाले बेवकूफ़ नज़र आते हैं और कहने वाले कहते हैं कि देखो इन जन्नत वालों को अपनी पूरी ज़िन्दगी बरबाद कर दी। अरे दुनिया में जो करना हो कर लो और आख़रत में क्या होगा जन्नत है या नहीं किसने देखा? मैं पूछता हूं कि क्या हर देखी हुई चीज़ पर यकीन करोगे कुरआन और हदीस के अख़बारात पर यकीन इसलिये नहीं करोगे यह किसने देखा है मैं कहता हूं कि क्या हज़रत आपने अपनी या किसी की रुह को देखा है क्या कभी अक़्ल को हाथ लगा कर देखा है क्या अक़्ल नर्म है या सख़्त। भेजे को अक़्ल न कहना क्योंकि अक़्ल कोई और चीज़ है जिस तरह आप जिस्म को रुह नहीं कहते हो इसी तरह भेजा भी अक़्ल नहीं है अगरचे इसकी जगह हो मगर वह ख़ुद अक़्ल नहीं है। क्या तुम नहीं देखते हो दो आदमी हैं एक तो हवाई जहाज़ बना रहा है और एक जानवर की तरह ज़मीन पर लोट रहा है गाली बक रहा है क्या इसके सर से आप ने भेजा निकाल लिया नहीं भेजा दोनों के अन्दर है मगर अक़्ल जिसका नाम है जिसको किसी ने नहीं देखा रुह की तरह है। बस वह किसी को अता की गई है और किसी को नहीं। अब

बताओ जन्नत है या नहीं। यह सिर्फ़ दुनिया का नशा है जिसने इन्सान को दीन से दूर कर दिया है और अब वह आख़िरत का भी मुनकिर हो जाता है अल्लाह तआ़ला दुनिया की कशिश से मुसलमानों के ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमायें।

हुज़ूर स० का तअ़ज्जुब

(۲۴۳) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يا عجبا كل العجب للمصدق بدار الخلود وهو يسعى الدار الغرور .(احیاء العلوم جلد سوم، ابن ابی الدنیا)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया, बड़ा तअ़ज्जुब होता है उस शख़्स पर जो दाइमी घर (आख़रत) की तसदीक़ करने के बावुजूद दुनिया के लिये कोशां हो, यानी दुनिया की तरफ़ माइल होने वाली कोशिश करने वाला है।

ज़ाहिर बात है कि आप को पता है रात होने वाली है मैं सफ़र में हूं मेरा घर काफ़ी दूर है मगर इसके बावुजूद आप वहीं पर खेल व तमाशा देखने लगें तो बताओ क्या उसकी अ़क़्ल पर तअ़ज्जुब न होगा जो नुक़सान के बावुजूद उस चीज़ को इख़्तियार करता है जानता है कि यह ज़हर है और फिर जान कर उसको पीता है तो बताओ क्या यह अ़मल उसकी अ़क़्ल पर मातम करने का नहीं और क्या एक नेक इन्सान को इस पर तअ़ज्जुब न होगा ज़रूर होगा। हुज़ूर अकरम स० ने तअ़ज्जुब का लफ़्ज़ कह कर हमको इस बात की तरफ़ इशारा किया है कि तुम भी इस तरह तअ़ज्जुब में डालने वाले और अ़क़्ल पर मातम करने वाले अअ़माल न करो। अगर इन अलफ़ाज़ को सुनने के बाद भी अपनी आख़रत की फ़िक्र न की तो यह शख़्स जिस पर तअ़ज्जुब किया जा रहा था इससे भी ज़्यादा तअ़ज्जुब और मातम की बात होगी कि जान कर भी यह तअ़ज्जुब सुनकर भी अ़क़्ल का पर्दा न हटा।

ईमान को खाने वाली दुनिया

(٢٢٣) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لتاتينكم بعدى دنيا تاكل ايمانكم كما تاكل النارُ الحطب . (احياء العلوم جلد سوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया मेरे बाद एक ऐसी दुनिया आयेगी जो तुम्हारे ईमान को इस तरह खा लेगी जिस तरह आग लकड़ी को खा लेती है।

देखो! आज इन्सान अपने लिये न इज़्ज़त की परवाह करता है और न ईमान की बस दुनिया के फरेब में सब कुछ खो जाता है ख़ुदा से भी दूर हो जाता है दुनिया के हासिल करने के लिये और मुहम्मद स० से भी दूर हो जाता है। इमाम ग़ज़ाली ने अपनी किताब अहयाउलउ़लूम में यह वाक़िआ नक़ल किया है

हज़रत मूसा अ़लै० पर वही नाज़िल हुई कि दुनिया से मुहब्बत न करना, वरना इससे बड़ा गुनाह मेरे नज़दीक कोई दूसरा न होगा (शिर्क के अ़लावा) हज़रत मूसा अ़लै० एक शख़्स के पास से गुज़रे वह रो रहा था जब आप अ़लै० वापस हुए तब भी उसे रोता हुआ पाया। आप अ़लै० ने बारी तआ़ला की जनाब में अ़र्ज़ किया इलाही! तेरा यह बन्दा ख़ौफ़ से रो रहा है वही आई कि ऐ इब्ने इमरान (यानी हज़रत मूसा अ़लै०) अगर यह शख़्स आंसुओं के साथ अपना मग़्ज़ भी बहा देगा या इतनी देर हाथ उठाये रखेगा कि शल हो जायें तब भी मैं उसकी मग़्फ़िरत न करूंगा क्योंकि यह दुनिया की मुहब्बत में मुब्तला है। हज़रत लुक़मान अ़लै० ने अपने साहबज़ादे को नसीहत की कि ऐ बेटे! दुनिया एक गहरा समुन्द्र है इसमें बहुत से लोग डूब चुके हैं इसमें ख़ौफ़े ख़ुदा की कश्ती पर सफ़र करो, ईमान को हमसफ़र बनाओ और तवक्कुल को बादबान क़रार दो। इस तरह शायद तुम ग़र्क़ होने से बच जाओ। यूं तो मुझे तुम्हारे बचने की कोई सूरत नज़र नहीं आती।

तबलीग़ वाले दुनिया की मबग़ूज़ियत बयान करते हैं

(٢٢٥) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم أن الله عزوجل لم يخلق خلقا أبغض اليه من الدنيا وَأَنَّهُ مُنْذُ خَلَقَهَا لَمْ ينظر اليها (ترمذی،احیاءالعلوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने दुनिया से ज़्यादा मबग़ूज़ कोई दूसरी मख़्लूक़ पैदा नहीं फ़रमाई और जब से इसे पैदा किया है इसकी तरफ़ नज़र नहीं फ़रमाई।

आप स० यह बयान करना चाहते हैं कि दुनिया बहुत बे वक़अत चीज़ हैं आख़रत के मुक़ाबले में। यह नहीं कि अल्लाह ने नज़र ही नहीं फ़रमाई बल्कि हर चीज़ अल्लाह की नज़रों में है क़ुदरत में है यहां पर दुनिया की बे–वक़अ़ती को बयान करना है जैसे तुम कहते हो कि तेरी सूरत इतनी नापसन्द है कि मैं कभी नहीं देखता हूं। बताओ क्या बग़ैर देखे ही उसको नापसन्द लगी? नहीं, सूरत तो देखी और देखता भी है मगर हिक़ारत मक़सूद है देखने की नफ़ी मक़सूद नहीं है कि मैंने देखा ही नहीं। सुलेमान बिन दाऊद अ़लै० अपने लश्कर के हमराह किसी आ़बिद के पास तशरीफ़ ले गये आप अ़लै० के दाएं और बाएं जिन्न और इन्स सफ़ें बनाये हुए थे और परिन्दे ऊपर से साया कर रहे थे आ़बिद ने अ़र्ज़ किया ए इब्ने दाऊद! अल्लाह ने आपको बड़ी सलतनत अ़ता फ़रमाई है। हज़रत सुलेमान अ़लै० ने फ़रमाया मोमिन के नामा–ए–अअ़माल में एक तस्बीह दुनिया से बेहतर है जो इब्ने दाऊद को अ़ता की गई है इसलिये कि जो कुछ इब्ने दाऊद के पास है वह ज़ायअ़ होने वाला है और तस्बीह बाक़ी रहने वाली है और एक रिवायत में है कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया क़ियामत के दिन कुछ लोग आयेंगे कि उनके अअ़माल वादीये तिहामा (एक

जगह का नाम है) कि पहाड़ों जैसे होंगे उन्हें दोज़ख़ में ले जाने का हुक्म होगा सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह स० क्या वह नमाज़ पढ़ने वाले होंगे? आप स० ने फ़रमाया हां, वह नमाज़ पढ़ते थे और रोज़ा रखते थे और रात का कुछ हिस्सा भी जाग कर गुज़ारते थे (यानी तहज्जुद पढ़ते थे) लेकिन उनमें यह बात थी कि जब उनके सामने दुनिया की कोई चीज़ पेश की जाती थी तो वह इस पर कूद पड़ते थे। यह रिवायत अबू नुअ़ैम की है और अहयाउलउ़लूम ने इसको नक़ल किया है अल्लाह दुनिया के फ़ितने से तमाम मुसलमानों को बचा कर दीन की फ़िक्र और आख़िरत की फ़िक्र अ़ता फ़रमायें। आमीन।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि दुनिया की क़द्र मच्छर के पर के बराबर भी नहीं

(٢٣٦) عن سهل بن سعد رضی اللہ عنہ قا ل قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لو کانت الدنیا تعدل عند اللہ جناح بعوضۃ ما سقی کافرًا منھا شربۃ (ترمذی، ابن ماجہ، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत सहल बिन सअ़द रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया दुनिया अगर ख़ुदा के नज़दीक मच्छर के पर के बराबर भी वक़अ़त रखती तो अल्लाह तआ़ला इसमें से काफ़िर को एक घूंट पानी भी न पिलाता।

मतलब यह है कि अगर अल्लाह तआ़ला की नज़र में इस दुनिया की कुछ भी वक़अ़त होती तो इस दुनिया की कोई अदना तरीन चीज़ भी काफ़िर को नसीब न होती क्योंकि काफ़िर दुश्मने ख़ुदा है और ज़ाहिर है कि जो चीज़ कुछ भी वक़अ़त रखती है देने वाला वह चीज़ अपने किसी दुश्मन को हरगिज़ नहीं देता लिहाज़ा दुनिया के बे–वक़अ़त और निहायत हक़ीर होने का सबब

है कि अल्लाह तआ़ला ने यह दुनिया काफ़िरों को दे दी। लेकिन अपने प्यारे बन्दों को नहीं देता जैसा कि एक हदीस में यूं इरशाद फ़रमाया गया है।

(۲۴۷) مازُوِيَتِ الدنيا عن احدٍ الا كانت خيرة له.

दुनिया के माल व जाह का मुस्तहिक़ वही शख़्स होता है जिसके लिये दुनिया ही बेहतर होती है।

नीज़ कुफ़्फ़ार व फ़ुज्जार जो दुनिया में ज़्यादा ख़ुशहाल नज़र आते हैं तो इस का सबब भी यही है कि अल्लाह तआ़ला की नज़र में यह दुनिया बड़ी ज़लील चीज़ है जिसको वह अपने दोस्तों (नेक बन्दों) के लिये अच्छा नहीं समझता बल्कि उसको कूड़े करकट की तरह इन लोगों (कुफ़्फ़ार व फ़ुज्जार) के सामने डाल देता है जिससे उसको नफ़रत है चुनांचे कुरआन में अल्लाह ने साफ़ फ़रमा दिया।

لَوْ لَا اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ○ (پاره۲۵)

अगर यह बात (मुतवक़्क़अ़) न होती कि (क़रीब–क़रीब) तमाम लोग एक ही तरीक़े के (यानी काफ़िर) हो जायें तो जो लोग ख़ुदा के साथ कुफ़्र करते हैं हम उनके लिये उनके घरों की छतें चांदी की कर देते।

इससे साफ़ मालूम हो गया है कि अल्लाह के नज़दीक दुनिया की कोई वक़अ़त नहीं और जिस की वक़अ़त न हो वह किस तरह अपने दोस्तों को देना पसन्द करेगा जबकि हम भी अपने दोस्तों को ख़राब चीज़ देना पसन्द नहीं करते और यही मतलब है तबलीग़ वालों के बयान का और जो रिवायत वह बयान करते हैं वह सही है।

दुनिया में इतना न डूब कि ख़ुदा से भी ग़ाफ़िल हो जाये

(٣٣٨) عن ابن مسعود رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لا تتخذوا الضیعۃ فترغبوا فی الدنیا (بیہقی، مشکوۃ شریف)

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया दुनियावी असबाब व सामान को इस तरह इख़्तियार न करो कि वह (यानी दुनियावी असबाब) दुनिया की तरफ़ रग़बत का सबब बन जायें।

मतलब यह है कि दुनिया में रह कर दुनिया बक़द्रे ज़रूरत तो ज़रूर कमानी होगी मगर इन्सान को इतना असबाब में मशग़ूल न होना चाहिये कि जिसकी वजह से वह बस दुनिया का होकर रह जाये और दीन से बेगाना और अन्जाना हो बल्कि हुदूद में और शरीअ़त के बताये हुए तरीक़े के अन्दर हर काम करना चाहिये क्योंकि जब बन्दा एक मरतबा दुनिया का मज़ा ले लेता है तो फिर उसको हर चीज़ फीकी और बे–मज़ा मालूम होती है और दीन की बातें उस पर असर अन्दाज़ नहीं होतीं और वह दिन ब दिन अल्लाह से दूर होता रहता है यह तमाम सूरतें क्यों देखनी पड़ती हैं सिर्फ़ शरीअ़त से रूगर्दानी की वजह से। जब शरीअ़त ने कहा कि हम सफ़र में हैं जबकि शरीअ़त ने कहा कि हमारा घर यह नहीं है जबकि शरीअ़त ने कहा कि दुनिया में ख़ैर नहीं है सिर्फ़ बरबादी है और ग़ज़बे इलाही है फिर भी अगर इन्सान जाकर डूबता है तो वह अपने नफ़्स पर ज़ुल्म करने वाला होता है और मुहम्मद स० की बात को ठुकराने वाला होता है और ख़ुदा से मुक़ाबला करने वाला होता है क्योंकि दुनिया में वह लगता है और अल्लाह उसे लगाता है जिससे अल्लाह तआ़ला को दुश्मनी होती

है और यह दुश्मनों में दाख़िल हो रहा है अब बताओ क्या यह भी दुश्मन न हुआ।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० को इख़्तियार दिया गया था कि अगर चाहो तो पहाड़ को सोना बना लो

(٢٤٩) عن ابی امامة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم عرضَ عَلَیَّ رَبِّی لِیَجْعَلَ لِیْ بَطْحَاءَ مَکَّةَ ذَهَبًا لایارَبِّ ولکن اَشْبَعُ یَوْمًا واَجُوْعُ یَوْمًا فاذا جُعْتُ تَضَرَّعْتُ الیك وذکرتُكَ واذا شَبِعْتُ حَمِدْتُكَ وَشَکَرْتُكَ وهکذا فی البخاری الثانی. (احمد،ترمذی،مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू उमामा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया मेरे रब ने मेरे सामने इस अम्र को (यानी इस मआमले को) ज़ाहिर किया कि वह मेरे लिये मक्के के संग्रेज़ों को सोना बना दे लेकिन मैंने अर्ज़ किया कि मेरे परवरदिगार मुझको इस चीज़ की क़तअ़न ख़्वाहिश नहीं है मैं तो बस यह चाहता हूं कि एक रोज़ पेट भर कर खाऊं और एक रोज़ भूखा रहूं कि जब मैं भूखा रहूं तो तेरे हुज़ूर गिड़गिड़ा कर अपनी आजिज़ी बयान करूं और तुझे याद करूं और जब मैं शिकम सेर हूं (यानी पेट भर खाना खा लूं) तो तेरी हम्द व तारीफ़ करूं और तेरा शुक्र अदा करूं।

तबलीग़ वाले यही हदीस बयान करते हैं कि अगर किसी को यह ऐतिराज़ हो कि भाई हदीस में संग्रेज़ों का ज़िक्र है और तबलीग़ वाले हज़रात पहाड़ का लफ़्ज़ इस्तेमाल करते हैं।

जवाब— संग्रेज़े भी पहाड़ से ही बनते हैं और उनको पहाड़ के अजज़ा होने की वजह से असल चीज़ यानी पहाड़ की तरफ़ मनसूब कर देते हैं जैसा कि सिर्फ़ अगर सर की तसवीर हो तो

इस को पूरे जिस्म का हुक्म देते हैं इसके जिस्म का जुज़ होने की वजह से यही हाल इन संग्रेज़ों का भी है कि वह असल पहाड़ के ही अजज़ा हैं और जब आप के लिये पूरे मक्के की वादी के संग्रेज़ों को सोना बनाने का इख़्तियार दिया गया था तो फिर पहाड़ की क्या हैसियत है।

ख़ैर यह हदीस तबलीग़ वाले बयान करते हैं कि जो बुख़ारी व तिर्मिज़ी और मिश्कात में मौजूद है।

दुनिया की ज़िन्दगी

(۲۵۰) قال رسول الله صلی الله علیه وسلم ما الدنیا فی الآخرۃ الا کمثل ما یجعل احدکم اصبعه فی الیمّ فلینظر بمَا یرجع الیه

(بخاری وترمذی، احیاء العلوم جلد سوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया आख़रत के मुक़ाबले में दुनिया ऐसी है जैसे क़ोई शख़्स समुन्द्र में उंगली डाल कर निकाले और यह देखे कि इस पर कितना पानी लगा है।

हुज़ूर अकरम स० का मक़सद यह है कि मुसलमान दुनियावी ज़िन्दगी में सलाहियत लगाने के बजाये आख़रत की ज़िन्दगी में सलाहियत ख़र्च करे और जो अबदी ज़िन्दगी है उसको हासिल करे क्योंकि इस दुनियावी ज़िन्दगी की हद तो ख़ुद हुज़ूर स० ने एक मिसाल से साफ़ कर दी कि इस में सलाहियत लगाओगे इस के फल ज़्यादा दिन न खा पाओगे कि मौत तुम्हारा बोरिया बिस्तर बांध देगी और तुम दुनिया को और अपनी दुनियावी सलाहियत को अलविदाअ़ कह दोगे और आख़रत के लिये सलाहियत ख़र्च की और आख़रत के घर को ख़ूब सजाया और ख़ूब तरह की नेमतों से मुज़य्यन किया तो यह कामयाबी है कि आख़रत के घर को नेक अअ़माल से भर दिया और फिर वहीं रहना है और वहां

किसी को मौत नहीं आयेगी वहां तो मौत को ख़ुद मौत आ चुकी होगी असल मेहनत आख़रत की है और तबलीग़ का मक़सद भी यही है कि इन्सान की आख़रत बन जाये और वह इस दुनिया के फ़रेब से बच कर अल्लाह को पाने और अल्लाह को राज़ी करने वाला बने बड़े बड़े बादशाह आये और अपना वक़्त होने पर सब कुछ यहीं छोड़ गये। जामा मस्जिद देहली का बनाने वाला मर गया अब दूसरों के काम आ रही है। लाल किला बनाने वाला मर गया मगर अब ग़ैर क़ौम इस पर क़ाबिज़ है चांद बीबी ने अपना महल तो अहमद नगर में ज़रूर बनाया मगर वह भी मर गई और दूसरे लोग इस महल पर क़ाबिज़ हैं चार मीनार बनाने वाले ने चार मीनार बनाया मगर वह मर गया और अब वह दूसरों के हाथ में है इसलिये हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया दुनिया (ख़त्म होने वाली चीज़) पर क्यों आशिक़ होते हो बल्कि क़ायम रहने वाली चीज़ पर आशिक़ हो जाओ जैसे जन्नत, उसके आशिक़ बनो उस वक़्त तुम्हारी दुनिया और आख़रत दोनों बेहतर होंगी।

तगलीग़ वाले कहते हैं कि फ़रिश्ते मरने वाले से कहते हैं क्या लाया?

(٢٥١) عن ابی ہریرۃ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اذا مات المیت قالت الملائکۃ ما قدم و قال بنو ادم ما خلف.

(بیہقی، احیاء العلوم سوم، ترمذی، مشکوۃ شریف)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया, जब बन्दा मर जाता है तो मलाइका कहते हैं कि मरहूम ने आगे क्या भेजा और लोग पूछते हैं कि क्या छोड़ा।

दोस्तो! फ़रिश्ते इसलिये पूछते हैं कि बन्दा जितने अअ़्माल ज़्यादा लेकर आयेगा उसके लिये इतना ही कुरबते इलाही का

ज़रिया होगा और दुनिया में रिश्तेदार बस यह देखते हैं कि मरने वाले ने क्या छोड़ा और अब हमको कितना हिस्सा हासिल होगा। बअ़ज़ जगह तो ऐसा होता है कि मुर्दा सामने है अभी मरे एक घन्टा भी नहीं होने पाया कि झगड़े शुरू हो जाते हैं। बताओ जब मय्यत की रूह को यह बात मालूम होगी तो उसके दिल पर क्या गुज़रेगी कि मेरा जनाज़ा उठने से पहले ही मेरे घरवालों ने मेरे माल पर हमला किया और मेरा जनाज़ा उठाने को भी भूल गये अगर मुर्दा नेक होगा तो कोई उसके लिये फ़िक्र की बात न होगी क्योंकि उसने कब इस दुनिया को और दुनिया वालों को वफ़ादार समझा था उसने सिर्फ़ आख़रत को और अल्लाह को वफ़ादार जाना था और यह समझ कर ही तैयारी भी की थी लेकिन जिसने दुनिया को वफ़ादार समझा और दुनिया वालों को वफ़ादार समझा अब उस को उनकी हरकत का पता चलता है तो उसके दिल पर छुरे चलेंगे कि मैंने जिस दुनिया के लिये. जिस दुनिया वालों के लिये अपनी आख़रत बरबाद की उन्होंने मेरे एहसान का बदला यह दिया कि मुझको उठाने से पहले मुझको भूल गये लेकिन उसका ग़म करना और रोना चीखना बेकार होगा और इस ग़म के साथ उसको मज़ीद फ़रिश्ते नाफ़रमानी की वजह से अ़ज़ाब देंगे। अब बताओ क्या दुनिया वालों को इस मन्ज़र से हुज़ूर स० ने पहले ही आगाह नहीं कर दिया अगर अब भी न जागे तो किसी का क्या जायेगा खुद को ही बरबाद करोगे।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि मौत को ज़्यादा याद करने वाला समझदार है

(٢٥٢) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من اكرم الناس واكيسهم فقال اكثرهم للموت ذكرا واشدهم له استعدادا.

(ابن ماجه، احياء العلوم سوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया, लोगों में बुज़ुर्गतर और ज़्यादा होशियार कौन है? फ़रमाया मौत को बकसरत याद करने वाला और इस के लिये ज़्यादा तैयारी करने वाला।

तबलीग़ वालों का इसको हदीस कहकर बयान करना दुरुस्त है इसलिये कि यह बात हुज़ूर अकरम स० से मरवी है और आप हुज़ूर स० से साबित है। ख़ैर हुज़ूर अकरम स० ने उस शख़्स को अक़लमन्द क़रार दिया जो ज़्यादा मौत को याद करने वाला हो देखो इसमें कितनी बड़ी हिकमत व दानाई की बात छिपी हुई है कि इन्सान जब अपनी मौत को याद करेगा तो वह न पड़ौसी को सतायेगा और न किसी से झगड़ा करेगा न किसी पर ग़लत नज़र डालेगा और न ज़िना के क़रीब होगा न शराब पियेगा और न किसी की ख़यानत करेगा और न वअ़दा ख़िलाफ़ी करेगा और न किसी का हक़ दबाने की कोशिश करेगा बल्कि दुनिया के तमाम लोग उसके अफ़आल से ख़ुश रहेंगे और जब मौत को याद करेगा तो न दुनिया के पीछे नाजाइज़ तरीक़े से पड़ेगा और न क़ुरआन के ख़िलाफ़ अमल करेगा। और न सुन्नते रसूल स० के ख़िलाफ़ अमल करेगा और अगर मौत को याद करेगा तो न क़ब्र की पूजा करेगा और न लड्डू के लिये ईमान फ़रोख़्त करेगा और न उर्स करेगा जब मौत को याद करेगा तो इन्सान इन तमाम चीज़ों को भी छोड़ देगा जिनसे अल्लाह नाराज़ होता है जब उससे दुनिया वाले ख़ुश और अल्लाह ख़ुश हो जायेगा तो अब बताओ उससे बढ़ कर और कौन समझदार हो सकता है जिसने सिर्फ़ एक चीज़ पर ज़ोर दिया और दुनिया व आख़िरत की कामयाबी हासिल करली। यह थी हुज़ूर अकरम स० की दूरबीनी कि उम्मी होने के बावुजूद ऐसी दानाई की बातें बता दीं जिनकी गहराई तक आज भी कोई नहीं पहुंचा और न क़ियामत तक पहुंच सकेगा किस

चीज़ ने आप स० को यह नेमत अ़ता की जो कि आज तक किसी अहले इल्म को भी हासिल न हो सकी और न होगी वह वजह और राज़ यह है कि आप स० अल्लाह तआ़ला के सच्चे नबी और उसके रसूल थे और इस तरह की ऊंची बात सिर्फ़ नबी ही कहता है और कोई नहीं और आप स० की नुबुव्वत पर ईमान लाने के लिये सिर्फ़ यह हदीस ही काफ़ी है अगर वह अ़क्लमन्द है ख़ैर असल बात थी तबलीग़ वालों के क़ौल की दलील और वह साबित हो चुकी है।

शरीअ़त के उसूल पर माल कमाने की तारीफ़

(۲۵۳) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم نِعْمَ المال الصالحُ للرَّجُلِ الصالح . (احمد،طبرانی،احیاء العلوم جلد سوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया क्या अच्छी है नेक आदमी के लिये नेक कमाई।

दोस्तो! आप के दिल में इन अहादीस को पढ़कर यह ख़्याल पैदा हुआ होगा कि भाई हम दुकान लगायें या न लगायें तमाम अहादीस माल की मज़म्मत में ही हैं हम क्या खायें हम क्या खिलायें। बेशक आपका सवाल दुरुस्त है जब आदमी अहादीस का सही मतलब और हदीस का मुकम्मल व कामिल इल्म हासिल नहीं करता है वह शरीअ़त को अपने ऊपर भारी मेहसूस करता है लेकिन जब वह आगे बढ़ता है और रास्ता तै करता है तो फिर आसानी शुरू हो जाती है क्योंकि पहले पहले सिर्फ़ एक क़िस्म का इल्म था जिसकी बिना पर आप को कुछ समझ में नहीं आ रहा था ख़ैर अब सुनो शरीअ़त का असल मक़सद क्या है? माल से शरीअ़त को अगर नफ़रत होती तो हज़रत सुलेमान अ़लै० को क्यों पूरे आ़लम की हुकूमत अ़ता की जाती, अगर माल ही मबग़ूज़

होता हज़रत ज़ुलक़रनैन अ़लै० को क्यों पूरी दुनिया की हुकूमत अ़ता होती, अगर माल ही नापसन्द होता तो हज़रत दाऊद अ़लै० को क्यों मालदार बनाया जाता? अगर माल ही मनहूस होता तो फिर हज़रत यूसुफ़ अ़लै० को क्यों मिस्र का बादशाह बनाया जाता। अगर माल क़बीह होता तो हज़रत अय्यूब अ़लै० को क्यों अ़ता किया जाता और अगर माल से ही दूर होने का हुक्म होता तो हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को इतना माल क्यों दिया जाता कि जिनका पूरे अ़रब में माल में कोई मुक़ाबला न था। अगर यह माल मुतनफ़्फ़िर चीज़ होती तो हज़रत उ़स्मान ग़नी रज़ि० को और इमाम अअ़ज़म अबू हनीफ़ा रह० को क्यों दिया जाता। इससे मालूम हुआ कि माल को कमाना और माल के लिये कोशिश करना गुनाह नहीं अगर वह शख़्स माल को कमाने के लिये नमाज़ छोड़ता है माल हासिल करने के लिये झूठ बोलता है धोखा देता है झूठी क़समें खाता है हराम तरीक़ों से कमाता है हराम जगह ख़र्च करता है ज़कात अदा नहीं करता है सदक़ा नहीं देता है सूद की मिलावट करता है और दीगर शरीअ़त के मना किये हुए अफ़आ़ल (यानी कामों) के ज़रिये अगर वह माल कमायेगा तो यह माल उसके लिये वबाले जान बन जायेगा और दुनिया और आख़िरत में उसके ज़रिये अ़ज़ाब होगा मगर एक शख़्स है वह माल कमाने के साथ साथ नमाज़ पढ़ता है ज़कात देता है। सदक़ा करता है। झूठ और धोखे से काम नहीं करता है और दीगर वह तमाम काम नहीं करता जिनसे शरीअ़त ने मना किया है अब उस शख़्स का यह माल चाहे अरबों रुपये हो फ़ाइदेमन्द होगा क्योंकि उसने माल को शरीअ़त के मिज़ाज पर कमाया है और उसके कमाने में मज़ीद सदक़े का सवाब हासिल होगा क्योंकि हदीस में आया है—

(۲۵۴) قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما وقى به المرء عِرضَهٗ كتب له به صدقةً . (احیاء العلوم سوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया, जिस चीज़ से आदमी अपनी इज़्ज़त बचाये वह उसके लिये सदक़ा लिखी जाती है।

और ज़ाहिर बात है कि इन्सान माल के ज़रिये भी इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करता है अब माल भी उस के लिये सदक़ा हो गया अब जो खुद भी खा रहा है दूसरों को भी खिला रहा है बीवी बच्चों को खिला रहा है वह तमाम के तमाम सदक़े में लिखा जायेगा। बताओ क्या शरीअ़त ने माल कमाने से मना किया है? नहीं! बल्कि हराम तरीक़ों से माल कमाने से मना किया है और माल की ज़कात का हुक्म दिया है बात साफ़ हो गई माल अगर हराम तरीक़े से कमाया जाये तो वह हराम होगा चाहे एक रुपया हो और अगर माल हलाल तरीक़ों से कमाया जायेगा तो वह जाइज़ है चाहे वह अरबों रुपये हो।

कुदरत के बाद फ़क़ीरी मअ़यूब है

(۲۵۵) عن انسؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم كاد الفقر ان يكون كفرًا . (بیہقی، احیاء العلوم سوم، مشکوٰۃ شریف)

हुज़ूर अक़रम स० ने फ़रमाया क़रीब है कि फ़क़्र, कुफ़्र हो जाये (यानी फ़क़ीरी की वजह से कुफ़रिया कलिमा कह दे और काफ़िर हो जाये)

हज़रात! हम अगर यह समझें कि हमको हमारी शरीअ़त ने माल कमाने से मना किया है यह हमारा मुतलक़ कहना दुरुस्त न होगा क्योंकि खुद शरीअ़त ने फ़क़ीर रहने को कुफ़्र के क़रीब बताया है। बताओ क्या शरीअ़त कुफ़्र को पसन्द करती है? नहीं, इसी तरह शरीअ़त हमारे फ़क़ीर और बे-माल होने को भी पसन्द नहीं करती बल्कि शरीअ़त हमको इजाज़त देती है आमादा करती

है कि माल ज़रूर हासिल करो मगर अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर जिस तरह कमाने का हमको शरीअत ने हुक्म दिया है उस तरीक़े पर कमाना सदक़ा है अगर कुदरत है और घर में खाने को कुछ नहीं तो उस वक़्त माल का कमाना फ़र्ज़ है क्योंकि उसके ज़रिये हम अपनी इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करेंगे उसके ज़रिये हम अपनी जान की हिफ़ाज़त करेंगे और जान की हिफ़ाज़त करना फ़र्ज़ है। नतीजा यह निकला जो चीज़ जान की हिफ़ाज़त के लिये ज़रूरी है उसको हलाल तरीक़े से हासिल करना फ़र्ज़ है। हां, हमारी शरीअत ने हराम तरीक़ों से कमाने वालों की और कमाये हुए माल की मज़म्मत की और उस को दोज़ख़ का ज़रिया बताया है। माल को आप हासिल तो कर रहे हो मगर जो रास्ता शरीअत ने बताया है उस रास्ते से हासिल करो तो शरीअत ख़ुश और मज़ीद इनआम भी आख़िरत में और अगर शरीअत के बताये हुए तरीक़ों से हट कर हासिल किया तो शरीअत नाख़ुश और आख़िरत में अज़ाब। अब इशकाल अच्छी तरह दूर हो जाता है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि इन्सान की तबीअत हरीस है

(۲۵۶) عن ابن عباسؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لو کان لابن آدم وادیان من مال لابتغیٰ ثالثًا ولا یملأ جوف ابن آدم الاّ التراب ویتوب اللہ علی من تاب (بخاری، مسلم، ترمذی، مشکوٰۃ شریف)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अगर इन्सान के लिये माल व दौलत के दो जंगल हों तो वह उनके पीछे तीसरे की जुस्तुजू करे। इब्ने आदम का पेट सिर्फ़ मिट्टी से भर सकता है और जो शख़्स तौबा करे अल्लाह उसकी तौबा कुबूल फ़रमाता है।

तबलीग़ वाले हज़रात यही हदीस बयान करते हैं उनकी ताईद के लिये लिख दी गई। यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में

मौजूद है और हदीस का मतलब कुछ दुशवार नहीं। सबके अन्दर हिर्स का माद्दा अल्लाह ने रखा है अगर इन्सान अपनी हिर्स को दुनिया के बजाये आख़िरत की तरफ़ मोड़े और आख़िरत की अअ़ला से अअ़ला चीज़ हासिल करने की हिर्स करे तो यह काम देगी और इसके अ़लावा दुनिया के लिये हिर्स करना क्या फ़ाइदा रखता है कि यह एक दिन ख़त्म हो जायेगी अगर यह माल उसके सामने ख़त्म नहीं हुआ तो यह खुद माल के सामने ख़त्म हो जायेगा। यानी मर जायेगा। अल्लाह हम तमाम को अक़्ले सलीम अ़ता फ़रमाये। आमीन।

बूढ़े की दो चीज़ें जवान होती हैं

(٢٥٧) عن انسؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يَهْرمُ ابن آدم ويشب معه اثنتان الحرصُ على المال والحرص على العمر.

(بخاری، مسلم، مشکوۃ شریف)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया इन्सान बूढ़ा हो जाता है और उसकी यह दो ख़सलतें जवान रहती हैं इज़ाफ़ा–ए–माल और दराज़े उम्र की ख़्वाहिश।

बेशक फ़रमाने रसूल हक़ है। हमारा शबो रोज़ का मुशाहेदा है कि आदमी क़ब्र में एक पैर डाल चुका होता है मगर उसकी आरज़ू दिन ब दिन जवानी की सूरत देखती है माल न हो तब भी आरज़ू, माल हो तब भी आरज़ू। कि गाड़ी लेनी है, बंगला बनाना है, दुकान बड़ी करनी है, बूढ़ा हो रहा है और शादी की सोच रहा है कमाल है इन्सानी अक़्ल पर कि ज़रा भी मौत की याद नहीं। अरे भाई कुछ तो मौत का ख़ौफ़ हो मगर नहीं! बताओ जिसको मौत की याद न आती हो वह ख़ैर क्या करेगा और अगर मौत के ख़ौफ़ के बग़ैर ख़ैर कर भी ले तो वह ख़ैर भी उसकी तरह बूढ़ी होगी जिसको रिया की बीमारी और शोहरत की बीमारी लगी हुई

होगी और जो मौत को याद करता है तो वह बस अल्लाह का हो जाता है क्योंकि मौत की याद तमाम बातिनी बीमारियों की दवा है और हुब्बे दुनिया पर पहले कलाम कर चुका हूं।

तबलीग़ वालों का यह हदीस बयान करना और मोअ़तरिज़ का ऐतिराज़

(۲۵۸) وعن جُبَیْرِ بن نفیلٍ مرسلًا قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم ما اوحی اِلَیَّ اَنْ اجمعَ المال و اَکُوْنُ من التاجرین ولکن اُوْحِیَ اِلَیَّ اَنْ سَبِّحْ بحمد رَبِّکَ و کُنْ مِّنَ السَّاجِدِیْنَ وَاعْبُدْ رَبَّکَ حَتّٰی یَاتِیَکَ الیقینُ.
(شرح السنۃ، مشکوۃ شریف)

हज़रत जुबैर बिन नफ़ील रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया मुझ पर यह वही नाज़िल नहीं हुई कि मैं माल व दौलत जमा करूं और ताजिर बनूं बल्कि मुझ पर यह वही नाज़िल हुई है कि आप अपने परवरदिगार की हम्द व तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बयान कीजिये और सज्दा करने वालों (यानी नमाज़ियों) में से हो जाइये। नीज़ अपने रब की इबादत में मशग़ूल रहिये यहां तक कि आप की (दुनियवी ज़िन्दगी) का आख़री वक़्त आ जाये।

तबलीग़ वाले इस हदीस को और इस तरह की दीगर अहादीस को बयान करते हैं तो मोअ़तरिज़ीन कहते हैं कि देखो यह तबलीग़ वाले हमको कमाने से मना करते हैं और सिर्फ़ तबलीग़–तबलीग़ कहते हैं। क्या हदीस में यह हुक्म है कि हम दुकान व तिजारत छोड़ कर दिन रात अपने साथ बिस्तर उठाये फिरें। मैं कहता हूं कि बअ़ज़ मोअ़तरिज़ीन भी बड़े कज फ़हम होते हैं बसा औक़ात हदीस को समझते नहीं और तबलीग़ वालों को बुरा कहते हैं साथ ही साथ हदीस को भी बुरा कहते हैं। तबलीग़

वाले यह हदीस बयान करते हैं दीन की बातें बयान करतें हैं कोई अपने घर की बातें तो नहीं कहते। लेकिन बहुत से लोग यह भी कहते हैं, तबलीग़ वाले अपने घर की बात बयान करते हैं। यानी झूठी अहादीस। इन हज़रात को ग़फ़लत की नींद से बेदार करने के लिये बन्दे ने मशहूर मशहूर ऐतिराज़ात के जवाबात और तबलीग़ वालों के अक्वाल व अफ़आल को हदीस से साबित किया है। ख़ैर तबलीग़ वालों की इस क़िस्म की हदीस बयान करने से मुराद यह नहीं होती कि आपको दुनिया से दूर कर दें और आप फ़क़ीर बन कर भीक मांगते रहें उनका मक़सद यह है कि सिर्फ़ दुनिया ही में ग़र्क़ न हो जाओ और ख़ुद अहादीस से भी यही वाज़ेह होता है कि दुनिया को अपने ऊपर ग़ालिब होने मत दो यानी दुनिया के ही कामों में पूरी ज़िन्दगी मत खपा दो बल्कि दुनिया के साथ दीन भी सीखो। इसके लिये वक़्त निकालो जिस तरह दुनिया बग़ैर कुरबानी के हासिल नहीं होती आख़रत यानी जन्नत बग़ैर मेहनत के आप के पास किस तरह आयेगी तबलीग़ वालों को अगर आप लोग दुश्मन समझोगे तो वह दुश्मन नज़र आयेंगे और अगर आप उनको कुरआन और हदीस की नज़र से देखोगे तो यह हज़रात आप को राहे हक़ पर नज़र आयेंगे और अगर आप उनको दुश्मनी वाली नज़र से देखते हो तो ज़ाहिर बात है कि यह हज़रात ग़लत न होंगे। लेकिन वह तुम्हारी ग़लत नज़र की वजह से ग़लत नज़र आयेंगे। हज़रत उ़मर रज़ि० ने भी हुज़ूर अकरम स० को पहले ग़लत नज़र से देखा था तो क़त्ल करने के लिये तैयार हो गये और जब सहीफ़ा पढ़ लिया तो अब नज़र कुरआनी बन गई फिर कहा मैं ग़लत राह पर हूं और मुहम्मद स० हक़ पर। चलो मुहम्मद स० के पास मुझको ले चलो और मैं आप स० पर ईमान लाता हूं। देखा, नज़र–नज़र का फ़र्क़

होता है। अगर आप की नज़र में कोई आदमी सही है तो दिल भी उसके सही होने पर गवाही देता है। मगर जिसकी नज़र में ही ख़राबी हो और जिसकी नज़र ही कुरआन और अहादीस से दूर हो तो क्या ख़ाक तबलीग़ वालों को हक़ जानेगा। बस मैं एक बात कहता हूं कि अगर आप तबलीग़ वालों को कुरआन व हदीस की नज़र से देखोगे तो तबलीग़ वाले सही राह पर नज़र आयेंगे और अगर आप कुरआन व हदीस के अ़लावा नज़र से देखोगे तो ज़ाहिर बात है कि यह आप का ज़ुल्म होगा और ज़ुल्म कहते हैं एक चीज़ को अपनी जगह से हटा कर दूसरी जगह रखने को।

नेक ने तो नेक जाना बद ने बद जाना मुझे
हर किसी ने अपने पैमाने से पहचाना मुझे

(मुहम्मद अहसान क़०न०अ०)

तबलीग़ वाले कहते हैं कि हसद सिर्फ़ दो चीज़ों में जाइज़ है

(٢٥٩) عن ابن مسعود رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا حسد الافى اثنين رَجُلٌ آتاهُ اللهُ ما لا فسَلَّطَهُ على هلكته فى الحق ورجلٌ آتاه الله الحكمة فهو يقضى بها و يُعَلِّمُهَا. (بخارى، مسلم، مشكوة)

हज़रत इब्ने मस्ऊ़द रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया हसद जाइज़ नहीं है मगर दो शख़्स पर। एक शख़्स तो वह है जिसको अल्लाह तआ़ला ने माल व दौलत से नवाज़ा और फिर उसको हक़ की राह में ख़र्च करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई और दूसरा वह शख़्स है जिसको अल्लाह तआ़ला ने दीन का इल्म अ़ता किया और फिर वह शख़्स उस इल्म के तहत फ़ैसले करता हो (यानी मसाईल बयान करता हो) और दूसरों को भी दीन सिखाता हो।

तशरीह :– तबलीग़ वाले हज़रात जो यह कहते हैं कि हदीस में दो चीज़ों पर हसद करने की इजाज़त आई है उनमें से एक माल है और दूसरा इल्म है और यहां पर हसद से मुराद (ग़बता है) ग़बता किसे कहते हैं? पहले दोनों की अलग अलग तारीफ़ देख लो। हसद किसी ने किसी मालदार को देखा कि यह इस क़द्र मालदार है और दीन की राह में ख़र्च करके अपनी आख़रत भी बना रहा है और दुनिया भी अब यह शख़्स हसद के तौर पर यह कहता है कि अल्लाह तआ़ला करे उसका माल हलाक हो जाये यह माल जल कर ख़ाक हो ग़र्ज़ इस तरह का जलना और दूसरे की नेमत को ख़त्म करने की तमन्ना करना जिसको ज़वाले नेमत से भी तअ़बीर किया जाता है। यह हसद है और यह हराम है हसद के मअ़ना ही हैं किसी के माल व दौलत व इल्म को ख़त्म करने की तमन्ना करना। और ग़बता किसे कहते हैं? उसकी मिसाल यूं समझो एक शख़्स है और उसको अल्लाह तआ़ला ने माल दिया है या और कोई दूसरी चीज़ और वह शख़्स उस माल को अल्लाह तआ़ला के रास्ते में ख़र्च करता है अब यह हाल देख कर कि कोई दूसरा शख़्स दिल में यह तमन्ना करता है कि कितना अच्छा होता यह नेमत मुझको भी हासिल होती और मैं भी उसकी तरह राहे हक़ में ख़र्च करता यह ग़बता है यह चाहना कि उस शख़्स को जो नेमत मिली है वह ख़त्म न हो और अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल से मुझको भी यह नेमत अ़ता करे। यह ग़बता है जो जाइज़ है ख़ैर फ़र्क़ वाज़ेह हो गया हसद और ग़बता के दरमियान और यह भी मालूम हो गया कि यहां हसद से मुराद ग़बता है।

इस हदीस के मैंने इसलिये नक़ल किया कि हो सकता है कि इस हदीस से भी कोइ कज फ़हम ऐतिराज़ करे और कहे कि

देखो तबलीग़ वाले हदीस के मुख़ालिफ़ हदीस बयान कर रहे हैं जैसा कि मोअ़तरिज़ीन की आदत है।

और इस हदीस से उस माल की तारीफ़ भी वाज़ेह हो गई जो अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किया जाता है मुतलक़ माल नुक़्सानदेह नहीं है बल्कि वह माल जो शरीअ़त से हट कर कमाया जायेगा वह माल नुक़्सानदेह होगा और अगर शरीअ़त के मुवाफ़िक़ कमाया और शरीअ़त के मुवाफ़िक़ ख़र्च किया तो यह माल उसको जन्नत का ऊंचा मक़ाम भी अ़ता करेगा और दुनिया की राहत तो ज़ाहिर है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करो अल्लाह तआ़ला तुम पर ख़र्च करेगा

(۲۶۰) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم قال الله تعالی اَنفِق یا ابن آدم اُنفِق علیك. (بخاری، مسلم، مشکوٰة)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि ऐ औलादे आदम! (मेरी राह में अपना माल) ख़र्च कर, मैं तेरे ऊपर ख़र्च करूंगा।

तबलीग़ वाले बयान में यह जो बात बयान करते हैं कि अगर हम अल्लाह की राह में ख़र्च करेंगे तो अल्लाह हम पर ख़र्च करेगा और एक नहीं दो नहीं सात सौ दर्जा ज़्यादा देगा अब लोगों को इस पर भी ऐतिराज़ है कि सात सौ का अ़दद किस हदीस में है और अब बेचारे तबलीग़ वाले साफ़ कहते हैं कि यह हदीस का हवाला हमें पता नहीं है बल्कि उ़लमा से मालूम करो लेकिन यह शर्री मिज़ाज हज़रात तबलीग़ वालों के साथ हदीस का भी इन्कार करते हैं और इसको झूठी हदीस से तअ़बीर करते

हैं और अब रहा मस्अला यह कि क्या यह हदीस है? जवाब, ज़रूर हदीस है देखो–

(२٦١) قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من انفق فى سبيل الله كتب له بسبع مائة (بخارى)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया जो शख़्स अल्लाह तआला की राह में एक चीज़ (चाहे रुपये हों या खजूर वग़ैरा वग़ैरा) ख़र्च करेगा तो उसके लिये सात सौ गुना ज़्यादा सवाब लिखा जायेगा।

मतलब यही हुआ कि अल्लाह तआला की राह में एक रुपया ख़र्च करने वाले को सात सौ रुपये ख़र्च करने के बराबर सवाब हासिल होगा। अब बताओ क्या हुज़ूर स० ने भी ग़लत कहा है मैं पहले कह चुका हूं कि अगर तबलीग़ वालों को ग़लत नज़र से देखोगे तो वह ग़लत ही नज़र आयेंगे चश्मा साफ़ होगा तो सामने वाली चीज़ भी साफ़ नज़र आयेगी और अगर चश्मा गन्दा हो और आप को हसीन चीज़ ख़राब और गन्दी नज़र आ रही हो तो इसमें आपके चश्मे की ग़लती है न कि इस चीज़ की जिसको आप देख रहे हैं वह तो साफ़ है ख़ुद के चश्मे को साफ़ करने की तौफ़ीक़ नहीं होती है। बस दूसरों पर ऐतिराज़े बातिल और बेजान ऐतिराज़ करते हो जिसका आलिम तो क्या एक छोटा सा तालिबे इल्म जवाब दे सकता है। यह हज़रात ऐतिराज़ करके हमारा तो कुछ नहीं बिगाड़ते हैं लेकिन ख़ुद की जिहालत को ज़ाहिर करते हैं कि हम को भी गंवार और जाहिलों से बढ़ कर ऐतिराज़ करना आता है। एक जाहिल आलिम ने एक आयत लेकर यह कह दिया कि तबलीग़ तमाम अफ़राद पर फ़र्ज़ नहीं है बल्कि सिर्फ़ एक जमाअत पर फ़र्ज़ है क्या उसको यह भी पता है कि तबलीग़ की कितनी क़िस्में हैं? और कौन–सी तबलीग़ किस पर फ़र्ज़ है? अरे भाई क्यों अपनी जिहालत को आलम पर वाज़ेह करना चाहते हो मैं

इस वजह से तुम को कह रहा हूं कि तुम्हारा तो कुछ नहीं जायेगा तुम्हारे पास है ही क्या कि जो जायेगा लेकिन इस्लाम का नाम जायेगा। तुम्हारी इस हिमाक़त से कि मुसलमान ही एक हदीस को झूठी भी कहते हैं और सही भी गोया उनके इस्लाम में इस्तिक़ामत नहीं है हालांकि इस्लाम से ज़्यादा क़वी और पायेदार मज़हब न कोई है और न था और न रहेगा। अगर इस्लाम में कुछ कमी आई तो तुम्हारी वजह से तुम्हारे कुफ़रिया अफ़आल को देख कर काफ़िर हम से भी सवाल करते हैं। एक मरतबा ऐसा ही हुआ कि मैं देहली से देवबन्द के लिये बस में जा रहा था वह बस देहरादून जा रही थी मैंने टिकट मुज़फ़्फ़रनगर का लिया इसलिये कि मुज़फ़्फ़रनगर से दूसरी बस पकड़नी होती है। ख़ैर जब मैं बस में बैठा तो मेरे बाज़ू में एक हिन्दू था जो थोड़ी बहुत अपने मज़हब की बात जानता था और मेरे सामने की सीट पर दो तीन पंडित थे देहरादून की बस में अकसर पंडित होते ही हैं क्योंकि हरिद्वार में उनका बहुत बड़ा इबादत घर है जिसको मन्दिर कहते हैं। ख़ैर जब बस चली तो मेरे पास इत्र था मैं निकाल कर लगाने लगा और जब लगा चुका तो मेरे बाज़ू में जो थोड़ी बहुत अपने मज़हब की बात जानने वाला था उसको इत्र पेश किया उसने इसको लगाया और फिर मुझ से मुख़ातब हो कर कहने लगा कि इत्र साथ क्यों रखते हो? मैंने कहा हमारे मज़हब में इसका हुक्म है कि इसके ज़रिये पड़ौसी को तकलीफ़ नहीं होती इसलिये इसका हुक्म हमारे मज़हब ने दिया। फिर उसने कहा सही बात है जिस तरह तुम्हारे सफ़ेद और साफ़ कपड़े हैं और इत्र भी है तो दूसरे आदमी को तकलीफ़ नहीं होती और दूसरा ख़ुशी से बैठ जाता है इसके बाद मैंने उससे उसके मज़हब की बातें पूछनी शुरू कीं कि तुम किस को ख़ुदा जानते हो? और वह कहां पैदा हुआ? इस पर

काफ़ी देर तक बात हुई इसके बाद मैंने कहा कि भाई हम तो उस खुदा की पूजा करते हैं जो तमाम दुनिया को चलाता है और हर चीज़ का लेना और देना उसके क़ब्ज़े में है मगर तुम लोग इन पत्थर की मूर्तियों की पूजा क्यों करते हो? इन में क्या जान है? यह इस तरह है कि अगर इन को कुछ कहो तो न यह आप को मार सकते हैं और न आप को फ़ाइदा दे सकते हैं सामने वाले पंडित यह सुन रहे थे फ़ौरन ग़ज़बनाक होकर मेरी तरफ़ पलटे और कहा वह जो तुम दरगाह की पूजा करते हो वह क्या है, वह मर चुका है। यह हमारी तरह नहीं तो और क्या है? सिर्फ़ फ़र्क इतना है कि तुम दरगाह को पूजते हो और उनसे मांगते हो और हम मूर्ती को, फिर तुम ऐतिराज़ क्यों कर रहे हो जब कि खुद तुम करते हो अगर बरेलवी होता तो मार खा जाता मगर वहां देवबन्दी था। फ़ौरन उस के कलाम के ख़त्म होने के बाद जवाब उसके मुंह पर फेंक मारा कि भाई जो लोग दरगाह पर जाते हैं और जिनको आप अपना भाई समझते हैं वह हमारे इस्लाम के तरीक़े पर नहीं हैं। दरगाह की पूजा हमारे मज़हब में हराम है, शिर्क है, मगर वह लोग करते हैं। जिस तरह तुम लोग गोश्त खाने से मना करते हो और तुम्हारे यहां गोश्त खाने वाला बहुत बड़ा पापी होता है (गुनाहगार) इसी तरह जो लोग आपको आप के भाई नज़र आते हैं वह भी अपने मज़हब की बात पर अमल नहीं करते और अपनी मनमानी करते हैं। अब उनको कौन समझाये, लेकिन हम लोग कभी भी किसी के सामने अपना सर नहीं झुकाते सर झुकाते हैं तो सिर्फ़ अल्लाह तआला के सामने। फिर वह ठंडा हुआ जब मैंने कहा कि तुम्हारे जैसा जो करते हैं वह मुसलमानों का तरीक़ा नहीं है वह तो सिर्फ़ तुम्हारा ही तरीक़ा है लेकिन जो अपना तरीक़ा छोड़ कर दूसरों का तरीक़ा इख़्तियार

करे उनको हम सिर्फ़ समझा सकते हैं क्योंकि वह ख़ुद साहबे अक़्ल हैं, बच्चे नहीं हैं, जो उन को हम मारकर दुरुस्त करें। देखो मुसलमानो! किस तरह इस्लाम को कुफ़्र से मुलहिक़ कर दिया कि पंडित भी उनको अपना दरगाह वाला भाई कहते हैं और उन को इस में भी मज़ा आता है कि काफ़िर उनको अपना भाई कहें क्योंकि तबलीग़ वालों को भाई कहना उन लोगों ने पसन्द नहीं किया तो अल्लाह ने उनको अकेला नहीं छोड़ा काफ़िरों को उनका भाई बना दिया और यह हज़रात जो काफ़िरों के भाइ हैं हमको ही काफ़िर कहते हैं। हां, अबू जहल भी मुहम्मद स० को काफ़िर और आप स० के साथियों को काफ़िर और बद्दीन कहता था और यह लोग हमको काफ़िर कह कर अबू जहल की सुन्नत अदा कर रहे हैं अल्लाह हम को सही राह पर बाक़ी रखे। अगर कोई राहे हक़ का मुतलाशी होगा तो वह इससे ग़लत असर नहीं लेगा बल्कि आख़रत को दुरुस्त करने के लिये सही राह कुरआन व हदीस से तलाश करेगा ख़ुदा की क़सम, यह मज़कूरा वाक़िआ सही है।

किस मालदार से अल्लाह मुहब्बत करता है

(٢٦٢) عن سعد قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم إنَّ اللهَ يُحِبُّ العبد التَقِيَّ الغَنِيَّ الخَفِيَّ. (مسلم، مشكوٰة شريف)

हज़रत सअ़द रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया, यक़ीनन अल्लाह तआ़ला उस बन्दे को बहुत पसन्द करता हैं जो मुत्तक़ी व ग़नी और गोशा नशीन होता है।

इस हदीस से बिल्कुल वाज़ेह और रोशन हो गया कि माल अल्लाह को नापसन्द नहीं है बल्कि वह बन्दा नापसन्द है जो अल्लाह के माल को अल्लाह की राह में ख़र्च न करे बल्कि शरीअ़त के मना की हुई जगह पर ख़र्च करे यह हराम है ख़ुद

हुज़ूर अकरम स० ने साफ़ साफ़ बयान कर दिया कि माल अगर अल्लाह की राह में ख़र्च किया जायेगा तो यह हराम नहीं बल्कि अल्लाह को मेहबूब है क्योंकि बन्दे ने माल का इस तरह इस्तेमाल किया जिस तरह अल्लाह ने चाहा चूंकि मुत्तक़ी उसको कहते हैं जो नफ़्स की पैरवी न करे और हराम से और मुश्तबहात (जिस में हराम होने का शक हो) और तमाम कबीरा गुनाहों से बचे और ख़फ़ी से मुराद जो रिया से बच कर अल्लाह के लिये काम करे चाहे ख़ैरात हो या ज़कात हो या हज हो अगर अल्लाह के लिये हो तो यह शख़्स मुख़लिस शख़्स कहलायेगा वरना रियाकार शख़्स कहा जायेगा।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि राहे ख़ुदा में जो भी चीज़ मय्यसर हो इख़्लास से ख़र्च करो चाहे वह खजूर का टुकड़ा ही हो

(٢٦٣) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اتقوا النار ولو بشق تمرة (بخاری، مسلم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया, दोज़ख़ की आग से बचो अगरचे खजूर का एक टुकड़ा देकर ही क्यों न हो (यानी अल्लाह की राह में सदक़ा करो)

इस हदीस की तबलीग़ वाले वज़ाहत बयान करते हैं और कहते हैं कि अगर खजूर के बीज के बराबर भी कोई सदक़ा करेगा और उसमें इख़्लास होगा तो अल्लाह तआ़ला उसको कुबूल करेगा क्योंकि अल्लाह तआ़ला के यहां इख़्लास की क़द्र है ज़्यादती की नहीं। हां अगर इख़्लास भी है और ज़्यादती भी है तो फिर क्या पूछना नूर अ़ला नूर होगा और दर्जात में इज़ाफ़ा होगा। और भी अहादीस मौजूद हैं। खजूर के बीज के बराबर सदक़ा करने के बयान में जिसको तबलीग़ वाले बयान करते हैं।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि पांच नेमतों का हिसाब दिये बग़ैर क़दम न हटेंगे

(۲۶۳) عن ابن مسعود رضی الله عنه عن النبی صلی الله علیه وسلم قال لا تزولُ قدما ابن آدم یوم القیامة حتّٰی یُسْألُ عن خمسٍ عن عمره فیما افناهُ وعن شبابه فیما ابلاهُ وعن ماله من این اکتسبهٗ وفیما انفقه وماذا عمل فیما علم. (مشکوٰۃ شریف، ترمذی)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन इन्सान के पांव सरकने नहीं पायेंगे (यानी क़दम नहीं हटेंगे) और वह बारगाहे रब्बे ज़ुल जलाल में उस वक़्त तक खड़ा रहेगा जब तक कि उससे इन पांचों बातों का जवाब नहीं ले लिया जायेगा चुनांचे उससे पूछा जायेगा कि उसने अपनी उम्र किस काम में सर्फ़ की (बिलखुसूस यह कि) उसने अपनी जवानी को किस काम में बोसीदा किया (यानी जवानी गोया नया लिबास है जो रफ़्ता रफ़्ता पुराना होता है) उसने माल क्योंकर कमाया (यानी उसने दुनिया में जो कुछ माल दौलत और रुपया पैसा कमाया वह हलाल वसाईल व ज़रायेअ़ से हासिल किया या हराम ज़रिये से और उस ने माल को कहां ख़र्च किया) (यानी अपने माल और रुपये पैसे को अच्छे कामों में सर्फ़ किया या बुरे कामों में ख़र्च किया) और यह कि उसने जो इल्म हासिल किया था उसके मुवाफ़िक़ अ़मल किया या नहीं।

यह हदीस तबलीग़ वाले हज़रात बयान करते हैं कि इन्सान से पांच नेमतों का सवाल होगा (1) उम्र (2) जवानी (3) माल कहां से कमाया (4) माल कमा कर कहां ख़र्च किया, (5) जो इल्म हासिल किया उस पर कितना अ़मल किया। यह बयान कर्दा तमाम चीजें बिऐनिही इस हदीस में मौजूद हैं कोई तबलीग़ वालों

की अपनी बात नहीं है। हज़रत अबुदर्दा रज़ि० के बारे में मनक़ूल है कि एक दिन उन्होंने हज़रत उवैमर से फ़रमाया उवैमर! (ख्याल करो) क़ियामत के दिन तुम्हारी क्या कैफ़ियत होगी जब तुम से सवाल किया जायेगा कि आया तुम आलिम थे या जाहिल अगर तुम यह जवाब दोगे कि मैं आलिम था फिर तुम से पूछा जायेगा कि तुमने जो कुछ इल्म हासिल किया उसके मुवाफ़िक़ क्या अमल किया और अगर तुमने जवाब दिया कि मैं तो जाहिल था तो फिर पूछा जायेगा कि तुम्हारे जाहिल रहने की क्या वजह थी और तुमने इल्म क्यों हासिल नहीं किया। हज़रत अबुदर्दा रज़ि० के क़ौल से मज़ीद तौसीक़ होती है तबलीग़ वालों के क़ौल की और ज़हिर बात भी यही है कि सवालात होने भी चाहियें क्योंकि दुनिया का मामला भी ऐसा ही है जब आप किसी को सौ रुपये देकर भेजते हैं तो आप उससे पूछते हो कि बच्चे मैंने जो सौ रुपये दिये थे वह कहां ख़र्च किए अगर वह सही जगह ख़र्च करे तो आप खुश हाते हैं वरना नाराज़ हो जाते हैं ऐसा ही होगा क़ियामत में अल्लाह अपनी तमाम नेमतों का बन्दों से सवाल करेगा। इन पांच नेमतों को ख़ास तौर पर इस लिये ज़िक्र किया कि अगर इन्सान इन पांच नेमतों का सही इस्तेमाल करेगा तो उसकी पूरी ज़िन्दगी खुदबखुद दुरुस्त हो जायेगी और यह पांच बुनियाद हैं और यह सही हो तो पूरी इमारत सही है देखो अगर इन्सान ने अपनी उम्र सही गुज़ारी यानी अल्लाह के और उसके रसूल स० के फ़रमान के मुताबिक़ उम्र गुज़ारी तो बताओ क्या यह बन्दा मक़बूल न होगा और माल सही राह से कमाया और सही राह पर ख़र्च किया तो बताओ क्या उसकी तमाम ज़िन्दगी के मामलात लेन देन इसमें नहीं आये और जब लेना दुरुस्त होगा तो माल भी दुरुस्त आया और ख़र्च भी दुरुस्त हुआ मामलात भी दुरुस्त रहे। इसी तरह

इल्म का मसअला है इसको सीख कर अमल किया तो दुनिया की तमाम जिन्दगी हुक्मे खुदा पर हुई और जो हुक्मे खुदा पर होगा वह कामयाब ही होगा और अगर उम्र ख़राब जगहों पर गुज़ारी बरबाद कर दी और माल ग़लत जगह से आया, या ग़लत जगह ख़र्च हुआ तो ज़िन्दगी बरबाद होगी, ऐसे ही इल्म सीखा पर अमल न किया तो आख़रत बरबाद हो गई। अल्लाह तमाम मुसलमानों को ख़ास तौर से इन पांच और आम तौर से तमाम नेमतों के सही इस्तेमाल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि सदक़ा बलाओं को दूर करने वाला है

(٢٦٥) عن علی رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم بادروا بالصدقۃ فانّ البلاء لا یتخطاھا. (مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अ़ली रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया, ख़ुदा की राह में ख़र्च करने में जल्दी करो क्योंकि सदक़ा देने से बला नहीं बढ़ती। (मुराद बला ख़त्म होती है)

यही बात तबलीग़ वालों की ज़बानों से सुनने को मिली और उनके कलाम की दलील यह हदीस है जो बिल्कुल उनकी ताईद कर रही है और सदके के मसारिफ़ बहुत से हैं मगर हुज़ूर अकरम स० ने अल्लाह के रास्ते का लफ़्ज़ बोलकर यह वाज़ेह कर दिया कि मदारिस में और वह तबलीगी शख़्स जिसके पास पैसे ख़त्म हो गये हों और वह अल्लाह के रास्ते में हो तो उसको दो, और जिहाद में दो, और जिहाद करने वालों पर ख़र्च करो, उनके लिये हथियार जमा करो, यह सब मसारिफ़ फ़ी–सबीलिल्लाह हैं और उ़म्दा मसारिफ़ हैं जिससे एक का फ़ाइदा नहीं लाखों का फ़ाइदा होता है अगर आप ने मदरसे में दिया या तबलीगी शख़्स को

दिया जो अल्लाह की राह में हो और मोहताज हो या मुजाहिद फ़ी-सबीलिल्लाह को दिया तो जो सवाब उनको अ़मल के ज़रिये हासिल होगा उसमें तुम्हारा भी हिस्सा होगा इस तौर पर कि न उनके सवाब में कुछ कमी होगी और न आपके सवाब में, बल्कि दोनों को अलग अलग मिलेगा और जितने का वअ़दा है उससे ज़्यादा ही मिलेगा न कि जो अ़मल करने वाले को मिला उसमें से ही आधा आधा कर दिया ऐसा न होगा क्योंकि अल्लाह के ख़ज़ाने में कमी नहीं है बल्कि अल्लाह तआ़ला के पास ख़ज़ाना लेने वालों की कमी है देने वाला शुरू से दे रहा है और देता है और देगा मैं आगे चल कर ख़ुद हदीस नक़ल करूंगा कि अल्लाह तआ़ला सब से कम ईमान वाले शख़्स को इस दुनिया से बढ़ कर जन्नत देगा अब ख़ुद सोचो फिर उ़लमा का क्या मक़ाम होगा? और वलियों का क्या मक़ाम होगा? और फिर अंबिया का क्या मक़ाम होगा? मगर फिर भी अल्लाह ने हदीसे रसूल स० के ज़रिये फ़रमाया कि इतना देने के बाद एक क़तरे के बराबर भी कम न होगा अल्लाह की अ़ता व बख़शिश का समुन्द्र बहुत वसीअ़ है। ख़ैर सदक़ा बला को उठा लेता है अल्लाह के हुक्म से, और सदक़े का बेहतरीन मसरफ़ मदरसा और जिहाद की राह है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि किसी भी अ़मल को हक़ीर न जानो

(۲٦٦) عن ابی ذرٌرضی اللّٰہ عنہ قال قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم لا تحقرنٌ من المعروف شیئاً ولو اَنْ تَلْقی اخاك بوجہ طلیق (مشکوٰۃ)

हज़रत अबूज़र रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया, तुम किसी भी नेक काम को हक़ीर (कमतर) न जानो अगरचे तुम अपने भाई से ख़ुश रुई के साथ मिलो।

अगर कोई शख्स किसी से खुश खलकी और खुश रुई के साथ मिलता है तो वह खुश होता है लिहाज़ा किसी मुसलमान का दिल खुश करना चूंकि अच्छा और पसन्दीदा है इस लिये यह भी नेक अमल है अगरचे खुश रुई के साथ किसी के साथ मिलना कोई अज़ीमुश्शान काम नहीं है मगर इसे भी कमतर दर्जे की नेकी न समझना चाहिये इसको तबलीग़ वाले बयान करते हैं कि हर नेक काम को अज़ीम जानकर करो यह सोचो कि यह काम तो सुन्नत है यह तो मुसतहब है जिस तरह कि बहुत से लोग यह अलफाज़ कह देते हैं जिन कलिमात से सुन्नत की हिकारत ज़ाहिर होती है ऐसे अलफ़ाज़ से इजतिनाब की बहुत ज़रूरत है अगर किसी ने किसी भी हदीस की तहकीर की उस पर उलमा–ए–उम्मत ने कुफ़्र का फ़तवा दिया है इसलिये जिसने सुन्नत की हिकारत की उसने दरअसल मुहम्मद स० की हिकारत की और जिसने मुहम्मद स० की हिकारत की उसने अल्लाह की हिकारत की और जो अल्लाह का गुस्ताख़ होगा उसका ठिकाना दोज़ख़ होगा। अल्लाह तआला तमाम मुसलमानों की हिफ़ाज़त फ़रमायें, इस लिये हमको अपनी ज़बान पर ग़ौर करना चाहिये कि हम क्या अलफ़ाज़ ज़बान से निकाल रहे हैं क्या इस पर शरीअत नाराज़ तो नहीं होती अगर शरीअत नाराज़ होती हो तो उनको छोड़ दो और अल्लाह से तौबा व इस्तिग़फ़ार कर लो। और यह भी ख़्याल रहे कि मुसलमान को मुस्लिम से ख़ास तौर पर और आम तौर पर काफ़िरों से भी मुस्कुराते हुए कलाम करना चाहिये इससे सामने वाले को ख़ुशी होती है और वही ख़ुशी कभी मग्फ़िरत का ज़रिया बन जाती है एक बुज़ुर्ग का वाक़िआ किताबों में मिलता है कि जब उनका इन्तिकाल हुआ तो उनके बेटे ने इन बुज़ुर्ग को ख़्वाब में देखा और फ़रमाया, अब्बा! क्या गुज़री? वह बुज़ुर्ग कहने लगे जब मैं दरबारे खुदा में पेश किया गया तो

अल्लाह ने पूछा क्या लाये हो? मैंने अल्लाह से कहा इतने इतने हज करके आया हूं सिर्फ़ तेरे लिये, खुदा ने फ़रमाया, क़ाबिले कुबूल नहीं। बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं डरा, फिर अल्लाह ने कहा और क्या लाये? बुज़ुर्ग ने कहा, ऐ अल्लाह! इतने इतने जिहाद में मैं शरीक था सिर्फ़ तेरे लिये। अल्लाह ने फ़रमाया, यह भी क़ाबिले कुबूल नहीं। अब बुज़ुर्ग की हालत और पस्त हो गई और जन्नत से उम्मीद टूटने लगी। फिर अल्लाह तआला ने कहा और क्या है? कहा कि यह नमाज़ व रोज़ा है। फ़रमाया, यह भी क़ाबिले कुबूल नहीं है। अब हद ही न रही दहशत की, फिर अल्लाह ने कहा, घबराओं नहीं तुम्हारी एक नेकी हमारे पास है कि तुम ने एक मरतबा रास्ते से एक कांटे को उठा कर एक तरफ़ कर दिया था ताकि लोगों को इस से ज़रर न हो बस यह अदा व अ़मल हम को पसन्द आ गया और मैंने तेरी इस पर ही मग़्फ़िरत कर दी।

दोस्तो! देखो, छोटे छोटे अ़मल की भी अल्लाह तआला के पास कितनी क़द्र व क़ीमत है अगर इसमें इख़्लास हो, तो कांटे का एक तरफ़ करना भी निजात दिला सकता है और अगर दिखावा हो, तो बड़े से बड़ा अ़मल भी बेकार और बेमअ़ना हो जाता है। इसलिये दो चीज़ों पर ज़्यादा ख़्याल रहे एक तो इख़्लास पर और दूसरे किसी भी अ़मल को छोटा जान कर न छोड़ो इस का यह मतलब न निकालना कि हम छोटा जान कर नहीं छोड़ेंगे मगर बड़ा जान कर छोड़ेंगे जब छोटा जान कर छोड़ना मज़मूम है तो बड़ा जान कर छोड़ना तो और ज़्यादा मज़मूम और हिमाक़त की बात है। ख़ैर, अल्लाह अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। आमीन।

हुज़ूर स० ने फ़रमाया हर नेकी सदक़ा है

(٢٦٧) عن جابر وحذيفة قالا قال رسول الله صلى الله عليه وسلم

كل معروف صدقة. (ترمذی، مشکوٰۃ شریف)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया, हर नेकी सदक़े का सवाब रखती है (यानी सदक़ा है)।

कोई भी अ़मल हो अगर वह अल्लाह के लिये होगा तो वह सदक़ा है खुद का खाना खाना भी सदक़ा, घरवालों और दोस्तों तक को खिलाना सदक़ा, बल्कि तमाम ही अअ़माल जिन में इख़्लास हो वह क़ाबिले कुबूल हैं और क़ाबिले सवाब भी, यानी जिस चीज़ को भी ख़ुदा के हुक्म के मुताबिक़ करोगे वह इबादत बन जाती है क्योंकि कुरआन ने नफ़्स की बातों पर अ़मल करने वालो को नफ़्स का बन्दा बताया है लिहाज़ा मालूम हुआ कि हुक्म की ताबेदारी भी इबादत है अगर वह शख़्स किसी का गुलाम है अगर उस शख़्स की बात मानता हो तो यह उसका बन्दा न होगा और न यह इबादत कहलायेगी कुरआन में नफ़्स की बात मानने को इबादत से तअ़बीर किया गया है काफ़िरों ने अपने नफ़्सों को अपना मअ़बूद बना दिया। नफ़्स को मअ़बूद क्यों कहा? इसकी पैरवी करने की वजह से मअ़बूद का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ इससे मालूम हुआ कि अल्लाह के सामने सज्दा इबादत है और अल्लाह की बात मानना भी इबादत। अब बन्दा जो भी काम अल्लाह की मर्ज़ी से करेगा तो यह अ़मल इबादत होगा और यही तबलीग़ वाले कहते हैं।

और इबादत नाम ही है अल्लाह की फ़रमांबरदारी का।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि मौत के बाद तीन चीज़ों का अज्र जारी रहता है

(۲٦٨) عن ابی هريرة رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا مات الانسان انقطع عنه عمله الا من ثلاثة من صدقة جارية

وعلم ينتفع به وولد صالح يدعوله. (مسلم، ترمذی، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया, जब इन्सान मर जाता है तो उसके अ़मल का सिलसिला बन्द हो जाता है मगर तीन चीज़ों के अ़लावा, कि उनका सिलसिला मौत के बाद भी जारी रहता है सदक़ा जारिया, इल्म कि जिस से फ़ाइदा उठाया जाये और औलादे सालेह कि जो उसके लिये दुआ़ करे।

तबलीग़ वाले हज़रात जो बयान करते हैं उनकी दलील यह हदीस है जिसमें हुज़ूर स० ने फ़रमाया, कि सदक़ा जारिया जैसे मदरसे बनाना, मस्जिदें बनाना, मुसाफ़िर ख़ाने बनाना, जिहाद के लिये कोई चीज़ ख़रीद कर मुजाहिद को देना, क़ुरआन तक़सीम करना, लोगों को घर बना कर देना, यह तमाम सदक़ा जारिया है जब तक वह चीज़ इस्तेमाल होती रहेगी सवाब हासिल होता रहेगा। किसी को क़ुरआन सिखाना, हदीस, फ़िक़ह सिखाना, ख़ैर की बात सिखाना, दावत के ज़रिये नेक राह दिखाना, किताबें लिखना, ताकि लोग इनसे फ़ाइदे हासिल करें और दूसरों तक इसकी तबलीग़ हो जाये और दुनिया व आख़रत की कामयाबी हासिल करें और वह औलादे सालेह जिनकी सही तरबीयत की और मर गया तो उनके नेक कामों का सवाब उसको भी हासिल होगा क्योंकि उसने इनकी तर्बीयत की और सही तालीम दिलवाई और जब औलाद नेक होगी तो वालिदैन के लिये दुआ़ करेगी और इनकी दुआ़ से मरे हुए को सवाब हासिल होगा मगर आज लोग कॉलेज की तालीम देने को दोनों के लिये कामयाबी तस्व्वुर करते हैं हालांकि आज बहुत से एम. ए., बी. ए. करने वाले हज़रात को रिक्शा चलाते हुए ख़ुद मैंने देखा है इनसे बात भी की है। ख़ैर अगर फ़ाइदा भी होगा तो दुनिया की हद तक और आख़रत में कुछ नहीं मगर दीन की तालीम से दुनिया जो मिलनी है वह

हासिल होगी और आख़िरत का हिसाब भी दुरुस्त हो जायेगा और आज कल नये दौर की पढ़ाई भी बहुत ज़रूरी है जैसे हिन्दी और अंग्रेज़ी, दीनी तालीम के साथ इन ज़बानों को सीखने के लिये भी वक़्त ज़रूर निकालना चाहिये और जो कॉलेज के तालिबे-इल्म हैं इनको मैं यह नहीं कहता हूं कि वह इस कॉलेज वाली पढ़ाई को छोड़ कर मदरसे में जायें और 'अलिफ़' 'बा' पढ़े, बल्कि आपसे इतनी ज़रूर दरख़्वास्त है कि आप हज़रात कॉलेज के साथ अपनी दीनी मालूमात की भी पढ़ाई करते रहें और इंगलिश ऐजुकेशन में आप इसका ज़रूर ख़्याल रखें कि आपकी नीयत इस तालीम से भी दीन को फ़ाइदा पहुंचाने की हो अगर आपकी यह नीयत होगी तो फिर आपको अंग्रेज़ी हासिल करने से भी सवाब हासिल होगा। ख़राब लिट्रेचर पढ़ने से बेहतर है कि आप अपने आपको दीनी लिट्रेचर में लगाओ जिससे आपको दुनिया के साथ दीन की भी मालूमात में कमाल हासिल हो जाये और आप दीन व दुनिया में कामयाब हो जायें और कॉलेज वालों से यह भी दरख़्वास्त है कि वह पढ़ाई के वक़्त में नहीं, मगर छुट्टियों में ज़रूर जमाअ़त में वक़्त लगायें इससे आपको फ़ाइदा होगा कि आपको इस दीन के अअ़माल करने की फ़िक्र बढ़ जायेगी और आप अपनी ज़िन्दगी के बारे में ग़ौर करेंगे और आप दीन और दुनिया दोनों का काम ठीक से करोगे और दुनिया में भी कामयाब और आख़िरत में भी कामियाब। और कॉलेज वालों से एक और बात ज़रूर कहता हूं वह यह कि इख़्तिलाफ़ वाले मसाइल में न उलझें इसकी वजह से आपको दो नुक़सानात में से एक नुक़सान ज़रूर होगा या तो इस्लाम से ही रुख़ मोड़ लोगे या इस्लाम को कमज़ोर समझोगे यह क्यों होगा? जवाब, आपको इस्लाम का मुकम्मल इल्म न होने की वजह से। आप हज़रात कॉलेज वाले

हो, दीन में क़दम रखना शुरू कर रहे हो या कर चुके हो, जिस जमाअत में भी रहो मगर इख़्तिलाफ़ पर नज़र न डालो बस सिर्फ़ इतना काम करना जब भी किसी चीज़ पर अमल करना हो उ़लमा से इसके बारे में कुरआन व हदीस का हुक्म मालूम करना अगर कुरआन या हदीस का इस बारे में कोई हुक्म न मालूम हो तो फिर इमाम अबू हनीफ़ा रह० का क़ौल मालूम करना जिसको उन्होंने कुरआन व अहदीस से निकाला है बस इतना ही आप लोग करोगे तो कम अज़ कम ईमान तो सही सालिम रहेगा अगर इख़्तिलाफ़ में जाओगे तो ईमान का भी ख़ौफ़ है। अल्लाह हम सबको बचाये आमीन।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि क़नाअ़त करो

(٢٦٩) عن علي رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من رضى من الله باليسير من الرزق رَضِى اللّٰهُ منه بالقليل من العمل

(بیہقی، مشکوٰۃ شریف، بخاری)

हज़रत अ़ली रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया जो शख़्स थोड़े से रिज़्क़ पर अल्लाह से राज़ी होता है (यानी अपनी मआ़शी ज़रूरतों की क़लील मिक़दार पर क़नाअ़त करता है) तो अल्लाह तआ़ला इससे (इताअ़त व इबादत के) थोड़े से अ़मल पर राज़ी हो जाता है।

तबलीग़ वालों का भी यही बयान होता है कि बन्दे को ख़ुदा की मर्ज़ी पर राज़ी रहना चाहिये और हुज़ूर स० की हदीस से भी यह बात साफ़ तौर पर वाज़ेह हो गई और मज़ीद फ़ज़ीलते उ़ज़मा मालूम हो गई कि अगर बन्दा ख़ुदा के थोड़े रिज़्क़ से राज़ी होगा तो ख़ुदा भी इसके थोड़े से अ़मल पर ख़ुश होगा और जन्नत में दाख़िल कर देगा अगर बन्दा अल्लाह की नेमत का शुक्रिया अदा

करना छोड़ कर बेसब्री और हिर्स वाली ज़िन्दगी पर उतर आये तो अल्लाह तआला का मामला भी वैसा ही होगा जैसा कि वह अल्लाह के साथ मामलात अन्जाम देगा और दूसरी हदीस में कनाअत की यह फ़ज़ीलत वारिद है।

(۲۷۰) عن ابن عباسؓ قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم من جاعَ اَو احتاجَ فکتَمَهُ الناسَ کان حقًا علی الله عزوجل ان یَرْزُقَهٗ رزق سنةٍ من حلال (مشکوٰة شریف بیہقی)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया जो शख़्स भूखा हो या (किसी चीज़ का) मोहताज हो और अपनी भूख व मोहताजगी को लोगों से छिपाये (यानी खाने की तलब में किसी से यह न कहे कि मै भूखा हूं और न मदद चाहने के लिये किसी से अपनी एहतियाज व ज़रूरत को बयान करे) तो अल्लाह तआला का यह यक़ीनी वअ़दा है कि वह इस शख़्स को हलाल तरीक़े पर एक साल का रिज़्क़ पहुंचायेगा। तबलीग़ वाले यह हदीस भी क़नाअ़त के बयान में बयान करते है जो सही हदीस है। ख़ैर देखो अल्लाह ने इन्सान की क़नाअ़त पर कितने बड़े बड़े इनाम रखे हैं मगर सिर्फ़ लेने वालों की कमी है देने वाले ने दरबार खोल रखा है। देखो इस हदीस में क़नाअ़त की कितनी फ़ज़ीलत बयान की है और यह तबलीग़ वाले बयान करते हैं तो लोग हदीस पर मुअ़तरिज़ाना नज़र डालते हैं इनके कलेजे ठन्डे करने के लिये यह हदीस नक़ल कर दी गई है और सुनो हुज़ूर स० ने फ़रमाया, इस हदीस में कि अगर कोई शख़्स अल्लाह तआला के वास्ते अपनी भूख का इज़हार न करे और अपनी मोहताजगी का इज़हार न करे तो अल्लाह तआला एक साल के (यानी मुसलसल) हलाल रिज़्क़ का ज़ामिन बन जाता है यह है सब्र और क़नाअ़त की काश्त।

हज़रत उ़मर रज़ि० की बुलन्द बीनी

(۲۷۱) عن زید بن اسلم قال استسقٰی یومًا عمر فجیٔ بماءٍ قد شیب بعَسَلٍ فقال انّه لطیّبٌ لکنّی اسمعُ الله عزوجل نعٰی علی قومٍ شهواتهم فقال اَذْهَبْتُمْ طَیِّبٰتِکُمْ فِیْ حَیَاتِکُمُ الدُّنْیَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا فاخاف ان تکون حسناتنا عُجّلتْ لنا فلم یشربه. (مشکوٰۃ شریف، بخاری شریف)

हज़रत ज़ैद बिन असलम ताबई रह० कहते हैं कि एक दिन अमीरुल मोमिनीन हज़रत उ़मर रज़ि० ने पीने के लिये पानी मांगा तो इनकी ख़िदमत में जो पानी पेश किया गया इसमें शहद मिला हुआ था हज़रत उ़मर रज़ि० ने (इस पानी को देखकर और यह जान कर कि इसमें शहद मिला हुआ है) फ़रमाया, यक़ीनन यह पानी पाक व हलाल और निहायत ख़ुशगवार है लेकिन मैं इसको नहीं पियूंगा। क्योंकि मैं अल्लाह तआ़ला के बारे में (कुरआन से) सुनता और जानता हूं कि उसने एक क़ौम को ख़्वाहिशाते नफ़्स की इत्तिबाअ़ का मुजरिम गरदाना और (बतौरे सज़ा व तम्बीह) फ़रमाया कि तुमने उस दुनियवी ज़िन्दगी में अपनी लज़्ज़तों और नेमतों को पा लिया और उनसे पूरा पूरा फ़ाइदा हासिल कर लिया (अब आख़िरत में तुम्हारे लिये क्या रह गया है) लिहाज़ा मैं डरता हूं कि कही हमारी नेकियां भी ऐसी न हों जिनका अज्र व सवाब (दुनियवी नेमतों और लज़्ज़तों की सूरत में जल्दी ही इस दुनिया में) हमें दे दिया जाये (और फिर आख़िरत में मेहरूमी का मुंह देखना पड़े) चुनांचे हज़रत उ़मर रज़ि० ने शहद मिला हुआ वह पानी नहीं पिया। हज़रत उ़मर रज़ि० का तक़्वा देखो, क्या था कि दुनिया में उ़म्दा पानी पीने को भी पसन्द नहीं फ़रमाया और वापस कर दिया यह थे उम्मत के बे–नज़ीर ख़लीफ़ा और मुहम्मद स० के शार्गिद जिनको दुनिया से ज़रा भी लगाव न था। और कुरआन

करीम की एक एक आयत पर पहाड़ों से भी ज़्यादा मज़बूत यक़ीन था इस यक़ीने कामिल ने ही आप रज़ि० को इतना मुक़र्रब इलल्लाह बना दिया था कि आप रज़ि० के क़ौल की सतरह मरतबा कुरआने क़रीम ने तसदीक़ की और हज़रत उ़मर रज़ि० के क़ौल के मुवाफ़िक़ अल्लाह तआ़ला का फ़ैसला नाज़िल हुआ और फिर भी बअ़ज़ दुश्मन सहाबा रज़ि० हज़रत उ़मर रज़ि० को गाली फ़िक्षीन वग़ैरा वग़ैरा अलफ़ाज़ से याद करते हैं जिनका अल्लाह के पास यह मक़ाम हो कि उनके क़ौल की भी अल्लाह लाज रखता हो और अल्लाह तआ़ला उनकी राय पर कुरआने करीम नाज़िल करता हो उसके ख़िलाफ़ ज़बान खोल कर क्यों अपने ऊपर दोज़ख़ वाजिब करते हो अल्लाह समझ अ़ता फ़रमायें। आमीन।

सहाबा किराम रज़ि० का फ़क़्र और इस पर सब्र और हमें सबक़

(۲۷۳) عن ابی عمر رضی اللہ عنہ قال قال ما شبعنا من تمرٍ حتی فتحنا خیبر (بخاری، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत इब्ने उ़मर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम (सहाबा रज़ि०) ने अपने फ़क़्र व इफ़लास की वजह से आंहज़रत स० के साथ खजूरों से कभी पेट नहीं भरा यहां तक कि हमने ख़ैबर को फ़तह कर लिया (जहां खजूरें बहुत होती थीं) तब हमें पेट भर खजूर खाने को मिली।

सहाबा रज़ि० का मुजाहेदा अ़क़्ल से दूर है यह बस अल्लाह तआ़ला की इस्तिक़ामत अ़ता करने की वजह से और मुहम्मद स० की बरकत थी वरना इतना सख़्त वक़्त काटना किसके बस की बात है? बताओ जब हज़रात सहाबा किराम रज़ि० ने कभी खजूर जो कि अ़रब की सबसे आम और कम क़ीमत वाली चीज़ मानी

जाती है वह भी पेट भर मयस्सर नहीं हुई तो फिर दीगर फल व मेवे और शोरबा रोटी और दीगर किस्म के खाने कहा से हासिल हुए होंगे। बताओ एक तरफ़ यह कुरबानी वाला मामला है और दूसरी तरफ़ कुफ़्फ़ार का यह कहना है कि हमारी तरफ़ लौट जाओ हम तुमको दौलत व इज़्ज़त देंगे और सहाबा का तमाम ऐश व राहत को तर्क करना यह सब नुसरते इलाही और अल्लाह की रहमत थी। आज देखो तमाम चीज़ें मयस्सर होने के बावुजूद दिल भरता ही नहीं हिर्स ख़त्म होती ही नहीं, मगर फिर भी देखो अल्लाह ने उनको भूखे होने की हालत में कम होने की हालत में बे-हथियार होने की हालत में कितने मकामात पर ग़ालिब कर दिया और फिर राहत का आना शुरू हुआ और इन्हीं की कुरबानियों के तुफ़ैल आज ज़िन्दगी के लम्हात ने हमें यहां लाकर छोड़ा वह हज़रात चले गये। अपना तक़्वा साथ ले गये क्योंकि अब इतनी ताक़त वाला कौन है? इतना कामिल व मुकम्मल ईमान किसका है? यह तो बस बरकत थी, मुहम्मद स० की जिसको अल्लाह तआला ने हज़रात सहाबा किराम रज़ि० की तक़दीर में लिख दिया था इसके बाद का दौर ताबईन का आया। उनको हुज़ूर स० की सआदत हासिल न हो सकी मगर उनको सहाबा किराम रज़ि० के ज़रिये हुज़ूर स० की बरकात हासिल हुई। और वह भी ईमान व यक़ीन के अअ़ला मर्तबे पर फ़ाइज़ थे। यह बरकत का दौर तबे ताबईन को भी मयस्सर हुआ, ताबईन की इस बरकते मुहम्मद स० को मेहफ़ूज़ करने की वजह से और उसके बाद से आज तक आप बख़ूबी पढ़ रहे हो, सुन रहे हो, देख रहे हो, कि किस-किस क़िस्म के हालात से उम्मते मुहम्मदिया स० गुज़र कर यहां तक पहुंची है। अब इसके ज़िम्मेदार हम लोग हैं हमारे इन्कार करने से यह ज़िम्मेद्दारी ख़त्म नहीं होगी बल्कि

इसको अन्जाम देना होगा और आने वालों के लिये रास्ता फ़राहम करना होगा अगर हमने यह न किया और दीन से जान चुराई तो अल्लाह तआला भी पूछेगा कि यह फ़रीज़ा अन्जाम क्यों नहीं दिया। हुज़ूर स० भी पूछेंगे कि क्या हमारी कुरबानियां तुम तक नहीं पहुंची थीं? क्या हमारे वाक़िआत सिर्फ़ कहानियां थीं जिनको सुन लिया और छोड़कर चल दिये सहाबा रज़ि० भी पूछेंगे कि हमने दीन की अपने ख़ून से सींचाई की थी, क्या तुमने उसके लिये पानी भी ख़र्च न किया? बताओ हमारे पास क्या जवाब है असल इज़्ज़त भी आख़िरत की है और असल बदनामी भी आख़िरत की है अगर बाइज़्ज़त होंगे तब भी पूरा आलम देखेगा और अगर खुदानाख़्वास्ता ज़लील भी हो गए तब भी पूरा मैदाने हश्र देखेगा अल्लाह तआला नाराज़ होगा और मुहम्मद स० नाराज़ होंगे, तमाम सहाबा रज़ि० नाराज़ होंगे अगर हम इस दावत वाले काम को लेकर आगे न बढ़े।

और अगर इस काम को तरक़्क़ी दी और दीन की ख़िदमत की चाहे मदरसों के एतिबार से हो या जमाअ़ते तबलीग़ के ऐतिबार से हो या जिहाद के ऐतिबार से हो तो अल्लाह तआला खुश होगा और मुहम्मद स० ख़ुश होंगे। तमाम सहाबा रज़ि० ख़ुश होंगे और हम ख़ुद ख़ुश होंगे अगर यह काम अन्जाम न दिया और सिर्फ़ उम्मत को लूटने में और पेट भरने में और दुनिया लूटने में लगे रहे तो अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है क्या हाल होगा ख़ुदा के वास्ते यह क़ब्र वाला काम छोड़ दो यह बिल्कुल शरीअ़ते इस्लाम से दूर करने वाला काम है। हुज़ूर स० के आलिमुलग़ैब होने के अक़ीदे को छोड़ दो यह कुरआन के ख़िलाफ़ है ख़ुदा के वास्ते तफ़्सीर बिर्राय छोड़ दो यह कुरआन की इज़्ज़त व अज़मत के ख़िलाफ़ है हदीस के भी ख़िलाफ़ है ख़ुदा के लिये सहाबा

रज़ि० को बुरा कहना छोड़ दो यह अक़्ल के भी ख़िलाफ़ है और शरीअ़त के भी। आज उम्मत को एक जगह जमा होने और इत्तिहाद की ज़रूरत है हमारे इस इख़्तिलाफ़ को आपसी रखो लेकिन यह याद रहे कि जब शरीअ़त का मामला होगा तो न कोई तबलीग़ी मौदूदी न बरेलवी न ग़ैर–मुक़ल्लिद और जो भी दीगर हज़रात हों तमाम कलिमे वाले हम एक हैं। आपसी इख़्तिलाफ़ को मज़हबी और दुश्मनी वाला न बनाओ। मैंने यह किताब इख़्तिलाफ़ के लिये नहीं लिखी बल्कि इख़्तिलाफ़ दूर करने के लिये लिखी है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि अपने से कम दर्जे वाले को देखो

(۲۷۳) عن ابی ھریرۃ رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اذا نظر احد کم الی من فُضِّلَ علیہ فی المال والخلق فلینظُر الی من ھوا اسفل منہ متفق علیہ وفی روایۃ لمسلم قال انظروا الی من ھو اسفل منکم لاتنظروا الی من ھو فوقکم فھو اجدران نعمۃ اللہ علیکم

(متفق علیہ، احیاء العلوم جلد سوم)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया तुममें से जो शख़्स किसी ऐसे आदमी को देखे जो उससे ज़्यादा मालदार और उससे ज़्यादा अच्छी शक्ल व सूरत का हो (और उसको देख कर अपनी हालत पर रन्ज व हसरत हो खुदा का शुक्र अदा करने में सुस्ती व कोताही वाक़ेअ़ होती हो और उस आदमी के तईं रश्क व हसद के जज़्बात पैदा होते हों) तो उसको चाहिये कि वह उस आदमी पर नज़र डाले जो उससे कमतर दर्जे का है (ताकि उसको देखकर अपनी हालत पर ख़ुदा का शुक्र अदा करे और नेमत अता करने वाले परवरदिगार से ख़ुश हो)

और मुस्लिम की एक रिवायत में यह अलफ़ाज़ है कि आप स० ने फ़रमाया तुम उस शख़्स को देखो जो मर्तबे में तुमसे कमतर हो और उस शख़्स की तरफ़ न देखो जो मर्तबे में तुमसे बड़ा हो तो ऐसा करना तुम्हारे लिये निहायत मुनासिब है ताकि तुम उस नेमत को जो ख़ुदा ने तुम्हें दी है हक़ीर न जानो।

हुज़ूर अकरम स० ने इन्सानी मिज़ाज के लिये बहुत उम्दा नुस्ख़ा अ़ता फ़रमाया है जिसके इस्तेमाल करने से बन्दा कभी अल्लाह का नाफ़रमान नहीं बन सकता इन्सान चाहे कितना ही मालदार हो जाये मगर वह अपने से ऊपर वाले को देखेगा तो नाशुक्री करेगा और इन्सान कितना ही घटिया हाल में हो अगर वह अपने से कम दर्जे वाले को देखेगा तो शुक्र करेगा। इसलिये इन्सान चाहे मालदार हो या ग़ैर मालदार उसको इस बात की तरफ़ ख़्याल करना चाहिये कि उसकी नज़र अपने से ऊपर वाले पर न पड़े। क्योंकि अगर उसकी नज़र ऊपर वाले पर पड़ेगी तो उससे नाशुक्री पैदा होती है और नाशुक्री से नेमत छिन जाती है और शुक्र करने से नेमत में इज़ाफ़ा होता है। इस क़िस्म का एक वाक़िआ किताबों में आता है, एक मरतबा हज़रत मूसा अ़लै० जा रहे थे रास्ते में एक मालदार मिला उसने हज़रत मूसा अ़लै० से दरख़्वास्त की कि आप अल्लाह से कलाम करते हैं अब जब भी अल्लाह तआ़ला से कलाम करोगे तो मेरी एक बात बारगाहे रब्बे ज़ुलजलाल में पेश करना कि मेरे पास माल बहुत हो गया है और वह कम नहीं होता, अल्लाह तआ़ला से पूछना कि वह माल कम किस तरह होगा। हज़रत मूसा अ़लै० ने कहा, ठीक है पूछ लूंगा, आप अ़लै० जब आगे चले तो आपको एक फ़क़ीर मिला जिसके जिस्म पर सिर्फ़ एक लुंगी थी और कुछ न था उसने हज़रत मूसा अ़लै० से कहा हज़रत आप अल्लाह के साथ कलाम करते हैं जब

आपका कलाम अल्लाह से हो तो मेरी एक बात अल्लाह तआला के सामने रखना कि मैं बहुत फ़कीर हूं और मेरे पास एक लुंगी के अलावा कुछ नहीं है अल्लाह तआला से कहना कि कोई ऐसा अमल बता दे जिसकी वजह से मैं मालदार बन जाऊं। हजरत मूसा अलै० ने फ़रमाया, अच्छी बात है भाई! अर्ज़ कर दूंगा। जब हज़रत मूसा अलै० कोहे तूर पर गये और अल्लाह तआला से कलाम किया तो उन दोनों की बात पूछना भूल गये और जब लौट रहे थे तो अल्लाह तआला ने ही याद दिलाया कि ऐ मूसा! तुमसे मेरे दो बन्दों ने कुछ कहा था? फिर कहा हां, एक ने कहा था कि मुझको माल कम करने का अमल चाहिये और एक ने कहा था कि मुझको मालदार होने का अमल चाहिये। हज़रत मूसा अलै० से अल्लाह तआला ने कहा, ऐ मूसा अलै०! जिसने आपसे माल कम करने का अमल तलब किया है उससे कहना कि तू अल्लाह तआला की नेमतों की नाशुक्री कर, तेरा माल ख़ुद-बख़ुद कम हो जायेगा और जिस शख़्स ने आपसे यह कहा कि मेरे लिये ऐसा अमल लेकर आना जिसके करने से मैं मालदार हो जाऊं उससे कहना कि अल्लाह ने तुझको जो दिया है उस पर शुक्र कर, हम तेरे लिये बरकत देंगे। हज़रत मूसा अलै० वापस लौटे तो मालदार से मुलाक़ात हुई उसने पूछा क्या अल्लाह तआला से वह मस्अला पूछा जो मैंने कहा था? आपने फ़रमाया हां, उसने कहा अल्लाह तआला ने क्या अमल बतलाया? उस मालदार के हाथ में बाल्टी थी और उसमें दूध था हज़रत मूसा अलै० ने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि तू अल्लाह तआला की नाशुक्री कर, तेरा माल ख़ुद-बख़ुद कम हो जायेगा। उसने कहा नाशुक्री और अल्लाह की, ऐसा मैं नही करूंगा। तो उसके हाथ में जो बाल्टी थी वह सोने की बन गई। जब अल्लाह तआला देता है तो

छप्पर फाड़ कर देता है फिर जब आगे चले तो उस फ़कीर से मुलाक़ात हो गई जिसके बदन पर सिर्फ़ एक लुंगी थी उसने पूछा मूसा, अल्लाह तआला से मेरा मस्अला पूछा? हज़रत मूसा अलै० ने कहा अल्लाह तआला ने तुम्हारे बारे में यह अमल बताया है कि तुम अल्लाह की नेमतों पर शुक्र करो, अल्लाह ख़ुद-बख़ुद तुमको ग़नी कर देगा। वह जाहिल फ़कीर गुस्से में आ गया और कहने लगा, अल्लाह ने मुझको इस लुंगी के अलावा और दिया ही क्या है, जिस पर अल्लाह का शुक्र अदा करूं। बस उसका यह कहना था कि इतने ज़ोर से हवा का झोंका आया कि उसकी लुंगी को भी उड़ा कर ले गया। दोस्तो! यह है शुक्र और नाशुक्री पर जामेअ़ हिकायत, इससे इन्सान नसीहत हासिल कर सकता है और शाकिर बन सकता है।

क़र्ज़ की फ़ज़ीलत सदक़े से ज़्यादा है

(۳۷۴) قال رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم رأيتُ على باب الجنة مكتوبًا الصدقةُ بعشر امثالها و القرض بثمان عشرة .

(بخاری، ابن ماجہ، احیاء العلوم جلد سوم، مثلہٗ فی جمع الفوائد اول)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया, मैंने जन्नत के दरवाज़े पर लिखा हुआ देखा कि सदक़े का सवाब दस गुना होगा और क़र्ज़ का सवाब अट्ठारह गुना। उसकी यह वजह बयान की है कि सदक़ा मोहताज और ग़ैर मोहताज दोनों को मिल जाता है जबकि क़र्ज़ मांगने की ज़िल्लत मुफ़लिस व ज़रूरतमन्द के अलावा कोई दूसरा बर्दाश्त नहीं करता।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि फ़क़ीर मालदार से पांच सौ साल क़बल जन्नत में दाख़िल होंगे

(٢٧٥) عن ابی ہریرۃ رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یدخل الفقراءُ الجَنّۃَ قبل الاغنیاء بخمس مائۃ عامٍ نصف یوم۔
(بخاری، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया, 'ग़रीब लोग जन्नत में मालदार से पांच सौ साल पहले दाख़िल होंगे जो आधे दिन के बराबर है'।

आधे दिन से मुराद क़ियामत का दिन है। मतलब यह है कि दुनिया के पांच सौ साल क़ियामत के आधे दिन के बराबर होंगे और क़ियामत के एक दिन की मुद्दत दुनियावी शब व रोज़ के ऐतिबार से एक हज़ार साल के बराबर होगी जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है

﴿وَاِنَّ یَوْمًا عِنْدَ رَبِّکَ کَاَلْفِ سَنَۃٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ﴾ (پارہ ١٧، سورہ حٓ)

तर्जुमा:— और एक दिन तेरे रब के यहां हज़ार साल के बराबर होता है जो तुम गिनते हो।

तबलीग़ वाले इसको भी बयान करते हैं कि क़ियामत का एक दिन दुनिया के हज़ार दिन का होगा यह आयत व हदीस दलील है तबलीग़ वालों के क़ौल की। और यह भी मालूम हो गया कि ग़रीब मालदारों से पांच सौ साल क़ब्ल जन्नत में दाख़िल होंगे।

ग़रीबों की बरकत

(٢٧٦) عن ابی الدرداء رضی اللہ عنہ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال ابغونی فی ضُعَفَاءِکم فانَّما تُرْزَقُوْنَ او تنصرون بضعفاءکم۔
(ابوداؤد، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबुदर्दा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया तुम लोग मुझे अपने कमज़ोर लोगों में (यानी फ़क़ीरों में) तलाश करो क्योंकि तुम्हे रिज़्क़ दिया जाता है, या यह फ़रमाया कि तुम्हें अपने दुश्मन से मुक़ाबले पर मदद का मिलना उन लोगों की बरकत से है जो तुम में कमज़ोर फ़क़ीर और ग़रीब हैं।

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया मुझको ग़रीबों में तलाश करो इसका मतलब है ग़रीब की मदद करो उनकी इआनत और इमदादे कसीर के ज़रिये उनके साथ ऐहसान और हुसने सुलूक करो।

अल्लाह तआ़ला किससे मुहब्बत करता है?

(٢٧٧) عن قتادة بن نعمان انّ رسول الله صلى الله عليه وسلم قال اذا أحبّ الله عبداً حماهُ الدنيا كما يَظلُّ احدكم يحمى سقيمه الماء (مشكوٰة)

हज़रत क़तादा बिन नोअ़मान रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे को दोस्त रखता है तो उसको दुनिया से बचाता है जिस तरह कि तुममें से कोई शख़्स अपने मरीज़ को पानी से बचाता है।

मतलब यह है कि जिस तरह तुम्हारा कोई अज़ीज़ व मुतअ़ल्लिक़ जब किसी ऐसे मर्ज़ में मुब्तला होता है जिसमें पानी का इस्तेमाल सख़्त नुक़सान पहुंचाता है जैसे इसतस्क़ा और मेअ़दे की कमज़ोरी वग़ैरा और तुम्हें उसकी ज़िन्दगी प्यारी होती है तो तुम इस बात की पूरी कोशिश करते हो कि वह मरीज़ पानी के इस्तेमाल से दूर रहे ताकि जल्द से जल्द सेहत हासिल करले, इस तरह अल्लाह तआ़ला जिस बन्दे को अपना महबूब बनाता है और उसको आख़िरत के बुलन्द दर्जात पर पहुंचाना चाहता है उसको दुनिया के माल व दौलत, जाह व मुनसब और उस चीज़ से दूर रखता है जो उसके दीन को नुक़सान पहुचाने और उक़बा

में इसके दर्जात को कम करने का सबब बने।

तबलीग़ वाले, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० का वाक़िआ बयान करते हैं

(٣٧٨) عن محمد بن ميسرين قال كُنّا عند ابى هريرة رضى الله عنه وعليه ثوبان مُمشقَان من كتان فتَمَخَّطَ فى احدهما فقال بخ بخ يتمخط ابو هريرة فى الكتان لقد رايتنى وانّى لَاَخِرُّ فيما بين منبر رسول الله صلى الله عليه وسلم وحُجْرَةِ عائشة مَغشيةً علىَّ فيجئُ الجائى فيضعُ رجلهُ على عُنقِى يرى اَنَّ بى جنونًا وما بى جنون وما هو الا الجوع . (ترمذی،شمائل)

मुहम्मद बिन सीरीन मशहूर ताबई हैं वह रिवायत करते हैं कि एक दफ़ा हम हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० के पास थे और उनके बदन पर कितान के दो रंगीन कपड़े थे, उन्होंने एक कपड़े से अपनी नाक साफ़ की और कहा कि वाह वाह अबू हुरैरह रज़ि० आज कितान के कपड़े से अपनी नाक साफ़ कर रहा है और एक ज़माना वह भी था जब मैंने ख़ुद को इस हाल में पाया है कि रसूल स० के मिम्बर और हज़रत आइशा रज़ि० के हुजरे के दर्मियान बेहोश होकर गिर पड़ता था, आने वाला आता और अपना पैर मेरी गर्दन पर रख देता था यह समझते हुए कि मुझे जुनून हो गया, (जिसको मिर्गी तारी होना भी कहते हैं) और हकीक़त में मुझे जुनून नहीं था बल्कि वह तो भूख की वजह से होता था।

तबलीग़ वाले हज़रात यह वाक़िआ बयान करते हैं कि देखो इस वाक़िऐ से सबक़ हासिल करना चाहिये कि इन्सान पर अगर बुरे हालात भी आ रहे हों तो यह समझो कि अल्लाह तआला ने दुनिया में इम्तिहान के लिये भेजा है उसमें कुछ न कुछ परेशानी ज़रूर पेश आयेगी और कभी किसी को ज़्यादा परेशानियां दर–पेश

होती हैं और अकसर परेशानी का आना गुनाहों की नहूसत से होता है और कभी परेशानियों का आना गुनाहों को माफ़ करने के लिये होता है कि बन्दे के गुनाह बहुत हो गए हों और उसकी नेकियां उसके गुनाहों से कम ही रह रही हों, अब उसके गुनाहों से नेकियों को बढ़ाने के लिये परेशानियों को उस पर डाला जाता है और कभी जन्नत में ऊंचे मक़ाम पर पहुंचाने के लिये परेशानी आती है जैसे उ़लमा पर अकाबिरे उम्मत और वलियों, नबियों पर जो मुसीबत आती है वह गुनाहों की नहूसत नहीं होती है और न उन पर मुसीबत का आना गुनाह माफ़ कराने के लिये होता है वह तो नेक होते हैं मगर अल्लाह तआ़ला उनको ऊंचे मक़ाम पर पहुंचाना चाहता है अब उसके नेकी वाले अ़मल के साथ (नाईट डयूटी) यानी मुसीबत का भी इज़ाफ़ा कर देता है जो कभी बीमारी की शक्ल में होती है और कभी तंगी की सूरत में होती है, ग़र्ज़ कि मुसीबत का आना अल्लाह वालों पर उनके आला मक़ाम के लिये होता है उसको बन्दे ने ख़ुद कुरआने करीम और हदीस की मदद से निकाला था और मेरे लिखने के बाद मुझको इस क़िस्म की हदीस भी मिल गई जिसमें इस तरह की तरतीब है इस हदीस ने मुझको बहुत फ़रहत बख़्शी, कि मेरी नज़र हदीस के मुवाफ़िक़ है। ख़ैर हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० के वाक़िअ़े से यह बात भी वाज़ेह हो गई कि आफ़त व परेशानी के बाद आसानी आती है और किसी के लिये सिर्फ़ आख़िरत में ही आसानी व राहत को मुक़द्दर किया होता है और किसी के लिये दुनिया में, इस बात को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इन अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाया है।

فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۝ (پاره ۳۰)

सो अलबत्ता मुश्किल के साथ आसानी है, अलबत्ता मुश्किल के साथ आसानी है फिर जब तू फ़ारिग़ हो तो मेहनत कर।

ख़ुद अल्लाह तआला ने वाज़ेह कर दिया कि मुश्किल आयेगी तो राहत भी होगी और राहत होगी तो मुश्किल भी होगी यह दोनों चीज़ें लाज़िम मलज़ूम हैं अगर हम पर मुश्किल आये तो अल्लाह तआला को तअ़ना देना शुरू कर देते हैं यह बिल्कुल ग़लत है और हिमाक़त है क्योंकि अल्लाह का कोई काम हिकमत से ख़ाली नहीं होता है बस अल्लाह से ख़ैर व आफ़ियत की दुआ करनी चाहिये और अल्लाह से अच्छा गुमान रखना चाहिये और अच्छा गुमान रखना ज़रूरी भी है जिस ख़ुदा ने सर दिया आंख व दिमाग़ दिया, ज़बान दी, हाथ दिए, पूरा जिस्म सही सालिम दिया, क्या यह सब अच्छा गुमान रखने के लिये काफ़ी नहीं है? थोड़ी बहुत सख़्ती आ गई तो क्या हम अल्लाह की इन बड़ी बड़ी और ला–तअ़दाद नेमतों को फ़रामोश कर दें? नहीं उससे दुआ करो और अच्छा गुमान रखो। इन्शाअल्लाह आसानी का वक़्त आयेगा, ज़रूर आयेगा, बस अल्लाह तआला से तअ़ल्लुक़ दुरुस्त कर लो।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि जो एक लुक़्मा भी हराम का खाता है इसकी चालीस दिन की नमाज़ क़ुबूल नहीं होती

(٢٧٩) عن ابن مسعود رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم من اکل لقمۃ من حرام لم تقبل منہ صلاۃ اربعین لیلۃ.

(مسند الفردوس، احیاء العلوم جلد سوم)

हज़रत इब्ने मसऊ़द रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया, जिस शख़्स ने एक लुक़्मा भी हराम का खाया उसकी चालीस दिन की इबादत क़ुबूल नहीं की जाती।

आज हराम की हवा कुछ ज़्यादा ही हो रही है और जैसे जैसे हरामख़ोरी ज़्यादा हो रही है उतने ही मोअ़तरिज़ों का भी

इज़ाफ़ा हो रहा है कि यह हदीस कहां पर है इस तरह की हदीस को तो हमने नहीं देखा मगर तबलीग़ वालों से बयान में सुना, हां पूरी शरीअ़त इनसे ही सीखोगे ख़ुद को हदीसों के पढ़ने का तो शौक़ है ही नहीं बस ज़बानी फ़ाइरिंग करते हो कि हम आ़शिक़े रसूल स० हैं या अहले हदीस हैं लेकिन तबलीग़ वाले हज़रात उम्मत की इस्लाह वाली अहादीस किताबों से निकाल निकाल कर पेश करते हैं और अकसर अहादीस ऐसी होती हैं जिनसे उम्मत में अ़मल का शौक़ पैदा होता है ख़ैर सवाल दलील का था अल्हम्दुलिल्लाह यह हदीस भी हासिल हो गई जिसको मैंने पेश कर दिया और तबलीग़ वाले भी वही अलफ़ाज़ और वही मतलब बयान करते हैं और इस हदीस के भी वही अलफ़ाज़ हैं और वही मतलब है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि हराम खाना खाने से दुआ़ कुबूल नहीं होती

(۲۸۰) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اطيب طعمتك تستجب دعوتك . (طبرانی اوسط، احیاء العلوم جلد سوم)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया, हलाल खाना खाया करो तुम्हारी दुआ़ कुबूल की जायेगी।

इस हदीस में हुज़ूर स० ने एक सवाल का जवाब दिया है वह सवाल यह है कि हज़रत सअ़द रज़ि० ने सरकारे दो आ़लम स० की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया या रसूल स० मेरे लिये दुआ़ फ़रमा दीजिए ताकि मैं मुस्तजाबुद्दावात बन जाऊं (यानी जिसकी दुआ़ अल्लाह फ़ौरन कुबूल करता है रद् नहीं करता है) और अल्लाह तआ़ला मेरी कोई दुआ़ रद् न फ़रमायें, इनके जवाब में हुज़ूर स० ने यह इरशाद फ़रमाया कि हलाल खाया करो इससे दुआ़ कुबूल

होगी मतलब साफ़ है अगर हराम खाओगे तो दुआ रद् की जायेगी कुबूल न होगी, यही हदीस दलील है। तबलीग़ वालो की। और दूसरी अहादीस भी इस तरह की मिलती हैं।

हलाल खाने वाले हज़रात के लिये फ़ज़ीलत

(۲۸۱) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من اكل الحلال اربعين يومًا نَوَّرَ اللهُ قَلْبَهٗ واجرى ينابيع الحكمة من قلبه على لسانه . (احیاء العلوم دوم)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया, जो शख़्स चालीस दिन तक हलाल खाना खाये अल्लाह उसके दिल को नूर से भर देते हैं और उसके दिल की ज़बान पर हिकमत के चश्मे जारी फ़रमा देते हैं।

यह फ़ज़ीलत है हलाल रोज़ी खाने वालों की, कि चालीस दिन में इतना बड़ा दर्जा हासिल होता है कि उसके दिल में अल्लाह अपना नूर पैदा करता है जिसकी वजह से दीन की बातों को समझना सहल हो जाता है और जिसके दिल पर ज़ुल्मत यानी अन्धेरा हो तो वह क्या दीन की बातों को समझेगा। अगर समझेगा भी तो ग़लत, खुद भी गुमराह होगा और दूसरों को भी गुमराही के प्लेटफ़ार्म पर लाकर खड़ा करेगा और एक बात यह भी वाज़ेह रहे कि अगर आपने हलाल खाना साल भर खाया मगर चन्द हराम के लुक़्मे पेट मे चले गये। तो नूर, ज़ुल्मत से बदल जायेगा। या उसको निकाल ले या तौबा कर ले, तब तो वह ज़ुल्मत दूर हो जायेगी इन्शाल्लाह। अगर बात समझ में न आई हो तो मिसाल से समझो कि नूर एक साल से हासिल हो रहा था और एक लुक़्मा इस पर किस तरह ग़ालिब आया? देखो आपके पास एक बोतल है इत्र की और अगर इस ख़ालिस इत्र में आप सिर्फ़ एक दो क़तरे पेशाब के डालें या ख़ालिस शराब के दो तीन ही क़तरे डालें

तो क्या वह इत्र, इत्र रह गया? क्या उसको इस्तेमाल करना जाइज होगा? क्या आप उसको गवारा करोगे? हरगिज़ कुबूल न करोगे। यही मिसाल हलाल में हराम को दाखिल करने की है। हलाल एक इत्र है और हराम एक पेशाब या शराब है।

ग़ीबत हराम है

(۲۸۲) عن ابی هريرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم قال اتدرون ماالغيبةُ قالوا الله ورسولُهٗ اعلم قال ذكرُك اخاك بما يكرهُ قيل افرأيت ان كان فی اخی ما اقول قال ان كان فيه ما تقول فقد اغتبتهٗ وان لم يكن فيه ما تقول فقد بهته رواه مسلم فی روايةٍ اذا قلت لاخيك ما فيه فقد اغتبتهٗ واذا قلت ماليس فيه فقد بهتّهٗ (مسلم، مشكوة شريف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि ग़ीबत किसको कहते हैं? सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं।

हुज़ूर स० ने फ़रमाया ग़ीबत यह है कि तुम अपने मुसलमान भाई का ज़िक्र इस तरह करो कि जिसको वह (अगर सुने तो) न पसन्द करे बअ़ज़ सहाबा रज़ि० ने (यह सुनकर) अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह! यह बताइये कि अगर मेरे इस भाई में (जिसका मैंने बुराई के साथ ज़िक्र किया) वह ऐब मौजूद हो जो मैंने बयान किया है, तो क्या जब भी ग़ीबत होगी यानी मैंने एक शख़्स के बारे में उसकी पीठ पीछे यह ज़िक्र किया कि उसमें फ़लां बुराई है जबकि उसमें वाक़िअ़तन वह बुराई है और मैंने जो कुछ कहा है वह बिल्कुल सच है और ज़ाहिर है कि अगर वह शख़्स अपने बारे में मेरे इस तरह ज़िक्र करने को सुने तो यक़ीनन ना–ख़ुश होगा तो क्या मेरा उसकी तरफ़ किसी ऐसी बुराई को मनसूब करना जो दर हक़ीक़त उसमें है तो क्या वह गीबत कहलायेगी? आप स० ने

फ़रमाया तुमने उसकी जिस बुराई का ज़िक्र किया है अगर वह वाक़ई उसमें मौजूद है तो तुमने उसकी ग़ीबत की है और अगर उसमें वह बुराई मौजूद नहीं है जिसका तुमने ज़िक्र किया है तो तुमने उस पर बोहतान लगाया (यानी यही तो ग़ीबत है कि तुम किसी का कोई ऐब उसकी पीठ पीछे बिल्कुल सच्चे बयान करो और अगर तुम उसकी ग़ीबत के बयान करने में सच न हो तो तुमने उसकी तरफ़ जिस बात की निस्बत की है वह उसमें मौजूद नहीं है तो यह इफ़तरा व बोहतान है जो बज़ाते ख़ुद एक बहुत बड़ा गुनाह है) (और मुस्लिम ही की एक दूसरी रिवायत में यह अलफ़ाज़ हैं कि) आप स० ने फ़रमाया अगर तुमने अपने किसी (मुसलमान) भाई की वह बुराई बयान की जो वाक़ई उसमें मौजूद है तो तुमने उसकी ग़ीबत की और अगर तुमने उसकी तरफ़ ऐसी बुराई की निस्बत की जो उसमें मौजूद नहीं है तो तुमने उस पर बोहतान लगाया।

तबलीग़ वाले हज़रात भी यही कहते हैं कि ग़ीबत हराम है और यह बात तो तमाम हज़रात को पता ही है कि ग़ीबत हराम है। ग़ीबत को मुख़्तसर अलफ़ाज़ में यूं समझो, ग़ीबत कहते हैं अपने किसी भाई की ऐसी बात को उसके पीठ पीछे बयान करना जिसको अगर वह सुने तो नाराज़ हो जाये। और बोहतान कहते हैं किसी भाई की तरफ़ ऐसी बात को मनसूब करना जो उसमें न हो जैसे वह चोर नहीं है मगर आप उसको चोर कहते हैं यह बोहतान कहलाता है और ग़ीबत किसी किसी जगह जाइज़ भी हो जाती है जैसे निकाह के वक़्त अगर आपसे कोई लड़के या लड़की के हालात पूछे तो आपको उस वक़्त हक़ वाज़ेह करना पड़ेगा क्योंकि वह ग़ीबत जिसको आपने छुपाया हो वह आगे चलकर निकाह ख़त्म करने का यानी तलाक़ का ज़रिया बन

सकती है जिसकी वजह से दो ख़ानदानों में लड़ाई हो जायगी इसके पेशे नज़र आपको हक़ वाज़ेह करना होगा और इस बात को भी वाज़ेह करना ज़रूरी होगा जिससे इस्लाम को या मसाजिद को या मदारिस को ग़र्ज़ कि किसी भी इस्लामी चीज़ को या किसी फ़र्द को नुकसान का ख़तरा हो उस वक़्त ऐब को ज़ाहिर करना सवाब है और ऐब को छुपाकर रखना ना–जाइज़ है और मज़ीद बातें उलमा से मालूम कर लीजिये और ग़ीबत की मज़म्मत के लिये यह आयत ही काफ़ी है।

قال الله تعالى عزوجل يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَاتَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَعْضُكُمْ بَعْضًا اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ○ (پ٢٦)

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ऐ ईमान वालो! बचते रहो बहुत तोहमतें करने से, बअ़ज़ी तोहमत गुनाह है और भेद न टटोलो किसी का और बुरा न कहो पीछे एक दूसरे को, भला ख़ुश लगता है तुममें किसी को कि खाये गोश्त अपने भाई का जो मुर्दा हो तो घिन आये तुमको उससे और डरते रहो अल्लाह से, बेशक अल्लाह तआ़ला माफ़ करने वाला है। मेहरबान है।

मैंने ग़ीबत को हराम इस आयत के पेशे नज़र कहा कि अल्लाह तआ़ला ने ग़ीबत करने वालों के लिये बड़ी भारी बात कही कि अपने भाई का गोश्त खाने से तअ़बीर किया जो ख़ुद हराम है और आगे चलकर मुरदार गोश्त का लफ़्ज़ बढ़ा दिया है दोनों हराम हैं जिस तरह गोश्त खाना हराम है, ग़ीबत भी हराम है और जिसके करने पर इतनी सख़्त वईद हो वह फ़ेअ़ल हराम होता ही है।

चुग़ली करने वाले पर वईद

(۲۸۳) عن حذیفة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم یقول لایدخُلُ الجَنّةَ قَتّاتٌ. (متفق علیه)

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर अकरम स० को यह फ़रमाते हुए सुना कि चुग़लख़ोर जन्नत में दाख़िल न होगा।

चुग़लख़ोर कहते हैं जो इधर की बात उधर और उधर की बात इधर करके लोगों के दर्मियान फ़ित्ने के बीज बोता है यह ख़सलत बहुत ही रज़ील है इससे इज्तिनाब की बहुत ज़रूरत है क्योंकि इससे भाई भाई में, दोस्त दोस्त में, मुसलमान मुसलमान में फ़ित्ना व फ़साद पैदा होता है जो नाजाइज़ है और अगर उस शख़्स का यह फ़ेअ़ल मन्ज़रे आ़म पर आ गया तो फिर अच्छी तरह पिटाई भी होती है और ज़िल्लत भी और आख़िरत में गिरिफ़्त भी, अल्लाह हिफ़ाज़त फ़रमाएं। (आमीन)

तबलीग़ वाले ऐब छुपाने वाले की फ़ज़ीलत बयान करते हैं

(۲۸۴) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم من ستر مسلما ستر الله فی الدنیا والآخرة.

(مسلم، ترمذی، مشکوٰۃ، ابن ماجہ)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया, जो शख़्स किसी मुसलमान की पर्दा पोशी करे (यानी किसी मुसलमान के ऐब को छुपाये जिसको वह जानता हो) (ऐसे शख़्स के लिये यह बशारत है कि) अल्लाह तआ़ला भी उसकी (ऐब व गुनाहों से) पर्दा पोशी फ़रमायेंगे दुनिया में भी और आख़िरत में भी।

जब किसी मुसलमान की कोई बात या फ़ेअ़ल ऐब वाला मालूम हो और आप उसको बाहर मन्ज़रे आम पर लाकर लोगों को दिखायेंगे तो उससे उसको तकलीफ़ पहुंचेगी जो कि हराम है और यह भी याद रहे कि आप अपने भाई के ऐब को खोल रहे हो इससे भी ज़्यादा ऐब आपके अल्लाह तआ़ला जानता है और वह भी फिर आपके ऐब खोलने वाले पैदा कर देगा और आख़िरत में उस शख़्स के जो ऐबों को ज़ाहिर करने का काम किया करता था हश्र में सबके सामने उसके ऐबों को खोला जायेगा और ऐलान किया जायेगा कि उसने फ़लां गुनाह किया, फ़लां काम किया यह तमाम नौबत क्यों आई? सिर्फ़ ख़ुद की काश्त की वजह से इसलिये वक़्त है संभल जाओ, संभल जाओ और गुनाहों से तौबा कर लो कि अब से यह ख़ता न करेंगे अल्लाह तआ़ला माफ़ करने वाला है।

जो शख़्स झूठे लतीफ़े बयान करे उसकी मज़म्मत

(٢٨٥) عن بَهْزِ بن حكيم عن ابيه عن جده قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ويل لمن يُحَدِّثُ فيكذبُ لِيَضْحِكَ به قوم ويلٌ لَهُ. (ترمذی، مشکوٰۃ)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अफ़सोस, उस शख़्स पर जो बात करे तो झूठ बोले ताकि उसके ज़रिये लोगों को हंसाये अफ़सोस, उस शख़्स पर, अफ़सोस उस शख़्स पर।

"वैल" के मअ़ना अ़ज़ीम हलाकत के हैं और वैल दोज़ख़ में एक वादी का नाम है उसकी आग की गर्मी इतनी सख़्त है कि अगर पहाड़ उस दोज़ख़ की वैल वादी में डाला जाये तो वह पहाड़ गल जायेगा और वैल का लफ़्ज़ अहले अ़रब के कलाम में उस शख़्स के लिये इस्तेमाल होता है जो किसी बुराई और ना

पसन्दीदा अम्र का इरतिकाब करता है और उसके तईं अफसोस का इज़हार और उसको मुतनब्बेह करना मक़सूद होता है। ख़ैर असल बात यह है कि आज बहुत से भाई मजलिस को हंसाने के लिये झूठी बातें बयान करते हैं और उनको झूठी बातों का कोई अफ़सोस नहीं होता है और हो भी क्यों? जबकि आज मुसलमानों को कुरआन और हदीस से इस हद तक दूरी है कि कुछ पता ही नहीं कि क्या हक़ है और क्या बातिल है।

आज लोग तबलीग़ वालों के ख़िलाफ़ पता नहीं कैसी कैसी बे असल बातें कहते हैं हालांकि तबलीग़ वालों का कुछ नहीं बिगड़ता उनके सामने लाख बातें कहो उन पर अल्लाह ने हक़ वाज़ेह कर दिया है वह हक़ पर हैं और अल्लाह उनको हक़ पर ही रखे।

ऐतिदाल में रखे, ग़ुलू से बचाये जो हज़रात तबलीग़ वालों पर झूठी हदीस बयान करने की तोहमत लगाते हैं वह खुद देखें कि क्या तबलीग़ वाले हज़रात झूठी हदीस बयान करते हैं या खुद मोअतरिज़ हज़रात ही झूठी हदीस बयान करते हैं हम तो यह नहीं कहते कि आप कौन सी हदीस बयान करते हैं। वह तो खुद आप ही देखें लेकिन तबलीग़ी हज़रात बिल्कुल सही निस्बत करते हैं आप स० की तरफ़।

तबलीग़ वाले हुज़ूर स० का बुढ़िया से मज़ाक़ वाला वाक़िआ बयान करते हैं

(٢٨٦) عن انس رضی اللہ عنہ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال لامرأة عجوزٍ انّهٗ لاتدخل الجَنّةَ عجوز فقالت مالَهُنّ وكانت تقرأ القرآن فقال لها اما تقرئين القرآن اِنّا اَنْشَأنَاهُنَّ اِنْشَاءً فَجَعَلْنَا هُنَّ اَبْكَارًا۔

(مشکوٰۃ، بخاری، ترمذی شریف)

हज़रत अनस रज़ि० नबी करीम स० से नक़ल करते हैं कि

(एक दिन) एक बूढ़ी औरत ने आप स० से यह दरख़्वास्त की कि मेरे लिये जन्नत में जाने की दुआ फ़रमा दीजिए तो उससे आप स० ने फ़रमाया कि बुढ़िया जन्नत में दाख़िल नहीं होगी वह औरत कुरआन पढ़ी हुई थी आप स० ने उससे फ़रमाया तुमने पढ़ा नहीं है कि اِنَّا اَنْشَاْنَاهُنَّ اِنْشَاءً فَجَعَلْنَاهُنَّ اَبْكَارًا यानी हम जन्नत में औरतों को पैदा करेंगे जैसा कि पैदा किया जाता है पस हम उनको कुंवारी बना देंगे। (इस ऐतिबार से यह ख़ुश तबअ़ी बर हक़ीक़त थी और आपका यह फ़रमाना दुरुस्त हुआ कि यह बूढ़ी औरत जन्नत में नहीं जायेगी क्योंकि वाकिअ़तन कोई औरत अपने बुढ़ापे के साथ जन्नत में हरगिज़ नहीं जायेगी)

और मसाबीह की रिवायत इस तरह है :

आप हज़रत स० ने उस औरत से फ़रमाया कि बूढ़ी औरतें जन्नत में दाख़िल नहीं होंगी (यह सुनकर) वह औरत वापस हुई और रोती हुई चली गई आप स० ने फ़रमाया कि इस औरत को जाकर बता दो कि औरतें अपने बुढ़ापे के साथ जन्नत में दाख़िल नहीं होंगी क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया :

اِنَّا اَنْشَاْنَاهُنَّ اِنْشَاءً فَجَعَلْنَاهُنَّ اَبْكَارًا

कि हम जन्नत की औरतों को पैदा करेंगे पस हम उनको कुंवारी बना देंगे। यह दूसरा वाकिआ मसाबीह में है। बहरहाल तबलीग़ वाले हज़रात वाकिआ बयान करते हैं और यह वाकिआ हदीस में मौजूद है मनघड़त नहीं। इस हदीस से यह मालूम हुआ कि मज़ाक़ अगर हक़ और सच हो तो जाइज़ है झूठा और बातिल मज़ाक़ नाजाइज़ है। हुज़ूर अकरम स० से बहुत से वक़्त मज़ाक़ करना मज़कूर है अहादीस में, मगर आप स० के तमाम मज़ाक़ सच्चे हैं और सच बात हो और मज़ाक़ भी हो जाये यह अमल शरीअ़त में जाइज़ है और एक वाकिआ हदीस में आता है :

عن انس رضی اللہ عنہ اَنَّ النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال لہٗ یاذا الأذنین. (ترمذی،مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि (एक रोज़) हुज़ूर अकरम स० ने उनसे फ़रमाया, ऐ दो कान वाले!

देखो, कितना उम्दा मज़ाक़ है, बात बिल्कुल वाक़िअ़े के मुवाफ़िक भी है और मुख़ातब को बुरा भी नहीं मालूम हो रहा है यह तर्ज़ मज़ाक़ का हमारी तरह नहीं, हमारे मज़ाक़ से तो झगड़ा हो जाता है।

झूठ की नहूसत

(۲۸۷) عن ابن عمر رضی اللہ عنہما قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اذا کذب العبد تباعد عنهُ الملك میلاً من نتن ماجاء به. (ترمذی،مشکوٰۃ)

हज़रत इब्ने उ़मर रज़ि० बयान करते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जब कोई बन्दा झूठ बोलता है तो उसकी पैदा की हुई चीज़ यानी झूठ की बदबू की वजह से हिफ़ाज़त करने वाले फ़रिश्ते उससे कोसों दूर चले जाते हैं।

हदीस से यह बात मालूम हुई कि झूठ कहने से बदबू पैदा होती है बातिनी तौर पर और उसकी बदबू की वजह से फ़रिश्ते उसके क़रीब भी नहीं आते। ज़ाहिर बात है कि भाई अगर आपको मालूम हो जाये कि यह झूठ बोलता है तो आप भी तबअ़ी तौर पर उसके पास जाने को पसन्द न करोगे क्योंकि यह झूठ और बे हक़ीक़त बात करता है। बताओ जब हम झूठी और बे हक़ीक़त बात से नफ़रत करते हैं तो वह फ़रिश्ते जो सरापा मअ़सूम हैं और पाक हैं उन तमाम ख़राबियों से, क्या उनको इस झूठ कलाम से नफ़रत न होगी? ज़रूर होगी। और फिर झूठ के भी बहुत से दर्जात हैं। बअ़ज़ मरतबा झूठ हंसी मज़ाक़ में होता है। झूठ

झगड़ा फैलाने की वजह से होता है और एक झूठ होता है जो सब से बड़ा झूठ है, वह है ग़ैर दीन की बात को दीन कह कर बयान करना। उस शख़्स के लिये हदीस में बहुत सख़्त वईद वारिद हुई है।

तबलीग़ वाले हज़रात हज़रत अबूबक्र रज़ि० का यह वाक़िआ बयान करते हैं

(۲۸۸) عن اسلم قال انّ عمر دخل يومًا على ابى بكر الصديق وهو يَجْبِذُ فقال عمر مَهْ غفر الله لكَ فقال لهُ ابو بكر انّ هذا اَوْرَدَ فى الموارد.
(مشکوۃ، بخاری شریف)

हज़रत असलम कहते हैं कि एक दिन हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० अमीरुलमोमिनीन हज़रत अबूबक्र सद्दीक़ रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो (देखा कि) हज़रत अबूबक्र रज़ि० अपनी ज़बान को खींच रहे हैं (यानी अपनी ज़बान से इस क़द्र ग़ज़ब का इज़हार कर रहे थे कि उसको उंगलियों से पकड़ पकड़ कर खींच रहे थे और ऐसा मेहसूस हो रहा था जैसे उसको निकाल कर बाहर फेंक देंगे) हज़रत उमर रज़ि० ने (यह देखकर) कहा कि ठहरो, ऐसा न कीजिए अल्लाह तआला आपकी मग़फिरत फ़रमाये। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया कि (यह ज़बान इसी सज़ा की हक़दार है) क्योंकि इसने मुझे हलाकत की जगहों में डाला।

यह वाक़िआ तबलीग़ वाले हज़रात बयान करते हैं उनकी दलील के लिये लिख दिया गया है। अगर किसी को शक हो तो बुख़ारी व मिश्कात में देखें ले और ज़बान हक़ीक़त में बहुत ऐहतियात से चलाने की चीज़ है इससे दिल जुड़ते भी हैं और टूटते भी हैं। इसलिये हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया कि मुझको ज़बान की और अपनी शर्मगाह की ज़मानत दो कि उनको ग़लत

इस्तेमाल न करोगे तो मैं तुमको जन्नत की ज़मानत देता हूं। हां ज़बान बहुत बा इज़्ज़त चीज़ भी है और बहुत ज़लील चीज़ भी है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि ज़बान गिराती भी है और उठाती भी है

(٢٨٩) عن ابی ھریرۃ رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اِنَّ العبد لیتکلّم بالکلمۃ من رضوان اللہ لایُلقِی لھا بالاً یرفع اللہ بھا درجاتٍ واِنَّ العبدَ لیتکلّم بالکلمۃ من سخطِ اللہ لا یُلقِی لھا بالاً یھوی بھا فی جھنّم. (بخاری شریف، مشکوٰۃ)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया, हक़ीक़त यह है कि जब बन्दा अपनी ज़बान से कोई ऐसी बात निकालता है जिसमें हक़ तआ़ला की ख़ुशनूदी होती है तो अगरचे वह बन्दा इस बात की अहमियत को नहीं जानता लेकिन अल्लाह तआ़ला उसके सबब से उसके दर्जात बुलन्द कर देता है (यानी वह बात अल्लाह के नज़दीक क़ीमती होती है) इसी तरह जब बन्दा कोई ऐसी बात ज़बान से निकालता है जो हक़ तआ़ला की नाराज़गी का ज़रिया बन जाती है तो अगरचे वह बन्दा इस बात की अहमियत को नहीं जानता (यानी वह इस बात को बहुत मअ़मूली समझता है और उसको ज़बान से निकालने में कोई मुज़ाइक़ा नहीं समझता) लेकिन (हक़ीक़त में वह बात नतीजे के ऐतिबार से इतनी ख़तरनाक होती है कि) वह बन्दा उसके सबब से दोज़ख़ की घाटियों में जा गिरता है।

तबलीग़ वालों के बयान में यह हदीस मिलती है जिसको वह ज़बान की तारीफ़ व मज़म्मत में बयान करते हैं उस हदीस को मिश्कात में नक़ल किया है और हक़ीक़त में ज़बान बहुत मुअस्सिर चीज़ है। एक लफ़्ज़ ज़बान से निकल जाता है उसके ज़रिये

इत्तिफ़ाक़ पैदा हो जाता है मुहब्बत और रिश्ते क़ायम होते है इस ज़बान के ज़रिये निकाह मुनअ़किद हो जाता है इसके ज़रिये तलाक़ दी जाती है इसके ज़रिये ही से फ़सादात वाक़ेअ़ होते है यही ग़ीबत करती है, यही चुग़ल ख़ोरी करती है, यही तारीफ़े खुदा भी करती है, यही कुफ़रिया कलिमात कहती है, यही अल्लाह को खुश करती है और यही नाराज़ करती है। इसलिये हुज़ूर अकरम स० ने ख़ामोश रहने वालों की फ़ज़ीलत बयान की।

(۲۹۰) عن عبد اللّٰہ بن عمر رضی اللّٰہ عنہما قال قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم من صمت نجا۔ (ترمذی، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि० बयान करते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जो शख़्स ख़ामोश रहा तो वह निजात पा गया

हुज़ूर अकरम स० ने ख़ामोश रहने को निजात बताया इसलिये कि जब बन्दा फ़ुज़ूल बातों से बचेगा तो ग़लत बात जिस से खुदा नाराज़ होता है वह भी नहीं निकलेगी। हां, दीनी बात करने में कोई खराबी नहीं है, दीन का जब मसला हो तो खूब वाज़ेह कलाम करना चाहिये, वहां खामोश रहना कामयाबी या होशियारी नहीं होगी बल्कि हिमाक़त होगी जबकि लोग आपसे पूछ रहे हों और आपको पता भी हो मगर आप यूं ही ख़ामोश रहे हों यह दुरुस्त नहीं।

ख़ामोशी साठ साल की इबादत से बेहतर है

(۲۹۱) عن عمران بن حصین اَنَّ رسُول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم قال مقام الرَّجُل بالصَّمتِ افضل من عبادۃ ستین سنۃً۔ (مشکوٰۃ شریف)

हज़रत इमरान बिन हसीन रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया चुप रहने की वजह से आदमी को जो दर्जा

हासिल होता है वह साठ साल की इबादत से अफज़ल है।

मतलब यह है कि आदमी का बुरी और ख़राब बातों से ख़ामोश रहने में मदावमत इख़्तियार करना और हर वक़्त ग़लत बातों से इज्तिनाब करना साठ साल की इबादत से बेहतर है। मतलब, पहले हदीस के ज़रिये से भी वाज़ेह हो जाता है कि इस ज़बान से अगर बन्दे ने कोई ऐसी बात कह दी जिसकी वजह से अल्लाह तआला नाराज़ हो गया हो तो वह बात उसको दोज़ख़ मे डाल देती है और बन्दा ज़बान पर क़ाबू रखेगा तो उसको अज़ाब का मुंह देखना न पड़ेगा और इबादत के ज़रिये भी बन्दा अज़ाब से महफ़ूज़ रहता है इसलिये हुज़ूर अकरम स० ने ख़ामोशी को इबादत से बेहतर क़रार दिया और "साठ साल" का लफ़्ज़ कसरत को बता रहा है यानी ख़ामोशी की बहुत ही ज़्यादा फ़ज़ीलत है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि किसी को तकलीफ़ में देखकर ख़ुश न होना चाहिये

(٢٩٢) عن واثلة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا تظهر الشماتة لاخيك فيرحمه الله ويبتليك. (مشكوٰة)

हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अपने मुसलमान भाई की तकलीफ़ पर ख़ुशी मत ज़ाहिर करो, हो सकता है कि अल्लाह तआला उस पर रहमत नाज़िल कर दे (यानी उसको मुसीबत व आफ़त से निजात दे दे) और तुम्हें उस आफ़त व मुसीबत में मुब्तला कर दे।

तबलीग़ वालों की दलील यह हदीस है और यह बात हदीस में पहले भी ज़िक्र हो चुकी है कि मुसलमान की ख़ासियत यह है कि उसके किसी भी अमल या क़ौल से किसी मुसलमान भाई को तकलीफ़ न हो अगर तकलीफ़ दे रहा है तो इस में मुसलमान की

कामिल सिफ़ात मौजूद नहीं हैं बल्कि वह नाकिस है और दूसरों की आफ़तों पर मज़ाक़ उड़ाने वालों के लिये इस हदीस में तम्बीह आई है कि किसी की आफ़त व परेशानी पर मज़ाक़ न उड़ाओ वरना अल्लाह तआला उसको तो आज़ाद कर देगा और तुमको उस आफ़त में गिरिफ़्तार कर देगा इसलिये मुसलमान की मज़ाक़ और आफ़त पर ख़ुशी से इज्तिनाब ज़रूरी है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि काफिर को और मुनाफ़िक़ को सरदार मत कहो

(۲۹۳) عن حذيفة رضى الله عنه عن النبى صلى الله عليه وسلم قال لاتقولوا للمنافق سيدٌ فَإِنَّهُ إِنْ يَكُ سيدا فقد اَسْخطتم رَبَّكُمْ. (مشكوٰة)

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया किसी मुनाफ़िक़ को सय्यद न कहो अगर वह सय्यद हो तो तुमने परवरदिगार को नाराज़ कर दिया।

सय्यद का मतलब सरदार, हाकिम और अमीर के हैं और काफिर या मुनाफ़िक़ कैसे सय्यद बन सकता है जबकि काफिर और मुनाफ़िक़ सिर्फ़ मुसलमान के अल्लाह अल्लाह कहने की वजह से बाक़ी हैं वरना यह काफिर कहां बचेंगे जब सय्यद हज़रात यानी मुसलमान दुनिया से ख़त्म हो जायेंगे तो यह दुनिया भी सय्यद के साथ ख़त्म हो जायेगी। और सय्यद अल्लाह की इबादत करने वाला होता है हक़ीक़त में। और मुसलमान को सय्यद का लफ़्ज़ अल्लाह की इबादत की वजह से हासिल हुआ और काफिर अल्लाह की इबादत करता ही नहीं उसको किस तरह यह दौलत बग़ैर इताअ़ते ख़ुदा के तुम दे रहे हो।

गाली गलोच जाइज़ नहीं है

(۲۹۴) عن انس وابى هريرة رضى الله عنهما اَنَّ رسول الله صلى

الله عليه وسلم قال المستبان ماقالا فعلى البادى مالم يعتد المظلوم.
(مسلم، مشكوٰة شریف)

हज़रत अनस और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० बयान करते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अगर दो शख़्स आपस में गाली गलोच करें तो उनकी सारी गालम गलोच का गुनाह उस शख़्स पर होगा जिसने पहल की है जब तक कि मज़लूम तजावुज़ न करे।

मतलब यह है कि गाली, गुनाह तो है ही, मगर जब दो शख़्सों की गालम गलोच शुरू हो दोनों एक दूसरे को गाली दे रहे हों तो असल गुनाहगार पहल करने वाला होगा और उसको ज़ालिम से तअबीर किया और दूसरे को मज़लूम से अगर यह दूसरा पहल करने वाले से सख़्त और ज़्यादा गाली देगा तो फिर यह फ़ेअ़ल और यह ज़्यादती गुनाह होगी अगर यह सिर्फ़ इतना जवाब दे जितना उसने कहा है उस वक़्त पहल करने वाले को गुनाह होगा कि उसने ही शुरू किया फ़ितने का बाब, मगर तौबा दोनों को करनी चाहिये।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि जन्नत की ज़बान अ़रबी होगी

(۲۹۵) عن ابن عباس رضى الله عنهما قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم كلام اهل الجنة عربى (حاكم، احياء العلوم دوم حاشیہ نمبر۲ ص۸۷۹)

हज़रत इब्ने अ़बास रज़ि० बयान करते हैं हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया कि "अहले जन्नत की ज़बान अ़रबी है"

तबलीग़ वालों का यह कहना भी दुरुस्त है मगर बहुत से लोग ऐतिराज़ यूं करते हैं कि हम तो हिन्दी ही जानते हैं और हमको अ़रबी नहीं आती मगर तबलीग़ वाले हज़रात यह कहते हैं

कि सबकी ज़बान अ़रबी होगी उन लोगों को शायद हदीस नहीं पहुंची वरना तो यह बात यानी जन्नत की ज़बान अ़रबी है अकसर हज़रात को पता ही है और बहुत सी अहादीस इसकी दलील हैं कि जन्नत की ज़बान अ़रबी है मगर अब यह सवाल होता है कि बहुत से हज़रात अ़रबी जानते ही नहीं वह किस तरह अ़रबी ज़बान बोलने पर क़ादिर होंगे। हज़रात! जब अल्लाह तआ़ला तमाम मख़्लूक़ को मरने के बाद जिस्म के सड़ने के बाद और जिस्म के ख़ाक होने के बाद पैदा करने पर क़ादिर है तो क्या वह हिन्दी या अंग्रेज़ी ज़बान से अ़रबी नहीं बना सकता वह बनाने पर बेशक क़ादिर है और इस तरह ही होगा। अल्लाह तआ़ला सिर्फ़ हुक्म देगा और तमाम इन्सान और तमाम मख़्लूक़ की ज़बान अ़रबी हो जायेगी। अब रहा सवाल अ़रबी ज़बान ही क्यों होगी दूसरी ज़बान क्यों नहीं होगी, इसलिये कि अ़रबी ज़बान तमाम ज़बानों से वसीअ़ और फ़सीह है वह इस तरह कि, हमारी ज़बान और अंग्रेज़ी ज़बान में और दीगर ज़बानों में बल्कि अ़रबी के अ़लावा तमाम ज़बानों में एक चीज़ के लिये दो चार नाम होंगे या इससे ज़्यादा होंगे मगर बहुत कम चीज़ें हैं जिनके नाम चार हों या उससे ज़्यादा मगर अ़रबी में बहुत कम ऐसी चीज़ें मिलेंगी जिनके लिये चार या पांच नाम न हों वरना तो बहुत सी जगह एक ही चीज़ के एक सौ नाम भी हैं जिसे साहिबे हयातुल हैवान ने फ़रमाया कि शेर के लिये सौ नाम हैं और बहुत सी चीज़ें हैं जिनके हज़ार हज़ार नाम भी हैं। देखो! क्या यह फ़सीह और बुलन्द नहीं हुई। और दूसरी बात यह है कि ख़ुद हुज़ूर अकरम स० अ़रबी हैं और क़ुरआन अ़रबी है। अब बताओ और किसी ज़बान को इतनी बड़ी फ़ज़ीलत हासिल है?

गानों और फ़िल्मों की हुरमत

(२٩٦) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم استماع الملاهى معصيةٌ والجلوس عليها فسق والتلذُّذُ بها من الكفر. (ترمذی، مظاہر حق ششم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया बाजों का सुनना गुनाह है इस पर बैठना फ़िस्क़ है (मुराद, उसकी मजलिस में) और उससे लज़्ज़त व लुत्फ़ हासिल करना कुफ़रियात में से है।

(٢٩٧) عن جابر رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم الغناءُ يُنبتُ النفاق فى القلبِ كما يُنبتُ الماءُ الزرعَ. (بیہقی، مشکوٰۃ)

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया, राग गाना (म्यूज़िक, शादी वाले बाजे और तमाम गानों की क़िस्में मुराद हैं) दिल में निफ़ाक़ को इस तरह उगाता है जिस तरह पानी खेती को उगाता है।

दोस्तो! पहले यह बात वाज़ेह रहे कि म्यूज़िक और बैन्ड बाजा और झंकार 'राग' क़व्वाली यह तमाम चीज़ें गाने की ही तरक़्क़ियात हैं और गाने की तरह यह भी हराम हैं और दूसरी बात यह वाज़ेह हो गई कि गाना निफ़ाक़ पैदा करता है इस निफ़ाक़ से आदमी मुनाफ़िक़ नहीं कहलाता है बल्कि उससे मुनाफ़िक़ों वाली ख़स्लत पैदा हो जाती है अब सवाल यह होता है कि किस तरह निफ़ाक़ पैदा होगा और मुनाफ़िक़ से मुनासबत किस तरह है लिहाज़ा पहले मुनाफ़िक़ के मअ़ना देख लो। मुनाफ़िक़ कहते हैं जो दिल में कुछ रखे और ज़बान से कुछ और बयान करे और दीन का मुनाफ़िक़ वह कहलाता है जो दिल में कुफ़्र रखे और ज़बान से इस्लाम ज़ाहिर करे। अब सुनो मुनाफ़िक़ की तरह निफ़ाक़, गानों से किस तरह पैदा होता है। मुनाफ़िक़ इस्लाम को ज़बान से हक़ और सच्चा कहता है। और दिल में यह

गवाही देता है कि इस्लाम सच्चा नहीं सही नहीं और इसी तरह गाना सुनने वालों की भी यही मिसाल बन जाती है कि ज़बान से तमाम के तमाम हज़रात उसको नाजाइज़ व हराम जानते हैं। मगर जब गाने सुनते हैं तो दिल गाने सुनने की इजाज़त देता है और ज़बान से पूछें तो वह दूसरा जुमला कहती है यानी इजाज़त नहीं देती यह निफ़ाक़ क़तई नहीं हुआ बल्कि निफ़ाक़ की तरह है इसलिये हुज़ूर अकरम स० ने निफ़ाक़ पैदा करना फ़रमाया कि निफ़ाक़ तो नहीं है मगर निफ़ाक़ की तरह अफ़आल सादिर कराता है और जब निफ़ाक़ की तरह हुआ और निफ़ाक़ को तक़वियत देने वाला कहा गया तो यह भी निफ़ाक़ की तरह हराम हो गया। पहली हदीस में गाना सुनने को गुनाह बताया और गाना सुनने बैठ जाने को जिस तरह फ़िल्म में बैठते हो और क़व्वालियों में बैठते हो यह फ़िस्क़ है और फ़ासिक़ कहते हैं उसको जो हक़ के रास्ते से हट गया हो जो बदकार हो गया हो और हक़ के रास्ते से हटना गुमराही है जो नाजाइज़ व हराम है इसी तरह फ़िल्म देखना, गानों की महफ़िलों में बैठना हराम है और उन गानों से लज़्ज़त हासिल करना हराम है। अब बताओ क्या फ़िल्म देखने वाला गाने नहीं सुनता है फ़िल्म देखने के लिये और गाना सुनने के लिये फ़िल्म हाल में नहीं बैठता है क्या इस फ़िल्म और गानों से लज़्ज़त हासिल नहीं करता है? ज़रूर, यह तीनों चीज़ें पैदा होती हैं।

गानों से ज़्यादा गुनाह फ़िल्म में है गानों को कानों से सुना जाता है और उसमें लज़्ज़त कम हासिल होती है फ़िल्म के मुक़ाबले में वहां गाने भी हो रहे हैं और साथ ही साथ गानों के मुवाफ़िक़ अपने नंगे जिस्मों के साथ हरकत भी औरतें कर रही हैं जिसको देखा भी जा रहा है लेकिन बहुत से कहते हैं कि यह

अक्स और फ़ोटो की तरह है। मैं कहता हूं कि कोई अपनी बीवी की क्या इस तरह फ़िल्म देखना पसन्द करेगा? अब क्या हुआ अब क्यों जाइज़ नहीं? अब आई अक़्ल ठिकाने पर, मैं आपको असल जड़ बताता हूं वह दो चीज़ें हैं असल एक तआरुफ़ है यह मालूम होना कि यह फ़लां उज़्व है और दूसरी चीज़ है इस चीज़ को सुन कर या देख कर शहवत का पैदा होना यह असल क़ाइदे हैं उनको आप कभी उसूले फ़िक़्ह में न देखना उनको तो मैंने हदीसों के पेशे नज़र बयान किया है। ख़ैर जब आपको यह बात मालूम हो गई कि उन चीज़ों की बिना पर फ़िल्म देखना हराम है क्योंकि यह दोनों चीज़ें भी ख़ुद हराम हैं।

जब आप फ़िल्म देखते हो तो क्या आप यह नहीं जानते कि यह उसकी टांग है यह उसकी रान है यह उसका चेहरा है यह उसकी नाक है वग़ैरा वग़ैरा तमाम हिस्सों को नहीं जानते हो और नहीं देखते हो? अगर अब भी कोई यह कहे कि भाई अगर हम टेप में स्टोरी सुनते हैं तो यह तो जाइज़ होगा? नहीं! इसमें भी आप औरत की आवाज़ सुनते हो और ग़ैर मेहरम की आवाज़ हराम है चाहे क़व्वाली में हो या नअ़त में या गानों में या हिस्ट्री में इसलिये गाने की और हिस्ट्री की कैसेट सुनना भी हराम है गाना तो सराहतन हदीस से मना है अब कोई यह समझे कि फ़िल्म को हम हराम कह रहे हैं। हम नहीं कह रहे हैं बल्कि यह भी कुरआन व हदीस से ही हराम है हमको और आपको शरीअ़त में तसर्रुफ़ का कोई हक़ नहीं लेकिन बहुत सी बातें आ़म आदमी भी समझ जाते हैं और बहुत सी बातें वह हैं जिनको सिर्फ़ आ़लिम ही जानता है। एक मिसालः आपको बुख़ार हुआ तो यह सब जानते हैं मगर जब आपको अन्दरूनी बुख़ार हो या मरीज़ के पेट में कोई ख़राबी हो तो वह सिर्फ़ उसका माहिर यानी डॉ० ही जानता है

इसी तरह बहुत सी बातें जो ग़ैर वाज़ेह होती हैं उनको वाज़ेह करना आलिमों का काम है और फ़िल्म की शक्ल तो हुज़ूर अकरम स० के ज़माने में नहीं थी यह तो इस ज़माने का तोहफ़ा है मगर जब हुज़ूर अकरम स० ने गाना सुनने से मना किया और नाजाइज़ फ़रमाया तो बताओ क्या फ़िल्म में उससे कम ख़राबियां हैं या ज़्यादा और जब फ़िल्म में ज़्यादा ख़राबियां हैं तो उसका हुक्म भी गानों से सख़्त होगा क्योंकि गानों में तो सिर्फ़ आवाज़ होती है उसको भी हुज़ूर अकरम स० ने हराम कह दिया तो बताओ फ़िल्म जिसमें गाने भी हैं और बेहया तस्वीरें भी हैं और ग़लत अफ़आल की रहनुमाई भी है जैसे (LOVE) करना यानी प्यार करना, इश्क़ बाज़ी करना, उसके तरीक़ों को भी अलग अलग अंदाज़ में और अलग अलग नामों से सिखाया जाता है क्या यह जाइज़ है? अगर जाइज़ है तो शायद उसको जाइज़ कहने वालों की बीवी से भी कोई इश्क़ करता होगा तो वह उसको जाइज़ समझकर ख़ुश होता होगा कि यह मेरी बीवी से फ़िल्म की तरह इश्क़ कर रहा है यह मैंने इसलिये लिखा क्योंकि बहुत से लोग फ़िल्म को जाइज़ कहते हैं जब उनके नज़दीक फ़िल्म जाइज़ है तो उसके अफ़आल जिसको देखने के लिये हज़रत वाला इजाज़त दे रहे हैं उन अफ़आल का करना भी जाइज़ होगा इसमें तो ज़िना करने के तरीक़े भी होते हैं क्या उनका भी लिहाज़ न किया? और बग़ैर सोचे जाइज़ कह दिया। मैं तो कहता हूं कि जब यह जाइज़ है तो अपने घर वालों की बेहया वीडियो फ़िल्म बनाकर लोगों को दिखाओ। हां अगर वह शैतान और फ़िरऔन की तरह बेशर्म होगा तो यह भी कर लेगा। ख़ैर जाइज़ कहने वाले जो चाहें कहें मगर दीन का ख़्याल करो, वरना अल्लाह तआला का अज़ाब कोई बईद नहीं है।

फ़िल्म हराम है गाना भी हराम है म्यूज़िक भी हराम है और जो शादियों में वीडियो कैसेट तैयार की जाती है यह भी हराम है क्योंकि उसको बाद में मेहरम और ग़ैर मेहरम सब देखते हैं और ग़ैर मेहरम को देखना जाइज़ नहीं है। बहुत से लोगों से सुना है कि औरतों को बग़ैर शहवत के देखने को जाइज़ कहते हैं और बहुत से लोगों से मैंने सुना है कि वह कहते हैं कि औरतों को देखने की मुमानिअ़त उस वक़्त है जब कि शहवत हो। बताओ लोग किस तरह मसाइल को बदल देते हैं फ़िक़्ह में औरतों के मसले में लिखा है कि अगर औरत किसी मर्द को बग़ैर शहवत के देखे तो औरत के लिये जाइज़ है और अगर औरत शहवत के साथ देखे तो उसका भी देखना हराम है न कि मर्द के लिये यह हुक्म है। अगर ऐसा कहोगे तो पूरी दुनिया एक दूसरे की औरतों को देखेगी। और फिर मुंह लेकर यह कहेंगे कि भाई मैं तो बग़ैर शहवत के देख रहा हूं और यह जाइज़ है यह लोगों की ग़लत फ़हमी है औरत को किसी भी हाल में देखना क़सदन जाइज़ नहीं हां अगर अचानक नज़र चली गयी तो माफ़ है उसको फ़ौरन हटा ले।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि ग़ुस्सा शैतानी अमल है ग़ुस्सा आने पर वुज़ू करो

(٣٩٨) عن عطيةٌ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان الغضب من الشيطان والشيطان خلق من النار وانما تطفأ النار بالماء فاذا غضب احدكم فليغتسل. (احياء العلوم، مشكوٰة)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया ग़ुस्सा शैतान की तरफ़ से है और शैतान की ख़िलक़त आग से हुई है और आग पानी से बुझती है अगर तुममें से किसी को ग़ुस्सा आये तो उसे ग़ुस्ल करना

चाहिये।

ग़ुस्ल के मअ़ना नहाने के भी आते हैं और वुज़ू करने के भी और मुतलक़ सिर्फ़ हाथ धोने के भी। ग़स्ल ग़ैन के ज़बर के साथ धोने के मअ़ना में है और गुस्ल ग़ैन के पेश के साथ नहाने के मअ़ना में। यहां वुज़ू के माअ़ना मुराद लेना बेहतर है क्योंकि दूसरी हदीस में गुस्ल की जगह वुज़ू का लफ़्ज़ सराहतन मज़कूर है इसलिये वुज़ू के मअ़ना लेना बेहतर और आसान है गुस्ल एक तवील और वुज़ू के मुक़ाबले में दुशवार अ़मल है देखो यह हदीस इसकी ताईद में है।

(٢٩٩) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا غضب احد كم فليتوضا بالماء فانما الغضب من النار (ابوداؤد، احياء العلوم سوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अगर तुममें से किसी को गुस्सा आये तो उसे पानी से वुज़ू कर लेना चाहिये क्योंकि गुस्सा आग से पैदा होता है।

दूसरी हदीस :

(٣٠٠) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان الغضب من الشيطان وان الشيطان خلق من النار وانما تطفا النار بالماء فاذا غضب احد كم فليتوضا. (ابوداؤد، احياء العلوم سوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया गुस्सा शैतान की तरफ़ से है और शैतान आग से बना है और आग पानी से बुझती है अगर तुम में से किसी को गुस्सा आये तो उसको चाहिये कि वुज़ू कर ले।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० रिवायत करते हैं कि अगर किसी वक़्त आप स० को गुस्सा आता और आप स० गुस्से के वक़्त खड़े हुए होते तो बैठ जाते और बैठे हुए होते तो लेट जाते इस तरह आप का गुस्सा ठन्डा हो जाता। (इब्ने अबिद्दुनिया, अहयाउल उलूम भाग 3)

और यह तरतीब तबलीग़ वाले हज़रात बयान करते हैं कि अगर इन्सान खड़ा हो तो बैठ जाये और अगर बैठा हो तो लेट जाये और हदीस से यह मसला भी साफ़ हो गया कि ग़ुस्से के वक़्त वुज़ू करना चाहिये और अगर ग़ुस्ल की आसानी हो तो ग़ुस्ल कर ले यह बेहतर है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि ग़ुस्से के वक़्त अगर खड़े हो तो बैठ जाओ

दूसरी हदीस :

(۳۰۱) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان الغضب جمرة توقد في القلب الم تروا الى انتفاخ اوداجه وحمرة عينيه فاذا وجد احدكم من ذلك شيئًا فان كان قائما فليجلس وإن كان جالسًا فلينم. (ترمذی شریف، احیاء العلوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया ग़ज़ब एक चिंगारी है जो दिल में सुलगती रहती है क्या देखते नहीं हो कि ग़ुस्से वाले की गर्दन की रगें फूल जाती हैं और आंखें सुर्ख़ हो जाती हैं अगर तुम में से किसी का यही हाल हो और वह खड़ा हुआ हो तो बैठ जाये, बैठा हुआ हो तो लेट जाये।

और यही तरतीब तबलीग़ वाले बयान करते हैं और यह साबित मिनल हदीस है।

ग़ुस्सा पीने की फ़ज़ीलत

(۳۰۲) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما تجرع عبد افضل عند الله عزوجل جرا من جرعة غيظ يكظمها ابتغاء وجه الله تعالى.

(ابن ماجہ، احیاء العلوم سوم، مشکوٰۃ)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया किसी बन्दे ने कोई ऐसा घूंट नहीं पिया जिसमें ज़्यादा सवाब हो ग़ुस्से के इस घूंट की बनिसबत जिसे उसने अल्लाह की रज़ामन्दी हासिल करने के लिये

पिया हो।

गुस्से को अल्लाह तआला के लिये बरदाश्त करना अल्लाह को बहुत ही पसन्द है और हुज़ूर अकरम स० ने ग़ुस्से के पीने वाले को पहलवान कहा है जो वह ताक़त के ऐतिबार से कमज़ोर हो और जो ताक़तवर हो मगर ग़ुस्सा बरदाश्त न करता हो तो वह पहलवान नहीं क्योंकि उस पर उसका नफ़्स और शैतान ग़ालिब आ गया है फिर वह कैसा पहलवान।

जो शख़्स ग़ुस्से को इस्तेमाल में न ले

(٣٠٣) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من كظم غيظا وهو يقدر على ان يمضيه دعاه الله على رؤس الخلائق حتى يخيره في اى الحور شاء۔ (احیاء العلوم سوم، بخاری جلد ثانی)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जो शख़्स अपना ग़ुस्सा नाफ़िज़ करने की कुदरत रखने के बावुजूद पी जाये अल्लाह तआला उसे बरसरे आम बुलायेंगे और उसे इख़्तियार देंगे कि वह जो हूर चाहे ले ले।

यह है फ़ज़ीलत ग़ुस्से पर क़ाबू पाने वाले की उसको मन चाही हूर अ़ता की जायेगी और सबसे बड़ा इनआ़म अल्लाह तआ़ला का ख़ुश होना है जब वह आपको तमाम लोगों के सामने बुलाकर हूर पसन्द करने का हुक्म देगा।

अहयाउल उ़लूम में है कि हज़रत उ़मर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जो शख़्स अल्लाह से डरता है वह ग़ुस्सा नहीं होता है जो अल्लाह का ख़ौफ़ रखता है वह अपनी मर्ज़ियात का पाबन्द नहीं होता। एक मरतबा किसी शख़्स ने हज़रत उ़मर रज़ि० से अ़र्ज़ किया कि न आप अ़द्ल (यानी इन्साफ़) करते हैं और न किसी को कुछ देते हैं यह बात सुनकर हज़रत को इतना ग़ुस्सा आया कि चेहरे पर उसकी अ़लामतें नज़र आने लगीं एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ऐ

अमीरुल मोमिनीन! क्या आपने यह आयत तिलावत नहीं की:

قال الله تعالى ﴿خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ﴾

सर सरी बातों को दर गुज़र कर दिया कीजिये और नेकी की तालीम कर दिया कीजिये और जाहिलों से एक तरफ़ हो जाया कीजिये यह शख़्स जाहिलों में से है इसे माफ़ फ़रमायें। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया तूने सच कहा और मानो एक आग सी थी जिसे तूने उस आयत की छींटों से ठन्डा कर दिया। और यह रिवायत बुख़ारी भाग २ और तिर्मिज़ी में है।

जो लोग अपनी औरतों को अल्लाह के बहाने मारते हैं

(٣٠٣) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم إن لجهنّم بابا لايدخله منه الاّ من شفى غيظه بمعصية الله تعالى. (احياء العلوم سوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जहन्नम का एक दरवाज़ा है उससे सिर्फ़ वह शख़्स दाख़िल होगा जिसने अल्लाह तआला की मआसियत में अपना ग़ुस्सा निकाला हो।

अब देखो कितने ही लोग अपने बच्चों और बेटी को और बीवी को नमाज़ का बहाना लगाकर मारते हैं अगर उनसे मालूम किया जाये कि क्यों मारते हो, कहते हैं कि नमाज़ नहीं पढ़ती, रोज़ा नहीं रखती और अन्दर ही अन्दर अपने ग़ुस्से को भी निकालते हैं बाहर के ग़ुस्से को अकसर लोग घर वाली पर उतारते हैं और दीन का सहारा लेकर लकड़ियों से मारते हैं गज़ों से मारते हैं। अगर नमक भी कम हो गया तो मारते हैं। बिस्तर साफ़ न हो तो मारते हैं, कारोबार सही न हो तो घरवाली पर पूरा ग़ुस्सा उतारते हैं और इस्लाम को बदनाम करते हैं। क्या इस्लाम ने इस वहशी तरीक़े पर मारने का हुक्म दिया है?

ख़ुदा की कसम! अल्लाह तआ़ला का दीन इस वहशी तरीक़े का हुक्म नहीं देता क्या तुमने उन औ़रतों को जानवर समझ रखा है? ख़ुदा के लिये कुछ तो डरो वरना यह औ़रतें उन मर्दों को कि़यामत में मारेंगी। तमाम उम्मत के साथ यह अल्लाह का अ़द्ल होगा कि़यामत के रोज़ जो ज़ालिम था वह मज़लूम के हाथ से तमाम दुनिया के सामने मार खायेगा और यह भी याद रखो औ़रतों को छोटी छोटी बातों पर बड़ी लकड़ियों से मारने से कभी किसी का खून भी निकल जाता है किसी की हड्डी टूट जाती है। यह मारना हराम है जिसकी शरीअ़त इजाज़त नहीं देती। यह हज़रात खुद नफ़सी इजाज़त निकालकर मारते हैं। हुज़ूर अकरम स० ने औ़रतों को मारने से जा बजा मना किया है। मगर जाहिल और बद्दीन मर्द औ़रतों को मारते हैं यह सरासर ख़िलाफ़े शरीअ़त अमल है इसकी शरीअ़त में इजाज़त नहीं। औ़रत एक मुअ़ज़्ज़ज़ और मोहतरम चीज़ है जिसको अल्लाह तआ़ला ने हमारी तरह जीने की परमीशन दे रखी है अगर वह नमाज़ न पढ़े तो उसके बिस्तर को अपने बिस्तर से अलग करो अगर अब भी न माने तो उसके हाथ का खाना न खाओ अगर अब भी न माने तो अब एक हद तक पिटाई की इजाज़त है वह भी इस तरह कि औ़रत के जिस्म पर इस मार के ज़रिये कोई निशान न नज़र आये और इस पिटाई से भी न माने तो उसको कहो जब तू नहीं मानती तो मैं तुझको तलाक़ दूंगा अगर इस धमकी से भी न माने तो एक तलाक़ दे वह खुद इद्दत गुज़रने के बाद निकाह से निकल जायेगी। अल्लाह तआ़ला से डरो और औ़रतों को मारने से बचो। हुज़ूर अकरम स० ने कभी अपनी बीवियों को नहीं मारा। हालांकि आपकी औ़रतों से भी ख़ता होती थी। अल्लाह तआ़ला सही हिदायत देने वाला है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० जिस राह से जाते शैतान उस राह से अलग हो जाता

(٣٠٥) عن سعيد بن ابی وقاص رضی الله عنهما قال استاذن عمر بن الخطاب علی رسول الله صلی الله عليه وسلم وعنده نسوة من قريش يُكَلِّمنَهُ ويستكثِرنَهُ عالية اصواتُهُنّ فلَمّا استَاذَنَ عمر قُمنَ فبادرن الحجاب فدخل عمرو رسول الله يَضحَكُ فقال اضحك الله سِنّك يا رسول الله فقال النبی عجبتُ من هؤلاء اللاتی كن عندی فلما سمعن صوتك ابتدرن الحجاب قال عمرُ ياعدوات اَنفُسِهِنّ اتهبننی ولا تَهَبْن رسول الله فقلن نعم انت اَفَظ واغلَظُ فقال رسول الله اِيْهٍ يا ابن الخطاب والذی نفسی بيده ما لقيك الشيطان سالكًا فَجًا قطُّ الاسلك فَجًا غير فَجّك.

(بخاری مسلم،مشکوۃ شریف)

हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० बयान करते हैं कि (एक दिन) हज़रत उ़मर बिन अल ख़त्ताब रज़ि० ने हुज़ूर के हुजरे के दरवाज़े पर खडे होकर रसूलुल्लाह स० की ख़िदमत में हाज़िर होने की इजाज़त तलब की इस वक़्त आप स० के पास कुरैश की चन्द ख़्वातीन (यानी अज़वाजे मुतह्हरात बैठी हुई बातें कर रही थीं उनकी बातों का मौज़ूअ़) उस ख़र्चे में इज़ाफ़े का मुतालबा था (जो हुज़ूर स० उनको पहुंचाते थे) और वह बातें भी ज़ोर ज़ोर से कर रही थीं जब हज़रत उ़मर रज़ि० इजाज़त तलब करके दाख़िल होने लगे तो वह ख़्वातीन (छुपने के लिये) आप स० के पास से उठकर पर्दे के पीछे चली गयीं। हज़रत उ़मर रज़ि० अन्दर दाख़िल हुए तो (देखा कि) रसूलुल्लाह स० मुसकुरा रहे हैं हज़रत उ़मर रज़ि० ने कहा अल्लाह, आपके दांतों को हमेशा ख़नदां रखे (यानी आपको हंसाये रखे) आप स० ने फ़रमाया

मुझे इस बात पर हसी आ गयी कि वह औरतें (कहां तो) मेरे पास बैठी हुई (शोर मचा रही थी) और (कहां) तुम्हारी आवाज़ सुनते ही (डर के मारे) पर्दे के पीछे भाग गयीं।

हज़रत उमर रज़ि० ने यह सुना तो उन ख़्वातीन को मुख़ातब करके बोले अरी अपनी जान की दुश्मन औरतो! (यह कैसी उल्टी बात है) कि मुझसे इस क़द्र ख़ौफ़ का इज़हार करती हो और रसूलुल्लाह स० से तुम ज़रा भी डरती नहीं (इस पर) उन ख़्वातीन ने कहा, हां (तुमसे डरना ही चाहिये) क्योंकि तुम निहायत सख़्त हो और निहायत सख़्त-गो हो जबकि हुज़ूर अकरम स० निहायत खुश मिज़ाज और खुश अख़्लाक़ हैं (इस पर) हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया, इब्ने ख़त्ताब छोडो और कोई बात करो (उन औरतों ने जो जवाब दिया है उसको अहमियत न दो बुरा न जानो) क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है (तुम वह शख़्स हो) कि अगर शैतान तुम्हें देख लेता है तो उस रास्ते से कतरा कर दूसरा रास्ता इख़्तियार कर लेता है जिस पर तुम चलते हो।

इस हदीस के आख़री जुमले को तबलीग़ वाले बयान करते हैं मगर बहुत से लोगों को इस बात में शक होता है कि यह हदीस भी है या यूं ही उनके गुस्से को देखकर क़यास कर लिया हालांकि इस हदीस में तबलीग़ वालों की बात मौजूद है और हक़ीक़त में हज़रत उमर रज़ि० थे ही बहुत क़वी ईमान वाले जिन के डर से शैतान भी रास्ते बदल दिया करते थे।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० से शैतान डरता था

(٣٠٢) عن بريرة رضى الله عنه قال خرج رسول الله صلى الله عليه

وسلم في بعض مغازيه فلما انصرف جاءت جارية سوداء فقالت يا رسول الله اني كنت نذرت إن ردك الله صالحا أن أضرب بين يديك بالدف وأتغنى فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان كنت نذرت فاضربي والا فلا فجعلت تضرب فدخل ابو بكر وهي تضرب ثم دخل علي وهي تضرب ثم دخل عثمان وهي تضرب ثم دخل عمر فالقت الدف تحت استها ثم قعدت عليها فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان الشيطان ليخاف منك يا عمر اني كنت جالسا وهي تضرب فدخل ابوبكر وهي تضرب ثم دخل علي وهي تضرب ثم دخل عثمان وهي تضرب فلما دخلت انت يا عمر القت الدف. (مشكوٰة شريف)

हज़रत बुरैरह असलमी रज़ि० का बयान है कि (एक मरतबा) रसूलुल्लाह स० जिहाद में तशरीफ़ ले गये थे जब आप स० वापस तशरीफ़ लाये तो एक सियाह फ़ाम लड़की जो सियाह रंग की थी ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुई और कहने लगी या रसूलुल्लाह स०! मैंने मन्नत मानी थी कि अगर अल्लाह तआला आपको (सफ़रे जिहाद से) फ़तह व सलामती के साथ वापस लायेंगे तो मैं आपके सामने दफ़ बजाऊंगी और (फ़तह व सलामती की शादमानी के गीत) गाऊंगी। आप स० ने उससे फ़रमाया अगर तुमने वाक़ई मन्नत मान रखी है तो दफ़ बजा लो वरना ऐसा मत करो।

इस पर लड़की ने दफ़ बजाना शुरु कर दिया इतने में हज़रत अबूबक्र रज़ि० दाख़िल हुए लेकिन वह लड़की दफ़ बजाने में मशग़ूल रही फिर हज़रत अ़ली रज़ि० आये और वह इस वक़्त भी दफ़ बजाती रही फिर हज़रत उ़स्मान ग़नी रज़ि० आये तो उसने अपना दफ़ बजाना जारी रखा और फिर जब हज़रत उ़मर रज़ि० आये तो उसने (उनके डर के मारे जल्दी से) दफ़ को अपने नीचे रख दिया और उस पर बैठ गयी (ताकि उ़मर की नज़र दफ़ पर न पड़े) इस पर हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया उ़मर! तुमसे तो

शैतान भी ख़ौफ़ज़दा रहता है। यह लड़की मेरी मौजूदगी में दफ़ बजा रही थी फिर अबूबक्र रज़ि० आये तो उस वक़्त भी बजाती रही फिर अ़ली रज़ि० आये उस वक़्त भी बजाती रही फिर उ़स्मान रज़ि० आये तो उस वक़्त भी बजाती रही मगर ऐ उ़मर! जब तुम आये तो उस लड़की ने दफ़ को छुपा दिया।

दफ़ एक छोटा सा एक बालिश्त के बराबर का बाजा होता है जिसमें झंकार नहीं होती है हलकी-हलकी उसकी आवाज़ होती है आज कल उसका वुजूद ही नज़र नहीं आता इसलिये उसके अ़लावा बाजे बजाना जाइज़ न होगा इन बाजों में झंकार और संगीत है और यह दोनों नाजाइज़ हैं मज़ीद तफ़सील उ़लमा से पूछ लेना यह हदीस है जिसको तबलीग़ वाले बयान करते हैं कि हज़रत उ़मर रज़ि० से शैतान डरता है।

तबलीग़ वाले बयान करते हैं कि हुज़ूर अकरम स० के बाद कोई नबी होता तो वह उ़मर रज़ि० होते

(٣٠٧) عن عقبة بن عامر قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لو كان بعدى نبى لكان عمر بن خطاب. (مشكوٰة، ترمذى شريف)

हज़रत उ़क़बा बिन आ़मिर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अगर मेरे बाद कोई और नबी होता तो वह उ़मर रज़ि० होते।

इस रिवायत को भी तबलीग़ वाले बयान करते हैं और यह बात साबित मिनल हदीस है हुज़ूर अकरम स० ने ख़ुद यह जुमला फ़रमाया और तबलीग़ वाले हज़रात उसको ही नक़ल करते हैं और वह लोग जो हज़रत उ़मर रज़ि० की ख़ामियां तलाश करते हैं उनको इस हदीस से सबक़ हासिल करना चाहिये कि हम जो काम कर रहे हैं क्या वह क़ुरआन और हदीस की रू से सही है

आज की मौजूदा दुनिया की नेकियां एक तरफ़, हज़रत उ़मर रज़ि० की नेकियां एक तरफ़ क़ियामत तक बराबर नहीं हो सकतीं और हम उनकी ज़ात में खामियां तलाश करें क्या यह सही है? अल्लाह बचाये उन ज़ालिमों से जो सहाबा रज़ि० की खामियां तलाश करते हैं।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि हज़रत उ़मर रज़ि० ने फ़रमाया मेरी तमाम ज़िन्दगी की नेकियां हज़रत अबूबक्र की एक रात की नेकियों के बराबर भी नहीं

यह वाक़िआ इस तरह है कि ज़ब्बह बिन मुहसिन अ़नज़ी रह० कहते हैं कि बसरा में हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ि० हमारे अमीर थे जब वह ख़ुत्बा दिया करते थे तो हम्द व सलात के बाद हज़रत उ़मर रज़ि० के लिये दुआ़ करते थे मुझे उनका यह तरीक़ा बुरा लगा और एक दिन जब वह ख़ुत्बा देने लगे तो मैंने उनसे कहा हैरत की बात है कि आप साहबे रसूल अबूबक्र रज़ि० पर उ़मर फ़ारूक़ रज़ि० को फ़ौक़ियत देते हैं और ख़ुत्बे में अबूबक्र रज़ि० का ज़िक्र नहीं करते चन्द जुमओं तक तो वह बरदाश्त करते रहे उसके बाद उन्होंने मेरी शिकायत लिखकर हज़रत उ़मर रज़ि० को भेज दी कि ज़ब्बह बिन मुहसिन अ़न्ज़ी रह० मेरे ख़ुत्बे में रुकावट डालता है।

हज़रत उ़मर रज़ि० ने उन्हें लिखा कि ज़ब्बह बिन मुहसिन को मेरे पास भेज दिया जाये चुनांचे मैंने अमीरुल मोमिनीन के हुक्म की तअ़मील की और बसरा से मदीने पहुंचा जिस वक़्त मैं मदीना मुनव्वरह पहुंचा आप रज़ि० अपने घर में थे मैंने दरवाज़ा खटखटाया आप रज़ि० बाहर तशरीफ़ लाये और पूछा कि तुम

कौन हो? मैंने अपना नाम बतलाया, फ़रमाया न तुमने मरहबा कहा और न अहलन यानी वह कलिमात जो मुलाक़ात के वक़्त कहे जाते हैं मैंने अ़र्ज़ किया कि मरहबा यानी वुस्अ़त व कुशादगी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है और अहल के सिलसिले में अ़र्ज़ है कि मैं नहीं कहता हूं न मेरे पास अहलो अयाल हैं और न मालो मनाल है आप तो इतना बतलाइये कि आपने मुझे इतनी दूर दराज़ इलाक़े से क्यों बुलाया है, मेरा जुर्म क्या है जिसकी यह सज़ा दी गई उन्होंने दरयाफ़्त किया कि तुम्हारे और अबू मूसा अशअ़री के दर्मियान झगड़े की वजह क्या है मैंने अ़र्ज़ किया जब वह खुत्बा देते हैं तो हम्द व सलात के बाद आपके लिये दुआ़ शुरू कर देते हैं मैं यह बात ना पसन्द करता हूं कि साहबे रसूल ख़लीफ़ा–ए–अव्वल हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० पर आपको फ़ौकियत दी जाये मैंने उन्हें मना किया तो उन्होंने आपके पास शिकायत लिखकर भेज–दी मेरी यह बात सुनकर हज़रत उ़मर रज़ि० बेहद मलूल हुए और उनकी आंखों में आंसू जारी हो गये और मुझसे फ़रमाया, ज़ब्बह! तुम मुझसे ज़्यादा तौफ़ीक़ याफ़्ता और हिदायत याफ़्ता हो ख़ुदा के लिये मुझे माफ़ कर दो मैंने कहा अमीरुल मोमिनीन, मैंने आपको माफ़ कर दिया है उन्होंने फ़रमाया कि खुदा की क़सम हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का एक दिन और रात उ़मर और अहले उ़मर के अ़मल से बेहतर है क्या मैं तुम्हें इसकी वजह न बतला दूं? मैंने अ़र्ज़ किया ज़रूर बतलायें फ़रमाया उनकी रात तो इसलिये अफ़ज़ल है कि जब आप स० ने मुशरिकीन के ज़ुलमों से बचकर मक्का मुकर्रमह से बाहर निकलने का इरादा फ़रमाया तो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० आप स० के हमराह थे और इस शान से थे कि आप स० की हिफ़ाज़त के लिये कभी आप स० के आगे चलते थे और कभी पीछे चलते थे

कभी दाईं तरफ़ हो जाते थे और कभी बाईं तरफ़, उनका यह इज़तिराब देखकर आप स० ने दरयाफ़्त किया कि अबूबक्र तुम क्या कर रहे हो कभी इधर हो जाते हो और कभी उधर हो जाते हो। अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह स०! जब मैं यह ख़्याल करता हूं कि कोई घात लगाये न बैठा हो तो आगे आ जाता हूं और जब यह सोचता हूं कि दुश्मन के आदमी पीछे से न आ रहे हों तो पीछे हो जाता हूं दाईं तरफ़ से दुश्मन के हमले का ख़तरा होता है तो दाईं तरफ़ आ जाता हूं बाईं तरफ़ से हमले का ख़्याल आता है तो बाईं तरफ़ आ जाता हूं। ग़र्ज़ यह कि मुझे आपके सिलसिले में किसी पहलू से सुकून नहीं मिलता उस रात का सफ़र आप स० ने पंजों के बल किया ताकि आवाज़ न आये इस तवील सफ़र के बाइस आप स० की उंगलियां ज़ख़्मी हो गयीं। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने यह हालत देखी तो आपको अपने कांधों पर बिठा लिया और ग़ारे सौर तक लेकर चले और वहां पहुंचकर अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह स०! क़सम है उस ज़ात की जिसने आप स० को हक़ के साथ भेजा, आप स० उस ग़ार में दाख़िल न हों यहां तक कि मैं अन्दर जाकर न देख लूं कि अगर कोई ईज़ा देने वाली चीज़ हो तो मुझे ईज़ा दे आप स० को न दे चुनांचे अबूबक्र रज़ि० अन्दर गये ग़ार में कुछ न था बाहर आये और आप स० को गोद में उठाकर अन्दर ले गये ग़ार की दीवार में एक शिगाफ़ था जिसमें सांप और बिच्छू थे हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उस शिग़ाफ़ पर अपना पांव रखकर बन्द कर दिया इस ख़ौफ़ से कि कहीं यह कीड़े निकल कर आपको ईज़ा न पहुंचायें इधर उन कीड़ों ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पांव में डसना शुरु कर दिया तकलीफ़ की शिद्दत से आप रज़ि० के आंसू बहने लगे लेकिन आप स० ने उस शिग़ाफ़ से अपना पांव नहीं हटाया उन्हें रोता हुआ देखकर

आँहज़रत स० ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ अबूबक्र!

لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا

ग़म न करो अल्लाह तआ़ला हमारे साथ है। अल्लाह तआ़ला ने अबूबक्र रज़ि० के दिल में सुकून डाल दिया और बाक़ी रात आप रज़ि० ने इत्मीनान से गुज़ारी। यह उनकी रात थी। दिन का हाल यह है कि जिस रोज़ सरकारे दो आ़लम स० ने पर्दा फ़रमाया तो अ़रब के बअ़ज़ क़बीले मुर्तद हो गये बअ़ज़ लोगों ने कहा कि हम नमाज़ नहीं पढ़ेंगे ज़कात नहीं देंगे।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने उनके ख़िलाफ़ जिहाद का इरादा किया मैं उनके पास गया ताकि उनके उस क़सदो इरादे की मुख़ालफ़त करूं और उन्हें जिहाद का इक़दाम करने से रोकूं मैंने उनसे कहा ऐ नायबे रसूल! आप लोगों के पास जायें और उनके साथ नर्मी का मामला करें उन्होंने फ़रमाया उ़मर मुझे हैरत है तुम कुफ़्र में इतना सख़्त थे और इस्लाम में इस क़द्र कमज़ोर पड़ गये मैं उनके पास क्यों जाऊं आँहज़रत स० के तशरीफ़ ले जाने के बाद वही का सिलसिला बन्द हो चुका है ख़ुदा की क़सम! अगर लोगों ने मुझे वह रस्सी देने से भी इन्कार कर दिया जो वह सरकारे दो आ़लम स० को दिया करते थे तो मैं उनसे क़िताल करूंगा बहरहाल हमने उन क़बाइल के ख़िलाफ़ जंग की। ख़ुदा की क़सम! उस सिलसिले में उनकी राय दुरुस्त थी उनका इक़दाम बजा था उसके बाद हज़रत उ़मर रज़ि० ने हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ि० को ख़त लिखकर ऐसा करने से मना किया।

दोस्तो! तबलीग़ वाले हज़रात यह दोनों वाक़िआ़त बयान करते हैं पहला वाक़िआ़ जिसमें हज़रत उ़मर रज़ि० का ही क़ौल है कि ख़ुदा की क़सम अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का एक दिन व रात

उमर और अहले उ़मर से बेहतर है। यह भी तबलीग़ वाले सहाबा रज़ि० के फ़ज़ाइल में बयान करते हैं। और दूसरा वाक़िआ हिजरत का है जो मशहूर व मअ़रूफ़ है। हज़रत उ़मर रज़ि० ख़ुद यह वाक़िआ बयान कर रहे थे इसलिये मैंने हज़रत उ़मर रज़ि० का और अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का, दोनों के वाक़िआत बयान कर दिये यह दोनों वाक़िआत अहयाउल उ़लूम जिल्द 2 में मौजूद हैं।

और बअ़ज़ किताबों में यह है कि हुज़ूर अकरम स० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पैर पर जहां पर सांप ने डसा था उस पर अपना लुआ़बे दहन लगाया आपको अल्लाह ने दर्द से निजात दे दी। लेकिन हज़रत उ़मर रज़ि० ने वाक़िअ़े के बयान में इख़्तिसार किया है।

तबलीग़ वाले यह वाक़िआ बयान करते हैं

एक शख़्स ने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० को बुरा भला कहा, आप रज़ि० ख़ामोश सुनते रहे जब वह चुप हुआ तो आप रज़ि० ने इन्तिक़ाम के तौर पर कुछ कहने का इरादा किया आँहज़रत स० को यह जवाबी कारवाई पसन्द नहीं आई और उठकर चल दिये हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह स०! जब वह शख़्स मुझे बुरा कह रहा था आप ख़ामोश थे और जब मैंने कुछ कहना चाहा तो आप खड़े हुए आपने इरशाद फ़रमाया :

(٣٠٨) لأنَّ الملك كان يُجِيبُ عنك فلما تَكَلَّمْتَ ذهب الملك وجاء الشيطان فلم اكن لِأَجْلِسَ فى مجلس فيه الشيطان.

(بخاری اول وثانی، ابوداؤد، احیاء العلوم جلد سوم)

इसलिये कि फ़रिश्ता तुम्हारी तरफ़ से जवाब दे रहा था जब तुमने बोलना शुरू किया फ़रिश्ता चला गया और शैतान आ गया मैं ऐसी मजलिस में नहीं बैठ सकता जिसमें शैतान मौजूद हो

(यानी जहां पर शैतान हो मुझको वहां रहना पसन्द नहीं है और आपकी यह शान है)

तबलीग़ वाले यह वाक़िआ बयान करते हैं और यह वाक़िआ बुख़ारी व अबूदाऊद और 'अहयाउल उ़लूम जिल्द सोम' में मौजूद है। बुरा भला कहने वाले का जवाब देना कैसा है? यह जो हुक्म हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया, कि बिल्कुल ही जवाब न दिया जाये यह अफ़ज़ल तरीक़ा है अगर जितना बुरा भला वह कह रहा है आप भी इतना ही कहें तो यह भी दुरुस्त है जैसे कि जवाज़ की हदीस पहले गुज़र चुकी है और अगर आप उससे ज़्यादा बुरा भला कहो तो यह जाइज़ नहीं क्योंकि यह ज़्यादती है और ज़्यादती जाइज़ नहीं है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि जो दोज़ख़ से आख़िर में निकलेगा उसके लिये भी दुनिया से दस गुना बड़ी जन्नत होगी

(۳۰۹) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من يخرجُ من النار يُعطى مثل الدنيا كلّها عشرة اصناف. (بخاری ومسلم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जो शख़्स सबके बाद दोज़ख़ से बाहर निकलेगा उसे दुनिया से दस गुना से मिस्ल जन्नत मिलेगी यानी दुनिया से दस गुना बड़ी जन्नत उस अदना और आख़री शख़्स को मयस्सर होगी और जो ज़्यादा नेक होंगे उनकी मक़बूलियते अअ़माल के हिसाब से जन्नत में दर्जात अ़ता होंगे।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान होगा वह दोज़ख़ से निकलेगा

(۳۱۰) عن ابی سعید الخدری رضی الله عنه من وجدتم فی قلبه

مثقال حبة من خردل من الایمان فاخرجوه. (بخاری و مسلم، مشکوٰة)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि अल्लाह तआला हुक्म देगा फ़रिश्तों को, दोज़ख़ से हर उस शख़्स को निकालो जिसके दिल में राई के बराबर भी ईमान हो।

यह हदीस तबलीग़ वाले हज़रात बयान करते हैं लेकिन बअ़ज़ हज़रात उस हदीस से ना–वाकिफ़ होने की वजह से हदीस को शक की नज़र से देखते हैं अलहम्दु लिल्लाह यह हदीस दुरुस्त है और इस क़िस्म की दूसरी हदीस देखिये, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की एक तवील हदीस का इक़तिबास पेश कर रहा हूं।

(۳۱۱) قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم حتی اذا فرغ الله من القضاء بین العباد واراد ان یخرج برحمته من اراد من اهل النار امر الملائکة ان یخرجوا من النار من کان لایشرك بالله شیئاً ممن اراد الله ان یرحمه ممن یقول لا اله الا الله. (بخاری و مسلم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जब अल्लाह तआला बन्दों के बीच फ़ैसला कर देगा (उसके बाद) इरादा करेगा कि निकाले अहले दोज़ख़ को दोज़ख़ से अपनी रहमत के तुफ़ैल से, हुक्म देगा अल्लाह फ़रिश्तों को, कि वह निकालें दोज़ख़ में से हर उस बन्दे को जिसने किसी क़िस्म का भी शिर्क न किया हो उस शख़्स के साथ अल्लाह तआला रहमत का मामला करेगा जिसने लाइलाह इल्लल्लाह कहा हो।

यह भी हदीस तबलीग़ वालों के बयान में मिलती है इस हदीस से मालूम हुआ कि कोई मुवह्हिद हमेशा हमेशा के लिये दोज़ख़ में नहीं रहेगा बल्कि अपनी सज़ा के बाद दोज़ख़ से निकाला जायेगा। काफ़िर और मुश्रिक हमेशा हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे यह ला इलाह इल्लल्लाह की बरकत है, अगर उसके तक़ाज़ों पर अ़मल किया तो शुरू ही से जन्नत में दाख़िल होगा

उसके तकाज़े इबादत का करना, रसूलुल्लाह स० के तरीकों को इख़्तियार करना, शिर्क और शुब्हे शिर्क से बचना, कुफ़रिया अक़ाइद और कुफ़रिया कलिमात से इजतिनाबे कामिल करना। फ़ोहुश बातों से और अफ़आल से दूर रहना गोया कि तमाम वह चीज़ें करना जिनका हुक्म उसके पढ़ने के बाद लागू हो जाता है और तमाम उन चीज़ों को तर्क करना जिनके तर्क करने का हुक्म उसके पढ़ने के बाद होता है जब बन्दा उसके तक़ाज़ों पर कारबन्द होगा तो यह अव्वल इम्तिहान में कामयाब हो जायेगा यानी उसको ठुकाई पिटाई की ज़रूरत न होगी और जिन हज़रात ने कलिमा तो पढ़ लिया मगर उसके तक़ाज़ों पर अमल नहीं किया उनकी फ़िनिशिंग दोज़ख़ में होगी और जब वह अपने गुनाहों की सज़ा पूरी कर चुके होंगे तो फिर उनको निकाला जायेगा और जन्नत में दाख़िल किया जायेगा इस कलिमे की बरकत से और जो यह कलिमे वाला आइडेन्टी–कार्ड नहीं लाये होंगे उनको जन्नत से मेहरूम रखा जायेगा और उनकी आराम गाह दोज़ख़ होगी जो उनकी हमेशा हमेशा मेहमान नवाज़ी करती रहेगी।

اللّٰهم احفظنا من الكفر والشرك والضلالة والبدعة وادخلنا فى رحمتك يا الله.

तबलीग़ वाले आख़री जन्नती का क़िस्सा बयान करते हैं

(٣١٢) عن ابن مسعود رضى الله عنه انّ رسول الله صلى الله عليه وسلم قال آخِرُ مَنْ يَدْخُلُ الجنة رَجُلٌ فهو يَمْشِى مَرَّةً ويكبو مَرَّةً وتَسفَعُهُ النارُ مَرَّةً فاذا جاوزها التفت اليها فقال تبارك الّذِىْ نَجَّانى منك لقد اَعْطَانِىَ اللّٰهُ شيئًا مَّا اَعْطَاهُ احدًا مِّنَ الاوَّلِينَ والآخرين فترفع له شجرةٌ فيقول اِيْ رَبِّ

اَدْنِنِی من هٰذه الشجرة فلاَستَظِلّ بِظِلّهَا و اشربَ من ماءها فيقول الله يا ابن آدم لَعَلّیْ اَن اَعطِیتُکها سَاَلْتَنِیْ غيرها فيقول لا يارَبِّ ويعاهده ان لايساله غيرها وربه يعذره لِاَنّهٗ يرى مالا صبر له عليه فيدنيه منها فيستظل بظلها ويشربُ من ماءها ثم ترفع له شجرة هي احسنُ من الاولٰى فيقولُ اِی رب ادنني من هذه الشجر لِاَشربَ من مآءِها واستظِلّ بِظِلّهَا لا اسألك غيرها فيقول يا ابن آدم الم تعاهدنی ان لاتسألنیْ غيرها فيقول لَعَلّیْ ان ادنيتُك منها تسألني غيرها فيعاهدهٗ ان لايسألَهٗ غيرها وَرَبّهٗ يَعْذِرهٗ لانه يرى مالا صبر له عليه فيدنيه منها فيستظل بظلها ويشربُ من ماءها ثم ترفع له شجرة عند باب الجنة هي احسن من الاولين، فيقول اى رَبِّ اَدْنِنِیْ من هذه فلاَستَظِلّ بَظِلّها واشرب من ماءها لا اسألك غيرها فيقول يا ابن آدم الم تعاهدني ان لا تسألني غيرها قال بلٰى يا ربِّ هذه لا اسألك غيرها وربه يعذره لِاَنّهٗ يرى مالا صبر له عليه فيدنيه منها فاذا ادناه منها سمع اصواتَ اهل الجنة فيقول اى رب ادخِلْنِيهَا فيقول يا ابن آدم ما يصريني منك ايرضيك ان اَعطِيَكَ الدنيا ومثلها معها قال اى ربِّ اَتَستهزی مِنّیْ وانت رب العالمين فضحك بنُ مسعود فقال ألا تسألوني مِمّ اضحك فقالوا مِمّ تضحكُ فقال هكذا ضحك رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالوا مِمّ تضحكُ يا رسول الله قال من ضحك رب العالمين حين قال اَتَسْتَهْزِیْ مِنّیْ وانت ربُ العالمين فيقول انى لَااَسْتَهزِئُ منك ولکنّیْ على ما اشاءُ قدير (مسلم) وفى رواية له عن ابى سعيد نحوه الاّ اَنّهٗ لم يذكر فيقول يا ابن آدم ما يسرني منك الى آخر الحديث وزادفيه ويذكره الله سلْ كذا وكذا حتى اذا انقطعَتْ به اَلاَمانى قال الله تعالٰى هولك وعشرة امثاله قال ثم يدخل بيته فتدخل عليه زوجتان من الحور العين فتقولان الحمد لله الذى احياك لنا واحيانا لك قال فيقول ما اُعْطِىَ احد مثل ما اُعطيتُ. (مشكوٰة شريف)

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स० ने फ़रमाया जन्नत में सबसे आख़िर में दाख़िल होने वाला जो

शख़्स होगा वह जब (दोज़ख से बाहर निकलकर) रवाना होगा तो एक मर्तबा (यानी एक क़दम आगे चलेगा) और दूसरी मर्तबा (यानी दूसरे क़दम पर) मुह के बल गिर पड़ेगा और तीसरी मर्तबा (यानी तीसरे क़दम पर) दोज़ख़ की आग (की गर्मी और तपिश उसके जिस्म को झुलस डालेगी जिसकी वजह से उसके बअ़ज़ अअ़ज़ा–ए–जिस्म जल जायेंगे और उसकी जिल्द का रंग बदल जायेगा फिर जब वह) (इसी तरह गिरता पड़ता और झुलसता हुआ) दोज़ख़ (की गर्मी और तपिश की ज़द) से आगे गुज़र जायेगा तो मुड़कर (दोज़ख़ की तरफ़) देखेगा और कहेगा कि बुज़ुर्ग व बरतर है ख़ुदा की ज़ात जिसने मुझे तुझसे छुटकारा दिलाया, ख़ुदा की क़सम मेरे परवरदिगार ने मुझे वह चीज़ अ़ता की है जो उसने अगले पिछले लोगों में से किसी को अ़ता नहीं की फिर उसकी नज़र के सामने एक दरख़्त खड़ा किया जायेगा (जिसके नीचे पानी का चश्मा होगा) वह अ़र्ज़ करेगा कि मेरे परवरदिगार मुझे इस दरख़्त के क़रीब पहुंचा दे ताकि मैं उससे साया हासिल कर सकूं और उसके चश्मे से पानी पी सकूं अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा इब्ने आदम! अगर मैं तेरी यह आरज़ू पूरी कर दूं तो हो सकता है कि तू मुझसे कुछ और मांगने लगे वह अ़र्ज़ करेगा कि मेरे परवरदिगार ऐसा नहीं होगा, उसके बाद वह अल्लाह तआ़ला से इस बात का अ़हद करेगा कि वह उसके अ़लावा और कुछ नहीं मांगेगा। चूंकि वह शख़्स ऐसी चीज़ देखेगा जो उसको बे–सब्र कर देगी और उसको दरख़्त के पास पहुंचा देगा वह शख़्स उस दरख़्त के साये में बैठेगा और उसके चश्मे से पानी पियेगा फिर (उसके और ज़्यादा आगे बढ़ाने के लिये) उसकी नज़र के सामने एक दरख़्त खड़ा किया जायेगा जो पहले दरख़्त से ज़्यादा अच्छा होगा वह शख़्स (उस दरख़्त को देखकर)

कहेगा कि मेरे परवरदिगार मुझको उस दरख़्त के पास पहुंचा दीजिये ताकि उसका साया हासिल कर सकूं और उसके चश्मे से पानी पियूं, और मैं अब उस दरख़्त के अ़लावा कुछ नहीं मांगूंगा हक़ तआ़ला उससे फ़रमायेगा कि इब्ने आदम क्या तूने मुझसे यह अ़हद नहीं किया था तू उससे (पहले) दरख़्त के अ़लावा कुछ और मुझसे नहीं मांगेगा उसके बाद अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा अगर मैं तुझे उस दरख़्त के पास भी पहुंचा दूं तो हो सकता है कि तू मुझसे कुछ और मांगने लगे पस उसका परवरदिगार उसको मअ़ज़ूर जान कर उससे दर-गुज़र करेगा, क्योंकि वह एक ऐसी चीज़ देखेगा जो उसको बे-सब्र कर देगी और फिर अल्लाह तआ़ला उसको उस दरख़्त के पास पहुंचा देगा वह शख़्स उस दरख़्त के साये में बैठेगा और उसके चश्मे से पानी पियेगा। फिर (तीसरा दरख़्त उसके सामने खड़ा किया जायेगा जो जन्नत के दरवाज़े के क़रीब और पहले दोनों दरख़्तों से ज़्यादा अच्छा होगा वह शख़्स (उस दरख़्त को देखकर) कहेगा कि मेरे परवरदिगार मुझे उस दरख़्त के पास पहुंचा दीजिये ताकि मैं उसका साया हासिल कर सकूं और उसके चश्मे से पानी पियूं। हक़ तआ़ला उससे फ़रमायेगा, इब्ने आदम! क्या तूने मुझसे यह अ़हद नहीं किया था कि उसके अ़लावा और कुछ मुझसे नहीं मांगेगा, वह अ़र्ज़ करेगा कि हां (मैंने बेशक अ़हद किया था लेकिन अब यह मेरा आख़री सवाल है) उसके अ़लावा और कुछ नहीं मांगूंगा, पस उसका परवरदिगार उसको मअ़ज़ूर जानकर उससे दर गुज़र करेगा क्योंकि वह शख़्स एक ऐसी चीज़ देखेगा जो उसको बेसब्र कर देगी फिर अल्लाह तआ़ला उसको उस दरख़्त के पास पहुंचा देगा और जब वह उस दरख़्त के पास पहुंच जायेगा तो उसके कान में वह (दिलचस्प और मज़ेदार) बातें आयेंगी जो जन्नती लोग

अपनी बीवियों और अपने दोस्त अहबाब से करेंगे तो वह शख़्स (बे–इख़्तियार होकर) अर्ज़ करेगा कि मेरे परवरदिगार अब मुझे जन्नत मे भी पहुंचा दीजिये।

अल्लाह तआला फ़रमायेगा, इब्ने आदम! क्या कोई ऐसी चीज़ भी है जो तुझसे (यानी तेरे बार बार ख़्वाहिश व आरज़ू करने से) मेरा पीछा छुड़ा दे क्या तू उससे भी खुश होगा या नहीं कि मैं तुझे जन्नत में दुनिया भर की मसाफ़त के बराबर और इसी क़द्र मज़ीद जगह तुझे दे दूं वह शख़्स (इन्तिहाई ख़ुशी व मुसर्रत के आलम में) कहेगा कि परवरदिगार कहीं आप मुझसे मज़ाक़ तो नहीं कर रहे हैं हालांकि आप तो तमाम जहानों के परवरदिगार हैं (हदीस के यह अलफ़ाज़ बयान करने के बाद) हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० हंसे और फिर (हदीस सुनने वालों से) बोले कि क्या तुम यह नहीं पूछोगे कि मैं क्यों हंसा, लोगों ने पूछा कि हां बता दीजिये आप क्यों हंसे? फ़रमाया-जब सहाबा रज़ि० ने पूछा कि या रसूलुल्लाह आप क्यों हंसे तो आप स० ने फ़रमाया कि मैं इस वजह से हंसा कि जब वह शख़्स कहेगा कि परवरदिगार कहीं आप मुझसे मज़ाक़ तो नहीं कर रहे हैं हालांकि आप तमाम जहानों के परवरदिगार हैं तो फिर परवरदिगारे आलम इस पर हंस पड़ेगा। बहरहाल अल्लाह तआला (इस शख़्स की यह बात सुनकर) फ़रमायेगा कि नहीं मैं तुझसे मज़ाक़ नहीं कर रहा हूं (और मैं ख़ूब जानता हूं कि तू उस अता व बख़शिश का मुस्तहिक़ नहीं है) लेकिन (यह सब तुझको इसलिये दे रहा हूं कि) मैं जो चाहूं कर सकता हूं (कि हर चीज़ का मालिक व मुख़तार और क़ादिर मैं ही हूं इस रिवायत को मुस्लिम रह० ने नक़ल किया है और मुस्लिम ही में एक और रिवायत हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से इस तरह के अलफ़ाज़ में मनकूल है लेकिन इस रिवायत

में فيقول يا ابن آدم ما يسرني منك से आख़िर तक के अलफ़ाज़ नही है, अलबत्ता यह अलफ़ाज़ और नक़ल किये गये हैं कि फिर अल्लाह तआला उस शख़्स को याद दिलायेगा और बतायेगा कि फ़लां फ़लां चीज़ मांग और जब (वह तमाम चीज़ें मांग चुकेगा और) उसकी आरज़ुयें पूरी होंगी तो अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि न सिर्फ़ यह तमाम चीज़ें (जिनकी तूने ख़्वाहिश व आरज़ू की है) बल्कि उनकी दस गुनी और चीज़ें भी तुझे अता की जाती हैं। आँहज़रत स० ने फ़रमाया उसके बाद वह शख़्स जन्नत में अपने घर में दाख़िल होगा वहां उसके पास हूरे-ईन में से उसकी दो बीवियां आयेंगी और कहेंगी कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह बुज़ुर्ग व बरतर के लिये हैं जिसने (उस आलीशान महल में जहां ऐश व राहत के सिवा न कोई ग़म व फ़िक्र है और न मौत का ख़ौफ़ है) तुम्हें हमारे लिये और हमें तुम्हारे लिये पैदा किया।

आंहज़रत स० ने फ़रमाया, वह शख़्स (खुशी से) कहेगा कि (यहां सबसे ज़्यादा खुश नसीब मैं ही हूं क्योंकि) जितना मुझे अता किया गया है! इतना किसी और को नहीं दिया गया यह बात वह इस बिना पर कहेगा कि उस वक़्त तक उसे दूसरों को हासिल होने वाली नेमतों का इल्म ही नहीं होगा वह यही समझेगा कि यहां सबसे ज़्यादा नवाज़ा जाने वाला बन्दा बस मैं ही हूं।

अल-हासिल, यह वाक़िआ तबलीग़ वाले हज़रात बयान करते हैं मगर बअ़ज़ हज़रात उसको मन घड़त जानते हैं कि तबलीग़ वाले अपनी तरफ़ से कहते हैं, मैं कहता हूं मोअ़तरिज़ को कि वह यह कहना छोड़ दे कि तबलीग़ वाले मन घड़त हदीस बयान करते हैं या उनके पास अहादीस के हवाले जात नहीं हैं यह मोअ़तरिज़ का तसव्वुर बिल्कुल बातिल है। बन्दे को जितने ऐतिराज़ मालूम हुऐ तमाम के जवाबात को दलाइल से जमा कर दिया है

और जो ऐतिराज़ मुझ तक नहीं पहुंचे उनको उ़लमा से मालूम कर लेना। और मोअ़तरिज़ हज़रात से ज़्यादा अल्लाह का ख़ौफ़ ख़ुद तबलीग़ वालों को है आज़मा कर देख लो मैंने जितना अल्लाह के सामने रोने वाला जमाअ़त तबलीग़ वालों को पाया किसी जमाअ़त वालों को मैंने इतना ख़ौफ़ से रोते हुऐ नहीं देखा और रहा मसला कमी का और ख़ता का तो उससे कोई बन्दा ख़ाली नहीं है। यह हदीस दलील के तौर पर भी लिख दी है और इसलिये भी लिख दी कि बन्दे का तअ़ल्लुक़ अल्लाह से और वसीअ़ हो जाये कि जब बन्दा अल्लाह की रहमत के वाक़िआत सुनता है तो वह अल्लाह तआ़ला से अच्छा गुमान करता है और अल्लाह तआ़ला से अच्छा गुमान रखना भी चाहिये मगर बे–ख़ौफ़ न हो ईमान ख़ौफ़ और उम्मीद के दर्मियान की चीज़ है न इतना ख़ौफ़ करे कि रहमत की तरफ़ से ख़्याल ही हट जाये और अल्लाह सिर्फ़ अ़ज़ाब की ही शक्ल में दिखाई दे और न इतना रहमत का ख़्याल करे कि अ़ज़ाब के ख़्याल को करीब भी न करे और गुनाहों में लगा रहे बल्कि ख़ौफ़ भी गुनाह पर हो और अच्छे अअ़माल से रहमत की उम्मीद भी हो भरोसा अअ़माल पर न हो अल्लाह पर हो असल अअ़माल क़ुबूल करने वाला अल्लाह है। हमारी नज़रों में ख़ुद के अअ़माल अच्छे नज़र आते हैं अब यह पता नहीं अल्लाह उसको क़ुबूल करे या मरदूद। इसलिये जन्नत की उम्मीद करो, ज़रूर करो, मगर अअ़माल के बल बूते पर नहीं बल्कि अल्लाह की रहमत की उम्मीद पर कि अल्लाह हमको अपनी रहमत के तुफ़ैल बग़ैर हिसाब व किताब के जन्नत में दाख़िल कर देगा अगर बन्दे की निगाह अअ़माल पर आ गई तो वह शैतान बन गया क्योंकि शैतान को भी अपनी चीज़ों पर नाज़ था हमको शैतान वाला तरीक़ा इख़्तियार नहीं करना चाहिये बल्कि नबियों और वलियों

वाला तरीक़ा इख़्तियार करना है और वह तरीक़ा क्या है? वह यह है कि बन्दे की नज़र अपने अअ़माल से हटकर अपने मालिक की रहमत पर लग जाये गुनाहों से बचने की कोशिश करने वालों के लिये अल्लाह रास्ता पैदा कर देता है और यह बात याद रहे कि तबलीग़ वाला रास्ता नबियों वाला है और कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसको इस राह में परेशानी न आई हो और जब यह काम हम कर रहे हैं तो नबियों जैसी बड़ी बड़ी परेशानियां तो नहीं आयेंगी बल्कि हमारी ताक़त के बक़द्र ही आयेंगी मगर शैतान इस क़द्र परेशानी पर भी जमने नहीं देता कभी किसी बहाने के ज़रिये कभी किसी उ़ज़्र के ज़रिये काम से जान चुराने पर मजबूर करता है मगर हमको जमकर सिर्फ़ अल्लाह के लिये काम करना और रहमत से उम्मीद बांधना है।

तबलीग़ वाले जन्नत में चार नहरों का ज़िक्र करते हैं

(٣١٣) قال الله تعالى فِيهَا أَنْهَارٌ مِّن مَّآءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِّن لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى

(سورہ محمد پ٢٦، ع٦)

जन्नत में बहुत सी नहरें तो ऐसे पानी की हैं जिनमें ज़रा तब्दीली न होगी और बहुत सी नहरें दूध की हैं जिनका ज़ाइक़ा ज़रा बदला हुआ न होगा और बहुत सी नहरें शराब की हैं जो पीने वालों को बहुत लज़ीज़ मालूम होंगी और बहुत सी नहरें शहद की हैं जो बिल्कुल साफ़ शफ़्फ़ाफ़ होंगी।

उन्हीं चार नहरों का ज़िक्र तबलीग़ वाले हज़रात करते हैं कि जन्नत का पानी निहायत लज़ीज़ और शीरीं होगा इसमें बदबू न होगी इसे फ़िल्टर यानी साफ़ करने की ज़रूरत न होगी इसको

छानकर पीने की ज़रूरत न होगी बल्कि इतना साफ़ होगा कि नीचे की साफ़ शफ़ाफ़ ज़मीन भी खुली नज़र आयेगी और जन्नत का जो दूध होगा वह दुनिया की तरह बदबूदार और खराब होने वाला न होगा और न वह मुद्दत के ज़्यादा होने से फटेगा क्योंकि जन्नत की किसी चीज़ को भी मौत न होगी बल्कि जिस परिन्दे को वह खायेंगे उसकी जो हड्डियां होंगी उनके ज़रिये दोबारह वह परिन्दा बनकर उड़ने लगेगा, जिस फ़ल को तोड़ेगा उसकी जगह पर दूसरा फ़ल लग जायेगा उन नअ़मतों को अगर हम दुनिया पर महमूल करें तो यह दुशवार मालूम होंगी मगर जो खुदा दरख़्त पर हर साल नया फ़ल देने पर क़ादिर हो क्या वह एक साल के बजाये फ़ौरन पैदा करने पर क़ादिर न होगा लेकिन ईमान की कमज़ोरी की वजह से यह बात महाल यानी दुशवार मालूम होती है मगर अल्लाह तआ़ला के लिये कोई चीज़ महाल नहीं है जो एक मनी के क़तरे से हाथी और शेर जैसे अज़ीमुलक़ामत और ताक़तवर जानवर पैदा कर सकता है उसके लिये क्या मुश्किल होगा कि वह जन्नत में परिन्दों की हड्डियों से परिन्दा पैदा क़र दे और एक फल की जगह दूसरा फ़ल लगा दे और जन्नत की शराब दुनिया की शराब की तरह नापाक और नशावर न होगी जिसकी वजह से वह गाली गलोच करने लगे बल्कि वह शराब जिस्म में फ़रहत पैदा करेगी और जिस्म में निशात को उभारने वाली होगी जिससे जन्नती अपनी हूरों में मगन हो जायेंगे और जन्नत का ला–सानी लुत्फ़ हासिल करेंगे और जन्नत का शहद न तबीअ़त को उकताने वाला होगा और न बे–रग़बत करने वाला होगा जो मुअ़तदिल ज़ायक़े वाला होगा। बहुत मीठा और न बिल्कुल फीका बल्कि तबीअ़त को लुभाने वाला मज़ा होगा, इन तमाम की हक़ीक़ी तारीफ़ तो दुनिया में बयान

करने से इन्सान क़ासिर है बल्कि उसकी तारीफ़ व हक़ीक़त को वहीं पर महसूस कर लेना, अब तो जन्नत वाले अअ़्माल में ख़ुद को और दूसरे भाइयों को लगाओ और जन्नत की तरफ़ बढ़ते चलो और जन्नत हमारी तरफ़।

तबलीग़ वाले जन्न्त की सफ़ों का तज़्किरा करते हैं

(٣١٤) عن بریرة رضی الله عنها قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم اهل الجنة عشرون ومائةُ صَفٍّ ثمانون منها من هذه الأُمَّةِ واربعون من سائر الأُمَمِ. (ترمذی، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत बरीरह रज़ि० कहती हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जन्नतियों की एक सौ बीस सफ़ें होंगी उनमें अस्सी सफ़ें इस उम्मत (मुसलमानों) की होंगी और चालीस सफ़ें दूसरी उम्मतों के लोगों की।

तबलीग़ वाले हज़रात यह भी बयान करते हैं कि हुज़ूर अकरम स० की उम्मत की अस्सी सफ़ें होंगी एक सौ बीस सफ़ों में से और चालीस सफ़ें दूसरों की होंगी और एक यह बात ज़हन नशीं रहे कि उन एक सौ बीस सफ़ों में कोई काफिर न होगा बल्कि तमाम मुसलमान होंगे बअ़ज़ लोगों के ज़हन में यह बात होती है कि उन एक सौ बीस सफ़ों में मुसलमान भी होंगे और काफिर भी हालांकि ऐसा नहीं होगा काफिर तो दोज़ख़ में जा चुके होंगे अब जो जन्नत में जाने वाले हज़रात होंगे उनकी सफ़ें मुराद हैं और उन सफ़ों में सिर्फ़ मुस्लिम होंगे काफिर न होंगे।

इस हदीस से मालूम हुआ कि उम्मते मुहम्मदिया के जन्नतियों की तअ़दाद दूसरी उम्मतों के मुक़ाबले में दो तिहाई से ज़्यादा होगी लेकिन दूसरी एक हदीस में जिसमें आँहज़रत स०

का यह इरशाद मनकूल है कि मुझे उम्मीद है कि तुम (मुसलमान) अहले जन्नत की मजमूई तअदाद का आधा हिस्सा होंगे और दोनों रिवायतों में ब–ज़ाहिर इख़्तिलाफ़ मालूम होता है मगर हकीकत में ऐसा नहीं है, हो सकता है कि आँहज़रत स० ने हक़ तआला की बारगाह से यही उम्मीद क़ायम की हो कि आपकी उम्मत के लोग अहले जन्नत की मजमूई तअदाद का आधा हिस्सा हों मगर बाद में हक़ तआला ने अपनी रहमते ख़ास से आँहज़रत स० की इस उम्मीद को और बढ़ा दिया हो और जन्नतियों में उम्मते मुहम्मदिया की तअदाद को दो तिहाई तक करने की बशारत अता फ़रमाई हो और यह इज़ाफ़ा व ज़्यादती यक़ीनन रब्बे करीम के इस ख़ास फ़ज़्ल व करम का नतीजा है जो सिर्फ़ आँहज़रत स० और आपकी उम्मते मुबश्शरा का नसीब है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि जन्नत की ईंटें सोने और चांदी की होंगी

(٣١٥) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قلتُ یا رسول الله صلی الله علیه وسلم مِمَّ خُلِقَ الخَلْقُ قال من المآءِ قُلْنَا الجَنَّةُ ما بِناءُها قال لَبِنَةٌ من ذهب وَّلبنةٌ مِّنْ فِضَّةٍ وَّملاطُها المسك الأَذفَر، وحصبآؤها اللُّؤلُؤ والیاقُوْتُ وتربتُهَا الزعفرانُ من یَّدخُلُهَا ینعمُ ولا یَبْأسُ ویَخْلُدُ ولا یموتُ ولاتبلی ثیابُهُمْ ولا یفنٰی شبابهم. (ترمذی،مشکوٰة،دارمی)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि मैंने कहा, कि या रसूलुल्लाह स० मख़लूक़ को किस चीज़ से पैदा किया गया है? आपने फ़रमाया पानी से, फिर हमने पूछा कि जन्नत किस चीज़ से बनी है यानी उसकी इमारत पत्थर या ईंट की है या मिट्टी या लकड़ी वग़ैरा की?

फ़रमाया जन्नत की तअमीर ईंटों की है और ईंटें भी इस

तरह की हैं कि एक ईंट सोने की है और एक ईंट चांदी की। इसका गारा यानी मसाला जिससे ईंट जोड़ी जाती है तेज़ खुशबूदार मुश्क का है उसकी कंकरियां मोती और याकूत की तरह हैं और उसकी मिट्टी ज़अफ़रान की तरह ज़र्द और खुशबूदार है इस जन्नत में जो शख़्स दाख़िल होगा ऐशो इशरत में रहेगा कभी कोई रंज व फ़िक्र नहीं देखेगा, हमेशा ज़िन्दा रहेगा मरेगा नहीं न उसका लिबास पुराना और बोसीदा होगा और न उसकी जवानी फ़ना व ख़त्म होगी।

तबलीग़ वाले हज़रात की बात इससे साबित होती है कि जन्नत की एक ईंट सोने की और एक चांदी की होगी और उसका मसाला ख़ालिस मुश्क का होगा जिसमें मिलावट न होगी जन्नत की ज़मीन ज़र्द होगी ज़अफ़रान की तरह और उसके मसाले में जो हम लोग रेत डालते हैं वहां रेत का इस्तेमाल न होगा बल्कि याकूत और मोती की कंकरियां होंगी जो ख़ूब रोशन होकर चमकेंगी। अब बताओ क्या वह जन्नत अच्छी और मज़ेदार है या यह आलमे फ़ानी व ज़ाइल और दुश्वारी वाला मकाम। ख़ैर तबलीग़ वालों की तकरीर इस हदीस से साबित हो गई और अब शक व शुबहे की गुंजाइश बाकी नहीं है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि जन्नत के दरख़्त की टहनी सोने की होगी

(٣١٦) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم ما فی الجنة شَجَرَةٌ اِلاَّ وساقُها من ذهب. (ترمذی، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जन्नत में जो भी दरख़्त है उसका तना सोने का है।

हज़रात जन्नत के दरख़्त के बारे में तबलीग़ वाले हज़रात

यह कहते हैं कि उसके दरख़्त का तना सोने का होगा और यह भी मालूम हो जाये कि इस बारे में और दूसरी क़िस्म की भी हदीस वारिद हुई है जिसमें चांदी का या सोने का ज़िक्र है। जन्नत के हर एक दरख़्त का तना सोने का है अलबत्ता उन दरख़्तों की टहनियां और शाख़ें मुख़्तलिफ़ क़िस्मों की हैं किसी की सोने की है किसी की चांदी की। कोई टहनी याक़ूत व ज़मर्रुद की या मोती वग़ैरह की और हर टहनी तरह तरह के शगूफ़ों से आरास्ता व सजी हुई है और इस पर हर क़िस्म के मेवे और फल लगे हुए हैं। और जन्नत के तमाम दरख़्तों के नीचे नहरें रवां हैं यह तमाम अल्लाह तआला की क़ुदरत व ताक़त का नतीजा है जो ख़ुदा ग़ैर मालूम हद का आसमान पैदा करने पर क़ादिर है वह उसकी क्या परवाह करेगा कि हमको मौसूफ़ जन्नत अता करे जो काफ़िरों को मन चाही ज़िन्दगी गुज़ारने की इजाज़त देने में कोई बुख़्ल नहीं करता वह अपने फ़रमांबरदारों को जन्नत की नेमत देने में क्या बुख़्ल करेगा, अल्लाह से जिसका तअल्लुक़ कमज़ोर होता है वह अल्लाह से कम–ज़र्फ़ी का शिकार बनता है अल्लाह तआला हमें ईमान की पुख़्तगी नसीब फ़रमाये।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि जन्नत में जो चाहोगे वह हाज़िर होगा

(٣١٧) عن بريدة انّ رَجُلاً قال يا رسول الله هل في الجَنّةِ من خيلٍ قال ان الله ادخلك الجَنّةَ فلا تشآءُ اَنْ تُحمَلَ فيها على فرسٍ مِنْ ياقوتةٍ حمرآءَ يطير بك في الجَنّةِ حيثُ شِئتَ اِلاَّ فَعلتَ وسالَهُ رَجلٌ فقال يا رسول الله صلى الله عليه وسلم هَلْ فِيْ الجَنّةِ من ابلٍ قال فلم يَقُلْ لَهُ ما قال لصاحبه فقال اِنْ يُدْخِلْكَ اللهُ الجَنّةَ يَكُنْ لَكَ فيها ما اشتهت نفسُكَ وَلذّتْ عينك. (ترمذی، مشکوۃ شریف)

हज़रत बुरीदा रज़ि० रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने पूछा कि या रसूलुल्लाह क्या जन्नत में घोड़े भी होंगे। आँहज़रत स० ने फ़रमाया अगर अल्लाह तआला ने तुम्हें जन्नत में दाख़िल किया और तुमने घोड़े पर सवार होने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की तो तुम्हें जन्नत में सुर्ख़ याकूत के घोड़े पर सवार किया जायेगा और तुम जन्नत में जहां जाना चाहोगे वह घोड़ा तेज़ रफ़्तारी के साथ दौड़ेगा और मानो उड़कर तुम्हें ले जायेगा उसके बाद आपसे एक और शख़्स ने सवाल किया और कहा या रसूलुल्लाह क्या जन्नत में ऊंट भी होंगे? हज़रत बुरीदा रज़ि० कहते हैं कि आँहज़रत स० ने उस शख़्स को वह जवाब नहीं दिया जो आपने उसके साथी को दिया था यानी जिस तरह आपने पहले शख़्स को जवाब दिया था इस तरह इस शख़्स को यह जवाब नहीं दिया कि अगर अल्लाह तआला ने तुम्हें जन्नत में दाख़िल किया और तुमने ऊंट पर सवार होने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की तो वह तुमको हासिल हो जायेगी बल्कि आपने बतरीके कुल्लिया फ़रमाया कि अगर अल्लाह तआला ने तुम्हें जन्नत में पहुंचा दिया तो वहां तुम्हें हर वह चीज़ मिलेगी जिसको तुम्हारा दिल चाहे और तुम्हारी आंखें पसन्द करेंगी।

इससे यह बात साफ़ और वाज़ेह होगी कि जन्नत नाम ही है मन चाही ज़िन्दगी का वहां अगर इन्सान कार चाहेगा कार हाज़िर, हवाई जहाज़ को तलब करेगा हवाई जहाज़ हाज़िर हो जायेगा, सैर करना चाहेगा उसके लिये बाग़ात हाज़िर, गुलाम साथ रहने वाले हाज़िर, हूर हाज़िर, शराब हाज़िर, शहद हाज़िर, शरबत हाज़िर, मुर्ग़ा बुटेर हाज़िर, मेवे हाज़िर, फल हाज़िर, गीत गाने वाली हूरें हाज़िर, मुहब्बत करने वाली हूरें हाज़िर, गोया कि हर ख़्वाहिश पूरी होगी हर एक मर्द औरत के लिये बस यह शर्त है

कि दुनिया में रब चाही ज़िन्दगी इख़्तियार करे। अल्लाह तआला जन्नत में मन चाही ज़िन्दगी देगा जहां कोई रंज व ग़म न होगा बस राहत ही राहत। अल्लाह तआला हम तमाम मुसलमानों को अपनी रहमत से जन्नत में दाख़ला नसीब फ़रमायें। (आमीन)

तबलीग़ वाले कहते हैं कि जन्नती जैसी सूरत को चाहेगा वैसी ही सूरत होगी

(۳۱۸) عن علی رضی اللّٰہ عنہ قال قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم اِنَّ فی الجَنَّة لسوقًا لا فیھا شرئ ولَا بیعٌ الا الصور من الرجال والنساء فاذا اشتھی الرَّجُلُ صورۃً دخل فیھا (ترمذی،مشکوۃ،بخاری ثانی)

हजरत अ़ली रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जन्नत मे एक बाज़ार है जिसमें ख़रीद व फ़रोख़्त नहीं होगी बल्कि वहां मर्द और औ़रतें जिस सूरत को पसन्द करेंगे उसमें समा जायेंगे और उस सूरत के हो जायेंगे।

मतलब यह है कि बाज़ार तो और भी होंगे मगर जिस तरह हमारे यहां होता है चप्पल का बाज़ार, कपड़े का बाज़ार, सोने चांदी का बाज़ार इस तरह जन्नत में एक ख़ास बाज़ार होगा जहां पर सिर्फ़ ख़ूबसूरत और हसीन व जमील सूरतें और शक्लें होंगी वहां जन्नत के मर्द और औ़रतें जाकर अपने पसन्दीदा चहरों को इख़्तियार करेंगे, जन्नती जिस सूरत को पसन्द करेगा वह सूरत उसकी बन जायेगी अगर कोई सूरत ना पसन्द हो तो दूसरी तब्दील भी हो सकती है। दुनिया में तो चहरों को मेकअप किया जाता है और ब्युटी पार्लर में जाकर चेहरों को खुशनुमा बना दिया जाता है मगर जन्नत में पूरा माडल ही चेंज होगा। मेकअप आपकी ज़रूरत न होगी ख़ुद मेकअप किये हुए चेहरे तैयार होंगे। बस जाओ और पसन्द कर लो और ख़ुद बख़ुद आपमें वह सूरत

समा जायेगी। यह है अल्लाह तआला का जन्नत वाला निज़ाम। बताओ इस अज़ीम इनआम को हासिल करने के लिये हम दुनिया को अल्लाह के लिये कुर्बान नहीं कर सकते हैं?

तबलीग़ वाले कहते हैं कि जन्नत में गाने भी होंगे

(٣١٩) عن علی رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم إنّ فی الجنة لَمُجتَمَعًا للحور العین یَرْفَعْنَ باصواتٍ لم تَسْمَع الخلائقُ مثلها یَقُلْنَ نحن الخالداتُ فلا نبید ونحن الناعماتُ فلا نَبْأسُ ونحن الراضیات فلا نَسْخَطُ طُوبٰی لمن کان لَنَا وکُنَّ لهٗ. (ترمذی، مشکوٰۃ)

हज़रत अ़ली रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जन्नत में हूरे–ईन के इज्तिमाअ़ की एक जगह होगी, जहां वह हूरें सैर व तफ़रीह और एक दूसरे से मिलने के लिये जमा हुआ करेंगी और वहां बुलन्द आवाज़ से गीत गायेंगी उनकी आवाज़ इस क़द्र दिलकश और हसीन होगी कि मख़लूक़ात में से किसी ने ऐसी आवाज़ कभी नहीं सुनी होगी वह हूरें इस तरह का गीत गायेंगी कि हमें ज़िन्दगी का दवाम हासिल है हम कभी मौत की आग़ौश में नहीं जायेंगी हम ऐश व चैन के साथ रहने वाली हैं हम कभी सख़्ती व परेशानी नहीं देखेंगी हम अपने परवरदिगार या अपने ख़ाविन्दों से राज़ी व ख़ुश रहने वाली हैं हम कभी नाख़ुश नहीं होंगी हर उस शख़्स के लिये मुबारकबादी है जो जन्नत में हमारे लिये और हम उसके लिये हैं।

मालूम हुआ कि यहां पर गाने भी होंगे संगीत भी होगा ख़ुशनुमा गाने वालियां भी होंगी जो इशक़िया और हम्दिया और शुक्रिया वाला गीत गायेंगी। आवाज़ की कशिश की हद न होगी बस दिल गीत से मसरूर शादमान होगा जन्नत के म्यूज़िक की

तरह कभी किसी ने म्यूज़िक न सुना होगा जो दिल को बहुत ही सुरूर बख़शेगा। और गाने वाली आज कल की तरह कंजरी न होंगी वह पाक और साफ़ और मेहफ़ूज़ मिनलजिमाअ बाकिरा होंगी जन्नती उसकी आवाज़ से भी ख़ुश होगा और उसके हुस्न को देखकर भी मस्त होगा और फिर हूर के धीमे धीमे और नज़ाकत भरे इशारे होंगे आंखों आंखों में बातें होंगी। और प्यारे इशारे होंगे। वहां कोई गुनाह न होगा और न दुनिया की तरह पीछे पीछे घूमना पड़ेगा बल्कि दोनों ख़ुद ही राज़ी होंगे। और वहां न किसी का ख़ौफ़ होगा और न किसी का डर। अगर (LOVE) मुहब्बत करनी हो तो सिर्फ़ जन्नत में करो जिसकी ख़ुद अल्लाह तआला इजाज़त देंगे और दुनिया में न अल्लाह की इजाज़त और न लोगों की यहां तो (LOVE) के नाम पर जूते पड़ते हैं। मगर जन्नत में जाइज़ होगा। यह तशरीह वाज़ेह कर रही है कि वहां पर हर तरह की चीज़ें होंगी अब यह लफ़्ज़ सुनकर बअज़ आशिक़ मिज़ाज यह सोचते हैं कि क्या वहां पर (LOVE) होगा अरे भाई वहां यानी जन्नत में तो असल (LOVE) होगा और जन्नत में तो (लव का) हक़ीक़ी मज़ा आयेगा। यहां जवानी एक न एक दिन ख़त्म ही होने वाली है। ज़रूर ख़त्म होगी मगर जन्नत में जब तक चाहो और जिससे चाहो प्यार करो कोई मना नहीं मगर उस (LOVE) के लिये दुनिया में बदमाशी छोड़नी होगी दुनिया में अल्लाह तआला की मर्ज़ी को पूरा करना होगा जब जन्नत में यह चीज़ें हासिल होंगी।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि जन्नत में नींद न होगी

(٣٢٠) عن جابر رضى الله عنه قال سَأَلَ رَجُلٌ رسول الله اَيَنَامُ اهل

الجنة قال النوم اخو الموت ولا يموت اهل الجنة . (بیہقی، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह स० से पूछा कि क्या जन्नती सोयेंगे? आपने फ़रमाया नींद यानी सोना मौत का भाई है और ज़ाहिर है कि जन्नती मरेंगे नहीं (और जब वह मरेंगे नहीं तो सोयेंगे भी नहीं)

तबलीग़ वाले इसी हदीस को बयान करते हैं कोई अपनी बातें बयान नहीं करते हैं। नींद का मसला मौत की तरह है जिस तरह इन्सान मौत से बेहिस हो जाता है नींद से भी कुछ देर के लिये इन्सान बेहिस हो जाता है। इसलिये उसको मौत की छोटी बहन बअ़ज़ रिवायतों में दुनिया में भाई कहा और बअ़ज़ में बहन और नींद यानी सोना थकान दूर करने के लिये ज़रूरी होता है इसके दो जवाबात हैं। एक यह कि ज़हन का थकना बीमारी है और बीमारी जन्नत मे न होगी। दूसरा जवाब यह है कि जन्नत में निशात बख़्शने वाली चीज़ें लाखों होंगी। सोना ही कोई ज़रूरी है? जिस तरह अल्लाह तआ़ला ने नींद में थकान को दूर करने का जौहर रखा है वह और चीज़ों मे पैदा कर देगा लेकिन पहला जवाब बहुत उ़म्दा है जो इश्कालात से मूहफ़ूज़ है। जन्नत की नेमतें ही इतनी होगी जो हर वक़्त एक नया रंग व मज़ा दिखायेंगी फिर ज़हन का क्या मतलब कि वह थक जाये।

नोट : अ़रबी में नींद मुज़क्कर है इसलिये लफ़्ज़ اَخٌ है और उर्दू में नींद मुअन्नस है। मअ़ना हैं मौत की बहन।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि जन्नत में पेशाब न होगा

(۳۲۱) عن جابر رضی اللّٰہ عنہ قال قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم انّ اھلَ الجنّة یاکلون فیھا ویشربون ولا یتفلون ولا یبولونَ ولا

يَتَغَوَّطُوْنَ وَلَا يَمْتَخِطُوْنَ قَالُوْا فَمَا بَالُ الطَّعَامِ قَالَ جُشَاءٌ وَرَشْحٌ كَرَشْحِ الْمِسْكِ يُلْهَمُوْنَ التَّسْبِيْحَ وَالتَّحْمِيْدَ كَمَا تُلْهَمُوْنَ النَّفَسَ. (مسلم، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जन्नती लोग जन्नत में ख़ूब खायेंगे पियेंगे लेकिन न तो थूकेंगे न पेशाब करेंगे न पाख़ाना करेंगे। और न नाक झाड़ेंगे। यह सुनकर बअ़ज़ सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ किया कि (जब जन्नती लोग पाख़ाना नहीं करेंगे) तो फिर खाने के फ़ुज़ले का क्या होगा? (उसके ख़ारिज होने की क्या सूरत होगी?) आप स० ने फ़रमाया कि खाने का फ़ुज़ला डकार और पसीना हो जायेगा जो मुश्क की ख़ुशबू की तरह होगा और जन्नतियों के दिल में तसबीह व तहमीद यानी सुब्हानल्लाह, अलहम्दुलिल्लाह का विर्द और ज़िक्रे इलाही (इस तरह) डाल दिया जायेगा (कि वह उनकी लाज़िमी आ़दत व मअ़मूल बन जायेगा जैसे सांस जारी है)

इस हदीस से तबलीग़ वालों की बात वाज़ेह और मुदल्लल हो गई कि जन्नत में पाख़ाना और पेशाब न होगा, अब इन्सान इस दुनिया के निज़ाम पर क़यास करते हुए सोचे तो ज़रूर सवाल करेगा कि भाई जब इन्सान वहां पर जन्नत की नेमत खायेगा और पियेगा तो वह तमाम खाना कहां जायेगा? उसके जवाब में शरीअ़त ने जवाब दिया कि जन्नत में खाने पीने के बाद पाख़ाना और पेशाब की जगह डकार होगी (लेकिन मैं और एक बात वाज़ेह कर दूं जो हदीस में मुजमल है) वह यह है कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जन्नत में डकार और पसीना होगा दोनों हदस न होंगे। नुक्ता यह है कि डकार तो पाख़ाने का काम देगी और पसीना पेशाब का। यानी जब बन्दा खाना खायेगा तो पाख़ाने के बजाये डकार और जब बन्दा शहद या शरबत या पानी या जूस पियेगा तो पेशाब की बजाये पसीना बनकर निकलेगा।

☆☆☆

तबलीग़ वाले कहते हैं कि जन्नती जवान और बग़ैर दाढ़ी के होंगे

(۳۲۲) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم اَهْلُ الجنة جُرْدٌ مُرْدٌ كَحْلٰى لا يُفْنٰى شبابُهم ولا تُبْلٰى ثيابُهُمْ. (ترمذی، مشکوٰۃ شریف، داری)

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जन्नती बग़ैर बालों के मर्द होंगे (यानी बग़ैर दाढ़ी के, और हाथ पैर पर बाल न होंगे सर पर तो होंगे) उनकी आंखे सुरमगीं होंगी, उनका शबाब (जवानी) कभी फ़ना न होगा और न उनके कपड़े पुराने होंगे।

इस हदीस में बताया गया है कि जन्नत में अल्लाह तआला मर्दों को बग़ैर दाढ़ी वाला रखेगा बदन पर बाल न होंगे जो बे रौनक़ जाने जाते हैं बल्कि सर के बाल बहुत हसीन होंगे अगर कोई दुनिया में उन बालों को देख ले तो फ़रेफ़्ता हो जाये। जिसमें नाज़ुक सी लचक और चमकती हुई शुआयें होंगी जो दिल–पज़ीर होंगे मगर यह हिमाक़त न करना और यह कहना शुरू न करना कि हम तो जन्नत वालों की सुन्नत इख़्तियार करेंगे और उनकी तरह दाढ़ी के बाल काटेंगे।

पहली बात तो दुनिया में जन्नत वाले तरीक़ों पर चलने का हुक्म नहीं दिया गया बल्कि हुज़ूर अकरम स० के तरीक़ों पर चलने का हुक्म दिया गया है अगर यहां पर ही जन्नत की सुन्नत अदा करोगे तो जन्नत में कहा जायेगा कि तुमने तो जन्नत की सुन्नत अदा कर दी है जिन लोगों ने नहीं की उनको जन्नत में जाने दो और तुम अब दोज़ख़ की सुन्नत अदा करो। और दूसरी

बात यह है कि तुम दाढ़ी काटोगे और जन्नत वालों की दाढ़ी होगी ही नहीं फिर सुन्नत कैसी दोनों में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ है इससे मालूम हुआ कि दाढ़ी का काटना न सुन्नते रसूल है और न सुन्नते जन्नत, बल्कि यह शैतानी फ़रेब है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि सत्तर जोड़ों के बावजूद हूर के जिस्म का हुस्न ज़ाहिर होगा

(۳۲۳) عن ابی سعید الخدری رضی اللّٰہ عنہ قال قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم اِنَّ اَوَّلَ زُمْرَةٍ یدخلونَ الجنة یوم القیامة ضَوْءُ وجوھِھِمْ عَلٰی مثل ضوءِ القمر لیلةَ البدر والزُّمْرَةُ الثانیةُ علی مثل اَحْسَنَ کوکب دُرِّیِّ فی السَّمَاءِ لِکُلِّ رَجُلٍ منھم زوجتان علی کُلِّ زوجة سبعون حُلَّة یُری مُخُّ ساقِھا من وَّرَاءِھَا. (ترمذی، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर अकरम स० ने फरमाया क़ियामत के दिन जन्नत में लोग सबसे पहले दाख़िल होंगे (यानी अंबिया अ़लै०) उनके चेहरे चौदहवीं रात के चांद की तरह रोशन व चमकदार होंगे और दूसरी जमाअ़त के लोग (जो अंबिया अ़लै० के बाद जन्नत में दाख़िल होंगे वह औलिया व सुलहा हैं) उनके चेहरे आसमान के उस सितारे की तरह रोशन चमकदार होंगे जो सबसे ज़्यादा चमकता है और उन जन्नतियों में से हर शख़्स के लिये दो बीवियां होंगी और हर बीवी के जिस्म पर लिबास के सत्तर जोड़े होंगे और वह दोनों बीवियां इतनी हसीन होंगी कि उनकी पिंडलियों के अन्दर का गूदा सत्तर जोड़ों के बावजूद नज़र आता होगा।

तबलीग़ वाले इस हदीस को बयान करते हैं कि हूर के सत्तर जोड़ों के बावजूद पिंडलियों की हड्डी का गूदा नज़र

आयेगा हूर इतनी हसीन और ख़ूबसूरत होगी कि उसकी ख़ूबसूरती की वजह से सत्तर कपड़े भी उसके हुस्न को छुपा नहीं सकते। उन हूरों को न पाख़ाना होगा और न पेशाब और न नाक की रेज़िश, यह हूरें तमाम ऐबों से पाक साफ़ होंगी लेकिन आज इन्सान चाहे मर्द हो या औरत इतने ऐबों के बावजूद एक दूसरे पर इश्क़ के तीर चलाते हैं और अपनी आख़िरत को ख़राब करते हैं और इतनी उ़म्दा और पाक व साफ़ ग़ैर फ़ानी नेमत को इस चन्द साला ज़िन्दगी के लिये फ़रोख़्त करते हैं। मैं कहता हूं दोस्तो! दुनिया को ज़रूर कमाओ मगर इतनी जितनी हज़म हो सके और जिसके ज़रिये ईमान मजरूह होने से बच जाये और दीन का काम करने में किसी का मुहताज न हो और दुनिया के साथ इस उ़म्दा और पाकीज़ा जन्नत के हुसूल के लिये भी कुछ कुर्बानियां देनी होंगी जब एक घटिया दुनिया का कोई काम बग़ैर कुर्बानी के नहीं हो सकता और अपनी मर्ज़ी से नहीं हो सकता अगर कोई कहता है कि अपनी मर्ज़ी से काम होता है तो मैं कहता हूं कि गाड़ियों को सिर्फ़ पानी से चलाओ फिर देखते हैं कि आप कितने तीस मार खां हैं। खुदा की क़सम! जिस तरह दुनिया का कोई काम बग़ैर कुर्बानी के और अपनी मन चाही से नहीं हो सकता मुझको बताओ क्या इतनी उ़म्दा और बे-मिसाल जन्नत अपनी मर्ज़ी से अ़मल करने पर हासिल होगी हरगिज़ नहीं, ता-क़यामत नहीं बल्कि जन्नत के लिये अल्लाह की मर्ज़ी पर चलना पड़ेगा। हुज़ूर अकरम स० के तरीक़ों को इख़्तियार करना पड़ेगा। और तबलीग़, खुदा की क़सम बिल्कुल नबियों वाला और सहाबा रज़ि० वाला काम है अल्लाह गवाह है अगर यक़ीन न हो तो सिर्फ़ चालीस दिन जमाअ़त में जाकर देखो दूर से किसी की हक़ीक़त मालूम नहीं हो सकती क्या तुम एक किलो मीटर से आदमी के औसाफ़

पहचान सकते हो तुम उसको नहीं जान सकते। हां अगर तुम करीब चले जाओ या किसी मशीन के ज़रिये देख लो तब तो बता सकते हो और या मशीन से देखना या क़रीब पहुंचना ऐसा है जैसे कि आप जमाअ़त वालों की जमाअ़त में जाकर देखो उनके उसूलों को पढ़ो, ख़ैर इस हदीस में जन्नती को दो बीवियां मिलने का ज़िक्र है जबकि एक हदीस में है कि सबसे कमतर जन्नती को बहत्तर हूरें मिलेंगी दोनों में मुताबक़त उलमा ने यह बयान की है कि इस हदीस में जो दो बीवियों का ज़िक्र है वह इस ख़ुसूसियत वाली होंगी कि उनकी पिंडली के अन्दर का गूदा उनके लिबास के सत्तर जोड़ों के ऊपर से भी नज़र आयेगा और सत्तर बीवियां हूरों में से इस जन्नती को जन्नत में मिलेंगी और दोनों मिलकर बहत्तर होंगी मगर यह उन दोनों की तरह न होंगी।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि अगर कोई हूर दुनिया में सिर्फ़ झांक दे तो पूरी दुनिया रोशन हो जाये

(۳۳۴) عن انس رضی اللّٰہ عنه قال قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیه وسلم فی سبیل اللّٰہ اَوْ رَوْحَةٌ خَیرٌ مِّنَ الدنیا وما فیها ولو اَنَّ امراۃً مِّنْ نساء اهل الجنةِ اِطَّلَعَتْ الی الارض لَاَضَآئَتْ ما بینهما ولملأت ما بینهما ریحاً وَلَنِصیفُها علی راسها خیرٌ مِّنَ الدنیا وما فیها. (بخاری، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि रसूल करीम स० ने फ़रमाया सुबह को और शाम को एक बार ख़ुदा की राह में निकलना दुनिया की तमाम चीज़ों से बेहतर है और अगर जन्नतियों में से किसी की कोई औरत (यानी कोई हूर) ज़मीन की तरफ़ झांक ले तो मशरिक़ व मग़रिब के दर्मियान को (यानी दुनिया के इस कोने से लेकर उस कोने तक की तमाम चीज़ों

को) रोशन व मुनव्वर कर दे और मशरिक़ से लेकर मग़रिब तक की तमाम फ़िज़ा को ख़ुश्बू से भर दे और उसके सर की एक ओढ़नी इस दुनिया और दुनिया की तमाम चीज़ों से बेहतर है।

इस हदीस से ही तबलीग़ वाले कहते हैं कि अगर जन्नत की औरत सिर्फ़ दुनिया में झांक दे तो मशरिक़ व मग़रिब रोशन हो जायेंगे और यह हदीस तबलीग़ वालों की दलील है, बअ़ज़ अहमक़ हज़रात उनकी अहादीस को या तो झूठी तसव्वुर करते हैं या यह कहते हैं कि यह हज़रात मुबालग़ा करते हैं मगर तबलीग़ वाले दोनों से ख़ाली हैं। अलहम्दु लिल्लाह, माशाअल्लाह कोई होगा, तमाम का अच्छा होना क्या कोई ज़रूरी ही है। कुछ अफ़राद में नुक़्स ज़रूर होता है इन्सान हैं फ़िरश्ते थोड़े ही हैं। ख़ैर मैं तमाम मुसलमान औरतों को इस हदीस से एक उनकी दिल की आरज़ू को बयान करता हूं। औरतों की आरज़ू होती है कि उनके कपड़े क़ीमती हों और वह सोने चांदी से मज़य्यन और आरास्ता हों, जो भी उनको देखे वह चकरा जाये, मैं कहता हूं अगर औरतों को आरज़ू पूरी करने की ख़्वाहिश हक़ीक़त में है तो मैं तुमको बेहतरीन और लाज़वाल ख़ज़ाना बताता हूं कि सिर्फ़ अल्लाह की और रसूल स० की मानकर चलो शौहर को ख़ुश रखो किसी सहेली की ग़ीबत या बुराई मत करो, तुमको अल्लाह वह देगा जिसका तुम इरादा करोगी यह तुम्हारे कन्जूस बख़ील मर्द क्या देंगे? जन्नत में औरतों की तमन्ना को तो अल्लाह ही बेहतर तरीक़े पर पूरी करेगा और किस तरह करेगा एक झलक बता दूं। देखो इस हदीस में हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जन्नत की औरतों को ऐसा हुस्न और जमाल दिया जायेगा कि अगर जन्नती औरत दुनिया में सिर्फ़ झांक भी दे तो सूरज और चांद मांद पड़ जायेंगे और तुम्हारा हुस्न ग़ालिब हो जायेगा। तुम तो चाहती हो

कि तुम बड़ी ख़ूबसूरत बनो इसके लिये तो हज़ार रूपये का मैकअप बॉक्स लाती हो और अपने शौहर का बीड़ा ग़र्क़ करती हो उसकी ज़रूरत न होगी कि तुम मैकअप करो बल्कि उसके बग़ैर तुमको देखकर सूरज भी शर्मा जायेगा कि यह कौनसा मेरे हुस्न का भी सरदार आ गया, हां! अगर तुम अल्लाह तआला की मानोगी और सुनो! तुम चाहती हो तुम्हारे शौहर तुम्हें ख़ूब हसीन और स्मार्ट जोड़े लाकर दें। जिसको पहनने से देखने वाले लोग मुंह में उंगलियों को रख लें। मैं कहता हूं कि खुदा की कसम तुम बहुत लालची हो तुम्हारी कपड़ों की तमन्ना शौहर नहीं पूरी कर सकता मगर अल्लाह तआला पूरी करेगा और इस तरह पूरी करेगा कि औरतों को ओढ़नी ही इतनी क़ीमती पहनायेगा कि अगर पूरी दुनिया और पूरी दुनिया की चीज़ें एक तरफ़ और तुम्हारी ओढ़नी एक तरफ़ तुम्हारी ओढ़नी क़ीमती हो जायेगी इस पूरी दुनिया से अगर पूरी दुनिया को बेचकर जन्नत की ओढ़नी ख़रीदनी चाहो तब भी ख़रीद नहीं सकती हो इतनी क़ीमती सिर्फ़ ओढ़नी होगी अब खुद सोचो तुम्हारी साड़ी कितनी क़ीमती होगी तुम्हारा ड्रेस कितना क़ीमती होगा, अरे बताओ तुम खुद कितनी क़ीमती हो जाओगी अगर अल्लाह की मानोगी। तो क्या तुमको जन्नत पसन्द नहीं है अगर है तो फिर देर किस बात की आओ और अल्लाह और उसके रसूल स० के तरीक़ों को ढूंढ ढूंढ कर इख़्तियार करो इसलिये कि आज औरतों की बे–हयाई की हद हो चुकी है बस अल्लाह ही बचाये। देखो आज लड़कियां कैसी घूमती हैं जैसे उनके घर में कपड़े ही न हों ख़ुद तो डूबती हैं दूसरों को भी डुबाना चाहती हैं। अल्लाह तआला हम सबकी हिफ़ाज़त फ़रमाये।

(आमीन)

तबलीग़ वाले हूर का कांधों पर हाथ मारने का वाक़िआ बयान करते हैं

(۳۲۵) عن ابی سعید الخدری رضی اللّٰہ عنہ عن رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم قال اِن الرَّجُلَ فی الجنۃ لیتکئ فی الجنۃ سبعین مَسْنَدًا قَبْلَ اَنْ یَتَحَوَّلَ ثُمَّ تاتیہِ امرَاۃٌ فتضرب علی منکِبَیْہِ فینظُرُ وجھَہٗ فی خَدِّھا اصفی من المِراٰۃِ وَاِنَّ اَدْنٰی لُؤْلُؤۃٍ علیھا تُضِیءُ ما بین المشرق والمغرب فَیُسَلِّمُ علیہ فَیَرُدُّ السلام ویسْألُھا من انتِ فتقولُ انا مِنَ المزید واِنَّہٗ لیکونُ علیھا سبعون ثوباً فینفذھا بَصَرُہٗ حتّٰی یری مُخَّ ساقِھا من وَّرَاءِ ذلک وَاِنَّ علیھا مِنَ التِّیجَانِ اِنَّ اَدْنٰی لُؤْلُؤۃٍ منھا لَتُضِیءُ مابین المشرق والمغرب. (رواہ احمد، مشکوٰۃ)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० हुज़ूर अकरम स० से नक़ल करते हैं कि आप स० ने फ़रमाया जन्नती मर्द जन्नत में सत्तर मसनदों का तकिया लगाकर बैठेगा क़ब्ल इसके कि एक पहलू से दूसरा पहलू बदले जन्नत की औ़रतों में से एक औ़रत उसके पास आयेगी और (उसको अपनी तरफ़ मुतवज्जह व माइल करने के लिये) उसके कांधे पर हाथ मारेगी (यानी थपकी मारेगी उसके कांधों पर) वह मर्द उसकी तरफ़ मुतवज्जह होगा और उसके रुख़सारों में जो आइने से ज़्यादा साफ़ व रोशन होंगे अपना चेहरा देखेगा और हक़ीक़त यह है कि उस औ़रत के (किसी ज़ेवर या ताज में जड़ा हुआ) एक मअ़मूली सा मोती भी (इस क़द्र बेश क़ीमती होगा कि) अगर वह दुनिया में आ जाये तो मशरिक़ से मग़रिब तक (की तमाम चीज़ों) को रोशन कर दे।

बहरहाल वह औ़रत उस मर्द को सलाम करेगी और मर्द उसके सलाम का जवाब देगा और पूछेगा कि तुम कौन हो वह कहेगी कि मैं मज़ीद (यानी मैं हूरे मज़ीद) में से हूं और सूरते हाल यह होगी कि इस औ़रत के जिस्म पर सत्तर (रंग बिरंग) के

कपड़ों का (तह दर तह) लिबास होगा और उस मर्द की नज़र औरत के इस लिबास में से भी पार हो जायेगी (यानी वह लिबास के नीचे छुपे हुए औरत के हुस्न व जमाल और उसके जिस्म की नज़ाकत व लताफ़त का नज़ारा करेगा) यहां तक कि वह मर्द उस औरत की पिंडली के गूदे को लिबास के पीछे से देखेगा, गोया (उसकी निगाह इतनी तेज़ और साफ़ होगी कि कोई भी चीज़ उसके देखने में रुकावट नहीं बनेगी) और उस औरत के सर पर ताज रखा हुआ होगा और उस ताज का मअमूली सा मोती भी ऐसा होगा कि अगर वह (दुनिया में आ जाये) तो मशरिक़ से मग़रिब तक (की हर चीज़) को रोशन व मुनव्वर कर दे।

इस हदीस को ही तबलीग़ वाले बयान करते हैं। दोस्तो! देखो इस जन्नती इश्क़ को कि किस उम्दा और नज़ाकत व लताफ़त वाले अन्दाज़ में इशारा और कलाम हो रहा है हूर आयेगी जब जन्नती साहब मसनद पर बैठे हुए होंगे और वह प्यार भरा नज़ाकत आमेज़ हाथ जन्नती के कांधों पर मारकर कलाम करेगी और जन्नती जब उसको देखेगा तो हैरान होगा कि इतनी स्मार्ट लवर कि जिसके रुख़सारों में दुनिया का नज़ारा हो रहा है जिसकी आंखों से नशीले इशारों की लहरें आ रही हैं वह जन्नती सूफ़ियत दिखायेगा और कहेगा कि तुम कौन हो वह कहेगी। लो इनसे मिलो मुझको पहचानते नहीं हो अरे मैं तो तुम्हारी मज़ीद, तुम्हारी लवर, तुम्हारी वाइफ़, तुम्हारी बीवी हूं और मुझसे अन्जानापन, फिर हज़रत जन्नती साहब अपनी लवर की तरफ़ देखना शुरू करेंगे। हज़रत की नज़र बिल्कुल तेज़ और हूर का बदन बिल्कुल साफ़। अब हज़रत जन्नती साहब की नज़र हूर के हर हिस्से का मुशाहेदा जोड़ों के बाहर से ही करेगी और हज़रत को हूर का एक एक हिस्सा ख़ूबसूरती की वजह से नज़र आयेगा

यहां तक कि हूर की पिंडली की हड्डी का गूदा भी साफ़ नज़र आयेगा अब दोनों का अच्छी तरह तआरुफ़ हो जायेगा। अब अल्लाह तआला जाने आगे अब क्या क्या होगा। इन्तिज़ार कीजिये जन्नत का क्या पूरी बात यहीं सुनोगे या वहां के लिये भी कुछ छोड़ोगे अब बुराइयों से तौबा कर लो और इस जमील और उम्दा जन्नत के हुसूल में मसरूफ़ हो जाओ यह तशरीह मैंने इस हदीस को सामने रखकर की है मगर तर्ज़ जवानों का इख़्तियार किया ताकि जवानों को जन्नत की हक़ीक़त उनकी ज़बान में मालूम हो जाये, अल्लाह तआला अपनी रहमत से हम सबको जन्नत मरहमत फ़रमायें (आमीन) यह हदीस दुनिया से बे-रग़बती और जन्नती ऐश को बताने के लिये बयान की है।

जन्नतियों की मर्दाना ताक़त, तबलीग़ वाले बयान करते हैं

(٣٢٦) عن انس رضی الله عنه عن النبی صلی الله علیه وسلم قال يعطى المومنُ فى الجَنَّةِ قوّةَ كذا وكذا من الجماع قيل يا رسول الله اَوَ يَطِيقُ ذلك قال يُعطى قوّةَ مائَةٍ. (ترمذی، مشکوٰۃ شریف)

तर्जुमाः- हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जन्नत में मोमिन को जिन्सी इख़्तिलात की इतनी इतनी कुव्वत अ़ता की जायेगी। अ़र्ज़ किया गया या रसूल अल्लाह क्या एक मर्द इतनी औ़रतों से जिन्सी इख़्तिलात (मुबाशरत) की ताक़त रखेगा? आप स० ने फ़रमाया (जन्नत में एक मर्द को) सौ मर्दों की कुव्वत अ़ता की जायेगी (और जब उसको इतनी ज़्यादा कुव्वते मर्दाना हासिल होगी तो फिर वह कई कई औ़रतों से जिन्सी इख़्तिलात की ताक़त क्यों नहीं रखेगा)

इस हदीस ही को तबलीग़ वाले बयान करते हैं कि एक

जन्नती को सौ मर्दों के बराबर ताक़त हासिल होगी और वह एक वक़्त में कई कई बार जिमाअ़ करेगा, जन्नत की हर चीज़ बे मिसाल होगी। मैं आपको बता दूं, एक मर्तबा मुझसे मेरे उस्ताज़ ने कहा कि मैंने आज ही एक किताब में पढ़ा है कि जन्नती जब जन्नत में जिमाअ़ करेगा और जब वह दुख़ूल करेगा तो चालीस साल तक दुख़ूल ही करता रहेगा यानी जिमाअ़ करने से हटेगा ही नहीं और न ज़कर यानी अपनी शर्मगाह को ख़ारिज करेगा।

जन्नत का तज़्किरा था इसलिये यह बात भी ज़िक्र कर दी। दीन की हर बात को वाज़ेह करना ज़रूरी है, शर्म से काम नहीं चलेगा दीन के मआ़मले में, बाक़ी वक़्त शर्म के लिये पड़ा है। अब हक़ीक़त को वाज़ेह करने का वक़्त है तो वाज़ेह कर दूं इसमें भी सवाब है अगर कोई उसे बुरा जाने तो वह अहमक़ है जबकि आक़ा मुहम्मद स० इस बात को वाज़ेह फ़रमा रहे हैं और तुम उसको सही न जानो यह दिल की कजी है। ख़ैर जन्नती को सौ मर्दों की ताक़त अ़ता की जायेगी और वह एक वक़्त में मुतअ़द्दद हूरों से मशग़ूल होगा यह ख़ासियत सिर्फ़ जन्नत वालों को हासिल होगी। आओ जन्नत की तरफ़ और आओ अल्लाह की मर्ज़ी की तरफ़ और आओ मुहम्मद स० की सुन्नतों की तरफ़। अल्लाह तआ़ला बड़ा रहीम है मग़फ़िरत करने वाला है।

जन्नत का ऐश दाइमी है

(۳۲۷) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم مَنْ یدخُلُ الجنةَ یَنْعَمُ ولا یَبْاسُ ولا یَبْلٰی ثِیَابُهٗ ولا یَفْنٰی شبابه.
(مسلم، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जो भी जन्नत में दाख़िल होगा ऐश व इशरत में रहेगा न

फ़िक्र व ग़म उसके पास फटकेगा, न उसके कपड़े मैले पुराने होंगे और न उसका शबाब फ़ना होगा।

जन्नत अपनी तमाम तर नेमतों व आसाइशों और राहतों के साथ दारुलक़रार है यानी वहां किसी भी नेमत व राहत को न ज़वाल व फ़ना है और न वहां किसी क़िस्म का ग़म होगा और न तग़य्युर व तब्दीली और न नुक़सान व ख़राबी का ख़ौफ़ होगा, हूरों की जवानी भी बरक़रार और जन्नती की जवानी भी बरक़रार। ख़्वाहिशात मांद न होंगी। तबीअ़त बोर न होगी। हर हफ़्ता बाज़ार भी भरेगा। जन्नतियों को हर जुम्आ़ को अल्लाह तआ़ला कुरआन खुद सुनायेंगे बताओ कितना लुत्फ़ आयेगा अल्लाह की आवाज़ सुनने में, जब जन्नती सिर्फ़ हूर के गीत और आवाज़ से मस्त हो जायेंगे तो अल्लाह तआ़ला की आवाज़ बताओ कितनी उ़म्दा होगी इसका कौन अन्दाज़ा कर सकता है? जब जन्नत के फूलों के अन्दर मुख़तलिफ़ क़िस्म की लज़्ज़तें होंगी तो बताओ अल्लाह तआ़ला की आवाज़ में कितनी लज़्ज़त होगी। जन्नती जन्नत का मज़ा भूल जायेगा। अल्लाह की आवाज़ सुनकर, बस वह अल्लाह की आवाज़ में खो जायेगा और मज़ा लेगा जब क़िराअत में जन्नत के वाअ़दे आयेंगे तो जन्नती कितने ख़ुश होंगे और तस्दीक़ व तौसीक़ बिल्हाल भी करेंगे कि हमने अल्लाह का वअ़दा सच्चा पाया, हमारे ख़ुदा ने तो वअ़दे से कई गुना मज़ीद अ़ता किया है। बताओ कितना पुर–मुसर्रत मन्ज़र होगा अल्लाह तआ़ला तमाम मुसलमानों को अ़ता फ़रमायें।

दोस्तो! जमाअ़त में वक़्त लगाओ, तकब्बुर से बचो और उ़लमा की क़द्र करो चाहे वह बे–अ़मल हों क्योंकि पता नहीं कब अल्लाह उनके साथ नवाज़िश का मामला कर दे और ख़ुद का तो कुछ पता ही नहीं।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि जन्नत को दुशवारियों से और दोज़ख़ को ख़्वाहिशात से घेरा गया है

(۴۴۸) عن ابی هريرة رضی الله عنه عن النبی صلی الله عليه وسلم قال لَمَّا خلق الله الجنة قال لجبرئيل اذهب فانظر اليها فذهب فنظر اليها والى ما اَعَدَّ الله لاهلها فيها ثُمَّ جآء فقال اِىْ رَبِّ وَعِزَّتِكَ لايسمعُ بها احدٌ الاّ دَخَلَهَا ثُمَّ حَفَّهَا بالمكارِهِ ثُمَّ قال يا جبرئيل اذهب فانظر اليها قال فذهب فنظر اليها ثم جاء فقال اى ربِّ وعزّتك لقد خشيتُ ان لايدخلها احدٌ قال فَلَمَّا خلق الله النار قال يا جبرئيل اذهب فانظر اليها قال فذهب فنظر اليها ثُمَّ جآء فقال اى رب وعزتك لا يسمع بها احدٌ فيدخلُها وحَفَّها بالشهوات ثم قال يا جبرئيل اذهب فانظر اليها قال فذهب فنظر اليها فقال اى رب وعزتك فقد خشيتُ ان لا يَبْقى اَحَدٌ الاّ دَخَلَهَا.

(بخاری ثانی، ترمذی، ابوداؤد، نسائی، مشکوۃ شریف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने जब जन्नत को बनाया तो हज़रत जिबरईल अ़लै० से फ़रमाया कि जाओ ज़रा जन्नत की तरफ़ निगाह उठाकर तो देखो मैंने कितनी अच्छी और किस क़द्र नाज़ुक और दीदह-ज़ेब चीज़ बनाई है चुनांचे वह गये और जन्नत को और उसकी उन तमाम चीज़ों को जो अल्लाह तआला ने अहले जन्नत के लिये बनाई हैं देखा, फिर वापस आकर अ़र्ज़ किया कि परवरदिगार तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम (तूने इतनी अअ़ला और नफ़ीस जन्नत बनाई है और उसको ऐसी ऐसी नेमतों और ख़ूबियों से मअ़मूर किया है कि) जो कोई भी उसके बारे मे सुनेगा तो वह उसमें दाख़ले की यक़ीनन ख़्वाहिश करेगा तब अल्लाह

तआला ने जन्नत के चारों तरफ़ उन चीज़ों का अहाता क़ायम कर दिया जो नफ़्स को नागवार हैं और फ़रमाया कि जिबरईल जाकर जन्नत को दोबारह देख आओ। चुनांचे वह गये और जन्नत को (इस इज़ाफ़े के साथ जो चारों तरफ़ अहाते की सूरत में हुआ था) देखकर वापस आये और अर्ज़ किया कि परवरदिगार तेरी इज़्ज़त की क़सम! मुझे ख़दशा है कि अब शायद ही कोई जन्नत मे दाख़िल होने की ख़्वाहिश करे (क्योंकि उसके गिर्द मकरूहाते नफ़्स ना–पसन्दी का जो अहाता क़ायम कर दिया गया है उसको उ़बूर करने के लिये नफ़सानी ख़्वाहिशात को मारना पड़ेगा और ज़ाहिर है कि इन्सान का ख़्वाहिशाते नफ़्स को मारकर जन्नत तक पहुंचना दुशवार होगा) आँहज़रत स० ने फ़रमाया इसी तरह जब अल्लाह तआला ने दोज़ख़ बनाई तो हुक्म दिया कि जिबरईल जाओ दोज़ख़ को देख आओ (कि मैंने कितनी होलनाक और बुरी चीज़ बनाई है) आँहज़रत स० ने फ़रमाया पस जिबरईल अ़लै० गये और दोज़ख़ को देखकर वापस आये तो अ़र्ज़ किया कि परवरदिगार तेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम जो कोई भी दोज़ख़ के बारे में सुनेगा वह डर के मारे उससे दूर रहेगा।

और इसमें जाने की ख़्वाहिश न करेगा तब अल्लाह तआला ने दोज़ख़ के चारों तरफ़ ख़्वाहिशाते नफ़्स और लज़्ज़ते दुनिया का अहाता क़ायम कर दिया और जिबरईल से फ़रमाया कि जिबरईल जाओ दोज़ख़ को दोबारह देख आओ। आँहज़रत स० ने फ़रमाया चुनांचे हज़रत जिबरईल अ़लै० गये और दोज़ख़ को (इस अहाते के इज़ाफ़े के साथ) देखकर वापस आये और अ़र्ज़ किया कि परवरदिगार तेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम मुझे ख़दशा है कि अब शायद ही कोई बाक़ी बचे जो दोज़ख़ में न जाये (क्योंकि जिन ख़्वाहिशाते नफ़्स और लज़्ज़तें दुनिया का अहाता दोज़ख़ के

चारों तरफ़ कर दिया गया है वह इस क़द्र दिलफ़रेब नज़र आ रहा है कि नफ़्स की पैरवी करने वालों में से ऐसा कोई भी नहीं होगा जो इन ख़्वाहिशात व लज़्ज़ात की तरफ़ न लपके और उसके नतीजे में दोज़ख़ में न जाना पड़े।

और दूसरी हदीस में है :

(۳۲۹) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم حُفَّتِ الجَنَّة بالمكاره وحُفَّتِ النارَ بالشهوات. (بخاری ومسلم)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जन्नत ना–पसन्दीदा चीज़ों (सख़्तियों) से घिरी हुई है और दोज़ख़ शहवतों से।

तबलीग़ वाले हज़रात इन्हीं अहादीस को बयान करते हैं और बात बिल्कुल साफ़ है कि जन्नत को अल्लाह तआ़ला ने दुशवारियों और ना–पसन्दीदा चीज़ों से बांध दिया है और दोज़ख़ को ख़्वाहिशाते नफ़्स से मिला दिया है। अब अल्लाह तआ़ला तमाम हालात बयान करने के बाद इम्तिहान लेगा और इम्तिहान के ही लिये इन्सान को दुनिया में भेजा है। अल्लाह तआ़ला मुसलमानों को ख़्वाहिशाते नफ़्स से मेहफ़ूज़ रखे। (आमीन)

तबलीग़ वाले कहते हैं कि दोज़ख़ की आग दुनिया की आग से सत्तर गुना गर्म है

(۳۳۰) عن ابی هریرة رضی الله عنه انّ رسول الله صلی الله علیه وسلم قال نارُکم جُزْءٌ من سبعین جُزْءًا مِن نار جهنم قیل یا رسول الله ان كانت لكافيةً قال فُضِلَتْ عَلَيْهِنَّ بِتِسْعَةٍ وستِّينَ جُزْءًا كُلُّهُنَّ مثلُ حَرِّهَا.
(مشكوٰة، بخاری ومسلم)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया तुम्हारी (दुनिया की) आग दोज़ख़ की आग से सत्तर

हिस्सों में से एक हिस्सा है। अ़र्ज़ किया गया या रसूलुल्लाह यह तो दुनिया की आग ही (अ़ज़ाब देने के लिये) काफ़ी थी (फिर इससे भी ज़्यादा हरारत व तपिश रखने वाली आग पैदा करने की क्या ज़रूरत थी) आँहज़रत स० ने फ़रमाया दोज़ख़ की आग को यहां (दुनिया की) आग से उनहत्तर हिस्सा बढ़ा दिया गया है और इन उनहत्तर हिस्सों में से हर एक हिस्सा तुम्हारी (दुनिया की) आग के बराबर है।

तबलीग़ वाले हज़रात इसको बयान करते हैं कि दुनिया की आग से दोज़ख़ की आग सत्तर दर्जा गर्म होगी जिसके ज़रिये गुनाहगारों को अ़ज़ाब दिया जायेगा। नाफ़रमानों को बता दिया जायेगा कि दुनिया में अब तक ढ़ील दे रखी थी अब आओ और दोज़ख़ में दाख़िल हो जाओ नाफ़रमानों का यही ठिकाना है सहाबा रज़ि० में से किसी ने सवाल किया था कि हुज़ूर स० दुनिया की ही आग काफ़ी है बन्दों को अ़ज़ाब देने के लिये, इससे सत्तर दर्जा तेज़ आग की ज़रूरत क्या थी? हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया दोज़ख़ के उनहत्तर हिस्से हैं और उनहत्तर हिस्सों में से एक हिस्सा दुनिया की तमाम आग से बढ़कर है गोया कि आप ताकीद और नसीहत फ़रमा रहे हैं कि भाई तुम इसकी हरारत से ही परेशान हो गये यह तो सत्तर दर्जा गर्म, और दोज़ख़ की आग की जसामत भी दुनिया की तमाम आग से बढ़ी होगी। हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया दुनिया की आग से दोज़ख़ की आग उनहत्तर दर्जा तेज़ होगी और उनहत्तर हिस्सों में से एक हिस्सा दुनिया की तमाम आग से बढ़ा हुआ है, इस आग को सत्तर दर्जा दुनिया की आग से इसलिये गर्म किया कि दुनिया वालों और अल्लाह के अ़ज़ाब में बराबरी न हो सके जिस तरह अल्लाह के इनआ़मात में कोई बराबरी नहीं कर सकता है इसी तरह अ़ज़ाब में

भी कोई बराबरी नहीं कर सकता।

दोज़ख़ कितनी बड़ी होगी

(٣٣١) عن ابن مسعود رضی الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يوتى بجهنم يومئذ لها سبعون الف زمام مع كل زمام سبعون الف ملك يجرونها. (مسلم مشکوۃ شریف)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया इस दिन (यानी कियामत के दिन) दोज़ख़ को उस जगह से कि जहां उसको अल्लाह तआला ने पैदा किया लाया जायेगा उसकी सत्तर हज़ार बागें होंगी और हर एक बाग पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुतअय्यन होंगे जो उसको खींचते हुए लायेंगे।

दोस्तो! पहली बात यह है कि एक एक फ़रिश्ता कितना बड़ा होता है पता नहीं दुनिया से कितना बड़ा होगा और बअज़ उससे कई गुना बड़े फ़रिश्ते भी हैं और उनसे छोटे भी। और एक दो फ़रिश्ते खींचने वाले न होंगे बल्कि सत्तर हज़ार फ़रिश्ते खींचकर लायेंगे और उसको जन्नत और हश्र के दर्मियान रखा जायेगा और उस दोज़ख़ पर एक रास्ता बनाया जायेगा जो दोज़ख़ की पुश्त पर ले जायेगा उसका नाम पुलसिरात होगा जो बाल से भी बारीक होगा। जो बन्दा उसको पार कर ले वह जन्नत में दाख़िल हो जायेगा और जो गुनाहगार होगा वह उस पर चल न सकेगा बल्कि कट कर गिर जायेगा। और एक नुक्ता बताता हूं दोज़ख़ को पकड़ने की क्या ज़रूरत है क्या उसको कोई लेकर भागेगा जो उसको फ़रिश्तों के पकड़ने की ज़रूरत पड़ेगी। दोस्तो आज तक दुनिया में दोज़ख़ का कोई मेहबूब ही नहीं है जिससे उसका प्यार हुआ हो जो उसको ले भागेगा इस दोज़ख़ को पकड़ने की वजह यह होगी कि यह बहुत भूखी होगी और जो भी पुलसिरात से गुज़रेगा उसकी तरफ़ यह दोज़ख़ लपकेगी ताकि उसको घट

कर जाये दोज़ख़ की इस शिद्दत की वजह से उसको पकड़ने की ज़रूरत होगी अगर उसको पकड़ा न जाये तो वह अपनी भूख की शिद्दत में काफ़िरों के साथ मोमिनों को भी चट करने को कम समझेगी। दोज़ख़ का पेट बहुत बड़ा है मगर उन मोमिनों को दोज़ख़ जोश में भी खा नहीं सकती और इसके लिये फ़रिश्तों को निगरां मुक़र्रर किया कि दोज़ख़ मोमिनों के साथ कुछ गड़बड़ करने न पाये वैसे भी जब ख़ुदा जन्नत का फ़ैसला कर चुकेगा तो दोज़ख़ उसको खा नहीं सकती मगर शिद्दते अ़ज़ाब और शिद्दते भूख को ज़ाहिर करने के लिये यह बात बयान की गई है वरना ख़ुदा की नाफ़रमानी कोई नहीं कर सकता।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि दोज़ख़ का सबसे कम अज़ाब अबू तालिब को होगा

(۳۳۲) عن ابن عباس رضی اللہ عنهما قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اَهْوَنُ اَهْلِ النَّارِ عذابًا ابوطالب وُّهو مُتَنَعِّلٌ بنعلین یَغْلِیْ منها دماغهٗ. (بخاری، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत इब्ने अ़बास रज़ि० बयान करते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया दोज़ख़ियों में सबसे हल्का अ़ज़ाब अबू तालिब को होगा वह आग की जूतियां पहने होंगे जिनसे उनका दिमाग़ खौलता रहेगा।

तबलीग़ वाले इस हदीस को पेश करते हैं और मन–घढ़त बातें नहीं कहते हैं. अबूतालिब हुज़ूर अकरम स० के मुशफ़िक़ चचा हैं जिनकी शफ़क़त व सरपरस्ती ने आँहज़रत स० की बहुत मदद की। अगरचे उन्होंने इस्लाम क़ुबूल नहीं किया मगर जब तक हयात रहे। आँहज़रत स० को कुफ़्फ़ारे मक्का की दुशमनी व अ़दावत से मेहफ़ूज़ रखा, पूरी कोशिश करते रहे और उसके बदले

में उनको दोज़ख़ में सबसे हल्का अज़ाब होगा यही वह अबूतालिब हैं जिनकी मौत के वक़्त हुज़ूर अकरम स० ने उनके पास जाकर कहा कि चचा कल्मा पढ़ लो। ज़ोर से नहीं तो मेरे कान में पढ़ लो ताकि क़ियामत में तुम्हारी सिफ़ारिश करूं। यह भी याद रहे कि वहां नबियों को इख़्तियार नहीं होगा कि जिसकी चाहें सिफ़ारिश करें बल्कि अल्लाह तआला जिसकी सिफ़ारिश का इरादा करेगा नबियों के दिल में उसकी तरफ़ उल्फ़त पैदा कर देगा।

दोस्तो! इबरत का मक़ाम है जो दीन की हिमायत करने वाला मुहम्मद स० से मुहब्बत करने वाला, मुहम्मद स० की तरफ़ से जवाबात देने वाला, मुहम्मद स० के लिये जान कुर्बान करने वाला, मगर मुहम्मद स० उसको हिदायत न दे सके। भाई आप स० हिदायत किस तरह दे सकते थे जब कि हिदायत के मालिक अल्लाह तआला हैं। मुहम्मद स० नहीं हम मुहम्मद स० की इज़्ज़त ज़रूर करते हैं और करना फ़र्ज़ है ख़ुदा की क़सम हम मुहम्मद स० को क्या आप स० के सहाबा रज़ि० की तरफ भी जो उंगली उठाये तो उसके ईमान में निफ़ाक़ का हुक्म लगाते हैं। हमने मोदूदी साहब के इस रवय्ये को ग़लत कहा जो उन्होंने सहाबा के बारे में इख़्तियार किया। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० पर उंगली उठाई। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० पर उंगली उठाई। हज़रत उमर, हज़रत उस्मान रज़ि० पर उंगली उठाई। बअ़ज़ लोगों ने नबियों तक की हाज़िरी ले ली। देखो एक दाढ़ी कटाने वाला फ़र्द और जिसकी ज़िन्दगी में सुन्नते रसूल की बू भी न हो वह नबियों तक बढ़ जाता है क्या यह मोमिनों का काम है कि वह नबियों की ख़ामियां निकाले अगर यह ख़ामियां निकालना मोमिनों को काम होता तो मैं कहता हूं कि सबसे पहले ख़ामी निकालने वाले हज़रत उमर रज़ि० होते जिनको अल्लाह तआला ने इल्म के

समुन्द्रों के साथ आदिल, बे मिसाल बनाया था। हज़रत अली रज़ि० ख़ामियां तलाश करते। हज़रत अबू हनीफ़ा रह० जैसा बहरुलउलूम व बहरुलउक़ूल वल-बसीरत नबियों की ख़ामियां निकालते यह मोमिनों का काम ही नहीं है यह तो यहूदियों का काम है। अरे नबियों की ख़ामियां निकालने की इजाज़त हमको क्या मिलेगी हमारे इस्लाम में किसी फ़क़ीर मुसलमान की भी ख़ामियां निकाल कर बयान करने को हराम कहा गया है जिससे उसका दिल टूटे, अगर वह ग़लती पर है तो उससे जाकर कहो और अगर कोई यह कहे कि अब तो अम्बिया अलै और सहाबा रज़ि० मर चुके हैं उनको जाकर हम कैसे बतायेंगे कि यह तुम्हारी ख़ामी है वह तो मर चुके हैं, मैं कहूंगा अहमक़ों के सरदार क्या तुझको ही नबियों और सहाबा की ख़ामियां तलाश करने के लिये अल्लाह ने भेजा है क्या तुझसे बड़ा कोई और गुस्ताख़े रसूल स० नहीं मिला? क्या उन सहाबा रज़ि० का और नबियों का दाख़ला जन्नत में कुरआन व हदीस से साबित नहीं है? जिनकी ख़ामियां बअज़ लोगों ने निकाली हैं। ख़ैर मैं कह रहा था कि मुहम्मद स० के क़ब्ज़े में हिदायत नहीं है बल्कि हिदायत तो अल्लाह के क़ब्ज़े में है। जभी तो चचा दुनिया से बग़ैर ईमान के चले गये अगर हिदायत आपके क़ब्ज़े में होती तो हिदायत क्यों न देते अपने प्यारे चचा को और बअज़ लोग हुज़ूर अकरम स० को हादीए-कुल मानते हैं और यह ज़ालिम वलियों को भी हादी और हाजत-रवा मानते हैं। बताओ यह जिहालत नहीं तो और क्या है? खुले आम काला धन्धा, अल्लाह का कोई ख़ौफ़ नहीं क्या तफ़सीर व हदीस पढ़ी है? नहीं पढ़ी हो तो पढ़ लेना और खुदा की क़सम कुरआन व हदीस की नज़र में यह अक़ीदा बातिल है फिर सही किया है सिर्फ़ कुरआन और हदीस सही है। और जो मसाइल व अक़ाइद

उनसे निकाले गये हैं। हम इमामे अअज़म अबू हनीफ़ा रह० के क़ौल की तक़लीद नहीं करते बल्कि उन्होंने जो मसाइल क़ुरआन और हदीस से निकालकर दिए हैं उन पर अ़मल करते हैं उसकी मिसाल इस तरह समझो कि एक शख़्स होटल में खाना खा रहा हो अपने पैसे से। अगर कोई कहे तुम होटल वाले का खा रहे हो, तुम अपना नहीं खा रहे हो क्योंकि वह पकाता है और तुम खाते हो। वह कहेगा कि बेशक वह पकाता है मगर मैं जो खाता हूं अपने पैसे से खाता हूं इसके पैसे से नहीं। और असल मसला पैसे का है पकाने का नहीं, पकाने की उजरत तो मैं ख़ुद दे रहा हूं। तो यही मिसाल समझो इमाम अबू हनीफ़ा रह० की कि वह पकाने वाले हैं और पैसे देने वाले क़ुरआन और हदीस हैं। अब हम क़ुरआन व हदीस का खा रहे हैं पकाने वाले हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह० का नहीं। वह तो दीन के ख़ादिम हैं और उनका काम क़ुरआन व हदीस से मसाइल को निकालना और हमारा काम है उस पक्की हुई को जांचकर खाना कि यह मसला कौनसी हदीस से बयान किया है कि उसकी क्या असल है? यही वजह है कि कभी कभी हनफ़िय्या के यहां इमाम अबू हनीफ़ा रह० के क़ौल पर फ़तवा नहीं होता बल्कि इमाम अबू यूसुफ़ या इमाम मुहम्मद रह० के क़ौल पर फ़तवा होता है। ख़ैर दोज़ख़ में सबसे कम अज़ाब अबू तालिब को होगा। यह बात साबित मिनलहदीस है।

दोज़ख़ियों का जिस्म

(۳۳۳) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم ما بین منکبیَ الکافر فی النار مَسیرةً ثلثة ایام للراکب المسرع وفی روایة ضرسُ الکافر مثل اُحُدٍ غِلَظُ جلده مسیرة ثلاث. (مسلم،مشکوٰة)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने

फ़रमाया दोज़ख़ में काफिर के जिस्म को इस क़द्र मोटा और फ़र्बा बना दिया जायेगा कि उसके दोनों मोन्ढों के बीच फ़ासला तेज़ सवार की तीन दिन की मसाफ़त के बराबर होगा और एक रिवायत में यूं है कि दोज़ख़ में काफिर का दांत उहुद पहाड़ के बराबर होगा और उसके जिस्म की खाल तीन दिन की मसाफ़त के बराबर मोटी होगी।

हज़रात! दोज़ख़ी लोगों के जिस्म को अल्लाह तआला इतना चौड़ा और लम्बा और मोटा कर देगा, फ़रमाया उसका सिर्फ़ दांत ही उहुद पहाड़ के बराबर होगा यानी क़रीब पन्द्रह किलो मीटर का सिर्फ़ दांत होगा, अब ख़ुद हिसाब और अन्दाज़ा लगाओ कि उसका जिस्म कितना बड़ा होगा और जिस्म को बड़ा और चौड़ा करने में क्या मसलहत है इसमें यह मसलहत है कि दोज़ख़ी को ख़ूब अच्छी तरह अ़ज़ाब दिया जायेगा और जब जिस्म बड़ा होगा तो अ़ज़ाब भी ज़्यादा मेहसूस होगा अल्लाह तआला तमाम मुसलमानों की हिफ़ाज़त फ़रमायें।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि दोज़ख़ की आग को सियाह किया गया है

(۳۴۴) عن ابی ہریرۃ رضی اللہ عنہ اَنَّ النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال اُوْقِدَ علی النار الف سنۃٍ حتّٰی اِحْمَرَّتْ ثُمَّ اُوْقِدَ علیھا الف سنۃ حتی اِبْیَضَّتْ ثم اُوْقِدَ علیھا الف سنۃٍ حتّٰی اسودَّتْ فھی سوداء مظلمۃ.

(بخاری، ترمذی، مشکوٰۃ)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया कि दोज़ख़ की आग को एक हज़ार बरस जलाया गया यहां तक कि वह सफ़ेद हो गयी फिर एक हज़ार बरस और जलाया गया जिससे वह सियाह हो गई है पस अब दोज़ख़ की

आग बिल्कुल सियाह व तारीक है।

इस हदीस को तबलीग़ वाले बयान करते हैं कि दोज़ख़ की आग सियाह है और इसमें बहुत अन्धेरा है यह हदीस तबलीग़ वालों की दलील है कि यक़ीनन ऐसी ही है क्योंकि सियाह आग जो बहुत सख़्त शदीद गर्म होगी जिसकी हद बयान करना दुनिया में नामुमकिन है बस अल्लाह तआला से पनाह तलब करो दोज़ख़ से और अल्लाह तआला की तरफ़ लौटो नफ़्स की ग़ुलामी को तर्क करो।

दोज़ख़ का पहाड़

(۳۳۵) عن ابی سعید عن رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم قال الصَّعُوْدُ جَبَلٌ مِّنَ النارِ یتصَعَّدُ فیہ سبعین خریفا وَیَھْوِیْ بہ کذلک فیہ ابدًا۔
(ترمذی، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया सऊद दोज़ख़ में एक पहाड़ है जिस पर काफ़िर को सत्तर बरस तक चढ़ाया जायेगा और वहां से इसी तरह सत्तर बरस तक गिराया जायेगा और बराबर यही सिलसिला जारी रहेगा।

दोस्तो! वैसे भी पहाड़ पर चढ़ना दुश्वार होता है आदमी थोड़ा सा चढ़ता है तो थक जाता है। अब बताओ दोज़ख़ में जो पहाड़ होगा वह भी आग का होगा और बहुत बुलन्द होगा और न खाना होगा और न पीना बस अज़ाब ही अज़ाब। दोस्तो! अल्लाह के वास्ते आख़िरत की तैयारी करो वरना वहां अफ़्सोस करना बेकार होगा।

दोज़ख़ियों का पानी

(۳۳۶) عن ابی امامۃ عن النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم فی قولہ یُسقی من مَّاءٍ صدیدٍ یَتَجَرَّعہٗ قال یُقَرَّبُ الی فیہ فیکرَھُہٗ فاذا اُدنِیَ منہ شوی وجھَہٗ ووقَعَتْ فروۃُ راسہٖ فاذا شرِبَہٗ قَطَّعَ امعائَہٗ حتّٰی یخرج من دُبُرِہٖ یقول اللّٰہ

تعالى وسقوا ماءً حميمًا فقطع امعاءَ هُم ويقول وَإِن يستغيثوا يغاثوا بماءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِى الْوُجُوهَ بِئْسَ الشراب.

हज़रत अबू उमामा रज़ि० नबी करीम स० से रिवायत करते हैं कि आप स० ने अल्लाह तआला के इस इरशाद :

يُسْقَى مِنْ مَّاءٍ صَدِيدٍ يَتَجَرَّعُهُ

की वज़ाहत करते हुए फ़रमाया कि जब वह पानी इस दोज़ख़ी के मुंह के करीब लाया जायेगा तो वह उसको ना पसन्द करेगा, और फिर जब वह पानी उसके मुंह में डाला जायेगा तो उसके मुंह के गोश्त को भून डालेगा और उसके सर की खाल गिर पड़ेगी और जब वह दोज़ख़ी उस पानी को पियेगा और वह पानी पेट में पहुंचेगा तो आंतों को टुकड़े टुकड़े कर देगा फिर वह पाख़ाने के रास्ते से बाहर निकल आयेंगी चुनांचे अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ اَمْعَاءَ هُمْ

इसी तरह (कुरआन में एक और जगह) फ़रमाया गया है :

وَإِنْ يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِى الْوُجُوهَ بِئْسَ الشَّرَابُ

इतना सख़्त अज़ाब होगा कि पानी भी नसीब न होगा हज़ारों साल बाद भी जब दिया जायेगा तो शदीद गर्म और सख़्त बदबूदार होगा जिसको पीने से पेट का तमाम सामान आंत वग़ैरह पिघल जायेगी और पाख़ाने की जगह से ख़ारिज होगी। अब बताओ क्या अब भी बिदअ़त व गुनाहों से नहीं रुकोगे।

दोज़ख़ की बदबू

(٣٣٤) عن ابى سعيد قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لو اَنَّ دَلْوًا مِنْ غَسَّاقٍ يُهْرَاقُ فى الدنيا لَاَنْتَنَ اهل الدنيا. (ترمذى، مشكوٰة شريف)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया दोज़ख़ियों के ज़ख़्मों से जो ज़र्द पानी बहेगा

(यानी पीप ख़ून) अगर उसका एक डोल भी दुनिया में उन्डेल दिया जाये तो यक़ीनन तमाम दुनिया वाले सड़ जायें। यानी बदबू से बेज़ार हो जायेंगे।

दोस्तो! आज बड़े ऐश में और ऐयरकंडीशन में हो, इत्र व सैंट लगाते हो मेकअप करते हो साफ़ सुथराई करते हो जिस्म को क़ीमती साबुन लगाते हो याद रखो अगर यह जिस्म ख़ुदा का नाफ़रमान है तो यह साफ़ सुथराई बेकार है क्योंकि आख़िर उसका नतीजा सड़ा हुआ पीप और सड़ा ख़ून होगा अगर आपके पास न इत्र व सैंट है और न मेकअप बॉक्स मगर यह जिस्म ख़ुदा की मर्ज़ियात पर चलता है तो यह जन्नत में ज़रूर मुअत्तर होगा ख़ुद ब ख़ुद मेकअप हो जायेगा, सैंट लग जायेगा मगर अल्लाह को नाराज़ करके ख़्वाहिशात को ख़ुश करोगे तो अन्जाम बहुत ख़राब होगा और क़ियामत में कोई किसी को नहीं बचा सकता न बाप बेटे को और न बेटा बाप को, न मां बेटे को और न बेटा मां को, बल्कि वहां पर सिर्फ़ अपना तआरुफ़ चलेगा, हां अगर नेकियां कुछ कम पड़ जायें तो सिफ़ारिश और रहमत के ज़रिये पूरा हो सकता है मगर सिर्फ़ इस पर ही भरोसा करना ग़लत है बल्कि ख़ुद को भी तोशा लेना होगा कब तक दूसरों से मांगोगे अल्लाह ने वक़्त दिया है और जन्नत और दोज़ख़ को सामने रखा है जन्नत की राह को और दोज़ख़ की राह को इख़्तियार करना हमारे हाथ में है अल्लाह से दुआ भी करो नमाज़ की ज़रूर पाबन्दी करो, दीगर अहकाम को उलमा से मालूम कर लो वरना क़ियामत में पूछा जायेगा कि इल्म सीखने से तुझको किस चीज़ ने मना किया था? तू क्यों जाहिल रहा? क्या उज़्र था? अब सोचो क्या यहां की तरह वहां पर भी बहाने बाज़ी से काम होगा, हरगिज़ नहीं, बल्कि अल्लाह तआला आलिमुलग़ैब है और हर चीज़ को

जानता है। वहां पर कोई बहानेबाज़ी कारगर न होगी वहां सिर्फ़ हक़ वाज़ेह करना होगा इसलिये कहा जाता है कि जमाअ़त में निकल कर इल्मे दीन सीख लो पूरा इल्म न सही मगर इतना इल्म तो ज़रूर हासिल करो और करना होगा हर एक को जिसके ज़रिये हलाल व हराम का इल्म हो जाये कि यह चीज़ हराम है और यह हलाल है और इस पर अ़मल करना भी ज़रूरी होगा वरना सवाल होगा हमने जो तुमको इल्म दिया था उस पर कितना अ़मल किया उसकी तैयारी करो और यह काम जमाअ़त में आसानी से होता है।

दोज़ख़ियों का नापसन्द खाना

(۳۲۸) عن ابن عباس رضى الله عنهما انّ رسول الله صلى الله عليه وسلم قرا هذه الآية اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقَاتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لَوْ اَنَّ قَطْرَةً مِّنَ الزَّقُّوم قطرتْ فى دار الدنيا لَاَفْسَدَتْ على اهل الارض معايشهم فكيف بمن يكون طعامه.

(ترمذی، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि०. से-रिवायत है कि एक दिन रसूल अल्लाह स० ने यह आयत तिलावत फ़रमाई :

اِتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقَاتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ○

और फिर फ़रमाया अगर (दोज़ख़ के) ज़क़्क़ूम ठोहर के दरख़्त का एक क़तरह भी इस दुनिया के घर में टपक पड़े तो यक़ीनन दुनिया वालों के सामाने ज़िन्दगी को तहस–नहस कर दे फिर (बताओ) उस शख़्स का क्या हाल होगा जिसकी ख़ुराक ही ज़क़्क़ूम होगी।

दोस्तो बताओ! क्या आप इतनी बदबूदार ग़िज़ा खाना पसन्द करोगे? हरगिज़ नहीं, बल्कि अगर थोड़ी सी भी बदबू पैदा हो

जाये तो तुम उसको नहीं खाते हो मगर दोज़ख़ी को यह खाना ही होगा वह भी बहुत साल मांगने के बाद हासिल होगा और उसको भी वह खायेगा छोड़ेगा नहीं, पीप पियेगा ख़ून पियेगा बताओ क्या कोई इतना सख़्त अज़ाब पसन्द करता है? नहीं, तो फिर क्योंकर दोज़ख़ वाले अअ़माल में लगे हो, आओ जन्नत वाले अअ़माल की तरफ़ और अल्लाह तआ़ला से तौबा कर लो अपने गुनाहों की।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि दोज़ख़ के सांप ऊंट के बराबर होंगे

(٣٣٩) عن عبد الله بن حارث بن جَزْءٍ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان فى النار حَيَّاتٍ كامثالِ البُخْتِ تَلْسَعُ اِحْدٰهُنَّ اللَّسْعَةَ فَيَجِدُ حموتَها اربعين خريفًا وَاِنَّ فى النّار عقارب كامثال البِغَال الموكَفَةِ تَلْسَعُ اِحْدٰهُنَّ اللَّسْعَةَ فيجدُ حَمْوتَها اربعين خريفًا. (احمد، مشكوٰة شريف)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस जुज़ कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया दोज़ख़ में बख़ती ऊंट के बराबर (बहुत बड़े बड़े) सांप हैं उनमें से जो सांप एक दफ़ा भी जिसको ड़स लेगा वह उसके दर्द की शिद्दत में चालीस साल तक मुबतला रहेगा इसी तरह दोज़ख़ के जो बिच्छू हैं वह ख़च्चरों के मानिन्द हैं और उनमें से जो बिच्छू एक दफ़ा भी जिस किसी को डंक मारेगा वह उसकी लहर और दर्द की शिद्दत में चालीस साल तक मुबतला रहेगा।

इस हदीस से ही तबलीग़ वाले यह बात बयान करते हैं कि दोज़ख़ के सांप ऊंट के बराबर होंगे और दोज़ख़ के बिच्छू ख़च्चर के बराबर होंगे इसमें मन घढ़त कोई बात नहीं बल्कि इस बात की ख़बर हुज़ूर अकरम स० ने दी है कि दोज़ख़ में ऐसा ऐसा होगा, आज तो छोटे सांप से डरते हैं छोटे–से बिच्छू से डरते हैं।

बताओ क़ियामत में कौन बचाने वाला होगा? ख़ुदा के लिये ख़ुदा को दोस्त बना लो और बिदअ़त व ख़ुराफ़ात छोड़ दो मुझे किसी बरेलवी या ग़ैर–मुक़ल्लिद या मोदूदी से नफ़रत नहीं है मगर मैं क्या करूं उन लोगों के अअ़माल शरीअ़त के आड़े आ जाते हैं और फिर मेरा इस वक़्त ख़ामोश रहना आप लोगों के साथ दोस्ती वाला मामला न होगा, बल्कि मैं आख़िरत वाला दुश्मन बन जाऊंगा इसलिये मैं तुमसे नहीं तुम्हारे उन अअ़माल से मुख़ासमा करता हूं जो हदीस के मुख़ालिफ़ हों और जिनका शरीअ़त में कोई सुबूत नहीं है। जैसे तफ़्सीर बिर्राये करना सहाबा रज़ि० पर उंगलियां उठाना, क़ब्र की इस तरह इज़्ज़त करना कि उसमें और ख़ुदा में कोई फ़र्क़ बाक़ी न रहे और हुज़ूर अकरम स० को आ़लिमुलग़ैब जानना और जिस इमाम के पास आसानी देखें वहां जाना, वग़ैरह वग़ैरह।

यह जुर्म करने के बाद भी तुम कहते हो कि देवबन्दी को सिर्फ़ छेड़ना आता है बताओ क्या गुनाहों को भी हम दुरुस्त कह कर अ़मल करने वाले के साथ दोज़ख़ में हम भी शरीक हो जायें। इन्शाल्लाह हम न दाख़िल होंगे और न दाख़िल करने वाले अअ़माल करेंगे।

अल्लाह तआ़ला का दोज़ख़ में क़दम रखना

(۳۳۰) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم تَحَاجَّتِ الجنّةُ والنار فقالت النارُ اُوْثِرْتُ بالمتکبرین والمتجبرین وقالت الجنة فمالی لایدخُلُنِیْ الاّ ضعفاءُ الناس وسقطهم وغُرّتُهُمْ قال الله تعالی للجنةِ انّما انتِ رحمتی ارحم بك مَن اشاءُ من عبادی وقال للنار اِنّما اَنْتِ عذابی اُعَذِّبُ بك من اشاءُ مِنْ عبادی ولکُلِّ واحدةٍ منکما مِلْؤُها فامّا النار فلا تَمْتَلِیْ حتّٰی یضع الله رِجلَهٗ تقول قط قط

فهنا لك تمتلى يزوى بعضها الى بعض فلا يظلم الله من خلقه احدا واما الجنة فانّ الله ينشأ لها خلقا. (متفق عليه)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जन्नत और दोज़ख़ दोनों ने आपस में तकरार की। चुनांचे दोज़ख़ ने तो यह कहा कि मुझे सरकश व तकब्बुर और ज़ालिमों के लिये छांटा गया है और जन्नत ने यह कहा कि मैं अपने बारे में क्या कहूं मेरे अन्दर तो वह लोग दाख़िल होंगे जो ज़ईफ़ व कमज़ोर और लोगों की नज़रों में गिरे हुए हैं और जो भोले भाले और जो फ़रेब में आ जाते हैं (यह सुनकर) अल्लाह तआला ने जन्नत से फ़रमाया तू मेरी रहमत के इज़हार का ज़रिया और मेरे करम के मक़ाम के अलावा कुछ नहीं, मैं अपने बन्दों में से जिसको अपनी रहमत से नवाज़ना चाहता हूं उसके लिये तुझे ही ज़रिया बनाता हूं और दोज़ख़ से फ़रमाया तू मेरे अज़ाब का महल और मज़हर होने के अलावा कुछ नहीं मैं अपने बन्दों में जिसको अज़ाब देना चाहता हूं उसके लिये तुझे ही ज़रिया बनाता हूं और मैं तुम दोनों ही को लोगों से भर दूंगा अलबत्ता दोज़ख़ के साथ तो यह मामला होगा कि वह उस वक़्त तक नहीं भरेगी जब तक कि उस पर अल्लाह तआला अपना पांव न रख देगा। चुनांचे जब अल्लाह तआला अपना पांव रख देगा तो दोज़ख़ पुकार उठेगी बस बस उस वक़्त दोज़ख़ (अल्लाह तआला की क़ुदरत से भर जायेगी और उसके हिस्सों को एक दूसरे के क़रीब कर दिया जायेगा पस वह सिमट जायेगी) मतलब यह है कि अल्लाह तआला अपनी मख़लूक़ में से किसी पर ज़ुल्म नहीं करेगा रहा जन्नत का मामला तो उसके भरने के लिये अल्लाह तआला नये लोग पैदा कर देंगे।

हज़रात देखिये दोज़ख़ इतनी भूखी होगी कि तमाम

दोज़खियों को खाने के बावजूद भी उसका पेट न भरेगा बल्कि जब वह और दोज़खियों की मांग करेगी तो अल्लाह तआला उसकी भूख को खत्म करने के लिये अपना कदम दोज़ख में रखेंगे जिसके वज़न से वह आवाज़ करेगी 'बस बस' अब मेरा पेट भर गया अब जगह नहीं अब गुन्जाइश नहीं। अल्लाह तआला उसकी भूख से तमाम मुसलमानों की हिफ़ाज़त फ़रमायें। (आमीन)

तबलीग़ वाले कहते हैं कि मौत के वक़्त तलक़ीन करो हुक्म न करो

(۳۳۱) عن ابی سعید وابی هریرة رضی الله عنهما قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم لقنوا موتاکم لا اله الا الله. (مسلم، مشکوٰۃ شریف)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जो लोग मौत के क़रीब हों उन्हें (कलिमा) ला इलाहा इल्लल्लाह की तलक़ीन करो।

इस हदीस से ही तबलीग़ वाले मौत के वक़्त तलक़ीन का हुक्म करते हैं और मौत के क़रीब मर्द व औरत के लिये कलिमे का हुक्म देने से मना करते हैं।

तलक़ीन कहते हैं याद दिलाने के लिये बार बार पढ़ने को और यहां तलक़ीन से मुराद मौत के क़रीब आदमी के सामने बार बार कलिमा पढ़ना ताकि वह भी अगर सुहूलत हो तो पढ़ ले और उसको हुक्म न करो कि कलिमा पढ़, तलक़ीन के माअ़ना हैं बग़ैर हुक्म दिये खुद पढ़ना उसको याद दिलाने के लिये आदमी की मौत के वक़्त कलिमा पढ़ने का हुक्म करना कि कलिमा पढ़ यह दुरुस्त नहीं है। क्यों? क्या मसलेहत है? दोनों में मसलेहत यह है कि तलक़ीन में सिर्फ़ आप पढ़ते हैं और अगर उसको सुहूलत होगी तो वह आपको सुनकर पढ़ लेगा और कलिमे का हुक्म देने में डर यह होता है कि वह कलिमा पढ़ने से इन्कार कर दे और

यह इन्कार करना उसके लिये आख़िरत के ख़सारे का ज़रिया बन जाये और अगर उस वक़्त वह दिल से इन्कार कर दे तो काफ़िर हो जायेगा इसलिये हुक्म करना मौत के वक़्त दुरुस्त नहीं उसके इन्कार करने के एहतिमाल की वजह से और तलक़ीन करना यानी आपका पढ़ना ताकि वह सुनकर पढ़ले मुसतहब है क्योंकि हदीस में तलक़ीन का हुक्म है, फ़र्ज़ तो नहीं है।

मगर भाई की इस में ख़ैर ख़्वाही है और हुज़ूर अकरम स० का हुक्म भी है इसलिये मैंने इस तलक़ीन को मुसतहब कहा और हुक्म में उसका ईमान सलब होने का ख़तरा है इसलिये मैंने उसको ग़लत कहा, क्योंकि एक मुसलमान का दूसरे पर यह हक़ है कि वह उसको नुक़सान से बचाये और हुक्म में बहुत बड़ा नुक़सान है इसलिये यह दुरुस्त नहीं सिर्फ़ कुछ ज़ोर से कलिमा पढ़े।

जिसका ख़ातिमा कलिमे पर हो वह जन्नती है

(٣٣٣) عن معاذ بن جبل رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم من کان آخِرُ کلامِهٖ لا اله الا الله دخل الجنة (ابوداؤد، مشکوٰة)

हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जिसका आख़री कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह हो वह जन्नत में दाख़िल होगा।

मुराद यह है कि जो शख़्स कि उसका आख़री कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह होगा वह जन्नत में दाख़िल होगा। अब रहा यह मसला कि क्या डायरेक्ट बग़ैर अज़ाब के जन्नत में दाख़िल होगा या अपने गुनाहों की सज़ा मिलने के बाद वह जन्नती है, इसका एक बहतरीन हल मेरे पास यह है जिससे मसला साफ़ हो जाता है मगर साथ ही साथ यह भी याद रखिये कि सराहतन इन हदीसों से यह पता नहीं चलता है कि क्या मौत के वक़्त कलिमा पढ़ने वाला बग़ैर अज़ाब के जन्नत में दाख़िल होगा या उसको

अपने गुनाहों की पहले सज़ा मिलेगी और सज़ा का जब वक़्त पूरा हो जायेगा उसके बाद उसको जन्नत में दाख़िल किया जायेगा लेकिन मैं एक दूसरी हदीस पेश करके ततबीक़ बयान करता हूं जिससे कुछ हद तक बात वाज़ेह होती है।

देखो यह हदीस मुस्लिम शरीफ़ में है :

من قال لا اله الا الله دخل الجنة

कि जो शख़्स कलिमा पढ़ले वह जन्नत में दाख़िल होगा और पहले हदीस में यह बताया गया है कि जो मौत के वक़्त कलिमे के साथ मरे वह जन्नती है। अब दोनों में ततबीक़ इस तरह है कि पहली वाली हदीस ख़ास है और यह दूसरी हदीस आम है। इसका क्या मतलब? इसका यह मतलब है कि जो शख़्स अपनी ज़िन्दगी में कलिमा पढ़ेगा वह एक न एक दिन ज़रूर जन्नत में दाख़िल होगा चाहे अज़ाब के बाद हो या बग़ैर अज़ाब के। और जो शख़्स मौत के वक़्त कलिमा पढ़े उसके लिये बग़ैर अज़ाब के दुख़ूले जन्नत मुराद है चाहे मौत के वक़्त कलिमा पढ़ने वाला शख़्स पहले से ही मुसलमान हो या मौत के वक़्त कलिमा पढ़कर मुसलमान हो जाये। दोनों बग़ैर अज़ाब के जन्नती होंगे काफ़िर ने अगर इस्लाम कुबूल कर लिया तो उसके तमाम गुनाह माफ़ हो गये और जब उसके तमाम गुनाह माफ़ हो गये तो वह जन्नती है इसमें किसी को शक नहीं है, न एहतिमाल है। लेकिन रहा वह मुसलमान जिसने कलिमा पढ़कर इस्लाम कुबूल किया फिर कुछ गुनाहों के काम भी उससे सादिर हुए मगर कुफ़्र और शिर्क से महफ़ूज़ होना ज़रूरी है। और यह जब मरता है तो कलिमे पर उसका ख़ातिमा होता है तो इस हदीस की बिना पर उसको जन्नत में दाख़ला बग़ैर अज़ाब के मुराद लेना ही ज़्यादा बेहतर है क्योंकि हम इस हदीसे अव्वल से दुख़ूल बाद अज़ाब

मुराद लेंगे तो फिर दोनों हदीसों में कोई फ़र्क़ न होगा जबकि हदीस के अलफ़ाज़ में फ़र्क़ है जो दलालत करता है मअ़ना और मफ़हूम के अलग होने पर। हासिल यह निकला कि पहले वाला यानी मौत के वक़्त कलिमा पढ़ने वाला बग़ैर अ़ज़ाब के जन्नती होगा और दूसरी हदीस वाला यानी ज़िन्दगी में कलिमा पढ़कर गुनाह करने वाला अ़ज़ाब के बाद जन्नत में एक न एक दिन दाख़िल होगा।

मौत मोमिन का तोहफ़ा है

(٣٣٣) عن عبد الله بن عمر قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم تحفةُ المؤمن الموتُ. (بیہقی،مشکوۃ شریف)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया मौत मोमिन का तोहफ़ा है।

इसलिये मौत को तोहफ़ा कहा है कि बन्दा जब मर जाता है तो वह अपने इनआ़म को और वअ़दों को पाता है, जन्नत को पाता है, जन्नत की नअ़मतों को पाता है और अल्लाह की रज़ा को पाता है, हूरों को पाता है, इस दुनिया से और उसके ग़म व रंज और उसकी परेशानियों से बन्दा निजात हासिल करता है, और जन्नत की तरफ़ सफ़र करता है, और तकलीफ़ों से राहत की तरफ़ ग़म व रंज से ख़ुशी और मुसर्रत की तरफ़, बन्दों से अल्लाह की तरफ़, दुनिया–ए–मलऊ़न से जन्नते मुबारक की तरफ़, इम्तिहान गाह से नतीजे की तरफ़, ग़ायब से हाज़िर की तरफ़, ईमान से मुशाहिदे की तरफ़, दुनिया की औ़रतों से हूरों की तरफ़, झोंपड़ियों से सोने और चांदी के महल्लात की तरफ़, इस दग़ाबाज़ दुनिया से वफ़ादार जन्नत की तरफ़ बन्दा जाता है। यह तोहफ़ा नहीं तो और क्या है। रहा काफ़िर, मौत उसके लिये इतनी ही ख़राब चीज़ है जितनी अच्छी मोमिन के लिये, क्योंकि वह राहत

छोड़कर आग की तरफ़, दुनिया से दोज़ख़ की तरफ़, ठन्डे पानी से गर्म और सड़े हुए पीप व ख़ून की तरफ़ जाता है। बताओ क्या यह हलाकत से बड़ी हलाकत नहीं है। अल्लाह तआला हमारी हिफ़ाज़त फ़रमायें दोज़ख़ से। और अता करे अपनी रहमत से जन्नत।

मौत को याद करना आख़िरत के लिये बेहतर है

(٣٣٣) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم اکثروا ذکرها زم اللذات الموت. (ترمذی، نسائی، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया (दुनिया की) लज़्ज़तों को खो देने वाली चीज़, मौत को कसरत से याद करो।

मौत को याद करने का हुक्म इसलिये दिया कि जब बन्दा मौत को हर वक़्त याद करेगा और जन्नत और दोज़ख़ को सामने रखेगा तो गुनाहों से, नाफ़रमानियों से, कुफ़्रियात से और शिर्कियात से महफ़ूज़ रहेगा बल्कि मौत को याद करना उसको तमाम तर गुनाहों से महफ़ूज़ रखेगा और वह तमाम मामूरात और नमाज़, रोज़ा, ज़कात और दीगर तमाम अच्छे अफ़आल को इख़्तियार करेगा। क्योंकि मौत की याद उससे कहेगी कि तुझको एक दिन मरना है तुझको एक दिन मरना है तुझको अल्लाह तआला के पास हिसाब देना है तुझको पुलसिरात से गुज़रना है तुझको क़ब्र में तन्हा रहना है यह तमाम बातें जब उसके सामने रहेंगी तो वह गुनाहों से ख़ुद बख़ुद इजतिनाब करेगा और अअ़माले सालेह में ख़ुद को मशग़ूल रखेगा, कितना उम्दा और जामेअ़ इलाज बताया सिर्फ़ इस पर अमल पैरा होगा तो बन्दा दुनिया व आख़िरत में

कामियाब हो जायेगा जो लोग गुनाहों में और हराम कारियों और हराम खोरियों में मश्ग़ूल होते हैं उसकी वजह सिर्फ़ यह है कि उनको मौत का और दोज़ख़ का ख़्याल नहीं होता है अगर मौत का, दोज़ख़ का ख़्याल करें तो वह गुनाहों को छोड़ देंगे, यह है आक़ा का बे-मिसाल नुस्ख़ा। अल्लाह तआला हमें मौत को याद करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमायें। यह बहुत कामयाब नुस्ख़ा है।

मुसलमान की तकलीफ़ें भी तोहफ़ा हैं

(٣٣٥) عن عبد الله بن مسعود رضی الله عنه قال دخلتُ على النبی صلی الله علیه وسلم وهو يُوْعَكُ فَمَسَسْتُهٗ بیدی فقلت یا رسول الله صلی الله علیه وسلم اِنّك لَتُوْعَكُ وَعْكًا شدیدًا فقال النبی صلی الله علیه وسلم اَجَلْ اِنّی اُوْعَكُ كما يُوْعَكُ رجلان منكم قال فقلتُ ذلك لانّ لك اَجْرَيْنِ فقال اَجَلْ ثم قال ما من مُسْلِمٍ يُصِيْبُهٗ اَذًى من مرضٍ فما سواهُ الاّ حطّ الله به سیّاٰته كما تَحُطُّ الشجرة وَرَقَهَا. (بخاری ومسلم)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि (एक मरतबा) मैं नबी करीम स० की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुआ उस वक़्त आपको बुख़ार था मैंने आप पर अपना हाथ फेर कर अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह आपको बहुत सख़्त बुख़ार होता है आप ने फ़रमाया, हां मुझे तुम्हारे दो आदमियों के बराबर बुख़ार चढ़ता है। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने अर्ज़ किया कि इस वजह से होगा कि आपको दोगुना सवाब मिले। आप स० ने फ़रमाया, हां! फिर फ़रमाया जिस मुसलमान को बीमारी की वजह से या उसके अलावा किसी और वजह से तकलीफ़ पहुंचती है तो अल्लाह तआला उसके ज़रिये उसके गुनाह (इस तरह) दूर कर देता है जैसे दरख़्त अपने पत्ते झाड़ देता है।

इस हदीस से मालूम हुआ कि बुख़ार का आना और दीगर बीमारियों का आना आफ़त या अल्लाह का ग़ज़ब नहीं होता है बल्कि मोमिन की एक एक बीमारी और एक एक आफ़त उसके लिये ख़ैर की बारिश होती है जिस बारिश के ज़रिये मोमिन के गुनाह बह जाते हैं और वह इस बीमारी या आफ़त के ज़रिये बुलन्द दरजात को हासिल कर लेता है।

मुसीबत अल्लाह तआला की रहमत है

(۳۳۶) عن ابی ھریرۃ رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مَنْ یُّرِدِ اللّٰہُ بِہٖ خَیْرًا یُّصِبْ مِنْہُ. (بخاری ومسلم)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अल्लाह तआला जिस शख़्स को भलाई पहुंचाने का इरादा करता है वह (उस भलाई के हुसूल के लिये) मुसीबत में मुब्तला हो जाता है।

मुसीबत हर उस चीज़ को कहते हैं जिसे दिल कुबूल और पसन्द न करे, चाहे मुसीबत बीमारी की शक्ल में या तकलीफ़ की शक्ल में हो, यह तमाम की तमाम रहमत और बुलन्दी का ज़रिया है। जैसे कि बअ़ज़ जाहिल हज़रात अल्लाह तआला पर कुफ़्रिया कलिमात कहते हैं, कि ऐ अल्लाह! तुझको क्या मैं ही मिला था आफ़त में मुब्तला करने के लिये, क्या मेरा हाल तुझको पता नहीं मैं कितना परेशान हूं और तू देखने को तैयार नहीं और दिन ब-दिन आफ़तें एक के बाद दीगर आफ़तें भेजता है इस तरह के ज़ालिमाना कलिमात बन्दा ख़ुदा से कहता है हालांकि अल्लाह मुसीबत तो बन्दों के दरजात बुलन्द करने के लिये भेजता है न कि ज़ुल्म करने के लिये।

मौत के वक़्त तकलीफ़ का होना दोज़ख़ी होने की अ़लामत नहीं

(٣٣٧) عن عائشة رضی الله عنها قال مارأیت احدا الوجع علیه اشد من رسول الله صلی الله علیه وسلم. (متفق علیہ)

हजरत आइशा सिद्दीका रज़ि० फ़रमाती हैं कि मैंने ऐसा कोई शख़्स नहीं देखा जिसकी बीमारी आंहज़रत स० की बीमारी से ज़्यादा शदीद हो।

हज़रात! आज बअ़ज लोगों से यह बात सुनने को मिली है वह कहते हैं कि जिसको मौत के वक़्त तकलीफ़ होती है वह उसके दोज़ख़ी होने की अ़लामत है मगर यह बात मुतलक़ तौर पर कहना बिल्कुल ग़लत है और शरीअ़त में इसकी कोई हक़ीक़त नहीं है न उसका कोई सुबूत मौजूद है कि जिसको भी मौत के वक़्त तकलीफ़ हो वह दोज़ख़ी या मरदूद है बल्कि जाहिलों का मनघडत अ़क़ीदा है इस अ़क़ीदे को अगर हक़ कहते हो तो आप हज़रत आइशा रज़ि० की इस हदीस का क्या जवाब दोगे जिसमें हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० ने फ़रमाया कि हुज़ूर अकरम स० को बहुत ज़्यादा मौत की तकलीफ़ हुई है और मज़ीद यह भी फ़रमाया कि आप स० से ज़्यादा किसी को मौत की तकलीफ़ मैंने नहीं देखी। अब बताओ क्या तुम्हारा यह अ़क़ीदा शरीअ़त के मुवाफ़िक़ है? ख़ुदा की क़सम यह अ़क़ीदा दुरुस्त नहीं।

इस हदीस की वजह से, बल्कि तकलीफ़ तो दरजात को बुलन्द करने के लिये अल्लाह का एक अ़ज़ीम तोहफा है इसको अ़ज़ाब से या अल्लाह के ग़ज़ब से तअबीर करना या यह अ़क़ीदा रखना कि तकलीफ़ का होना सिर्फ़ अल्लाह की नाराज़गी की अ़लामत है यह दुरुस्त नहीं अब एक सवाल उठ खड़ा होता है

कि आपने तो मौत के वक़्त तकलीफ़ वाले अक़ीदे को बातिल कहा है फिर आप इस हदीस का क्या जवाब दोगे जिसमें यह फ़रमाने रसूल वारिद हुआ है कि काफ़िरों को मौत के वक़्त बहुत ज़्यादा तकलीफ़ होती है? इसका क्या जवाब दोगे? हज़रात सुनिये जब एक मसले पर दो मुख़तलिफ़ क़िस्म की आयतें या हदीसें जमा हो जायें तो उस वक़्त ततबीक़ की तरफ़ रुजूअ़ किया जाता है अब यह मसला भी ऐसा ही है कि एक मसले के दो अलग अलग मफ़हूम की हदीस वारिद हुई है अब हमें ततबीक़ की तरफ़ यानी एक ऐसी सूरत की तरफ़ रुजूअ़ करना है जो दोनों मक़ाम पर बराबर सराबर सादिक़ आये।

अब देखिये मसला बिल्कुल आसान है अगर मरने वाला नेक इन्सान और मुत्तक़ी शख़्स हो तो यह तकलीफ़ उसके लिये बुलन्द दरजात का सबब होगी और अगर मरने वाला काफ़िर या बदकार इन्सान हो तो यह तकलीफ़ गुनाहों की नहूसत होगी और इस तरह अगर यह तकलीफ़ नाफ़रमान मोमिन को हो रही है तो यह उसके लिये गुनाहों का कफ़्फ़ारा होगी, बात साफ़ हो गई कि अगर काफ़िर है तो अ़ज़ाब पर मेहमूल किया जायेगा और मोमिन हो तो उसके साथ यह अ़क़ीदा रखना दुरुस्त नहीं है और मुतलक़न नेक और ग़ैर--नेक के बारे में यह अ़क़ीदा रखना कि वह दोज़ख़ी है दुरुस्त नहीं है।

और हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि० की दूसरी हदीस भी देखिये।

(٣٤٨) عن عائشة رضی الله عنها قالت مات النبی صلی الله علیه وسلم بین حاقنتی و ذاقنتی فلا اکرهُ شدة الموت لاحدٍ ابدًا بعد النبی.

(بخاری، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ि० फ़रमाती हैं कि नबी करीम

स० ने मेरे सीने और गर्दन के दर्मियान वफ़ात पाई है मैं नबी करीम स० के बाद किसी शख़्स की मौत की सख़्ती को कभी बुरा नहीं समझती।

नौहा करना मरने वाले पर या क़ब्र पर जाइज़ नहीं है

(۳۴۹) عن انس رضی اللّٰه عنه قال مَرَّ النبی صلی اللّٰه علیه وسلم بامرأةٍ تبکی عند قبر فقال اِتّقی اللّٰه واصبری قالت الیک عَنّی فَاِنّک لم تُصَبْ بمصیبتی ولم تعرفْهُ فقیل لها اِنّهُ النبی صلی اللّٰه علیه وسلم فاتَتْ باب النبی فلم تجد عنده بَوّابِیْنَ فقالت لم اَعْرِفک فقال اِنّمَا الصبرُ عند الصّدْمَةِ الاُوْلٰی. (بخاری ومسلم)

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि (एक मर्तबा) नबी करीम स० एक औरत के पास से गुज़रे जो एक क़ब्र के क़रीब चिल्ला चिल्ला कर रो रही थी, आप स० ने फ़रमाया ख़ुदा के अज़ाब से डर (यानी नौहा न कर, वरना अज़ाब में मुब्तला की जाओगी) और सब्र कर और औरत ने आंहज़रत स० को पहचाना नहीं (आप स० का इरशाद सुनकर) कहने लगी कि मेरे पास से दूर हटो (तुम मेरा ग़म क्या जानो) क्योंकि तुम मेरी तरह मुसीबत में गिरिफ़्तार नहीं हुए हो (जब आंहज़रत स० वहां से चले आये तो) उसे बताया गया कि यह नबी करीम स० थे (फिर क्या था) वह (भागी हुई) आंहज़रत स० के दरे दौलत पर हाज़िर हुई, उसे दरवाज़े पर कोई दरबान नहीं मिला। फिर उसने आंहज़रत स० से अर्ज़ किया कि मेरी गुस्ताख़ी माफ़ फ़रमाइये मैंने आपको पहचाना नहीं था, आप स० ने उससे फ़रमाया कि सब्र तो वही कहलायेगा जो मुसीबत के शुरू में हो।

क़ारईने कराम! आज कितने लोग इस हदीस के ख़िलाफ़

अमल करते हैं और नौहा करने को हक़ जानते हैं और सवाब की चीज़ जानकर करते हैं वह अमल यही क़बरों पर चीख़ पुकार करना है जिस फ़ेअ़ल से हुज़ूर अकरम स० ने ख़ुद मना किया है। बअ़ज़ हज़रात इस फ़ेअ़ल को करने में सवाब की उम्मीद करते हैं बताओ अगर कोई ज़िना करे और सवाब की उम्मीद इस फ़ेअ़ल से रखे तो वह अक़्लमन्द कहलायेगा या जाहिल और गुस्ताख़? यही हाल बअ़ज़ हज़रात का है कि वह क़ब्र पर रोने को चीख़ने को सवाब समझते हैं अब बताओ यह हिमाक़त नहीं तो और क्या है? किसी हदीस में तीन दिन से ज़्यादा ग़म मनाने की इजाज़त मरवी नहीं है अ़लावा बीवी के, क्योंकि शरीअ़त ने सिर्फ़ बीवी को चार माह दस दिन सोग मनाने की इजाज़त दी है। मगर आज क़ब्र पर भी, मय्यत पर भी, हज़रत हुसैन के तअ़ज़िये पर भी ख़ूब रियाकारी का रोना रोया जाता है और सवाब जानकर हराम काम किया जाता है। क्या हसन रज़ि० हुसैन रज़ि० से बढ़कर हज़रत अबूबक्र रज़ि० और उ़मर फ़ारूक़ रज़ि० नहीं हैं फिर उनको क्यों मायूस करते हो क्या हज़रत हम्ज़ा रज़ि० को बे-दर्दी से शहीद नहीं किया गया था? क्या हज़रत उ़स्मान रज़ि० को शहीद नहीं किया गया था? क्या इमाम अबू हनीफ़ा रह० को शहीद नहीं किया गया था? उन हज़रात का ग़म क्यों नहीं करते हो क्या उनका यानी हज़रत अबूबक्र, उ़मर, उ़स्मान, अ़ली, हम्ज़ा रज़ि० का मर्तबा हज़रत हसन व हुसैन रज़ि० से कम है? ख़ुदा की क़सम यह तमाम के तमाम हज़रात उन दोनों से अफ़ज़ल हैं ग़म का ज़्यादा हक़ जो पहुंचता है वह इन हज़रात को पहले पहुंचता है, अगर मुहर्रम की तरह ग़म मनाते जाओगे तो साल के तीन सौ साठ दिन भी कम पड़ेंगे। यह कैसी जिहालत है? यह बिदअ़त तो है ही मगर यह बिदअ़त के साथ बड़ी हिमाक़त भी है कि बड़ों को

छोड़कर छोटों को पकड़ो यह तो तुम्हारी सुन्नत है कि बड़ों को छोड़ा जाये और छोटों को पकड़ा जाये जब ही तो तुम अल्लाह को छोड़कर क़ब्र वालों के पास जाते हो और चीख़ पुकार करते हो याद रखना मैं किसी साहबे क़ब्र की बुराई नहीं कर रहा हूं बल्कि उनकी पूजा करने वालों की अक़ल को तोहफ़ा दे रहा हूं। मैं हज़रत हसन व हुसैन रज़ि० को कम मर्तबे वाला नहीं कहता हूं मैं तो कहता हूं कि आज के तमाम नेक इन्सान एक तरफ़ और एक तरफ़ हज़रत हसन रज़ि० या हुसैन रज़ि० उनका किसी चीज़ में कोई मुक़ाबला नहीं। हमारी तो यह मुहब्बत है लेकिन छोटे तो छोटे ही होते हैं और हज़रत हसन या हज़रत हुसैन हज़रत अबूबक्र रज़ि० के बराबर नहीं हो सकते यह अ़दल है लेकिन लोगों को शरीअ़त का तआ़रुफ़ न होने की वजह से बअ़ज़ गुमराह उ़लमा को मौक़ा मिल जाता है उम्मत को गुमराह करने का, फिर यह न मौत का ख़ौफ़ करते हैं और न क़ियामत के दिन का। बस झूठी मुहब्बत के दअ़वे करते हैं उनको सिर्फ़ यही सिखाया जाता है क्या उन्होंने कभी क़ुरआन का हक़ अदा किया? इल्म की इशाअ़त के ज़रिये देवबन्दियों ने एक हद तक किया है जहां तक हिन्दुस्तान और आ़लम के दीगर ममालिक का कोई फ़िर्क़ा अदा नहीं कर सकता है और न तुमने हदीस का हक़ अदा किया मगर देवबन्दियों ने हज़रत मौलाना अनवर शाह कशमीरी रह० जिनको तक़रीबन चार लाख किताबें हिफ़्ज़ याद थीं जो आज तक हिन्दुस्तान के लिये बे-मिसाल हैं। और हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहब थानवी रह० को पैदा किया जिन्होंने तसनीफ़ के मैदान को ललकारा।

हज़रत मौलाना क़ारी मुहम्मद तैय्यब साहब रह० को पैदा किया जिन्होंने ख़ुतबात के मैदान को ललकारा और यह न समझो

कि अब कोई न रहा देखिये हज़रत मौलाना अनवर शाह के फ़रज़न्द हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह साहब कशमीरी शैख़ुलहदीस दारुल-उलूम वक़्फ़ देवबन्द। हज़रत जब बुख़ारी में इल्मी बहस की राह को इख़्तियार करते हैं तो मैदान में कोई सानी नज़र नहीं आता है अगर यक़ीन न हो तो आओ और देखो कि क्या मैं मुबालग़ा कर रहा हूं या हक़ीक़त को वाज़ेह? और हज़रत मौलाना क़ारी मुहम्मद तैय्यब साहब मोहतमिमे अअ़ज़म फ़िलआ़लम के फ़रज़न्द हज़रत मौलाना मुहम्मद सालिम साहब मोहतमिम दारुल उ़लूम वक़्फ़ देवबन्द जो तक़रीर में हज़रत के नाइब हैं। तक़वे में क्या बताऊं सिर्फ़ एक वाकिआ नक़ल करता हूं।

हज़रत मौलाना मुहम्मद सालिम साहब जब मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ ले गये तो नमाज़ पढ़ी और नमाज़ पढ़कर चलने लगे तो एक अ़रबी आया और आपका नाम पूछा आपने कहा कि मैं सालिम बिन तय्यब हूं। उसने कहा आपको हुज़ूर अकरम स० ने दावत करने का हुक्म दिया है ख़्वाब में, फिर वह हज़रत मौलाना मुहम्मद सालिम साहब को ले गया और खाना खिलाया। यह हैं बे-मिसाल हज़रात और देखिये हज़रत क़ारी मुहम्मद तय्यब साहब मोहतमिम अअ़ज़म के दूसरे फ़रज़न्द हज़रत मौलाना मुहम्मद असलम साहब जो आज के वक़्त में ख़तीबुलअ़स्र हैं। जिनकी तक़रीरों पर उ़लमा को भी नाज़ है जिनकी तक़रीर में वह लहजा है जिसको कुरआन चाहता है :

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ

कि लोगों को बुलाओ उ़म्दा और अच्छे मवाइज़ से, यह हैं चन्द ख़ादिमे दीन। तमाम हज़रात के नाम मैं कहां तक लूं वक़्त नहीं है। बस बिदअ़त वालों की बिदअ़त से दिल तड़प जाता है और क़लम बे-इख़्तियार हो जाता है। ख़ैर नौहा जाइज़ नहीं है

जैसा कि हदीस से साफ़ मालूम हो चुका है।

दूसरी हदीस :

(۳۵۰) عن ابی سعید الخدری رضی اللّٰہ عنہ قال لعن رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم النائحة والمستمعة. (ابوداؤد، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह स० ने नौहा करने वाली औरत और नौहा सुनने वाली औरत दोनों पर लअ़नत फ़रमाई।

इस हदीस ने साफ़ तौर पर यह बयान क़र दिया है कि मय्यत पर बहुत ज़्यादा रोना जाइज़ नहीं और नौहा कहते हैं कि औरत या मर्द का मय्यत की उ़म्दा ख़सलतों को रो रो कर बयान करने को और बअ़ज़ ने मय्यत पर चिल्ला चिल्ला कर रोने को नौहा कहा। औरत को ख़ास इसलिये किया कि यह बहुत नौहा करती है बिलमुक़ाबिल मर्द के अगर मर्द भी चिल्ला चिल्ला कर नौहा करे तो उसके लिये भी नौहा करना जाइज़ नहीं होगा, हां थोड़ा रो लिया काफ़ी है जो होना था सो हो गया अब सिर्फ़ सब्र है कोई रूह थोड़ा ही दोबारा लौट आयेगी लिहाज़ा ऐसे वक़्त में सब्र करना सवाब है।

अ़ज़ीज़ की मौत पर सब्र करने वालों के लिये जन्नत

(۳۵۱) عن ابی هریرة رضی اللّٰہ عنہ قال قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم یقول اللّٰہ ما لعبدی المومن عندی جزآء اذا قبضت صفیّه من اهل الدنیا ثم احتسبه الا الجنة. (بخاری، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जब मैं अपने किसी बन्दे के अ़ज़ीज़ व मेहबूब को जो अहले दुनिया में से हो उठा लेता हूं और

वह बन्दा उस पर सवाब का तलबगार होता है (यानी सब्र करता है) तो मेरे पास उसके लिये जन्नत से बेहतर कोई बदला नहीं है।

मतलब यह है कि अगर किसी का कोई रिश्तेदार जो उससे बहुत क़रीब था अब उसका इन्तिक़ाल हो जाता है तो उस वक़्त यह दूसरा रिश्तेदार न नौहा करता है और न चीख़ पुकार करता है और न सीना पीटता है बल्कि कुछ ग़म का इज़हार करके सब्र करता है कि यह वक़्त तो हर एक को आना है यहां कोई रहने के लिये नहीं आया है सबको आख़िरत की तरफ़ लौटना है आज वह तो कल हम तो परसों कोई और ज़रूर मौत का निवाला बनने वाला है। इस बात को सामने रखते हुए जब वह सब्र करता है तो अल्लाह तआ़ला उसके लिये जन्नत की बशारत दे रहे हैं इससे बढ़कर और क्या बात हो सकती है कि दोज़ख़ से बचाकर हमको अपनी रज़ा वाली जगह यानी जन्नत में रखा जायेगा और बहुत सी हदीसों से मालूम होता है कि सब्र करने वाला हालात व आफ़ात व ग़म पर कुफ़्रिया अलफ़ाज़ न कहने वाला और दूसरी नेमतों पर, राहत पर, मुवाफ़िक़ फ़ैसले पर जब शुक्र करता है तो उन दोनों के लिये यानी सब्र करने वालों के लिये और शुक्र करने वालों के लिये जन्नत की बशारत है और बे-सब्रों से अल्लाह का कोई वअ़दा नहीं है और न नाशुक्रों से अल्लाह को मुहब्बत है

तबलीग़ वाले कहते हैं कि नेक हज़रात की मौत के वक़्त ज़मीन व आसमान रोते हैं

(٣٥٢) عن انس رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ما من مؤمن الّا ولہ بابان بابٌ یَصْعَدُ منہٗ عملہٗ وباب نزل منہ رزقُہٗ فاذا مات بکیا علیہ فذلک قولہ تعالٰی فما بَکَتْ علیھِمُ السمآءُ والاَرْضُ. (ترمذی، مشکوۃ)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने

फ़रमाया, हर मुसलमान के लिये दो दरवाज़े हैं एक तो वह है जिससे उसके नेक अअ़माल ऊपर जाते हैं और दूसरा दरवाज़ा वह है जिससे उसका रिज़्क़ उतरता है चुनांचे जब कोई मोमिन मरता है तो उसके लिये दोनों दरवाज़े रोते हैं उसको अल्लाह तआ़ला के इस इरशाद से समझा जा सकता है :

فَمَابَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ

यानी उन (काफ़िरों) के लिये न आसमान रोया न ज़मीन रोई।

मतलब यह है कि नेक बन्दा जब इन्तिक़ाल कर जाता है उस वक़्त दोनों दरवाज़े रोते हैं एक वह दरवाज़ा जहां से उसके अच्छे और सालेह अअ़माल जाते थे और दूसरा वह दरवाज़ा जहां से उसके लिये रिज़्क़ उतारा जाता था यह दोनों दरवाज़े रोते हैं इस ग़म की वजह से कि उस बन्दे के नेक अअ़माल आते थे उस वक़्त हमको राहत हासिल होती थी वह मर गया अब उसके अअ़माले सालेहा का दरवाज़ा भी बन्द हो गया है अब राहत जाती रही, इस ग़म पर यह दरवाज़ा रोता है और दूसरा दरवाज़ा जिससे उसके लिये रिज़्क़ भेजा जाता था वह भी रोता है कि अभी अभी तो नेक आदमी की ख़िदमत का मौक़ा हासिल हुआ था अब वह भी ख़त्म हो गया। अब इस पर दूसरा दरवाज़ा भी रोता है और यही हदीस तबलीग़ वाले हज़रात बयान करते हैं।

तीन काम जल्दी करने का हुक्म

(٣٥٣) عن علی رضی اللہ عنہ قال یا علیُّ ثلاثٌ لا تُؤخِّرها الصلوةَ اذا اَتَتْ والجنازةُ اذا حَضَرَتْ الْاَیِّمَ اذا وجدْتَ لها کُفْوًا. (ترمذی، مشکوٰۃ)

हज़रत अ़ली रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया ऐ अ़ली तीन काम ऐसे हैं कि उनमें देर न करो :

(1) नमाज़ कि जब उसका वक़्त आजाये।

(2) जनाज़ह कि जब तैयार हो जाये।

(3) बे–ख़ाविन्द वाली औरत कि जब उसका कुफ़ू (हम मिस्ल) तुम्हें मिल जाये (तो उसका निकाह करने में देर न करो)

फ़र्ज़ नमाज़ जबकि उसका वक़्त हो जाये तो उसको उसके वक़्त में पढ़ लो, क़ज़ा न करो, क्योंकि यह बहुत बड़ा गुनाह है और जब जनाज़ह आ जाये तो उसकी नमाज़ जल्द पढ़कर उसको अपने मक़ाम पर पहुचा दो ताख़ीर न करो और तीसरा मसला यह है कि जब बे–ख़ाविन्द लड़की का कोई रिश्ता मिल जाये जो उसके क़ाबिल हो उ़मर के ऐतिबार से और पसन्दीदगी के ऐतिबार से और ख़ानदान के ऐतिबार से भी वह शरीफ़ हो तो फिर ताख़ीर करना दुरुसत नहीं क्योंकि यह वक़्त नाज़ुक होता है फ़ेअ़ले बद में मुब्तला होने का ख़तरा बहुत ज़्यादा होता है और लड़की पर अगर एक मर्तबा भी कोई दाग़ लग जाता है तो वह साफ़ करने से साफ़ नहीं होता। रहा लड़का उसका मसला तो बन भी जाता है और एक हद तक साफ़ भी होता है और अगर लड़के का भी रिश्ता मिल जाये तो फ़ौरन निकाह कर देना चाहिए।

जिसके घर में मौत हुई हो उसके घर खाना भेजना मुसतहब है

(٣٥٣) عن عبد الله بن جعفر قال لما جآء نعى جعفر قال النبى اصنعوا لآل جعفر طعاما فقد اتاهم ما يشغلهم. (ترمذى، مشكوٰة شريف)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जअ़फ़र कहते हैं कि जब हज़रत जअ़फ़र के इन्तिक़ाल की ख़बर आई तो नबी करीम स० ने (अहले बैत से) फ़रमाया कि जअ़फ़र के अहलो–अ़याल के लिये खाना तैयार करो क्योंकि उन्हें एक ऐसा हादिसा पेश आया है जो उन्हें खाना पकाने से बाज़ रखता है।

मतलब यह है कि जब किसी का कोई मर जाय तो पड़ोसी को या रिश्तेदारों को चाहिए कि वह उनको खाना पका कर पहुंचा दे क्योंकि मय्यत के घर वालों पर एक ग़म सवार होता है वह कहां खाना पकायेंगे उनको तो ग़म ने चूर चूर कर दिया है इस लिये हुज़ूर स० ने एक अख़लाकी फ़रीज़ा उम्मत को बता दिया कि उनको खाना पहुंचा दिया करो यह है इस्लाम की इम्तियाज़ी शान जो किसी क़ौम को हासिल नहीं, हमारा एक एक अ़मल ऐसा है जिसके करने वाले को और दूसरों को फ़ाइदा होता है मगर दूसरों के यहां यह बात नहीं है या तो उनको फ़ाइदा होता है जो करता है वरना दोनों को नुक़सान, मगर इस्लाम ने जो तरीक़े बताये हैं उनमें नुक़सान किसी के लिये नहीं बल्कि दोनों के लिये फ़ाइदा है जब दूसरे घर वाला खाना भेजेगा तो क्या उससे वह मुहब्बत नहीं करेगा? यही तो फ़ाइदा है कि दो घर वालों में इत्तिफ़ाक़ पैदा हो जाता है।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि पांच शख़्सों को शहीद का दर्जा हासिल है

(٣٥٥) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم الشُّهَدَاءُ خَمْسَةٌ المطعون والمبطون والغریق وصاحب الهَدْم والشهید فی سبیل الله. (متفق علیه، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया शहीद पांच हैं :

(1) ताऊन ज़दा।
(2) पेट की बीमारी (यानी दस्त और इस्तिसक़ा) में मरने वाला।
(3) पानी में बे-इख़्तियार डूबकर मरने वाला।
(4) दीवार या छत के नीचे दबकर मर जाने वाला।

(5) जो जिहाद में शहीद हो यह हज़रात शहीद हैं।

यही हदीस की बात तबलीग़ वाले हज़रात भी कहते हैं। ताऊ़न का मतलब यह है कि इस बीमारी से मर जाना जो बीमारी शहरी तौर पर आती हो जिस तरह आप देखते होंगे कि कभी कभी पूरे शहर में एक ही बीमारी चल जाती है जैसे आंख का लाल होना या मौसमी बुख़ार का आना, यह तमाम ऐसी बीमारियां हैं जो बहुत जल्द आ़म हो जाती हैं। और कभी कभी ऐसी बीमारी भी शहर में आ जाती है जिससे लोगों को मौत हो जाती हैं जैसा कि मैं जब मदरसा अमीनिया इस्लामिया कश्मीरी गेट देहली में था उस वक़्त डेंगू नामी बुख़ार चल पड़ा था जिससे बहुत से लोगों की मौत हो गई यह बीमारी जो आ़म होती है ताऊ़न कहलाती है इसमें मरने वाला शहीद होता है और एक पेट की बीमारी की वजह से मर जाने वाला भी शहीद कहलाता है जैसे कि दस्त (पेट चलना) उसके ज़रिये भी मरने वाला शहीद कहलाता है और एक पानी में बे–इख़्तियारी से डूबना। इससे यह बात साफ़ हुई कि अगर जान बूझकर डूबता है तो वह शहीद नहीं है बल्कि दूसरी अहादीस से मालूम होता है कि जानकर मरने वाला दोज़ख़ी है क्योंकि उसने ख़ुद–कशी की है और ख़ुद–कशी करने वाला दोज़ख़ी है और दीवार या छत के नीचे दबकर मरने वाला भी शहीद कहलाता है और जो अल्लाह की राह में यानी जिहाद में शहीद हुआ हो तो वह तो शहीद है ही, जैसा कि सबको मालूम है।

तबलीग़ वाले क़ब्र का यह हाल बयान करते हैं

(۳۵۲) عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم اذا اُقبِرَ المیتُ اَتاه ملکان اَسودان ازرقان یُقال لاحدهما

المنكر وللآخر النكير فيقولان ما كنت تقول في هذا الرجل فيقول هو عبد الله ورسولهٗ اشهد ان لا اله الا الله وان محمدًا عبده ورسوله فيقولان قد كنّا نعلم انّك تقول هذا ثم يُفسحُ لهٗ في قبره سبعون ذراعًا في سبعين ثمّ يُنوّر له فيه ثم يقال له نَمْ فيقول ارجع الى اهلي فاخبرُهم فيقولان نَمْ كنومة العروس الّذي لا يُوقظهٗ الاّ احَبُّ اهله اليه حتى يَبْعَثَهُ الله من مضجعه ذلك وان كان منافقا قال سمعتُ الناس يقولون قولا فقلتُ مثلهٗ لا ادرى فيقولان قد كُنّا نعلم انّك تقول ذلك فيقال للارض التئمي عليه فتلتئم عليه فتختلف اضلاعهٗ فلايزال فيها معذّبًا حتى يَبْعَثَهُ اللهُ من مضجعه ذلك (ترمذی، مشکوۃ شریف) وقريب هذا في البخاري الثاني.

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया मुर्दा जब क़ब्र में रख दिया जाता है तो उसके पास काली नीली आंखों वाले दो फ़रिश्ते आते हैं जिसमें से एक को मुन्किर कहा जाता है और दूसरे को नकीर, फिर दोनों फ़रिश्ते सवाल करते हैं कि तू (दुनिया में) इस शख़्स (यानी मुहम्मद स०) के बारे में क्या कहता था? पस मुर्दा अगर मोमिन होता है तो जवाब देता है कि वह अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और यह कि मुहम्मद स० अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं (यह सुनकर) फ़रिश्ते कहते हैं कि हम जानते थे कि तू यही कहेगा उसके बाद इसकी क़ब्र लम्बाई और चौड़ाई में सत्तर सत्तर गज़ वसीअ़ व कुशादा कर दी जाती है और इस (क़ब्र में) उसके लिये रोशनी कर दी जाती है फिर उससे कहा जाता है ले अब अपनी उस ख़्वाबगाह मे मज़े से सो जा (यह सुनकर) वह फ़रिश्ते कहते हैं कि तू बस उस दुल्हन की तरह सो जा जिसको उसके मुतअल्लिक़ीन में से सिर्फ़ वह जगाता है जो उसको सबसे ज़्यादा मेहबूब हो. उस वक़्त तक (सोता रह जब तक) कि अल्लाह

तआला तुझको तेरी इस ख़्वाबगाह से न उठाये। और मुर्दा अगर मुनाफ़िक़ होता है तो यूं जवाब देता है कि उस शख़्स के बारे में जो बात दूसरे लोगों को कहते हुए मैं सुना करता था वही मैं कह दिया करता था (इसके सिवा) मैं और कुछ नहीं जानता (यह सुनकर) फ़रिश्ते कहते हैं हम जानते थे कि तू यही कहेगा उसके बाद ज़मीन को हुक्म दिया जाता है कि इस मुर्दे के ऊपर दोनों तरफ़ से मिलजा, चुनांचे ज़मीन उसके ऊपर इस तरह मिल जाती है यानी इस तरह उसको भींचती और दबाती है कि उसकी दायीं पसलियां बायीं पसलियों में और बायीं पसलियां दायीं पसलियों में एक दूसरे के दर्मियान घुस जाती हैं और उसको इसी तरह बराबर अ़ज़ाब दिया जाता है यहां तक कि अल्लाह तआ़ला (क़यामत के दिन) उस जगह से उठाये।

दोस्तो! इस हदीस को ही तबलीग़ वाले बयान करते हैं जिसमें बअ़ज़ लोगों को मुबालग़ा नज़र आता है मगर तबलीग़ वाले मुबालग़ा क्यों करें? जबकि हुज़ूर अकरम स० ने मुबालग़े से मना किया है वह तो वही बातें बयान करते हैं जो अहादीस से साबित हों ख़ैर मुन्किर और नकीर इन दोनों के लफ़्ज़ी मअ़ना हैं अजनबी ग़ैर–मानूस के, क्योंकि यह भी मुर्दे के लिये अजनबी होते हैं इसलिये उनको मुन्किर और नकीर कहा जाता है बअ़ज़ रिवायात में और भी तर्ज़ से यह हदीस वारिद हुई है कि इसमें फ़रिश्ते के जन्नती के लिये फ़र्श बिछाने का और जन्नत की खिड़की खोलने का तज़्किरा भी मिलता है और काफ़िर के लिये दोज़ख़ी और अज़ाबी बिस्तर का हुक्म होता है कि उसके लिये अ़ज़ाब वाला बिस्तर लाकर बिछा दो और उसके अफ़सोस के लिये जन्नत की एक खिड़की खोली जाती है कुछ वक़्त के लिये जिसमें राहत की चीज़ों का नज़ारा करता है फिर वह खिड़की

बन्द करके उसके लिये दोज़ख़ की खिड़की खोली जाती है। जिससे भयानक और दहशत–नाक आग की लपटें नज़र आती हैं फ़रिश्ते उससे कहते हैं कि अगर तू नेक अअ़माल करता तो तुझको जन्नत हासिल होती। फिर ज़मीन तंग की जायेगी और लोहे के गुर्ज़ों से उसकी पिटाई होगी वह वहां चीख़ मार मार कर थक जायेगा मगर वहां कोई न होगा वहां उसकी कुछ न सुनी जायेगी जो दुनिया में अल्लाह की नहीं सुनता होगा और जो मन मानी ज़िन्दगी बसर करता होगा उसके लिये कोई यारो मददगार न होगा अल्लाह तआ़ला इस भयानक मन्ज़र व अ़ज़ाब से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमायें।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि मौत को भी मौत आयेगी

(۳۵۸) عن ابن عمر رضی الله عنهما قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم اذا صار اهل الجنة الی الجنة واهل النار الی النار جیئ بالموت حتی یجعل بین الجنّةِ والنار ثم یُذْبَح ثم ینادی منادٍ یا اهل الجنة لاموت ویا اهل النار لاموت فیزداد اهل الجنة فرحًا إلی فرحِهِمْ ویزدادُ اهلُ النار حُزنًا الی حزنهم. (متفق علیہ)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० बयान करते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जब जन्नती जन्नत में और दोज़ख़ी दोज़ख़ में (अपनी अपनी जगह) जा लेंगे तो मौत को लाया जायेगा (और बअ़ज़ रिवायतों में यह है कि मौत को एक दुंबे की शक्ल में लाया जायेगा) और उसको जन्नत और दोज़ख़ के दर्मियान डालकर ज़िब्ह कर दिया जायेगा फिर ऐलान करने वाला ऐलान करेगा कि ऐ जन्नतियो! (सुन लो) अब मौत का कोई वुजूद नहीं रहा जो शख़्स जहां और जिस हालत में है उस पर कभी मौत का साया

नहीं पड़ेगा हर एक को हमेशा हमेशा की ज़िन्दगी हासिल हो गई है और ऐ दोज़ख़ियो! (तुम भी सुन लो) अब मौत का कोई वुजूद नहीं रहा (यह ऐलान सुनकर) अहले जन्नत की फ़रहत व मुसर्रत का कोई ठिकाना नहीं होगा और अहले दोज़ख़ रन्ज व ग़म के दरिया में और ज़्यादा डूब जायेंगे।

दोस्तो! यह है असल आराम की जगह और अज़ाब की जगह न कि दुनिया यह तो एक गाड़ी का स्टेशन है न घर है न और न मन्ज़िल लेकिन अगर कोई उसको ही घर जानता है तो उसकी अक़्ल पर अब कौन मातम करे, जब वह रोज़ाना सैकड़ों जनाज़े देख रहा है मगर फिर भी इस दुनिया–ए–बेवफ़ा से वफ़ा की उम्मीद करता है और अपनी आख़िरत को बरबाद करने के पीछे लगा है वफ़ा की जगह तो सिर्फ़ जन्नत है और हर वक़्त अज़ाब की जगह नाफ़रमानों के लिये दोज़ख़ है अब ख़ुद को देखो कि क्या कर रहे हो और क्या करना चाहिये क्या राहे हक़ पर हैं, या बातिल पर? हमको अल्लाह ने अक़्ल दी है उसको काम में लाओ और राहे हक़ को तलाश करो।

क़यामत की दस अलामतें

(٣٥٨) عن حذيفة بن اسيد الغِفَارِيِّ قال اطَّلَعَ النبی صلی اللّٰه عليه وسلم علينا ونحن نتذاكر فقال ماتذكرون قالو انذكُرُ الساعةَ قال اِنَّهَا لن تقوم حتّٰی تروا قبلها عشر آيات فذكر الدُّخان والدجال والدَّابَّةَ وطلوع الشمس من مغربِهَا ونَزُوْل عيسى بن مريم وياجوج وماجوج وثلاثة خُسُوْفٍ خسفَ بِالْمَشْرِق وخسف بِالمغرب وخسف بجزيرة العرب وآخِرُ ذلك نارٌ تخرج من اليَمَنِ تَطْرُدُ الناسَ الى محشرهم وفی روايةٍ نارٌ تخرجُ من قعر عَدْنٍ تسوقُ الناس الى المحشر وفی رواية فی العاشر وريح تلقى الناس فی البحر. (رواه مسلم، مشكوة شريف)

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन उसैद ग़िफ़ारी रज़ि० कहते हैं कि (एक दिन) हम लोग आपस में (क़यामत का) ज़िक्र कर रहे थे कि नबी करीम स० हमारी तरफ़ आ निकले और पूछा कि तुम किस चीज़ का ज़िक्र कर रहे थे?

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया हम क़ियामत का तज़्किरा कर रहे हैं।

तब आप स० ने फ़रमाया यक़ीनन क़ियामत उस वक़्त तक नहीं आयेगी जब तक तुम उससे पहले दस निशानियां न देख लोगे। फिर आप स० ने (उन दस निशानियों को इस तरतीब से) ज़िक्र फ़रमाया :

(1) धुआं।
(2) दज्जाल।
(3) दाब्बतुलअर्ज़ (ज़मीन का एक ख़ास जानवर)
(4) सूरज का मग़रिब की तरफ़ से निकलना।
(5) हज़रत ईसा अलै० का नाज़िल होना।
(6) याजूज व माजूज का ज़ाहिर होना और सातवीं और आठवीं और नवीं निशानी के तौर पर आपने तीन ख़ुसूफ़ का ज़िक्र फ़रमाया एक तो मशरिक़ के इलाक़े में दूसरे मग़रिब के इलाक़े में और तीसरे जज़ीरतुलअरब के इलाक़े में और दसवीं निशानी जो सबके बाद ज़ाहिर होगी वह आग है जो यमन की तरफ़ से नमूदार होगी और लोगों को घेर कर हांक कर ज़मीन हश्र की तरफ़ ले जायेगी और एक हदीस में यूं है कि वह एक ऐसी आग होगी जो कि यमन के मशहूर शहर अदन के आख़री किनारे से नमूदार होगी और लोगों को हांक कर ज़मीन हश्र की तरफ़ ले जायेगी और एक और रिवायत में दसवीं निशानी के तौर पर यमन के मशहूर शहर अदन के आख़री किनारे से नमूदार होने के

बजाये एक ऐसी हवा का ज़िक्र किया गया है जो लोगों को समुन्द्र में फेंक देगी।

(1) हदीस में जो धुऐं का ज़िक्र हुआ है चुनांचे वह एक बड़ा धुआं होगा जो मशरिक़ से ज़ाहिर होकर मग़रिब तक तमाम ज़मीन पर छा जायेगा और मुसलसल चालीस रोज़ तक छाया रहेगा इसकी वजह से तमाम लोग सख़्त परेशान हो जायेंगे मुसलमान तो सिर्फ़ दिमाग़ व हवास की कदूरत और ज़ुकाम में मुब्तला होंगे मगर कुफ़्फ़ार बे–होश हो जायेंगे और उनके होश व हवास इस तरह मुख़तलिफ़ हो जायेंगे कि बअज़ों को कई दिन तक होश नहीं आयेगा।

(2) दज्जाल एक बहुत बड़ा फ़ित्ना है जिसके शर से हर नबी ने अपनी उम्मत को डराया है जिसके एक हाथ में जन्नत और दूसरे हाथ में दोज़ख़ होगी यह तमाम दुनिया का दौरह करेगा अ़रब की बअ़ज़ जगहों के अ़लावा तमाम जगहों पर यह जायेगा यह चालीस दिन तक रहेगा इसके बाद हज़रत ईसा अ़लै० नाज़िल होंगे जो उसको क़त्ल करे देंगे उसकी मुफ़स्सल बहस आगे आ रही है।

(3) दाब्बतुलअर्ज़ से मुराद एक अ़जीबुलख़लक़त और नादिर शक्ल का जानवर है जो मस्जिदे हराम में कोहे सफ़ा व मरवह के दर्मियान से आयेगा और जिसका ज़िक्र कुरआन मजीद में भी इन अलफ़ाज़ में मौजूद है :

وَاَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْاَرْضِ

उ़लमा ने लिखा है कि वह जानवर चौपाये की सूरत में होगा जिसकी दराज़ी (लम्बाई) साठ गज़ होगी और बअ़ज़ हज़रात ने कहा है कि उस अ़जीबुलख़लक़त जानवर की शक्ल यह होगी कि चेहरा इन्सानों की तरह, पांव ऊंट की तरह, गर्दन घोड़े की तरह,

दुम चील की तरह, सुरीन हिरन की तरह सींग बारह सिंगे की तरह और हाथ बन्दर की तरह होंगे। और उसके नमूदार होने की सूरत यह होगी कि वह कोहे सफ़ा जो कअ़बे की मशरिक़ी जानिब वाक़ेअ़ है एक ज़लज़ले से वह कोहे सफ़ा फट जायेगा और उसमें से यह जानवर निकलेगा उसके एक हाथ में हज़रत मूसा अ़लै० का अ़सा होगा और दूसरे हाथ में हज़रत सुलेमान अ़लै० की अंगुशतरी होगी तमाम शहरों और इलाक़ों में तेज़ी के साथ दौड़ा करेगा कि कोई फ़र्द इन्सान उसका पीछा नहीं कर सकेगा और दौड़ में उसका मुक़ाबला करके उससे छुटकारा न पा सके जहां जहां जायेगा हर शख़्स पर निशान लगाता जायेगा जो साहबे ईमान होगा उसको हज़रत मूसा अ़लै० के अ़सा से छुयेगा और उसकी पेशानी पर मोमिन लिख देगा और जो काफ़िर होगा उस पर हज़रत सुलेमान अ़लै० की अंगुशतरी से स्याह मुहर लगा देगा और उसके मुंह पर काफ़िर लिख देगा और बअ़ज़ ने कहा है कि यह दाब्बतुलअर्ज़ तीन मरतबा निकलेगा एक मरतबा हज़रत मेहदी अ़लै० के वक़्त और एक मरतबा हज़रत ईसा अ़लै० के नुज़ूल के वक़्त और एक मरतबा आफ़ताब के मग़रिब की तरफ़ से तुलूअ़ होने के वक़्त।

(4) आफ़ताब मग़रिब से तुलूअ़ होगा यह दस अ़लामतों में से चौथी अ़लामत है इसकी तफ़्सील के लिये एक हदीस पेश कर देता हूं।

(۳۵۹) عن ابی ذر رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم حین غربت الشمسُ اتدری این تذهبُ هذه قلتُ الله ورَسُوْلُهٗ اَعْلَمُ قال فانّها تذهب حتّٰی تسجُدَ تحت العرش فتستاذن فیوذن لها ویوشك ان تسجد لا تُقبل منها وتستاذِنُ فلایوذن لها ویقال لها اِرْجِعِیْ من حیث جئت فتطلع من مغربها فذلك قوله تعالی والشَّمْسُ تَجْرِیْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا قال

مستقرها تحت العرش. (بخاری، مسلم، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबूज़र रज़ि० कहते है कि (एक दिन) जबकि आफ़ताब गुरूब हो रहा था रसूलुल्लाह स० (मुझसे) फ़रमाने लगे जानते हो यह आफ़ताब कहां जा रहा है? मैंने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह और उसके रसूल ही बेहतर जानते हैं। आप स० ने फ़रमाया यह आफ़ताब जाता है यहां तक कि अ़र्श के नीचे सज्दा करता है फिर हुज़ूर रब्बुलइज़्ज़त में हाज़री की इजाज़त मांगता है उसको इजाज़त अ़ता होती है और हुक्म दिया जाता है कि मशरिक़ की तरफ़ जाओ और वहां तुलूअ़ हो जाओ और (याद रखो) वह वक़्त जल्द ही आने वाला है जब आफ़ताब (अपने मअ़मूल के मुताबिक़) सज्दा करेगा लेकिन उसका सज्दा कुबूल नहीं होगा और इजाज़त चाहेगा लेकिन उसको इजाज़त अ़ता नहीं होगी और यह हुक्म दिया जायेगा कि लौट जा जिस तरफ़ से आया है इसलिये मग़रिब ही की तरफ़ लौट जायेगा चुनांचे वह मग़रिब की तरफ़ से तुलूअ़ कर लेगा और यही मुराद है अल्लाह तआ़ला के उस क़ौल से कि :

وَالشَّمْسُ تَجْرِىْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا

यानी आफ़ताब अपने मुसतक़र की तरफ़ चला जाता है और आंहज़रत स० ने आफ़ताब के मुसतक़र की वज़ाहत में फ़रमाया है कि आफ़ताब का मुसतक़र यानी उसके ठहरने की जगह अ़र्श के नीचे है, यह है आफ़ताब का मग़रिब से तुलूअ़ होना।

(5) पांचवां आसमान से हज़रत ईसा अ़लै० का नुज़ूल है। आप का नुज़ूल हज़रत इमाम मेहदी के ज़ुहूर के बाद होगा चुनांचे आप शाम के वक़्त आसमान से दमिश्क़ की जामेअ़ मस्जिद के मशरिक़ी सफ़ेद मीनारे पर उतरेंगे और फिर दज्जाल को तलाश करके उसको दरवाज़ा 'लुद' पर क़त्ल करेंगे (लुद) शाम में एक मक़ाम का नाम है और बअ़ज़ हज़रात ने उसको फ़लस्तीन के

एक मक़ाम का नाम बताया है वाज़ेह रहे कि यहां हदीस में जिन दस निशानियों का ज़िक्र किया गया है उनकी तरतीब के बारे में यह बात कही गयी है कि उनमें से सबसे पहले जिस निशानी का ज़ुहूर होगा वह धुआं है उसके बाद दज्जाल निकलेगा फिर हज़रत ईसा अ़लै० आसमान से नाज़िल होंगे फिर याजूज माजूज का खुरूज होगा। फिर दाब्बतुलअर्ज़ निकलेगा और फिर आफ़ताब मग़रिब की जानिब से तुलूअ़ होगा यह बात इसलिये कही जाती है कि हज़रत ईसा अ़लै० के ज़माने में तमाम रूए ज़मीन पर अहले ईमान के अ़लावा कोई नहीं होगा क्योंकि सारे कुफ़्फ़ार मुसलमान हो जायेंगे और उनका ईमान कुबूल होगा इसके बर–ख़िलाफ़ अगर यह कहा जाये कि मग़रिब की जानिब से आफ़ताब का तुलूअ़ होना दज्जाल के निकलने और हज़रत ईसा अ़लै० के नुज़ूल से पहले होगा तो ज़ाहिर है कि कुफ़्फ़ार हज़रत ईसा अ़लै० के ज़माने में मुसलमान होंगे उनका ईमान मक़बूल क़रार दिया जायेगा क्योंकि आफ़ताब मग़रिब की जानिब से तुलूअ़ होने क बअ़द तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जायेगा और उस वक़्त किसी काफ़िर का ईमान कुबूल करना मोअ़तबर नहीं होगा जबकि हज़रत ईसा अ़लै० के ज़माने में ईमान कुबूल करने वाले तमाम लोगों का ईमान मोअ़तबर होगा और वह मुसलमान माने जायेंगे। मालूम हुआ कि तुलूअ़े आफ़ताब मग़रिब की जानिब से ईसा अ़लै० के नुज़ूल के बाद होगा।

(6) याजूज माजूज का खुरूज– दरअसल याजूज माजूज दो क़बीलों के नाम हैं जो याफ़िस बिन नूह की औलाद में से हैं यह दोनों क़बीले बहुत वहशी मगर ताक़तवर थे उनका ख़ास मशग़ला लूटमार और ज़मीन पर फ़ित्ना व फ़साद फैलाना था यह क़बीला जिस घाटी में रहा करता था उसको ज़ुलक़रनैन अ़लै० ने एक

ऐसी दीवार से जिसकी बुलन्दी उस घाटी के दोनों तरफ़ के पहाड़ों की चोटी तक पहुंचती है और मोटाई साठ गज़ की है बन्द करा दिया था ताकि लोग उन क़बीलों की सरकशी से मेहफ़ूज़ रह सकें जब क़ियामत आने को होगी और याजूज माजूज के निकलने का वक़्त आयेगा तो दीवार टूट जायेगी यह भी एक तवील वाक़िआ है इसको 'रूहुलमआनी' में पढ़ लेना (यह तफ़्सीर की किताब का नाम है।)

(7,8,9) आप स० ने तीन खुसूफ़ का ज़िक्र फ़रमाया है इमाम मालिक रह० ने कहा कि अज़ाबे इलाही के तौर पर ज़मीन का धन्स जाना मुख़्तलिफ़ ज़मानों और मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में वाक़ेअ़ हो चुका है लेकिन एहतिमाल है कि यहां हदीस में जिन तीन खुसूफ़ का ज़िक्र फ़रमाया गया है वह पहले वाक़ेअ़ हो चुकने वाले खुसूफ़ के अ़लावा होंगे और उनसे भी ज़्यादा खुसूफ़ होंगे।

(10) आग का निकलना– यह लोगों को हांक कर ज़मीन हश्र की तरफ़ ले जायेगी, ज़मीन हश्र से मुराद मुल्के शाम का वह इलाक़ा है जहां वह आग लोगों को ले जाकर छोड़ देगी बअ़ज़ हज़रात ने यह कहा है कि ज़्यादा सही बात यह है कि उस आग की इब्तिदा मुल्के शाम से होगी और यह भी कहा गया है कि मुल्के शाम को इस क़द्र वसीअ़ व फ़राख़ कर दिया जायेगा कि पूरे आ़लम के लोग उसमें जमा हो जायेंगे। बहरहाल हदीस के इस जुम्ले का मफ़हूम नहीं है कि उस आग का लोगों को हांकना हश्र के बअ़द होगा अगर ज़मीने हश्र से मुराद मैदाने हशर लिया जाये तो यक़ीनन यह मफ़हूम पैदा होता है और इस पर ऐतिराज़ भी वाक़ेअ़ होता है लेकिन जब यहां मैदाने हशर मुराद नहीं है तो फिर कोई ऐतिराज़ भी पैदा नहीं हो सकता।

हज़रत मेहदी अ़लै० कौन हैं

(٣٦٠) عن عبد الله بن مسعود قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لو لم يَبْقَ من الدنيا الأيَوْمٌ لَطَوَّلَ الله تعالى ذلك اليوم حتى يبعث الله فيه رَجُلاً مِنّى اومن اهل بيتى يُوَاطِئُ اسمُهُ اِسْمِى واسم ابيه اسم ابى يملاءُ الارض قسطا وعدلاً كما مُلِئَت ظُلْمًا وجوراً. (ابوداؤد، مشكوٰة)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अगर दुनिया के इख़्तिताम पज़ीर होने में सिर्फ़ एक दिन भी बाक़ी रह जायेगा तो अल्लाह तआ़ला उस दिन को तवील व दराज़ कर देगा यहां तककि परवरदिगार मेरी नसल में से या यह फ़रमाया कि मेरे अहले बैत में से एक शख़्स को भेजेगा जिसका नाम मेरे नाम पर और जिसके बाप का नाम पेरे बाप के नाम पर होगा और वह तमाम रूए ज़मीन को अ़द्ल व इन्साफ़ से भर देगा जिस तरह इस वक़्त से पहले तमाम रूए ज़मीन ज़ुल्म व सितम से भरी थी।

हज़रत मेहदी अ़लै० क़ियामत से पहले पैदा होंगे और आपका नाम मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह होगा और आप हुज़ूर अकरम स० के ख़ानदान से होंगे उनका लक़ब मेहदी होगा यह बाप की तरफ़ से हसनी और मां की तरफ़ से हुसैनी होंगे यह नसल के साथ रूहानियते मुहम्मद स० में भी शरीक होंगे यानी बहुत मुत्तक़ी और सालेह होंगे, नसल जब मुहम्मद से है तो फिर कौन सी नसल उससे अफ़ज़ल हो सकती है मगर आज अक्सर बल्कि सौ फ़ीसद में से सत्तानवे फ़ीसद लोग झूठा नसब नामा क़ायम कर लेते हैं और फिर वह भी अपने आपको सय्यद कहते हैं और उनके बअ़द वाली औलाद भी सैय्यद कहती है, याद रहे नसब का बदलना हराम है और हुज़ूर अकरम स० की तरफ़ ग़लत निसबत करना तो हरामे से भी हराम है। उ़लमा ने सय्यद की चन्द

सिफ़ात लिखी हैं वह हराम तो क्या मुशतबिहात से भी परहेज़ करेगा उसकी आंखें रात को सोयेंगी नहीं बल्कि रात को रोती रहेंगी यानी तहज्जुद में, और वह शख़्स जो सय्यद होगा वह किसी पर ज़ुल्म न करेगा वह ईंट का जवाब पत्थर से न देगा बल्कि सय्यदों की तरह दुआयें देगा क्या नहीं देखा हुज़ूर अकरम स० को, क्या नहीं देखा हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि० और हज़रत अली रज़ि० को और हज़रत फ़ातमा रज़ि० को क्या उन्होंने कभी किसी पर ज़ुल्म किया, हराम खाया, उनको रातों को नींद आती थी बग़ैर तहज्जुद के। और आये बड़े कहने वाले कि हम सय्यद हैं।

आज अगर वह भंगी भी होगा तो सय्यद कहता है देखो महाराष्ट्र, कर्नाटक, हैदराबाद जाकर और अगर कोई थोड़े से इल्म का मालिक हो जाये तो वह भी सय्यद लिखता है जैसे यू० पी० में बहुत मिलेंगे खुद तो बदनाम होते हैं और नसल मुहम्मद स० को भी बदनाम करने की कोशिश करते हैं जिसको देखो भाई तू कौन है मैं सय्यद हूं, तू कौन मैं शैख़, अरे भाई यहां के राजपूत और मोची चमार कहां हैं, जिनसे पूरा हिन्दुस्तान भरा हुआ था क्या सब मर गये और सिर्फ़ जो एक दो सैय्यद और शैख़ आये थे वही बढ़ गये हैं। खुदा के वास्ते इस तरह मुहम्मद स० को बदनाम न करो ख़ैर हज़रत मेहदी अलै० सय्यद होंगे आपके ज़माने में बहुत ज़्यादा सोना और चांदी पैदा होगा दौलत बेहद होगी अदल व इन्साफ़ से अपनी ममलकत को भर देंगे उनके बाद हज़रत ईसा अलै० नाज़िल होंगे। हज़रत मेहदी अलै० की बरकत को हदीस से समझो :

(۳٦۱) عن جابر رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يكون فى آخر الزمان خليفةٌ يَقْسِمُ المال ولا يَعُدُّهُ فى رواية قال

يكون في آخر أمتي خليفة يحثي المال حثياً ولا يعده عدى. (مسلم، مشكوة)

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया आख़िर ज़माने में एक ख़लीफ़ा (यानी सुलताने बरहक़) पैदा होगा जो ज़रूरत मन्दों को मुस्तहिक़्क़ीन को ख़ूब माल तक़सीम करेगा और एक रिवायत में यूं है कि मेरी उम्मत के आख़री ज़माने में एक ख़लीफ़ा पैदा होगा जो लोगों को मुट्ठी या चुल्लू भरकर (बहुत ज़्यादा) माल व दौलत देगा और उसको शुमार नहीं करेगा जैसा कि शुमार किया जाता है। हदीस से यह बात वाज़ेह हो गई कि हज़रत मेहदी अलै० के दौर में आमदनी बे हिसाब होगी और फ़ुतूहात भी बहुत होंगी और वह लोगों में तक़सीम भी बेशुमार करेंगे।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि क़ियामत के क़रीब दरिन्दे इन्सान से बात करेंगे

(٣٦٣) عن ابى سعيد الخدرى رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم الذى نفسي بيده لاتقوم الساعةُ حتّٰى تُكَلِّم السِّبَاعُ الإنسَ وحتّٰى تُكَلِّمَ الرجل عَذَبةُ سوطِهِ وشراكُ نعلِهِ ويُخبره فخذه بما احدث أهله بعده. (مشكوة شريف)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है क़ियामत उस वक़्त तक नहीं आयेगी जब तक दरिन्दे आदमियों से हम–कलाम न होने लगेंगे और जब तक आदमी के कोड़े (चाबुक) का फन्दा यानी एक हिस्सा व किनारा उसके जूते का तसमा उससे बातें न करने लगेगा और यही नहीं बल्कि इन्सान की रान उसको यह बताया करेगी कि उसके अहलो अ़याल ने उसकी अ़दमे मौजूदगी में कौन से नये काम और क्या नई बात

की है।

इस हदीस से मालूम हुआ कि कियामत के क़रीब दरिन्दे और बे–ज़बान चीज़ें भी इन्सान से बातें करने लगेंगी और इन्सान की रान इन्सान को ख़बर देगी कि तेरे अहल वालों ने तेरी ग़ैर हाज़री में फलां फलां काम किया है यह तमाम चीज़ें अल्लाह तआला के लिये आसान हैं जब इन्सान को मनी के क़तरे से पैदा कर सकता है तो क्या वह जिस्म को ज़बान नहीं दे सकता।

إِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْر

तबलीग़ वाले कहते हैं कि दज्जाल निकलेगा

(٣٦٣) عن النّوّاسِ بن سمعان قال ذكر رسول الله صلى الله عليه وسلم الدَجال فقال ان يَخْرُجَ وانا منكم فانا حجيجُهٗ دونكم وانْ يخرجْ ولستُ فيكم فامْرُءٌ حجيجُ نفسه والله خليفتي على كُلِّ مسلم اِنَّهٗ شابٌ قَطِطٌ عينهٗ طافيةٌ كانى اُشَبِّهُهٗ بعبد العُزّٰى بن قطن فمَنْ ادركه منكم فلْيَقْرَاْ عليه فواتح سورةِ الكهف وفى رواية فليقرا عليه فواتح سورة الكهف، فانها جوارُكم من فتنته اِنَّهٗ خارجٌ خَلَّةً بين الشام والعراق فعاثٍ يمينًا وعاثٍ شمالاً ياعباد الله فاثبتوا قلنا يا رسول الله وما لُبثُهٗ فى الارض قال اربعون يومًا يومٌ كسنةٍ ويومٌ كشهرٍ ويومٌ كجمعةٍ وسآئرُ ايّامِهٖ كايّامكم قلنا يا رسول الله صلى الله عليه وسلم فذلك اليومُ الذى كسنةٍ ايَكْفِينَا فيه صلوةُ يومٍ قال لا اقدروا له قدرهٗ قلنا يا رسول الله ومآ اِسْراعُهٗ فى الارض قال كالغيثِ استدْبَرَتْهُ الريحُ فياتى على القوم فيدعوهم فيؤمنون به فيامُرُ السماء فتمطر والارض فتنبتُ فتَرُوْحُ عليهم سارِحَتُهُمْ اطول ما كانت ذُرىً واسبغه ضُرُوْعًا وامَدَّهٗ خواصِرَ ثُمَّ يَاْتِيْ القوم فيدعوهم فيردُّوْنَ عليه قولَهٗ فينصرِفُ عنهم فيصبِحُوْنَ ممحلين بايديهم شيئٌ من اموالهم ويَمُرُّ بالخربة فيقول لها اخرجى كنوزَكِ فتتبَعُهٗ كنوزُها كيعَا سيبَ النَّحْلِ ثم يدعوا رجلاً ممتلئًا شبابًا فيضربه بالسيف فيقطعهٗ جزلتين رمية الغرض ثم

يدعوه فيقبل ويتهلل وجهه يضحك فبينما هو كذلك اذ بعث الله المسيح
بن مريم فينزل عند المنارة البيضاء شرقي دمشق بين مهزودتين كفيه على
اجنحة ملكين اذا طاطا راسه قطر واذا رفعه تحدر منه مثل جمان كاللؤلؤ
فلايحل لكافر يجد من ريح نفسه الامات ونفسه ينتهي حيث ينتهي طرفه
فيطلبه حتى يدركه بباب لد فيقتله ثم ياتي عيسى قوم قد عصمهم الله منه
فيمسح عن وجوههم ويحدثهم بدرجاتهم في الجنة فبينما هو كذلك اذا
اوحى الله الى عيسى اني قد اخرجت عبادا لي لايدان لاحد بقتالهم فحرز
عبادى لي الطور ويبعث الله ياجوج وماجوج وهم من كل حدب ينسلون
فيمر اوائلهم على بحيرة طبرية فيشربون ما فيها ويمر آخرهم فيقول لقد
كان بهذه مرة ماء ثم يسيرون حتى ينتهون الى جبل الخمر وهو جبل بيت
المقدس فيقولون لقد قتلنا من في الارض هلم فلنقتل من في السماء
فيرمون بنشابهم الى السماء فيرد الله عليهم نشابهم مخضوبة دما
ويحصر نبي الله واصحابه حتى تكون راس الثور لاحدهم خيرا من مائة
دينار لاحدكم اليوم فيرغب نبي الله عيسى واصحابه فيرسل الله عليهم
النغف في رقابهم فيصبحون فرسى كموت نفس واحدة ثم يهبط نبي والله
عيسى واصحابه الى الارض فلايجدون في الارض موضع شبر الا ملاه
زهمهم ونتنهم فيرغب نبي الله عيسى واصحاب الى الله فيرسل الله طيرا
كاعناق البخت فتحملهم فتطرحهم حيث يشاء الله وفي رواية تطرحهم
بالنهبل ويستوقد المسلمون من قسيهم ونشابهم وجعابهم سبع سنين ثم
يرسل الله مطرا لايكن منه بيت مدر ولا وبر فيغسل الارض حتى يتركها
كالزلفة ثم يقال للارض انبتي ثمرتك وردي بركتك فيومئذ تاكل العصابة
من الرمانة ويستظلون بقحفها ويبارك في الرسل حتى ان اللقحة من الابل
لتكفي الفئام من الناس واللقحة من البقر لتكفي القبيلة من الناس واللقحة
من الغنم، لتكفي الفخذ من الناس فبيناهم كذلك اذا بعث الله ريحا طيبة
فتاخذهم تحت اباطهم فتقبض روح كل مومن وكل مسلم ويبقى شرار

النَّاس يتهارجون فيها تهارُجَ الْحُمَرِ فَعَلَيْهِمْ تَقُوْمُ السَّاعةُ ورواه مسلم الا الرواية الثانية وهي قولهم تَطْرَحُهُمْ بِالنَّهْبَلِ الى قوله سبع سنين رواها
(ترمذی، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत नव्वास बिन समआन रज़ि० कहते हैं कि (एक दिन) रसूलुल्लाह स० ने दज्जाल के निकलने और उसके फ़रेब–कारों और उसके फ़ित्ने में लोगों के मुबतला होने का ज़िक्र किया चुनांचे आप स० ने फ़रमाया अगर दज्जाल निकले और (बिलफ़र्ज़) मैं तुम्हारे दर्मियान मौजूद हूं तो मैं उससे तुम्हारे सामने बहस और दलील के ज़रिये उस पर ग़ालिब आऊंगा और अगर दज्जाल उस दिन निकले जब मैं न हूंगा तो फिर तुममें से हर शख़्स अपनी ज़ात की तरफ़ से उससे झगड़ने वाला होगा उसके बाल घुंघरियाले होंगे और उसकी आंख फूली हुई होगी गोया मैं उसको क़तन के बेटे अब्दुलउ़ज़्ज़ा से तशबीह दे सकता हूं, पस तुममें से जो शख़्स उसको पाये उसको चाहिये कि वह उसके सामने सूरे कहफ़ की इब्तिदाई आयात पढ़े और मुस्लिम ही की एक रिवायत में यह अलफ़ाज़ हैं कि उसको चाहिये कि वह उसके सामने सूरे कहफ़ की इब्तिदाई आयतें पढ़े क्योंकि वह आयतें तुम्हें दज्जाल के फ़ित्ने से मामून व महफ़ूज़ रखेंगी (जान लो) दज्जाल उस रास्ते से नमूदार होगा जो शाम और ईराक़ के दर्मियान वाक़ेअ़ है और दाएं बाएं फ़साद फैलायेगा (पस) ऐ अल्लाह के बन्दो! (इस वक़्त जबकि दज्जाल निकले) तो (अपने दीन पर) साबित क़दम रहना (रावी कहते हैं कि) हमने (यह सुनकर) अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह स० वह कितने दिनों ज़मीन में रहेगा?

आप स० ने फ़रमाया चालीस दिन (और ज़माने की तिवालत के ऐतिबार से उनमें से) एक दिन एक साल के और एक दिन एक माह के और एक दिन एक हफ़्ते के बराबर होगा और बाक़ी

दिन तुम्हारे दिनों के मुताबिक़ (यानी हमेशा के दिनो की तरह) होंगे हमने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह उन दिनों में से जो एक दिन एक साल के बराबर होगा क्या उस दौर में हमारी एक दिन की नमाज़ काफ़ी होगी आपने फ़रमाया नहीं बल्कि नमाज़ पढ़ने के लिये एक दिन का हिसाब लगाना होगा हमने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह वह ज़मीन पर कितना ज़्यादा तेज़ चलेगा (यानी उसकी तेज़ रफ़्तारी की क्या कैफ़ियत होगी) आप स० ने फ़रमाया वह अब्र की मानिन्द तेज़ रफ़्तार होगा जिसके पीछे हवा होगी, वह एक एक क़ौम के पास पहुंचेगा और उसको अपनी दावत देगा (यानी अपनी इत्तिबाअ़ की तरफ़ बुलायेगा और बुराई के रास्ते पर लगायेगा) लोग उस पर ईमान ले आयेंगे यानी उसके फ़रेब में आकर उसकी इत्तिबाअ़ करने लगेंगे फिर वह (अपने ताबेदारों को नवाज़ने के लिये) अब्र से बारिश बरसाने का हुक्म देगा तो अब्र बारिश बरसायेगा और ज़मीन को सबज़ा उगाने का हुक्म देगा तो ज़मीन सबज़ा उगायेगी फिर जब शाम को उस क़ौम के (वह) मवेशी आयेंगे जो चरने के लिये सुबह के वक़्त जंगल व बयाबान गये थे तो उनके कोहान बड़े बड़े हो जायेंगे, उनके थन दूध की ज़्यादती की वजह से बढ़ जायेंगे और ख़ूब खाने पीने की वजह से तन जायेंगे।

फिर उसके बाद दज्जाल एक और क़ौम के पास पहुंचेगा और उनको अपनी दावत देगा उस क़ौम के लोग उसकी दावत को रद्द कर देंगे यानी वह उसकी बात को क़ुबूल नहीं करेंगे और उस पर ईमान लाने से इन्कार कर देंगे और वह उनके पास से चला जायेगा यानी अल्लाह तआला उसको इस क़ौम की तरफ़ फ़ेर देगा फिर उस क़ौम के लोग क़हत व ख़ुश्क–साली और तबाह हाली का शिकार हो जायेंगे यहां तक कि वह माल व अस्बाब से

बिल्कुल ख़ाली हो जायेंगे उसके बाद दज्जाल एक वीराने पर से गुज़रेगा और उसको हुक्म देगा कि वह अपने ख़ज़ानों को निकाल दे चुनांचे वह वीराना दज्जाल के हुक्म के मुताबिक़ अपने ख़ज़ानों को उगल देगा और वह ख़ज़ाने इस तरह पीछे पीछे हो लेंगे जिस तरह शहद की मक्खियां अपने सरदार के पीछे होती हैं।

फिर दज्जाल एक शख़्स को जो जवानी से भरपूर यानी निहायत क़वी व तवाना और जवान होगा अपनी तरफ़ बुलायेगा और इस बात से ग़ुस्सा होकर वह उसकी उलूहियत से इन्कार कर देगा या महज़ अपनी ताक़त व क़ुदरत ज़ाहिर करने और अपने ग़ैर मअ़मूली कारनामों की इब्तिदा के लिये उस पर तलवार का ऐसा हाथ मारेगा कि उसके दो टुकड़े हो जायेंगे जैसा कि तीर निशाने पर फेंका जाता है यानी उसके जिस्म के दोनों टुकड़े एक दूसरे से इस क़द्र फ़ासले पर जाकर गिरेंगे जितना फ़ासला तीर चलाने वाले और उसके निशाने के दर्मियान होता है और बअ़ज़ हज़रात ने यह मअ़ना बयान किये हैं कि उसकी तलवार का हाथ उसके जिस्म पर इस तरह पहुंचेगा जिस तरह तीर अपने निशाने पर पहुंचता है उसके बाद दज्जाल उस नौजवान (के जिस्म के उन टुकड़ों) को बुलायेगा चुनांचे वह ज़िन्दा होकर दज्जाल की तरफ़ मुतवजह होगा और उस वक़्त उसका चेहरा निहायत बश्शाश, रोशन और खिला हुआ होगा। ग़र्ज़ यह कि दज्जाल इसी तरह अपनी फ़रेब कारियों और गुमराह करने वाले कारनामों में मशग़ूल होगा कि अचानक अल्लाह तआ़ला मसीह इब्ने मरयम को नाज़िल फ़रमायेगा जो दमिश्क़ के मशरिक़ की जानिब के सफ़ेद मिनारे से उतरेंगे। उस वक़्त हज़रत ईसा अलै० ज़र्द रंग के दो कपड़े पहने हुए होंगे वह जिस वक़्त अपना सर झुकायेंगे तो पसीना टपकेगा और जब सर उठायेंगे तो उनके सर

से चांदी के दानों की मानिन्द क़तरे गिरेंगे जो मोतियों की तरह होंगे यह नामुमकिन होगा कि किसी काफ़िर तक हज़रत ईसा अ़लै० के सांस की हवा पहुंचे और वह मर न जाये। यानी जो भी काफ़िर उनके सांस की हवा पायेगा मर जायेगा और उनके सांस की हवा उनकी हद्दे नज़र तक जायेगी फिर हज़रत ईसा अ़लै० दज्जाल को तलाश करेंगे यहां तक कि वह उसको बाबे लुद पर पायेंगे और क़त्ल कर डालेंगे उसके बाद हज़रत ईसा अ़लै० के पास वह लोग आयेंगे जिनको अल्लाह तआ़ला ने दज्जाल के मक्र व फरेब और फ़ित्ने से मेहफ़ूज़ रखा होगा हज़रत ईसा अ़लै० उसी हाल में होंगे कि अचानक अल्लाह तआ़ला ने जिन लोगों को दज्जाल के मक्र व फरेब और फ़ित्ने से मेहफ़ूज़ रखा होगा हज़रत ईसा अ़लै० उन लोगों के चहरों से गर्द व गुबार साफ़ करेंगे और उनको दरजात व मरातिब की बशारत देंगे जो वह जन्नत में पायेंगे।

हज़रत ईसा अ़लै० उसी हाल में होंगे कि अचानक अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उनके पास यह वही (यानी वहीए ख़फ़ी जिसे इलहाम कहेंगे) आयेगी कि मैंने अपने बहुत से ऐसे बन्दे पैदा किये हैं जिनसे लड़ने की क़ुदरत व ताक़त कोई नहीं रखता लिहाज़ा तुम मेरे बन्दों को जमा करके कोहे तूर की तरफ़ ले जाओ और उनकी हिफ़ाज़त करो फिर अल्लाह तआ़ला याजूज माजूज को निकालेगा जो हर बुलन्द ज़मीन को फलांगते हुए उतरेंगे और दौड़ेंगे (उनकी तअ़दाद इतनी ज़्यादा होगी कि जब तक उनकी सबसे पहली जमाअ़त तबरिये से गुज़रेगी तो उसका सारा पानी पी जायेगी फिर जब उस जमाअ़त के बाद आने वाली जमाअ़त वहां से गुज़रेगी तो बुहैरा–ए–तबरिया को ख़ाली देखकर कहेगी कि उसमें कभी पानी था उसके बाद याजूज माजूज आगे बढ़ेंगे

यहां तक कि जबल ख़मर तक पहुंच जायेंगे जो बेतुलमुक़द्दस का एक पहाड़ है, और ज़ुल्म व ग़ारत–गरी और अज़ीयत–रसानी और लोगों को पकड़ने क़ैद करने में मशग़ूल हो जायेंगे और फिर कहेंगे कि हमने ज़मीन वालों को ख़त्म कर दिया है चलो आसमान वालों का ख़ात्मा कर दें चुनांचे वह आसमान की तरफ़ एक तीर फेंकेंगे और अल्लाह तआला उनके तीरों को ख़ून आलूद करके लौटा देगा ताकि वह उस ख़्याल में रहेंगे कि हमारा तीर वाक़िअतन आसमान वालों का काम तमाम करके वापस आ गया है गोया अल्लाह तआला की तरफ़ से उनको ढील दी जायेगी और यह एहतिमाल भी है कि वह तीर फ़िज़ा मे परिन्दों को लगेंगे और उनके ख़ून से आलूदह होकर वापस आयेंगे पस इसमे इस तरफ़ इशारा है कि दज्जाल का फ़ित्ना ज़मीन तक ही महदूद नहीं रहेगा बल्कि ज़मीन के ऊपर भी फैल जायेगा इस अर्से में ख़ुदा के नबी और उनके रुफ़क़ा यानी हज़रत ईसा अलै० और उस वक़्त के मोमिन कोहे तूर पर रुके रहेंगे और उन पर असबाब मईशत की तन्गी व क़िल्लत इस दर्जे को पहुंच जायेगी कि उनके बैल का सर आज के सौ दीनारों से बेहतर होगा जब यह हालत हो जायेगी तो अल्लाह तआला के नबी हज़रत ईसा अलै० और उनके साथ के मोमिन याजूज व माजूज की हलाकत के लिये दुआ व गिरया–ज़ारी करेंगे पस अल्लाह तआला उनकी गर्दनों में नग़फ़ यानी कीड़े पड़ जाने की बीमारी भेजेगा जिससे वह सब एक साथ इस तरह मर जायेंगे कि जिस तरह कोई एक शख़्स मर जाता है (यानी उस बीमारी से सब एक साथ मर जायेंगे) अल्लाह तआला के नबी हज़रत ईसा अलै० और उनके साथी इस बात से आगाह होकर पहाड़ से ज़मीन पर आयेंगे और उन्हें ज़मीन पर एक बालिश्त का टुकड़ा भी ऐसा नहीं मिलेगा जो

याजूज व माजूज की चर्बी और बदबू से खाली हो।

हज़रत ईसा० अ़लै० और उनके साथी अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करेंगे तब अल्लाह तआ़ला बख़ती ऊंट की गर्दन जैसी लम्बी लम्बी गर्दनों वाले परिन्दों को भेजेगा जो याजूज व माजूज की लाशों को उठाकर जहां अल्लाह की मर्ज़ी होगी वहां फेंक देंगे।

एक रिवायत में यह है कि वह परिन्दे उनकी लाशों को नोहबल में डाल देंगे और मुसलमान याजूज व माजूज की कमानों और तरकशों को सात साल तक जलाते रहेंगे फिर अल्लाह तआ़ला एक ज़ोरदार बारिश भेजेगा जिससे कोई भी मकान चाहे वह मिट्टी का हो या पत्थर का, और चाहे वह सूफ़ का हो, नहीं बचेगा, वह बारिश ज़मीन को धोकर आइने की तरह साफ़ कर देगी फिर ज़मीन को हुक्म दिया जायेगा कि अपने फलों यानी अपनी पैदावार को निकाल और अपनी बरकत को वापस ला चुनांचे इस वक़्त (ज़मीन की पैदावार इस क़द्र बा बरकत होगी कि) दस से लेकर चालीस आदमियों तक की पूरी जमाअ़त एक अनार के फल से सैर हो जायेगी और उस अनार के छिलके से लोग साया हासिल करेंगे और दूध में बरकत दी जायेगी यानी ऊंट और बकरियों के थनों में दूध बहुत होगा यहां तक कि दूध देने वाली एक ऊंटनी लोगों की एक बड़ी जमाअ़त के लिये काफ़ी होगी दूध देने वाली एक गाय लोगों के एक क़बीले के लिये काफ़ी होगी और दूध देने वाली एक बकरी आदमियों की एक छोटी जमाअ़त के लिये काफ़ी होगी। बहरहाल लोग इसी तरह की ख़ुशहाल और अमन व चैन की ज़िन्दगी गुज़ार रहे होंगे कि अल्लाह तआ़ला एक ख़ुश्बूदार हवा भेजेगा जो उनकी बग़ल के नीचे के हिस्से को पकड़ेगी (यानी इस हवा की वजह से बग़ल में दर्द पैदा होगा) और फिर वह हवा हर मोमिन और हर मुसलमान

की रूह क़ब्ज़ करेगी और सिर्फ़ बदकार व शरीर लोग दुनिया में बाक़ी रह जायेंगे जो आपस में गधों की तरह मुख़तलिफ़ हो जायेंगे।

अ़लामते क़ियामत की तशरीह

(1) हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अगर मैं मौजूद हुआ और दज्जाल निकले तो में उससे मुक़ाबला करूंगा दलाइल से और ताक़त से और ग़ालिब आ जाऊंगा (यानी क़त्ल कर दूंगा)

(2) और अगर मैं न हुआ तो हर मुसलमान पर ज़रूरी है कि वह उससे मग़लूब न हो बल्कि उसको मग़लूब कर दे और तुम ईमानी दलाइल से उसका मुक़ाबला करना यानी उसको ख़ुदा न मानना और उसके अ़ज़ाब से न डरना क्योंकि दरअसल उसका अ़ज़ाब जन्नत है और उसकी जन्नत दोज़ख़ है।

(3) हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया मेरे बाद मेरी जानिब से वकील व ख़लीफ़ा हर मुसलमान के लिये अल्लाह तआ़ला ही हैं इस हक़ीक़त की तरफ़ इशारा है कि मेरे बाद अल्लाह तआ़ला हर मोमिन व मुसलमान का हाफ़िज़ व नासिर होगा और दज्जाल के फ़ित्ने से बचने में मदद देगा पस यह इस बात की दलील है कि कामिल यक़ीन रखने वाला मोमिन हमेशा मदद व नुसरत पाता है अगरचे उनके दर्मियान नबी व इमाम मौजूद न हो, इस ऐतिबार से जो हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया।

(4) हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया उसके सामने सूरे कहफ़ की इब्तिदाई आयतें पढ़ें, इन आयतों से मुराद शुरू से

إِنْ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا

तक की आयतें हैं, इन आयतों को दज्जाल के सामने पढ़ने का हुक्म इसलिये दिया गया है कि उनमें जो मज़ामीन मज़कूर हैं वह

अल्लाह तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात की मअरिफ़त, उसकी किताब और आयाते बय्यिनात के सुबूत और उसके रसूल स० की सदाक़त और रसूल स० की एअजाज़ी शान पर दलालत करते हैं जिसकी बरकत से दज्जाल का ज़बर्दस्त कारनामा मलया-मेट होकर रह जायेगा और उसकी इत्तिबाअ़ करने वाले हलाकत व तबाही के अ़लावा और कुछ नहीं पायेंगे।

(5) हुज़ूर अकरम स० की नसीहत— ऐ अल्लाह के बन्दो! तुम साबित क़दम रहना यह ख़िताब उन मोमिनीन से है जो दज्जाल के ज़माने में होंगे या आप स० ने यह बात अपने सहाबा रज़ि० से फ़रमाई कि अगर बिलफ़र्ज़ तुम दज्जाल का ज़माना पाओ तो उस वक़्त दीन पर मज़बूती से क़ायम रहना लेकिन यहां पर उन लोगों को मुराद लेना जो दज्जाल को पायेंगे ज़्यादा बेहतर है।

(6) हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया दज्जाल चालीस दिन तक रहेगा लेकिन एक रिवायत चालीस साल की भी है मगर पहली रिवायत यानी चालीस दिन वाली मुस्लिम की है जो ज़्यादा सही रिवायत है और चालीस साल वाली रिवायत को अ़ल्लामा बग़वी ने ग़ैर सही क़रार दिया है।

(7) हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया नमाज़ पढ़ने के लिये एक दिन का हिसाब लगाना होगा मतलब यह है कि जब तुलूअ़ फज्र के बाद इतना वक़्त गुज़र जाये जो आम दिनों के ऐतिबार से फज्र और ज़ोहर के दर्मियान होता है तो उस वक़्त ज़ोहर की नमाज़ पढ़ी जाये इसी तरह अ़स्र को पढ़ना। इसी तरह पूरी नमाज़ों को अदा करना क्योंकि दज्जाल के वक़्त बअ़ज़ दिन साल के और बअ़ज़ दिन महीने के और बअ़ज़ दिन हफ़्ते के बराबर होंगे।

(8) हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया हज़रत ईसा अ़लै० की सांस की हवा के पहुंचने से काफ़िरों की मौत वाक़ेअ़ होगी अब

यह सवाल पैदा होता है कि फिर दज्जाल क्यों नहीं मरेगा आपकी सांस की हवा से जब कि वह भी काफ़िर होगा?

जवाब– इसलिये कि अल्लाह तआला इस ख़ुदाई का दावा करने वाले को उसकी आंख के सामने उसके क़त्ल को दिखायेगा और हज़रत ईसा अलै० को यह शर्फ़ हासिल हो जायेगा कि आप ने दुश्मने ख़ुदा को क़त्ल कर दिया और मोमिनों को उसकी आफ़ात से निजात दे दी।

(9) बुहैरा तिबरिया, इज़ाफ़त के साथ है और लफ़्ज़ बुहैरा तसग़ीर है 'बहरतुन' की जिसके मअ़ना उस जगह के हैं जहां पानी जमा होता है जैसे समुन्द्र या बड़ा दरिया चुनांचे उसके मअ़ना छोटे दरिया यानी झील के हैं।

(10) जबले ख़मरह एक पहाड़ का नाम है खमरह असल में घनी झाड़ी को कहते हैं या उस ज़मीन को कहते हैं जो दरख़्तों और झाड़ियों में छुपी हुई होती है। चुनांचे इस पहाड़ पर दरख़्त और घनी झाड़ियां बहुत हैं इसलिये उसको जबले ख़मर का नाम दिया गया है।

(11) वह परिन्दे उनकी लाशों को नहबल में डाल देंगे और नहबल एक जगह का नाम है जो बैतुलमुक़द्दस के इलाक़े में वाक़ेअ़ है लेकिन मजमुउलबहरैन में लिखा है कि नहबल के असल मअ़ना हैं गहरे गढ़े के।

दज्जाल की एक ग़ैर मालूम ख़बर

(٣٦٣) عن ابی هريرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله عليه وسلم اَلاَ اُحَدِّثُكُم حديثًا عن الدجال ما حدث به نبیٌ قومَهٗ اِنَّهٗ اَعْوَرُ واِنَّهٗ يَجِیُٔ معه بمثل الجنة والنار فالتی يقول اِنَّها الجنةُ هِیَ النارُ واِنِّیْ اُنْذِرُكُمْ كما اَنْذَر به نوحٌ قومَهٗ. (بخاری، مشكوٰة شريف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने

फ़रमाया आगाह रहो मैं तुम्हें दज्जाल के बारे में ऐसी बात बताता हूं जो किसी और नबी ने अपनी क़ौम से नहीं बताई है (और वह बात यह है कि) दज्जाल काना होगा और वह अपने साथ जन्नत व दोज़ख़ की जैसी दो चीज़ें लायेगा, पस वह जिस चीज़ को जन्नत कहेगा हक़ीक़त में वह आग होगी लिहाज़ा मैं तुम्हें उस दज्जाल से डराता हूं जैसा कि नूह अलै० ने अपनी क़ौम को उससे डराया था।

मतलब यह है कि दज्जाल के पास अल्लाह वाली जन्नत तो न होगी मगर उसके पास एक बाग़ होगा जिसको वह अपनी जन्नत से तअबीर करेगा और एक आग का मजमूआ होगा जिसको वह अपनी दोज़ख़ कहेगा और जो उसको ख़ुदा कहेगा उसको अपनी जन्नत में दाख़िल करेगा और जो उसको ख़ुदा न मानेगा वह उसको अज़ाब में मुबतला करेगा और यह भी वाज़ेह रहे कि जो उसकी जन्नत होगी वह अल्लाह की दोज़ख़ है और जो उसकी दोज़ख़ होगी वह अल्लाह की जन्नत होगी। मतलब साफ़ है कि वह जिसको जन्नत में दाख़िल करेगा वह शख़्स दज्जाल को ख़ुदा जानता होगा और जो दज्जाल की दोज़ख़ में होगा यानी सज़ा व अज़ाब में, वह दज्जाल को काफ़िर और दज्जाल जानेगा और उसको ख़ुदा कहने से सख़्ती के साथ इन्कार करेगा दज्जाल उसको अपनी दोज़ख़ में दाख़िल करेगा और यह शख़्स हक़ीक़तन जन्नती होगा।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि दज्जाल के वक़्त तसबीह से पेट भर जायेगा

हज़रत असमा रज़ि० की हदीस का आख़री जुज़ लिख रहा हूं क्योंकि शुरू का मज़मून पहली हदीस में मौजूद है और आख़री

जुज़ उसमें नहीं है और अगर पूरी हदीस लिखूं तो बहस तवील हो जायेगी।

(٣٦٥) عن اسماء رضی اللہ عنہا قُلْتُ یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لقد خَلَعت اَفْئِدَتَنَا بذکر الدجال قال اِنْ یَّخْرُجْ وانا حَیٌّ فانا حجیجہٗ والاَّ فاِنَّ رَبِّیْ خلیفتی علی کل مؤمن فَقُلْتُ یارسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اِنَّا لنعجن عجیننا فما نَخْبِزُہٗ حتّٰی نجوع فکیف بالمؤمنین یومئذٍ قال یُجْزِئُہم مایُجْزِیُٔ اہل السماء من التسبیح والتقدیس (مشکوٰۃ، احمد، ابوداؤد طیالسی)

हज़रत असमा रज़ि० कहती हैं कि या रसूलुल्लाह स० आप ने तो (दज्जाल का इस तरह ज़िक्र करके) हमारे दिल निकाल लिये हैं (यानी) उसका यह हाल सुनकर हमारे दिल सख़्त मरऊब हो गये हैं आप स० ने फ़रमाया अगर दज्जाल निकले और फ़र्ज़ करो मैं ज़िन्दा हूं तो दलाइल व हुज्जत से उसको दफ़ा कर दूंगा और अगर वह उस वक़्त निकला जब मैं दुनिया में मौजूद न रहूंगा तो यक़ीनन मेरा परवरदिगार हर मोमिन के लिये मेरा वकील व ख़लीफ़ा होगा (यानी उस वक़्त अल्लाह तआला हर साहबे ईमान का हामी व मददगार होगा और उसके फ़ित्ने व फ़साद से मेहफ़ूज़ रखेगा) फिर मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह भूख के वक़्त इन्सान की बेसब्री का आ़लम तो यह होता है कि हम आटा गूंधते हैं और उसकी रोटी पकाकर फ़ारिग़ भी नहीं होते कि भूख से हम बेचैन हो जाते हैं तो ऐसी सूरत में उस वक़्त जबकि क़हत साली फैली हुई होगी गिज़ा और तमाम चीज़ें दज्जाल के तसल्लुत में होंगी और खाने पीने की चीज़ें सिर्फ़ वही शख़्स पा सकेगा जो दज्जाल की इत्तिबाअ़ करेगा आख़िर मोमिनों का क्या हाल होगा यानी वह अपनी भूख पर किस तरह क़ाबू पायेंगे और उन्हें सब्र व क़रार किस तरह मिलेगा? हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया उनके लिये वही चीज़ काफ़ी होगी जो आसमान

वालो (यानी फरिश्तों को काफी होती है) यानी तसबीह और तकदीस।

हासिल दो चीजें निकलीं इस तसबीह से और तक़दीस से भूख का ख़त्म ही होना मुराद है क्योंकि मिसाल हुज़ूर अकरम स० ने फ़रिश्तो की दी है और फ़रिश्तों को तसबीह के ज़रिये गिज़ा मयस्सर होती है इसी तरह अहले ईमान के साथ भी होगा चन्द दिन के लिये यह बात कोई बईद नहीं है और दूसरे मअ़ना यह भी हो सकते हैं कि उनको तसबीह के ज़रिये सब्र और इस्तिकामत की कुव्वत हासिल होगी। खै़र तबलीग वालों का कौ़ल साबित मिनलहदीस हो गया।

हज़रत ईसा अ़लै० का नुज़ूल ज़रूरी है

(٣٦٦) عن ابی هريرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله عليه وسلم والذی نفسی بيده لَيُوشِكَنَّ اَن يَّنزِلَ فيكم ابن مريم حكمًا عدلا فَيَكْسِرُ الصليب وَيَقْتُلُ الخنزير ويضع الجزية ويفيضُ المال حتى لا يَقبلَهُ احدٌ حتّٰى تكون السجدة الواحدة خيرًا مِّنَ الدنيا وما فيها ثُمَّ يقول ابوهريرة رضی الله عنه فاقرؤا ان شئتم وان مِّنْ اهل الكتٰب الا ليؤمِنَنَّ به قَبلَ مَوْتِهٖ. (بخاری، مسلم، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है यक़ीनन हज़रत ईसा अ़लै० (आसमान से) तुम्हारे दर्मियान उतरेंगे जो एक आ़दिल हाकिम होंगे वह सलेब को तोड़ डालेंगे, सुअर को मार डालेंगे (यानी उसको पालना और खाना हराम व ममनूअ़ कर देंगे और उसको मार डालना मुबाह कर देंगे) जिज़ये को उठालेंगे उनके (जमाने में) माल व दौलत की फ़रावानी होगी यहां तक कि कोई उसका ख्वाहिश मन्द न रहेगा और उस वक़्त एक सजदा

दुनिया और दुनिया की तमाम चीज़ों से बेहतर होगा इस हदीस को बयान करने के बाद हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहा करते थे मज़ीद ताईद करना चाहते हो यह आयत पढ़ो :

وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتَابِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ

यानी कोई अहले किताब चाहे वह यहूदी हो या ईसाई ऐसा बाक़ी नहीं रहेगा जो ईसा अ़लै० पर उनकी वफ़ात से पहले ईमान न ले आयेगा।

सलेब असल में दो मुसल्लस लकड़ियों का नाम है जो जमा के निशान की शक्ल में होती है और यह शक्ल ऐसा ज़ाहिर करती है जैसे किसी शख़्स को इस तरह सूली पर लटकाया गया हो कि उसके दोनों पैर एक दूसरे से बंधे हुए हों और दोनों हाथ अलग अलग तौर पर खोल कर बांधे हुए हों, ईसाइयों का अ़क़ीदा चूंकि यह है कि हज़रत ईसा अ़लै० को सूली पर चढ़ा दिया गया था इसलिये उन्होंने सूली की इस शक्ल को अपना मज़हबी निशान बना लिया है और यह मज़हबी निशान उनकी हर चीज़ में नुमायां रहता है और जिस तरह अहले यहूद अपने गले में ज़ुन्नार डालते हैं इसी तरह ईसाइ भी सूली का यह निशान अपने गले में लटकाते हैं बअ़ज़ तो इस निशान पर हज़रत ईसा अ़लै० की तसवीर तक बनवा लेते हैं ताकि उनके अ़क़ीदे के मुताबिक़ हज़रत ईसा अ़लै० को सूली पर चढ़ाये जाने की यादगार मुकम्मल सूरत में रहे लिहाज़ा वो सलेब को तोड़ डालेंगे से मुराद यह है कि हज़रत ईसा अ़लै० नसरानियत (यानी ईसाई मज़हब) को बातिल और कलअ़दम क़रार दे देंगे और शरीअ़ते मुहम्मदी ही को जारी व नाफ़िज़ क़रार देंगे कि उनका हर हुक्म व फ़ैसला मिल्लते हनीफ़ा के मुताबिक़ होगा।

जिजया कहते है कि अगर कोई इस्लामी में रहना चाहता है

और वह यहूद हो या ईसाई या दूसरा कोई भी काफ़िर हो अगर सलतनत में रहने का ख़्वाहिशमन्द है तो उसको टैक्स देना पड़ता है उसको जिज़्या कहते हैं और जो जिज़्या दे रहा हो उसको ज़िम्मी कहते हैं। ख़ैर हज़रत ईसा अ़लै० जिज़्ये के मआमले को ही ख़त्म कर देंगे और पूरे आलम में हुक्म करेंगे कि इस्लाम ले आओ और आपके कलाम में अल्लाह तआला एक क़िस्म की तासीर पैदा कर देंगे जिसकी वजह से तमाम लोग ईमान में दाख़िल होंगे अब जिज़्ये की क्या ज़रूरत है जिज़्या तो उस वक़्त होता है जब कोई काफ़िर हो मगर उस वक़्त जो भी होगा वह मुसलमान होगा।

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया उस वक़्त का एक सज्दा दुनिया और दुनिया की तमाम तर चीज़ों से बेहतर होगा। अब यह सवाल पैदा होता है कि क्या अब के सज्दे की यह क़द्रो वक़अ़त नहीं है।

जवाब : हज़रात! सज्दा मुतलक़न ख़्वाह अब का हो या हज़रत ईसा अ़लै० के ज़माने का हो वह दुनिया और वह चीज़ जो दुनिया में है तमाम से बेहतर था और बेहतर है और बेहतर रहेगा, अब यह सवाल पैदा होता है कि फिर हुज़ूर अकरम स० ने उस ज़माने के साथ ख़ास क्यों फ़रमाया?

जवाब– सज्दा तो हर वक़्त इस मर्तबे पर रहेगा कि वह तमाम दुनिया से अफ़ज़ल है मगर हज़रत ईसा अ़लै० के ज़माने में माल और दौलत बहुत होगी जिसकी वजह से लोगों के दिल से उसकी इज़्ज़त निकल जायेगी और वह लोग एक सज्दे को तमाम दुनिया से बेहतर जानेंगे और दुनिया को बे–क़द्र। हासिल यह निकला कि सज्दा हर ज़माने में अल्लाह के पास दुनिया से बेहतर है मगर हज़रत ईसा अ़लै० के ज़माने में माल की कसरत

की वजह से बे–कद्र हो जायेगा और बन्दा भी एक सजदे को दुनिया से बेहतर जानेगा।

हज़रत ईसा अ़लै० की क़ब्र कहां होगी?

(٣٦٧) عن عبد الله بن عمر رضی الله عنهما قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم ینزل عیسٰی ابن مریم الی الارض فیتزوج ویُولَدُ لَهٗ ویمکثُ خمسًا واربعین سنةً ثُمَّ یموت فَیُدْفَنُ مَعِی فی قبری فَاَقُوْمُ انا وعیسٰی ابن مریم فی قَبْرٍ وَّاحِدٍ بین ابی بکر وَّعُمَرَ. (مشکوٰۃ شریف)

हजरत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि० बयान करते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया हज़रत ईसा बिन मरयम अ़लै० ज़मीन पर उतरेंगे वह निकाह करेंगे और उनकी औलाद होगी दुनिया में उनकी मुद्दते क़याम पैंतालीस बरस होगी फिर उनकी वफ़ात हो जायेगी और वह मेरी क़बर यानी मेरे मक़बरे में मेरे पास दफ़न किये जायेंगे (चुनांचे क़ियामत के दिन) मैं और हज़रत ईसा अ़लै० दोनों एक मक़बरे यानी अबूबक्र व उ़मर रज़ि० के दर्मियान से उठेंगे।

उनकी मुद्दते क़याम पैंतालीस बरस होगी यह बात बज़ाहिर उस क़ौल के मुनाफ़ी है जिससे यह वाज़ेह होता है कि जिस वक़्त हज़रत ईसा अ़लै० आसमान पर उठाये गये थे आपकी उ़मर तैंतीस साल थी और फिर आसमान से ज़मीन पर उतरने के बाद वह जितने साल दुनिया मे रहेंगे इस तरह दुनिया में उनकी कुल मुद्दते क़याम चालीस साल होती है वाज़ेह रहे कि आसमान से उतरने के बाद दुनिया में हज़रत ईसा अ़लै० के रहने की मुद्दत सात साल (मुस्लिम) ने नक़ल की है। लिहाज़ा एक यह बात तो तैय है कि ऊपर हदीस में जो पैंतालीस साल की मुद्दत नक़ल की गई है वह दुनिया में उनकी मजमूई मुद्दते क़याम है कि उस मुद्दत में उनके आसमान पर उठाये जाने से पहले के क़याम के

अर्से में भी शामिल है और आसमान से उतरने के बाद भी मुद्दते क़याम, रहा चालीस और पैंतालीस का फ़र्क़ तो इस सिलसिले में या तो यह कहा जाये कि चालीस साल वाले क़ौल में कुसूर यानी पांच को हज़फ़ करके पूरी मुद्दत मुराद ली गयी है या यह कि इस रिवायत को राजेह क़रार दिया जाये जो सही यानी मुस्लिम में मनक़ूल है।

हज़रत ईसा अ़लै० के लिये हुज़ूर अकरम स० के पास जगह रखी है जिसमें उनको दफ़न किया जायेगा फिर दोनों वहीं से उठेंगे यानी मुहम्मद स० और हज़रत ईसा अ़लै०।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि हज़रत ईसा अ़लै० नमाज़ के वक़्त उतरेंगे

(٣٦٨) عن جابر رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا تزال طَآئِفَةٌ مِّنْ اُمَّتِىْ يُقَاتِلُوْنَ على الحق ظَاهِرِيْنَ الى يوم القيامة قال فينزل عيسى ابن مريم فيقول اميرهم تعال صلِّ لنا فيقول لا اِنَّ بعضكم على بعض اُمَرَآءُ تكْرِمَةَ الله هذه الامة. (مسلم،مشکوٰۃ شریف)

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया मेरी उम्मत में से हमेशा कोई जमाअ़त हक़ के वास्ते लड़ती रहेगी और (अपने दुश्मनों पर) ग़ालिब रहेगी क़ियामत (के क़रीब) तक यह सिलसिला जारी रहेगा फिर आप स० ने फ़रमाया जब हज़रत ईसा इबने मरयम अ़लै० आसमान से उतरेंगे और उस वक़्त मुसलमान नमाज़ की हालत में होंगे (यानी जमाअ़त खड़ी होने के क़रीब होगी) तो उम्मत के अमीर (यानी इमाम मेहदी अ़लै०) हज़रत ईसा अ़लै० से कहेंगे कि आइये हमें नमाज़ पढ़ाइये लेकिन हज़रत ईसा अ़लै० उनको जवाब देंगे कि मैं इमामत नहीं करूंगा क्योंकि मेरी इमामत की वजह से यह गुमान हो सकता है

कि मुहम्मद स० का दीन मनसूख़ हो गया है और बिला शुबह तुममें से बअ़ज़ लोग बअ़ज़ों पर इमाम व अमीर हैं, इसी वजह से अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत मुहम्मदिया को बुज़ुर्ग व बरतर क़रार दिया है।

हासिल! इससे मालूम हुआ कि हज़रत ईसा अ़लै० नमाज़ के वक़्त उतरेंगे मगर नमाज़ नहीं पढ़ायेंगे।

तबलीग़ वाले कहते हैं कि हश्र के मैदान में इन्सान गुनाहों के ब–क़द्र पसीने में होगा

(٣٦٩) عن المقداد قال سمعتُ رسولَ الله صلى الله عليه وسلم يقول تدنى الشَمسُ يوم القيامة من الخلق حَتّٰى تكون منهم كمقدار ميلٍ فيكونُ الناسُ على قدر اعمالهم في العرق فمنهم مَّنْ يكون الى كَعْبَيْه ومنهم من يَكون الى ركبتيه ومنهم مَّنْ يكون الى حقويه ومنهم من يُلْجِمُهُمْ العَرَق الجامًا واَشارَ رسول الله صلى الله عليه وسلم بيده الى فيه هذا رُوِىَ فى البخارى الثانى. (مسلم، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत मिक़दाद रज़ि० कहते हैं कि मैंने हुज़ूर अकरम स० को यह फ़रमाते हुए सुना कि क़ियामत के दिन (मैदाने हश्र में) सूरज को मख़ूलक़ के नज़दीक कर दिया जायेगा यहां तक कि वह उनसे एक मील के फ़ासले पर रह जायेगा बस तमाम लोग अपने आमाल के बक़द्र (यानी बुरे आमाल) के पसीने में शराबोर होंगे। चुनांचे उनमें से बअ़ज़ लोग वह होंगे जो कमर तक पसीने में डूबे होंगे और बअ़ज़ लोग वह होंगे जिनके लिये उनका पसीना लगाम बन जायेगा यानी उनके मुंह तक पसीना होगा बल्कि मुंह के अन्दर तक पसीना पहुंच जायेगा यह फ़रमाकर रसूले करीम स० ने अपने दस्ते मुबारक से अपने मुंह मुबारक की तरफ़ इशारा किया।

मील, अ़रबी में कोस को कहते हैं। और मेल, सुर्मा लगाने की सलाई को भी कहा जाता है इस वजह से बअ़्ज़ हज़रात ने मेल से मुराद लिया कि सूरज एक कोस पर होगा सर से और बअ़्ज़ ने कहा कि सर से एक सलाई के बक़द्र दूर होगा सलाई की मिक़दार मुराद लो या एक कोस की मिक़दार मुराद लो बात यह साफ़ हुई कि सूरज हश्र के मैदान में सर से बिलकुल क़रीब होगा।

पसीना आना अअ़्माले बद के ऐतिबार से होगा इन्सान के अअ़्माल जितने अच्छे होंगे उतना कम पसीना इस पर मुसल्लत किया जायेगा और जितने ज़्यादा अअ़्माल बुरे होंगे उतने ज़्यादा पसीने में ग़र्क़ किया जायेगा।

इशकाल यह पैदा होता है कि भाई आज सूरज ग़ैर मालूम हुदूद पर है तब भी बरदाश्त नहीं होता है बहुत से लोग शिद्दते गर्मी की वजह से मर भी जाते हैं और जब हश्र में एक मील पर होगा तो लोग नहीं मरेंगे।

जवाब— दुनिया का निज़ाम अलग है और हश्र यानी आख़िरत का निज़ाम अलग होगा वहां सूरज की तेज़ी से इन्सान परेशान ज़रूर होगा मगर मौत न होगी और नेक लोग परेशान भी न होंगे, एक मिसाल से समझो आज अगर हम किसी को आग में डालते हैं तो वह मर जाता है आख़िरत में ज़िन्दगी भर भी दोज़ख़ में जलाया जायेगा तो मौत न होगी इस आ़लम पर आ़लमे हश्र को क़यास करना दुरुस्त नहीं।

तबलीग़ वाले इस तरह सिफ़ारिश का वाक़िआ़ बयान करते हैं

(۳۷۰) عن انس رضی اللہ عنہ انّ النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال

يَحْبِسُ المؤمنون يوم القيامة حتى يُهَمُّوا بذلك فيقولون لو استشفعنا الى
رَبِّنا فَيُرِيحَنا من مكاننا فياتون آدم فيقولون انت آدم ابو الناس خلقك الله
بيده واسكنك جنته واسجد لك ملئكة وعلمك اسمآء كل شيئٍ اشفع لنا
عند رَبِّكَ حتى يُريحنا من مكاننا هذا فيقول لستُ هناكم ويذكر خطيئته
التي اصاب اكله من الشجرة وقد نُهِيَ عنها ولكن ائتوا نوحًا اوّل نبيٍّ بعثهُ
الله الى اهل الارض فياتون نوحًا فيقول لست هناكم ويذكرُ خطيئته التي
اصاب سوالهُ رَبَّهُ بغير علمٍ ولكن ائتوا ابراهيم خليل الرحمٰن قال فياتون
ابراهيم فيقول اِنّي لستُ هناكم ويذكرُ ثلث كذباتٍ كذبهُنّ ولكن ائتوا
موسٰى عبدًا آتاهُ الله التوراة وكَلَّمَهُ وَقَرَّبَهُ نجيًا قال فياتون موسٰى فيقول
اِنّي لست هناكم ويذكر خطيئتهُ الّتي اصاب قتلَهُ النفسَ ولكن ائتوا عيسٰى
عبد الله ورسوله روحُ الله وكلمة قال فياتون عيسٰى فيقول لست هناكم
ولكن ائتوا محمدًا (صلى الله عليه وسلم) عبدًا غفر الله له ما تقدم من
ذنبه وماتأخَّرَ قال فياتوني فاستاذنُ على رَبِّي في داره فيُؤْذنُ لي عليه فاذا
رايتُهُ وقعتُ ساجدًا فيَدَعُنِي ماشآء الله اَنْ يَدَعني فيقولُ ارفَعْ محمّدًا وقُلْ
تُسمَعْ واشفَعْ تُشَفَّعْ وسل تُعْطَهُ قال فارفعُ راسي فأثني على رَبِّي بثنآءٍ
وتحميدٍ يُعَلِّمنيهِ ثم اَشفَعُ فيحد لي حدًّا فاخرُجَ فاخرجُهُم مِنَ النارِ
وَاُدْخِلُهُمْ الجنَّةَ ثم اَعُودُ الثانيةَ فاستاذن على ربي في داره فيؤذنُ لي عليه
فاذا رايتُهُ وقعتُ ساجدًا فيَدَعُني ماشآءَ اللهُ اَنْ يَدَعني ثم يقول ارفع محمدًا
وقل تُسمَعْ واشفَعْ تُشَفَّعْ وَسَلْ تُعطَهُ قال فارفعُ راسِي فاُثْنِيَ على رَبِّي بثنآءٍ
وَتحميدٍ يُعَلِّمُونَهُ ثم اشفع فيَحَدُّ لي حَدًّا فاخرُجُ فأُخرِجُهُمْ مِّنَ النار
وَاَدخلُهُم الجنَّةَ ثُمّ اعود الثالثة فاستأذنُ على رَبّي في داره فيؤذنُ لي عليه
فاذا رأيتُهُ وقعتُ ساجدًا فيَدَعُني ماشآء الله اَنْ يَدَعَنِي ثُم يقول ارفع محمداً
(صلى الله عليه وسلم) وَقُلْ تُسمَعْ واشفَعْ تُشَفَّعْ وَسَلْ تُعْطَهُ قال فارفعُ
راسِي فاُثنِيَ على رَبِّي بثنآءٍ وَتحميدٍ يُعَلِّمُونَهُ ثم اشفَعُ فيُحَدُّ لي حدًّا فاخرج
فاُخرجهم من النار وادخلهم الجنة حتى مايبقى في النار الا من قد حبسهُ
القرآن اى وَجَبَ عليه الخلود ثُمّ تلا هذه الآية عسٰى اَنْ يَبعثكَ رَبُّكَ مقامًا

مَحْمُوْدًا قال ولهذا المقام المحمود الذى وعده نبيكم. (بخاری، مسلم، مشکوۃ شریف)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन (मैदाने हश्र में) मोमिन को रोक दिया जायेगा (यानी सबको किसी एक जगह इस तरह रोक दिया जायेगा कि कोई शख़्स भी किसी तरह की नक़्ल व हरकत नहीं कर सकेगा और हर शख़्स सक्ते की सी कैफ़ियत में ठहरा रहेगा) यहां तक कि सारे लोग इस (क़ैद हो जाने) की वजह से सख़्त फ़िक्र व तरद्दुद में पड़ जायेंगे। फिर वह आपस में तज़्किरा करेंगे कि काश हमें कोई ऐसा शख़्स मिल जाता जो हमारे परवरदिगार से हमारी सिफ़ारिश करता और हमें इस सख़्ती व परेशानी से छुटकारा दिलाता और फिर (कुछ लोग सबकी नुमाइंदगी करते हुए) हज़रत आदम अ़लै० के पास आयेंगे और उनसे कहेंगे कि आप आदम अ़लै० हैं तमाम लोगों के बाप हैं आपको अल्लाह तआ़ला ने (बिला किसी वास्ते के) अपने हाथ से (यानी अपनी कुदरते कामिला से) पैदा किया आपको जन्नत की सुकूनत अ़ता फ़रमाई (कि जिसने आपको इतनी ज़्यादा फ़ज़ीलतें और एज़ाज़ बख़्शे हैं) हमारी सिफ़ारिश कर दीजिये कि वह हमको इस (सख़्त होलनाक और परेशान कुन) जगह से निकाल कर राहत व इत्मीनान बख़्शे। हज़रत आदम अ़लै० (यह सुनकर कहेंगे) कि मैं इस मर्तबे का सज़ावार नहीं हूं (यानी मैं यह मर्तबा व दर्जा नहीं रखता कि आज के दिन बारगाहे किब्रियाई में शफ़ाअ़त करने का होसला करूं) फिर हज़रत आदम अ़लै० अपनी लग़्ज़िश का ज़िक्र करेंगे जो उन्होंने (गेहूं का) दरख़्त खाने की सूरत में की थी, जब कि उनको इस दरख़्त के क़रीब जाने से मना कर दिया था (उसके बाद वह कहेंगे कि) तुम लोगों को हज़रत नूह अ़लै० के पास जाना चाहिये (वह तुम्हारी शफ़ाअ़त कर सकते हैं) क्योंकि

वह पहले नबी हैं जिनको अल्लाह तआला ने दुनिया वालों की हिदायत के लिये मबऊस किया था, वह लोग हज़रत नूह अलै० के पास आयेंगे (और उनसे शफ़ाअत के लिये दरख़्वास्त करेंगे) हज़रत नूह अलै० जवाब देंगे कि मैं इस मर्तबे का सज़ावार नहीं हूं और वह अपनी उस लग़ज़िश का ज़िक्र करेंगे जो उन्होंने बे-जाने बूझे अल्लाह तआला से अपने बेटे को ग़र्क़ होने से बचा लेने की दरख़्वास्त करने की सूरत में की थी (फिर वह मशवरा देंगे कि) तुम लोग हज़रत इबराहीम अलै० के पास जाओ जो अल्लाह तआला के ख़लील (दोस्त हैं) आंहज़रत स० ने फ़रमाया वह लोग (यह सुनकर) हज़रत इबराहीम अलै० ख़लीलुल्लाह के पास आयेंगे (और उनसे शफ़ाअत की दरख़्वास्त करेंगे) हज़रत इबराहीम अलै० जवाब देंगे कि मैं इस मर्तबे का सज़ावार नहीं हूं और वह दुनिया में अपने तीन मर्तबा तौरिये से बोलने का ज़िक्र करेंगे (फिर वह मशवरा देंगे कि) तुम लोग मूसा अलै० के पास जाओ जो ख़ुदा के ऐसे बन्दे हैं जिनको ख़ुदा ने अपनी अज़ीमुश्शान किताब तौरेत अता की है और बनी इसराईल के तमाम अंबिया को उनका ताबेअ बनाया और जिनको ख़ुदा ने बराहे रास्त अपनी हम-कलामी के शर्फ़ से नवाज़ा और उनको अपना कमाले क़ुर्ब अता फ़रमाकर अपना महरमे इसरार बनाया (यानी सर-गोशी करने वाला) आंहज़रत स० ने फ़रमाया लोग (यह सुनकर) हज़रत मूसा अलै० के पास आयेंगे (और उनसे शफ़ाअत की दरख़्वास्त करेंगे) हज़रत मूसा अलै० उनको जवाब देंगे कि मैं इस मर्तबे का सज़ावार नहीं हूं और वह अपनी लग़ज़िश का ज़िक्र करेंगे जो एक क़िब्ती को क़त्ल करने की सूरत में सरज़द हो गई थी यानी उन्होंने तैश में आकर एक क़िब्ती को मुक्का मार दिया था जिससे उसका काम तमाम हो गया था फिर वह मश्वरा देंगे कि तुम्हें

ईसा अलै० के पास जाना चाहिये जो ख़ुदा के बन्दे और रसूल हैं वह सरासर रूहानी हैं (कि जिसमानी माद्दे के बग़ैर महज़ ख़ुदा की कुदरत से पैदा हुये थे और दूसरों की जिसमानी हयात का सबब बने थे, इस तौर पर कि मुर्दों को ज़िन्दा कर देते थे) और वह अल्लाह का कलिमा हैं (कि एक कलिमे 'कुन' से पैदा हुए थे) आंहज़रत स० ने फ़रमाया वह लोग (यह सुनकर) हज़रत ईसा अलै० के पास आयेंगे (और उनसे शफ़ाअत के लिये कहेंगे) हज़रत ईसा अलै० जवाब देंगे कि मैं इस मर्तबे का सज़ावार नहीं हूं अलबत्ता तुम लोग मुहम्मद स० के पास जाओ जो ख़ुदा के ऐसे बन्दे हैं जिनके अगले पिछले सारे गुनाह अल्लाह तआला ने बख़्श दिये हैं (यक़ीनन वही तुम लोगों की शफ़ाअत करेंगे) आंहज़रत स० ने फ़रमाया तब लोग (शफ़ाअत की दरख़्वास्त लेकर) मेरे पास आयेंगे और (मैं उनकी शफ़ाअत के लिये तैयार हो जाऊंगा और मक़सद की ख़ातिर) रब्बुलइज़्ज़त के पास पहुंचकर उसकी बारगाह में पेश होने की इजाज़त तलब करूंगा, अल्लाह तआला मुझे अपनी बारगाह में पेश होने की इजाज़त मरहमत फ़रमायेगा, मैं जब उसके हुज़ूर में पहुंचकर उसको देखूंगा तो उसकी हैबत व ख़ौफ़ के मारे मैं उसकी तअज़ीम करने के लिये सजदे में गिर पड़ूंगा और अल्लाह तआला जितना अर्सा मुनासिब समझेगा इतने अर्से के लिये मुझे सजदे में पड़ा रहने देगा फिर अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि मुहम्मद सर उठाओ जो कुछ कहना चाहते हो कहो तुम्हारी बात सुनी जायेगी तुम जिसके हक़ में चाहो शफ़ाअत करो तुम्हारी शफ़ाअत कुबूल की जायेगी और जो चाहते हो मांगो मैं तुम्हें दूंगा।

आंहज़रत स० ने फ़रमाया (यह सुनकर) मैं अपना सर उठाऊंगा और इस हम्द व तारीफ़ के साथ कि जो परवरदिगार

मुझे सिखला देगा उसकी हम्द व सना बयान करूंगा, मैं शफ़ाअत करूंगा और मेरे लिये शफ़ाअत की एक हद मुक़र्रर कर दी जायेगी उसके बाद मैं (बारगाहे रब्बुलइज़्ज़त) से बाहर आऊंगा और इस (मुतअय्यना) जमाअत को दोज़ख़ से निकलवाकर जन्नत में दाख़िल करूंगा फिर दूसरी जमाअतों के हक़ में शफ़ाअत करने के लिये दोबारा दरबारे रब्बुलइज़्ज़त पर हाज़िर होकर उसकी ख़िदमत में पेश होने की इजाज़त तलब करूंगा मुझे उसकी बारगाह में पेश होने की इजाज़त अता की जायेगी और जब मैं उसके हुज़ूर में पहुंच कर उसको देखूंगा तो सजदे में गिर पड़ूंगा और अल्लाह तआला जब तक चाहेगा मुझे सजदे में पड़ा रहने देगा फिर फ़रमायेगा कि मुहम्मद अपना सर उठाओ जो कुछ कहना चाहते हो कहो तुम्हारी बात सुनी जायेगी शफ़ाअत करो मैं कुबूल करूंगा और मांगो मैं दूंगा। आंहज़रत स० ने फ़रमाया (यह सुनकर) मैं अपना सर उठाऊंगा और इस हम्द व तारीफ़ के साथ कि जो परवरदिगार मुझे सिखलायेगा उसकी हम्द व सना बयान करूंगा फिर शफ़ाअत करूंगा और मेरी शफ़ाअत की एक हद मुक़र्रर कर दी जायेगी, उसके बाद मैं (बारगाहे रब्बुलइज़्ज़त से) बाहर आऊंगा और (इस मुतअय्यना) जमाअत को दोज़ख़ से निकलवाकर जन्नत में दाख़िल कर दूंगा और फिर मैं तीसरी मरतबा बारगाहे रब्बुलइज़्ज़त में हाज़िर होकर उसकी ख़िदमत में पेश होने की इजाज़त तलब करूंगा मुझे उसकी बारगाह में पेश होने की इजाज़त अता की जायेगी और जब मैं परवरदिगार के हुज़ूर में पहुंचकर उसको देखूंगा तो सजदे में गिर पड़ूंगा और अल्लाह तआला जब तक चाहेगा मुझे सजदे में पड़ा रहने देगा फिर फ़रमायेगा कि मुहम्मद अपना सर उठाओ जो कुछ कहना चाहते हो कहो तुम्हारी बात सुनी जायेगी शफ़ाअत करो मैं कुबूल

करूंगा और मांगो मैं दूंगा।

आंहज़रत स० ने फ़रमाया (यह सुनकर) मैं अपना सर उठाऊंगा और इस हम्द व तारीफ़ के साथ कि जो परवरदिगार मुझे सिखलायेगा उसकी हम्द व सना बयान करूंगा फिर मैं शफ़ाअ़त करूंगा और मेरे लिये शफ़ाअ़त की एक हद मुक़र्रर कर दी जायेगी, उसके बाद मैं (परवरदिगार के दरबार से) बाहर आऊंगा और इस (मुतअ़य्यना) जमाअ़त को दोज़ख़ से निकलवाकर जन्नत में दाख़िल करूंगा, यहां तक कि दोज़ख़ में उसके अ़लावा और कोई बाक़ी नहीं रह जायेगा जिनको क़ुरआन ने रोका होगा यानी इस आख़री शफ़ाअ़त के बाद दोज़ख़ में वही लोग बाक़ी रह जायेंगे जिनके बारे में क़ुरआन करीम ने ख़बर दी है कि वह हमेशा हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे।

चुनांचे हदीस के इस जुम्ले की वज़ाहत हज़रत अनस रज़ि० के नीचे के रावी हज़रत क़तादा रह० ने जो जलीलुलक़द्र ताबअ़ी हैं इन अलफ़ाज़ में की है, कि उसका मतलब यह है कि बस वह लोग दोज़ख़ में बाक़ी रह जायेंगे जो क़ुरआन के हुक्म के मुताबिक़ हमेशा हमेशा के लिये अ़ज़ाबे दोज़ख़ के हक़दार क़रार पा चुके हैं (और वह कुफ़्फ़ार हैं) फिर आंहज़रत स० ने फ़रमाया हज़रत अनस या हज़रत क़तादा ने इस बात को मुसतनद करने के लिये क़ुरआन करीम की यह आयत तिलावत फ़रमाई :

عَسٰى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا○

उम्मीद है कि आप का रब आपको मक़ामे महमूद में जगह देगा और फिर आंहज़रत स० ने या हज़रत अनस रज़ि० ने या हज़रत क़तादा रज़ि० ने फ़रमाया कि यही वह मक़ामे महमूद है जिसका वअ़दा ख़ुदा ने तुम्हारे नबी स० से किया है।

तशरीह : हज़रत नूह अ़लै० को पहला नबी क्यों कहा जाता

है, जबकि हज़रत आदम अ़लै० और हज़रत शीस अ़लै० और हज़रत इदरीस अ़लै० नबी गुज़रे हैं उसके बाद हज़रत नूह अ़लै० का वुजूद हुआ? यह ऐतिराज़ होता है बेशक यह तीन हज़रात हज़रत नूह अ़लै० से पहले गुज़रे और उन्होंने दावते दीन भी दी मगर यह हज़रत जब नबी बनकर दुनिया में आये उस वक़्त पूरी दुनिया कुफ़्र में न थी बल्कि कुछ काफ़िर थे और कुछ हज़रात ईमान वाले थे बरख़िलाफ़ हज़रत नूह अ़लै० के, कि वह जब नबी बनकर दुनिया में तशरीफ़ लाये तो पूरी दुनिया कुफ़्र में मुबतला थी कोई अहले ईमान मौजूद न था और हदीस में जो आपको पहला नबी कहा गया है वह भी इसी वजह से कहा गया है कि आप ही सबसे पहले ऐसे नबी हैं जो तमाम के तमाम अहले कुफ़्र की तरफ़ भेजे गये थे इस वजह से उनको पहला नबी कहा वरना तो पहले नबी हज़रत आदम अ़लै० और दूसरे हज़रत शीस अ़लै० और तीसरे हज़रत इदरीस अ़लै० और चौथे हज़रत नूह अ़लै० हैं।

दूसरा सवाल यह होता है कि लोग जब शफ़ाअ़त के लिये हज़रत आदम अ़लै० के पास जायेंगे और फिर हज़रत नूह अ़लै० और फिर हज़रत इबराहीम अ़लै० और फिर हज़रत मूसा अ़लै० और फिर हज़रत ईसा अ़लै० और फिर आख़िर में जनाब रसूलुल्लाह स० के पास आयेंगे और यह शफ़ाअ़त करवाने का ख़्याल भी अल्लाह ही डालेगा लोगों के दिलों में, फिर अल्लाह ने क्योंकर इतना घुमा फिराकर आख़िर में मुहम्मद स० के पास भेजा जबकि तमाम नबियों को भी यह पता है कि मुहम्मद स० ही शफ़ाअ़त फ़रमायेंगे फिर अल्लाह ने यह ख़्याल क्यों डाला कि पहले आदम अ़लै० के पास, फिर नूह अ़लै० के पास, फिर हज़रत इबराहीम अ़लै० के पास, फिर मूसा अ़लै० के पास, फिर हज़रत ईसा अ़लै० के पास जाओ तो अल्लाह ने डायरेक्ट मुहम्मद स० के

पास क्यो नहीं भेजा?

जवाब : इस वजह से कि अगर अल्लाह तआला एकदम लोगों को मुहम्मद स० के पास भेजता तो लोग यह समझते कि यह शफ़ाअ़त का मक़ाम कोई आप स० के लिये ही ख़ास नहीं है बल्कि अगर कोई दूसरा नबी भी शफ़ाअ़त कर देता तो शफ़ाअ़त कुबूल हो जाती इस ख़्याल को ख़त्म करने के लिये और मुहम्मद स० को अअ़ला ज़ाहिर करने के लिये अल्लाह तआला यह चक्कर लगवायेगा कि देखो जो काम कोई नबी न कर सका वह काम मुहम्मद स० ने कर दिया, क्योंकि जब तमाम अंबिया शफ़ाअ़त से इन्कार कर देंगे और अपनी बेबसी का इज़हार करेंगे और मुहम्मद स० शफ़ाअ़त फ़रमायेंगे तो मुहम्मद स० का अअ़ला होना पूरे आ़लमे हश्र पर वाज़ेह हो जायेगा इसलिये यह काम अल्लाह तआला करेंगे अपने हबीब को तमाम से अफ़ज़ल बताने के लिये कि मुहम्मद स० ही अल्लाह तआला के बाद तमाम मख़लूक़ से अफ़ज़ल हैं।

तीसरा सवाल यह पैदा होता है कि तमाम अंबिया अ़लै० ने अपना कोई न कोई उज़्र बयान कर दिया मगर हज़रत ईसा अ़लै० ने कोई उज़्र बयान नहीं किया, इससे यह मालूम होता है कि हज़रत ईसा अ़लै० भी शफ़ाअ़त के मक़ाम पर हैं।

जवाब— दोस्तो! इसके जवाबात मैंने सुने हैं मगर तशफ़्फ़ी नहीं हुई अचानक यह बात ज़हन में वाज़ेह हुई कि भाइयों देखो आदमी दो क़िस्म के होते हैं एक वह जिनको अपनी ग़लती मालूम होती है कि मैंने एक मरतबा चोरी की थी या झूठ बोलकर माल कमाया था और एक आदमी वह होता है जिसको ग़लती तो याद नहीं रही मगर यह यक़ीन ज़रूर होता है कि कुछ न कुछ ग़लती ज़रूर हुई है अगरचे मुझको याद नहीं है या मालूम नहीं है। इसी

तरह मिसाल समझो हज़रात अंबिया की, और हज़रत ईसा अ़लै० की, कि हज़रत आदम अ़लै० और हज़रत नूह अ़लै० और हज़रत इबराहीम अ़लै० और हज़रत मूसा अ़लै० को यह भी पता है कि ग़लती हुई है और कौनसी ग़लती हुई है यह भी याद है। मगर हज़रत ईसा अ़लै० को यह तो यह मालूम है कि मुझसे ग़लती तो ज़रूर हुई है मगर वह कौनसी ग़लती यह याद नहीं इसलिये हज़रत ईसा अ़लै० बग़ैर बयाने उ़ज़्र के मअ़ज़रत फ़रमा देंगे और असल और अअ़ला और अरफ़अ़ हस्ती का पता बता देंगे यह जवाब भी हो सकता है कि आप अ़लै० लोगों की परेशानी को देखकर अपने उ़ज़्र बयानी के बग़ैर उन पर तरस खाकर फ़ौरन उनकी परेशानी को दूर करने का हल बयान कर देंगे।

एक ऐतिराज़ का जवाब– हज़रत मुहम्मद स० को ऐहतिमाले ख़ता तो होगा मगर दोनों के ऐहतिमाल में बहुत फ़र्क़ है। मुहम्मद स० की ख़ता ख़्वाह याद हो या याद न हो उनकी माफ़ी का कुरआन ने साफ़ ऐलान कर दिया है कि आप तमाम ऐबों से पाक हैं और पाक रहेंगे जब कुरआन ने आकर यह ख़बर दी है कि आप स० इन्सान ज़रूर हैं मगर अल्लाह ने आपको हर नुक़्स से पाक व साफ़ कर दिया और हज़रत ईसा अ़लै० की माफ़ी का ऐलान न कुरआन में है और न हदीस में, उसका यह मतलब न निकालना कि नऊज़ुबिल्लाह हज़रत ईसा अ़लै० की मग़फ़िरत न होगी।

अरे भाई पहली बात तो अंबिया अ़लै० गुनाहों से पाक होते हैं। मगर उनसे कोई ख़िलाफ़े औला बात भी हो जाये तो वह उसको बड़ा जानते हैं जिस तरह हज़रत इबराहीम अ़लै० का झूठ बोलना गुनाह न था मगर ख़िलाफ़ औला था, अंबिया उसके सादिर होने से भी इतने डरते हैं कि कोई गुनाहगार भी इतना नहीं डरता

उसकी वजह सिर्फ़ कुर्बते इलाही है जब बन्दा अल्लाह से क़रीब होता है तो छोटी चीज़ भी बड़ी मालूम होती है जिस तरह अगर आपका बच्चा गाली दे तो यह आपको ज़्यादा बुरा लगेगा बर ख़िलाफ़ दूसरे के बच्चे के, उन दोनों का फ़अल ग़लत ज़रूर है मगर आपको अपने क़रीब वाले का फ़अल ज़्यादा ख़राब मालूम होगा बर ख़िलाफ़ दूसरे के, यही हाल अंबिया का है कि वह अल्लाह के बहुत क़रीब हैं और दीगर अफ़राद उनके मुक़ाबिल बईद हैं उन तमाम की मग़फ़िरत तो ज़रूर होगी मगर मुहम्मद स० को अपने तमाम नक़ाइस से बे–ख़ौफ़ कर दिया गया है (पहले तो खुद मुहम्मद स० नक़ाइस से पाक, मजीद पाकी कुरआन ने कर दी इसलिये कि आपको शफ़ाअत के वक़्त झिझक न होने पाये जिस तरह दूसरे अंबिया अ़लै० को होगी तमाम अंबिया की मग़फ़िरत तो ज़रूर होगी मगर फ़र्क़ इतना है कि मुहम्मद को बेख़ौफ़ कर दिया गया मग़फ़िरत का ऐलान करके, दूसरों को मुकम्मल तौर पर बे ख़ौफ़ नहीं किया गया है उनकी मग़फ़िरत का तो खुद उनको भी यक़ीन होगा मगर ख़ौफ़ अभी बाक़ी है और मुहम्मद स० मिन जानिबिल्लाह मुतमईन हैं) वह आयत कौन सी है

قال اللہ تعالیٰ غَفَرَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ

कि ऐ मुहम्मद स० जो आपसे ख़ता (बिलफ़र्ज़) हो भी जाये तो हमने तमाम अगली और पिछली ख़ता को माफ़ कर दिया।

पांचवां जुज़ इस हम्द व तारीफ़ के साथ कि जो परवरदिगार मुझे सिखलायेगा उसका मतलब यह है कि शफ़ाअत के वक़्त मैं जो अल्लाह की हम्द करूंगा उसका अन्दाज़ा भी मुझे नहीं है कि मैं कितनी उम्दा और अल्लाह को खुश करने वाली हम्द बयान करूंगा बल्कि वह हम्द तो मुझको उस वक़्त ही सिखाई जायेगी मिन जानिबिल्लाह। इससे मालूम हुआ आप आलिमुलग़ैब नहीं हैं।

छठा जुज़– हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया मेरे लिये शफ़ाअत की एक हद मुतअय्यन की जायेगी कि उसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला मेरे सामने यह मुतअय्यन फ़रमा देंगे कि ऐसे ऐसे गुनहगारों की शफ़ाअत करो, मसलन झूठ बोलने वाले और गीबत करने वाले वगैरह वगैरह के नाम लेकर हद मुतअय्यन कर दी जायेगी और हुज़ूर अकरम स० उन्हीं अफ़राद की शफ़ाअत करेंगे जिनकी शफ़ाअत का हुक्म होगा यानी जिसकी हद बयान कर दी गयी होगी और जितनी तअदाद मुतअय्यन कर दी जायेगी जैसे अल्लाह कहेगा कि झूठों की शफ़ाअत करो अब हुज़ूर अकरम स० किसी कब्र को सज्दा करने वाले की शफाअत नहीं करेंगे बल्कि जो गुनहगार होगा झूठ का उसके हक में शफाअत कुबूल होगी और हुज़ूर स० अल्लाह तआला की फ़रमांबरदारी करेंगे और उन्हीं गुनहगारों की शफ़ाअत करेंगे जिस गुनाह के मुरतकिब के बारे मे शफ़ाअत का हुक्म हुआ होगा। इससे मालूम हुआ कि आप शफ़ाअत के सिलसिले में भी मुख़तारे कुल नहीं हैं

सातवां जुज़– हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया मैं उनको दोज़ख़ से निकलवाकर जन्नत में दाख़िल करूंगा, इस मौके पर एक इशकाल होता है कि हदीस के शुरू में तो यह मज़कूर है कि शफ़ाअत की दरख़्वास्त करने वाले वह लोग होंगे जिनको मैदाने हश्र में महसूर किया गया होगा और वहां की तंगी और सख़्ती व होलनाकी से तंग आकर आप स० की सिफ़ारिश चाहेंगे ताकि आप स० उन्हें इस जगह की परेशानियों और हौलनाकियों से निजात दिलायें लेकिन यहां हदीस के इस जुज़ कि जब बारगाहे खुदावन्दी में हुज़ूर स० की शफ़ाअत करने और आपकी शफ़ाअत कुबूल होने का ज़िक्र आया तो आप स० ने फ़रमाया कि मैं इस जमाअत को दोज़ख़ से निकलवाकर जन्नत में दाख़िल कराउंगा

इससे यह मालूम हुआ कि आप से शफ़ाअत की दरख़्वास्त करने वाले वह लोग होंगे जिन्हें दोज़ख़ में भेजा जा चूका होगा।

दोस्तो! उसके चन्द जवाबात को बन्दे ने पढ़ा, मगर हर एक जवाब में इशकाल था अहक़र ने यह जवाब मुन्तख़ब किया जो बहुत आसान और छोटा है। एक मरतबा हदीस के जुम्लों को सुनो हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया लोग परेशान और दहशत वाली जगह में होंगे फिर वह लोग शफ़ाअत के लिये घूमेंगे और हदीस के आख़िर में हुज़ूर अकरम स० ने यह फ़रमाया कि मैं उनको दोज़ख़ से निकालकर जन्नत में दाख़िल कराउंगा।

जवाब यह है कि वह लोग अभी तक दोज़ख़ में दाख़िल नहीं हुए होंगे बल्कि उनके बारे में दोज़ख़ का फ़ैसला सुनाया जायेगा जब वह फ़ैसला सुनेंगे तब वह शफ़ाअत वालों को तलाश करेंगे फ़ैसले से पहले तो शफ़ाअत नहीं होगी क्योंकि अल्लाह पहले अपनी रहमत से बन्दों को जन्नत में डालेगा और बाक़ी जो होंगे उनके बारे में दोज़ख़ का फ़ैसला कर दिया जायेगा अब यह हज़रात जिनके हक़ में दोज़ख़ का फ़ैसला हुआ है वह शफ़ाअत के लिये अंबिया की तरफ़ जायेंगे आख़िर मे मुहम्मद स० शफ़ाअत करेंगे। अब सुनो उन लोगों को परेशान और हैरान क्यों कहा? इस वास्ते कि वह इस फ़ैसले को सुनकर ज़ाहिर बात है कि परेशान होंगे और बाद में जो यह अलफ़ाज़ आप स० ने फ़रमाये कि मैं उनको दोज़ख़ से निकालकर जन्नत में डालूंगा इसका यह मतलब नहीं है कि वह दोज़ख़ में होंगे फिर आप उनको निकाल कर जन्नत में डालेंगे अगर वह दोज़ख़ में होते तो आदम अ़लै०, नूह अ़है० और इबराहीम अ़लै० और आख़िर में मुहम्मद स० के पास किस तरह आते? इससे मालूम हुआ कि वह अभी दोज़ख़ में डाले नहीं गये थे मगर यह जो फ़ैसला हुआ था कि उनको

दोज़ख में डालो इस फैसले को हुज़ूर अकरम स० ने दोज़ख से निकालने से तअबीर किया क्योंकि अगर आप स० शफ़ाअत न करते तो यह दोज़ख में जाने वाले ही थे अगरचे दस पांच घन्टे की उनको रुख़्सत मिली हो, ताकि मुहम्मद स० की बशारत पूरी हो जाये यानी आप स० को शफ़ाअत का मक़ाम हासिल हो जाये पस यही मतलब है कि दोज़ख़ के फ़ैसले को दोज़ख़ में दाख़िल करने से तअबीर किया क्योंकि अगर आप शफ़ाअत न करते तो उन हज़रात को दोज़ख़ में जाना ही होता और जब शफ़ाअत हो गई तो ख़ुदा ने दोज़ख़ का हुक्म वापस ले लिया और जन्नत का हुक्म फ़रमा दिया उसको हुज़ूर अकरम स० ने जन्नत में दाख़िल करने से तअबीर कर दिया।

यही वह मक़ामे मेहमूद है। मक़ामे मेहमूद का मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में हुज़ूर स० के लिये जिस मक़ाम का वादा किया है वह इसी शफ़ाअते उज़मा का मक़ाम है जो आप स० के सिवा किसी और को अता नहीं होगा।

तबलीग़ वाले जो यह कहते हैं कि हुज़ूर स० :

يارب امتی يارب امتی

कहेंगे इस लफ़्ज़ का ज़िक्र दूसरी मुस्लिम व बुख़ारी की हदीस में मौजूद है कि आप स० हश्र में बारगाहे रब्बुलइज़्ज़त में कहेंगे :

يارب امتی يارب امتی

यह मुहब्बत है हुज़ूर अकरम स० को अपनी उम्मत से और आज आप स० का उम्मती आप स० को हर वक़्त परेशान करता रहता है गुनाहों के ज़रिये अल्लाह की नाफ़रमानी के ज़रिये हालांकि इस उम्मत के लिये हुज़ूर अकरम स० ने शुरू से लेकर आख़िर तक तकलीफ़ें झेली हैं और हश्र में भी आप स० को अपनी कोई फ़िक्र न होगी बल्कि

يارب امتى يارب امتى

फ़रमाते रहेंगे आज हमको गौर करना चाहिये अपनी बेवफ़ाई पर और हुज़ूर स० की बे–पनाह मुहब्बत पर कि क्या हम हुज़ूर स० का फ़रमान मानकर आप स० को राहत दे रहे हैं या आप स० को अभी भी तकलीफ़ देने का इरादा है। गुनाह वाले अअ्माल के ज़रिये अगर आपको मुहब्बत हो तो आओ सुन्नत की तरफ़, आओ कुरआन की तरफ़, और अल्लाह व रसूल को राज़ी करके दोनों जहां की कामयाबी हासिल करो।

छः नम्बर की तफ़्सील कुरआन और हदीसे रसूल स० से

पहला नम्बर

(٣٧١) عن عبادة بن الصامت قال سمعتُ رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول من شهد اَنْ لَا اِلٰهَ الَّا الله وَاَنَّ مُحَمَّدًا رَّسولُ الله حَرَّمَ الله عليه النار۔ (مسلم)

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० से रिवायत है कि मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह स० से सुना है कि आप स० इरशाद फ़रमाते थे कि जो कोई शहादत दे कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत व बन्दगी के लायक़ नहीं और मुहम्मद स० उसके रसूल हैं तो उस शख़्स पर अल्लाह ने दोज़ख़ हराम कर दी है।

(٣٧٢) عن عثمان بن عفان رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من مات وهو يعلم انّهٗ لا اله الا الله دخل الجنة. (مشكوٰة)

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद स० ने फ़रमाया जो शख़्स इस हाल में मरे कि वह यक़ीन के साथ जानता था कि अल्लाह के सिवा कोई मअ्बूद नहीं है तो वह जन्नत में जायेगा। (मुस्लिम)

हज़रात यह जो बशारत अहादीस में कलिमा पढ़ने वाले की आई है, उसकी दो किस्में हैं एक तो वह जिसने कलिमा पढ़कर जिस चीज़ का अल्लाह से वादा किया है उसको पूरा किया हो तो वह इन्शाल्लाह पहली मर्तबा में ही जन्नत में दाख़िल होगा।

मतलब यह है कि उसको अज़ाब के बग़ैर ही जन्नत में दाख़िल किया जायेगा क्योंकि उसने कलिमे के तमाम तक़ाज़ों को पूरा किया है और दूसरी क़िस्म वह है कि एक शख़्स ने कलिमा तो पढ़ा मगर उसके तक़ाज़ों को पूरा नहीं किया उसके ज़रिये जो वादा किया था उसको अदा न किया, वादा ख़िलाफ़ी की, तो अब उसको उसके अ़हद–शिकनी की सज़ा भुगतनी पड़ेगी अज़ाब के ज़रिये। फिर ठुकाई पिटाई के बाद उसको जब ख़ुदा चाहेगा निकालेगा, इतना तो ज़रूर है कि कलिमा पढ़ने वाले को एक न एक दिन जन्नत ज़रूर नसीब होगी।

ख़ैर दोस्तो!

لا اله الا الله محمد رسول الله

यह कलिमा बन्दे की तरफ़ से एक इक़रार है यानी बन्दा इस कलिमे को पढ़कर अपने ख़ुदा से इक़रार करता है कि मैं तेरा बन्दा और गुलाम हूं अब से तेरे हुक्मों पर अ़मल करूंगा और तेरी मना की हुई चीज़ों से बचूंगा, इस कलिमे से मुतअ़ल्लिक चार चीज़ों का ध्यान रखना ज़रूरी है।

(1) इसके अलफ़ाज़ सहीह याद हों।

(2) इसके मअ़ना का इल्म हो।

(3) इसके मतलब का इल्म हो।

(4) इसके तक़ाज़ों को मालूम करके उन पर अ़मल करता हो।

अलफ़ाज़ और तर्जमा : इस कलिमे के दो जुज़ हैं :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه

दूसरा जुज

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ

दोनों जुज़ को मिलाकर तर्जुमा होगा। अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नही और मुहम्मद स० अल्लाह के पैग़म्बर हैं।

कलिमे का मतलब : अल्लाह के मअबूद होने का मतलब यह है कि सिर्फ़ उसकी बन्दगी करे और बन्दगी के जो तरीक़े अल्लाह ने सिखलाये मुहम्मद स० के ज़रिये से जैसे नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात, दावत, दीन में वक़्त लगाना, जिहाद के मौक़े पर जिहाद में शरीक होना वग़ैरह। इसमें किसी को अल्लाह का शरीक न करे, उसको हाजत–रवा मुश्किल–कुशा और नुसरत करने वाला बा–इज़्ज़त और ज़लील करने वाला नफ़ा व नुक़सान पहुचाने वाला जाने और सिर्फ़ अल्लाह को ही हर जगह हाज़िर व नाज़िर और अल्लाह को ही आलिमुल–ग़ैब और हर बात का सुनने वाला जाने और यक़ीन रखे, उसकी हिदायत को हक़ और उसके अहकाम को क़ाबिले अमल जाने और जो बिदअ़तें, रसमें व रिवाज दुनिया वालों के क़ानून उसके हुक्म के ख़िलाफ़ हों उनको बातिल जाने और हर मआमले में पहले अल्लाह का हुक्म मालूम करे फिर उस पर अ़मल करे इसी की रहमत से उम्मीद लगाये और उसके अज़ाब व गिरिफ़्त से डरे और मग़फ़िरत तलब करे और दूसरे जुज़ यानी मुहम्मद रसूलुल्लाह स० के मअ़ना यह हैं कि :

لا الٰہ الا اللّٰہ

का इक़रार करने के बाद में जो ख़ुदा के अहकाम ख़ुद से मालूम नहीं हो सकते बल्कि मुहम्मद रसूलुल्लाह स० की रहबरी से बन्दों तक अल्लाह के अहकाम पहुंचते हैं उन ही के बताये हुये तरीक़ों से ख़ुदा की बन्दगी करूंगा कि मुहम्मद स० अल्लाह तआला के सच्चे रसूल थे आप स० ने कोई बात अपनी तरफ़ से

नहीं कही बल्कि उसी बात का उम्मत को हुक्म दिया जिसको आप स० को अल्लाह ने हुक्म दिया था और मुहम्मद स० की इताअ़त अल्लाह की इताअ़त है और आप स० से मुहब्बत रखना अल्लाह से मुहब्बत रखना है मुहम्मद स० की बात का मानना ज़रूरी है। जो आप स० की बात का मुनकिर होगा वह काफ़िर है आपके हर हुक्म को चुप–चाप तसलीम कर ले, आपने जो ग़ैब की बातें अल्लाह के आप पर ज़ाहिर करने की वजह से बताई हैं उन पर ईमान लाना। जैसे क़ियामत का वुजूद में आना, जन्नत और दोज़ख़ का मौजूद होना, अल्लाह का होना वग़ैरह और मुहम्मद स० की ज़िन्दगी ऐन मुवाफ़िक़े कुरआन है आपके तरीक़ों पर अ़मल करना कुरआन पर अ़मल करना है आपकी सुन्नत को हक़ीर न जानना सुन्नतों से मुहब्बत रखना और उन पर अ़मल करना जो तरीक़ा हुज़ूर अकरम स० ने ज़िन्दगी गुज़ारने का बताया है वह हक़ है और अल्लाह को पसन्द है उसके ख़िलाफ़ ज़िन्दगी गुज़ारने वाला ख़ुदा का मेहबूब और प्यारा सीधी राह पर चलने वाला नहीं हो सकता, सहाबा को शुरू में इम्तिहान के तौर पर परेशानी उठानी पडी मगर फिर बाद में फ़ुतूहात के दरवाज़े अल्लाह ने खोलने शुरू कर दिये और इस काम की यह फ़ितरत है कि जो भी दीने हक़ पर ख़डा होगा उसको कोई न कोई ज़रूर बुरा भला और ईज़ा और तकलीफ़ें पहुंचायेगा। यह सिलसिला नबियों से चला आ रहा है और क़ियामत तक चलेगा अब वह हज़रात ख़ूब ग़ौर करें कि इस काम में शुरूआत में परेशानी ज़रूर है मगर बाद में दुनिया में भी और आख़िरत में भी कामयाबी और कामरानी है और अल्लाह को मेहबूब बनाने का सिर्फ़ एक दरवाज़ा है सिर्फ़ एक रास्ता है वह तरीक़ा जो मुहम्मद स० का है उस तरीक़े से कुरआन भी समझोगे और दीगर तमाम दीन के हिस्से भी।

कलिमे का तक़ाज़ा

कलिमे के मतलब को दिल से तसलीम करने से बाद बन्दा मोमिन हो जाता है और उसके ऊपर बहुत सी चीज़ें लाज़िम हो जाती हैं उनको करना और बहुत सी चीज़ों को तर्क करना भी ज़रूरी हो जाता है इस वजह से हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया कि : لا الہ الا اللہ का इख़लास यह है कि अपने पढ़ने वाले को हर अम्र में, हर मआमले में पहले अल्लाह तआला का हुक्म तलाश करना चाहिये और जिसका हुक्म हो जाये उसको अदा करना चाहिये और जिससे रोका गया हो उसको अन्जाम न दे बल्कि मना की हुई चीज़ों से रुक जाये। जब बन्दा अपनी ज़िन्दगी को हुक्मे खुदा पर पाबन्द कर देगा तो वह पेश–कर्दा हदीस का अव्वल मरतबा में मुसतहिक़ होगा और साहबे कमिला ने अपनी ज़िन्दगी को अगर हुक्मे खुदा का पाबन्द न बनाया तो वह पहले दोज़ख़ में दाख़िल होगा और अगर अल्लाह चाहे तो गुनहगार को भी अव्वल मरतबा में जन्नत में दाख़िल करने पर क़ादिर है लेकिन मैंने कुरआन और हदीस के नज़रिये को बयान किया न कि ख़ुद की तरफ़ से हुक्म पेश किया।

दूसरा नम्बर नमाज़

(۳۷۳) عن جابر رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم بین العبد وبین الکفر ترک الصلوۃ. (مسلم)

हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया कि बन्दे के दर्मियान (मुराद मोमिन) और कुफ़्र के दर्मियान नमाज़ छोड़ देने ही का फ़ासला है।

मतलब यह है कि नमाज़ इस्लाम की एक बड़ी अलामत है

जिसके तर्क करने से बन्दा कुफ़्र की सरहद पर पहुंच जाता है।

(۲۷۴) عن عبادة بن الصامت رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم خمس صلوٰةٍ افترضَهُنَّ الله تعالیٰ من احسن وضُوْءَهنَّ وَصَلاَهُنَّ لِوَقْتِهِنَّ وَاَتَمَّ رکوعَهُنَّ وسجودهن کان لَهٗ علی الله عهدٌ ان یغفرَلَهٗ ومن لم یفعل فلیس له علی الله عهدٌ ان شاءَ غفرلَهٗ وانْ شَاءَ عَذَّبَهٗ. (احمد، مشکوٰۃ شریف)

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह स० ने फ़रमाया फ़र्ज़ की हैं अल्लाह तआला ने पांच नमाज़ें जिसने उनके लिये अच्छी तरह वुज़ू किया और ठीक वक़्त पर उनको पढ़ा और रुकूअ़ और सज्दे भी जैसे करने चाहियें वैसे ही किये और खुशूअ़ के साथ उनको अदा किया तो ऐसे शख़्स के लिये अल्लाह तआ़ला का पक्का वादा है कि वह उसको बख़्श देगा और जिसने ऐसा नहीं किया तो उसके लिये कोई वादा नहीं। चाहेगा माफ़ कर देगा और चाहेगा तो सज़ा देगा।

दोस्तो! नमाज़ वाले के बारे में जन्नत का वादा है और बे नमाज़ियों के बारे में कोई वादा जन्नत का नहीं है और कलिमे का इक़रार कर लेने के बाद बन्दे के ज़िम्मे खुदा के अहकाम का पूरा करना फ़र्ज़ हो जाता है, इन अहकाम में सबसे पहला हुक्म नमाज़ का, आ़इद होता है जो हर बालिग़ मर्द और औ़रत पर फ़र्ज़ है दिन और रात में पांच मरतबा जिसने कलिमे के इक़रार के बाद नमाज़ और दीगर अवामिर अन्जाम दिये तो गोया उसने अपने इक़रार को पूरा किया और जिन हज़रात ने कलिमे के बाद नमाज़ और दीगर हुक्मों को अदा न किया तो गोया उन्होंने झूठा वादा किया जो एक क़िस्म का अल्लाह को धोखा देना है मगर अल्लाह तआ़ला अ़लीम व ख़बीर हैं वह धोका खाने वाले नहीं हैं।

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जिसने जानकर नमाज़ छोड़ी

उसने कुफ़्र किया इस वजह से इमाम शाफ़ई रह० और इमाम अहमद रह० ने नमाज़ छोड़ने वाले को क़त्ल करने का हुक्म दिया है क्योंकि वह इस्लाम से निकल चुका है। ख़ैर मतलब यह है कि नमाज़ से बन्दा अल्लाह के क़रीब भी होता है और अल्लाह का मेहबूब भी और नमाज़ छोड़ने वाला क़ियामत के दिन मुहम्मद स० या नेक लोगों के साथ न उठेगा बल्कि क़ारून और फ़िरऔन और उसके वज़ीर हामान दुश्मने खुदा के साथ बे–नमाज़ी उठेगा, जब हश्र उनके साथ होगा तो ज़ाहिर सी बात है कि गेहूं के साथ कीड़े भी पिस जाते हैं इसलिये मुसलमान हज़रात को नमाज़ से लापरवाही न करनी चाहिये और कलिमे के बाद तमाम अअ़माल में अफ़ज़ल अ़मल नमाज़ है जितनी मरतबा ख़ुदा ने कुरआन में नमाज़ का हुक्म फ़रमाया किसी भी इबादत का इतना हुक्म नहीं फ़रमाया, सौ के क़रीब जगहों पर अल्लाह ने कुरआन में नमाज़ का हुक्म फ़रमाया मुख़्तलिफ़ शकलों में, और तब भी हम उसको बे–वक़अत जानें या लापरवाही करें यह बहुत बड़ी गुमराही है और क़ियामत में सबसे पहले नमाज़ का ही सवाल होगा अगर नमाज़ दुरुसत होगी तो दीगर अअ़माल में रिआयत की जायेगी वरना परेशानी होगी। लिहाज़ा नमाज़ को हमेशा ख़ूब पाबन्दी से ठीक वक़्त पर अच्छी तरह वुज़ू करके और दिल लगाकर पढ़ना चाहिये ताकि आख़िरत में काफ़िरों के साथ हिसाब व किताब न हो और दोज़ख़ के अ़ज़ाब से निजात मिले। कई जगहों पर नमाज़ी के लिये खुशख़बरी और नमाज़ न पढ़ने वाले के लिये बहुत सी जगहों पर अलग अलग तर्ज़ से अ़ज़ाब की धमकी दी गई है मगर अब भी न मानो तो किसी का क्या नुक़सान होगा ख़ुद के पैर पर ही कुल्हाड़ी मारोगे।

तीसरा नम्बर इल्म व ज़िक्र

(٣٢٥) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم طلب العلم فريضةٌ على كل مسلم. (احياء العلوم، بخاری جلددوم)

रसूलुल्लाह स० ने फ़रमाया इल्म का हासिल करना मुसलमान पर फ़र्ज़ है।

(٣٢٦) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم مثل الذى يذكر ربّهٗ والذى لا يذكرُ مثلُ الحيّ والميت. (بخاری جلددوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया ज़िक्र करने वाले की मिसाल ज़िन्दा और मुर्दे की तरह है यानी ज़िक्र करने वाला ज़िन्दा और ज़िक्र न करने वाला मुरदा है।

दोस्तो! हदीसों में इल्म और ज़िक्र की बड़ी ताकीद और फ़ज़ीलत आई है, एक हदीस में है कि ख़बरदार बिला शक सारी दुनिया मलऊन है और जो कुछ उसमें है वह मलऊन है मगर अल्लाह का ज़िक्र, और उसके मुवाफ़िक़ चीज़ें और (दीन का) आ़लिम और (दीन का) तालिबेइल्म, लिहाज़ा हर मुसलमान को इल्म व ज़िक्र करके ऊंचे दर्जों पर पहुंचने की कोशिश करनी ज़रूरी है।

अल्लाह को इस इल्म से मुहब्बत है जिसमें अ़मल हो, इख़लास हो और जो इल्म उसको अल्लाह के अहकाम के अदा करने पर मजबूर करे और अल्लाह की मनाकर्दा चीज़ों से रोके वरना बेअ़मल हो तो इल्म होकर भी जाहिल है क्योंकि जाहिल में और इल्म रखने वाले में अब कोई फ़र्क़ बाक़ी नहीं रहा। बहरहाल आ़लिम की फ़ज़ीलत अपनी जगह साबित है मगर इल्म तक़ाज़ा करता है अ़मल का, इल्म नाम ही इस चीज़ का है जो नुक़सानदह और नाकारा चीज़ों से बचाकर ख़ैर और आराम की जगह की

रहबरी करे और अल्लाह तआ़ला बन्दो से पूछेगा क्या तुमने इल्म को हासिल किया? अगर कोई यह कहेगा कि नहीं, तो अल्लाह तआ़ला उससे कहेगा क्यो हासिल न किया? इससे मा'लूम हुआ कि जिहालत गुमराही है और वबाले आख़िरत है और जो हज़रात यह कहेंगे कि हमने इल्म सीखा तो अल्लाह तआ़ला सवाल करेगा कि अ़मल किया? अगर अ़मल इल्म के मुवाफ़िक़ व बराबर रहा तो निजात होगी और इ़ज़्ज़त हासिल होगी और अगर अ़मल न किया तो यह इल्म ही उसके लिये हुज्जत बन जायेगा और अ़मल न करने की वजह से बहुत अहले इल्म दोज़ख़ में दाख़िल होंगे।

दोस्तो! इल्म की भी ज़रूरत है और इल्म के साथ अ़मल की भी, अ़मल के साथ इख़्लास की भी। बिलाशुबह क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा सख़्त अ़ज़ाब वालों में दीन का वह जानने वाला भी होगा जिसने अपने इल्म से फ़ायदा न उठाया होगा इल्म हासिल करने वालों की फ़ज़ीलत में हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया कि जो शख़्स इल्म (दीन) हासिल करने के लिये निकला उसके वापस होने तक वह अल्लाह की राह में है और एक हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह स० ने फ़रमाया है कि कुछ लोग जब अल्लाह के घरों में से किसी घर (यानी मस्जिद) में जमा होकर अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और एक दूसरे को सुनाते हैं तो उन पर इत्मीनान व सकीना नाज़िल होती है और उन पर रहमत छा जाती है और उनको फ़रिश्ते घेर लेते हैं और ख़ुदा उनको अपने दरबारियों में याद फ़रमाता है।

रहा ज़िक्र तो अल्लाह तआ़ला ने बहुत–से अन्दाज़ में ज़िक्र करने वालों की तारीफ़ की हदीसों में तारीफ़ें आई हैं अल्लाह ने फ़रमाया ज़िक्र के ज़रिये यक़ीनन दिलों को इत्मीनन और सुकून हासिल होता है ज़िक्र करने वालों को ज़िन्दा और ज़िक्र न करने

वालों को मुर्दा बताया गया है। हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जन्नत में जाने के बाद किसी चीज़ का इतना ग़म न होगा मगर सिवाये उस घड़ी के जो बग़ैर ज़िक्र के गुज़री हो, ज़िक्र के ज़रिये इन्सान गुनाहों से दूर और बुराईयों से अलग रहता है क्योंकि ज़िक्र नूर पैदा करता है ज़िक्रुल्लाह से अल्लाह की रज़ा हासिल होती है ज़िक्रुल्लाह से कुरबते इलाही हासिल होती है। दुनिया में ज़िक्र करने वालों का अल्लाह फ़रिश्तों की महफ़िल में ज़िक्र करता है। ज़िक्र करने वालों की तरफ़ अल्लाह तआला मुतवज्जह होता है। ज़ाहिर बात है जब तुम्हारे किसी दोस्त को यह मालूम पड़े कि तुम्हारा दोस्त तुम्हारी दिन व रात कई मरतबा तारीफ़ करता है तो आपके दिल में बे–इख़्तियार उसके लिये जगह और मुहब्बत निकल आयेगी तो बताओ वह अल्लाह जिसको हर बन्दे से चाहे वह मुस्लिम हो या काफ़िर मां से ज़्यादा मुहब्बत है क्या वह हमारे ज़िक्र पर ख़ुश न होगा, ज़रूर ख़ुश होगा।

हदीसों में आया है कि ज़िक्र से दिल की सफ़ाई होती है और यह भी आया है कि ज़िक्र के बराबर कोई चीज़ भी अल्लाह के अज़ाब से बचाने वाली नहीं। हदीस में यह भी है कि ग़ाफ़िलों में ज़िक्र करने वाला ऐसा है जैसे अंधेरे घर में चिराग़, और यह भी आया है कि ज़िक्र की मजलिसें आसमान वालों के लिये इस तरह चमकती हैं जिस तरह हमारे लिये आसमान के सितारे हैं।

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अगर एक शख़्स की गोद में रुपये हों जिनको वह राहे ख़ुदा में बांट रहा हो और दूसरा शख़्स ख़ुदा का ज़िक्र कर रहा हो तो यह ज़िक्र करने वाला ही अफ़ज़ल रहेगा ख़ालिक़ और मुहसिने हक़ीक़ी का कितना भी ज़िक्र किया जाये कम है क्योंकि उसकी नेमतें बेशुमार हैं और हमारे ज़िक्र व अज़कार मेहदूद हैं। बताओ क्या यह इन्साफ़ है मगर फिर भी

अल्लाह तआला अपने बन्दों को ख़ास अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल करेगा कोई बन्दा चाहे वह नबी हो या वली या दूसरा कोई भी हो वह अल्लाह की रहमत के बग़ैर जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकता इसलिये जितना भी वक़्त मिले अल्लाह का ज़िक्र करो और रहमते हक़ को क़रीब करो। अल्लाह बहुत रहीम है।

चौथा नम्बर इकरामे मुस्लिम

(۳۷۷) عن ابن عباسؓ قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم لیس منا من لم یُوقّر کبیرنا ولم یرحم صغیرنا. (ابوداؤد، احیاء العلوم جلد دوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जो बड़ों की इज़्ज़त न करे और छोटों पर रहम न करे तो वह हम में से नहीं।

मतलब यह है कि उसमें कामिल सिफ़ते ईमानी नहीं वरना वह शख़्स मुसलमान तो रहेगा काफ़िर न होगा बड़ों का अदब करना और छोटों पर शफ़क़त करना यह ओसाफ़े हसना में से है यह मुसलमानों की अलामत है लेकिन अगर वह यह सिफ़त इख़्तियार न करे तो वह गुनहगार ज़रूर होगा लेकिन इस्लाम से ख़ारिज न होगा।

(۳۷۸) قال رسول الله صلی الله علیه وسلم من ستر مسلمًا سترهُ الله تعالٰی فی الدنیا والآخرة. (مسلم، احیاء العلوم جلد دوم، بخاری ثانی)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जो शख़्स किसी मुसलमान की दुनिया में पर्दा–पोशी करेगा तो अल्लाह तआला उसकी दुनिया और आख़िरत में पर्दा–पोशी करेगा।

(۳۷۹) قال رسول الله صلی الله علیه وسلم من قضی لاخیه حاجةً فانما خدم الله عهدة. (طبرانی، احیاء العلوم جلد دوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जो शख़्स अपने भाई की ज़रूरत पूरी कर दे तो वह ऐसा है गोया उसने तमाम उम्र

अल्लाह की खिदमत की, यानी इबादत की।

(۳۸۰) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لايرحم الله من لايرحم الناس. (مشكوٰة شريف)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अल्लाह तआला उस शख़्स पर रहम नहीं करेगा जो लोगों पर रहम नहीं करता है।

(۳۸۱) عن انس رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم والذى نفسى بيده لايُؤمِنُ عبدٌ حتى يُحِبَّ لاخيه مايُحِبُّ للنفسه. (مشكوٰة)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया खुदा की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कोई बन्दा उस वक़्त तक (कामिल) मोमिन नहीं हो सकता जब तक वह अपने मुसलमान भाई के लिये वही चीज़ न चाहे जो अपने लिये चाहता है।

(۳۸۲) عن انس رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما اكرم شابٌ شيخًا من اجل سِنِّهِ الا قيّضَ الله له عند سِنِّهِ من يُكرِمُهُ. (مشكوٰة، ترمذى شريف)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया जो भी जवान किसी बूढ़े शख़्स की उसके बुढ़ापे के सबब तअज़ीम व तकरीम करता है तो अल्लाह तआला उसके बुढ़ापे के वक़्त किसी ऐसे शख़्स को मुतअय्यन कर देता है जो उसकी तअज़ीम व खिदमत करता है।

दोस्तो! इन तमाम अहादीस से मालूम हो रहा है कि इस्लाम में इकरामे मुस्लिम का काफ़ी बड़ा दर्जा है जब ही तो हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया, जो हमारे बड़ों का इकराम न करे वह हम में से नहीं और जो छोटों के साथ शफ़क़त न करे उनके साथ

रहम का मामला न करे वह भी हम में से नहीं। उलमा की इज़्ज़त करना उलमा–ए–दीन से मुहब्बत करना यह इकराम उलमा है। ग़र्ज़ कि इकराम की कई किसमें हैं।

दोस्तो! इस नम्बर का हासिल यह है कि बन्दा बन्दों के हुकूक का ख़्याल रखे और वक़्त जैसा तक़ाज़ा करे उसी तरह हुकूक को अदा करता रहे और मुस्लिम शरीफ़ में यह भी हुक्म है कि हम लोगों की इज़्ज़त व इकराम में उनके मरतबे का भी ख़्याल रखें हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया :

انزلوا الناس على منازلهم. (مشکوٰۃ شریف)

कि लोगों को उनके दर्जों पर रखो मुराद यही है कि अमीर यानी अगर आदमी शाही मिज़ाज और बड़े घर का हो तो उसके साथ उसके मर्तबे का भी ख़्याल रखो कहीं ऐसा न हो कि तुम दाल रोटी आ़म लोगों को खिलाते हो वही दाल और रोटी उसको भी खिला दो जो मालदार हो और उ़म्दा ग़िज़ा खाने का आ़दी हो ऐसा न करो क्योंकि यह दाल और रोटी खाने का आ़दी नहीं है अगर उसको मुर्ग़ा और कोरमों से दाल पर लाओगे तो वह घबरा जायेगा और दीन का काम करने से दूर हो जायेगा।

इसलिये इकरामे मुस्लिम के वक़्त इस बात का भी ख़्याल रहे कि इकराम लोगों के मर्तबों के ऐतिबार से हो ख़्वाह वह इकराम कलाम में हो या किसी मदद की शक्ल में हो, या खाना खिलाने में हो, या उसके अ़लावा और किसी तरह भी इकराम हो उसमें यह ख़्याल करना ज़रूरी है कि लोगों के मरातिब का ख़्याल हो और यह ख़्याल करने का हुक्म हदीस में है जैसा कि मैने पहले हदीस नक़ल कर दी।

, अब यह सवाल पैदा होता है कि मुसलमान को ही ख़ास क्यों किया उसके दो जवाबात हैं एक तो इसलिये कि हदीस में

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जो शख़्स हमारे बड़ों का इकराम न करे और हमारे छोटों पर शफ़क़त न करे वह हममे से नहीं। देखो इस हदीस में ख़ुद हुज़ूर अकरम स० ने मुसलमान के साथ इकराम को ख़ास किया और इस वजह से ही तबलीग़ वाले भी इकराम को मुसलमान के साथ ख़ास करते हैं लेकिन यह भी याद रहे कि काफ़िरों के साथ भी अच्छा बरताव करना चाहिये ताकि वह उम्दा अख़लाक़ को देखकर इस्लाम में दाख़िल हो जायें। और हुज़ूर अकरम स० ने काफ़िरों के साथ भी इकराम का मामला किया है मगर दोनों के इकराम में बहुत बड़ा फ़र्क़ है। मुसलमान का इकराम उसके नूरे ईमानी की वजह से है और काफ़िर का जो इकराम किया जाता है वह इस वजह से कि उसको हमारा मज़हब पसन्द आजाये और वह मुसलमान बनकर अपनी आख़िरत बना ले। क्योंकि दुनिया एक न एक दिन ख़त्म होने वाली है और दूसरी वजह मुसलमान को ख़ास करने की यह है कि मुसलमान ईमान की वजह से हक़ीक़ी इकराम का हक़दार है और काफ़िर दौलते ईमानी से फ़क़ीर है।

यानी उसके पास वह चीज़ ही नहीं है जो इकराम कराती है यानी ईमान। लेकिन फिर भी इस्लाम ने यह तालीम दी कि हम मुसलमान के साथ साथ काफ़िरों का भी इकराम करते रहें ताकि वह हमारे अख़लाक़े हसना देखकर दौलते ईमानी हासिल करें और यही तबलीग़ वाले भी फ़रमाते हैं कि काफ़िरों के साथ अच्छा सुलूक करो ताकि वह दौलते ईमानी को हासिल करने वाले बन जायें न कि उनके कुफ़्र की वजह से, तबलीग़ वाले काफ़िर के इकराम का हुक्म देते हैं बल्कि इस वजह से इकराम का हुक्म देते हैं कि वह भी इस्लाम ले आयें इस्लाम के किरदार को देखकर, मुसलमान की शान यह है कि वह मख़लूक़ के हुक़ूक़ का

ख़्याल रखे और जलन और हसद को अपने दिल में जगह न दे मुसलमानों को सलाम करने में पहल करे और जवाब ज़रूर दे क्योंकि जवाब का देना वाजिब है और सलाम करना सुन्नत है। मुसलमानों की तकलीफ़ पर खुशी का इज़हार करना भी नाजाइज़ है क्योंकि उससे भी उसके दिल को तकलीफ़ पहुंचेगी।

मुसलमानों की हिदायत की फ़िक्र करना दूसरे मुसलमानों का फ़रीज़ा है क्योंकि यह सिफ़त उम्मते मुहम्मदिया की है कि वह जो चीज़ खुद के लिये पसन्द करे वह चीज़ दूसरे के लिये भी पसन्द करे जैसा कि हम अपने लिये जन्नत को पसन्द करते और हुसूले जन्नत के लिये हम अअ़माले सालेहा को इख़्तियार करते हैं। और ग़ैर मालूम चीज़ को सीखते हैं तो यही चीज़ दूसरों के लिये भी पसन्द करें यानी दूसरे मुसलमानों की भी फ़िक्र करें ताकि वह भी जन्नत वाले अअ़माल में अपनी ज़िन्दगी बसर करें। और भी दीन की मालूमात को हासिल करें यह फ़िक्र हमको होनी चाहिये क्योंकि दूसरे मुसलमानों की फ़िक्र करना यह भी सुन्नते मुहम्मद स० है इसलिये इस सुन्नत को भी अपनी ज़िन्दगी में दाख़िल करले और फ़िक्रे उम्मत में खुद को दाख़िल करे कि हमको उम्मत के बुरे अअ़माल करने से तकलीफ़ हो और उम्मत के अच्छे अअ़माल को देखकर ख़ुशी हो यह सिफ़त मुसलमान की है इख़्तिलाफ़ से बचने का इरादा रखना और इत्तिफ़ाक़ को इख़्तियार करने का हुक्म इस्लाम ने दिया है और मुसलमानों को राहत रसानी की तालीम भी इस्लाम ने दी है और दूसरी जगह पर हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया मुसलमान की उ़म्दा सिफ़त यह है कि उसके हाथ व ज़ुबान से, उसकी हरकत से किसी दूसरे मुसलमान को तकलीफ़ न हो, न ज़बान से तकलीफ़–दह कलिमात का इस्तेमाल करे और न हाथ के ज़रिये कोई बुराई और ज़ुल्म वाला काम करे

गर्ज़ कि हमारी किसी भी अदा से और इशारों से हरकात व सकनात से किसी को कोई तकलीफ़ न हो यह सिफत मुसलमान की है और एक हदीस में हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया जिसने किसी मुसलमान को खुश किया उसने अल्लाह को खुश किया देखो हुज़ूरे अकरम स० मुसलमान की खुशी को खुदा की खुशी बता रहे हैं अब बताओ खुदा की खुशनूदी से बढ़कर और क्या चीज़ हो सकती है और वह खुशनसीबी हासिल होती है मुसलमान को खुश करने से, चाहे भाई हो या दोस्त हो या वालिद हो या बहन हो या मां हो या बीवी हो, ग़र्ज़ कि अगर वह जानवर को भी खुश करे खुदा उसको भी जन्नत का फ़ैसला सुना सकता है तो इन्सान की बात तो क्या पूछनी और उसमें भी मुसलमान हो तो फिर पूछना ही क्या, ख़ैर दर ख़ैर। इसलिये हमको आम तौर पर तमाम मख़लूक़ का इकराम करना चाहिये और खास तौर पर मुसलमान का इकराम करना चाहिये।

पांचवां नम्बर इख़लासे नियत

(۳۸۳) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم انما الاعمال بالنيات.
(البخاری)

हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया बेशक अअ़माल का तअल्लुक नियतों के साथ है।

दोस्तो! नियत पर ही अल्लाह के फ़ैसले होते हैं ख़ैर के और शर के। मतलब यह है कि बन्दा अगर किसी नेक काम का इरादा करता है तो अल्लाह तआ़ला उस नियते सालेह के ऊपर ही मामलात का फ़ैसला करता है और अगर बन्दा किसी नियते फ़ासिद को दिल में जगह देता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी नियत के ऊपर ही फ़ैसला करता है क्योंकि नियत अअमाल का

बुनियाद है और बुनियाद जैसी होगी इमारत भी वैसी ही होगी कुव्वत व जुउफ मे अगर नियत अच्छी होगी तो अल्लाह तआला उस नियत के ऊपर ही जन्नत के फ़ैसले करता है जैसे कि अगर कोई शख़्स यह नियत करे कि अगर मेरे पास इतने इतने पैसे आयेगे तो मैं मस्जिद या मदरसे की इमारत तैयार कर दूंगा अल्लाह तआला उसको उसकी नियत के ऊपर ही सवाब अता कर देता है मगर नियत से आम और कमज़ोर नियत मुराद नहीं है बल्कि नियते क़वी और मज़बूत नियत मुराद है। अगर नियत में तरद्दुद हो तो वह नियत सवाब को लाज़िम न करेगी जब तक इस नियत में मज़बूती न हो और अगर कोई नियत क़वी भी कर ले और वह नियत अ़मले सालेह की भी हो मगर इस नियत में आकर रज़ा–ए–ख़ुदा के अ़लावा उसके दिल में जब दुनिया आ गई तो यह नियत भी बातिल यानी बे सवाब हो जायेगी, अब वह नियत ही नहीं चाहे वह नियत के साथ अ़मल भी कर दे। और इस नियत व अ़मल में ग़ैरुल्लाह को अपनी तरफ़ माइल करने की नियत हो तो यह नियत और अ़मल दोनों बे–सवाब हो जायेंगे क्योंकि अल्लाह तआ़ला सिर्फ़ नियत और उस अ़मल को पसन्द करता है जो सिर्फ़ इसी के लिये हो। नियत में या अ़मल में किसी का ज़र्रा बराबर भी दख़ल न हो। हदीस में है जो मैंने पहले ज़िक्र कर दिया है इसमें हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया बन्दा जब किसी नेक अ़मल की नियत करता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी नियत पर ही सवाब यानी एक नेकी लिखता है और जब वह इस पर अ़मल करता है तो उसके अ़मल के ऐतिबार से उसके लिये सवाब में इज़ाफ़ा किया जाता है और अगर बन्दा किसी बुरी चीज़ का इरादा करता है तो अल्लाह कहता है कि मेरे बन्दे की बुरी नियत पर ही बुराई न लिखो जब तक कि वह उसको अमल में न लाये

और अगर वह शख़्स नियते फ़ासिद के साथ अमल भी करता है तो अब उसके लिये इतना ही गुनाह लिखा जाता है जितना उसने अमले फ़ासिद किया है इस वजह से तबलीग़ वाले नियत सालेह का हुक्म करते हैं कि नियत दुरुसत करो और अमल की कोशिश भी ज़रूरी है। अल्लाह तआला मन्ज़िल तक पहुंचाने वाला है।

छठा नम्बर तफ़रीग़े वक़्त

(۳۸۴) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم طلب العلم فريضة على كل مسلم. (بخاری شریف جلد دوم، احیاء العلوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया इल्म का हासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।

मुराद इतना इल्म जिससे कम से कम हलाल व हराम की पहचान हो जाये और इसी वजह से तबलीग़ वाले कहते हैं कि अपने वक़्त को दुकानों से फ़ारिग़ करके अल्लाह के रास्ते में लगाओ और अपने फ़रीज़े को पहचानो और अल्लाह के अहकाम को सीखने के लिये और सीखे हुये को दूसरों तक पहुंचाने के लिये तबलीग़े दीन के लिये वक़्त दो ताकि तबलीग़ में जाकर दीन पर चलने की मश्क़ की जाये। घर पर आदमी के लिये शुरू शुरू में दीन पर अमल करना दुशवार मालूम होता है क्योंकि कुछ लोगों को शर्म हाइल होती है बअ़ज़ लोगों का कारोबार हाइल होता है जिसकी वजह से दीन पर अमल करने के लिये वक़्त नहीं होता है मगर जब वह तबलीग़ में जाकर अपने माहोल से हटकर बेतकल्लुफ़ हो जाता है अब वह आराम से और इत्मीनान से दीन पर अमल करने की मश्क़ करता है जब उसके चालीस दिन या चार माह पूरे हो जाते हैं तो उसके अन्दर से एक हद तक इबादात से कहालत व सुस्ती ख़त्म हो जाती है क्योंकि

जाहिर बात है एक आदमी अब तक न दाढ़ी रखता था और न कलऔ वाला जोडा पहनता था मगर जमाअत के माहौल की वजह से वह अजनबियत मेहसूस नहीं करता है। क्योंकि इस मश्क़ पर उसके चालीस दिन या चार माह लगे हैं। बअज़ हज़रात पर देर से असर होता है और बअज़ इतने नालाईक़ होते हैं कि उन पर दीन का रंग चढ़ता ही नहीं, ऐसे लोग तबलीग़ में बहुत कम नज़र आते हैं। और जो हैं वह दूसरे फ़िरक़ों से मुलहक़ होते हैं इस वजह से वह मिज़ाजे दीन से दूर ही रहते हैं उनका तबलीग़ में निकलना सिर्फ़ तबलीग़ वालों की ख़ामियां निकालने के लिये होता है क्या इन्सान कभी भी ख़ता से पाक यानी बिल्कुल मअसूम और बेगुनाह है क्या फ़रिश्तों और इन्सानों में कोई फ़र्क़ नहीं कमी से कौन ख़ाली है अगर कमी है तो शरीअ़त ने आप को और हमको कमियों के उछालने का हुक्म नहीं दिया बल्कि उम्दा तरीक़ों से कुरआन और हदीस के हवालों से खुद की ज़िन्दगी को सुन्नती बनाकर लोगों को राहे हक़ बताओ लोग क्यों नहीं मानेंगे खुद से कुछ होता नहीं खुद ज़िना और चोरी और बदकारी और गुनाहों में मलव्विस हैं और अल्लाह के बन्दों के ऐबों को दूर करने की कोई तरकीब तो नहीं सूझती, बस ऐब को उछालना शुरू करते हैं यह बड़ी ख़बीस आदत है कि खुद तो इस्लाह नहीं करते हैं और दूसरे लोगों को भी करने नहीं देते अगर उनमें कमी हो तो ख़ुद निकलो, साथियों को निकालो और उनसे कहो हमको अल्लाह के लिये और मुहम्मद स० के लिये उन हज़रात की यह ग़लतियां दूर करनी हैं सिर्फ़ ज़बान से बोलने से काम न होगा अ़मल शर्त है तब तो काम बनेगा सिर्फ़ ज़बान खर्ची से अब तक कुछ न हुआ है, और न होगा। अ़लावा नुक़सान के। खैर दोस्तो! ऐतिराज़ हर एक पर हुआ है अगर हम कुरआन और हदीस के

मुवाफ़िक हैं तो कोई डर नहीं, और अल्लाह से हर वक़्त हिदायते मुसतक़ीमा तलब करो। ज़िद पर न रहो हक़ की तलाश में रहो।

ग़ैर तबलीग़ में जाकर ख़ुदा के बन्दों को ख़ुदा से मिलाने की कोशिश करना और ख़ुदा के अहकाम उनको पहुंचाना दर असल नबियों का काम है जिसकी ज़िम्मेदारी अब सिर्फ़ इस उम्मत पर ही है। हुज़ूर अकरम स० की सही मुहब्बत यही है कि हमारी ज़िन्दगी हुज़ूर अकरम स० के मुवाफ़िक़ हो जाये और हमारे अन्दर भी वही ग़म पैदा हो जाये उम्मते मुहम्मदिया का जो आप स० के सीने में था सिर्फ़ हलवे खाने और चीख़ चीख़ कर कहने से काम न चलेगा, आज लोग जो कम इल्म वाले हैं वह अपने आपको आशिक़े रसूल कहते हैं मगर जिसकी ज़िन्दगी हुज़ूर अकरम स० के तरीक़ों से दूर हो, जिसके सीने में फ़िक्रे मुहम्मदी न हो वह कामिल आशिक़े रसूल हो ही नहीं सकता है यह तो हो सकता है कि उसको हुज़ूर अकरम स० क़ियामत में मुनाफ़िक़ की तरह अपने दरबार से लात मारकर बाहर कर दें।

अक़ाइद को सहीह करना बहुत ज़रूरी है मुझको बताओ तुम कहते हो कि तबलीग़ हर एक पर फ़र्ज़ नहीं है अगर यह बात सही होती तो यह दीन आज हम तक न आता क्योंकि सहाबा रज़ि० घर ही बैठते और कहते कि यह काम हर एक पर थोड़ी फ़र्ज़ है अगर चन्द अफ़राद भी तबलीग़ करें तो काफ़ी है। मगर सहाबा रज़ि० ने उन लोगों के क़ौल पर अ़मल न किया और न उनके मुवाफ़िक़ हुज़ूर अकरम स० ने हुक्म दिया और न कुरआन ने। मगर यह मोअ़तरिज़ की कज फ़हमी है जो उसने तबलीग़ को ख़ास कर दिया और अपने सर से बोझ हटाने के लिये दीन का बेड़ा ग़र्क़ करना चाहता है। अल्लाह उनको ही ग़र्क़ कर दे जो दीन को ग़र्क़ करना चाहते हैं और हक़ से रोकते हैं अल्लाह उनको

जन्नत से रोक देगा क्योंकि ज़ाहिर सी बात है जो हक़ से रोकेगा वह बातिल पर होगा और जो बातिल पर होगा वह गुमराह है।

खैर हज़रात! अपने वक़्त की क़द्र बहुत ज़रूरी है जन्नत में जन्नती को किसी भी चीज़ का अफ़सोस न होगा सिवाये उस घड़ी के जो ज़िक्र के अलावा गुज़री होगी अपने वक़्त को राहे खुदा में लगाकर खुद को भी तरक़्क़ी दो और अपने पास इल्म हो तो उसको दूसरों तक पहुंचाओ। यही हमारा काम है दुनिया का पूरा वक़्त हम नहीं मांगते हैं बल्कि कुछ वक़्त दुनिया से निकाल कर दीन के लिये दे दो। उसमें देने वाले का ही फ़ाइदा है दूसरों का क्या नुक़सान और फ़ाइदा उसकी ही आख़िरत बनेगी जो कुरबानी देगा जो जान चुरायेगा अल्लाह उससे सख़्ती से हिसाब लेगा उस वक़्त मालूम होगा कि तबलीग़ वालों का यह क़ौल तफ़रीग़े वक़्त क्या था और उसमें क्या फ़ाइदा था।

सातवां नम्बर इन्सान को बेफ़ाइदा कामों से और बातों से बचना चाहिये

(٣٨٥) عن على بن الحسين قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من حُسْنِ اسلام المَرْءِ تركُهُ مالا يعنيه.

(ابن ماجہ، مشکوٰۃ، بخاری ثانی، احیاء العلوم سوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया इन्सान के इस्लाम की ख़ूबी यह है कि वह उस चीज़ को छोड़ दे जो बे फ़ाइदा हो।

यह नम्बर नसीहत उज़मा है, क्योंकि इन्सान जब अपने वक़्त की हिफ़ाज़त करेगा यानी उसको आख़िरत के ऐतिबार से कामयाब करने की कोशिश करेगा तो ज़ाहिर बात है कि यह शख़्स हक़ीक़ी कामयाब कहलायेगा अब उसका एक एक सांस क़ीमती बन जायेगा और जब वह शख़्स अपने वक़्त को मरज़ियाते खुदा में सर्फ़ करेगा तो अल्लाह उसको अपने क़रीब कर देगा

याद रहे जिसने खुद की इज़्ज़त को जाना उसकी तमाम दुनिया इज़्ज़त करेगी।

मतलब यह है कि आदमी अपना मक़ाम पहचान ले जब वह अपना मक़ाम जान लेगा तो वह फ़ालतू अफ़आल से और अक़्वाल से मेहफ़ूज़ रहेगा जब वह फ़ालतू चीज़ों से मेहफ़ूज़ रहेगा तो ज़ाहिर बात है कि वह अल्लाह के पास भी और अहले दुनिया के पास भी मुकर्रम रहेगा, इन्सान के लिये खुद को गुनाहों से बे फ़ाइदा ख़र्च और बे-फ़ाइदा अक़्वाल व हरकात से बचाना ज़रूरी है। जब इन्सान की ज़बान से फ़ुज़ूल बातें ख़त्म हो जायेंगी तो वह हकीमाना और उम्दा कलाम करने वाला हो जायेगा इसका यह मतलब नहीं है कि आप कलाम ही न करें अगर आपसे कोई सवाल करे तो आप उसका जवाब भी न दें, यह गुलू कहलायेगा और यह तर्ज़ भी दुरुसत नहीं बल्कि अगर सही बातों का सवाल हो और आपके पास जवाब हो तो जवाब देना ज़रूरी है। वरना इल्म को छुपाने वाले कहलाओगे। और इल्म छुपाने वाले को दोज़ख़ की बशारत है ला यानी से मुराद वह अक़्वाल व अफ़आल हैं, जो शरीअत से ज़ायद हों जिनमें न दीन का और न दुनिया का फ़ाइदा हो इन बातों से और कामों से इजतिनाब ज़रूरी है कभी कभी इन्सान ख़ामोश रहने से बड़े बड़े दरजात हासिल कर लेता है और इस पर एक हदीस भी शाहिद है :

(٣٨٦) عن عمران بن حصين انّ قال رسول الله صلى الله عليه وسلم قال مقام الرّجل بالصُّمْتِ افضل من عبادة ستين سنة. (مشكوٰة)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया चुप रहने की वजह से आदमी को जो दर्जा हासिल होता है वह साठ साल की इबादत से अफ़ज़ल है। देखिये इस हदीस में साफ़ बता दिया कि ला-यानी से इजतिनाब करने वालों की कितनी फ़ज़ीलत है अब बताओ

बेजा बातों से खामोश रहने पर अल्लाह साठ साल से ज्यादा इबादत का सवाब देता है तो फिर क्यों हम ला–यानी से न बचें जाहिर बात है कि इन्सान बेजा और बे फ़ाइदा कलाम करते करते कभी कभी अल्लाह को नाराज़ करने वाले कलिमात कह देता है जिससे अल्लाह तआला नाराज़ हो जाता है मगर बन्दे को ख़बर भी नहीं होती जैसे कि हदीस में पहले ज़िक्र भी कर दिया है कि यह ज़बान कभी कभी दोज़ख़ में भी दाखिल करती है, और अच्छे कलिमात की वजह से जन्नत में भी दाखिल करती है इसलिये तबलीग़ वाले कहते हैं कि ला–यानी से बचो हम कोई अपने घर की बात नहीं कहते जो मोंअतरिज़ों को चुभती है और हदीस में यह भी है कि इन्सान अपने पैर से (मुराद अफ़आल व हरकात से) इतना नहीं फ़िसलता जितना अपनी ज़बान से फ़िसलता है खुद उसकी नज़ीर मिसाल से मिलती है कि फ़लां ने पुलिस वालों से ज़बान दराज़ी की आज कैद में है, फ़लां ने गाली दी थी उसने उसको क़त्ल कर दिया यह मतलब हदीस में दाखिल है और आख़िरत की भी गिरिफ़्त दाखिल है कि ज़बान से कभी कभी दोज़ख़ वाजिब हो जाती है इसलिये इन्सान को अपनी ज़बान काबू में रखनी चाहिये और एक हदीस में है कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया सबसे ज़्यादा गुनाह उन लोगों के है जो बिला ज़रूरत कसरते कलाम करते हैं, और कुरआन ने भी ऐलान कर दिया :

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ۞

और वह मोमिन यकीनन बा–मुराद होंगे जो बेकार चीज़ों से ऐराज़ करने वाले होंगे।

अब कुरआन से बढ़कर और कौनसी बशारत मुअस्सिर हो सकती है असल बात दिल पर लेने वाले की है वरना मानने वाले कुतुबख़ाने का कुतुबख़ाना पढ़ लेने के बाद भी जाहिल ही रहते

है। कुत्ते की दुम टेढ़ी की टेढ़ी ही रहती है, इस्लाह को पसन्द करते ही नहीं। कलाम तो बहुत मुज़य्यन और पुरकशिश करते हैं मगर बे अ़मली में सरदार होते हैं इल्म सीखने वाले से भी सवाल होगा कि कितना अ़मल किया और न सीखने वाले से भी सवाल होगा, क्यों नहीं सीखा? इसलिये हमें लग़वियात से बचकर जिहालत से इल्म की तरफ़ और इल्म से अ़मल की तरफ़ आने की ज़रूरत है वरना किसी का कोई नुक़सान नहीं है कुरआन ने साफ़ कह दिया है :

لَنَا اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ

हमारे लिये हमारे अअ़्माल और तुम्हारे लिये तुम्हारे अअ़्माल कोई किसी का मददगार न होगा क़ियामत में अअ़्माल से या तो फिर रहमते खुदा से काम चलेगा।

बे-अ़मल आ़लिम की इन्दल्लाह सज़ा

(٣٨٧) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اشد الناس عذابا يوم القيامة عالم لم ينفعه الله بعلمه. (احياء العلوم، ترمذی جلد ثانی)

हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया लोगों में सबसे सख़्त अ़ज़ाब क़ियामत के दिन उस आ़लिम को होगा जिसको उसके इल्म से अल्लाह ने नफ़ा न पहुंचाया हो।

मतलब यह है कि वह आ़लिम जिसने इल्म हासिल किया मगर अ़मल न कर सका दीन की ख़िदमत न कर सका ख़िदमते दीन कोई तबलीग़ी जमाअ़त तक ही ख़ास नहीं है अगर वह मदरसे में दर्स दे रहा हो तब भी वह तबलीग़े दीन का काम अन्जाम दे रहा है और जो लोग जिहालत में यह कहते हैं कि तबलीग़ में जो न लगे वह सही राह पर नहीं यह बात ग़लत है बल्कि मदरसे की ख़िदमत बहुत बड़ी ख़िदमत है मगर यह कहा जा सकता है कि उ़लमा हज़रात को तबलीग़ में लगना चाहिये

ताकि उम्मत की सही तरबियत हो सके और जो उलमा हज़रात यह कहते हैं कि तबलीग़ में न जाओ तबलीग़ वाले सही राह पर नहीं हैं यह भी ग़ुलू और बिलकुल ग़लत है बल्कि उसको इनाद कहना चाहिये कि आज जमाअ़ते तबलीग़ को आ़लिमों की ज़रूरत है हम में से जो न मदरसे में हैं और न कोई दीनी ख़िदमत उनके ज़िम्मे है उनको चाहिये कि यह ख़िदमत इख़्तियार करें यानी जमाअ़ते तबलीग़ में ज़रूर वक़्त लगायें और उनको कुरआन और हदीस के ज़रिये ज़रूरी ज़रूरी बातों से आगाह करें, तबलीग़ के बअ़ज़ अफ़राद जो ग़ुलू या ग़ैर दुरुसत बातों के शिकार हुये हैं उनको हदीस से आगाह किया जाये और तलबा को ख़िदमते दीन करने की तरग़ीब देनी चाहिये कि अगर हमारी ज़िन्दगी में अ़मल मअ़लइल्म पैदा न हुआ तो यह इल्म बजाये फ़ाइदे के नुक़सान व ख़सारे का ज़रिया बन जायेगा और अ़ज़ाबे शदीद का मुसतहिक़ हो जायेगा इस तरह के कलिमात कहने से तलबा को ख़िदमते दीन की फ़िक्र भी होगी और जमाअ़ते तबलीग़ वालों को फ़ाइदा भी होगा।

जब उलमा हज़रात अपना फ़ारिग़ वक़्त जमाअ़त में लगायेंगे तब इत्तिफ़ाक़ पैदा होगा वरना हम जमाअ़त वालों की बुराई करें और जमाअ़त वाले हज़रात मदारिस की तो यह ज़लालत है और उम्मते मुहम्मदिया को एक जगह पर जमा करने के बजाये मुतफ़र्रिक़ करना होगा और मुतफ़र्रिक़ फिरक़ा पैदा करने वाला मबग़ूज़ है हर वक़्त इत्तिफ़ाक़ की राह सोचो इख़्तिलाफ़ की राह को तलाश करने की ज़रूरत नहीं शैतान खुद मुज़य्यन करके पेश कर देगा जिस तरह शैतान बअ़ज़ जाहिलों को और बअ़ज़ अहले इल्म को यह चीज़ मुज़य्यन करके पेश करता है और वह जिहालत की बिना पर या कम इल्मी की या क़िल्लते मअ़रिफ़त की वजह से इस मुज़य्यन चीज़ को अच्छा

जानकर बुराई के आमिल हो जाते हैं, अगरचे पूछा जाये तो कहते हैं कि हक का ज़ाहिर करना ज़रूरी है, हक़ का इज़हार सिर्फ ज़बान–ख़र्ची से नहीं होता है बल्कि कुरबानी शर्त है, पीठ पीछे तक़रीर करना या ग़लतियों को ज़ाहिर करना यह शैतानी फ़रेब है। जिसको जानना और समझना काफ़ी अहम अम्र है क्योंकि शैतान ज़हन में यह बात डालता है कि तू हक़ बात कह रहा है अब बताओ जो हुसने ज़न रखे वह क्योंकर इस फ़ेअल से दस्तबरदार हुये और ज़बान से बक–बक करने में मज़ा भी आता है और जब कुरबानी के लिये कहा जाता है तो वह सबसे पीछे छुपकर बैठता है यह हैं हक़ के ज़ाहिर करने वाले। ख़बरदार रहें अहले तबलीग़ हज़रात और वह अहले इल्म जो एक दूसरे की बुराई करते हैं यह फ़रेब शैतानी है आम हज़रात को कोई हक़ नहीं है कि वह आलिमों की बुराई करें या उनकी शान में छोटी बात कहें और न अहले इल्म सिर्फ़ बातों से उनकी बुराई को ज़ाहिर करें। बल्कि वक़्त लगाकर बुराइयों को दूर करने की कोशिश करें अगर ख़ुद किसी दीनी ख़िदमत में मुसरूफ़ हों तो दूसरे आलिमों को और तलबा को हिदायत करें कि यह काम हमारे अकाबिर का ही है इसकी इस्लाह आलिमों के ज़िम्मे थी और है और रहेगी, इसलिये उसके लिये भी वक़्त निकालना ज़रूरी है इस तरह की बातों से इत्तिफ़ाके उम्मत पैदा होगा और मसनद पर बैठकर बुराई करें और यह समझें कि हम तो इज़हारे हक़ कर रहे हैं यह फ़रेबे शैतानी है और तबक़ा–ए–अहले इल्म को अपने इल्म पर मुकम्मल अमल करने की ज़रूरत है वरना यह हदीस कह रही है कि सख़्त तरीन अज़ाब वाले हज़रात अहले इल्म ही होंगे जिस तरह बड़ी बड़ी नेमतों के हक़दार आलिम हज़रात होंगे इसी तरह अज़ाब का भी मामला है इसलिये हज़रत मौलाना

मुहम्मद उमर साहब पालनपूरी रह० फ़रमाया करते थे कि आ़लिम की मिसाल हवाई जहाज की तरह है और जाहिल लोगों की मिसाल साइकिल की तरह है, जिस तरह हवाई जहाज चन्द घंटों में हज़ारों मील का सफ़र तैय करता है उसी तरह आ़लिम भी दो रक्अ़त में वह सवाब हासिल करता है जिसको जाहिल हफ़्तों में हासिल नहीं कर सकता क्योंकि वह साइकिल पर होता है और साइकिल हवाई जहाज की बराबरी नहीं कर सकती और इसी तरह नुक़सान में भी आ़लिम जाहिल से हज़ार गुना ज़्यादा है जिस तरह एक आदमी साइकिल से गिरे तो उसको थोड़ी बहुत ख़राश आयेगी और अगर वह हवाई जहाज से गिरे तो बताओ क्या वह ज़िन्दा रहेगा ज़ाहिर बात है कि वह तो चूर चूर हो जायेगा, सही यही मिसाल है, जो नफ़ा व नुक़सान में आ़लिम और आ़म लोगों की है। जिस तरह आ़लिम का नफ़ा ज़्यादा है नुक़सान भी ज़्यादा है और जाहिल का जिस तरह सवाब है उसी के बक़द्र नुक़सान भी है। और उसकी ताईद इस हदीस से भी हो रही है कि सबसे सख़्त यानी ज़्यादा अ़ज़ाब आ़लिम को होगा क्योंकि आ़लिम की लॉट्री बहुत बड़ी और बहुत क़ीमती होती है और लॉट्री लग जाये तो बादशाह बन जाता है वरना तो फिर फ़क़ीर से भी फ़क़ीर हो जाता है। अल्लाह तआ़ला अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमायें। हक़ बात मानने में शर्म मेहसूस न करो। हज़रत अबू हनीफ़ा रह० ने एक जाहिल औ़रत से सबक़ सीखा और अ़ल्लामा हो गये।

ज़बानी इल्म फांसने वाला है

(٣٨٨) عن الحسن قال رسول الله صلى الله عليه وسلم العلمُ علمان فعلم في القلب فذالك علم النافع وعلم على اللسان فذالك حجة الله على ابن آدم. (مشكوٰة)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया इल्म की दो क़िसमें हैं एक वह इल्म जो सिर्फ़ ज़बानी हो (यानी बे–अ़मल इल्म) यह तो औलादे आदम पर अल्लाह तआ़ला की हुज्जत है (यानी अल्लाह तआ़ला उससे सवालात करेंगे) और दूसरा इल्म वह है जो दिल में है और वह इल्म नफ़ा–बख़्श है (मुराद है अ़मल वाला इल्म नफ़ा–बख़्श है) इसलिये इल्म तो ज़रूर सीखे मगर अ़मल और इख़्लासे क़लब जिसको इख़्लासे नियत भी कहते हैं इस पर ख़ूब ज़ोर दे क्योंकि इल्म आने के बाद बहुत सी बीमारियां भी उसके साथ आ जाती हैं जैसे तकब्बुर, रिया, हुब्बे–जाह, हुब्बे दुनिया इसलिये क़लब की सफ़ाई हर वक़्त ज़रूरी है और दीगर ख़बीस अफ़आ़ल से भी बचना ज़रूरी है और अफ़आ़ले ख़ैर की रग़बत ज़रूरी है और यही राहे जन्नत है।

दुनिया की ग़र्ज़ से इल्म को हासिल करने वाले की मज़म्मत

(٣٨٩) عن ابی هریرةؓ قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم من طلب علما مما یبتغی به وجه الله تعالی لایتعلمه الا لیصیب به عرض من الدنیا لم یَجِد عَرَف الجنة یوم القیامة. (ابوداؤد،احیاء العلوم،ترمذی،مشکوٰة)

हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया जो शख़्स इन उ़लूम में से कोई इल्म हासिल करे जिनसे अल्लाह की रज़ा मक़सूद होती है किसी दुनियावी ग़र्ज़ के लिये, तो क़ियामत के दिन जन्नत की ख़ुश्बू न सूंघ सकेगा।

इस हदीस में उन हज़रात की मज़म्मत वाज़ेह तौर पर हुज़ूर स० ने फ़रमा दी जो लोग इल्म को सिर्फ़ दुनिया की इज़्ज़त और

दुनियावी राहत व आराम के लिये हासिल करते हैं कि उसके ज़रिये मुझको इज़्ज़त हासिल होगी, दौलत हासिल होगी, मुअज़्ज़ज़ और मुकर्रम बनूंगा, ऐसी फ़ासिद नियत वालों के लिये हुज़ूरे अकरम स० ने वईद सुना दी है बल्कि अपनी ज़रूरत के लिये पैसे हासिल करना जिनके ज़रिये घरवालों को बक़द्रे क़नाअ़त खाना खिला सके और उसमें भी नियत यह हो कि जान बचाना फ़र्ज़ है इसलिये तालीमे दीन से इमामत से तनख़्वाह ले रहा हूं तब तो माफ़ है अगर बिल्डिंग तैयार करने के लिये पैसे हासिल करता हो और मक़सूद सिर्फ़ ऐश हो तो हलाकत का सामान है इसलिये मैं कहता हूं कि आ़लिमों को ख़ारिजी फ़न और हुनर भी सीखना चाहिये फिर इससे ख़ूब मुर्ग़ा खाना, बिल्डिंग बनाना, जैसे कम्प्यूटर सीखना, ए० सी० का काम सीखना और दीगर बा-इज़्ज़त काम सीखना चाहिये जिसकी वजह से हममें इस्तिग़ना पैदा हो जाये और हमारे इल्म की इज़्ज़त बरक़रार रहे और कारोबार भी उ़म्दा और बहुत फ़ाइदेमन्द काम है अल्हम्दुलिल्लाह बन्दे का भी काफ़ी हद तक वसीअ़ चप्पल का होलसेल यानी थोक तिजारत का काम है कारोबार की वजह से वक़ारे इल्म पैदा होता है और इल्म को हुसूल दुनिया का ज़रिया न बनाये यह बुरी ख़सलत है।

आ़लिम की ज़लालत भी बड़ी होती है

(٣٩٠) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ويلٌ للجاهل مرة وَيلٌ للعالم سبع مرات. (مشکوٰۃ شریف، ترمذی، مظاہر حق ششم)

हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया जाहिल के लिये एक मरतबा हलाकत है (मुराद गुनाह पर) और आ़लिम के लिये सात मरतबा हलाकत है।

देखो जिस तरह उ़लमा की इज़्ज़त अल्लाह के नज़दीक

अमल व इख़लास के ज़रिये से होती है इतनी ही अल्लाह की नाराज़गी इल्म पर अमल न करने वाले पर है। जिसको हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया जाहिल ग़लत काम करे उसके लिये एक दर्जा हलाकत है और अगर आलिम जानने के बाद भी फ़ेअ़ल क़बीह का मुरतकिब होता है तो उसके लिये सात गुना ज़्यादा हलाकत होती है। उसकी मिसाल इस तरह समझो एक शख़्स है उसको पता नहीं है कि आगे इस रास्ते पर गढ़ा है और यह आगे चलकर उस गढ़े में जिहालत की वजह से गिर जाता है तो लोग भी उसका साथ देते हैं और ग़म में शरीक होते हैं और कोई शख़्स यह जानता है कि आगे गढ़ा है मगर फिर भी जानकर गिरता है तो लोग उस शख़्स को उठाने के बजाए कहते हैं कि क्या तू उल्लू है, पागल है, तुझको पता नहीं कि यहां पर गढ़ा है मगर फिर भी बार बार इसमें गिरता है, जा मर! जब तुझमें मानने का माद्दह ही नहीं तो हम भी क्या करें। देखा आपने लोगों का ज़ाहिरी मामला, जानने और न जानने वाले के साथ कितना फ़र्क़ है अब बताओ वह अल्लाह जो अक़्लमन्दों का ख़ालिक़ है क्या वह दोनों में फ़र्क़ नहीं करेगा। अल्लाह ही अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये।

बअ़ज़ लोग कहते हैं कि यह तो सुन्नत है कोई फ़र्ज़ तो नहीं

(٣٩١) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم إنّ لِلّٰهِ عزوجل ملكا ينادى كل يوم من خالف سنة رسول الله صلى الله عليه وسلم لم تنله شفاعته. (احياء العلوم جلد اول)

हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला का एक फ़रिश्ता है जो हर रोज़ यह ऐलान करता है कि जो शख़्स

रसूलुल्लाह स० की सुन्नत के ख़िलाफ़ करेगा उसे आप स० की शफ़ाअ़त नसीब नहीं होगी।

अब बताओ क्या सुन्नत को छोड़ दें यह कहकर कि यह सुन्नत ही तो है। याद रहे अगर उस शख़्स ने यह लफ़्ज़ सुन्नते रसूल की तहक़ीर के लिये या ख़फ़ीफ़ जानकर यानी सुन्नत को बे हैसियत जानकर यह लफ़्ज़ कहा हो तो वह काफ़िर हो जाता है और जो शख़्स तर्क करने के लिये या ख़ुद की जान बचाने के लिये यह लफ़्ज़ कहे तो तब भी यह शख़्स गुनहगार होगा क्योंकि उसने जान बचाने के लिये सुन्नत कहकर जान बचाली अ़मल से और अ़मल से जान को जब इन अलफ़ाज़ के ज़रिये बचायेगा तो उसमें किसी न किसी दर्जे की तख़फ़ीफ़ ज़रूर होगी और यही गुनाह का सबब है और अगर कोई सवाल करे कि भाई क्या यह फ़अ़ल फ़र्ज़ है या सुन्नत? अब आप कहते हैं कि यह फ़ेअ़ल सुन्नते रसूल स० है तो यह कहना सवाब का ज़रिया है क्योंकि यह हक़ बात को वाज़ेह कर रहा है ताकि फ़र्ज़ और सुन्नत में फ़र्क़ का इल्म साइल को हो जाये।

फ़ज़ाइले उ़लमा

(۳۹۲) قال الله تعالى قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَايَعْلَمُوْنَ. (پ۲۳)

आप कहिये क्या इल्म वाले और जहल वाले कहीं बराबर हो सकते हैं?

यहां से अल्लाह यह बताना चाहता है कि उ़लमा और जुहला कभी बराबर नहीं हो सकते, ख़ुसूसन अल्लाह के नज़दीक क्योंकि हर दुकानदार जब कोई अपना क़रीबी नौकर रखना चाहता है तो वह समझदार और इल्म वाला आदमी तलाश करता है ताकि वह

इशारे इशारे में समझ जाये उसको बच्चे की तरह एक एक बात समझाने की जरूरत न पडे. बिलकुल इसी तरह अल्लाह भी उसको अपना करीबी बनाता है जो इल्म वाला हो. अब जब अल्लाह ने अपनी कुरबत के लिये हम तमाम में उलमा हज़रात को पसन्द किया तो हम पर लाज़िम है कि हम उन हज़रात की इज़्ज़त करें क्योंकि दीन का इल्म नसीब वालों को ही हासिल होता है जिसके साथ अल्लाह ख़ैर का मामला करने का इरादा करता है तो उसको अपने दीन का इल्म सिखलाता है और अपना इल्म अल्लाह अच्छों को देता है जब अल्लाह ने उलमा को अच्छा समझकर अपने दीन का इल्म दिया तो अगर हम उनमें ख़ामियां तलाश करनी शुरू करें तो यह उलमा की कमियां तलाश करना न हुआ बल्कि अल्लाह की पसन्द पर ऐतिराज़ होगा और जो अल्लाह की पसन्द पर ऐतिराज़ करे उसका ठिकाना दोज़ख़ है इसलिये हम तमाम को उलमा की इज़्ज़त करनी ज़रूरी है चाहे वह तबलीग़ में वक़्त दें या न दें अगर वह कुछ ग़लत काम कर भी रहे हैं तो उनकी बे-इज़्ज़ती न करो बल्कि उनको अकेले में ले जाकर कहो आप हमारे बड़े हैं अल्लाह ने आपको इल्म की दौलत दी है आप इस तरह न करें सिर्फ़ इस तरह कहने का हमको हक़ है बुराई करने का क़तअन हक़ नहीं क्योंकि उनके लिये उनके अआमाल, हमारे लिये हमारे अआमाल हैं, हम ख़ुद को देखें कि ख़ुद कितने अच्छे हैं दूसरों को न देखो, किसी की अच्छाई को देखो तो अपनी ज़िन्दगी में ले आओ किसी की बुराई देखो तो उसको बक़द्रे ताक़त व सलाहियत ख़ामोशी से समझा दो तन्हाई में ले जाकर। और इस बुरे काम करने वाले की बुराई दिल में न लाओ बल्कि इस ग़लत फ़ेअल को, इस काम को बुराई जानो. और दिल में यह सोचो कि मैं तो इससे बड़ा गुनाहगार हूं

यह सिर्फ़ इसलिये कि उसकी तहक़ीर दिल में न आजाये यह मतलब नहीं है कि आप किसी ग़लत काम करने वाले को कुदरत के बावजूद भी न समझाओ बल्कि कुदरत के वक़्त हिकमत से ज़रूर समझाना होगा मगर करने वाले की हिक़ारत दिल में न हो वरना अल्लाह तआला हक़ीर जानने वाले को ही इस काम में दाख़िल कर देगा बल्कि बुरा तो उस काम को जाने जिसको उसने किया है।

अल्लाह ने उ़लमा की मज़ीद ताईद फ़रमाई

(۳۹۳) قال الله تعالى إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ. (پ۲۲)

अल्लाह ने फ़रमाया अल्लाह से वही बन्दे डरते हैं जो इल्म वाले हैं।

अब बताओ अल्लाह तो ख़ुद कहता है कि उ़लमा में अल्लाह का ख़ौफ़ होता है और हम कहें कि उ़लमा बे ख़ौफ़ हैं यह बात कुरआन के ख़िलाफ़ है। और यह क़ाइदा दुनिया का भी है कि जिसको यह पता है कि यह ज़हर है वह इसको हरगिज़ नहीं पियेगा और जो नहीं जानता वह पानी या शरबत जानकर नोश कर लेगा और ख़ुदा को प्यारा हो जायेगा यानी मर जायेगा, अब बताओ जबकि आ़लिम जानता है कि इसमें अ़ज़ाब है इसमें गुनाह है वह क्योंकर उसको करेगा और अगर बे–तवज्जही में कर भी ले तो अल्लाह से माफ़ कराने के ढंग आ़लिम को बहुत याद होते हैं और वह ढंग कौनसा है वह ढंग कुरआन और हदीस से आता है कि इस तरह अल्लाह से माफ़ी मांगो, इस तरह से तौबा करो, इस तरह से अल्लाह को राज़ी करो इसलिये हमें उ़लमा के ऐब से बदज़न नहीं होना चाहिये कुदरत के बक़द्र उनको अच्छे अन्दाज़ मे ख़बर कर देनी चाहिये मगर उनकी गीबत हरगिज़ हरगिज

जाइज़ नहीं है। और न ग़लत अक़वाल व अफ़आल की पैरवी जाइज़ है।

आ़लिमों के लिये आसमान व ज़मीन इस्तिग़फ़ार करते हैं

(۳۹۳) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يستغفر للعالم ما فى السموات والارض. (ابوداؤد، ترمذی، مشکوٰۃ)

हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया आ़लिम के लिये आसमान व ज़मीन की तमाम चीज़ें दुआ़–ए–मग़फ़िरत करती हैं, अब बताओ इससे बढ़कर और कौन–सा मर्तबा होगा जिस पर फ़ाइज़ होने वाले के लिये आसमान और ज़मीन की तमाम चीज़ें दुआ़यें व इस्तिग़फ़ार करती हैं उनके लिये फ़रिश्ते भी दुआ़ करते हैं और आ़लिम की मौत पर ज़मीन व आसमान रोते हैं कि आज तक नेक बन्दे की ख़िदमत का मौक़ा मिला था वह भी ख़त्म हो गया। अब बताओ जिसके लिये ज़मीन और आसमान की तमाम चीज़ें दुआ़ करें और ख़ुद वह आ़लिम दुआ़ और इस्तिग़फ़ार करे तो बताओ क्या अल्लाह उनकी मग़फ़िरत नहीं करेगा? जब उनकी मग़फ़िरत की क़वी उम्मीद है और हमारा तो कुछ पता नहीं फिर हमको क्या हक़ बनता है कि अल्लाह के मुहिब्बीन से बदज़न रहें और उनकी बुराई करें और मदारिस से दूरी इख़्तियार करें, याद रहे मदारिस का काम हमारी जमाअ़त के काम से अफ़ज़ल है क्योंकि हम तो बन्दूक़ की गोलियां तैयार करते हैं और मदारिस वाले बम तैयार करते हैं हमारी हज़ार गोलियां भी उनके एक बम का मुक़ाबला नहीं कर सकती है क्योंकि हदीस में है कि एक आ़लिम को गुमराह करना शैतान पर हज़ार आ़बिदों को गुमराह करने से भी ज़्यादा दुश्वार है क्योंकि आ़लिम अगर कोई काम ख़िलाफ़े शरीअ़त

कर भी लेता है तो उसके पास माफ़ कराने के बहुत से असबाब मौजूद हैं इसलिये अपना हाल देखो और खुद की बुराई को निकालने की कोशिश करो अच्छाई को दाख़िल करो। उलमा से मुहब्बत रखो क्योंकि यह हज़रात वारिसीने अंबिया हैं अगर हमको हमारे पैसों पर गुरूर है तो हमारे पैसे की अल्लाह के पास कोई क़द्र नहीं क्योंकि माल ही इन्दल्लाह मेहबूब होता तो मुहम्मद स० को हासिल होता यह तो काफ़िरों के लिये है क्योंकि उनका जन्नत में कोई हक़ नहीं। यही माल व दौलत देकर अल्लाह उनका काम तमाम करना चाहता है यह है हमारे माल की क़द्र अल्लाह के नज़दीक और रही वह दौलत जो उलमा को हासिल है उसकी अल्लाह के पास बेहद इज़्ज़त है और वह हक़ीक़ी कामयाबी है इसलिये खुद के माल पर गुरूर न हो और उलमा के इल्म की क़द्रो वक़अत हो इन्शाल्लाह खुदा मन्ज़िल को आसान कर देगा।

एक आ़लिम की मौत पूरे ख़ानदान के मर जाने से भारी है

(٣٩٥) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لموتُ قبيلة ايسر من موت عالم. (بخاری ومسلم، احیاء العلوم اول)

हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया एक आ़लिम की मौत के मुक़ाबले में एक क़बीले का मर जाना ज़्यादा आसान है।

क्योंकि एक ख़ानदान जो बे–इल्म हो अगर मर जाता भी है तो उससे लोगों का नुक़सान तो ज़रूर होगा मगर एक वह आलिम मर जाता है जिससे लोग अपने मसाइल व मामलात को दुरुस्त करते थे और आख़िरत बनाते थे। अब अगर वह आख़िरत के मामलात में मदद करने वाला आ़लिम मर जाये तो बताओ

कितने लोग उसके फ़ैज़ से मेहरूम हो जायेंगे इसी वजह से हुज़ूरे अकरम स० ने आ़लिम की मौत को क़बीले की मौत से भारी फ़रमाया है और बअ़ज़ जगह क़बीले की जगह यह है कि एक आ़लिम की मौत पूरे आ़लम की मौत है क्योंकि इस आ़लिम की वजह से बहुत सी आफ़ात मुअ़ल्लक़ हो जाती थीं अब वह मर जाता है तो वह आफ़ात आ़लम पर वाक़ेअ़ होती हैं इससे बढ़कर और क्या नुक़सान हो सकता है उसकी मौत से कि उसके सीने का इल्म उसके साथ क़ब्र में दफ़न हो जाता है और इल्म ही एक ऐसी चीज़ है जो अल्लाह से क़रीब करती है वह साहबे इल्म ही चले जायें तो ज़ाहिर बात है कि यह बहुत बड़ा हादसा है, इस नुक़सान के पेशे नज़र बात वाज़ेह हो जाती है और यह कहना मिसाल के तौर पर और आ़लिम की अ़ज़मत ज़ाहिर करने के लिये है न कि हक़ीक़त में आ़लिम के मरने से पूरा आ़लम ही मर जाता है बल्कि बड़े नुक़सान और टोटे की तरफ़ इशारा करना मक़सूद है।

आ़लिम जिस सियाही से लिखता है उसकी फ़ज़ीलत

(۳۹۹) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يوزن يوم القيامة مداد العلماء بدم الشهداء. (احياء العلوم اول)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया क़ियामत के रोज़ उ़लमा की रोशनाई शहीदों के ख़ून से तौली जायेगी।

मुराद यह है कि वह उ़लमा हज़रात जो दीनी किताबें लिखते हैं इस लिखने में जो स्याही ख़र्च होती है, पैन की, क़लम की, उसका इतना बड़ा दर्जा होगा और यह फ़ज़ीलत होगी उस स्याही की कि उसको शहीदों के ख़ून से तोला जायेगा और जितना सवाब शुहदा के ख़ून का होगा या यह कह लीजिये कि

जितना रेट व क़ीमत अल्लाह के नज़दीक शुहदा हज़रात के ख़ून की होगी इतनी ही क़ीमत आ़लिम की स्याही की होगी अब बताओ जिसके काले नीले पानी का अल्लाह के पास इतना बड़ा दर्जा है तो बताओ ख़ुद उस आ़लिम का अल्लाह के पास क्या दर्जा होगा यह तो मुसलमानों की बद–नसीबी है आज उ़लमा का अकसर तबक़ा ग़रीब है इस वजह से लोगों की नज़रों में उनकी क़द्रो वक़अ़त कम है क्योंकि माल से बहुत सी ज़रूरियात व राहतों को हासिल किया जाता है और गाड़ियां बंगले तैयार किये जाते हैं और उ़लमा उससे ख़ाली होते हैं इस बिना पर भी बअ़ज़ लोग उ़लमा को नीची नज़र से देखते हैं। ख़ैर अल्लाह के नज़दीक उ़लमा के एक एक क़ौल और फ़ेअ़ल की बे–पनाह क़द्रो क़ीमत है।

इल्म की मिसाल फल की सी है

(٣٩٧) قال رسول اللهﷺ صلى الله عليه وسلم الايمانُ عريان لباسُهٗ التقوى وزينته الحياء وثمرته العلم. (احیاء العلوم جلد اول)

हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया ईमान (मसलन एक ऐसी चीज़ है जो) नंगा है उसका लिबास तक़वा है उसकी ज़ीनत हया (शर्म व ग़ैरत) है और उसका फल इल्म है।

आप स० ने नौ–मुस्लिम की मिसाल इस तरह दी है कि नौ–मुस्लिम जब ईमान ले आता है तो वह नंगे आदमी के मानिन्द होता है और जब वह तक़वा इख़्तियार करता है तो गोया उस नौ–मुस्लिम ने लिबास पहन लिया और जब यह नौ–मुस्लिम बुरे अअ़माल से शर्म करके उनको तर्क करता है तो गोया उसने अपने आपको दिलकश बनाने के लिये तज़य्युन इख़्तियार किया और ईमान का तज़य्युन हया है और जब साहबे ईमान इल्मे दीन हासिल करता है तो उसकी मिसाल फल जैसी है यानी यह जो

तमाम उसके लिबास पहनने का और तज़य्युन का फल था वह इल्मे दीन को हासिल करने से हासिल हुआ है।

मालूम हुआ कि आदमी जब ईमान लाता है तो वह एक बे-लिबास शख़्स के मानिन्द होता है और जब वह तक़वा-शिआरी इख़्तियार करता है तो गोया कि उसने अपने ईमान को तक़वे का लिबास पहनाया और जब उसने हया के मक़ामात पर अल्लाह के लिये हया की तो उसने मज़ीद ईमान को ख़ूबसूरत बनाने के लिये तज़य्युन इख़्तियार किया उनका नतीजा और फल इल्मे दीन है कि जब उसने इल्मे दीन को हासिल कर लिया तो गोया कि वह ईमान के दरख़्त को लगाने से जो फल चाह रहा था वह इल्म हासिल करने के बाद हासिल हो जाता है कि इल्म ही जन्नत और दोज़ख़ के दर्मियान इम्तियाज़ पैदा कराता है।

इल्म वालों की किफ़ालत का ज़िम्मेदार अल्लाह तआला हैं

(۳۹۸) قال رسول الله صلی الله علیه وسلم من تَفَقَّهُ فی دین الله عزوجل کفاه الله تعالی ما اهمه ورزقه من حیث لا یحتسب.

(احیاء العلوم جلد اول)

हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया जो शख़्स अल्लाह के दीन की समझ पैदा करे तो अल्लाह उसके मसाइल को हल करेगा और उसे ऐसे ज़रिये से रिज़्क़ अता करेगा कि उसे उसका गुमान भी न होगा।

आलिमे दीन की ख़ास तौर से अल्लाह ने ज़िम्मेदारी ली है वरना तो तमाम मख़लूक़ का अल्लाह ही ज़िम्मेदार है मगर उलमा का अल्लाह के नज़दीक ख़ास मक़ाम है जिसको हुज़ूरे अकरम स० बयान कर रहे हैं और यही वजह है कि आज बड़ी नौकरी

वाले हज़रात दस हज़ार की तनख़्वाह पर काम करते हैं मगर फिर भी ज़बान पर यह बात जारी रहती है कि अल्लाह ने हमको क्या दिया? न मारुती दी, और न गाड़ी दी। मगर उ़लमा हज़रात को देखें दो हज़ार और बहुत हो साढ़े तीन हज़ार के अन्दर अपना और अपने घर वालों का दवा वग़ैरह का गुज़ारा कर लेते हैं और खुश व खुर्रम रहते हैं आज मेरे तालिबे इल्म के दौर में मुझको ख़ुद डेढ़ हज़ार रुपये महीना साईड ख़र्च के लिये काफ़ी नहीं हैं कभी दोस्त अहबाब आ गये कभी कहीं जाना होता है उसका ख़र्च और फ़ौन का ख़र्च साबुन तेल का ख़र्च खुद के चाये नाश्ते का ख़र्च उसमें डेढ़ दो हज़ार रुपये ख़त्म हो जाते हैं मगर जब बन्दा आ़लिम बनकर अल्लाह की दीनी ख़िदमत को अन्जाम देता है तो अल्लाह थोड़े पैसों में ही बरकत वाला मामला करता है और बड़े मालदारों को जो बीमारियां आती हैं उनसे मेहफ़ूज़ रखता है इल्ला माशाल्लाह कुछ होते हैं जो बड़ी बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। यही मतलब इस हदीस का है और आ़लिम ही नहीं बल्कि कोई दूसरा शख़्स भी ख़िदमते दीन के लिये ख़ुद को लगाता है तो अल्लाह तआ़ला उसके सर पर भी शफ़क़त का हाथ रखता है कि मेरा बन्दा मेरे लिये मेरे दीन के काम में मसरूफ़ है मगर परेशानी तो ज़रूर आयेगी क्योंकि यह परेशानी जन्नत के लिये होती है उसको बरदाश्त करो और जन्नत कमाओ। अंबिया पर भी परेशानी आई, वलियों पर परेशानी आई, क्योंकि यह अजनबी जगह और यह इम्तिहान की जगह और अजनबी और इम्तिहान की जगह में परेशानी आती ही है तो फिर दीन के काम करने वालों को परेशानी आये तो क्या नई बात है ज़ाहिर बात है हमारा ठिकाना जन्नत है और दुनिया हमारे लिये एक नई और अजनबी जगह है और अजनबी जगह में दुश्वारी आती ही है बस

अल्लाह से ख़ैर व आफ़ियत को तलब करो और दीन की ख़िदमत पर लगे रहो तो इस हदीस के मिस्दाक़ बन जाओगे।

अल्लाह तआ़ला इल्म वालों को पसन्द करता है

(۳۹۹) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اوحى الله عزوجل الى ابراهيم يا ابراهيم انّى عليمٌ احب كل عليم. (احياء العلوم اول)

हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इबराहीम अ़लै० पर वही नाज़िल फ़रमाई, ऐ इब्राहीम मैं अ़लीम हूं (इल्म वाला हूं) और इल्म वालों को मेहबूब (पसन्दीदा) रखता हूं।

अल्लाह की सिफ़त है अ़लीम, बहुत इल्म वाला और अल्लाह इल्म वालों को ही पसन्द करता है क्योंकि इल्म वालों के पास अल्लाह की सिफ़ात में से एक मेहबूब सिफ़त यानी इल्म का एक हिस्सा है इस वजह से अहले इल्म अल्लाह को मेहबूब हैं जब अल्लाह को उ़लमा से मुहब्बत है तो हमको क्या हक़ है कि हम उ़लमा–ए–हक़ से अलग रहें और उनसे बदज़न हो जायें ऐसा हरगिज़ नहीं करना, वरना अल्लाह तआ़ला नाराज़ हो जायेगा। अगर उ़लमा से ग़लत फ़ेअ़ल हो जाये तो ग़लत काम से नफ़रत होनी चाहिये न कि करने वाले से क्योंकि यह अल्लाह का बन्दा है और अल्लाह को हर बन्दे से सत्तर सत्तर माओं से ज़्यादा मुहब्बत है और आ़लिम हो तो मुहब्बत का पूछना ही क्या और जब हम अल्लाह के बन्दे को किसी काम की वजह से हक़ीर जानेंगे तो अल्लाह तआ़ला ग़ुस्सा होकर हक़ीर जानने वाले को ही इस काम में डाल देता है इसलिये हम आम तौर पर तमाम अल्लाह के बन्दों और ख़ास तौर से उ़लमा हज़रात को हक़ीर न जानें उनसे दूरी इख़्तियार न करें बल्कि दीनी फ़ायदे हासिल करते रहें और जो

काम ग़लत हो उस काम को गलत जानना ज़रूरी है उसके करने वाले को हक़ीर जानना दुरुसत नहीं इससे अल्लाह तआला नाराज़ होता है। खैर उ़लमा से अल्लाह को ख़ास तअ़ल्लुक़ और मुहब्बत है।

आ़लिम और जाहिल का फ़र्क़

(٣٠٠) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم بين العالم والعابد مائة درجة بين كل درجتين حضر الجواد المضمر سبعين سنةً. (احیاء العلوم)

हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया आ़लिम और आ़बिद के दर्मियान सौ दर्जे का फ़र्क़ है और दो दर्जों के दर्मियान इतनी मसाफ़त है जितनी एक तेज़ रफ़्तार घोड़ा सत्तर बरस में तैय करे।

बताओ जब अल्लाह के रसूल साफ़ तौर पर फ़रमा रहे हैं कि उ़लमा जुहला से सौ दर्जा बुलन्द हैं अल्लाह के नज़दीक, जब उ़लमा का दर्जा हमसे बढ़ा हुआ है तो क्या हक़दार का हक़ अदा न करें अगर एक आ़लिम हमारी तालीम या गश्त में शरीक न हो तो क्या हम उसको गुमराह और बे अ़मल आ़लिम कहेंगे? हरगिज़ नहीं यह बात और है कि आ़लिम को तालीम और गश्त में और दीगर अअ़माल में ज़रूर शरीक होना चाहिये ताकि उसके इल्म से लोगों को फ़ाइदा पहुंचे दोनों फ़रीक़ को इत्तिफ़ाक़ की राह इख़्तियार करनी ज़रूरी है अपनी अपनी न चलायें बल्कि अल्लाह तआ़ला की चलायें। और अल्लाह की चाहत यह है कि उ़लमा की इज़्ज़त की जाये और अ़वाम को उ़लूमे दीन से सैराब किया जाये।

उ़लमा को अल्लाह किस तरह माफ़ करेगा

(٣٠١) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يَبْعَثُ سُبْحَانَهُ وتعالى العباد يوم القيامة ثم يبعث العلماء ثم يقول يا معشر العلماء إنّي لم اضع

علمی فیکم الا لعلمی بکم ولم اضع علمی فیکم لاعذبکم اذھبوا فقد غفرت لکم. (احیاء العلوم، اول)

हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन बन्दों को उठायेगा फिर उ़लमा को उठाकर कहेगा ऐ गिरोहे उ़लमा! मैंने तुम्हारे अन्दर अपना इल्म रखा था तो तुमको जानकर रखा था मैंने तुम्हारे अन्दर इसलिये अपना इल्म नहीं रखा था कि तुम्हें अ़ज़ाब दूं जाओ मैंने तुम्हें बख़्श दिया। (अहयाउलउ़लूम भाग 1)

अब बताओ क्या हम ज़्यादा जानते हैं या अल्लाह? कि उसके दीन के लिये कौन बेहतर होगा और मेहबूब चीज़ मेहबूब को ही दी जाती है जब अल्लाह तआ़ला खुद कह रहा है कि मैंने तुमको जानकर पसन्द करके अपना इल्म दिया गोया हम तमाम में से अल्लाह ने उ़लमा के तबक़े को ख़ास क़रीब और मेहबूब बनाने के लिये इख़्तियार किया अब हमको क्या हक़ बनता है कि हम उ़लमा की ख़ामियां तलाश करके उनकी हिक़ारत दिल में पैदा करें और मज़ीद अल्लाह तआ़ला उ़लमा हज़रात से कहेगा इस इल्म की वजह से मैंने तुम्हारी माफ़ी कर दी, मैंने तो तुमको दुनिया में ही पसन्द किया था अपनी रहमत का मज़हर बनाने के लिये अब तुम अपनी असल जगह आ गये हो, जाओ और आराम व राहत हासिल करो देखो यह हदीस साफ़ उ़लमा को जन्नत की बशारत दे रही है।

अब हमको क्या हक़ है कि उ़लमा को ग़लत नज़र से देखें या ग़लत अलफ़ाज़ उनकी शान में कहें, अल्लाह के लिये उ़लमा की तहक़ीर करने से बचो। हज़रत अ़ली रज़ि० ने कुमैल रह० से इरशाद फ़रमाया ऐ कुमैल इल्म माल से बेहतर है इल्म तेरी हिफ़ाज़त करता है और तू माल की। इल्म हाकिम है और माल वह है जिस पर हुकूमत की जाती है माल ख़र्च करने से घटता है

और इल्म ख़र्च करने से ज़्यादा होता है एक मौके पर हज़रत अ़ली रज़ि० ने फ़रमाया दिन भर रोज़ा रखने वाले और रात भर जागकर इबादत करने वाले मुजाहिद से आ़लिम अफ़ज़ल है आ़लिम जब वफ़ात पाता है तो इस्लाम में ऐसा ख़ला पैदा हो जाता है जिसे उसका जांनशीन ही पुर कर सकता है इल्म की फ़ज़ीलत में हज़रत अ़ली रज़ि० के यह तीन अशआ़र भी मशहूर है तर्जुमा देखिये।

फ़ख़्र का हक़ सिर्फ़ उ़लमा को हासिल है वह ख़ुद भी हिदायत पर हैं और तालिबाने हिदायत के रहनुमा भी हैं, इन्सान की क़द्र अच्छाई से है यूं जाहिल अहले इल्म के दुश्मन होते ऐसे इल्म हासिल कर जिससे तू हमेशा हमेशा ज़िन्दा रह सके यानी तेरी दीनी ख़िदमत का चर्चा, लोग मर जायेंगे सिर्फ़ अहले इल्म ज़िन्दा रहेंगे। मुराद उनका नाम।

बादशाहे आ़लमीन का फ़रमान

قال الله تعالى فَسْئَلُوا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَاتَعْلَمُوْنَ ○ (پ١٧)

अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है अहले इल्म (मुराद उ़लमा) से पूछो अगर न जानते हो।

हज़रात! अल्लाह ने ख़ुद पूरी उम्मते मुहम्मदिया को यह नसीहत की कि वह अपनी ला–इल्मी का इज़हार उ़लमा से करें और जो बातें और अहकाम पता न हों उनको उन उ़लमा से हासिल करें, इससे यह बात और वाज़ेह हो गई कि अल्लाह तआ़ला ने लोगों को उ़लमा से अपनी जिहालत दूर करने का हुक्म दिया ख़ुफ़्या तौर पर, इसमें यह बात भी मालूम हो गई कि जो कोई आदमी किसी स्कूल या कॉलेज का या मदरसे का मास्टर यानी उस्ताज़ हो तो तमाम कॉलेज वालों को और तमाम

मदरसे के तलबा को उस मास्टर या उस्ताज़ की क़द्र करनी लाज़म होती है चाहे उसके पास आपका कोई घण्टा यानी पीरियड हो या न हो आपको उसकी इज़्ज़त व अदब व इकराम करना ज़रूरी होता है और बे-अदबी पर आपका कॉलेज से बाइकाट कर दिया जायेगा, मदरसा हो तो उसका मदरसे से इख़राज हो जायेगा क्योंकि उसने उस उस्ताज़ या मास्टर की ना-फ़रमानी या बे-अदबी की थी, इसी तरह अल्लाह ने उ़लमा को उम्मत का मास्टर और उस्ताज़ बनाकर भेजा है अगरचे छोटी क्लास का उस्ताज़ हो या बड़ी क्लास का उस्ताज़ यानी छोटा आ़लिम हो या बड़ा आ़लिम हो तमाम की इज़्ज़त करना ज़रूरी है क्योंकि तमाम उ़लमा को अल्लाह ने अपने कॉलेज में मास्टर यानी उस्ताज़ मुक़र्रर किया है अगर उनमें से किसी भी छोटे या बड़े आ़लिम की बे-इज़्ज़ती या बे-अदबी की जायेगी तो अल्लाह भी अपनी रहमत से उसका बाइकाट यानी इख़राज कर देगा क्योंकि उसने अल्लाह के कॉलेज व मदरसे के ख़ादिमों की बे-अदबी की है अगर मास्टर या उस्ताज़ ख़ुद कोई ख़िलाफ़े शरीअ़त काम करे तो उसको बे-इज़्ज़त करना न दुनिया के उसूल में दुरुस्त है और न अल्लाह के पास बे-इज़्ज़ती करना दुरुस्त बल्कि ग़लती हो जाये तो ख़ुद उनको तनहाई में बता दे कि आप हमारे बड़े और ज़िम्मेदार हैं और आपका यह क़ौल यह फ़ेअ़ल दुरुस्त नहीं है जिससे उम्मत पर बड़ा ही ग़लत असर पड़ रहा है। ज़ाहिर बात है कि उ़लमा इन्सान हैं और इन्सान से ही ग़लती होती है कोई अगर उन उ़लमा को फ़रिश्ते ही तसव्वुर करे और यह समझे कि उनसे कोई ग़लती होनी ही नहीं चाहिये यह ग़लत फ़हमी है क्योंकि उ़लमा भी इन्सान हैं और यह भी याद रखिये कि आ़म आदमियों के साथ एक शैतान होता है और उ़लमा और तलबा को

गुमराह करने के लिये ग्यारह ग्यारह बड़े शैतान होते हैं जो दिन रात गुमराह करने की तरकीब करते रहते हैं। अब बताओ आलिम कब तक उनके चुंगल से बचते रहेंगे कभी न कभी गिरिफ़्त में ज़रूर आयेंगे क्योंकि यह इन्सान होने का तक़ाज़ा है इसलिये उ़लमा को बुरा भला न कहो इनकी बे-अदबी और बे-इ़ज़्ज़ती न करो क्योंकि इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने बता दिया है कि उ़लमा मेरे मदरसे के या कॉलेज के मास्टर यानी टीचर्स हैं और दुनिया और अल्लाह का उसूल इस मआ़मले में यह है कि मास्टर की बे-अदबी करने पर तालिबे इल्म को दर्सगाह से बाहर किया जाता है।

तालिबे दीन जिस तरह का भी हो फ़रिश्ते उसके साथ यह बरताव करते हैं

(۳۰۲) حضرت کثیرؓ کی حدیث کا ترجمہ قال رسول الله صلی الله علیه وسلم ان الملائکة لَتَضَعُ اَجْنِحَتَهَا لطالب العلم رضا بما يَصْنَعُ. (احیاءالعلوم اول، ترمذی، بخاری، مشکوٰۃ)

हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया फ़रिश्ते तालिबे इल्म के तलबे इल्म से ख़ुश होकर अपने परों को बिछाते हैं।

अब बताओ दोस्तो! जिनकी इत्तिबाअ़ की ख़ुदा तर्ग़ीब दे जिनकी इत्तिबाअ़ की मुहम्मद स० हदीस बयान करें जिनके लिये फ़रिश्ते अपने परों को बरकत हासिल करने के लिये क़दमों के नीचे बिछा दें ज़मीन और आसमान और तमाम ज़मीनी और समुन्द्री जानवर जिनके लिये दुआ़ करें बताओ अगर हम उनको बुरा कहें और उनकी बेइ़ज़्ज़ती करें फ़क़त इस वजह से कि उनके पास माल नहीं है यह हमारी बदकिस्मती और गुमराही है जो हम कलाम और गुफ़्तगू में उ़ल्मा की बुराई करते आ रहे हैं।

भाई ग़लतियों से कौन ख़ाली है जो गलतियों से ख़ाली हो वह इन्सान ही नहीं है क्योंकि इन्सान होने के लिये दो चीज़ें शर्त हैं यह नुक्ते की बात है, अच्छी तरह याद रखना, इन्सान होने के लिये दो चीज़ें ज़रूरी हैं एक तो ग़लतियों का होना और दूसरा तौबा व इस्तिग़फ़ार का करना अगर इन दोनों में से किसी एक सिफ़त से भी ख़ाली हो जाये तो वह इन्सान ही नहीं, वह कैसे? देखो! यह दो सिफ़तें जिनमें से ग़लतियां करना है अगर इन्सान ग़लतियां न करे तो वह इन्सान नहीं रहेगा बल्कि वह फ़रिश्ता बन जायेगा क्योंकि ग़लतियों का न करना यह सिफ़त फ़रिश्तों की है इन्सान की नहीं। और दूसरी सिफ़त है ग़लतियों पर तौबा करना अगर इन्सान अपनी ग़लतियों पर तौबा न करे तो वह अब इन्सान न रहेगा बल्कि वह शैतान बन जायेगा क्योंकि शैतान ग़लतियों से तौबा नहीं करता है इस बहस से साफ़ हो गया कि इन्सान एक ऐसी चीज़ का नाम है जो फ़रिश्तों और शैतानों के दर्मियान की चीज़ है अगर ग़लती न करे तो फ़रिश्ते और ग़लतियों पर तौबा न करे तो वह शैतान और ग़लतियां भी करे और अल्लाह के पास रो रो कर तौबा भी करे तो वह इन्सान है।

इल्म सीखने वाले की अज़मत

(۳۰۳) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لان تغدوا فتعلم بابا من العلم خير من ان تصلى مائة ركعة. (ابن ماجه، احياء العلوم اول)

हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया तू जाकर इल्म का कोई बाब सीखे तो यह सौ रकअ़त नमाज़ पढ़ने से बेहतर है।

कुरआन और हदीस ने उ़लमा के और तलबा के एक एक क़ौल व फ़ेअ़ल की वह उजरत मुतअ़य्यन की है जो इन्सानी अ़क़्ल से बालातर है मगर वह फ़ज़ाइल हमारे और तुम्हारे बयान

कर्दा नही है बल्कि सादिके अल्हजम मुहम्मद स० की मुबारक ज़बान से यह फजाइल है इसलिये उन पर हक होने का यकीन रखना कौले रसूल होने की वजह से हर एक पर लाजिम है और साथ ही साथ उनका अदब व इकराम करना भी ज़रूरी है।

उलमा की मजालिस की फ़ज़ीलत

(٣٠٣) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم حضور مجلس عالم افضل من صلوة الف ركعة وعيادة الف مريض وشهود الف جنازة فقيل يا رسول الله ومن قراة القرآن قال وهل ينفع القرآن الا بالعلم.

(احیاء العلوم جلد اول)

हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया एक आलिम की मजलिस में हाज़िरी हज़ार रक्अत नमाज़ पढ़ने से अफ़ज़ल है और हज़ार मरीज़ों की अयादत करने से अफ़ज़ल है और हज़ार जनाज़ों में शरीक होने से बेहतर है सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह क्या कुरआने पाक की तिलावत से भी अफ़ज़ल है आप स० ने फ़रमाया क्या कुरआन बग़ैर इल्म के मुफ़ीद है।

हज़रात फ़ैसला कीजिये कि आलिम की मजलिस की अल्लाह के नज़दीक यह फ़ज़ीलत है कि सिर्फ़ आलिम की मजलिस में शरीक होने वाले को अल्लाह हज़ार रक्अत से भी ज़्यादा अज्र और सवाब का मुस्तहिक़ कर देता है और एक हदीस में है कि जब बन्दा किसी मुसलमान भाई की अयादत करने के लिये घर से निकलता है तो उसके लिये सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मग़फ़िरत की दुआ करते रहते हैं जब तक वह अयादते मरीज़ से न लौट जाये, हज़रात एक शख़्स जब अयादत करता है तो उसके लिये इस क़द्र सवाब लिखा जाता है मगर देखिये आलिम की मजलिस को हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया, आलिम की मजलिस में सिर्फ़

शरीक हो यह हज़ार मरीज़ों की अयादत से अफ़ज़ल है बताओ जिसकी मजलिस इस क़द्र बा-बरकत हो कि उसके शरीक होने वालों को बेशुमार अज्र व इनआमात से नवाज़ा जाता है तो सोचो उस शख़्स का क्या मक़ाम होगा जिसकी वजह से यह मजलिस इतनी बा-बरकत हुई और वह लोग कौन हैं जिनकी हुज़ूरे अकरम स० ने इस क़द्र बे-पनाह अफ़ज़लियत इरशाद फ़रमाई वह हज़राते उलमा जिनकी सिर्फ़ मजलिस का यह मक़ाम है उनकी मजलिस में शरीक होने वाला मुसल्ली और मिज़ाज पुर्सी करने वाले से बढ़ जाता है इसलिये उलमा की बे-वक़अती करने से हमको परहेज़ करना चाहिये क्योंकि उनका अदब करने का हुक्म हुज़ूरे अकरम स० ने कई तरह से फ़रमाया।

उलमा अंबिया के वारिस हैं

(٣٠٥) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم العلماء ورثة الانبياء.
(ابوداؤد، ترمذی، مشکوۃ شریف)

हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया आलिम हज़राते अंबिया के वारिस हैं।

वारिस कहते हैं असल के इन्तिक़ाल के बाद उसका नाइब उस असल मक़ाम पर आ जाये और उसकी जायदाद का मालिक बन जाये, मां बाप का इन्तिक़ाल होता है तो औलाद उन मां बाप के माल व मकान की मालिक हो जाती है क्योंकि वालिदैन उसके ही मालिक थे मगर अंबिया जब दुनिया से जाते हैं तो अपना वारिस उलमा को छोड़ जाते हैं गोया कि उलमा हज़रात अंबिया के लिये औलाद की तरह हैं और अंबिया की विरासत माल और मकान नहीं है बल्कि आप हज़रात की विरासत उलूमे शरीअत होते है उलमा उसके वारिस हैं अंबिया की जानिब से, इसलिये

उन उ़लमा की जो हामिले विरासते अंबिया हैं उनकी इज़्ज़त करना हम पर ज़रूरी है।

जो तालिबे इल्मी में इन्तिक़ाल कर जाये उसका दर्जा इन्दल्लाह

(٣٠٢) عن الحسن قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من جاءه الموت وهو يطلب العلم ليُحيىَ بهِ الاسلام فبينه وبين الانبياء في الجنة درجة واحدة. (دارمی، احیاء العلوم، مشکوٰۃ)

हुज़ूरे अकरम स० ने फ़रमाया जिस शख़्स को इस हालत में मौत आ जाये कि वह इस्लाम को ज़िन्दा रखने के लिये इल्म हासिल कर रहा हो तो जन्नत में उसके और अंबिया के दर्मियान सिर्फ़ एक दर्जे का फ़र्क़ होगा।

हज़रात ज़रा ग़ौर कीजिये कि अल्लाह और उसके रसूल के नज़दीक तालिबे इल्म का और उ़लमा का क्या मक़ाम है कि अगर तालिबे इल्मी की दौर में मौत आजाये और उसकी नियत यह हो कि मैं इन उ़लूमे दीन के ज़रिये दीन की ख़िदमत करूंगा उसको अल्लाह वह मक़ाम अ़ता करेगा जिसके आगे उम्मतियों का कोई मक़ाम न होगा और इतना बड़ा मक़ाम अ़ता करेगा कि उसके आगे कोई अ़मले ख़ैर करने वाला न होगा सिवाये अंबिया के, उसको ही हुज़ूर स० ने इन अलफ़ाज़ में बयान फ़रमाया है कि जिस शख़्स की इस हालत में मौत आजाये कि वह इस्लाम को ज़िन्दा रखने के लिये इल्म हासिल कर रहा हो तो जन्नत में उसके और अंबिया के दर्मियान सिर्फ़ एक दर्जे का फ़र्क़ होगा, मुराद है नम्बर एक पर अंबिया अ़लै० और नम्बर दो पर यही ख़ादिमे दीन यानी उ़लमा हैं, और इस फ़ज़ीलत में वह हज़रात भी हैं जो दीन का इल्म हासिल करने के लिये जमाअ़त में जाते हैं

अगर किसी जमाअ़त में निकले हुये का राहे जमाअ़त ही में इन्तिकाल हो जाये तो वह भी यह दर्जा हासिल कर लेगा क्योंकि हदीस में हुसूले इल्म को और उसके माख़ज़ को मुतलक़ रखा गया है चाहे जमाअ़त की राह हो या ख़ानकाह की राह हो या मदरसे की राह हो, इन तीनों राहों वालों का मन्शा हुसूले दीन और हिफ़ाज़ते दीन होता है इसलिये यह हदीस तीनों को शामिल हो गई और यह भी नुक्ता याद रखिये कि अगर कोई शख़्स तालिबे इल्मी में मर जाये मगर वह हुज़ूर स० को आ़लिमुल ग़ैब मानता हो या हज़रात औलिया को मुश्किल कुशा जानता हो क़ब्र पर सज्दे को जाइज़ जानता हो और तफ़सीर बिर्राय को जाइज़ जानता हो औलिया अल्लाह पर और सहाबा रज़ि० और अंबिया अ़लै० पर ऐतिराज़ और तनक़ीद व जिरह को जाइज़ जानता हो या हज़रत अ़ली रज़ि० को नबी जानता हो या यह अ़क़ीदा रखता हो कि नुबुव्वत हज़रत अ़ली रज़ि० को देने का हुक्म हुआ था मगर ग़लती से हज़रत मुहम्मद स० को मिल गई। और जो सहाबा रज़ि० को काफ़िर कहे मुहर्रम मनाने को सवाब और शिआ़रे इस्लाम जाने या यह अ़क़ीदा रखे कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादयानी अ़य्याश बैतुलख़ला का रफ़ीक़े ख़ास नबी है या यह अ़क़ीदा रखे कि उस अ़य्याश के अ़क़ीदे दुरुसत हैं या यह अ़क़ीदा रखे कि हदीस की कोई वक़्अ़त व ज़रूरत नहीं है सिर्फ़ कुरआन काफ़ी है वग़ैरा अ़क़ीदों में से किसी एक का भी शिकार हो गया तो वह अपने बातिल अ़क़ीदों की वजह से इस बशारत से मेहरूम रहेगा यह हक़ीक़त है और यह नसीहत है राहे हक़ के तालिब के लिये कि वह अ़क़ाइद दुरुस्त करले, मैं किसी को काफ़िर कहने की जसारत नहीं करता बल्कि साफ़ और पाक नज़र से कुरआन व हदीस को पढ़े जैसे मुफ़्ती ख़लील बरकाती साहब ने बरेलवियत

को अलविदाअ़ कह कर देवबन्दियत को हक़ होने की वजह से इख़्तियार किया है।

उ़लमा का जन्नत में जाते हुए अल्लाह इस तरह इकराम करेगा

(۳۰۸) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا كان يوم القيامة يقول الله سبحانه للعابدين والمجاهدين ادخلوا الجنة فيقول العلماء بفضل علمنا تعبدوا وجاهدوا فيقول الله عزوجل انتم عندى كبعض ملائكتى اشفعوا تشفعوا فيشفعون ثم يدخلون الجنة. (احیاء العلوم اول)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला आ़बिदीन और मुजाहिदीन से कहेंगे, जन्नत में दाख़िल हो जाओ। उ़लमा अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ अल्लाह! उन्होंने हमारे इल्म के तुफ़ैल इबादत की और जिहाद किया है। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे कि तुम मेरे नज़दीक मलाइका की तरह हो शफ़ाअ़त करो तुम्हारी सिफ़ारिश क़ुबूल की जायेगी फिर वह सिफ़ारिश करेंगे और जन्नत में चले जायेंगे।

हज़रात! हदीस से साफ़ वाज़ेह हुआ कि आ़बिदीन से और मुजाहिदीन फ़ीसबीलिल्लाह से बड़ा दर्जा उ़लमा का है जब तो अल्लाह तआ़ला इबादत करने वालों को तनहा ही जन्नत में दाख़िल करेगा लेकिन जब आ़लिम की बारी आई तो अल्लाह तआ़ला उ़लमा के इकराम के तहत सिर्फ़ आ़लिम को तनहा ही जन्नत में दाख़िल नहीं करेंगे बल्कि सेकड़ों के लिये सिफ़ारिश की इजाज़त दी जायेगी और आ़लिम बादशाही शान व इ़ज़्ज़त के साथ जन्नत में दाख़िल होंगे क्योंकि इल्म एक नूर है बग़ैर इल्म के इबादत नाक़िस है और बग़ैर इल्म के अख़लाक़ियत नाक़िस, बग़ैर इल्म के ख़ैरात नाक़िस, बग़ैर इल्म के तबलीग़ नाक़िस, बग़ैर

इल्म के जिहाद नाक़िस, बग़ैर इल्म के दीन नाक़िस, क्योंकि नूर सिर्फ़ इल्म ही है और जब नूर न होगा तो गाड़ी तो ज़रूर सफ़र तैय करेगी मगर जब रात आयेगी तो चल न पायेगी अगर बग़ैर नूर के चलने की कोशिश भी करेगी तो उसकी गाड़ी किसी घाटी में गिर जायेगी या किसी दीवार या दरख़्त या इमारत से टकरा कर ख़ुद भी तहस नहस हो जायेगी और जिससे टकरायेगी उसको भी मअ़यूब बना देगी लेकिन अगर नूर हो तो गाड़ी न किसी दरख़्त से, न किसी इमारत से टकरायेगी और न ख़ुद का नुक़सान करेगी, और न दुसरे का नुक़सान होने देगी लेकिन आ़लिम के लिये भी यह बात काफ़ी ग़ौर तलब है कि गाड़ी सिर्फ़ नूर और लाइट से ही नहीं चलती बल्कि नूर के साथ गाड़ी को चक्के की ज़रूरत है अगर किसी चीज़ की भी ज़रूरी चीज़ों में से कमी होगी तो गाड़ी न चल पायेगी अगरचे गाड़ी में लाइट हो और गाड़ी का चक्का न हो या पैट्रोल हो या इसी तरह इसटेरिंग न हो अगर सिर्फ़ नूर नूर करते रहोगे तो तब भी गाड़ी ना चल पायेगी बल्कि गाड़ी को तमाम ज़रूरी चीज़ों की ज़रूरत है और नूर की भी ज़रूरत। इसलिये उ़लमा को अपनी अपनी गाड़ी की चेकिंग करानी ज़रूरी है शैतान से बे–ख़ौफ़ न हो जाना वह जाहिलों और अ़वाम के लिये अलग हथियार इस्तेमाल करता है और आ़लिमों के लिये भारी और ताक़तवर हथियार जैसे बम, मशीन–गन वग़ैरा इस्तेमाल करता है।

अ़वाम का अज्र कम है तो उनका नुक़सान भी हमसे कम है जिस तरह उ़लमा का इकराम अल्लाह के पास अ़वाम से हज़ार गुना ज़्यादा है इसी तरह अ़ज़ाब भी बहुत सख़्त है इसलिये अ़वाम को आ़लिमों के नक़ाइस बयान करने से बचना चाहिये और आ़लिमों को उम्मत से इत्तिफ़ाक़ी पेहलू इख़्तियार करके उम्मत को

राहे रास्त पर लाने की कोशिश करनी चाहिये और उलमा की अहमियत बयान करने में अ़वाम का फ़ाइदा है अगर अ़वाम उलमा की इज़्ज़त न करेंगे तो उम्मते मुहम्मदी स० भी उम्मते मूसा और उम्मते ईसा की तरह गुमराह हो जायेगी और उलमा की अ़ज़मत को समझाने के लिये मुख़ालफ़त में तक़ारीर करने से काम न चलेगा बल्कि अपने उलमा की अहमियत बताने के लिये ख़ुद उलमा को इज़्ज़त देनी होगी। इसमें अ़वाम का भी फ़ाइदा है और जमाअ़ते उलमा का भी, क्योंकि यह तबलीग़ वाला काम उलमा का ही काम है हमारे अकाबिर ने ही इसकी बुनियाद रखी है अब इसकी हिफ़ाज़त भी मदारिस की तरह उलमा के ज़िम्मे है यह कहने से काम नहीं चलेगा कि उलमा ही तो इस काम को अन्जाम दे रहे हैं। अब हमारी क्या ज़रूरत है ऐसा नहीं, एक आदमी मरता है और अपने पीछे दस लाख रुपये छोड़कर मरता है और पांच औलाद क्या उन पांचों से कोई यह कहता है कि भाई चलो छोड़ दो दस लाख रुपये, मेरा एक भाई इस्तेमाल कर रहा है मेरी क्या ज़रूरत है ऐसा कोई नहीं कहता है बल्कि हर तरह से चाहे समझाकर या मार डांटकर हो वह अपनी विरासत हासिल करता है।

चाहे मारना या मार खाना पड़े मुझको बताओ क्या यह तबलीग़ी काम हम तमाम की मिल्कियत नहीं है तो फिर यह कह कर क्यों छोड़ते हो कि हमारे उलमा हज़रात ही काम कर रहे हैं हमारी क्या ज़रूरत है बाप की मीरास में तो झगड़ने के लिये राज़ी और ख़िदमते दीन का मामला आये तो ऐतिराज़ात पर ऐतिराज़ात करके ख़ुद भी काम नहीं करते और अपने साथियों की ख़िदमते दीन को भी ख़राब करते हो मेरी बात का बुरा न मानना यह उम्मते मुहम्मद स० की इसलाह का मामला है और इसमें

अगर उलमा न हों तो यह काम बहुत ही जल्दी बूढा होकर ख़त्म हो जायेगा।

अल्लाह इसकी हिफ़ाज़त करे उलमा को भी थोड़ी बहुत कमी ज़्यादती को बर्दाश्त करना होगा कुछ पाने के लिये (मुराद जन्नत) कुछ खोना होगा, मतलब अपना मर्तबा खिदमते दीन के लिये खुद को कुर्बान करना होगा फिर खुद अल्लाह उलमा की इज़्ज़त का ज़िम्मेदार हैं जब वह क़ियामत में उलमा की इज़्ज़त को कायम रखेगा तो क्या दुनिया में अपने दीन के हामिलीन की इज़्ज़त की निगरानी नहीं करेगा मैं यह नहीं कहता हूं कि हम मदारिस को छोड़कर जमाअ़त में निकल जायें ऐसा नहीं क्योंकि मदारिस का काम भी बहुत ज़रूरी है लेकिन तुम्हारे पास जो छुट्टी का वक़्त होता है उसमें से तीन दिन, दस दिन अपनी विरासत जानकर हिस्सा लेने को अपना हक़ जानो और यह भी न हो सके तो तलबा को तर्ग़ीब दो कि यह काम हमारा है आज इस काम को उलमा की ज़रूरत है।

तुम्हारे पास वक़्त हो तो जमाअ़त में ज़रूर वक़्त लगाना अपने दोस्तों को जमाअ़त में शरीक होने की दावत देना अगर इस तरह उलमा हज़रात बढ़कर काम करें तो दीन को ग़ैर मअ़मूली फ़ायदा होगा।

इल्म सीखकर उसकी तबलीग़ करने की फ़ज़ीलत

(۳۰۸) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم نِعمَ العطيةُ ونِعمَ الهديةُ كلمةُ حكمةٍ تسمعها فتطوى عليها ثم تحملها الى اخٍ لك مسلم تعلمه اياه تعدل عبادة سَنَةٍ. (طبرانی، احیاء العلوم جلد اول)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया बेहतरीन अ़त्या और बेहतरीन हदया वह कलिम–ए–हिकमत है जिसे तू सुने और याद करे और

फिर उसे अपने मुसलमान भाई के पास सिखलाने के लिये ले जाये तो तेरा यह अमल एक बरस की इबादत के बराबर होगा।

इस हदीस से दो बातों की फ़ज़ीलत वाज़ेह हुई एक तो आलिम की वह बात जो दीन के मुताबिक़ हो उसको सुनना और दूसरी बात यह है कि उसकी दूसरे तक तबलीग़ करना, इन दोनों की फ़ज़ीलत हुज़ूर अकरम स० ने बयान फ़रमाई कि यह सुनना और दूसरे भाई को उस दीनी बात से आगाह करना एक साल की इबादत के बराबर है।

दीन के इल्म को सिखलाने वाले की फ़ज़ीलत

(٣٠٩) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم انّ اللهَ سبحانه ملائكته واهل سمٰوٰاته وارضه حتى النملة فى جُحرها وحتى الحوت فى البحر لِيُصَلُّوْنَ على معلم الناس الخير. (ترمذی،احیاء العلوم جلد اول، مشکوٰۃ)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला और फ़रिश्ते, तमाम आसमानों और ज़मीन वाले यहां तक कि चींवटियां अपने सुराख़ों में और मछलियां पानी में उस शख़्स पर रहमत भेझते हैं जो लोगों को ख़ैर की बात सिखलाता है यह हदीस तबलीग़ वाले भी बयान करते हैं अपने बयान में। हदीस यह वाज़ेह कर रही है कि अल्लाह के नज़दीक आ़लिमों की और तालिबे इल्मों की बे-हद इज़्ज़त व तकरीम है उनके लिये चींवटियां सांप वग़ैरा भी रहमत की दुआ़ करते हैं मछलियां भी रहमत की दुआ़ करती हैं बल्कि तमाम ज़मीन की चीज़े आ़लिमों और तालिबे इल्मों के लिये रहमत की दुआ़ करती हैं। आसमान भी रहमत की दुआ़ में मसरूफ़ रहता है यहां तक कि हक़ तआ़ला शानुहू ख़ुद रहमत का नुज़ूल फ़रमाते हैं आ़लिमों और तालिबे इल्मों पर, और इस तालिबे इल्मी की फ़ज़ीलत में जमाअ़ते तबलीग़ वाले भी दाख़िल हैं क्योंकि वह भी

दीन के अहकामात को हासिल करने के लिये निकलते हैं और वह कॉलिज और स्कूल वाले स्टूडेन्ट भी दाख़िल हैं जो कॉलिज और स्कूल तो पढ़ते और पढ़ाते हैं मगर उनका मक़सद इस अंग्रेज़ी सीखने सिखाने से दीन की इशाअ़त हो, दीन की तबलीग़ हो कि अंग्रेज़ी ज़बान वालों में दीन की आवाज़ बुलन्द करने की नियत हो इस नियत की वजह से कॉलेज वाले स्टूडेन्ट और टीचर्स भी दाख़िल हो जायेंगे लेकिन असल इस हदीस के मिसदाक़ वह उ़लूमे दीन के आ़लिम और तालिबे इल्म ही हैं अंग्रेज़ी हिन्दी अपनी ज़ात के ऐतिबार से ग़लत और मुख़ालिफ़े दीन नहीं है बल्कि तमाम ज़बानें अल्लाह की हैं यह बात और है कि किसी ज़बान का कोई ज़्यादा गिरवीदा है और कोई कम, लेकिन अपने आप में हर ज़बान ज़ाहिर में पाक है हर ऐब से, बल्कि मैं कहूंगा कि हर ज़बान मुसलमान की है ग़ैर का कुछ नहीं।

तबलीग़, सबसे बेहतरीन अ़मल

(٣١٠) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما افاد المسلم اخاه فائدة افضل من حديث حسن بلغه فبلغه. (احياء العلوم جلد اول)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया मुसलमान अपने भाई को इस बेहतरीन बात से बढ़कर कोई फ़ाइदा नहीं पहूंचा सकता जो हदीस इस तक पहुंची हो वह उसे दूसरे तक पहुंचा दे।

इस हदीस में हुज़ूर अकरम स० ने दीन व इस्लाम की इशाअ़त व तबलीग़ की तरफ़ इशारा किया है कि अपने भाई के हक़ में इससे बेहतर और कोई बात नहीं है कि वह अपने तक दीनी बात पहुंची हुई दूसरों तक पहुंचा दे और उसका ही हुक्म और उसकी तर्ग़ीब तबलीग़ में दी जाती है कि दीन की बातों को दूसरे मुसलमानों तक पहुंचा दो और इस हदीस से मालूम हुआ

कि तबलीग़े दीन मुसलमानों में भी हो सकती है जैसे कि हुज़ूर अकरम स० ने मुसलमान भाई कहकर बता दिया कि तबलीग़े दीन की दो क़िस्में हैं :

एक तबलीग़ मअ़ल्कुफ़्फ़ार यानी काफ़िरों में तबलीग़े दीन करना और दूसरी क़िस्म इस हदीस में बयान की गई है तबलीग़ मअ़ल्मुस्लिम यानी मुसलमानों में ही तबलीग़ करना यह बात वाज़ेह हो गई कि तबलीग़ मुसलमानों में भी की जाती है ऐतिराज़ करके उम्मत को इख़्तिलाफ़ में डालना आसान काम है मगर उम्मत के इत्तिफ़ाक़ की सोचकर अ़मल–पैरा होना यह बहुत दुशवार है अल्लाह ही तमाम मुसलमानों को राहे मुसतक़ीम नसीब फ़रमायें। और मदारिस भी तबलीग़े दीन का अअ़ला शोअ़बा हैं।

सुन्नत पर अ़मल करने वालों के लिये बशारत

(٣١١) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم على خلفائى رحمة الله قيل ومن خلفاءك قال الذين يحيون سنتى ويعلمونها عباد الله.

(احیاء العلوم جلد اول، ابن ماجہ)

हुज़रे अकरम स० ने फ़रमाया मेरे ख़लीफ़ाओं पर अल्लाह तआ़ला की रहमत हो, अ़र्ज़ किया गया या रसूलुल्लाह! आपके ख़लीफ़ा कौन हैं फ़रमाया वह लोग जो मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करते हैं और उसे अल्लाह के बन्दों को सिखलाते हैं।

हज़रात हुज़ूर अकरम स० ने अपनी सुन्नत पर अ़मल करने वाले को अपना ख़लीफ़ा यानी क़रीबी बताया और उनके लिये रहमत की दुआ़ की, वह किस क़द्र बदक़िस्मत हैं जो सुन्नत से दूर दूर भागते हैं और सुन्नत ही तो है यह कह कर राहे फ़रार इख़्तियार करते हैं हालांकि उम्मत के तमाम उ़लमा का यह मुत्तफ़िक़ा फ़ैसला है कि सुन्नत को हक़ीर जानकर छोड़ने वाला

काफ़िर है अब बताओ उसकी बदनसीबी पर कितना मातम किया जाये और किस क़द्र बा–नसीब हैं वह हज़रात जो हर फ़ेअ़ल व क़ौल में सुन्नते रसूलुल्लाह स० को तलाश करते हैं मैंने अल्लाह की क़सम! तबलीग़ वालों से और उ़लमाये देवबन्द से ज़्यादा किसी को सुन्नत पर अ़मल करने वाला नहीं पाया यहां तक कि एक शख़्स मर्कज़ निज़ामुद्दीन में आया और वहां के उ़लमा से सवाल करने लगा कि हज़रत मुझको खुजूर के बीज फेंकने की सुन्नत किस तरह है बताइये, उसको बताया गया यह है शौक़ सुन्नत के ज़िन्दा करने का सिर्फ़ यह दावा करना कि हम आशिक़े मुहम्मद स० हैं। यह तो मुनाफ़िक़ भी कहते थे मगर सहाबा रज़ि० और मुनाफ़िक़ीन में फ़र्क़ यह था कि सहाबा रज़ि० मुहब्बत के साथ अ़मल करके भी दिखाते थे और मुनाफ़िक़ सिर्फ़ बड़े डींग मार मारकर मुहब्बत के दावे किया करते थे आख़िरकार चोरी पकड़ी ही गई, ख़ैर, हदीस में बताया गया है कि सुन्नत पर खुद भी अ़मल करो और इस सुन्नत पर अ़मल करने की अपने दोस्त और भाइयों को भी दावत दो जब बन्दा यह काम करेगा तो फिर उसके लिये हुज़ूर अकरम स० की कुरबत है और मज़ीद दुआ़ व रहमत भी, जिसके साथ हुज़ूर अकरम स० की दुआ़ और हुज़ूर स० की कुरबत हो इसका सवाल ही क्या, कि वह किस क़द्र नसीब वाला होगा अल्लाह तआ़ला तमाम मुसलमानों को सुन्नत पर अ़मल करने वाला बनाये और सुन्नत की दावत देने वाला बनाये।

(आमीन)

इल्मे दीन का हासिल करने वाला

(٣١٢) عن انسؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من خرج في طلب العلم فهو في سبيل الله حتى يرجع۔ (ترمذی ومشکوٰۃ شریف)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जो शख़्स इल्मे दीन की तलब व तहसील में निकला तो वह जब तक कि वापस न आ जाये अल्लाह की राह में है। (मुराद जिहाद में है)

चाहे मदरसे के तलबा हों या तबलीग़ वाले हों या वह लोग जो कॉलेज व स्कूल में तालीम सीखते हैं सिर्फ़ इसलिये है कि उसके ज़रिये इंग्लिश में और दीगर ज़बानों में दीनी इशाअ़त करें वह हज़रात भी इस नेक नियत की वजह से इस फ़ज़ीलत में शरीक हो जायेंगे अगर यह नियत न हो तो यह ख़ास हो जायेगी सिर्फ़ मदारिस के तलबा के लिये, क्योंकि वह बेशक इल्मे दीन हासिल कर रहे हैं और तमाम इल्म हासिल करने वालों में मदरसे के तलबा का मक़ाम दीगर हज़रात से अअ़ला और अफ़ज़ल है क्योंकि यह तो सिर्फ़ क़ुरआन और हदीस और तफ़सीर और शरीअ़त का ही इल्म सीखते हैं और इस हदीस के मुकम्मल तौर से हक़दार मदारिस के तलबा व असातिज़ा हैं और दीगर हज़रात भी नियत के दुरुस्त होने की वजह से इस फ़ज़ीलत में दाख़िल हो जायेंगे क्योंकि कॉलेज का इल्म अकसर दुनिया के ही लिये हासिल किया जाता है बर–ख़िलाफ़ इल्मे दीन के कि यह अकसर तो सिर्फ़ अल्लाह और उसके रसूल के लिये हासिल किया जाता है लेकिन उसमें बअ़ज़ वह हज़रात भी होते हैं जिनका मक़सद अल्लाह और मुहम्मद स० की रज़ा नहीं होती है वह इसमें दाख़िल नहीं हैं।

ख़ैर! तलबा–ए–दीन की फ़ज़ीलत हदीस में यह बयान की गई है कि जब बन्दा अल्लाह के दीनी इल्म को हासिल करने के लिये निकलता है तो वह निकलने के वक़्त से लेकर वहां से लौटने तक अल्लाह के रास्ते में रहता है यानी मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह की तरह उसके लिये भी फ़ज़ीलत व दरजात हैं

क्योंकि यह इल्म भी शैतान से और अल्लाह के दुश्मनों से मुक़ाबिला करने के लिये और अल्लाह को राज़ी करने के लिये हासिल किया जाता है। और जिहाद भी अल्लाह को राज़ी करने और दुश्मने खुदा को ज़लील करने के लिये होता है इस वज़ाहत से मालूम हुआ कि जिहाद फ़ीसबीलिल्लाह और तालिबे इल्म एक दर्जे के हैं लेकिन बअ़ज़ जगह उलमा की और तलबा की फ़ज़ीलत मुजाहिद फ़ीसबीलिल्लाह से भी ज़्यादा आई है क्योंकि हर चीज़ की बुनियाद इल्म है जो जिहाद करे या नमाज़ पढ़े या इबादत करे या रोज़े रखे या हज करे या सख़ावत करे या कलाम करे या कोशिश करे या दीन पर चले, अहकामे दीन को अदा करने की सोचे या कुरआन पढ़ने की सोचे या तफ़सीर और तशरीह पढ़ना चाहे, या हदीस व फ़िक़्ह पढ़ना चाहे, आ़लिम बनना चाहे, या मुफ़्ती बनना चाहे हर दीनी काम के लिये पहले बुनियादी तौर पर इल्म ज़रूरी है इसके बग़ैर सही राह तक नहीं पहुंच सकते इसलिये तालिबे इल्म का दर्जा मुजाहिद से भी बड़ा है।

आ़लिम की फ़ज़ीलत अ़वाम पर

(٣١٣) عن ابن عباس رضی الله عنهما قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم فقیهٌ واحدٌ اشد علی الشیطان من الف عابدٍ. (ترمذی، ابن ماجہ)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया एक फ़क़ीह शैतान पर एक हज़ार आबिदों से ज़्यादा भारी है।

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया एक आ़लिम को राहे रास्त से गुमराह करना शैतान पर इस क़द्र दुश्वार है जितना उस पर एक हज़ार बे इल्मों को गुमराह करना दुशवार नहीं यानी हम जैसे हज़ार मिलकर एक आ़लिम की तरह कुरबत इलल्लाह हासिल नहीं कर सकते हैं क्योंकि इल्म बहुत बड़ी दौलत है जिसके

मुवाफ़िक़ अमल करने से बन्दा कामयाब हो जाता है और अगर उसके ख़िलाफ़ अमल किया जाये तो गुमराही में और इज़ाफ़ा हो जाता है और जिस क़द्र आ़लिम की रफ़्तार बुलन्दी पर चढ़ने में है उसी क़द्र आ़लिम की गुमराही भी बहुत दूर ले जाकर फेंक देती है और अगर आ़लिम बा–अ़मल हो तो हज़ार हज़ार अफ़राद की इबादत एक तरफ़ और आ़लिम की इबादत एक तरफ़, बराबर नहीं हो सकती है क्योंकि हदीस में है कि आ़लिम होने पर इस क़द्र सवाब हासिल होता है जितना एक आ़बिद (रात भर इबादत करने वाले) को भी हासिल नहीं होता है, गोया कि उ़लमा हज़रात का मक़ाम ख़ुद अल्लाह ने और मुहम्मद ने उम्मत पर फ़ाइक़ बयान किया है हम को चाहिये कि उ़लमा की ख़ामियां तलाश करके ख़ुद को गुमराही के क़रीब न करें बल्कि हक़ और दुरुस्त अहकाम व मसाइल व हदीस व तफ़सीर को उ़लमा–ए–हक़ से मालूम करें, बातिल फ़रिक़ों के उ़लमा से ख़ुद को बचायें और हक़ीक़त तो यह है कि उ़लमा–ए–दीन में गुमराही ज़िद है या तो इल्मे ख़ैर होगा या दीगर फ़िरक़ों की तरह इल्मे शर और यह दो क़िस्म आ़लिमों की हदीस में भी हैं।

बे–अ़मल आ़लिम भी क़ाबिले क़द्र है

(۴۱۴) عن ابی ہریرۃ رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مثلُ علم لا ینتفع بہ کمثل کَنزٍ لا ینفق منہ فی سبیل اللہ (مشکوٰۃ)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया, जिस इल्म से फ़ाइदा न उठाया जाये (यानी आ़लिम) उसकी मिसाल उस ख़ज़ाने की सी है जिसमें से अल्लाह की राह में कुछ ख़र्च न किया जाये।

अगर आ़लिम अपने इल्म पर अ़मल करे तो उसकी फ़ज़ीलत अल्लाह तआ़ला ने बयान कर दी है क्योंकि अब यह ऐन हुक्मे

ख़ुदा और हुक्मे रसूल पर ही अपनी ज़िन्दगी गुज़ार रहा है और अगर वह इल्म पर अ़मल न करे तो यह ज़रूर ग़लत बात है और बे–क़द्री है लेकिन फिर भी हदीस में काफ़ी जगहों पर फ़ज़ाइल मज़कूर हैं और उसकी मिसाल इस तरह से दी कि माल तो स्टॉक है लेकिन बुख़्ल की वजह से ख़र्च नहीं करता है यानी अ़मल नहीं है तो हम लोग क्योंकर आ़लिम की बे–अ़मली से बदज़न होकर उसके ख़िलाफ़ लोगों को उभारें और उसके लिये दिल में इज़्ज़त न रखें यह बात ग़लत है आ़लिम कैसा भी हो वह दीन का मालदार है। ख़ैर इस वक़्त बख़ील है लेकिन अगर उस पर ज़रूरत आजाये तो वह ज़रूर ख़र्च करेगा यानी अल्लाह अगर उसको एक दो झटके दे दे तो वह ज़रूर अपने इल्म से फ़ाइदा उठायेगा और जिसके पास माल ही न हो तो वह कहां से लाकर ख़र्च करेगा यानी इल्म न हो तो कहां से ख़ुद को दीन पर लायेगा जब कि वह ख़ुद फ़कीर है इल्मे दीन से, इसलिये आ़लिम की हमें इज़्ज़त करनी ज़रूरी है।

और एक बात यह भी याद रहे, जिस क़ौम या जमाअ़त ने अपने बड़ों से यानी आ़लिम हज़रात से, पादरियों से रिश्ते तोड़े और दूर हुये वह लोग बहुत जल्दी और बहुत आसानी से गुमराह हुये हैं, ख़ुद देखिये यहूदियों को, ईसाइयों को, उन्होंने अपने अपने उ़लमा से दीनी तअ़ल्लुक़ तोड़ दिया वह आज अल्लाह की नज़र में गुमराह हैं और यही यहूदी और ईसाइ आज हैं यानी मुसलमान अ़वाम को उ़लमा से दूर करने की कोशिश कर रहे हैं और हम बहुत आसानी से यहूदियों और ईसाइयों की गुमराहकुन तदबीर के शिकार बन गये और आज देखने में आ रहा है, सुनने में आ रहा है कि हम लोग उ़लमा को इज़्ज़त का मक़ाम नहीं देते हैं उनकी क़द्र और तौक़ीर नहीं करते हैं।

हम ख़ुद को ही बड़ा तसव्वुर करते हैं याद रखो यह सरासर गुमराही है हमारा यह काम उ़लमा से ही शुरू हुआ है यह काम उ़लमा का ही है, हमें उ़लमा के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने का इख़्तियार न ख़ुदा ने दिया और न मुहम्मद स० ने दिया है इस लिये उ़लमा की बेइज़्ज़ती करने से उनको हक़ीर जानने से हमें बचना ज़रूरी है अगर वह जमाअ़त में न जायें, तालीम में न बैठें गशत न करें उनको बुरा भला न कहो उन पर ज़बरदस्ती न करो सिर्फ़ इतना कहो कि अगर आप साथ देंगे तो यह काम मज़ीद उ़म्दा हो जायेगा। और उम्मत को आपकी बहुत ज़रूरत है इन्शाल्लाह वह भी साथ देंगे।

सालिम यमनी की उ़लमा और अ़वाम से आख़री गुज़ारिश

(٣١٥) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا ينبغى للجاهل ان يسكت على جهله ولا للعالم ان يسكت على علمه. (طبرانی،احیاءالعلوم اول)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया कि जाहिल के लिये मुनासिब नहीं कि वह अपने जहल के बावजूद ख़ामोश रहे और न आ़लिम के लिये मुनासिब है कि वह इल्म के बावजूद चुप रहे।

आज शिकायतें आती हैं कि चालीस दिन जाने वाले अश्ख़ास ख़ुद को ही सब कुछ तसव्वुर करते हैं और आ़लिमों की क़द्र नहीं करते हैं ख़ैर यह तो शिकायत करने वाले का तजुर्बा होगा मैंने हज़ारों चालीस दिन वालों को देखा कि वह उ़लमा की क़द्र बेपनाह करते हैं और बअ़ज़ अफ़राद कज–फ़हम भी होंगे उनकी कज–फ़हमी को लेकर पूरी जमाअ़त पर ऐतिराज़ करना दुरुस्त नहीं और यह इनाद की अ़लामत है और जो लोग उ़लमा की ना–क़द्री करते हैं या उ़लमा को हक़ीर जानते हैं वह हदीस की

रू से सही राह से हटे हुये है हमारी जमाअते तबलीग के कानून से जाहिल हैं उन हज़रात से जमाअते तबलीग का कोई तअल्लुक नहीं क्योंकि जमाअते तबलीग़ का ख़ास उसूल है इकरामे उलमा, फिर हम किस तरह इसकी इजाज़त दे सकते हैं जो करता है वह हमारे उसूल का बाग़ी है और उलमा का कुछ तबका जमाअते तबलीग़ की न ज़बान से ताइद करता है और न जमाअत में जाकर इसलाह करने की सोचता है बल्कि तलबा में और दीगर दोस्तों में इन हज़रात की और उनके अअमाल की हंसी उड़ाता है हालांकि यह काम हमारे अकाबिर उलमा का ईजादकर्दा है कुरआन और हदीस की रोशनी में अगर हम अपनी मीरास को ना लें तो ज़रूर उस पर ज़ालिमाना हमले दूसरों के होंगे जैसा कि आज अवाम जाहिल हज़रात और बअज़ उलमा की तरफ़ से यह आवाज़ें और शिकायतें आ रही हैं कि यह हमारा हक अदा नहीं करते हैं यह हमारी इज़्ज़त नहीं करते हैं उन हज़रात के लिये यानी उलमा और अवाम के इत्तिफ़ाक की सूरत बताने के लिये यह हदीस पेश की है कि किसी अवामी आदमी को अपनी बे-इल्मी पर ख़ामोश रहना दुरुस्त नहीं है बल्कि वह आलिमों के पास जाये उनकी सिर्फ़ अल्लाह के लिये इज़्ज़त व वकअत करे उनसे इल्म हासिल करे यह बात आम लोगों के लिये हदीस में है कि जिहालत पर ख़ामोश न रहो बल्कि आलिमों से तअल्लुक़ पैदा करो और इल्म हासिल करो और उलमा के लिये हदीस में यह फ़रमाया गया है कि अपने इल्म के बावजूद चुप चाप न रहें कि किसी को इल्म न सिखायें यह काम आलिम के लिये मुनासिब नहीं है बल्कि वह अपने इल्म की तबलीग व इशाअत करे चाहे मदरसे में हो या तबलीग की राह में, मगर अपने इल्म से दूसरों को फ़ाइदा पहुचाये इस हदीस पर अगर आज उम्मत अमल करे

तो बाहमी इख़्तिलाफ़ ख़त्म हो जायेगा और ख़ुद बख़ुद अवाम के दिलों मे भी जगह हो जायेगी अगर हम उनको इल्मे दीन से आगाह करेंगे। और अपना वक़्त उनको देंगे।

ख़ुलासा यह निकला कि अवाम को उलमा के पास उनको इज़्ज़त का मक़ाम देते हुये इल्म को उनसे सीखने की कोशिश करनी चाहिये और उलमा पर ख़ुद को फ़ोक़ियत न दें, चाहे हमने हज़ार चिल्ले लगाये हों आलिम आलिम ही है चिल्ला लगाना भी कोई कम मरतबा नहीं रखता है मगर आलिम के सामने हमरा चिल्ला रूई की तरह है और आलिमों को चाहिये कि तबलीग़ वालों को आज और हमेशा से हमेशा तक उलमा की ज़रूरत थी और है और रहेगी।

इसलिये ख़ुद आगे बढ़कर उम्मत की लगाम हाथ में लें पहले तो ख़ुद को मिटना होगा उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के लिये कि अगर जान भी देने का वक़्त आये तो हम ज़रूर देंगे, लेकिन अब उम्मत के इत्तिफ़ाक़ के लिये आलिमों के शफ़क़त करने की ज़रूरत है कि ख़ुद को मिटाकर जमाअत में जाकर तलबा को भेजकर उम्मत के एक एक फ़र्द को दीन के लवाज़िमात से आगाह करें बहुत सी ख़बरें मालूम हों कि लोग दीने इस्लाम को छोड़कर दूसरे दीनों को इख़्तियार कर रहे हैं अगर हम इस गर्म गर्म माहौल में हिस्सा लें तो उम्मत की प्यास बुझ जायेगी और उम्मत की प्यास उस वक़्त ही बुझेगी जब उलमा की जमाअत मुकम्मल तौर से लगेगी आज नब्बे फ़ीसद अवाम का तबक़ा वह है जो ठीक से फ़राइज़े नमाज़ और लवाज़िमाते दीन से भी जाहिल है और दस फ़ीसद भी उलमा का तबक़ा जमाअत से जुड़ा हुआ नहीं है क्या इस लापरवाही से काम चलेगा? नहीं, हरगिज़ नहीं, बल्कि उलमा को तबलीग़ वाले हज़रात की ग़लतियों से नाराज़ होकर

दूर रहने से काम नहीं चलेगा बल्कि ख़ुद को लगाकर कुरआन और हदीस की रोशनी में बातें बताने से यह ख़ामियां कम होंगी वरना हम लाख मदरसे और तलबा में तक़रीर करते रहें बदगुमानी के अलावा सामेअ़ को और कुछ हासिल न होगा इसलिये अ़वाम को चाहिये कि इल्म हासिल करने के लिये ख़ुद को बढ़ायें और आ़लिम को चाहिये कि वह इल्म सीखने के लिये ख़ुद बढ़ें क्योंकि हमारे इल्म की तबलीग़ ज़रूरी है और अ़वाम को इल्म हासिल करना ज़रूरी है इसलिये दोनों इत्तिफ़ाक़ को सामने रखें और यह बात याद रहे कि मर्कज़े तबलीग़ और दारुलउ़लूम देवबन्द एक हैं दो नहीं।

बातिल फ़िरक़ों के अअ़माल व अ़क़ाइद

(1) तबलीग़ वाले आप स० को आख़री नबी क्यों मानते हैं।

قال الله تعالیٰ وما كان محمدٌ ابا احدٍ مِّن رِّجالكم ولكن رَّسول الله وخاتم النبیین. (القرآن، پ۲۲)

(अल्लाह का ऐलान दुनिया को) मुहम्मद स० तुम में से किसी मर्द के वालिद नहीं हैं और लेकिन (आप स०) अल्लाह के रसूल और नबियों के दरवाज़े को बन्द करने वाले हैं।

चन्द साल पहले इस हिन्दुस्तान में एक कमीने फ़िरक़े ने जन्म लिया है वह इस बात का मुद्दई है कि आप स० नबी और रसूल तो हैं मगर यह कहना कि आप स० के बाद कोई नबी न होगा यह ग़लत है, इसके पेशे नज़र वह कहते हैं कि (मरदूद मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी जिसकी मौत बैतुलख़ला में आई जहां पर मरने का शर्फ़ तो भंगियों को भी हासिल नहीं होता) वह नबी था, अल्लाह की पनाह।

तबलीग़ वाले यानी देवबन्दी ही क्या बल्कि क़ादयानियों के

और काफ़िरों के अलावा तमाम मुसलमानों का यह अक़ीदा है कि आप स० आख़री नबी हैं जो आप स० को आख़री नबी नहीं मानेगा वह काफ़िर है मुत्तफ़िक़ा तौर पर, क्योंकि कुरआन ने आप स० के ख़ातिमुन्नबिय्यीन होने को बताया है और जो भी कुरआन के एक अदना से जुज़ का इन्कार करे वह काफ़िर है उन्होंने तो कुरआन की एक अहम और बुनियादी आयत का इन्कार किया है इसलिये आज उम्मते मुहम्मदिया स० का मुत्तफ़िक़ा फ़ैसला है कि क़ादयानी काफ़िर हैं मुस्लिम नहीं, और वह भी काफ़िर है जो आप स० को आख़री नबी न जाने यह फ़िरक़ा पंजाब के एक शहर क़ादयान से शुरू हुआ जिसको क़ादयानी लोग नबी मानते हैं वह कैसा था? क़ादयानियों की किताबों से ही देखिये, हज़रत मसीह मौऊद (क़ादयानी लोगों ने मिर्ज़ा गुलाम को यह लक़ब दिया है) कहते हैं कि एक मौक़े पर अपनी हालत यह ज़ाहिर फ़रमाई है कि कश्फ़ की हालत आप पर इस तरह तारी हुई गोया कि आप (यानी मिर्ज़ा गुलाम क़ादयानी) औरत है और अल्लाह तआला ने रजूलियत की ताक़त का इज़हार फ़रमाया है (यानी जिस तरह मर्द अपनी बीवी से सोहबत करता है जिमाअ़ करता है) इस तरह अल्लाह ने मिर्ज़ा को औरत बनाकर (अलइयाज़ बिल्लाह) मिर्ज़ा के साथ किया (हवाला इस्लामी कुर्बानी ट्रेक्ट नम्बर 6, अज़ क़ाज़ी यार खां मुहम्मद क़ादयानी मुरीद मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी)

बताओ इस ज़ालिम को इस झूठे नबी ने ख़ुद के साथ अल्लाह को भी नापाक और बदकार साबित किया है यह ज़ालिम किस तरह नबी हो सकता है जबकि अल्लाह तमाम ऐबों से पाक है मिर्ज़ा से अल्लाह ने तो सोहबत नहीं की बल्कि शैतान ने ख़ूबसूरत शक्ल में आकर यह कहा होगा कि मैं ख़ुदा हूं और मैं तुझसे सोहबत करना चाहता हूं और मिर्ज़ा जाहिल तो था ही

फ़ौरन खुद को औरत तसव्वुर करके शैतान को खुद पर चढ़ा लिया होगा और दुनिया के सामने अल्लाह को बदनाम कर रहा है मिर्ज़ा अय्याश का दूसरा क़ौल यह है कि मुझे हज़रत मरयम से ईसा बनाया गया, हवाला (किशती–ए–नूह, पेज 47 भाग 19 पेज 50 मुन्दर्जा रूहानी ख़ज़ाना) नापाक मिर्ज़ा ने कहा मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं खुद खुदा हूं मैंने यक़ीन कर लिया मैं वही हूं हवाला (आइना–ए–कमालाते इस्लाम 564 मुन्दर्जा रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 5 पेज 564 अज़ मिर्ज़ा क़ादयानी)

देखो उस ज़ालिम को पहले ख़ुद ने ही कहा मैं अल्लाह की बीवी हूं फिर कहा मैं मरयम हूं फिर कहा मैं हज़रत ईसा हूं फिर कहा मैं तो खुदा हूं और एक क़ौल में कहा मैं मुहम्मद स० हूं पता नहीं इसके कितने बाप हो गये एक बाप ने उसको औरत पैदा किया, दूसरे बाप ने मरयम बनाकर पैदा किया, तीसरे बाप ने हज़रत ईसा बनाकर पैदा किया, चौथे ने मुहम्मद बनाकर पैदा किया, पांचवें ने खुदा बनाकर पैदा किया, मुझको तो लगता है जब से दुनिया पैदा हुई अब तक इतना बड़ा हरामी कोई पैदा नहीं हुआ जिसके इतने बेशुमार बाप हों और हर बाप के नुत्फ़े ने उसको मुसतक़िल एक नया जिस्म और नया मर्तबा दिया हो हरामी तो बहुत होंगे मगर मिर्ज़ा की तरह सौ परसेंट क्वालिटी का हरामी अब तक मार्किट में नहीं आया होगा।

नोट : यह बात मलहूज़ रहे कि अलक़ाबात एक अलग चीज़ हैं जैसे कि कोई आलिम भी होता है, मुफ़्ती भी, क़ारी भी, और एक यह है कि कोई मुतअ़द्दद अजसाम का दावा करे कि मैं औरत हूं, ईसा अ़लै० हूं, मेहदी हूं, ज़िल्ले मुहम्मद स० हूं, ख़ुदा हूं, ज़ाहिर बात है कि दावा मुतअ़द्दद अजसाम का हुआ इसी वजह से मैंने मज़कूरा बात कही।

क़ादयानी ने अपने मुरीद हकीम नूरुद्दीन को ख़त लिखा कि जब मैंने नई शादी की थी तो मुद्दत तक मुझे यकीन रहा कि मैं नामर्द हूं अव्वल सेहत दुरुस्त करना लाज़िम था वरना फित्ने का अन्देशा था (हवाला मक्तूबात अलअमदिया, जिल्द 5 पेज 21)

मिर्ज़ा मलऊन कहता है कि मुझको दिन में कभी कभी सौ सौ दफ़ा पेशाब होता था। (हवाला ज़मीमा अरबईन, नम्बर 413 पेज 14)

जब मलऊन को सौ मरतबा पेशाब आता होगा तो इबादत क्या ख़ाक करता होगा, यह दुनिया का बड़ा अय्याश आदमी था इसी तरह इस मलऊन के बहुत से फ़ासिद अक़वाल व अफ़आल जिनके ऊपर मुस्तकिल हज़ार हज़ार सफ़हात की किताबें लिखी गई हैं पहले तो सिर्फ़ मुख़्तसर सा तआरुफ़ करना था कि देखो नबी क्या कभी इस तरह का भी हो सकता है कि जो बैतुलख़ला में मरे और मुहम्मदी बैगम नामी अपनी रिश्तेदार लड़की पर आशिक़ होकर उस पर डोरे डाले और इस तरह कि मुहम्मदी बैगम के बारे में पेशीनगोई दी थी कि यह मेरी बीवी हो गई अल्लाह ने मेरी शादी उससे करा दी फिर कहा जो भी मुहम्मदी बैगम से शादी करेगा उसका शौहर दो साल में मर जायेगा मुहम्मदी बैगम ने दूसरे से शादी की वह इस मक्कार को जानती थी और उस पर थूकती भी नहीं थी मगर मिर्ज़ा मुहम्मदी बैगम के हैज़ के कपड़े धोबी से मंगाकर उसको बोसे देता था कि तू नहीं तो तेरा ख़ूने हैज़ का कपड़ा ही सही, जब मुहम्मदी बैगम की शादी हुई और दो साल हो गये, क़रीब दस साल हो गये मिर्ज़ा मर गया मगर इस झूठे की झूठी पेशीनगोई हक़ न हो सकी, यह था मलऊन और अय्याश झूठा नबी, उन लोगों से मुसलमानों को बचना चाहिये यह लोग मुसलमानों में घुल मिलकर मुसलमानों को गुमराह करते हैं बहुत ऐहतियात की ज़रूरत है अल्लाह तमाम

मुसलमानों के ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमाये।

हदीस से आप स० के आख़री नबी होने पर दलाइल

पहली हदीस :

(۳۱۶) عن ثوبان رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم انه سیکون فی امتی ثلاثون کذابون کلهم یزعم انه نبی الله وانا خاتم النبیین لا نبی بعدی. (ترمذی جلد ثانی)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया ज़रूर मेरी उम्मत में तीस (बड़े अज़ीम क़िस्म के) झूठे पैदा होंगे, हर एक उनमें अपने आपको नबी ठहरायेगा हालांकि मैं नबियों के दरवाज़े को ख़त्म करने वाला हूं यानी ख़ातिमुन्नबिय्यीन हूं, मेरे बाद (किसी क़िस्म का) कोई नबी पैदा न होगा (अगर होगा तो वह बड़ा झूठा और धोखेबाज़ होगा उससे बचो) इस हदीस से मालूम हो गया कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद उन तीस बड़े झूठों में का एक झूठा है।

दूसरी हदीस :

(۳۱۷) قال النبی صلی الله علیه وسلم لو كان بعدی نبی لكان عمر بن خطاب. (ترمذی)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया अगर मेरे बाद कोई नबी होता तो वह हज़रत उ़मर रज़ि० होते।

मतलब यह है कि मेरी पूरी उम्मत में या कहो क़ियामत तक आने वाली औलादे आदम में से कोई इस क़ाबिल नहीं है कि उसको नबी बनाया जाये अगर बनाना ही होता और कोई उसकी क़ाबिलिय्यत के क़रीब है तो वह हज़रत उ़मर रज़ि० की ही ज़ात है उनके अ़लावा पूरी उम्मत इस क़ाबिलिय्यत से लाखों कोस दूर है जब क़रीबी क़ाबिलिय्यत रखने वाले उ़मर रज़ि० को नबी बनने

का शर्फ़ हासिल न हुआ तो फिर मिर्ज़ा क़ादयानी जैसे अय्याश और अफ़यूनख़ोर और नामर्द को किस तरह यह नुबुव्वत हासिल होगी यह तो कज़्ज़ाब था।

तीसरी हदीस में हुज़ूर स० ने फ़रमाया :

(٣١٨) ان الرسالة والنبوة قد انقطعت فلا رسول بعدی ولا نبی.
(ترمذی جلد ثانی)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया रिसालत और नुबुव्वत का दरवाज़ा बन्द हो चुका है, मुनक़तअ़ हो चुका, बस अब न कोई मेरे बाद रसूल होगा और न नबी। (तिर्मिज़ी)

अब क़ादयानी इन तमाम तर रिवायतों से हटने और बचने के लिये कहता है मैं ऐने मुहम्मद स० नहीं हूं मैं मुहम्मद स० का अ़क्स हूं ज़िल्ल हूं देखो इस जाहिल को हिन्दु मज़हब की रीत इस्लाम में दाख़िल कर रहा है कि मैं मुहम्मद स० का ज़िल्ल हूं हिन्दू भी इसी तरह कहते हैं कि हमारा एक भगवान मरता है फिर उसका ज़िल्ल (अ़क्स) पैदा होता है फिर वह ख़ुदाई चलाता है जिस तरह कृष्ण, राम और दूसरे उनके भगवान के ज़िल्ल एक दूसरे के बाद पैदा होते हैं इसी तरह क़ियामत तक नये ख़ुदाओं की फ़ैक्ट्री जारी रहेगी इसी की देखा देखी मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादयानी ने हिन्दुओं के ख़ुदा वाली फ़ैक्ट्री के सामने एक रिसालत और नुबुव्वत वाली फ़ैक्ट्री जारी कर दी है और मिर्ज़ा ने कहा क़ियामत तक नबी पैदा होंगे।

जैसा कि हिन्दुओं ने कहा था क़ियामत तक नये ख़ुदा पैदा होंगे देखो मिर्ज़ा के अक़वाल काफ़िरों से किस तरह जा मिलते हैं अगर मान लिया जाये कि मिर्ज़ा ज़िल्ले मुहम्मद स० है तो मैं कहता हूं हुज़ूर स० ने क़ियामत तक आने वाले तमाम तर छोटे बड़े ख़ैर और आफ़ात से आगाह किया है कि हज़रत ईसा का

नुज़ूल होगा नुज़ूले ईसा के बाद मुसलमानों की चालीस साल हुक्मरानी होगी, दज्जाल निकलेगा, दाब्बतुलअर्ज़ निकलेगा, याजूज माजूज निकलेंगे, ज़िना आम होगा, झूठगोई, दग़ाबाज़ी आम होगी सूद आम होगा वग़ैरा वग़ैरा बातें आप स० ने बता दीं तो फिर आपने इस क़द्र अज़ीम बात की तरफ़ इशारा क्यों नहीं किया कि मेरा एक ज़िल्ल पैदा होगा, अरे जो नबी छोटी छोटी बातों तक की ख़बर दे रहा है वह क्योंकर इतनी बड़ी बात को पसे पुश्त डालेगा मालूम हुआ यह ज़ालिम, मलऊन कज़्ज़ाबे अअ़ला है जभी तो अल्लाह ने उसको बैतुलख़ला में ले जाकर मारा और ज़िन्दा भी रखा तो सौ सौ मर्तबा पेशाब करने की डयूटी लगा दी।

मिर्ज़ा क़ादयानी काफ़िर है उसके मुत्तबिईन तमाम काफ़िर हैं और जो आप स० को आख़री नबी न माने वह भी काफ़िर है जो आप स० का ज़िल्ल माने वह भी काफ़िर है।

तबलीग़ वाले हुज़ूर स० को आलिमुलग़ैब क्यों नहीं जानते हैं

दलील :

قال الله تعالى قل لا املك لِنَفْسى نفعًا ولاضراً الا ماشاء الله ولو كنتُ اعلم الغيب لاستَكْثَرْتُ مِنَ الخير ومامسّنى السوء ان انا الا نذيرٌ وّبشيرٌ لقوم يؤمنون. (قرآن)

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया (ऐ मुहम्मद स०) आप फ़रमा दो कि मैं मालिक नहीं अपनी जान को भलाई पहुंचाने का, और न बुराई पहुंचाने का मगर जो अल्लाह चाहे और अगर मुझ को ग़ैब का इल्म होता तो मैं बहुत कुछ भलाइयां हासिल कर लेता और मुझको बुराई कभी न पहुंचती, मैं तो बस डराने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं ईमानदार लोगों के लिये।

देवबन्दी हज़रात की यह दलील है जिसको खुद अल्लाह ने ज़िक्र फ़रमाया कि मुहम्मद स० आलिमुलग़ैब नहीं हैं अगर आप आलिमुलग़ैब होते तो आप स० को कोई ना–गवारी नहीं पहुंचती मगर आप स० को कई मर्तबा ग़मगीन होना पड़ा, आप स० पर परेशानियां आईं, आप स० पर जादू किया गया, वही के ज़रिये जब अल्लाह ने ख़बर दी जब जाकर आप स० को ख़बर हुई हज़रत आइशा पर ज़िना की तोहमत लगाई गई आप स० को कोई हक़ीक़त का इल्म न था कभी हज़रत आइशा से कहते कि अगर (अलइयाज़ बिल्लाह) तुझसे गुनाह सादिर हुआ होगा तो अल्लाह से तौबा करले अल्लाह माफ़ करने वाला है और अगर तू पाक साफ़ है तो अल्लाह तेरी पाकी ज़ाहिर कर देगा कभी हज़रत अली से पूछते हज़रत आइशा के चाल चलन किस तरह के थे, क्या यह तोहमत सच है कभी अपनी बांदी से सवाल करते कि बताओ हज़रत आइशा के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है? बताओ अगर आप स० आलिमुलग़ैब होते तो इस बेताबी के साथ लोगों से तहक़ीक़ करने की क्या ज़रूरत थी लेकिन उसके बावजूद बअज़ हज़रात हुज़ूर स० को आलिमुलग़ैब कहते हैं हालांकि हुज़ूर स० के आलिमुलग़ैब होने की नफ़ी खुद अल्लाह ने की और खुद मुहम्मद स० ने भी नफ़ी की, मैं आगे हदीस लाऊंगा उसके अलावा भी हमारे पास कुरआनी साफ़ दलाइल हैं फिर भी हमको बअज़ हज़रात काफ़िर कहते हैं अरे ज़ालिमो! कौन काफ़िर है वह अल्लाह के पास खूब अच्छी तरह ज़ाहिर हो जायेगा तुम्हारे झूठे अक़ाइद और बातिल अक़ाइद की वजह से हज़रत मुफ़्ती खलील साहब जिन्होंने (सुन्नी बेहशती ज़ेवर) लिखा था वह बरेलवियत से हटकर देवबन्दी हो गये, आज तक कभी भी देवबन्दी के मुक़ाबले में कोई फ़िरका न चल सका क्योंकि हमारे अअ़माल व अक़ाइद के दलाइल

कुरआन व हदीस से साबित है और तुम खुद बातिल हो और तुम्हारे अक़ाइद भी, मुझको बताओ जो तुम हुज़ूर स० पर चीख़ चीख़ कर मस्जिद की बेहुर्मती करके सलाम पढ़ते हो क्या किसी सहाबी ने इस तरह किया? क्या किसी इमाम ने इस तरह किया? क्या हज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० और हज़रत ग़ोसे अअ़ज़म ने किया? तुम क़ियामत तक नहीं बता सकते हो फिर भी मुनाफ़िक की तरह या रसूलुल्लाह कहते हो यह पता नहीं कि लफ़्ज़ (या) कहां इस्तेमाल होता है?

हुज़ूर स० ने फ़रमाया मुझे पता नहीं

(۳۱۹) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ماادرى أعُزيرٌ نبى ام لا وماادرى أتُبّعٌ ملعونٌ أم لا وما ادرى أذو القرنين نبى ام لا.

(ابوداؤد، احیاء العلوم جلد اول 177A)

हुज़ूर स० ने फ़रमाया मैं नहीं जानता हूं कि क्या हज़रत उज़ैर नबी हैं या नहीं? और मैं नहीं जानता हूं कि क्या तुब्बअ़ (मुल्के यमन का बादशाह) मलऊन है या नहीं? मैं नहीं जानता हूं कि जुलक़रनैन नबी हैं या नहीं?

इस हदीस ने तो वाज़ेह कर दिया कि हुज़ूर स० ने खुद अपनी ज़ात से यह बता दिया कि मैं आ़लिमुलग़ैब नहीं हूं फिर भी बअ़ज़ हज़रात हुज़ूर स० को आ़लिमुलग़ैब कहते हैं उन्होंने तो कुरआन को झुठलाया, आप स० को झुठलाया, कि यह कुरआन और हदीस तो बयान कर रहा है कि आप स० आ़लिमुलग़ैब नहीं हैं और बअ़ज़ हज़रात कहते हैं कि (अल्लाह की पनाह) कुरआन झूठा, हदीस झूठी, बल्कि जो हम कह रहे हैं वही हक़ है कि आप स० आ़लिमुलग़ैब हैं बताओ इन बदतरीन जसारत करने वालों को ख़ुद तो ख़ुदा और उसके रसूल के कलाम पर भी जसारत कर जाते हैं, अल्लाह की क़सम यह हज़रात क़ियामत तक एक आयत

भी पेश नहीं कर सकते जिसमें सराहत के साथ यह हो कि आप स० आलमिुलग़ैब हैं आलिमुलग़ैब न होने की कुरआन में सैकड़ों जगह तसरीह मौजूद है अगर मालूम न हो तो दारूलउलूम वक़्फ़ आजाना अक़्ल ठिकाने आजायेगी, तअज्जुब तो यह है कि तुम्हारे अक़ाइद इस क़द्र कमज़ोर हैं कि मुझ जैसा छोटा सा तालिबे इल्म आपके दलाइल की मय्यत निकाल कर अपने दलाइल को सर–बुलन्द कर रहा है और तुमको अल्लाह का कोई ख़ौफ़ नहीं जब तो तमाम हराम अअ़माल का सरचश्मा तुम ही हो अल्लाह के वास्ते हक़ राह को तलाश करो कुरआन मौजूद है हदीस मौजूद है फिर भी गुमराह हो जाओगे तो डूब मरने की बात है कि आंख की रोशनी के बावजूद आग के गढ़े में गिरोगे तो क़ियामत में अफ़सोस की बात होगी, जो हक़ को तलब करेगा अल्लाह आज भी पहले की तरह तलबगारों की क़द्र करने वाला है लेकिन जब तुम ही न चाहो तो फिर कौन है जिसको ज़रूरत पड़े कि ख़ुद को परेशान करके दूसरे की आफ़त मोल ले अल्लाह के वास्ते समझ जाओ तुम मेरे भाई हो इसलिये कह रहा हूं वरना तो क्या ज़रूरत थी।

तीसरी हदीस :

(٣٣٠) عن عائشة قالت سمع النبی صلی اللّٰه علیه وسلم رجلاً یقرأ فی المسجد قال رحمه اللّٰه لقد اذکرنی کذا کذا آیةً اسقطتُها من سورة کذا کذا. (بخاری جلد ثانی 938A)

हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं हुज़ूर स० ने एक आदमी को मस्जिद में कुरआन की तिलावत करते हुए सुना आप स० ने फ़रमाया अल्लाह उस शख़्स पर रहम फ़रमाये, तेहक़ीक़ कि उसने मुझको फ़लां फ़लां आयत याद दिलाई जिस आयत को मैं भूल गया था फ़लां फ़लां आयत।

भाइयों इस हदीस से भी मालूम हो रहा है कि आप स० आलिमुलग़ैब न थे अगर आप स० आलिमुलग़ैब होते तो आप स० किसी शख़्स की तिलावत सुनकर अपनी भूली हुई आयत को क्योंकर मेहफ़ूज़ करते जब कि आलिमुलग़ैब कहते हैं जो किसी चीज़ के इल्म हासिल करने में किसी का मोहताज न हो वह ज़ात सिर्फ अल्लाह की है यह लोग जान बचाने के लिये फ़ासिद तावीलात करते हैं कि हमारी इल्मे ग़ैब से मुराद ज़ाती नहीं है बल्कि अताई इल्मे ग़ैब मुराद है हम कहते हैं अताई इल्मे ग़ैब हुज़ूर स० के लिये ही ख़ास करने की क्या ज़रूरत है बल्कि अल्लाह जिसको चाहता है ग़ैब के इल्म पर मुत्तलअ़ करता है जैसा कि दीगर नबियों को इल्मे ग़ैब अताई अता फ़रमाया।

قال الله تعالى وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ فِىْ بُيُوْتِكُمْ (پ)

कुरआन में अल्लाह तआ़ला ने हज़रत ईसा का यह क़ौल नक़ल किया है कि हज़रत ईसा लोगों से कहते थे कि मैं तुमको बता दूंगा जो तुमने खाया और जो तुमने अपने घर में उठाकर रखा।

बताओ हज़रत ईसा तो इल्मे ग़ैब को ज़ाहिर करने का लोगों से दावा कर रहे हैं और आप स० बताया भी करते थे, आपको कब यह कुदरत हासिल हुई जब अल्लाह ने उनको ग़ैब के इल्म पर मुत्तलअ़ किया जब ही तो नबियों ने बयान किया फिर हुज़ूर स० के साथ अताई कह कर इल्म ग़ैब को ख़ास करना दुरुस्त नहीं है हासिल यह निकला कि अगर इल्मे ग़ैब से ज़ाती मुराद है तो वह तो सिर्फ़ अल्लाह ही में है और अगर इल्मे ग़ैब से अताई मुराद है तो आप स० ही अता–ए–इल्मे ग़ैब में ख़ास नहीं हैं बल्कि दीगर अंबिया ने जो ग़ैब की ख़बर दी है वह भी अल्लाह के अता करने के बाद ही ख़बर दी फिर हुज़ूर स० के साथ इल्मे

ग़ैब को खास करना क्या मतलब रखता है बस उम्मत को घुमा फिरा कर बेवकूफ़ बनाना है :

اَلَاۤ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ۝

ख़बरदार! बेवकूफ़ तो ख़ुद भी हैं मगर उनको पता नहीं। चले दूसरों को बेवकूफ़ बनाने जब ही तो इस अक़ीदे वाले लोगों में कोई साहबे इल्म और साहबे अक़्ल नहीं आता। यह हैं हमारे चन्द मुख़्तसर दलाइल, यह किताब सिर्फ़ इसी बहस के लिये नहीं है इसमें चन्द मबाहिस हैं, जो मुख़्तसर तौर पर लिख दिये गये हैं मुफ़स्सलन इन बहसों पर बड़ी बड़ी किताबें मौजूद हैं।

तबलीग़ वाले यानी देवबन्दी मज़ार वाले से मांगने को हराम क्यों कहते हैं

قال الله تعالىٰ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْئًا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ۝ (پ١٤)

अल्लाह ने फ़रमाया और वह लोग जिनको पुकारते हैं (मुराद हैं बुत और मज़ार व क़ब्र वाले क्योंकि मिन दूनिल्लाह में तमाम आ गये) अल्लाह के अलावा कुछ भी पैदा नहीं कर सकते हैं और वह ख़ुद पैदा किये हुये हैं (ऐसे) मुर्दों से जिनमें न जान है और न हयात है और यह नहीं जानते हैं कि कब उठाये जायेंगे।

इस आयते शरीफ़ा ने तो साफ़ तौर पर तमाचा मार दिया उन हज़रात को जो ग़ैरुल्लाह से चीज़ों को तलब करते हैं कि अल्लाह के अलावा यह मुर्दे क्या फ़ाइदा और नुक़सान पहुंचा सकते हैं जबकि ख़ुद यह अल्लाह के पैदा करने से पैदा हुये, अल्लाह फ़रमाता है :

وَمَا يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ وَمَا يَسْتَوِى الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ۝

अल्लाह कहता है और बराबर नहीं है अन्धा और न देखने वाला और न अन्धेरा और न उजाला और न साया और न (धूप की) गर्म लू और बराबर नहीं है ज़िन्दा अशख़ास और न मुर्दे।

अल्लाह ने साफ़ तौर पर अहले बातिल की खटिया खड़ी कर दी कि ऐ उल्लुओ! जब अन्धा और देखने वाला बराबर नहीं इसी तरह ज़िन्दा और मुर्दा भी बराबर नहीं ज़िन्दा तो एक हद तक मदद कर सकता है जितनी उसको ताक़त है मगर मुर्दा कुछ नहीं कर सकता है जिसको अल्लाह ने पहली वाली आयत में कह दिया कि यह तो मुर्दे हैं यह क्या कर सकते हैं यह तो ख़ुद हमारे पैदा करने से पैदा हुये और तुम उनसे फ़ाइदे और नुक़सान की उम्मीद लगाते हो जो यह तुम्हें बच्चा तो क्या देंगे वह एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते अगर अहले बातिल को यक़ीन न हो तो वह अपने ख़्वाजा के दर पर जाकर एक काम करें बल्कि मैं कहूंगा इस अल्लाह के फ़रमान को आज़मायें इस तरह करना कि मज़ार के इधर उधर कोई मक्खी उड़ रही होगी उसको पकड़ कर उसको मारकर अपने हलवे की तरह कर देना और ख़्वाजा से कहना उसको ज़िन्दा कर फिर देखना क्या ख़्वाजा साहब इस मक्खी को ज़िन्दा करेंगे या नहीं मैं और क्या कहूं ख़्वाजा साहिबों की तो हम भी क़द्र करते हैं मगर उनसे भीख नहीं मांगते हैं। हमें किसी मज़ार वाले से मांगने की ज़रूरत नहीं हम सिर्फ़ अल्लाह के बन्दे हैं और उसके मोहताज और किसी के नहीं और तमाम औलिया अल्लाह हमारे अकाबिर हैं न कि मुश्किल–कुशा।

ख़्वाजा तो क्या हुज़ूर स० भी मन चाही पर क़ादिर नहीं

कभी अल्लाह ने इन अल्फ़ाज़ से मुहम्मद स० को मुख़ातब

किया कि :

إِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَاءُ وَمَا أَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُوْرِ (القرآن)

यह कि अल्लाह जिसको चाहे सुनाने पर कादिर है और आप नहीं सुना सकते हैं उनको जो क़बरों में हैं।

और कभी अल्लाह ने फ़रमाया :

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِي مَنْ يَّشَاءُ ○ (القرآن)

(कि ऐ मुहम्मद स०) बेशक आप स० जिसको चाहें हिदायत देने पर क़ादिर नहीं हैं लेकिन अल्लाह क़ादिर है हिदायत देने पर जिसको चाहे।

अल्लाह ने मुहम्मद स० को फ़रमाया (ऐ मुहम्मद स०) अल्लाह पर (ही) यक़ीन रख (हर चीज़ के मआमले में) बेशक आप स० राहे हक़ पर हैं जो ज़ाहिर है।

बताओ जब अल्लाह आप स० को भी तम्बीह कर रहा है कि आप स० किसी को भी हिदायत नहीं दे सकते और फ़रमाया आप स० किसी भी चीज़ पर क़ादिर नहीं मगर क़ादिर है तो सिर्फ़ अल्लाह।

फिर क्या ख़्याल है आप लोगों का मज़ार वालों के बारे में, क्या वह मुहम्मद स० से भी बढ़ गये जब मन चाही पर मुहम्मद स० भी क़ादिर नहीं तो फिर क्या वक़अत है पूरी दुनिया के मज़ार वालों की क्या वह अल्लाह की मर्ज़ी के अ़लावा कुछ कर सकते हैं अगर ख़्वाजा साहब भी अल्लाह की मर्ज़ी के अ़लावा काम करेंगे तो वह क़ियामत तक कामयाब नहीं हो सकते जब अल्लाह ने मुहम्मद स० को फ़रमाया :

لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخَاسِرِيْنَ ○ (پ ۲۴)

(अल्लाह ने फ़रमाया दूसरे तो दूसरे) अगर आप स० (भी) शिर्क करेंगे तो ज़रूर बिज़्ज़रूर आप स० के तमाम आ़माल अकारत हो जायेंगे और आप स० हो जायेंगे टोटे में पड़ने वालों में से।

बताओ फिर क्या ख़्याल है कोई है जो अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ आपको आपका कोई मसला हल करा दे अरे भाई मुहम्मद स० भी अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ अपने चचा को हिदायत न दे सके, हज़रत नूह अ़लै० अपने बेटे को ईमान अ़ता न कर सके, तो क्या ख़्वाजा वह भी मुर्दा होने की हालत में क्या कर सकते हैं खुदा के वास्ते न ख़ुद को गुमराह करो और न दूसरों को गुमराह करो अल्लाह के अ़लावा कोई हाजत–रवा नहीं है सिफ़ारिश तो सबसे उ़म्दा हमारे अपने अअ़माल हैं जो अल्लाह से झगड़ा कर कर हमारे मसाइल हल करायेंगे जैसा कि कुरआन के बारे में है वह अल्लाह से झगड़ेगा कि ऐ अल्लाह! कुरआन की तिलावत करने वाले को दोज़ख़ में न डाल वरना मेरी सूरत को कुरआन से निकाल।

बताओ हम इतने उ़म्दा सिफ़ारिश वाले को छोड़कर इन मज़ार वालों के पीछे पड़े हैं जो ख़ुदा की क़सम क़ियामत में अल्लाह के ग़ज़ब से डरते हुये मुंह छुपायेंगे, अरे ख़्वाजा ही क्या तमाम नबी कहेंगे 'या रब्बि नफ़सी नफ़सी' तो हज़रात ख़्वाजा क्या नबियों से बढ़ गये उनकी इज़्ज़त करो जिस तरह उन्होंने इस्तिक़ामत के साथ नेक अअ़माल किये तुम भी उनकी नक़ल उतारो न कि उनसे भीख मांगो खुदा की क़सम हम तमाम नबी हों या ख़्वाजा तमाम फ़क़ीर हैं और अल्लाह मालदार व ग़नी, फिर हम भी फ़क़ीर ख़्वाजा भी फ़क़ीर, क्या कभी किसी को देखा कि वह फ़क़ीर दूसरे फ़क़ीर से भीख मांग रहा हो अगर मांगेगा तो वह उसको लात मारकर हंका लेगा कि कमीने मैंने तो बड़ी मेहनत से कमाया है तू मुझसे मांग रहा है जा फ़लां मालदार के पास मेरे पास क्या है, हक़ीक़त में यही हाल हमारा और ख़्वाजाओं का है वह भी फ़क़ीर, हम भी फ़क़ीर, अब बताओ ख़्वाजा के पास

जायेंगे तो वह हमें लात नहीं मारेंगे तो और क्या करेंगे कि कमीने जा अल्लाह से मांग जो मालदार है मैंने भी वहीं से हासिल किया अगर मेरी बात पर यक़ीन न हो तो अल्लाह का कलाम सुनो वह क्या कहता है :

وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ

कि अल्लाह बे–नियाज़ मालदार है और तुम तमाम (मुराद तमाम अफ़राद) फ़कीर हो मुहताज हो।

अब तो कम अज़ कम फ़ासिद तावीलात से बाज़ आजाओ कुरआन में तावील तो कादयानी भी करते हैं और अपने फ़ासिद अक़ाइद को सही बयान करते हैं मगर हक़ीक़तन वह हक़ नहीं है हक़ तो सिर्फ़ एक है जो अल्लाह ने और उसके रसूल स० ने बता दिया है बाक़ी सब बातिल है।

तबलीग़ वाले मज़ार या ख़्वाजा के नाम पर जानवर ज़िब्ह करने को क्यों मना करते हैं?

قال الله تعالى حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ○ (القرآن)

हराम किया गया तुम पर मुर्दा जानवर और ख़ून और गोश्त सुअर का और जिस जानवर पर नाम पुकारा जाये अल्लाह के सिवा किसी और का।

बरेलवी हज़रात ज़रा ग़ौर कीजिये अल्लाह साफ़ तौर पर मना कर रहा है मना ही नहीं बल्कि उस गोश्त को हराम क़रार दे दिया जो ग़ैर के नाम पर ज़िब्ह किया जाये, मज़ीद हदीस देखिये।

दूसरी दलील :

(٣٢١) عن ابی الطفیل قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لعن اللہ مَنْ ذبح لغیر اللہ ولعن اللہ من سرق مَنارَ الارض۔ (مشکوۃ و مسلم)

हुज़ूर अकरम स० ने फरमाया अल्लाह की फटकार हो उस शख़्स पर जो किसी जानवर को ज़िब्ह करे अल्लाह के अलावा के नाम पर और अल्लाह की फटकार हो उस शख़्स पर जो ज़मीन के निशान को चुरा ले (मतलब यह है कि पड़ौस की ज़मीन को अपने हिस्से में लाने के लिये दोनों के दर्मियान जो अलामत होती है उसको हटा दे)

यह आयत और हदीस हमारी दलील है जिसकी बिना पर हम मज़ार वाले के और ख़्वाजाओं के नामों पर जानवरों को ज़िब्ह करने से मना करते हैं हां अगर आप यह कहें कि मैं यह जानवर फ़लां की तरफ़ से कुर्बान कर रहा हूं अल्लाह के वास्ते यह तरीका तो जाइज़ है और अगर कोई यह कहे यह जानवर कुर्बान कर रहा फलां ख़्वाजा के वास्ते या उनके नाम पर, यह तरीक़ा हराम है इस क़िस्म की बहुत सी अहादीस हैं जो ग़ैरुल्लाह के नाम पर जानवर के ज़िब्ह करने से मना करती हैं।

ग़ैरुल्लाह के नाम पर तबलीग़ वाले नज़र क्यों नहीं मानते हैं

(٣٢٢) قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم من نذر لغیر اللہ فقد اشرك (مشکوۃ)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया कि जिस शख़्स ने अल्लाह के अलावा किसी के लिये नज़र मानी पस तहक़ीक़ कि उसने शिर्क किया।

हुज़ूर स० ने ग़ैरुल्लाह के लिये नज़र मानने वालों को

मुश्रिकों की सफ़ मे खड़ा किया है और हम मुश्रिक नहीं है हम तो मोमिन है इसलिये हम गैरुल्लाह के लिये नज़र नहीं मानते है मतलब यह है कि आदमी कहे कि अगर मेरा फ़लां फ़लां काम हुआ तो मैं फ़लां ख़्वाजा के लिये रोज़ा रखूंगा या मज़ार पर बकरा ज़िब्ह करूंगा। इस तरह की दीगर नज़रें मानना हराम है मगर बअ़ज़ हज़रात उसको भी जाइज़ कहते हैं उन्हें किस जगह पर अल्लाह से इत्तिफ़ाक़ नहीं जो यहां छोड़ेंगे यह लोग बड़े जरी हैं अल्लाह ही बचाये।

दूसरी दलील नज़र के ऊपर :

قال الله تعالى إِذْ قَالَتِ امْرَأَةُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي. (القرآن)

(हज़रत मरयम की मां ने) जब कहा इमरान की औरत ने कि ऐ रब मैंने नज़र किया तेरे लिये जो कुछ मेरे पेट में है सबसे आज़ाद रखकर सो तू मुझसे कुबूल कर।

अब बरेलवी हज़रात खुद फ़ैसला कर लें नज़र क्या अल्लाह के लिये मानी जाये या गैरुल्लाह में से किसी के लिये, मज़ीद मैं क्या तशरीह करूं, मतलब वाज़ेह है।

बरेलवी हज़रात क़ब्र वाले से औलाद को मांगते हैं तो तबलीग़ वाले उसको क्यों मना करते हैं

قال الله تعالى إِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَرَائِي وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا فَهَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا الخ. (القرآن)

मैं डरता हूं भाई बन्दों से अपने पीछे और औरत मेरी बांझ है सो बख़्श तू मुझको अपने पास से एक काम उठाने वाला। (मुराद लड़का) देखो अंबिया तो अल्लाह से मांग रहे हैं और बअज

हज़रात ने पता नहीं इतना कहा से मुंह काला कर लिया कि अल्लाह के पास जाने से ही डरते हैं हर काम ख़्वाजा से ही कराते हैं अल्लाह की खुदाई अलइयाज़ बिल्लाह बअ़ज़ हज़रात के पास ख़्वाजा के ज़रिये ख़त्म हो चुकी है नहीं तो फिर क्या ज़रूरत थी अल्लाह के अलावा से हाजत तलब करने की, क्या ख़्वाजा अंबिया से भी बढ़ गये जब अंबिया बड़े होकर खुद अल्लाह से मांग रहे हैं खुद वह भी कुछ नहीं कर सकते हैं फिर ख़्वाजा किस तरह आपका काम कर देंगे क्या हमारे तुम्हारे लिये अंबिया की सुन्नत काफ़ी नहीं है उन्होंने तो हर काम अल्लाह से कराके ले लिया, सहाबा रज़ि० ने करा कर ले लिया, इमामों ने करा कर ले लिया और आज तबलीग़ी देवबन्दी भी बराहे रास्त अल्लाह से काम करा के लेते हैं मगर बअ़ज़ हज़रात को देखो बिदअ़त पैदा किये बग़ैर उनका खाना हज़म होता ही नहीं, ख़ुदा के वास्ते कुछ तो अ़क़्ल से काम लो क्या तुम ही हो इस आयत के मिसदाक़।

خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ وَعَلٰى اَبْصَارِهِمْ

तबलीग़ वाले क़ब्र पर हर क़िस्म के सजदे को हराम कहते हैं, क्यों?

(۳۲۳) عن عائشة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال فى مرضه الذى لم يقم منه لعن الله اليهود والنصارى اتخذوا قبور انبياءهم مساجد.

(بخاری، مسلم، مشکوٰۃ)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं रसूलुल्लाह स० ने फ़रमाया इस मर्ज़ में जिस मर्ज़ के बाद आप स० ज़िन्दा नहीं रहे (फ़रमाया कि) अल्लाह की फटकार हो यहूद व नसारा पर उन्होंने अपने अंबिया के मज़ारों को सज्दा गाह बनाया।

दूसरी हदीस :

(۳۲۴) عن جندب قال سمعت النبی صلی اللہ علیہ وسلم یقول الا وان من کان قبلکم کانوا یتخذوا قبور انبیاءھم وصالحیھم مساجد الا فلا تتخذوا القبور مساجد انی انھاکم عن ذلک (مسلم، بخاری، مشکوٰۃ)

हज़रत जुन्दुब रज़ि० कहते हैं कि मैंने सुना नबी करीम स० से, आप स० फ़रमा रहे थे, ख़बरदार! जो क़ौम तुम्हारे से पहले थी उन्होंने अपने अंबिया और बुज़ुर्ग लोगों की क़बरों को सजदागाह बनाया ख़बरदार तुम मज़ारों को सजदागाह न बनाना बेशक मैं तुमको इससे मना करता हूं।

बताइये बरेलवी हज़रात! क्या आप लोगों के पास एक भी ऐसी हदीस है जिसमें क़बरों पर सर टेकने का हुक्म दिया हो या सिर्फ़ तुम बातिल और फ़ासिद तावीलात ही करते हो कि हम तअज़ीमन करते हैं, अरे अल्लाह के दुश्मन हुज़ूर स० ने मुतलक़ सजदे से ही मना फ़रमाया है चाहे सज्दा तअज़ीमी हो और शिर्की सज्दे की बात तो दूसरी है आप स० के असहाब तो अपने सर को थोड़ा सा भी झुकाने को हराम जानते थे और हक़ीक़त भी यही है क्या तुमको हज़रत जअफ़र बिन तालिब का वाक़िआ याद नहीं है जब वह शाहे हबशा के पास गये तो दीगर हाज़िरीन ने रुकूअ किया हज़रत जअफ़र ने और उनके साथियों ने थोड़ा सा भी सर नहीं झुकाया इस वजह से बअज़ मौजूदा बरेलवियों ने बादशाह को शिकायत की कि यह देवबन्दी काफ़िर आपके लिये रुकूअ नहीं करते हैं इस पर शाहे हब्शा ने हज़रत जअफ़र से सवाल किया तुमने रुकूअ क्यों नहीं किया? हज़रत जअफ़र ने जवाब दिया शाहे हब्शा हम (देवबन्दी हैं) फ़रमाया कि हमारे रसूल ने हमको ग़ैरुल्लाह के सामने झुकने से मना फ़रमाया वाक़िआ काफ़ी तवील है मक़सद यहीं पर हल हो गया कि हज़रत जअफ़र ने थोड़े से तअज़ीमन सर झुकाने को भी हराम जानकर तअज़ीमन

सर नहीं झुकाया, बताओ क्या सहाबा भी देवबन्दी हज़रात की तरह काफ़िर हो गये हैं, अरे भाई देवबन्द का हर फ़ेअ़ल रसूलुल्लाह से और सहाबा से मिलता है जैसा कि यह पूरी किताब बता रही है फिर अल्लाह के दुश्मन देवबन्दियों को काफ़िर कहते हैं उनके नज़दीक काफ़िर वह है जो कुरआन और हदीस पर अ़मल करे और जो नफ़्स और ख़्वाहिशात पर अ़मल करे वह मुसलमान है जैसा कि वह खुद नफ़्स के पक्के गुलाम हैं इसलिये उनकी इस्तिलाह में वह मुस्लिम है यह तुम्हारे अअ़्माल शिर्क को दावत दे रहे हैं और शिर्क के बारे में हमारी और तुम्हारी तो क्या छूट होगी अल्लाह ने फ़रमाया आप स० से :

لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ

अगर ऐ मुहम्मद स० आप भी शिर्क करोगे (अल्लाह की पनाह) तो आपके भी तमाम अअ़्माल अकारत हो जायेंगे जब आप स० के बारे में अल्लाह का यह हुक्म है कि आप स० के अअ़्माल बेकार हो जायेंगे तो आपका क्या ख़्याल है अपने के बारे में, इसलिये शिर्क या शिर्क की बू भी जहां से आती हो उससे दूर भागो शैतान इन्सान का बड़ा दुश्मन है और वह क़रीब है कि उसको शिर्क वाले अ़मल में ही डाल दे अल्लाह तमाम मुसलमानों की हिफ़ाज़त फ़रमाये।

तबलीग़ वाले उ़र्स को हराम क़रार क्यों देते हैं

(۳۲۵) عن ابن عباس رضی اللہ عنہما قال لَعَنَ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم زائرات القبور والمتخذین علیہا المساجد والسرج. (مشکوٰۃ)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह स० ने लअ़नत फ़रमाई है उन औ़रतों पर जो क़बरों की ज़ियारत करती हैं और उन लोगों पर जो सज्दागाह बनाते हैं क़बरों को और

चिराग़ वग़ैरा जलाते हैं क़बरों पर।

अब देखो यह हदीस किस तरह उ़र्स को हराम करती है उ़र्स में ख़्वाजा साहब के मज़ार पर औ़रतें भी आती हैं पहले तो यह फ़ेअ़ल हराम है दूसरा फ़ेअ़ल जो उ़र्स में किया जाता है वह है क़ब्र पर सज्दा करना यह हराम और तीसरा फ़ेअ़ल जो किया जाता है उ़र्स में, यह होता है कि मज़ार शरीफ़ को ख़ूब सजाया जाता है कुमकुमे लगाये जाते हैं झुमबर लगाये जाते हैं यह तमाम के तमाम लफ़्ज़ 'सर्ज' के ज़िम्न में आकर हराम हो गये।

हदीस में तीन चीज़ों से मना किया गया है यही तीन चीज़ें उ़र्स में मौजूद हैं एक तो मना किया गया है औ़रतों को मज़ार पर आने से, दूसरा मना किया गया क़ब्र को सज्दा करने से, तीसरा मना किया गया क़ब्र पर चिराग़ जलाने से, और यह तीनों चीज़ें उ़र्स में होती हैं इस वजह से उ़र्स हराम है।

तबलीग़ वाले हुज़ूर स० को हाज़िर व नाज़िर क्यों नहीं जानते

وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ○ (سورہ ق)

तर्जुमा:— 'और हम ज़्यादा क़रीब हैं उस शेह रग से'

हाज़िर और नाज़िर की शान पर यह आयत दलालत करती है कि हम मौजूद हैं (मुराद अल्लाह) जो मौजूद होगा वह देखेगा भी, वैसे भी अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है, वह अ़ल्लामुलग़ुयूब है और सिर्फ़ वही हाज़िर व नाज़िर है उसके अ़लावा दूसरों को हाज़िर व नाज़िर जानना कुफ़्र है, यह अ़क़ीदा सिर्फ़ देवबन्दियों का ही नहीं है बल्कि तमाम सहाबा रज़ि० का और तमाम ताबईन का, ख़्वाजा अजमेरी का, ग़ौसे अअ़ज़म का, तमाम इमामों का, बल्कि तमाम अहले सुन्नत वल्जमाअ़त का यह अ़क़ीदा है कि

हुज़ूर स० हाज़िर व नाज़िर हो ही नहीं सकते। मगर बिदअत और कुफ़्र की फ़ैक्ट्री वाले हज़रात कहते हैं कि आप स० हाज़िर व नाज़िर हैं।

हमारे मज़ीद दलाइल यह हैं :

قال الله تعالى وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلَى مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشَّاهِدِينَ ○ (سورۂ قصص)

अल्लाह ने फ़रमाया आप स० मग़रिबी जानिब में न थे (मुराद कोहे तूर की जानिब) जबकि हमने मूसा अलै० के पास हुक्म भेजा और न आप मुशाहिदा फ़रमाने वाले थे।

तीसरी दलील :

وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ مُنَافِقُونَ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ مردوا عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ○ (سورۂ توبہ)

और बअ़ज़ तुम्हारे गिर्द के देहाती मुनाफ़िक़ हैं और बअ़ज़ लोग मदीने वाले जो अड़े हुये हैं निफ़ाक़ पर, आपको उनका इल्म नहीं (यह पता नहीं कि वह कौन कौन हैं) हम उनको जानते हैं।

अगर आप स० हाज़िर और नाज़िर होते तो उन मुनाफ़िक़ीन को भी जानते मगर अल्लाह कह रहा है कि देखो आप स० को इसका इल्म नहीं है कि वह कौन कौन मुनाफ़िक़ हैं अल्लाह ने बाद में ख़बर कर दी और उनको नामज़द फ़रमा दिया।

दूसरी दलील तो साफ़ कह रही है कि आप मौजूद ही न थे आपका वहां वुजूद ही न था। जब आप मौजूद न थे तो मालूम हुआ कि आप हाज़िर व नाज़िर नहीं हैं।

बअ़ज़ बेवुक़ूफ़ हज़रात ने अपने पूरे जाहिल होने का सुबूत दिया और इस तरह तावील की कि यहां पर मौजूद न होने की जो नफ़ी की गई है वह जिस्मे ज़ाहिर मौजूद न होने की नफ़ी है।

मैं कहता हूं कि हज़रत ने बहुत ही जल्दी की बल्कि हज़रत

अगर इसी आयत के पूरे अलफ़ाज़ पर गौर करते, कुछ आए तब तो गौर भी करें मगर यहां हलवा खाने से काम थोड़ा ही चलेगा। देखो अल्लाह ने उनकी तावील की भी नफ़ी की है कि

وَمَا كُنتَ مِنَ الشَّاهِدِينَ ○

और मुशाहिदा करने वाले भी न थे, न रूहानी तौर पर और न जिस्मानी तौर पर, साफ़ मालूम हो गया कि आपके हाज़िर और नाज़िर होने की ख़ुद अल्लाह ने नफ़ी की, बरेलवी हज़रात भी कहते होंगे कि अल्लाह तो सिर्फ़ देवबन्दियों की ही ताईद करता है पता नहीं हमसे क्या दुश्मनी है? मैं जवाब देता हूं कि तुम तो अल्लाह की मजलिस में हाज़िर होकर अल्लाह को अपने से और ख़ुद को अल्लाह से मानूस करते ही नहीं हो तुम तो ख़्वाजा को अपने से और ख़ुद को ख़्वाजा से मानूस करने के चक्कर में हो, आप लोग अल्लाह के मुक़ाबले में किसी को भी ले आते हो अल्लाह देवबन्दियों का हो गया और देवबन्दी अल्लाह के, और याद रहे देवबन्दी और तबलीग़ी एक हैं, अब इस्तिदलाल सुनो :

जिस वक़्त हज़रत जिबरईल अ़लै० आप स० के घर के पास आकर खड़े हुये तो आपने फ़रमाया अन्दर क्यों नहीं आते हो? इस पर हज़रत जिबरईल अ़लै० ने कहा कि आपके मकान में कुत्ता है और हम उस घर में दाख़िल नहीं होते जिसमें कुत्ता हो, आपने इस ख़बर के बाद हज़रत आ़इशा रज़ि० से फ़रमाया

عائشة متى دخل هذا الكلب

हुज़ूर स० ने फ़रमाया ऐ आ़इशा यह कुत्ता किस वक़्त घर में दाख़िल हुआ? हज़रत आ़इशा रज़ि० ने भी कहा मुझे इल्म नहीं, यह बड़ी रिवायत मुस्लिम शरीफ़ की है अगर आप स० आ़लिमुल्ग़ैब होते या हाज़िर व नाज़िर होते तो आपको कुत्ते के दाख़िल होने का भी इल्म होता आप स० हज़रत आ़इशा रज़ि० से सवाल न

करते कि यह कब मकान में दाख़िल हुआ? मालूम हुआ आप तो अपनी चारपाई या कहो पलंग के नीचे की चीज़ का भी इल्म नहीं रखते थे (मगर यह कि जब अल्लाह ख़बर करे) तो क्या ख़्याल है आपका आप स० के बारे में, क्या वह आलम की हर चीज़ की ख़बर रखते होंगे? यह तो बात बच्चा भी नहीं कह सकता है मगर बअ़ज़ लोगों को बग़ैर बिदअ़त की चटनी के खाना खाने में मज़ा ही नहीं आता है, इसलिये उन्होंने बिदअ़त और कुफ़्र की फ़ैक्ट्री लगा रखी है जब चाहे जितने चाहे बिदअ़त और कुफ़्र के फ़तवे आ़म कर देते हैं अल्लाह ही अ़क्ल अ़ता फ़रमाये।

नोट : हुज़ूर अकरम स० को आ़लिमुलग़ैब या हाज़िर व नाज़िर मानना या क़ब्र पर सजदे को जाइज़ क़रार देना यह तमाम के तमाम अ़क़ाइद कुफ़्रिया हैं।

तबलीग़ वाले मीलाद क्यों नहीं करते हैं?

बरेलवी हज़रात का यह अ़क़ीदा बना हुआ है कि बारह रबीउ़ल अव्वल को आप स० मेहफ़िले मीलाद में तशरीफ़ लाते हैं इसी वजह से जब आपकी पैदाइश का वक़्त आता है तो यह बिदअ़ती हज़रात मक्कारी और मुनाफ़क़त के तौर पर आपके अदब में खड़े होते हैं कि आपकी पैदाइश का वक़्त है इस वक़्त और इस दिन और इस माह में आप दुनिया में तशरीफ़ लाये थे यह बहाना बनाकर बअ़ज़ लोग अ़वाम को लूटने के लिये कहते हैं कि मिठाई और हलवे और मुर्ग़ा और दीगर खाने की चीज़ें अ़वाम से मंगाकर मेहफ़िले मीलाद क़ाइम करते हैं और साथ ही साथ यह अ़क़ीदा भी रखते हैं कि आप मेहफ़िल में हाज़िर होते हैं। आप स० हाज़िर व नाज़िर भी हैं इस मेहफ़िल में, फिर वह झूठे इश्क़े मुहम्मद स० के कलिमात को नापाक ज़बान पर लाकर आपके

ज़िक्र को भी बे–हुस्न कर देते हैं कभी बरेलवी ज़िन्दाबाद और देवबन्दी मुर्दाबाद के शैतानी ऐलानात की तबलीग़ हो रही है। ग़र्ज़ कि तमाम नई नई बातों को और अअ्माल को उन लोगों ने ठान लिया है कि हम इन अअ्माल को यहूद व नसारा की तरह इस्लाम में दाख़िल करेंगे अगर मीलाद इसी का नाम है जो न किसी सहाबी से साबित है और न ही किसी इमाम से और न ही हज़रत ग़ौसे अअ्ज़म से और न ही किसी अल्लाह वाले से अलावा बअ्ज़ जाहिल लोगों के, तो हम उसको नाजाइज़ कहते हैं। हां अगर आप स० की सीरत बयान करते हो तो आप लोगों के लिये तमाम साल के दिन पड़े हुये हैं उनमें करो, क्या हम से ज़्यादा तुमने सीरते रसूल पर काम किया है, अरे जाहिलो! देवबन्द ने ही हिन्दुस्तान को सीरते रसूल से आशना किया है और तुम हमको सिखाते हो, हमने आज तक सीरत पर सैंकड़ों किताबें लिख डाली हैं और तुम्हें उम्मत को लूटने और हलवे खाने से फुर्सत नहीं, आ गये बड़े इश्क़े रसूल का दावा लेकर, हमारे बुज़ुर्गों को वह ख़ुश नसीबी हासिल है जो तुम में किसी को भी हासिल नहीं कि शैख़ हुसैन अहमद साहब ने कई साल आप स० के मज़ारे मुबारक के सामने तलबा को दरसे हदीस दिया, हमारे हज़रात में से बअ्ज़ अपने जूतों के साथ मक्का व मदीना में चलने को भी नाजाइज़ और ख़िलाफ़े अदब जानते थे। यह है देवबन्दियों की आप स० से मुहब्बत, ख़ैर! हम कहते हैं कि सीरत की रोज़ाना मजलिस क़ाइम करो मगर सहाबा रज़ि० और बुज़ुर्गों के तरीक़े पर, तब तो हम साथ हैं वरना नहीं।

☆☆☆

बरेलवी हज़रात की तरह चीख़कर मस्जिद में तबलीग़ वाले सलाम क्यों नहीं पढ़ते?

बेशक हम भी सलाम पढ़ते हैं मगर अदब और वक़ार के साथ, गधों और बैलों की तरह चीख़ कर सलाम पढ़ना हमारे नज़दीक दुरुस्त नहीं, क्योंकि इस तरह सलाम पढ़ने पर न आप हज़रात के पास कोई हदीस है और न यह किसी सहाबी का अमल है, अगर चीख़कर सलाम पढ़ना अफ़ज़ल और जाइज़ होता तो सबसे पहले हज़रत उमर रज़ि० करते मगर हज़रत उमर रज़ि० का क्या, आप लोग किसी भी सहाबी का इस तरह का अमल बता दो, चलो किसी इमाम का अमल व क़ौल बता दो, मस्जिद में चीख़ने से आप स० ने मना फ़रमाया है और उसको अलामाते क़ियामत में शुमार फ़रमाया है कि कुर्बे क़ियामत में मस्जिदों में आवाज़ें बुलन्द होंगी, तुम चीख़ चीख़कर मुनाफ़िक़ों की तरह एक दो मर्तबा सलाम पढ़ते हो तो ख़ुद को तीसमारखां तसव्वुर करते हो, लेकिन खामोशी और लिल्लाहियत के तौर पर तबलीग़ी व देवबन्दी हज़रात रोज़ाना सैंकड़ों मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ते हैं सैंकड़ों मर्तबा पढ़ने वाले काफ़िर और दुश्मने इस्लाम और तुम बैलों की तरह दो मर्तबा सलाम पढ़कर मुसलमान, वाह भाई वाह! बड़ा अच्छा अद्ल व इन्साफ़ वाला फ़ैसला है। ख़ैर! तुम अपनी ज़बान के मालिक हो इस पर तुमको कामिल हक़्क़े तसर्रुफ़ है कि इससे जो चाहो कह लो और हम तो आप स० और आप स० के असहाब के तरीक़े पर ही चलेंगे, चाहे तुम लाख मर्तबा काफ़िर कहो।

तबलीग़ वाले या रसूलुल्लाह क्यों नहीं कहते हैं?

इस बात का समझना मौक़ूफ़ है हाज़िर और नाज़िर की बहस के समझने पर, क्योंकि जो हाज़िर होगा उसको तो लफ़्ज़े 'या' से तअ़बीर कर सकते हैं मगर जो मौजूद न हो, हाज़िर न हो, उसको लफ़्ज़े 'या' से पुकारना जाइज़ नहीं लुग़त और शरीअ़त के ऐतिबार से अहले सुन्नत वल्जमाअ़त और तमाम सहाबा रज़ि० और ताबईन का भी यही क़ौल है कि आप स० हाज़िर और नाज़िर नहीं हैं बल्कि हर जगह अल्लाह हाज़िर व नाज़िर है अगर कोई शख़्स हुज़ूर अकरम स० को हाज़िर और नाज़िर जानकर 'या रसूलुल्लाह' कहता हो वह गोया मुहम्मद स० को अल्लाह की सिफ़त 'हाज़िर व नाज़िर' में शरीक करता है जिसकी बिना पर हमारा यह अक़ीदा है कि आप स० को 'या रसूलुल्लाह' कहने वाला जब कि वह आप स० को मौजूद जानते हुये कहे तो वह गुमराह है। रहा, अगर बे–इख़्तियारी या जोशे मुहब्बत में या अचानक बे इल्मी में या यह कह दे कि या रसूलुल्लाह, तो उसको गुमराह नहीं कहा जायेगा क्योंकि उसने आप स० के हाज़िर व नाज़िर होने का अक़ीदा नहीं रखा है वरना तो यह भी वईद में दाख़िल हो जाता और या रसूलुल्लाह नाजाइज़ कहने के दलाइल वही हैं जो हाज़िर व नाज़िर में दिये गये थे कि :

قال الله تعالى وَمَا كُنتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلَى مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنتَ مِنَ الشَّاهِدِينَ ○

अल्लाह ने फ़रमाया, आप स० मग़रिबी जानिब (मुराद कोहे तूर की जानिब) में न थे जबकि हमने मूसा अ़लै० के पास हुक्म भेजा और नाआप मुशाहिदा करने वाले थे (मुराद हाज़िर व नाज़िर न थे) जब अल्लाह तआ़ला ने आप स० के हाज़िर व नाज़िर होने का

इन्कार किया है तो हम भी अल्लाह के कलाम की पैरवी करते हुए आप स० को हाज़िर व नाज़िर जानने को गुमराही कहते है इसलिये हम 'या रसूलुल्लाह' कहने को भी नाजाइज कहते हैं जबकि वह आप स० के हाज़िर और नाज़िर होने का अक़ीदा रखे हर इन्सान को अल्लाह ने एक हद तक इख़्तियार दे रखा है चाहे वह दोज़ख़ को इख़्तियार करे चाहे जन्नत को इख़्तियार करे हमने तो जन्नत की राह इख़्तियार की और बरेलवियों ने जो राह इख़्तियार की वह खुद देखें कुरआन मौजूद है।

तबलीग़ वाले हुज़ूर स० को इन्सान क्यों जानते हैं, नूर क्यों नहीं मानते?

जवाब अगर आप स० की सिफ़ात और बातिन के ऐतिबार से आपको नूर कहा जाये तो इसके तो हम भी क़ाइल हैं बल्कि हम कहते हैं कि अल्लाह ने आप स० को सर चश्म–ए–नूर बनाया कि आपसे हर वक़्त नूर की बातें और नूरानी अअ़माल सादिर होते थे और अगर यह कहा जाये कि आपकी तख़लीक़ नूर से हुई है, यह अक़ीदा बातिल है कुरआन की रू से, क्योंकि तख़लीक़ के ऐतिबार से आप स० आदम अ़लै० की नस्ल से और आदम अ़लै० मिट्टी और बशरिय्यत के क़बील से हैं, इसलिये आप स० को नूर की तख़लीक़ कहकर औलादे आदम से ख़ारिज नहीं किया जा सकता है, आप स० को बशर यानी इन्सान व औलादे आदम हम अपनी तरफ़ से नहीं कहते हैं बल्कि हमको अल्लाह ने सिखाया और तुमको भी सिखाया है लेकिन तुम्हारा हाल तो :

خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ

है यानी अल्लाह ने तुम्हारे दिलों को इसलाह और ख़ैर की बात समझने के लिये बन्द कर दिया है तुम्हारे फ़ासिद अक़ाइद की

बिना पर, तुमने तमाम तर अल्लाह की वज़ाहत के बावजूद हुज़ूर अकरम स० को आलिमुलग़ैब जाना, आपको हाज़िर व नाज़िर जाना, मज़ार के सज्दे को जाइज़ कहा और मज़ीद आप स० को अल्लाह के क़ौल के ख़िलाफ़ नूर कहा, बशर होने से इन्कार किया, देखो हम नहीं कह रहे हैं बल्कि अल्लाह कह रहा है :

قال الله تعالى قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ

(सूरे हा मीम सजदा) अल्लाह ने फ़रमाया (ऐ मुहम्मद स०) आप फ़रमा दीजिये मैं तुम्हारी तरह ही इन्सान हूं, मुराद मिज़ाज में, तबीअत में, ख़लक़त में, लेकिन मुझको अल्लाह ने बातिन के ऐतिबार से सरचश्म–ए–नूर बनाया है, वह नूरानी दौलत ईमान बिल्लाह है, और काफ़िरों में ईमानी, नूरानी दौलत नहीं है, नूरानियत मुस्लिम के क़लब में है क्योंकि उनके दिल में ईमान का चिराग़ जल रहा है, आप स० नूर ही नहीं, सरचश्मा हैं जहां से नूर की नहरें जारी होती हैं लेकिन आप स० की तख़लीक़ अल्लाह ने जन्नत की पाक मिट्टी से की, जैसा कि हज़रत आइशा रज़ि० की हदीस में है कि हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि आप स० जब बैतुलख़ला या पेशाब से फ़ारिग़ होते तो मैं जानकर उस जगह जाती तो मुझको वहां बदबू के बजाये उम्दा खुश्बू आती, एक रोज़ मैंने आप स० से सवाल किया कि यह क्या माजरा है कि हमारी निजासत से बदबू आती है? आप स० की निजासत से खुशबू, आप स० ने फ़रमाया ऐ आइशा क्या तुझको पता नहीं है कि अल्लाह ने तमाम अंबिया अलै० की तख़लीक़ जन्नत की मिट्टी से की है और जन्नत की मिट्टी के बारे में हदीस में है कि वह मुश्क से भी ज़्यादा खुश्बूदार है तो अंबिया में जन्नत की मिट्टी का असर है और हममें दुनिया की मिट्टी का ख़ैर आप स० बातिन के ऐतिबार से नूर ही नहीं बल्कि नूर का चशमा हैं और तमाम मोमिनों के क़लब को नूरानियत

आपकी नहर से हासिल है लेकिन आपकी तख़लीक़ के बारे में नूर का लफ़्ज लाना बातिल है जिस हदीस मे या आयत में आपको नूर कहा गया है वह बातिन के ऐतिबार से, अफ़आल के ऐतिबार से, कि आप नूरानी अमल की तरफ़ लोगों को दावत देते हैं।

मज़ीद दलाइल देखिये हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया

الا يا أيها الناس إنما انا بشر (الحديث) (مسلم شريف)

ऐ लोगो ख़बरदार (मुराद मुझको फ़रिश्ते या बरेलवियों की तरह नूरी मख़लूक़ न जानना) मैं तो सिर्फ़ एक इन्सान हूं।

जब अल्लाह के रसूल स० का इन्तिक़ाल हुआ तो हजरत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया लोगों को इत्मीनान दिलाते हुए कि आप स० कोई ख़ुदा थोड़े ही हैं आप तो :

ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قد مات وانه بشر (دارى شريف ص ٢٣)

फ़रमाया इब्ने अब्बास रज़ि० ने, हुज़ूर स० का इन्तिक़ाल हो गया (और होता क्यों नहीं जबकि) बेशक आप इन्सान थे।

قال الله تعالى قل إنما انا بشر مثلكم يوحى الى ○ (پ١٦)

अल्लाह तआला ने फ़रमा दिया कि (ऐ मुहम्मद स०) ऐलान कर दो कि मैं तुम लोगों की तरह एक इन्सान ही हूं, बस फ़र्क इतना है कि मेरे पास वही आती है (और तुम्हारे पास नहीं)

अक़ली दलील : भाई बड़ी मख़लूकों में जो बा-इज़्ज़त और अज़ीमुश्शान हैं वह कुल तीन मख़लूक़ हैं। एक तो जिन, दूसरे फ़रिश्ते, तीसरी जमाअत इन्सानों की। अब देखो किस मख़लूक़ को किस चीज़ से अल्लाह ने पैदा किया? मालूम होगा कि जिनको अल्लाह ने आग से पैदा फ़रमाया और फ़रिश्तों को नूर से और इन्सान को मिट्टी से।

अब देखना है कि इन तीनों में कौनसी मख़लूक़ अफ़ज़ल है यक़ीनन हुज़ूर स० भी उसमें से ही हैं वरना हुज़ूर स० का मग़लूब

और अदना और मफ़ज़ूल जमाअ़त में शरीक होना लाज़िम आयेगा।

मालूम होगा कि कौमे जिन से अफ़ज़ल कौम व जमाअ़त फ़रिश्तों की है और जमाअ़ते फ़रिश्तों से अफ़ज़ल और बाइज़्ज़त जमाअ़त इन्सान की है, फ़रिश्तों से इन्सान के अफ़ज़ल होने की क्या दलील है देखो अल्लाह फ़रमा रहे हैं :

اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ○

और जब हमने हुक्म दिया फ़रिश्तों को कि सज्दा करो आदम को, सब सज्दे में गिर पड़े सिवाये शैतान के। देखिये बरेलवी भाइयो! अल्लाह ने फ़रिश्तों को जो नूरानी मख़लूक़ है इन्सान के सामने ज़ेर कर दिया और तमाम मख़लूक़ पर ज़ाहिर कर दिया कि अगर कोई मेरे बाद मर्तबे में हो सकता है तो बशर में से ही होगा नूरानी मख़लूक़ में से न होगा, अगर हम आप स० को नूरानी मख़लूक़ मानें तो आप स० की निसबत क़ाइम हो जाती है फ़रिश्तों के साथ, हालांकि वह मफ़ज़ूल हैं कम दर्जे वाले हैं इन्सान से, तुमने आप स० को नूरानी मख़लूक़ में शुमार करके आप स० को उस जमाअ़त में शरीक किया जिसने इन्सान को सज्दा किया है इस अक़ीदे से आप स० का इन्सान से छोटा होना लाज़िम आया है और इन्सानों का अफ़ज़ल होना और यह बात सबको मालूम है कि अल्लाह के बाद अगर किसी का दर्जा है तो वह सिर्फ़ मुहम्मद स० का है और किसी का नहीं। आप स० को यक़ीनन उस जमाअ़त में से मानना पड़ेगा जिसको सज्दा किया गया है। अरे भाई मैं तो कहता हूं कि आदम अ़लै० को जो सज्दा कराया गया है वह भी आपके औलादे आदम और बशर होने की वजह से, फ़रिश्तों को आदम अ़लै० के सामने ज़ेर कर दिया क्योंकि, आप स० अल्लाह के हबीब हैं और हबीब की और हबीब के मुतअ़ल्लिक़ीन की मुहब्बत करने वाला इज़्ज़त करता है

अपने हबीब के तुफ़ैल में, इसलिये आदम की अल्लाह ने तौकीर कराई आप स० के बशर होने की वजह से।

इन्सान के तमाम मख़लूक़ से अफ़ज़ल होने की दूसरी अक़ली मअ़ नक़ली, दलील

قال الله تعالیٰ وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً
(القرآن)

और जब फ़रमाया आपके परवरदिगार ने फ़रिश्तों (नूरानी मख़लूक़) से बेशक मैं बनाने वाला हूं ज़मीन में अपना नायब और ख़लीफ़ा। जांनशीन (किसको बनाया? वह कौनसी क़ौम है? वह इन्सान है)

और आपको यह बात मालूम होगी कि हर शख़्स उस ज़ात को अपना ख़लीफ़ा या नायब बनाता है जो हर चीज़ में दूसरों से अअ़ला और अफ़ज़ल है जब अल्लाह ने इन्सान को ख़लीफ़ा बनाया तो यक़ीनन यह बात वाज़ेह हो गई कि इन्सान अल्लाह का ख़लीफ़ा होने की बिना पर तमाम तर मख़लूक़ पर फ़ाइक़ है और यह बात भी पता है कि आप स० तमाम मख़लूक़ में अफ़ज़ल हैं अब यक़ीनन अगर आप स० किसी जमाअ़त व गुरूप में से होंगे तो वह इन्सान है क्योंकि पहले अल्लाह ने मख़लूक़ में इन्सान को अफ़ज़ल बनाया अब जो बाक़ी रह गये इस जमाअ़त के तमाम अफ़राद समीत वह जमाअ़त मफ़ज़ूल और कम तर है और आप स० अफ़ज़ल हैं इन्सान भी तमाम मख़लूक़ में अफ़ज़ल है अगर आप लोग आप स० को अफ़ज़ल जानते हो तो वह भी अफ़ज़ल और अअ़ला क़ौम व जमाअ़त होगी जो सबसे अफ़ज़ल होगी। मालूम हुआ कि तमाम मख़लूक़ में अफ़ज़ल मख़लूक़ जिसको अल्लाह ने बनाया वह इन्सान है और जब इन्सान अफ़ज़ल है तो

जो उनमें से अफ़ज़ल है उसको ज़ाहिर फ़रमाया और वह आप स० हैं जो अफ़ज़लों के अफ़ज़ल हैं इन नक़ली और अक़ली दलाइल की बिना पर हम आप स० को तख़लीक़न इन्सान और क़लबन नूरानी जानते हैं और नूरानी से वह नूरानियत मुराद है जो नूरानियत ईमान व इस्लाम की है फ़रिश्तों वाली नूरानियत नहीं, अब कोई जाहिल ऐतिराज़ कर सकता है कि तुमने कहा कि नूरानी मख़लूक़ के अफ़राद कमतर हैं इन्सान से, और यह बात भी सबको मालूम है कि अल्लाह भी नूरानी है फिर तुमने हर नूरानी पर किस तरह इन्सान को अफ़ज़ल कहा?

जवाब : इसके दो जवाब हैं एक तो इलज़ामी जवाब, भाई मैंने अफ़रादे मख़लूक़ कहा, और अल्लाह अफ़रादे मख़लूक़ से ख़ारिज है वह तो ख़ालिक़ है। ऐतिराज़ बातिल हो गया। दूसरा जवाब अगर अल्लाह को नूरानी भी कहा जाये जैसा कि तमाम मुसलमानों का अक़ीदा है कि अल्लाह नूरानी है मैं कहता हूं अल्लाह को नूरानी भी कहा जाये तो वह फ़रिश्तों में शामिल नहीं हो सकता है क्योंकि हमारा अक़ीदा है

ليس كمثله شيء

कि अल्लाह की किसी चीज़ में कोई भी चीज़ बराबर नहीं हो सकती वह और उसकी हर चीज़ हर एक से जुदागाना है, यह दो जवाबात हैं जब जुदागाना है तो फ़रिश्तों में अल्लाह का तदाख़ुल करना जाइज़ नहीं।

तबलीग़ वाले तफ़सीर बिर्राय को क्यों हराम कहते हैं

(۳۲۲) ابن عباس رضی الله عنهما قال قال رسول الله صلی الله عليه وسلم من قال في القرآن برأيه فليتبوأ مقعده من النار. (ترمذی و بخاری)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जिस शख़्स ने कुरआन के मआमले में अपनी राय से गुफ़्तुगू की तो उसको चाहिये कि अपना ठिकाना दोज़ख़ में बना ले। (तिर्मिज़ी व अबूदाऊद, मिश्कात)

(٣٢٧) عن ابی هريرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم المراء فی القرآن كفر. (ابوداؤد، مشكوٰة شريف)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया कुरआन में (अपनी राय लेकर) झगड़ना कुफ़्र है।

इन अहादीस की बिना पर हम कुरआन में अपनी राय की दख़ल अन्दाज़ी को हराम कहते हैं मगर मौदूदी साहब ने अपनी तफ़हीमुल–कुरआन में तफ़सीर बिर्राय को दाख़िल करके जन्नत के ज़ादे सफ़र के बजाये दोज़ख़ का ज़ादे सफ़रे बनाया है, ख़ुद मौदूदी साहब ने लिखा है कि मैं उस चीज़ को लिखने की कोशिश करूंगा जो तफ़सीर लिखते वक़्त मेरे ज़हन में आये अगर यह बात देखनी हो तो तफ़हीमुलकुरआन के पहले ऐडीशन में यह बात आपको जिल्दे अव्वल के शुरू में मिल सकती है, बाद में जो कुरआन दोबारा छापा गया उसमें से यह मौदूदी साहब का जुम्ला काट दिया गया और यह लोग बाद वाला ऐडीशन लाकर कहते हैं कि देखो कहां लिखा है यह तो देवबन्दियों ने हमारी तरफ़ ग़लत निसबत कर दी है बल्कि ग़द्दारी तो ख़ुद उनकी है, 'उल्टा चोर कोतवाल को डांटे' ख़ैर तुम अपने दिल व जान के मालिक हो हमारा काम तो सिर्फ़ राहे हक़ को कुरआन और हदीस की रोशनी में बताना है, मानना न मानना हर फ़र्द के ज़िम्मे है।

और अक़ली तौर पर भी यह बात ग़लत मालूम होती है कि कुरआन तो नाज़िल हुआ मुहम्मद स० और सहाबा रज़ि० के दौर में और हम पन्द्रह सौ साल के बाद उसकी तफ़सीर मुतअय्यन करें और मुहम्मद स० और सहाबा रज़ि० की वह तफ़सीर जो

मुतवातिर चली आ रही है उसको तर्क कर दें यह कौनसा इन्साफ़ है? बल्कि यह तो कुरआन का खेल बनाना हुआ कि जो चाहे मन मानी बोलकर चल दे। जिस तरह कि मौदूदी साहब ने कुरआन पर बड़ा ज़ुल्म किया, उन्होंने शायद कुरआन को कोई नाविल या जराइम की किताब समझकर अपनी अक़्ल को भी उसमें दख़ल देने की इजाज़त दी है उन्होंने जगह जगह खुली ग़लतियां की हैं जिनको बयान करने का वक़्त अभी नहीं है बल्कि उसके लिये मुस्तक़िल दीगर किताबों का मुतालआ फ़रमायें। जैसे कि किताब "मौदूदी साहब का असली चेहरा" हमें तो अपना अ़मल साबित करना है कि हम यह अ़मल क्यों नहीं करते हैं। और अगर मौदूदी साहब ने उससे रुजूअ़ कर लिया है तो उससे और क्या बेहतर बात हो सकती है लेकिन आपका रुजूअ़ साबित न हो सका।

तबलीग़ वाले सहाबा रज़ि० को मेअ़यारे हक़ क्यों जानते हैं

इसलिये कि सहाबा रज़ि० को अल्लाह ने मेअ़यारे हक़ ही नहीं बल्कि मेअ़यारे ईमान भी बनाया और अल्लाह ने इस तरह से आप हज़रात को मेअ़यारे हक़ साबित किया।

قال اللّٰه تعالٰی فَإِنْ آمَنُوا بِمِثْلِ مَا آمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۝ (البقرہ۱ول)

अल्लाह ने फ़रमाया, पस अगर वह लोग (मुराद काफ़िर व मुनाफ़िक़) ईमान लायें जिस तरह तुमने (यानी सहाबा ने) ईमान कुबूल किया है, पस तहक़ीक़ कि यह लोग हिदायत पा गये। (मुराद दीन की राह)

देखिये अल्लाह ने सिर्फ़ मेअ़यारे हक़ ही नहीं बल्कि उससे ऊंची और बुनियादी चीज़ की कसोटी और जड़ बनाते हुये फ़रमाया अगर काफ़िर व मुनाफ़िक़ सहाबा रज़ि० की तरह ईमान

लाये तो वह लोग भी सहाबा रज़ि० की तरह कामयाब और हिदायत याफ़्ता हो जायेंगे जब अल्लाह ने खुद उन हज़रात को मेअ़यार बनाया फिर मौदूदी साहब का सहाबा रज़ि० पर तबसरा करना और उनके पोशीदा और सग़ीरा सग़ीरा क़ौल व फ़ेअ़ल को पकड़कर उनके पीछे पड़कर यह कहना कि सहाबा रज़ि० हमारी तरह हैं वह मेअ़यार नहीं बन सकते, क्या मौदूदी साहब को पता भी है कि वह किसकी बात को रद्द कर रहे हैं? अल्लाह कह रहा है सहाबा रज़ि० मेअ़यार हैं, मौदूदी साहब उसके इन्कार में लगे हैं बताओ वह जमाअ़त कैसी होगी जिसका मुक़तदा ही अल्लाह से जिदाल करने वाला हो।

दोस्तो! सिर्फ़ नाम रखने से काम नहीं चलता कि हम जमाअ़त मौदूदी या जमाअ़ते इस्लामी हैं उनके अफ़राद को देखो यहूदियों की तरह पैन्ट और ड्रेस और दाढ़ी कटी हुई और जनाब तफ़सीरे कुरआन कर रहे हैं, आ गये बड़े कुरआन की तफसीर करने वाले। हमारे अकाबिर की बचपन से लेकर जवानी इसमें लग रही है हम खुद से उसका तर्जुमा करने से भी डरते हैं बल्कि जो मुतवातिर चलता आ रहा है उसके मुवाफ़िक़ तर्जुमा व मतलब बयान करते हैं हमारा ओढ़ना बिछोना कुरआन व हदीस हैं तब भी हम तफ़सीर बिर्राय नहीं करते क्योंकि यह कुरआन अल्लाह का कलाम है उसके जो मतलब आप स० ने या सहाबा रज़ि० ने बताये हुए हैं हम उनको ही बयान करते हैं सहाबा रज़ि० के मेअ़यार होने की दूसरी दलील :

قال الله تعالى وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ○

अल्लाह ने फ़रमाया और जब उन (काफ़िर व मुनाफ़िक़) से कहा गया कि ईमान ले आओ जिस तरह मुहम्मद स० के सहाबा ले आये।

देखो इस आयत में भी अल्लाह ने सहाबा रज़ि० को मेअयारे हक और मेअयारे ईमान बनाया।

अल्लाह ने सहाबा रज़ि० की तारीफ़ मुहम्मद स० के साथ फ़रमाइ

(٣٢٨) مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللهِ وَرِضْوَانًا (پ٢٦)

मुहम्मद स० और आपके असहाब सख़्त हैं कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में, नर्मदिल हैं आपस में, तो देखिये उनको रुकूअ में और सजदे में ढूंडते हैं अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी खुशनूदी।

और मज़ीद दूसरी जगह पर सहाबा रज़ि० की तारीफ़ फ़रमाई।

قال الله تعالى وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ رَّضِيَ اللهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ (پ١١)

अल्लाह ने फ़रमाया जो लोग क़दीम हैं सबसे पहले, पहल करने वाले और मदद करने वाले और जो उनकी पैरवी करें नेकी के साथ अल्लाह राज़ी हुआ उनसे (मुराद सहाबा रज़ि० से) और वह (मुराद सहाबा रज़ि०) राज़ी हुये अल्लाह से और (अल्लाह ने) तैयार कर रखी है उनके लिये ऐसी जन्नत जिसके नीचे नहरें जारी हैं वह हज़रात इसमें हमेशा हमेशा रहेंगे यही बड़ी कामयाबी है।

देखो अल्लाह ने उनके अअ़माल और ईमान की तारीफ़ की और उनके लिये जन्नत की और अपनी रज़ा की खुशखबरी अ़ता फ़रमाई है फिर बेवकूफ़ है जो अल्लाह के माफ़ करने के बाद भी उनके पीछे लगा रहे जैसा कि मौदूदी साहब ने किया और सहाबा पर नुक्ता चीनी की है और हुज़ूर ने सहाबा के बारे में एक अज़ीम

बशारत दी है कि

(٣٢٩) عن جابرؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لاتمسّ النار مسلما رانی او رای من رانی. (ترمذی، مشکوٰۃ)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया उसको आग छू नहीं सकती जिसने मुझको देखा (मुराद सहाबा) और जिसने उनको देखा (मुराद ताबईनी जिन्होंने सहाबा को देखा) जब आप स० ने सहाबा के बारे में बशारत और कामयाबी का परवाना दे दिया अब हमको क्या हक़ रहता है कि हम सहाबा की बुराई करें अगर अब भी कोई सहाबा से नफ़रत करता है और उनकी कमियां तलाश करता है तो उसके लिये यह वईद है। देखिये नीचे की हदीस।

सहाबा रज़ि० पर तनक़ीद कौन करेगा

(٣٣٠) عن عبدالله بن مغفل قال رسول الله صلى الله عليه وسلم فمن احبهم فبحبی احبهم ومن ابغضهم فببغضی ابغضهم ومن اذاهُمْ فقد آذانی ومَنْ آذانی فقد آذی الله ومن آذی الله فیوشك ان یاخذه.

(مشکوٰۃ، ترمذی)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जिसने मुहब्बत की सहाबा से पस उसने उनसे मुहब्बत की मेरी मुहब्बत की वजह से और जिसने सहाबा से बुग्ज़ रखा पस उसने बुग्ज़ रखा मुझसे बुग्ज़ की वजह से और जिसने सहाबा को तकलीफ़ दी उसने मुझको तकलीफ़ दी और जिसने मुझको तकलीफ़ दी उसने अल्लाह को तकलीफ़ दी और जिसने अल्लाह को तकलीफ़ दी पस क़रीब है कि अल्लाह उसकी गिरिफ़्त करेगा। (मुराद अज़ाब देगा)

अब मौदूदी हज़रात को ज़रा ग़ौर करना चाहिये कि मौदूदी साहब का जो रवय्या सहाबा के साथ तनक़ीद वाला है क्या वह दुरुस्त होगा नहीं। अरे भाई हुज़ूर ने खुद फ़ैसला कर दिया और

फ़रमाया कि मेरे सहाबा कैसे भी हो :

قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اكرموا اصحابى فانهم خياركم. (مشكوة)

आप स० ने फ़रमाया मेरे असहाब की तकरीम करो पस बेशक मेरे असहाब तुममें से बेहतर हैं।

जब आप स० ने फ़ैसला कर दिया कि सहाबा से बेहतर तबक़ा उम्मत में कोई नहीं है जब वह हज़रात हमसे अच्छे हैं अअ़ला हैं बेहतर हैं तो फिर कम मर्तबे वाले को और बाद वालों को और हम जैसे बे अ़मलों को क्या हक़ है कि सहाबा में ऐब तलाश करें अगर अब भी कोई सहाबी में ऐब तलाश करता है तो आपने फ़रमाया मुझसे दुश्मनी रखने की वजह से मेरे असहाब में ऐब तलाश कर रहा है जब वह सब जन्नती हैं जैसा कि अभी मैंने हदीस नक़ल की कि किसी सहाबी को आग नहीं छुऐगी।

अ़क़ली दलीलः– हज़रात! जब किसी के ऐब निकाले जायें और उस शख़्स को मअ़यूब समझा जाये तो उसके किसी क़ौल और फ़ेअ़ल की क़द्र और सच्चाई दिल में नहीं समाती क्योंकि वह शख़्स उसको मअ़यूब जानता है जब मअ़यूब है तो फिर उसकी क्योंकर तसदीक़ और तकरीम करेगा, बिल्कुल यही हाल सहाबा का है अगर उनको ऐबदार और उनके क़ौल और फ़ेअ़ल में शुबह किया जायेगा तो फिर दीने इस्लाम की हक़्क़ानियत ही ख़त्म हो जायेगी क्योंकि इस्लाम की बुनियाद ही असहाबे रसूल हैं अगर वह ही ऐबदार और ग़ैर मोअ़तबर हो गये तो यक़ीनन उनसे जो चीज़ हम तक पहुंची है वह भी ग़ैर मोअ़तबर होगी क्योंकि उसका पहुंचना ही ग़ैर मोअ़तबर ज़रियो से है फिर सहाबा से जो कुरआन हम तक पहुंचा है जो अहादीस पहुंची हैं फिक़्ह और दीगर अहकाम पहुंचे हैं वह तमाम के तमाम बातिल और ग़ैर मोअ़तबर होंगे जब हम असहाबे रसूलुल्लाह स० को ग़ैर मोअ़तबर जानेंगे हम

असहाबे रसूल स० को मअ़सूम तो नही कहते हैं बल्कि असहाबे रसूल को अमानतदार और दीने इस्लाम की जड़ और अल्लाह व रसूल के फ़रमांबरदार और दीन के जांबाज़ जानते हैं और उम्मत मुहम्मद स० के सबसे ज़्यादा आदिल और पाकबाज़ और मुक़र्रब इलल्लाह और अल्लाह से डरने वाले आपके आशिक़े बे–मिसाल जानते हैं।

और दीन के पहुंचाने में आदिल और अमानतदार और वफ़ादार जानते हैं छोटी मोटी, कभी कभी और कभी बड़ी भी ग़लती व ख़ता हो जाती थी इन्सान होने की वजह से, मगर उनकी इस ग़लती को सर पर उठाये हुये मौदूदी साहब की तरह तस्नीफ़ात में दर्ज करना जैसे कि मौदूदी साहब ने ख़िलाफ़त व मुलूकियत मे किया, हम ग़लत जानते हैं क्योंकि उनकी ऐबजूई करने में अल्लाह के कुरआन की और मुहम्मद की और हदीस की नाफ़रमानी लाज़िम आती है जबकि कुरआन और हदीस ने जिस जगह पर जब भी सहाबा को याद किया तो ख़ैर व तकरीम के साथ याद किया फिर हमें अब क्या हक़ रहता है कि हम यहूदियत की नकल उतारकर असहाबे रसूल पर कीचड़ उछालें।

मौदूदी साहब की इबारत नक़ल करने का मौक़ा यहां नहीं है अगर मौदूदी साहब की असहाब पर ऐतिराज़ की इबारतों को देखना चाहते हों तो यह दो किताबें कम अज़ कम ज़रूर देख लेना पूरी मौदूदी साहब की कैफ़ियत वाज़ेह हो जायेगी एक किताब का नाम "मौदूदी साहब का असली चेहरा" दूसरी किताब है 'इन्किशाफ़ाते मौदूदी और ख़ैमनी भाई भाई' जिसमें मौदूदी साहब की इबारतों को नक़ल करके गिरिफ़्त की है हमने बता दिया कि असहाबे रसूलुल्लाह को जो मेअ़यारे हक़ जानते हैं उसके क्या दलाइल हैं।

तबलीग़ वाले तक़लीद क्यों करते हैं

قال الله تعالى اطيعوا الله واطيعوا الرسول واولى الامر منكم○ (القرآن)

पैरवी करो अल्लाह की और पैरवी करो रसूलुल्लाह की और उन हाकिमों की जो तुममें से हैं।

दूसरी जगह पर फ़रमाया :

واتبع سبيل من اناب الىّ○ (القرآن)

और पैरवी करो उसकी जो रुजूअ़ करे (जो फ़रमांबरदारी करे) मेरी तरफ़।

दोस्तो! ग़ैर मुक़ल्लिदीन हज़रात देवबन्दी हज़रात पर ख़ास तौर पर और आम तौर से पूरे अहले सुन्नत वलजमाअ़त पर यह ठप्पा मारते हैं कि यह लोग दीन में ग़ैरे रसूल की पैरवी करते हैं जो बिदअ़त है कुफ़्र है शिर्क है। यह आज की पैदावार ग़ैर मुक़ल्लिदीन बे–लगाम ख़्वाहिशात के पुजारी पूरे अकाबिरे उम्मत को काफ़िर कहते हैं जिसमें सरे फ़ेहरिस्त नाम इमामे अअ़ज़म अबू हनीफ़ा रह० का है, बाद में इमाम मालिक रह० और इमाम शाफ़ई रह० और इमाम अहमद रह० का है इन हज़रात के जो मुत्तबिईन हैं उनको यह हज़रात काफ़िर मुश्रिक कहते हैं जिसमें पूरी दुनिया आ जाती है दूसरी हिजरी से लेकर चौदहवीं हिजरी के शुरू तक डेढ़ हज़ार साल के बाद यह बे–लगाम बातिल और अक़्ल का पुजारी मुनाफ़िक़ फ़िरक़ा जन्म लेता है।

और दूसरी हिजरी से चौदहवीं हिजरी तक तमाम उ़लमा व सुलहा को एक लाइन में लाकर काफ़िर और मुश्रिक की गोलियों से फ़ायर करता हुआ तमाम ख़ुद्दामे दीन को काफ़िर कहता है गुमराह कहता है और कहता है कि रसूलुल्लाह स० के अ़लावा

किसी की पैरवी की कोई इजाज़त कुरआन व हदीस मे मौजूद नही, मैं कहता हूं यह उन जाहिलो ने बे-लगाम इन्सानो ने क्या कुरआन पढ़ा है क्या हदीस को देखा भी है? आ गये अबूजहल की तरह हक़ को ललकारने वाले, क्या तुमको कुछ अक़ल भी है कि दूसरी हिजरी से लेकर चौदहवी हिजरी तक सिर्फ़ मुक़ल्लिदीन ही थे यानी चार इमामो के ताबेदार जब आप लोगो के यहा पर मुक़ल्लिदीन अहले बातिल हैं तो जो कुरआन और हदीस तुम्हारे हाथ में है वह भी उन्हीं अहले बातिल के ज़रिये ही तुम तक पहुंचा है।

मुझको बताओ क्या अहले बातिल की रिवायत अहले इस्लाम के यहां मक़बूल है? अरे जाहिलो! कुछ तो सोच कर बात कहते, खुद के पैर पर खुद से ही कुल्हाड़ी मार दी।

यही तो नतीजा है बे-लगाम होने का जो मुक़ल्लिद होगा वह बाइज़्ज़त और पाबन्द होगा उस चीज़ मे ही जो मतबूअ़ के पास है और जिसका मतबूअ़ ही न हो वह बे-इज़्ज़त और मरदूद होता है, जैसे दो औरतें हैं एक औरत ने अपने मर्द की पैरवी को लाज़िम कर लिया और सिर्फ़ उसकी होकर रह गई यह बाइज़्ज़त है और दूसरी औरत ने कहा चलो मियां मर्द की पैरवी कौन करे चलो रन्डी बेलगाम बन जायें जब चाहें जिससे चाहें काम कराकर फ़ारिग़ होते रहें पैरवी में क्या रखा है, सिर्फ़ एक के ताबेअ़ हो जाये उसमें मज़ा कम है। बताओ उन दोनों औरतों में कौनसी औरत का ख़्याल दुरुस्त और सही है क्या मुक़ल्लिद औरत का ख़्याल या ग़ैर मुक़ल्लिद औरत का ख़्याल दुरुस्त? चाहे वह पाबन्द और एक हद तक मुक़य्यद मालूम हो रही है मगर यह मुक़य्यद होना इज़्ज़त और तकरीम है, बर-खिलाफ़ बे लगाम रन्डी के, कि वह जलील है। सही जानो यही मिसाल हज़रात

मुक़ल्लिदीन और ग़ैर मुक़ल्लिदीन की है हम आवारापन और बेलगाम होने को मेहबूब नहीं रखते हैं कि जब चाहें जिस इमाम से चाहें अपना काम करा लें और मामला हल कर लें, ख़ैर कुरआन ने ख़ुद फ़रमा दिया कि :

اِتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ

उन लोगों की पैरवी करो जो अल्लाह की तरफ़ (दीनी मालूमात में) रुजूअ़ करने वाले हैं, मुराद हैं ज़ी–इल्म और सालेह उ़लमा –ए–दीन। बताओ क्या अबू हनीफ़ा रह० से बढ़कर तुम्हारी अक़ल व इल्म है? तुम्हारा इल्म तो क्या बराबर होगा तुमने तो कुरआन वह हदीस भी सही से नहीं पढ़ी है जभी तो अंधे जैसा कह दिया कि तक़लीद हराम है, ख़ैर हज़रत अबू हनीफ़ा तमाम इमामों में सबसे ज़्यादा ज़ी–अक़ल और ज़ी इल्म और तक़्वे वाले थे क्या कभी अबू हनीफ़ा की सीरत पढ़ी या यूं ही जो मुंह में आया बक दिया भाइयों एक रिवायत के मुताबिक़ इमाम मालिक रह० भी इमाम अबू हनीफ़ा के शार्गिद हैं और साठ हज़ार मसाइल इमाम मालिक रह० ने आप रह० से हासिल किये, इमाम शाफ़ई तो इमाम अबू हनीफ़ा के शार्गिद अबू यूसुफ़ रह० और इमाम मुहम्मद रह० के शार्गिद हैं।

इमाम शाफ़ई रह० और इमाम अहमद रह० तो बहुत बाद के हैं ख़ैर जब अल्लाह ने नेक लोगों की और नेक हाकिमों की पैरवी का हुक्म दिया तो क्या यह हुक्म देना तक़लीद की इजाज़त देना नहीं है अगर अब भी न समझ सको तो मैं क्या कर सकता हूं जब अल्लाह ने ही फ़ैसला कर दिया है कि :

خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ وَعَلٰى اَبْصَارِهِمْ ○

यह कि हमने उनके दिलों पर ताले लगा दिये हैं अब यह लोग हक़ बात समझने पर क़ादिर नहीं हैं तो हम क्या कर सकते

हैं। और यह बात भी याद रहे हम अबू हनीफ़ा रह० की इस बात को मानते हैं जो बात कुरआन व हदीस से ली गयी हो और अगर कोई हमको कुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ दे तो हम उसकी पैरवी को हराम कहते हैं।

एक अज़ीम शुबह, क्या देवबन्दी व शाफ़इय्या व मालिकिय्या और हंबलिय्या अपने इमामों की पैरवी करते हैं

हम इमामों की पैरवी करते हैं या कुरआन व हदीस की?

जवाब : इसके जवाब से पहले एक मुख़्तसर सी तम्हीद को सुन लो वह यह कि पैरवी की और तक़लीद की दो क़िस्में हैं एक तो यह कि इन्सान सिर्फ़ इमाम की बात को ही दुरुसत जाने और उनके क़ौल के अलावा कुरआन और हदीस को एक तरफ़ कर दे यह तो हराम है तमाम अहले सुन्नत वल्जमाअत के नज़दीक, कि इन्सान सिर्फ़ किसी की बात को बग़ैर दलीले कुरआन व हदीस के मान ले और कुरआन के पेश करने के बाद और हदीस को बताने के बाद क़ौल इमाम के सामने ऐसे मरजूह क़रार दे यह तो हराम व कुफ़्र है दूसरी क़िस्म है कि आदमी इमाम की पैरवी उलमा की पैरवी उस मसले में और उस वक़्त करे जबकि उस ज़ी इल्म आलिम के पास या इमाम के पास कुरआन या हदीस की दलील हो या इमाम की पैरवी ऐसे वक़्त में करे जबकि पेशआमदा मसले पर कुरआन व हदीस ख़ामोश हों अब इमाम या ज़ी इल्म आलिम इज्तिहाद बिलकुरआन व बिलहदीस से मसला बयान करता है तो उसकी पैरवी करना ज़रूरी है क्योंकि उसने जो बात या हल्ले मसला बताया है वह कुरआन और हदीस की दलील के साथ या उनके ख़ामोश रहने के वक़्त में, उन्होंने

इज्तिहाद करके बताया, जो उनकी बात को दलील पेश करने के बाद भी न माने तो वह कुरआन और हदीस का मुन्किर होगा मगर यह कि उसके पास भी कोई दलील कुरआन और हदीस से हो, महज़ अक़ल–साख़ता क़ौल न हो जब तो वह मुन्किर न होगा क्योंकि वह भी आमिल बिलकुरआन है मुन्किरे कुरआन व हदीस नहीं है जैसा कि हनफ़िय्या और शाफ़इय्या में इख़्तिलाफ़ होता है और दोनों एक दूसरे के मुक़ाबल में दलाइल देते हैं यह मामला ख़ारिज है क्योंकि यह हज़रात हदीस का हदीस से और कुरआन का कुरआन से सुबूत पेश करते और जहां कोई कुरआन और हदीस की बात न हो वहां इज्तिहाद करते हैं। हां (अल्लाह की पनाह) अगर उनमें से कोई एक कुरआन की साफ़ बात पेश करे और दूसरा बग़ैर दलील के महज़ अक़ल की वजह से अपनी बात व अक़ल के सामने कुरआन को जानकर छोड़ेगा तो वह अपने ईमान को ख़त्म कर चुका होगा मगर अहले सुन्नत वलजमाअत यानी चारों अइम्मा और उनके मुक़ल्लिदीन इस तरह के फ़ेअ़ले बद से दूर हैं।

अब बात वाज़ेह हो गई कि अगर कुरआन और हदीस की दलील इमाम के पास हो तो बे–दलील वाले को उनकी पैरवी करना फ़र्ज़ होगा क्योंकि यह पैरवी इमाम की नहीं है उस मसले की है जिसको इमाम ने कुरआन और हदीस से पैश किया है और यही अक़ीदा देवबन्दियों का है और इस पर ही हम आमिल हैं।

दूसरा वह शख़्स जो सिर्फ़ अपनी अक़ल को सरीह आयात और हदीस को छोड़कर बयान करता है तो उस वक़्त आलिम की बात तो क्या इमाम की बात भी क़ियामत तक क़ुबूल न की जायेगी।

क्या अहनाफ़ के पास कुरआन और हदीस से दलाइल मौजूद हैं?

चाहे कोई भी इमाम हो उनके पास हर मसले पर कुरआनी और हदीसी दलील मौजूद हैं और हनफ़िय्या की इस पर बहुत सी किताबें मौजूद हैं मुसनद अबी हनीफ़ा और तहावी शरीफ़ और शरह हिदाया फ़त्हुलक़दीर और नसबुर्राया (में दलील मौजूद है) एक आख़री बात कहता हूं अगर मसलके अहनाफ़ बातिल होता तो हाफ़िज़ुलहिन्द हाफ़िज़े हदीस मुहद्दिसे अअ़ज़म बे–मिसाल फ़क़ीह अपने दौर के ला–सानी अ़ल्लामा अनवर शाह कशमीरी जिनको हज़ारों कुतुब हिफ़्ज़ याद थीं हज़ारों अहादीस आपको याद थीं।

बुख़ारी और मुस्लिम और तिर्मिज़ी और अबूदाऊद निसाई और इब्ने माजा और मिश्कात और बैहिक़ी और दारे कुतनी और दीगर कुतुबे हदीस के हाफ़िज़ क्यों हनफ़ी थे अगर ग़ैर मुक़ल्लिदियत दुरुस्त होती तो आप ज़रूर ग़ैर मुक़ल्लिद हो जाते मुक़ल्लिद न रहते लेकिन अ़ल्लामा ग़ैर मुक़ल्लिदियत को तो क्या इख़्तियार करते ग़ैर मुक़ल्लिदीन का वह तआक़ुब क्या जिन वारों के ज़ख़्म आज भी ग़ैर मुक़ल्लिदीन को चैन की नींद नहीं सुलाते। ख़ैर अहनाफ़ के पास अलहम्दुलिल्लाह तमाम मसाइल के दलाइल मौजूद हैं मगर जो मुतालअ़े का शाइक़ हो वह देख सकता है।

तक़लीद मअ़यूब नहीं अगर कुरआन और हदीस के मुवाफ़िक़ हो

हुज़ूर स० ने फ़रमाया :

لاطاعة لمخلوق في معصية خالق

(तिर्मिज़ी, मिश्कात) कि मख़लूक़ की तक़लीद उस वक़्त जाइज़ नहीं जबकि उसके तक़लीद करने में अल्लाह की नाराज़गी हो (जबकि उसकी तक़लीद में कुरआन और हदीस की मुख़ालफ़त हो) मालूम हुआ कि मामला या मसला अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ न हो कुरआन और हदीस के मुख़ालिफ़ न हो तो ताअत व तक़लीद जाइज़ है और इस पर ही हम आमिल हैं।

हुज़ूर स० ने फ़रमाया :

(٣٣١) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من نظر فى دينه الى من فوقه فاقتدى به ومن نظر فى دنياه الى من دونه فحمد لله . (ترمذی، مشکوٰۃ)

आप स० ने फ़रमाया जो शख़्स अपने दीन के मआमले में अपने से बड़े इल्म वाले को देखे तो उसको चाहिये कि इस बड़े की (हक़ बातों में) तक़लीद करे और जो दुनिया के मआमले में अपने से हक़ीर और फ़क़ीर को देखे तो उसको चाहिये कि उस पर अल्लाह का शुक्र करे। बताओ क्या हुज़ूर स० ने ज़ी-इल्म और मुत्तक़ी हज़रात की तक़लीद का हुक्म नहीं दिया, किया अबू हनीफ़ा استاذ الائمة الى من فوقه के मिसदाक़ नहीं हैं? क्यों नहीं, ज़रूर हैं इसलिये ही तो लाखों अहादीस हिफ़्ज़ याद करने वाले भी उनकी तक़लीद करते थे और कर रहे हैं।

(٣٣٢) عن ابن عباسؓ قال خطب عمر بن الخطاب الناس فقال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من اتاكم وامركم جميع على رجل واحد يُرِيْدُ ان يشق عصاكم او يفرق جماعتكم فاقتلوه .

हज़रत उमर रज़ि० ने ख़ुत्बे में यह हदीस नक़ल की कि हुज़ूर स० ने फ़रमाया कोई तुम्हारे पास इस हाल में आये कि तुम्हारा मामला (सिर्फ़) एक आदमी (की तक़लीद) पर मुत्तफ़िक़ हो गया और वह (आने वाला शख़्स) तुम्हारी जमाअत को मुन्तशिर और मुतफ़र्रिक़ और तोड़-मोड़ना चाहता हो (उस ग़ैर-मुक़ल्लिद

को) क़त्ल कर दो। (मुराद तफ़रक़ा–बाज़ी करने वाले को)

क्या अब भी कोई और दलील की ज़रूरत है जब आप स० ने एक आदमी की तक़लीद करने को जाइज़ नहीं, बल्कि आगे बढ़कर फ़रमाया अगर वह तुम्हारी मुक़ल्लिदियत को, इजमाइयत को तोड़ना चाहे तो उसको क़त्ल कर दो क्योंकि वह ग़ैर मुक़ल्लिद (तफ़रक़ा डालने वाला) है जब ही तो वह इजमाइयत में फूट डालना चाहता है।

अल्लाह ने फ़रमाया मुक़ल्लिद बनो

قال الله تعالى فَاسْئَلُوا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ○ (پ۱۴)

कि सवाल करो अहले इम्ल से अगर तुम्हें इल्म न हो तो।

क्या अल्लाह ने सवाल करके उस पर अमल करने का और तक़लीद करने का हक़ नहीं दिया हक़ बातों में, और इमाम अबू हनीफ़ा अहले ज़िक्र यानी अहले इल्म में तमाम अइम्मा के उस्ताज़ है जैसा कि मालूम हो चुका है हम इस आयत पर अमल करते हुये अबू हनीफ़ा रह० की पैरवी करते हैं जबकि क़ुरआन और हदीस के मुख़ालिफ़ न हो, और कोई हमारा मसला मुख़ालिफ़े क़ुरआन व हदीस है ही नहीं, हर एक मसले पर दलील मौजूद है जो अन्धा हो तो क़ुसूर उसकी आंख का है न कि सामने वाले का वह तो मौजूद है सामने वाले की अब अगर आंख न देखे तो क्या आप सामने वाले को गाली दोगे ग़ैर मुक़ल्लिदीन की तरह, दोस्तो! हक़ के मुतालअे के लिये वक़्त निकालिये जब तो हक़ वाज़ेह होगा सिर्फ़ 'ग़ैर मुक़ल्लिद बनो, बे–लगाम बनो' कहने से काम नहीं चलेगा यह हैं हमारे दलाइल, यह नज़र मुतअल्लिम की है मुअल्लिम की नहीं अगर नज़र मुअल्लिम की होती तो और भी ऐसी की तैसी हो जाती।

ग़ैर मुक़ल्लिदीन हज़रात बुरा न मानना, हक़ को समझाने के मुख़तलिफ़ तरीक़े हैं हर एक का एक अपना मिज़ाज होता है और यह मेरा मिज़ाज है अगर हक़ बात है तो मिज़ाज से क्या लेना क्योंकि मुसलमान का काम ही है कि वह हक़ का मुतलाशी बने।

आपको मालूम हो गया कि हम अबू हनीफ़ा रह० की वही बात मानते हैं जो साबित मिनलकुरआन व हदीस हो।

हनफ़ी तबलीग़ वाले क़िराअते ख़लफ़लइमाम क्यों नहीं करते?

(٣٣٣) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من كان له امام فقراءةُ الامام له قَرأة. (نصب الرايہ، جلددوم)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया जो शख़्स मुक़तदी हो उसके इमाम की क़िराअत मुक़तदी की क़िराअत है।

दूसरी हदीस :

(٣٣٤) عن ابى هريرة رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم انما جُعِلَ الامام لِيُوتَمَّ بِه فَاِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوْا وَاِذَا قَرَأَ فَانْصِتُوْا.
(ابوداؤدونسائی وابن ماجہ، مشکوٰۃ)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया किसी को इमाम बनाया ही जाता है इसलिये कि उसकी पैरवी की जाये, सो इमाम जब अल्लाहु अकबर कहे तो तुम भी अल्लाहु अकबर कहो और इमाम जब क़िराअत करे तो तुम ख़ामोश हो जाओ।

यह अहादीस साफ़ तौर पर बता रही हैं कि किराअत ख़लफ़ल इमाम जाइज़ नहीं है हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की हदीस में हुज़ूर अकरम स० ने मुफ़स्सल कलाम फ़रमाया कि इमाम की तक़लीद करो और जब अल्लाहु अकबर कहे तो तुम भी अल्लाहु

अकबर कहो ख़ामोश न रहो और इमाम जब क़िराअत शुरू करे तो मुंह को ताले लगा लो बिल्कुल खामोश हो जाओ, जब हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमा दिया कि ख़ामोश रहो, फिर किस बिना पर अहनाफ़ को बे–दलील कहा जाता है यह तो चलते चलते एक दो हदीस पेश कर दी हैं वरना तो उसके हल के लिये मुस्तक़िल मुदल्लल किताबें मौजूद हैं।

और सबसे बड़ी दलील कुरआन की यह आयत है :–

قال الله تعالٰی وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا ○ (پ۹)

अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जब कुरआन पढ़ा जाये तो उसको खुद ग़ौर से सुनो और ख़ामोश रहो।

यह आयत साफ़ तौर पर क़िराअत ख़ल्फ़लइमाम से मना कर रही है जब नस्से सरीह मौजूद है तो फिर अन्धे बनने की क्या ज़रूरत है, देखो इब्ने अ़ब्बास रज़ि० का क़ौल।

(۴۳۵) قال ابن عباس صَلّٰی النبیُّ صلی اللّٰه علیه وسلم فقرأ خلفه قومٌ فنزلَتْ وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا ۔ (الدر المنثور للامام السیوطی ج ۳)

इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर अकरम स० नमाज़ पढ़ा रहे थे (साथ ही ग़ैर मुक़ल्लिदीन ने) कुछ लोगों ने आप स० के साथ क़िराअत की, पस (ग़ैर मुक़ल्लिदीन को डांट मारी अल्लाह ने) यह आयत नाज़िल हुई कि जब कुरआन की क़िराअत हो रही हो तो ख़ूब ग़ौर से सुनो और ख़ामोश रहो।

जब अल्लाह तआला ने क़िराअत ख़लफ़लइमाम करने को मना किया और यह आयत क़िराअते ख़लफ़लइमाम को बन्द करने के लिये ही नाज़िल हुई जैसा कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने फ़रमाया फिर अब और क्या चाहिये।

अल्लाह तआला ने सिर्फ़ ख़ामोश रहने का ही हुक्म नहीं दिया बल्कि क़िराअत जब हो रही हो तो सुनो ही नहीं बल्कि ख़ूब

ध्यान लगाकर और इज़्ज़त के साथ सुनो कि यह अल्लाह का कलाम है और सूरे फ़ातिहा की ख़िदमत में पेश की जाने वाली हमारी दरख़्वास्त है जब एक आदमी बात कर रहा है तो सबको घबर घबर करने की और बादशाह की मेहफ़िल में तमानियत को ख़त्म करके शोर को पैदा करने की क्या ज़रूरत है, क्या तुम भी इसको पसन्द करोगे कि पचास आदमी आपके पास कोई बात लेकर तशरीफ़ लायें और आपसे सब बुलन्द आवाज़ में शोर करके अपने सरदार और अमीर के साथ बोलना शुरू कर दें तो बताओ क्या आप उनसे ख़ुश होंगे कि देखो कितने बा–अदब लोग हैं किस क़द्र समझदार जंगली लोग हैं गधों और भैंसों की नसल से तो नहीं, क्या यह याजूज माजूज की क़ौम तो नहीं, क्या उनको आदाबे मजलिस नहीं बताया, बताओ क्या आप उन सबकी आवाज़ से बेज़ार होकर इन अलफ़ाज़ को कहकर सुकून न लोगे, ज़रूर इन अलफ़ाज़ को कह कर आप सुकून लोगे और मज़ीद इन उल्लू और चीख़ने वाले गधों को भी बाहर कर दोगे कि जाओ मैं दरख़्वास्त कुबूल नहीं करूंगा। तुम्हें तो दरख़्वास्त कुबूल कराने के तरीक़े भी नहीं आते।

जब दुनिया वाला ऑफ़िसर यह जुमला कहता है टिकट मास्टर यह बात कहता है कि शोर न करो और एक साथ कलाम को नापसन्द करता है तो क्या अल्लाह तुम्हारे चिल्लाने की और एक साथ होकर बेढंगे तरीक़े से दरख़्वास्त पेश करने की रीत उसको अच्छी लगेगी अरे भाइयो! अल्लाह तो बड़ा पाकबाज़ है और अब तुम ही बताओ कि तुम अपनी दरख़्वास्त बादशाह के सामने चीख़ पुकार कर दोगे या हनफ़ियों की तरह बा–अदब और बा–सलीक़ा दरख़्वास्त दोगे अगर अभी भी गधों की तरह चिल्लाकर एक साथ क़िराअत करने को ही हक़ और सुकून से

सुनने और ख़ामोश रहने को नाहक़ क़रार देते हो तो मैं यह कहूंगा

الجنس يميل الى الجنس

कि जो जिस मिज़ाज का होगा वह उसको पसन्द करेगा गधे आवाज़ करने को और सुकून वाले सहाबा रज़ि० और शरीफ़ लोगों के तर्ज़ को पसन्द करेंगे।

ख़ैर ज़्यादा दलाइल पेश करने का यह मौक़ा नहीं यहा तो सिर्फ़ झलक डालनी थी डाल दी आगे तुम्हारा काम है नाहक़ लोगों को दोस्त बनाओ या ख़ामोश रहने का हुक्म करने वाली आयत को इख़्तियार करो।

तबलीग़ वाले आमीन को आहिस्ता क्यों कहते हैं?

जवाब : आहिस्तगी को इस्लाम ज़्यादा पसन्द करता है और हर शरीफ़ुन्नफ़्स इसको ही पसन्द करता है कि हर काम साइलेंस और ख़ामोशी से हो, देखिये हुज़ूर अकरम स० का अमल हज़रत इमाम शोअ़बा रिवायत नक़ल करते हैं कि :

(٣٣٦) ان النبى صلى الله عليه وسلم قرأ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْنَ فقال آمين وخفض بها صوته. (ترمذی اول)

बेशक हुज़ूर अकरम स० जब

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْنَ

पढ़ते आमीन कहते और अपनी आवाज़ को धीमी रखते।

और इस पर ही हमारा अमल है अगर बुलन्द आवाज़ से भी आमीन कहे तो जाइज़ है मगर आहिस्ता कहना बेहतर और अफ़ज़ल है क्योंकि यह दुआ है और दुआ के बारे में अल्लाह का हुक्म है :

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً

कि दुआ आजिज़ी और ख़ामोशी के साथ करो।

हनफ़ी तबलीग़ वाले रफ़अ़े यदैन क्यों नहीं करते?

(۴۳۷) عن علقمة قال لنا ابن مسعود اَلاَ اُصَلِّی بکم صلوة رسول الله صلی الله علیه وسلم فصلّی فلم یرفع یدیه اِلاَّ مرة واحدة الخ.
(ترمذی جلد اول، ابوداؤد جلد اول، مشکوٰۃ)

हज़रत अ़लक़मा रज़ि० कहते हैं कि हज़रत इब्ने मस्ऊ़द रज़ि० ने फ़रमाया कि मैं तुम लोगों को रसूलुल्लाह स० की नमाज़ न पढ़ाऊं? फिर आप रज़ि० ने नमाज़ पढ़ी पस पहली मरतबा के अ़लावा रफ़अ़े यदैन नहीं किया।

दूसरी रिवायत है :

(۴۳۸) عن جابر بن سمرة رضی الله عنه قال خرج علینا رسول الله صلی الله علیه وسلم فقال مالی اراکم رافعی ایدیکم کانّها اَذْناب خیل شُمْسٍ اُسْکُنُوْا فی الصلوة. (مسلم شریف، باب الامر بالسکون فی الصلوۃ)

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह स० हमारे पास तशरीफ़ लाये और इरशाद फ़रमाया कि क्या बात है कि मैं आप लोगों को हाथ उठाते हुये देखता हूं बिदके हुये घोड़े की दुमों की तरह नमाज़ में तो सुकून इख़्तियार करो।

तीसरी रिवायत है :

(۴۳۹) عن ابن عمر انّ النبی صلی الله علیه وسلم کان یرفع یدیه اذا افتتح الصلوة ثم لا یعود. (نصب الرایہ، جلد دوم)

हज़रत इब्ने उ़मर रज़ि० से रिवायत है कि बेशक नबी करीम स० तकबीरे तहरीमा के वक़्त हाथ उठाते थे, फिर हाथ नहीं उठाते। चौथी रिवायत है :

(۴۴۰) عن براء بن عازب رضی الله عنه ان رسول الله صلی الله

عليه وسلم كان اذا افتتح الصلوة رفع يديه الى قرب من أذنيه ثم لا يعود

(ابوداؤدجلداول)

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० से मरवी है कि रसूलुल्लाह स० जब नमाज़ शुरू फ़रमाते तो दोनों हाथ कानों के क़रीब तक उठाते फिर दोबारा हाथ न उठाते।

यह तमाम अहादीस बता रही हैं कि सिर्फ़ तकबीरे तहरीमा के वक़्त हाथों को उठाना सुन्नत है और दूसरी बार या तीसरी बार हाथ उठाने से हुज़ूर अकरम स० ने मना ही नहीं फ़रमाया बल्कि बार बार हाथ उठाने वालों को ग़ैरत और शर्म दिलाई कि क्या घोड़ों की दुमों की तरह हाथ बार बार हिला रहे हो नमाज़ पढ़ रहे हो या कोई मदारी का खेल दिखा रहे हो? आख़िर में आप स० ने फ़ैसला फ़रमाया और ग़ैर मुक़ल्लिदीन को ख़बरदार कर दिया इन अलफ़ाज़ से :

أسكنوا في الصلوة

(कि ऐ घोड़ों की दुमों की तरह हाथों को बार बार हरकत देने वालो) ख़बरदार नमाज़ में सुकून और तमानियत और इन्सानियत को लाज़िम पकड़ो।

देखो भाइयो! हुज़ूर अकरम स० तो इन ग़ैर मुक़ल्लिदीन को ख़ूब डांट पिला रहे हैं और कभी घोड़ों की दुम कह रहे हैं और कभी कुछ, लेकिन तब भी यह हुज़ूर स० के क़ौल पर अ़मल नहीं करते और ख़ुद का नाम तो बड़ा उ़म्दा चुना है 'अहले हदीस' और इनको अहले हदीस कहना दुरुस्त नहीं है अगर इनको लक़ब देना है तो कहो बे–लगाम घोड़े की दुम की तरह हाथ हिलाने वाले या 'ग़ैर मुक़ल्लिदीन' यह दो नाम है, अहले हदीस वाला नाम इनके लिये दुरुस्त नहीं, ख़ैर हम लोग क्यों रफ़अे यदैन नहीं करते हैं इसकी दलील में मैंने इख़्तिसारन चार हदीसें पेश कर दी हैं।

हनफ़ी तबलीग़ वाले वित्र की तीन रक्अत क्यों पढ़ते हैं?

(٣٣١) عن ابن عباس رضی اللہ عنہما قال کان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یصلی من اللیل ثمان رکعت ویوتر بثلاث ویصلی رکعتین قبل صلوۃ الفجر۔ (نسائی جلداول ومشکوۃ)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह स० रात को पहले आठ रक्अतें (तहज्जुद की) पढ़ते थे फिर तीन रक्अतें वित्र पढ़ते फिर दो रक्अतें (सुन्नत) फ़ज्र की नमाज़ से पहले पढ़ते।

दूसरी रिवायत है :

(٣٣٢) عن عامر الشعبی قال سالت ابن عباس وابن عمر کیف کان صلوۃ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم باللیل فقالا ثلاث عشرۃ رکعۃ ثمان ویوتر بثلاث رکعتین بعد الفجر۔ (طحاوی جلداول)

हज़रत इमाम आमिर शअबी फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर से पूछा कि रसूलुल्लाह स० की रात को नमाज़ कैसी होती थी? उन दोनों बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि आंहज़रत स० तेरह रक्अतें पढ़ते थे, पहले आठ रक्अतें (तहज्जुद की) फिर तीन तक्अतें वित्र की फिर सुबह सादिक़ के बाद फ़ज्र से पहले वाली दो रक्अत।

यह हैं तबलीग़ वालों के दलाइल, कि वित्र तीन रक्अतें हैं क्योंकि हुज़ूर अकरम स० ने सलात बुतैरह से मना फ़रमाया है कि एक रक्अत नमाज़ पढ़ी जाये इसकी मुमानिअत फ़रमाई है इसलिये भी और उन ऊपर वाली रिवायतों के पेशे नज़र हमारा अमल यही है कि आप स० तीन रक्अतें वित्र की नमाज़ पढ़ते थे न कि एक रक्अत, इसके अलावा और भी अहादीस मौजूद हैं

मगर यहां पर इख़्तिसार मतलूब है।

क्या वित्र वाजिब है?

जवाब:— हां! वित्र वाजिब है, देखो—

(۴۴۳) عن عبد الله بن بريد عن ابيه قال سمعتُ رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول الوتر حق فمن لم يوتر فليس منا الوتر حق فمن لم يوتر فليس منا الوتر حق فمن لم يوتر فليس منا. (ابوداؤدجلداول)

हज़रत बरीरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह स० को सुना आप स० फ़रमा रहे थे, वित्र हक़ है (यानी उसको पढ़ना वाजिब है) जिसने वित्र न पढ़ी वह हममें से नहीं, वित्र हक़ है (यानी उसको पढ़ना वाजिब है) जिसने वित्र नहीं पढ़ी वह हममें से नहीं, वित्र हक़ है (यानी उसको पढ़ना वाजिब है) जिसने वित्र न पढ़ी वह हममें से नहीं है।

देखो वित्र को न पढ़ने वाले के लिये यह कहा गया है कि वह हममें से नहीं, यह सख़्ती वुजूबियत की दलील है और इस तरह की दीगर अहादीस के पेशे नज़र हमने वित्र को वाजिब कहा, आगे देखो, हुज़ूर अकरम स० ने वाजिब सरीह अलफ़ाज़ में फ़रमाया :

हुज़ूर अकरम स० का फ़रमान 'वित्र वाजिब है।'

(۴۴۴) عن ابی ایوب الانصاری رضی الله تعالی عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم الوتر حق واجب على كل مسلم.

(ابوداؤدجلداول،دارقطنی جلددوم)

हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह स० ने फ़रमाया वित्र का पढ़ना हक़ है (ज़रूरी है) वाजिब है हर एक मुसलमान पर।

दूसरी हदीस :

(۴۴۵) عن عبد الله عن النبی صلی الله علیه وسلم قال الوتر واجب علی کل مسلم (کشف الاستار عن زوائد البزار، جلد اول)

अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द रज़ि० से रिवायत है कि आप स० ने फ़रमाया वित्र वाजिब है हर मुसलमान पर।

और इससे कौनसी सरीह और वाज़ेह हदीस मतलूब है क्या हुज़ूर स० को ही बुला लो मुनाफ़िक़ की तरह आपके क़ौल की बे हुरमती न करो वरना दुनिया में और आख़िरत में बे लगाम होकर दोज़ख़ में डाल दिया जायेगा अगर बात हक़ है तो नाक न चढ़ाओ याद रहे कि यह आप स० का क़ौल है इसका अदब दिलो जान से होना ज़रूरी है, तुम क्या अदब करोगे तुम तो कुरआन और हदीस पर अ़मल करने वालों को काफ़िर कहते हो ख़ुद को देखते नहीं, आ गये हनफ़ियों को ललकारने वाले, तुम लफ़्ज़े हदीस की (हा से) भी वाक़िफ़ नहीं हो, ख़ैर वह जानें और उनके अअ़माल हमें तो अपने दलाइल पेश करने हैं। ख़ैर मालूम हुआ कि वित्र वाजिब साबित मिनलहदीस है और यही क़ौल अहनाफ़ का है जो हदीस से साबित है।

हनफ़ी तबलीग़ वाले तरावीह की बीस रक्अ़तें क्यों पढ़ते हैं?

(۴۴۶) عن ابن عباس رضی الله تعالیٰ عنهما ان رسول الله صلی الله علیه وسلم کان یصلی فی رمضان عشرین رکعة والوتر.

(حوالہ مصنف ابن ابی شیبة جلد دوم، بیہقی جلد دوم)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स० रमज़ानुल मुबारक में बीस रक्अ़तें और वित्र पढ़ा करते थे।

हुज़ूर अकरम स० ने जमाअत के साथ बीस रक्अते पढाई हैं

(٣٤٧) عن جابر بن عبد الله قال خرج النبی صلی الله علیه وسلم ذات لیلة فی رمضان فصلی الناس اربعة وعشرین رکعة واوتر بثلاثة

(تاریخ جرجان لابی قاسم حمزة بن یوسف السہمی 275A)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० फ़रमाते हैं कि रमज़ानुल मुबारक में एक रात नबी स० बाहर तशरीफ़ लाये (मस्जिद से) सहाबा किराम को चार रक्अत ईशा की और बीस रक्अतें (तरावीह की) और तीन रक्अतें वित्र पढ़ाई।

(٣٤٨) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم عليكم بسنتی وسنة الخلفاء الراشدين. (ترمذی، ابن ماجہ)

ऐ अफ़रादे उम्मत! तुम पर लाज़िम है मेरा और ख़ुलफ़ाए राशिदीन का तरीका।

इसके पेशे नज़र अब सहाबा रज़ि० और ख़ुलफ़ा रह० का अमल देखिये :

(٣٤٩) عن الحسن عن عمر بن الخطاب رضی الله تعالی عنه جمع الناس علی ابی بن کعب فکان یصلی لهم عشرین رکعة. (ابوداؤد جلد اول)

हज़रत हसन से रिवायत है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने लोगों को हज़रत उबैय बिन कअ़ब रज़ि० के पीछे इकट्ठा कर दिया, आप रज़ि० उन्हें बीस रक्अ़तें पढ़ाते थे।

(٣٥٠) عن ابی عبد الرحمٰن السلمی عن علی قال دعی القُرّاءُ فی رمضان فامر منهم رجلا یصلی بالناس عشرین رکعة قال وکان علی یوتر بهم. (بیہقی جلد دوم)

हज़रत अबू अब्दुर्रहमान सुलमी फ़रमाते हैं कि हज़रत अ़ली रज़ि० ने रमज़ानुल मुबारक में क़ारी हज़रात को बुलाया और उन में से एक को हुक्म दिया कि वह लोगों को बीस रक्अ़त तरावीह नमाज़ पढ़ाये हज़रत अब्दुर्रहमान फ़रमाते हैं कि हज़रत अ़ली

तरावीह के बाद लोगों को वित्र की नमाज़ पढ़ाते थे।

और बीस रकअत पर तमाम सहाबा रज़ि० का इजमाअ है क्या सहाबा रज़ि० शरीअत के ख़िलाफ़ काम करने के लिये तैयार हो जायेंगे जबकि एक देहाती ने हज़रत उमर रज़ि० की तरफ़ तलवार से इशारा करके कहा था कि अगर आप (हज़रत उमर रज़ि०) हम लोगों को शरीअत के ख़िलाफ़ हुक्म देंगे तो हम आपको इस तलवार से दुरुस्त कर देंगे इस पर हज़रत उमर रज़ि० बहुत खुश हुये कि कोई तो है जो हमारी भी इस्लाह करे, तो बताओ अगर यह बीस रकअत का पढ़ना गुनाह होता तो क्या सहाबा रज़ि० इस बात को कुबूल करते? हरगिज़ नहीं इससे मालूम हुआ कि बीस रकअत पढ़ना सुन्नते रसूल और सुन्नते सहाबा रज़ि० भी है जैसा कि ऊपर की अहादीस से मालूम हुआ।

तबलीग़ वाले औरतों को मसाजिद में क्यों नहीं लाते?

(۳۵۱) عن عبد الله ابن مسعود عن النبی صلی الله علیه وسلم قال صلوة المرأة فی بیتها افضل من صلاتها فی حجرتها وصلواتها فی مخدعها افضل من صلواتها فی بیتها. (ابوداؤد، مشکوٰۃ)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया औरत की नमाज़ अफ़ज़ल है जो छोटे कमरे में पढ़ी जाये उस नमाज़ से जो सहन में पढ़ी जाये और औरत की वह नमाज़ अफ़ज़ल है जो कोठड़ी में मख़फ़ी कमरे में पढ़ी जाये उस नमाज़ से जो सहन में पढ़ी जाये (जो कोठड़ी से बड़ा हो)

दूसरी हदीस :

(۳۵۲) عن عائشة رضی الله تعالی عنها زوج النبی صلی الله علیه وسلم قالت لو ادرك رسول الله ما حدث لَمَنَعَهُنَّ المسجد كما منعت

نساء بنى اسرئيل قال يحيى فقلت لعمرة امنعت نساء بنى اسرئيل قالت نعم (ابوداؤد قريب من ہذا فی المسلم)

हुज़ूर अकरम स० की बीवी हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि अगर रसूलुल्लाह स० मुशाहिदा करते जो औरतों ने फ़ित्ने पैदा कर रखे हैं तो ज़रूर बिज़्ज़रूर (हुज़ूर स० के मिज़ाज के पेशे नज़र फ़रमाया) आप स० औरतों को मस्जिद में जाने से, नमाज़ पढ़ने से मना फ़रमाते जिस तरह बनी इसराईल की औरतों को मना किया गया, हज़रत यह्या ने फ़रमाया हज़रत उमरह से क्या बनी इसराईल की औरतों को (इजाज़त के बाद) मना किया गया था हज़रत उमरह ने कहा, हां (औरतों को इजाज़त के बाद मुमानिअत फ़रमा दी गई)

देखिये इन अहादीस से औरतों की नमाज़ को ख़ैर और फ़ज़ीलत का जो मक़ाम हासिल हो रहा है वह घर में और घर में भी जो मख़सूस कमरा हो जिसमें सिर्फ़ इसके मेहरम ही जा सकते हों वहां नमाज़ पढ़ना सहन में पढ़ने से अफ़ज़ल फ़रमाया क्योंकि हाल में ग़ैर मेहरम भी आ जाते हैं जिनसे इज्तिनाब करना ज़रूरी है।

जब हुज़ूर अकरम स० औरत की नमाज़ को घर में अफ़ज़ल बता रहे हैं तो फिर अफ़ज़ल को छोड़कर ग़ैरे अफ़ज़ल बल्कि फ़ित्ने में डूबने की क्या ज़रूरत है आज तो कोई पार्क बद फ़ेअलियों से और इश्क़ बाज़ियों से ख़ाली नहीं मिलता और न ही कोई फ़िल्म हाल इश्क़ बाज़ी से ख़ाली है न कोई बाज़ार इश्क़ बाज़ी से ख़ाली, क्या तुम मस्जिद को भी इश्क़ बाज़ी की जगह बनाना चाहते हो? मैं कहता हूं कि जब तुम औरतों और लड़कियों को मस्जिद में आने की इजाज़त दोगे तो लोग जिस तरह पार्क और फ़िल्म हॉल के एड्रेस देते हैं इश्क़ बाज़ी के फ़ेअल को अन्जाम देने के लिये फिर वह दोनों इस मुतअय्यन शुदा जगह पर

जाकर अपने इश्क़ को ठंडक पहुचाते हैं अगर मस्जिद में औरतों को लाओगे तो आवारा लड़के मस्जिद में भी इश्क़ बाज़ी शुरू कर देंगे और वह भी गुनाह में पड़ेंगे और पूरे माहौल को ख़राब कर देंगे।

इस फ़ित्ने के पेशे नज़र हज़रत आइशा रज़ि० ने मिज़ाजे मुहम्मद स० को बताया कि आप स० अगर उन औरतों के फ़ित्ने को देखते जो आज कल के दौर मे हो रहे हैं इसको देखते तो आप स० इस फ़ित्ने को देखकर औरतों को मसाजिद में नमाज़ पढ़ने से मना ही नहीं करते बल्कि फ़रमाया ज़रूर बिज़्ज़रूर मना फ़रमाते। इस्लाम फ़ित्नों और गुनाहों से और उन अफ़आल से जो गुनाहों की पैरवी की तरफ़ माइल करें उनको मना करने के लिये आया है न कि उनको ताक़त देने के लिये इस्लाम आया जैसा कि आज बअ़ज़लोगों ने अपनी नफ़सानी, शैतानी नियत को पूरा करने के लिये हदीस का सहारा लेकर यह कहना शुरू किया कि आप स० के दौर में औरतें मसाजिद में नमाज़ पढ़ती थीं हम अपनी औरतों को क्यों मसाजिद में न लायें देखो इन नफ़्स परसतों को, नमाज़ तो साल में एक बार पढ़ते हैं और दाढ़ी का मसला आये तो कहते है कि दाढ़ी का हुक्म हुज़ूर अकरम स० ने नहीं फ़रमाया देखो दाढ़ी के मसले में हुक्म का इन्तिज़ार है।

और औरतों के मसाजिद में ले जाने के लिये सिर्फ़ इशारा काफ़ी है वह भी कमज़ोर और जिसके बारे में खुद आप स० ने फ़रमाया घर में पढ़ लो बेहतर है और हज़रत आइशा रज़ि० ने तो ग़ैर मुक़ल्लिदीन के मुंह को ताला ही लगा दिया कि अगर इस दौर में आप स० मौजूद होते तो ज़रूर औरतों को मसाजिद में नमाज़ पढ़ने से मना फ़रमाते और जब दाढ़ी रखने का मसला आया तो कहते हैं कि कोई सरीह हुक्म आप स० का नहीं है,

जिनसे मेरी मुलाक़ात हुई थी उन्होंने यही कहा था, देखो इन जाहिलों को कि खुद को अहले हदीस कहते हैं इनको यह भी पता नही कि आप स० ने हुक्म दिया या नही? जाहिलो वक्त हो तो जाकर देवबन्दियों के मदरसों में पढ़ो वहां तमाम अहादीस पता हो जायेंगी। बस मैं इतना कहता हूं कि उनके तमाम अफ़आल व अअ़माल नफ़्स और ख़्वाहिशात के ताबेअ़ हैं जभी तो औरतो से नज़र मिलाने के लिये फ़ित्ने में डूबने के लिये मसाजिद में लाने का ऐहतिजाज कर रहें हैं जाओ अपने घर की औरतों को ले जाया करो कुछ दिनों में काला दाग़ तुम्हारे ख़ानदान पर न लगा तो मुझको कहना। हज़रत आइशा रज़ि० ने सहाबा रज़ि० के आख़री दौर में फ़ित्ने को देखकर यह फ़रमाया था तो क्या ख़्याल है तुम्हारे इस नंगे और शैतानी दौर के बारे में जिस दौर में चन्द बरस का बच्चा भी फ़िल्म और टीवियों के ज़रिये मुकम्मल जिन्सियात का कोर्स कर लेता है जभी तो कॉलेज और स्कूलों और यूनिवर्सिटियों में ज़िना के चर्चे होते हैं इश्क़ बाज़ी के चर्चे होते हैं अरे अक़्ल के दुश्मनों कुछ तो अक़्ल से काम लो शरीअ़त का इल्म नहीं है तो तुम्हारे पास क्या अक़्ल भी नहीं, सोचो तो सही किस वजह से हम औरतों को मसाजिद में आने की इजाज़त दें क्या मसाजिद में औरत की नमाज़ अफ़ज़ल होगी क्या औरत के लिये नमाज़ मसाजिद में फ़र्ज़ है क्या वाजिब है?

फ़िर यह बे-बुनियाद और शर्री एहतिजाज क्यों किया इस क़द्र जो फ़ित्ने पैदा हुये और हो रहे हैं, कम हैं? जो तुम मुसलमान औरतों को भी बाज़ार और रास्तों की मसाजिद में बुलाकर अपनी माओं और बहनों की इज़्ज़त को रास्तों पर लाना चाहते हो क्या तुमको अपनी माओं और बहनो की इज़्ज़त मेहबूब नहीं है फिर क्यों शैतान को अपने ज़हन का सरदार बना रखा है आज़ाद

मिज़ाजी छोड़ दो अगर नहीं छोड़ते हो तो जाओ मरो, मगर इस्लाम में फ़ित्नों को दाख़िल न करो ख़ुदारा इस्लाम को फ़ित्नों से बचाओ एक ही तो मज़हब दुनिया में बरहक़ है क्या तुम इस मज़हब को भी यहूद व नसारा की तरह बे–हक़ बनाना चाहते हो कुछ तो अक़्ल से काम लो कुरआन नाज़िल क्यों हुआ दो बातों को लेकर कुरआन आया याद रखो एक हल्ले अहकाम और दूसरी चीज़ पहलों के वाक़िआत से सबक़ हासिल करने के लिये अक़्लमन्दों के लिये और दीनी मिज़ाज वालों के लिये न कि सलमान रुशदी जैसा ज़हन रखने वालों के लिये, उन पर अल्लाह का फ़ैसला है :

خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰی قُلُوْبِهِمْ الخ

ख़ैर मालूम हुआ कि औरतों को मसाजिद में नमाज़ पढ़ना इस दौर के ऐतिबार से जाइज़ नहीं और अगर फ़ित्ने का यक़ीन हो तो मसाजिद में औरतों का नमाज़ पढ़ना हराम है।

हनफ़ी तबलीग़ वाले ज़ेरे नाफ़ हाथ क्यों बांधते हैं?

(۳۵۳) عن وائل بن حجر قال رايتُ النبی صلی الله علیه وسلم یضع بیمینه علی شماله فی الصلوة تحت السرة. (بحوالہ مصنف ابن ابی شیبہ)

हज़रत वाइल बिन हुज्र कहते हैं कि मैंने आप स० को देखा कि आप अपने दाएं हाथ को अपने बायें हाथ पर रखते थे नमाज़ में (और हाथ बांधने की जगह) नाफ़ के नीचे थी।

यह रिवायत इन नुस्ख़ों में अधूरी है जो ग़ैर मुक़ल्लिदीन के यहा से शाएअ हुये हैं वरना तो दूसरे नुस्ख़ों में यह पूरी हदीस मौजूद है तफ़्सील के लिये देखिये 'बज़्लुलमजहूद' जिल्द2पेज 23,

दूसरी रिवायत है :

(۴۵۴) عن ابی هريرة رضی الله تعالٰی عنه قال وضع الكف علی الكف فی الصلوة تحت السرة. (ابوداؤدص۱۱۰حاشیہ نمبر۳)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर पाक स० ने एक हाथ को दूसरे हाथ पर रखा नमाज़ में नाफ़ के नीचे।

तीसरी रिवायत है :

(۴۵۵) عن انس رضی الله عنه قال ثلاث من اخلاق النبوة تعجيل الافطار وتاخير السحور ووضع اليد اليمنٰی علی اليسرٰی فی الصلوة تحت السرة. (ابوداؤدص۱۱۰حاشیہ نمبر۳)

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि तीन चीज़ें अख़लाक़े नुबुव्वत में से हैं एक तो जल्दी रोज़ा खोलना (मुराद मुक़र्ररा वक़्त होते ही) दूसरी (चीज़ मुक़र्ररा वक़्त के) आख़िर हिस्से तक सहरी खाना और दायें हाथ को बायें हाथ पर नमाज़ में नाफ़ के नीचे रखना। नाफ़ के नीचे हाथ बांधने की दूसरी रिवायत :

हज़रत अ़ली रज़ि० का फ़रमान नाफ़ के नीचे हाथ बांधने के बयान में

(۴۵٦) عن علی قال انّ من السنة فی الصلوة وضع الكف علی الكف تحت السُّرّة. (ابوداؤدص۱۱۰حاشیہ نمبر۳)

हज़रत अ़ली रज़ि० का फ़रमान है कि बेशक (यह भी) नमाज़ की सुन्नत में से है कि एक हाथ को दूसरे हाथ पर रखे नाफ़ के नीचे।

इन तमाम रिवायतों से यह अज़हर और रोज़े रोशन की तरह साफ़ हो गया है कि हाथ का नाफ़ के नीचे बांधना सुन्नत है जब ही तो हज़रत अ़ली रज़ि० ने सुन्नत कहा जब हज़रत अनस रज़ि० ने अख़्लाक़े नुबुव्वत में से उसको शुमार कराया।

दूसरी अक़्ली दलील :

यह बात सबको पता है कि अल्लाह के दरबार में आजिज़ी जिस कद्र होगी और आजिज़ी पर दलालत करने वाले अफ़आल जिस कद्र होंगे वह अल्लाह को ज़्यादा मेहबूब हैं हाथों को सीने पर रखना हराम तो नहीं मगर दरबारे ख़ुदा के आदाब और आजिज़ी के ख़िलाफ़ है कि आदमी अल्लाह के पास भीख मांगने और अपनी आजिज़ी ज़ाहिर करने जाता है कुश्ती और पहलवानी दिखाने नहीं जाता है जो वह सीने पर हाथ बांधकर पहलवानों और कुश्ती लड़ने वालों की तरह सूरत इख़्तियार करे बल्कि दिल में भी आजिज़ी हो और अफ़आल व हरकात में भी आजिज़ी का असर हो और ज़ाहिर बात है कि नाफ़ के नीचे बांधने में आजिज़ी ज़्यादा है इसके बिलमुकाबिल कि आदमी सीने पर हाथ बांधे हराम और नाजाइज़ तो दोनों भी नहीं बल्कि दोनों में जो झगड़ा है वह अफ़ज़लियत का है हमने आजिज़ी ज़ाहिर करने वाले फ़ेअ़ल को इख़्तियार किया (यानी नाफ़ के नीचे बांधने को) और (कुश्ती लड़ने वाले बअ़ज़ लोगों ने) पहलवानों और कुश्ती लड़ने वाले तरीके को अफ़ज़लियत दी (यानी सीने पर हाथ बांधने को)

जिहाद भी एक तबलीग़ है

मुअ़ज़्ज़ज़ काराईने किराम! तबलीगे दीन के दो पहलू हैं एक वह दावत की शक्ल जो आजकल राइज है मदारिस और जमाअ़ते तबलीग़ की शक्ल में और दूसरा दीनी पहलू जिहाद है हुज़ूर अकरम स० और आपकी उम्मत का यह तरीक़ा था और है और इन्शाल्लाह रहेगा कि हमने इन्सानियत को और शफ़क़त को और इन्साफ़ को पेश रखा, नर्मी को अपना औढ़ना बिछोना बनाया, ख़ैरख़्वाही हमारी शान रही है अमन को क़ाइम करना हमारा मक़सदे असली रहा है, दुश्मन को भी दोस्त रखना हमारा शेवा था और है, ज़ालिमों के ख़िलाफ़ तलवार को उठाना हमारा फ़रीज़ा

था और है. सरकशों को दफ़्न करना हमारा लाज़मी फ़ेअल था और है। ज़बान से शफ़क़त और उम्दा अख़लाक़ से राहे हक़ पर लाना और न मानने और सरकशी और तुग़यानी पर कमर बांधने वालों के ख़िलाफ़ जिहाद करना हमारी इबादत है इसलिये कोई यहूदी या कोई ईसाई या कोई हिन्दु यह न समझ बैठे कि जिहाद तो जुल्म और ज़्यादती का नाम है और जिहाद तो क़ौम को हलाक करने का तरीक़ा है जिहाद राक्शस और बे–अक़लों का फ़ेअल है. नहीं नहीं जिहाद तो जुल्म व ज़्यादती को और बुराइयों को और लग़वियात को और कुफ़्र और सरकशी को ख़त्म करने और दफ़्न करने का नाम है।

अब एक और बात याद रखिये तमाम कुफ़्फ़ार क़ौमों में जिहाद का वुजूद व हुक्म है सिर्फ़ इस्लाम में ही नहीं बल्कि हज़रत मूसा अ़लै० ने जिहाद किया और हज़रत ईसा अ़लै० ने जिहाद किया और हज़रत दाऊद अ़लै० ने जिहाद किया, राम जी ने जिहाद किया, रावण से लक्ष्मन ने जिहाद किया, हनुमान ने जिहाद किया. कृष्ण ने जिहाद किया, ऋषियों ने जिहाद किया, और अवतारों ने जिहाद किया, देखो महाभारत जिहाद से भरी हुई है, रामायण जिहाद के वाक़िआत से ख़ाली नहीं, वेदों को देखो जिहाद का तज़्किरा इसमें भी है, गीता देखो जिहाद का हुक्म इसमें भी है, ज्ञान को देखो जिहाद का तज़्किरा इसमें भी मिलता है, तौरेत को देखो जिहाद का हुक्म इसमें भी है, इंजील को देखो जिहाद से वह भी ख़ाली नहीं अगरचे सबका तरीक़ा अपने अपने मज़हब के मुताबिक़ है लेकिन बअ़ज़ इस्लाम के दुश्मन सिर्फ़ इस्लाम के ख़िलाफ़ ही कहने को पसन्द करते हैं।

चाहे वह हक़ हो या ना–हक़ हो क्योंकि उनको तो कोई फ़िक्र नहीं है हक़ राह की, वह गुमराह ही रहना चाहते हैं कहते

हैं कि इस्लाम ने जिहाद का हुक्म देकर इन्सानियत पर ज़ुल्म किया बताओ तुम सारी अपनी अपनी मज़हबी किताबों में जो जिहाद का हुक्म है उसको भी तुम ज़ुल्म कहोगे अगर उसको भी ज़ुल्म कहोगे तो पहले खुद को ज़ालिम कहो फिर दूसरों को कहना ख़ैर इस्लाम ने फ़ौरी तौर पर जिहाद का हुक्म नहीं दिया बल्कि उस वक़्त जिहाद का हुक्म दिया जब मुख़ालिफ़ीन इस्लाम इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िशें करें, मसाजिद और मदारिस की बे–हुरमती करें और उस पर पाबन्दी आइद करें मुसलमानों पर बेजा ज़ुल्म करें।

मुसलमानों के मज़हब व इस्लाम पर पाबन्दियां और कीचड़ उछालने लगें, इस्लामी तालीमात पर और तबलीग़ी काम पर पाबन्दी लगायें तो ज़ाहिर बात है कि यह मुख़ालिफ़ीन का ज़ुल्म है और इस ज़ुल्म से निकलने के लिये इस्लाम ने जिहाद का हुक्म दिया और जब जिहाद फ़र्ज़ हो जाये तो हर एक को जिहाद करना फ़र्ज़ हो जाता है वरना अल्लाह तआला के यहां इससे सवाल होगा कि इस्लामी उलमा ने शरीअत की रोशनी में जिहाद को फ़र्ज़ क़रार दिया था मेरे दीन की हिफ़ाज़त के लिये तब भी तू घर में क्यों रहा? बताओ घर मे रहने वाला और जान बचाने वाला अल्लाह की पकड़ के बाद किससे मदद तलब कर सकता है? ख़ैर इस्लाम किसी को छेड़ता नहीं और जब छेड़ता है तो मुख़ालिफ़ीन को मिटा देता है और न हम और न हमारा इस्लाम ज़ालिम है अगर ज़ालिम होता तो आज हिन्दुस्तान में या दूसरे मुख़ालिफ़ीन के मुमालिक में या तो मुसलमान ही होते या इस्लाम का मुख़ालिफ़ मगर इस्लाम ने जहां तक हो सके सब्र का हुक्म दिया जब ज़ुल्म बढ़ जाता है तो ज़ाहिर बात है इन्सान कब तक किसी की कड़वी कसीली सुन सकता है तो कैसे इस्लाम किसी

की कड़वी कसीली सुने? हमने नहीं कहा कि हिन्दुस्तान मे जिहाद फ़र्ज़ है या किसी और मुल्क में जिहाद फ़र्ज़ है लेकिन जब ज़ुल्म बढ़ेगा और सामने वाला जिहाद के बग़ैर संभलने का नाम न ले तो फिर इस्लाम जिहाद को फ़र्ज़ कर देता है और यह भी इन्साफ़ है ख़ैर देखो क़ुरआन और हदीस क्या कहते हैं।

इस्लाम ने बे वजह क़त्ल करने वाले को अज़ाब की वईद सुनाई है

(٤٥٧) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اول مايحاسب به العبد الصلوة واول مايقضى بين الناس يوم القيامة الدماء. (نسائی)

हुज़ूर अकरम स० ने फ़रमाया क़ियामत के दिन बन्दे से सबसे पहले जिस चीज़ का हिसाब लिया जायेगा वह नमाज़ है (और क़ियामत में) जिस चीज़ का पहले फ़ैसला होगा लोगों के दर्मियान वह ख़ून है।

पहले जुज़ में फ़रमाया कि तमाम इबादत में मामूरात में जिसका हिसाब होगा वह नमाज़ है और गुनाहों और ज़ुल्म व ज़्यादती में से जिसका पहले फ़ैसला होगा वह शख़्स होगा जिसका ना–हक़ ख़ून किया गया होगा चाहे वह क़त्ल होने वाला काफ़िर हो या यहूदी या ईसाइ अगर किसी दीनी वजह के अलावा मारा गया हो तो उससे अल्लाह ज़रूर पूछेगा, हां अगर कोई मअ़कूल बात है या वह ज़ुल्म कर रहा हो तो तुमने अपना माल व जान व इज़्ज़त बचाने के लिये दीन की हिफ़ाज़त के लिये उसको मारा हो तो अब वह ज़ुलमन और जबरन और ज़्यादती के तौर पर मारने वाला और क़त्ल करने वाला न होगा बल्कि असल ग़लती उस से हुई है इसलिये पहले वाला मुजरिम है और जिहाद के लाज़िम होने के बाद मुक़ाबिल को मारना गुनाह नहीं है क्योंकि

जिहाद ख़ुद लाज़िम होता है जब ज़ुल्म की ज़्यादती हो जाती है फ़ुज़ूल ही जिहाद लाज़िम व फ़र्ज़ नहीं होता है।

देखो इस हदीस में हुज़ूर अकरम स० ने हर एक का बेजा ख़ून करने से मना फ़रमाया है और ख़बरदार किया है कि ख़बरदार हो जाओ कि कोई आदमी न किसी मुस्लिम को और न यहूदी को और न नसरानी को और न किसी हिन्दू को बग़ैर उसके ज़ुल्म के न मारे बल्कि वह ज़ुल्म भी करे तो एक हद तक दर गुज़र करो मगर जब वह सर पर ही बैठ जाये तो ज़ाहिर बात है जो आप करेंगे या हुक्म देंगे वही हुक्म इस्लाम ने भी दिया है मगर बेजा क़त्ल करने से डराया है कि ख़बरदार हो जाओ सबसे पहले अल्लाह जिस जुर्म की अ़दालत क़ाइम करेगा वह बेजा और ज़ुलमन ख़ून करने और किये जाने वाले की होगी, यह है हमारा इस्लाम जिसने ज़ुल्म से बेजा ख़ून करने से सख़्ती से मना किया और अ़ज़ाब से डराया फिर भी मुख़ालिफ़ क़ौम यह कहे कि इस्लाम ज़ालिम है यह तो उसकी कम फ़हमी और दुश्मनी है, इसका हम क्या कर सकते हैं।

अल्ल़ाह तआ़ला ने जिहाद का हुक्म दिया

قال الله تعالٰی اَلَّذِیْنَ آمَنُوْا یُقَاتِلُوْنَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَالَّذِیْنَ کَفَرُوْا یُقَاتِلُوْنَ فِیْ سَبِیْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْا اَوْلِیَاءَ الشَّیْطَانِ اِنَّ کَیْدَ الشَّیْطَانِ کَانَ ضَعِیْفًا ○ (سورۂ نساء)

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया जो लोग ईमान वाले हैं वह अल्लाह की राह में जंग करते हैं और जो काफ़िर नाफ़रमान हैं वह ज़ुल्म व सरकशी की ख़ातिर लड़ते हैं शैतान के दोस्तों (कुफ़्फ़ार) से लड़ो कि शैतान का जंगी पहलू (मुराद कुफ़्फ़ार) कमज़ोर है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि दीन के ज़ाहिर होने के बाद हक़ बात मालूम होने के बाद भी यह लोग ज़ुल्म और सरकशी

करें उन ज़ालिमों से जंग करो क्योंकि यह शैतान के दोस्त हैं जिस तरह शैतान ने हक़ के मालूम होने के बाद भी हक़ से सरकशी की, यह कुफ़्फ़ार भी इस्लाम से सरकशी करते हैं उन ज़ालिमों से जिहाद करो उनसे न डरो उनके पास हथियार चाहे कितने ही हों। लेकिन अल्लाह की मदद के सामने यह हेच हैं तुम अल्लाह पर भरोसा रखो और अपनी ताक़त के बक़द्र पुरख़ुलूस कोशिश करो, अपनी तरफ़ से कोई कमी बाक़ी न रखो ऐसे वक़्त में अल्लाह बन्दे के इख़्लास के बक़द्र मदद करता है।

देखो वह सहाबा की तीन सौ तेरह की जमाअ़त ने हज़ारों की ऐसी जमाअ़त को जो हथियारों से मुसल्लह थी ऐसा सबक़ सिखलाया जिस वाक़िअ़े से आज भी कुफ़्फ़ार हैरान हैं कि यह कैसे हो सकता है मगर उनको यह कहां पता है कि मुसलमानों को तबलीग़ के साथ जिहाद का शौक़ और जोश भी रखना फ़र्ज़ है क्योंकि हदीस में है जिसकी मौत आये और उसके दिल में जिहाद की ख़्वाहिश न थी उसकी मौत निफ़ाक़ पर हुई क्योंकि मुसलमान की यह शान ही नहीं है कि वह जिहाद से डरे और ग़ैर ज़ालिमों से जिहाद करे बल्कि जिहाद तो सरकशों से किया जाता है इसलिये मुसलमान को हर वक़्त तैयारी करनी चाहिये और तैयार रहना चाहिये क्योंकि इस्लाम का एक पहलू दावत व तबलीग़ का है और दूसरा आख़री पहलू तलवार यानी जिहाद का है जिसको आज मुसलमानों से निकालने की साज़िश हो रही है। ख़बरदार जिहाद को कभी न भूलना न छोड़ना क्योंकि जिहाद बहुत बड़ी इबादत है इससे ज़ालिमों को और सरकशों को ख़त्म किया जाता है और जो ज़ालिमों से जिहाद न करना चाहता हो गोया वह ज़ालिमों से और सरकशों से ख़ुश है और अल्लाह ज़ालिमों से दोस्ती करने वालों को पसन्द नहीं करता।

ख़ैर मालूम हुआ जिहाद ज़रूरी है मगर ज़ालिमों से और इस्लाम से सरकशी करने वालों से न कि मज़लूमों और बेकसों से।

हक़ पर जिहाद करने वालों को अल्लाह तआला पसन्द करता है

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَأَنَّهُم بُنْيَانٌ مَّرْصُوصٌ ۝ (الصف)

अल्लाह तआला उन लोगों से मुहब्बत करता है जो उसकी राह में इस तरह सफ़ें बांधे हुये जमकर लड़ते हैं गोया वह एक सीसा पिलाई हुई मज़बूत इमारत है।

देखो अल्लाह तआला ने सरकशों से जिहाद करने वालों की और मैदान में जमने वालों की तारीफ़ की है और अपना मेहबूब बनाया, अब मुसलमान सोचें क्या वह अल्लाह के मेहबूब बनना चाहते हैं या अल्लाह के दुश्मन? जिहाद करने वाला मेहबूब है मगर वक़्त पर शराइत के पाये जाने के बाद और जो वक़्त पर भी जिहाद न करे वह बुज़दिल है और अल्लाह बुज़दिल नहीं बल्कि अल्लाह के दुश्मन बुज़दिल हैं गोया कि जो जिहाद से डरे वह भी दुश्मने ख़ुदा हुआ।

जिहाद पर उभारने का हुक्म अल्लाह तआला ने दिया है

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ إِن يَكُن مِّنكُمْ عِشْرُونَ صَابِرُونَ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ وَإِن يَكُن مِّنكُم مِّائَةٌ يَغْلِبُوا أَلْفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ۝ (انفال)

अल्लाह ने फ़रमाया ऐ (प्यारे) नबी मोमिनों को जिहाद पर उभारो (और यह बता दो कि) अगर मोमिन हज़रात बीस अफ़राद

हों साबित क़दमी वाले तो वह ग़ालिब हों दो सौ पर और अगर हों तुम में सौ शख़्स तो वह ग़ालिब हों हज़ार काफ़िरों पर इस वास्ते कि वह लोग समझ नहीं रखते हैं (मुराद उनको अल्लाह की खुफ़िया मदद का इल्म नहीं है)

अल्लाह तआला ने मुसलमानों को बता दिया कि अगर तुम कम हो या हथियार कम हों तुम हरगिज़ काफ़िरों से मरऊ़ब न होना क्योंकि तुम्हारे साथ अल्लाह की मदद है और अगर शहीद हो जाओ तो जन्नत है और काफ़िर मर जाये तो सीधा दोज़ख़ी है क्योंकि उसने अपने सर को अल्लाह के सामने झुकाने के अ़लावा दूसरों के सामने झुकाया इसलिये यह मुशरिक है और मुशरिक का ठिकाना दोज़ख़ है जब कि मर्द अपनी बीवी के साथ दूसरे मर्द का रहना पसन्द नहीं करता तो बताओ अल्लाह तआ़ला क्या हम से भी बेशर्म है जो पत्थरों और सांपों की और इन्सानों की मूर्तियों की पूजा करने के बावुजूद अल्लाह सिर्फ़ देखता ही रहे, ख़ैर जिहाद का हुक्म अल्लाह ने दिया और मैदान में जमने का हुक्म फ़रमाया कि काफ़िरों के बम और तोपों से न घबराना बल्कि अल्लाह पर भरोसा रखना और जो कुछ साथ हो उसको लेकर ही मैदान में जम जाना, कुफ़्र ने न आज तक कुछ बिगाड़ा और न बिगाड़ सकेगा, इन्शाल्लाह। मगर शुरूआ़त हमसे न हो बल्कि ज़ालिमों को शुरूआ़त करने दें भाइयों जिहाद का जज़्बा भी और जिहाद की तैयारी भी हर वक़्त ज़रूरी है कि हम मुसलमान हैं और मुसलमान की शान यही थी और है और होनी चाहिये कि वह मौत से न डरे बल्कि मौत ख़ुद मुसलमान से डरती है।

ज़ोरे बातिल कुव्वते ईमां दबा सकता नहीं
सर कटा सकता है मोमिन सर झुका सकता नहीं

जो जिहाद से रोके उसके लिये वईद

اِشْتَرَوْا بِآيَاتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ○ (توبہ)

अल्लाह तआला ने फ़रमाया उन लोगों ने अल्लाह की बातों का सौदा बड़ी ही कम कीमत पर किया और वह इसकी राह से रोकने लगे मगर यह बहुत बुरा काम है जो वह करते हैं। (मुराद जिहाद से रोकना)

इस आयत में अल्लाह ने उन ख़बीसुन्नफ़्स लोगों का ज़िक्र किया जो जिहाद से रोकते हैं और इस्लाम से रोकते हैं और अल्लाह ने फ़रमाया बड़े बुरे हैं वह लोग जो जिहाद के ख़िलाफ़ और इस्लाम से लोगों को रोकते हैं ख़बरदार कभी न इस्लाम से रोकना और न जिहाद के ख़िलाफ़ बयानात देना क्योंकि जिहाद खुद नाम है ज़ालिम के ज़ुल्म को ख़त्म करने का अगर तुमने जिहाद से दूसरों के ज़ुल्म करने के बाद भी मुसलमानों को रोका तो गोया तुम इस्लाम पर जो मज़ालिम हो रहे हैं उनको दर गुज़र करने का सबक़ दे रहे हो और यह जाइज़ नहीं, ख़ामोश ज़रूर रहो और अख़लाक़ से ज़रूर काम करो मगर हर वक़्त सरकशों पर अख़लाक़ कारगर नहीं होते क्या तुमने नहीं पढ़ा कि हुज़ूर अकरम स० ने कई जिहाद किये आप स० से भी बढ़कर अख़लाक़ वाला कोई पैदा हुआ? मालूम हुआ इस्लाम पर जब मुख़ालिफ़ीने इस्लाम कीचड़ उछालेंगे या इस्लाम के अहकाम को अदा करने से रोका जायेगा उस वक़्त हम मज़लूम और बेकुसूर होंगे अब जिहाद का हुक्म हो जायेगा और जब उलमा जिहाद का हुक्म देंगे तो हर एक पर जिहाद बक़द्रे ताक़त फ़र्ज़ हो जायेगा और याद रहे न जिहाद से रोका जाये और न बेजा और ना-हक़ तौर पर लड़ा

जाये बल्कि इस्लाम नाम ऐतिदाल का है।

जो जिहाद न करे और न जिहाद के करने की उसके दिल में आरज़ू हो उसके लिये वईद

(٣٥٨) عن ابی ھریرةؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم من مات ولم یغز ولم یحدث بہ نفسہ مات علی شعبة من نفاق. (مسلم مشکوٰۃ ٣٣١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि आप स० ने इरशाद फ़रमाया जो शख़्स (इस हाल) में मर जाये कि न उसने जिहाद किया हो और न उसके दिल में जिहाद करने की तमन्ना थी तो वह शख़्स निफ़ाक़ के एक शोअ़बे पर इन्तिक़ाल कर गया।

दूसरी तबरानी की रिवायत है हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की, आप स० ने फ़रमाया कोई क़ौम जिहाद नहीं छोड़ती है मगर हक़ तआ़ला उस क़ौम पर अ़ज़ाब को मुसल्लत फ़रमा देता है।

इस क़द्र सख़्त वईदें हैं उस शख़्स के हक़ में जो न जिहाद करे और न उसके दिल में यह तमन्ना हो कि अगर जिहाद फ़र्ज़ होगा तो मैं ज़रूर जिहाद करूंगा अगर इन दोनों में से कोई एक भी हो तो वह कामयाब है यानी वह जिहाद करे और अगर जिहाद फ़र्ज़ नहीं हुआ तो जिहाद के लिये ख़ुद को हर वक़्त तैयार रखे क्योंकि इस्लाम ने हमें दो चीज़ें अ़ता की हैं एक तो उ़म्दा और पाकबाज़ अख़लाक़ से लोगों से मिलाप रखना और इस्लाम के लिये सरकशों से जिहाद करना, नमाज़ रोज़ों की तरह जिहाद भी बहुत बड़ी इबादत है मगर जिस तरह नमाज़ का एक मुतअ़य्यन व़क़्त है रोज़ों के लिये भी चन्द शराइत हैं ज़कात के भी चन्द उसूल हैं इसी तरह जिहाद के भी चन्द शराइत हैं और उसका भी एक वक़्त है मगर ख़ुद को किसी भी वक़्त जिहाद से

ग़ाफ़िल न रखे हमेशा तैयार रहे जिहाद के फ़ज़ाइल को बयान करे काफ़िर हो या यहूदी या नसरानी कभी पहले छेड़ छाड़ न करो बल्कि जब वह छेड़ छाड़ करें तो फिर उनको भी न छोड़ो, हम न ज़ुल्म करते हैं और न ज़ुल्म सहते हैं बल्कि हम तो मुअ़तदिल मिज़ाज पर हैं।

ख़ैर हासिले कलाम यह है कि जिहाद से बेख़बर और ग़ाफ़िल न रहे, पता नहीं कब सरकश लोग सरकशी करें और जिहाद फ़र्ज़ हो जाये इसलिये जिहाद के लिये पहले से ख़ुद को तैयार रखें ऐसा न हो कि प्यास के वक़्त कुआं खोदो और मुख़ालिफ़ तैयारी से आकर हमको मग़लूब कर जाये (अल्लाह की पनाह) इसलिये जिहाद को थामे रहो अल्लाह सबका मुहाफ़िज़ व मददगार है।

ओ मियां ज़रा शहीद के फ़ज़ाइल तो देखो

(٣٥٩) قال النبی صلی الله علیه وسلم عند الله سَبْعُ خصالٍ يُغفرُ لهٗ فی اوَّلِ دفعةٍ من دمه ويُرىٰ مقعده من الجَنّة ويُحَلّی حُلّةَ الايمان ويُزوَّجُ اثنين وسبعين زوجةً من الحور العين ويُجارُ من عذاب القبر ويامن من الفزع الاكبر ويوضعُ علی راسِهٖ تاجُ الوقار الياقوتةُ مِنْها خيرٌ من الدنيا وما فيها ويُشفعُ فی سبعين انساناً من اهل بيته. (رواہ جامع الاحادیث جلد ٦ ص ٨٣)

आप स० ने फ़रमाया शहीद के लिये अल्लाह के पास सात ख़सलतें हैं (अव्वल यह कि) उसके ख़ून के पहले क़तरे पर ही उसकी मग़फ़िरत कर दी जाती है (दूसरा) और उसको उसका जन्नती मक़ाम दिखाया जाता है और (तीसरा) उसको ईमान का जोड़ा पहनाया जाता है और चौथे (अल्लाह तआ़ला उसकी) शादी कर देता है। बहत्तर औरतों से जो हूरे ईन में से होंगी और (पांचवें) उसको अ़ज़ाबे क़ब्र से मामून कर दिया जायेगा और उसको

मुतमईन कर दिया जायेगा बड़ी दहशत से (मुराद मैदाने हश्र की बे–ताबी से) और (छठे) उसके सर पर इज़्ज़त व वक़ार का ताज रख दिया जायेगा (और उसके मोतियों का यह हाल होगा कि) उसका एक गढ़ा हुआ याकूत का टुकड़ा इस क़द्र क़ीमती होगा कि वह दुनिया और दुनिया की तमाम चीज़ों से ज़्यादा बेश क़ीमत होगा और (सातवें) वह अपने घर में से सत्तर अफ़राद की सिफ़ारिश करेगा।

हज़रात! जहां इस्लाम ने हमें माल व दौलत को कुरबान करने का हुक्म दिया और उसके फ़ज़ाइल व मनाक़िब को बयान किया वहीं पर दीने इस्लाम ने जिहाद का हुक्म भी दिया ताकि मुसलमान मज़कूरा बशारतें हासिल कर सकें।

दोस्तो! शहीद के एक एक हिस्से की, एक एक जुज़ की इस कद्र फ़ज़ीलत व अज़मत है कि अल्लाह तआला एक ख़ून के क़तरे पर ही सबसे पहला इनआम यह करता है कि उसकी मग़फ़िरत कर देता है फिर उसका दिल बहलाने के लिये उसको उसकी जन्नत दिखाई जाती है और उसको ईमान का लिबास ज़ेबे तन किया जाता है मज़ीद जन्नत में मख़सूस तौर पर अलग से बहत्तर हूरे ईन बीवियां अता की जायेंगी गोया कि इस्लाम सिर्फ़ और सिर्फ़ हक पर साबित क़दमी की दावत देता है और उस पर जमने वालों के लिये आख़िरत और आलमे अरवाह की सुहूलियात फ़राहम करता हैं इस्लाम ने वक़्त पर ख़ामोशी का भी सबक़ दिया और वक़्त आने पर बात करने का भी हुक्म दिया और ज़रूरत पड़ने पर जान कुर्बान करने को भी फ़र्ज़ क़रार दिया, हम कभी पेश क़दमी करके किसी को कुत्तों की तरह लड़ाइयों पर आमादा नहीं करेंगे बल्कि शेरों की तरह छेड़ने पर मुक़ाबिल को पाश पाश करे देंगे और हमारा मिशन अमन और सलामती है

क्योंकि मोमिन और ईमान अमन से निकले हैं और इस्लाम और मुसलमान सलामती से निकले हैं। हमने और न हमारे मज़हब ने कभी किसी की नींद को हराम करने का हुक्म नहीं दिया न किसी को बेचैन करने का सबक़ सिखाया बल्कि शेर की ज़िन्दगी दी।

दोस्तों के साथ बकरी वाली उलफ़त दी और आजिज़ी करने वाले के साथ आजिज़ी का दर्स दिया और मुतकब्बिर के साथ तकब्बुर को सदक़ा कहा। ख़ैर शहीद के फ़ज़ाइल कौन मुकम्मल बयान कर सकता है यह एक बहुत बड़ी डिग्री और पोस्ट है इसको तो जन्नत में जाकर ही मालूम किया जा सकता है इसलिये हम हर वक़्त तैयार रहिये, बेदार रहिये, गफ़लत की नींद से होशियार हो जाइये और हो सके तो कराटे सीखो, लाठी सीखो, तोप चलाना सीखो, बन्दूक़ चलाना सीखो, ख़ुदा की क़सम यह आप स० की नहीं बल्कि तमाम अंबिया अ़लै० की सुन्नत है तमाम सहाबा रज़ि० की सुन्नत है कि उन्होंने अपने वक़्त के आलाते जिहाद को सीखा और मुतकब्बिर के साथ तकब्बुर से और डटकर मुक़ाबला किया और आजिज़ों की मदद व नुसरत की।

क्या ही ख़ुशनसीब हैं शहीद

(٣٦٠) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لِلشّهيد زوجتان من الحورِ العين يُرىٰ مُخُّ ساقها من وراء سبعين حُلّةً. (جامع الاحاديث ج٢ ص٨٧)

आप स० ने फ़रमाया शहीद के (स्पेशल) दो बीवियां हो गई हूरे ईन में से (और उनमें यह फ़ैसेलिटी होगी कि) उनके सत्तर जोड़ों को पहनने के बाद भी उन कपड़ों में से उन हूरों की पिंडलियों का मग्ज़ नज़र आयेगा।

सुब्हानल्लाह अल्लाह तआ़ला मुसलमानों को जिहाद का शौक़ अ़ता फ़रमा कर उन हूरों को हासिल करने की तौफ़ीक़ अ़ता

फ़रमायें।

भाइयों लूटो ख़ुदा के ख़ज़ानों को मुजाहिदों की मदद करके

(۴٦١) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم للغازى اجره وللجاعل اجره واجر الغازى. (حوالہ جامع الاحادیث جلد٦ صفحہ٨٤)

आप स० ने फ़रमाया मुजाहिद को जिहाद करने का अज्र मिलेगा (ही मिलेगा लेकिन) जो मुजाहिद के लिये जंग के हथियार मुहय्या करे उसके लिये उन चीज़ों के देने का भी सवाब मिलेगा और जिस मुजाहिद को दिया उसके अज्र के बराबर उसको भी अज्र मिलेगा।

भाइयो! अल्लाह ने अपने दरबारे रहमत को इस क़द्र वसीअ़ कर रखा है कि वहां लेने वाला आजिज़ हो जाता है मगर लुटाने वाला नहीं। अल्लाह ने मुजाहिद के लिये बेहद और बे–हिसाब सवाब तो रखा ही है लेकिन जो मुजाहिदों की हथियारों के ज़रिये और दौलत व माल के ज़रिये मदद करेगा उसके लिये दो गुना अज्र हासिल होगा एक तो उन चीज़ों के देने का और दूसरा अज्र उस मुजाहिद के बराबर उसको हासिल होगा जिसको उसने वह आलाते जिहाद अ़ता किये थे।

ख़बरदार! मुसलमान का क़त्ल हराम है

(۴٦٢) عن ابى هريرة رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لو انّ اهلَ السماءِ والارض اشتركوا فى دم مومنٍ لاكبّهم الله فى النار. (ترمذی، مشکوٰۃ)

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि० रिवायत करते हैं कि आप स० ने फ़रमाया अगर तमाम आसमान और ज़मीन वाले मिलकर सब एक मोमिन के क़त्ल में शरीक हो जायें तो अल्लाह तआ़ला उन सब

को औंधे मुंह करके दोज़ख़ में डाल देगा।

आज मुसलमान का क्या हाल है वह ग़ैर से तो डरता है और मुसलमान को मारता पीटता और गालियां देता घूमता है, खुदारा कुछ तो अक़्ल से काम लो आप मुसलमान हो क्या किसी मुसलमान का ख़ून जाइज़ हो जायेगा इस बिना पर कि सामने वाला मौदूदी है या बरेलवी है या देवबन्दी है तबलीग़ी है हरगिज़ नहीं ख़ुदा के लिये इस तरह हरगिज़ न करो और अल्लाह तआला से डरो क़त्ल करने का हुक्म सिर्फ़ कुफ़्फ़ार के हक़ में जाइज़ है और एक मुसलमान पर दूसरे मुसलमान का ख़ून हराम है। सिर्फ़ आप 'या रसूलुल्लाह' कहते हैं और अहले हदीस और मौदूदी और तबलीग़ी या रसूलुल्लाह न कहें तो यह काफ़िर हो जायेंगे, यह कैसी जिहालत है ऐ मुसलमान! तेरी अक़्ल इस क़द्र फ़ासिद और बे-क़द्र क्यों हो गई है क्या तू कुरआन को नहीं पढ़ता, अहादीस को नहीं पढ़ता, क्या तेरा ईमान कुरआन व अहादीस पर नहीं है?

है तो फिर यह नाकामियों की घटाएं तुझ पर क्यों मंडला रही हैं ज़रूर कुछ न कुछ तुझ में कमी है। और सबसे बड़ी कमी यह है कि आज मुसलमानों का अमल कुरआन और अहादीस से कोसों दूर हो चुका है और अल्लाह ने कामयाबियों का वअ़दा सिर्फ़ और सिर्फ़ कुरआन और अहादीस पर चलने पर ही रखा है अगर हम सिर्फ़ नाम के मुसलमान हो जायें और हमारे अअ़्माल और किरदार यहूद और कुफ़्फ़ार जैसे हों तो बताओ कहां से नुसरते ख़ुदा आने वाली है और दूसरी मुसलमानों की नाकामियों की वजह यह है कि आज मुसलमानों में इस क़द्र फ़िरक़ा परसतियां बढ़ गई हैं कि क्या पूछना और मज़ीद ज़ुल्म यह कि एक फ़िरक़ा दूसरे फ़िरक़े वालों के क़त्ल को मुबाह समझ बैठता है

ख़ुदा के लिये कुछ तो समझो तुमने भी कलिमा पढ़ा है दूसरों ने भी पढ़ा तुम भी आप स० को आख़री नबी मानते हो दूसरे भी मानते हैं, क्या हमारे आपसी जो भी इख़्तिलाफ़ात हैं वह मुबाहुद्दम (यानी जिसका ख़ून जाइज़ हो) हो गये?

नहीं नहीं, बल्कि आपसी जो भी इख़्तिलाफ़ात हैं वह आपसी और भाई चारगी वाले हैं न कि मज़हबी और झगड़े वाले हम तमाम तबलीग़ी, बरेलवी, मौदूदी, अहले हदीस एक कुरआन व हदीस के मानने वाले हैं और भी मसलक हैं वह भी कुरआन और हदीस को अपना रहबर जानते और मानते हैं वह मुसलमान हैं आज मुसलमान को इत्तिफ़ाक़ की सख़्त ज़रूरत है क्या हममें से कोई फ़िरक़ा यह पसन्द करता है कि बैतुल्लाह पर यहूदियों का क़ब्ज़ा हो जाये और हम एक दूसरे को काफ़िर कहते रहें क्या हममें से कोई यह पसन्द करता है कि आप स० के मज़ारे अकदस की यहूदी बे–हुर्मती करें क्या हममें से कोई कुरआन की तौहीन चाहता है अहादीस की तौहीन चाहता है मसाजिद व मदारिस की तौहीन चाहता है? नहीं, तो फिर हम किस तरह अलग हैं याद रहे हमारे इख़्तिलाफ़ात आपसी हैं और जो उसको मज़हबी समझता है वह ग़लत समझता है आज इस्लाम के रोशन सूरज को गुरूब करने की कोशिशें हो रही हैं कब तक आपसी ख़ून ख़राबा करें आओ और इत्तिफ़ाक़ को पकड़ कर तो देखो कुरआन किस तरह इस्तिकबाल करता है। ख़ुशी और मुसर्रत के जोश में कुरआन भी कहता है।

कि ऐ मुसलमानो! कामयाबी तो सिर्फ़ तुम्हारे तन का लिबास है जिसको तुमने सिर्फ़ धोने के लिये निकाला था यह कुफ़्फ़ार तो तुम्हारे धोबी हैं क्योंकि मुसलमानों के लिबास पर बेअ़मली और ऐश परस्ती के धब्बे लगे हुए थे और मुसलमानो के होश आजाने पर यह धुल जायेंगे यह लिबास दोबारह मुसलमानों को मिल

जायेगा शर्त यह है कि गह बे-अमली के धब्बे धुल जायें क्योंकि यह कामयाबी और सरफ़राज़ी का लिबास सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम्हारा है तुमको यह लिबास कुफ़्फ़ार धोबियों से लेना है और उसको पहनकर दोबारा आलमगीर बनना है कहो इन्शाल्लाह, याद रहे कुफ़्फ़ार पर ज़ुल्म का भी हुक्म नहीं है अदल और इन्साफ़ और होश व मतानत के साथ उजलत और बे अक़ली के साथ नहीं।

ऐ बेसहारा मुसलमान सुन कुरआन क्या कहता है

قال الله تعالیٰ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ (پ۱۰)

अल्लाह तआला ने फ़रमाया (ऐ मुसलमानों) अल्लाह की मानो और उसके रसूल की मानो और तुम (बरेलवी, देवबन्दी, मौदूदी, अहले हदीस कहकर) आपस में न लड़ो (अगर तुम आपस में बरेलवी देवबन्दी करोगे तो क्या होगा) पस तुम बुज़दिल और नामर्द हो जाओगे और तुम्हारा रोअब ख़त्म हो जायेगा (कामयाबी का नुस्ख़ा यह कि) तुम दीनी उमूर पर सब्र करो बेशक अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है।

बताओ क्या ख़ुदा ने आपसी इख़्तिलाफ़ को नाकामी की वजह नहीं बताया फिर क्योंकर कुरआन के ख़िलाफ़ अमल करके बे इज़्ज़ती और लज़्ज़त की ज़िन्दगी को पसन्द करते हो आओ इख़्तिलाफ़ात को दफ़न कर दो क़ियामत के क़ब्रुस्तान में कि इख़्तिलाफ़ात क़ियामत तक ख़त्म हो जायें आओ और आगे देखो कुरआन क्या हुक्म देता है।

قال الله تعالیٰ وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا

कि ऐ मुसलमानो! अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लो

और फ़िरक़ा परस्ती को तर्क कर दो।

खुदा की क़सम कोई इसकी मजाल नहीं रखता है कि तुमसे टकराए। अरे भाई जब चन्द सौ धागे एक जगह जमा हो जायें तो पहलवान से भी नहीं टूटते, तुम तो मुसलमान हो अगर तुम एक जगह जमा हो जाओ तो तुमको तोड़ने की किस में मजाल है अगर मुसलमान को शकस्त हुई है तो सिर्फ़ अपनों की बे वफ़ाई से रिश्वत ख़ोर हरामी बे–ईमान मुसलमानों से क्या ही ख़ूब कहा कहने वाले ने।

हमें तो अपनो ने लूटा ग़ैरों में कहां दम था
मेरी कश्ती डूबी वहां जहां पानी कम था

इस्लाम से नमकहरामी न करो इस्लाम को धोखा देने की कोशिश न करो दुनियावी ऐश में तुम अपने ईमान को न बेचो कि तुम्हारी दो दिन की ज़िन्दगी बन जायेगी मगर यहां हज़ारों मुसलमान मारे जायेंगे मैं ख़ासतौर पर इल्तिजा करता हूं मुसलमानों से कि वह काफ़िरों को अपना ईमान न बेचें मुसलमानों से धोखे को जारी न रखे और जाते हुए तमाम दुनिया के मुसलमानों को एक आयत की तरफ़ दावत देकर अलविदाअ़ होता हूं।

قال الله تعالى مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ اَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ الخ.

अल्लाह तआ़ला ने सहाबा रज़ि० की तारीफ़ फ़रमाई मुहम्मद स० और आप स० के साथियों की यह ख़ूबी है कि वह कुफ़्फ़ार पर तो बहुत सख़्त हैं और आपस में रहम दिल हैं।

मुसलमानों से भी यही कहता हूं कि वह न बरेलवी करे और न देवबन्दी और न फ़लाना ढमाका बल्कि जो कलिमे वाला हो उसके साथ रहम दिली को लाज़िम पकड़ो यह मैं नहीं कह रहा हूं बल्कि अल्लाह कह रहा है कि :

رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ

कि सहाबा रज़ि० आपस में नर्मदिल थे और जब कुफ्फ़ार का मामला आजा‍ और इस्लाम को और मुल्क को बचाना हो तो फिर मुक़ाबिल के लिये चट्टान और लोहे के पहाड़ बन जाओ जैसा कि अल्लाह तआला ने कहा :

أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ

कि सहाबा रज़ि० कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में बड़े ही बहादुर और सख़्त थे लेकिन आज मामला उल्टा ही नज़र आता है कुफ़्फ़ार से तो डरते हो और मुसलमानों से लड़ते हो ऐसा न करो यह जाइज़ नहीं। लो बस अब हम चले अब तुम्हारे हवाले यह इस्लाम साथियो।

क्या ही कहा है कहने वाले ने

तेरे इस्लाम को ले जाये कहां शाहे अ़रब
हर तरफ़ ज़ुल्म में दाख़िल है मुसलमां होना
तेरे अ़मल से है तेरा परेशान होना
वर्ना मुश्किल कोई नहीं मुश्किल आसां होना
दोनों जहां पर हुकूमत हो तेरी ऐ मुसलमां
अगर तू समझ जाये तेरा मुसलमां होना

अहक़र मुहम्मद सालिम बा–अ़म्र अलयमनी वलअ़रबी
सुम्मा अहमदनगरी क़ासमी